Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ॐ

वं हजारों के

।। श्री गणेशाय नमः ।।

25

आकाशी-कौंसिल का विचार

(सं० २०४८ वि०, सन् १९९१–९२ ई०)

(विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगतिजन्य सर्वेक्षण)

★ धनु-मकर एवं कुम्भ प्रभाव राशि के अन्तर्गत कुछ राष्ट्रों की सत्ता के ढांचे में कुछ अभूतपूर्व परिवर्तन, राजनीतिक-प्रणाली में कहीं दूरगामी रूपान्तरणों की शुरुआत हो।

★ विश्व में 'सामरिक-सन्तुलन' पर कुछ राष्ट्रों का आन्तरिक-वैमत्य, अन्ततः नया राजनैतिक-चिन्तन प्रच्छन्नरूप से कुछ महाशक्तियों द्वारा अस्वीकृत।

★ पश्चिमी एशिया, जापान, चीन एवं किसी यावन राष्ट्र में यत्र तत्र भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड, समुद्री तूफान, एवं अन्य प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि।

★ कुछ देशों की मौका परस्त राजनीति एवं नेताओं की स्वार्थपरकता से दलीय गुटबन्दी को बढ़ावा, समस्याओं का हल ढूंढ़ना कठिन, आन्तरिक-संकट विषम हो।

★ मकर-प्रभाव राशिगत देश के कुछ प्रान्तों में आतंकवाद, अलगाववाद के हल करने का प्रयास विफल, कुछ अन्य प्रान्तों में भी स्थिति बिगड़े।

★ भारत के प्रधान नेता के समक्ष अनेकों समस्याएं, राष्ट्रीय-मोर्चा में आन्तरिक उलझनें, पंजाब, असम, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु एवं कश्मीर में सामाजिक-राजनैतिक समस्याएं उग्र, मन्त्रिमण्डलीय गतिरोध, हत्याकाण्ड, अपहरण आदि घटनाएं।

★ पाक-लंका में घोर अशान्ति, अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में भी घोर अशान्ति के ग्रहगति जन्य संकेत। कुछ राजशाही वाले भूटान एवं अन्य देशों में प्रजातन्त्र की लहर।

★ भारत एवं भारत सरकार का भविष्य, विश्व घटनाचक्र, प्रान्तीय शासनों का भविष्य।

'ज्योतिर्विज्ञान' एक अद्भुत-विज्ञान है, जिसमें छिपे गूढ़-रहस्यों को प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए अभी युगों तक अनुसन्धान की आवश्यकता है। हमें थोड़े से वैज्ञानिक-रहस्यों का अन्वेषण एवं अनुसन्धान करने में लाखों वर्ष लगाने पड़े हैं, फिर अकगणित किंवा अज्ञात-ग्रहनक्षत्रों की एवं उनके मध्यवर्ती-आकाश की स्थिति को जानने के लिए एवं ग्रहनक्षत्रों का प्राणीमात्र एवं प्रकृति पर प्रभाव को अनुभव करने के लिए जितना समय, श्रम एवं साधन चाहिए, उन्हें जुटा पाना हमारे लिए अभी भी सहज-संभव नहीं। हमें किसी न किसी रूप में सर्वोच्च प्रभुसत्ता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। क्योंकि संसार में प्रत्येक वस्तु एक निर्धारित रीति से प्रक्रिया में है। यदि इसमें रत्तीभर भी अव्यवस्था (किंवा अनुशासनहीनता) का अंश आ जाए यह विराट्-ब्रह्माण्ड एक भी क्षण न टिक सकेगा। क्षणिक-विस्फोट से अनन्त-प्रकृति में आग लग जाती और संसार अग्नि ज्वालाओं के अतिरिक्त कुछ न होता। इस प्रकार प्रकृति के इस नियामक–विधान में किसी न किसी 'अचिन्त्य-सत्ता' का अस्तित्त्व में होना प्रामाणित अवश्य करता है।

विश्वजनीन–जीवन का आधार सूर्य है। सूर्य ही महनीय-ज्योतिष-शास्त्र के प्राण तथा आत्मा है

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

और ज्योतिषचक्रों के प्रवर्तक भी। हमारे जगत का नियमन एवं संचालन यही करते हैं। [illegible] दिशाओं का निर्माण, अब्द, युग, मन्वन्तर एवं कल्पान्त तक कालविभाजन, प्रकाश, ऊष्मा, चेतना, प्राणादि-वायु, [illegible], विद्युत, मेघ, वृष्टि, पेट्रोलियम, कोयला, अन्न एवं फलादि की सृष्टि एवं संचालक भी भगवान् भास्कर ही हैं। सर्व ही तिर्यक्, मनुष्य, सरीसृप किंवा सभी जीव समूहों की आत्मा और सर्वेन्द्रिय के अधिष्ठाता हैं—

"देव-तिर्यङ्-मनुष्याणां सरीसृप-सवीरुधाम्।
सर्वजीव-निकायानां सूर्य आत्मा दृगीश्वरः।।" (श्रीमद्भागवत)

ज्योतिःशास्त्रानुसार सूर्य ही समस्त ग्रह-नक्षत्र-मण्डल के अधिष्ठाता तथा काल एवं समय के नियन्ता हैं।

'समय' —ब्रह्माण्ड का चतुर्थ आयाम है, जिसके आधार पर वर्तमान भी परिवर्तित बदलता रहता है। समय एवं घटनाओं को हम अलग-अलग कर नहीं देख सकते, वे एक-दूसरे से इतने सम्बद्ध हैं कि एक के बिना दूसरे की सत्ता ही नहीं। यही कारण है कि आइन्स्टीन जैसे महान् वैज्ञानिक भी ब्रह्माण्ड के तीन आयामों को न स्वीकार करके समय को चौथा आयाम स्वीकार करते हैं। **'समय'** सर्वोपरि है। इसे ईश्वरीय [illegible] कहें या कुछ और —समझना कठिन है। परमाणु से परमविशाल तेज-पुञ्ज सूर्य तक कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो समय से प्रभावित न हो। 'समय' ईश्वरीय सत्ता है, जो कि कहीं मेघ, कहीं अदृश्य आकर्षण, शक्ति, नभ में व्याप्त ग्रह नक्षत्र, [illegible] उल्का, धूमकेतुओं के रूप में एवं कहीं परमाणु में निहित अथाह शक्ति के रूप में समय-समय पर घटनाचक्र रूप में अपनी सत्ता का [illegible] करता है।—इस 'समय' रूपी विश्वसंचालक शक्ति को यथार्थरूप में समझने का प्रयास ही 'ज्योतिष' है जिसे 'काल व विधानशास्त्र' भी कहा गया है। **"वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यः ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।।"** जीवन के अनेक [illegible] क्रिया-कलापों में समय का ज्ञान सर्वोपरि है। फिर भी समयानुसार विश्व के क्रिया-कलापों को संचालित करने वाली कोई अदृश्य शक्ति अवश्य है, उसे दार्शनिक महात्मा एवं वैज्ञानिक ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण की संज्ञा देते हैं। परन्तु इस रहस्यपूर्ण शक्ति को समझने के लिए [illegible] होना आवश्यक है—

"एष सर्वेषु भूतेषु गूढात्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।"

[illegible] महात्मा एवं विभिन्न-शक्तिपुञ्ज के इस प्रभाव से विश्व में घटित होने वाले घटनाचक्र को [illegible] दृष्टि से पहले ही देखते आए हैं।

"साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्यो असाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं च वेदाङ्गानि च।"

— यास्काचार्य

स्पष्ट है कि हमारे पूर्वज-ऋषि भारतवर्ष में घटित घटनाक्रम को किसी माध्यम से ही जान लेते थे, उसके लिए उन्होंने वेद के अङ्गभूत 'ज्योतिष शास्त्र' को जन्म दिया। यही कारण है कि ज्योतिष को [illegible] की संज्ञा दी गई है। साक्षात्कृतधर्मा ऋषि ज्योतिषशास्त्र के आधारभूत नवग्रहों के आधार पर [illegible] भविष्य को वर्तमान की तरह अनुभव करते रहे हैं। अतः 'ज्योतिषशास्त्र' मनुष्य की अतीन्द्रिय [illegible] परम्परा से ही महत्त्वपूर्ण रहा है और गुरु-शिष्य परम्परा से यह आज भी दैवज्ञों को भावी घटनाक्रम का पूर्व ही भान करा रहा है।

'वर्तमान' अतीत से ही निकला है, आज हम जो भी कुछ देख रहे हैं, वह कल का ही तो परिणाम है। अतीत में वर्तमान कैसे निहित है एवं वर्तमान का भविष्य के साथ कैसा सम्बन्ध है एवं घटनाक्रम को जन्म देकर यह कालचक्र निर्मोही योगी की तरह पीछे न देखता हुआ अबाध गति से क्यों अहर्निश आगे ही बढ़ता जाता है और वर्तमान को जीर्ण बनाकर भूत बना देने के प्रयत्न में लगा रहता है। इस विधान के पीछे ज्योतिषशास्त्र के आधारभूत ग्रह ही तो हैं। जिस प्रकार शब्द में अर्थ, अग्नि में तेज एवं जल में शीतलता [illegible] से विद्यमान रहते हैं, इसी प्रकार प्रत्येक कार्य में कारण अवश्य छुपा रहता है। विश्व में जो भी घटनाक्रम चल रहा है, उसका कारण अवश्य है। भले ही हम आज प्रत्येक कार्य के कारण की उपस्थिति का स्पष्टीकरण देने में समर्थ न हों, परन्तु यह तथ्य है कि भविष्य में जो भी घटित हो रहा है, वह अतीत से विच्छिन्न नहीं है। कल जो होगा, वह आज का ही जोड़ होगा, आज जो कुछ है, वह गत दिनों का ही परिणाम है। स्पष्ट है कि जो कल को घटित होने वाला है, वह किसी सूक्ष्म अर्थ में कल भी विद्यमान होना चाहिए। इस मौलिक चिन्तन ने हजारों वर्ष पूर्व ज्योतिष शास्त्र को जन्म दिया था।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका के एक प्रोफेसर एवं नक्षत्रविद् ने भी यह स्वीकार किया है कि "प्राणी के शरीर में जितने तत्त्व हैं वे सबके सब पृथ्वी की ठोस पपड़ी में या उसके ऊपर अवश्य विद्यमान हैं, इन तत्त्वों का अधिकांशतः तारों किंवा ग्रहों के उत्तप्त वातावरण में भी परिचय मिलता है। जन्तुओं के शरीर में किसी प्रकार के भी ऐसे परमाणु नहीं हैं जिनकी उपस्थिति अजीब-परिवेश में सुपरिचित न हो, स्पष्ट है कि सभी प्राणी तारों के साधारण द्रव्य से ही बने हैं।" प्राणीमात्र द्वारा निर्मित एवं प्राणियों के परिवेश से उत्पन्न घटनाक्रम का सम्बन्ध भी ग्रहों से अवश्य है। इस सम्बन्ध पर अभी भरपूर वैज्ञानिक चिन्तन की आवश्यकता है। "ज्योतिष शास्त्र" नक्षत्रों किंवा ग्रहों का अध्ययनमात्र ही नहीं है, अपितु भविष्य को टटोलने की एक चेष्टा भी है। यह ब्रह्माण्ड इकाई है, इससे पृथक् होकर कोई भी वस्तु अस्तित्वहीन हो जाती है, इसमें कोई भी चीज़ अलग नहीं, सब संयुक्त होकर एक ब्रह्माण्ड रूप में दिखाई दे रही हैं।

इस ब्रह्माण्ड में ग्रहों की प्रतिक्रियाएँ गुरुत्वाकर्षण, गति तथा विकिरण नियमों के अनुसार होती रहती हैं। कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, जब भी वह अपनी स्थिति को बदलता है, तो विश्व की परिस्थितियों को प्रभावित अवश्यमेव करता है। सूर्य भले ही कितनी दूरी पर हो, जब वह अधिक उत्तप्त होता है तो उस समय पृथ्वी के जलवायु एवं प्राणीमात्र के रक्त-प्रवाह में विशेष गतिमत्ता अनुभव होती है, जिससे सम्पूर्ण विश्व प्रभावित होता है। इस प्रकार नई घटनाओं का जन्म भी देखा गया है—क्योंकि प्राणी की शिराओं में रक्त प्रवाह ही [illegible] ऊर्जा प्रेरणा का स्रोत है। जो कि कष्ट करने का प्रेरक करता रहता है।

उल्लिखित विवरण से स्पष्ट है कि—ज्योतिष शास्त्र के प्राणभूत ग्रह कोई निष्क्रिय अग्निपिण्ड ही नहीं हैं अपितु ये अत्यन्त सक्रिय जीवन्त संगठन हैं। ग्रहराज सूर्य की तरंगों में प्रतिपल विलक्षण-रूपान्तरण होते रहते हैं। सूर्य की तरंगों में क्षणिक-रूपान्तरण भी पृथ्वी के प्राणों को कम्पित करता है।

इस पृथ्वी पर कुछ भी ऐसा घटित नहीं होता, जो ग्रहों पर कुछ घटित हुए बिना यहां घटित हो जाता है। जब सूर्य-ग्रहण होता है, तो जंगलों में पक्षी चौबीस घण्टा पहले गीत गाना बन्द कर देते हैं। पूर्ण ग्रहण के समय सारी पृथ्वी मौन हो जाती है। जंगली जानवर भयभीत हो जाते हैं, किसी बड़ी आशंका से ग्रस्त मालूम देते हैं। बन्दर वृक्षों [illegible] नीचे आ जाते हैं, भीड़ जुटाकर किसी सुरक्षा के उपाय में लगे मालूम देते हैं। बन्दर जो निरन्तर [illegible] और चञ्चल क्रिया-कलाप में व्यस्त रहते हैं, वे सूर्य-ग्रहण के समय एकदम मौन हो जाते हैं, [illegible] और संन्यासी ध्यान में नहीं होते। स्पष्ट है, कि आकाशीय-पिण्डों का विश्व की घटनाओं से कुछ सम्बन्ध अवश्य [illegible] को विश्व के अठत्तर प्रतिशत व्यक्ति स्वीकार करते हैं। इन अठत्तर प्रतिशत [illegible] जन ही नहीं,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अपितु वैज्ञानिक, चिन्तक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग भी सम्मिलित है।

यह निर्विवाद है, विश्व की परिस्थितियाँ जब-जब बदलती आई हैं और विश्व की घटनाओं को सार्थकता प्रदान करने वाले इतिहास का निर्माण होता आया है। घटनाक्रम की शुभ-अशुभ सफलता किंवा असफलता के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने भाग्य पर इठलाता या भाग्य को कोसता देखा गया है। आखिर इस घटनाक्रम की जन्मदात्री कौन-सी अदृश्य शक्ति है, जिसे मनुष्य 'भवितव्यता' या ईश्वरीय इच्छा नाम से स्वीकार करता है। ग्रह-नक्षत्र विश्लेषण एवं अनुसंधान के परिणामस्वरूप '**कालविधान-शास्त्र-ज्योतिष शास्त्र**' ने अपेक्षित घटनाक्रम को जन्म देने में ग्रहजन्य आकर्षण-विकर्षण एवं गति-परिवर्तन को प्रमुख कारण माना है। इसमें सन्देह नहीं, कि भूकम्प, महायुद्ध, विग्रह आदि अनेकों विश्वजनीन घटनाओं को जन्म देने में ईश्वरीय प्रेरणा से सञ्चालित-ग्रहों की गति भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है।

पच्चानबे हजार वर्ष पूर्व ग्रह-नक्षत्रों की जैसी स्थिति थी, उसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। चिरन्तन काल से ही महर्षियों द्वारा प्रणीत इस शास्त्र पर निरन्तर चिन्तन होता आ रहा है। इस शास्त्र से प्राप्त सङ्केत के आधार पर अपनी बुद्धि के अनुसार सूक्ष्म ग्रह गति से प्राप्त सङ्केत-सूत्रों को ही '**भविष्यवाणी**' के रूप में परिवर्तित करके विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का चित्र अपने लाखों प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थापित करते हुए ६३ [illegible] व्यतीत हो चुके हैं।

आपके इस लोकप्रिय पञ्चाङ्ग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गणमान्य प्रतिष्ठित महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पञ्चाङ्ग अपनी सफल आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पञ्चाङ्ग गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में सर्वोपरि लोकप्रिय है।

इस पञ्चाङ्ग की सर्वाङ्गशुद्ध गणित एवं विद्वत्तापूर्ण आकर्षक लेखों के कारण यह पञ्चाङ्ग भारत के मूर्धन्य धर्माचार्यों द्वारा सम्मानित हो चुका है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म ग्रहगणित, विद्वत्तापूर्ण शोध लेख एवं अन्य उपयोगी विषयवस्तु के कारण विद्वद्वर्ग एवं धर्माचार्यों के आशीर्वाद के रूप में जो श्रेय एवं गौरव इस पञ्चाङ्ग को आज तक प्राप्त हो रहा है, वह हमारे जीवन की उपलब्धि है:—यह पञ्चाङ्ग इन सभी विद्वान्-धर्माचार्यों का हृदय से ऋणी है। जिनका आशीर्वाद इसे प्राप्त है। श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग की विगत वर्षों की भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा यहां विहङ्गम दृष्टि से कर देना उचित समझते हैं—

भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा, श्री महात्मा गांधी, नेहरू जी एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी आदि भारत के गणमान्य व्यक्तियों के निधन किंवा हत्याकाण्ड की आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्यवाणी, रूस के बुल्गानिन एवं ख्रुश्चेव के अचानक अपदस्थता व पदत्याग की भविष्यवाणी, चीन में माओ-चाऊ युगान्त की घोषणा, कांग्रेस का विभाजन, जनता पार्टी की विजय एवं पतन की आश्चर्य-चकित कर देने वाली भविष्यवाणी, श्रीमती गांधी के पुनः सत्तारूढ़ होने की घोषणा, भारत-पाक युद्ध, ईरान-इराक युद्ध एवं भूतपूर्व ऐतिहासिक भूकम्प किंवा प्रलयकारी तूफानों की भविष्यवाणी, इसके अतिरिक्त भारत एवं देशान्तरों में घटित होने वाली असंख्य सफल भविष्यवाणियों की अक्षरशः सफलता का श्रेय आपके इस पञ्चाङ्ग को प्राप्त हो चुका है। **यद्यपि स्थानाभाव के कारण सभी सफल भविष्यवाणियों को यहां अंकित करना सम्भव नहीं, पुनरपि कुछेक आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां सं० २०४७ से यहां प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं—**

(१) सं० २०४७ के श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग में पृ० १५ कालम १ में पंक्ति १५ में लिखा था—

''२० जून से कहीं भूकम्प, तूफान एवं दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी।''

ईरान में २१ जून को भयंकर भूकम्प से हजारों व्यक्ति मारे गए एवं हजारों व्यक्ति बेघर हुए, करोड़ों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई।

(२) सं० २०४७ के श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग में पृ० १५, कालम २ पर लिखा था—

''शनि-मंगल-राहु का एक राशिस्थ होना विश्व में अघटित घटनाओं को जन्म देगा। कहीं युद्धाग्नि से वातावरण अशान्त होगा, कहीं आगजनी की घटनाओं से जनधन हानि होगी, कहीं तूफान एवं यान दुर्घटना किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर हानि का समाचार मिलेगा।

स्पष्ट है कि इस वर्ष भयंकर अग्निकाण्ड में विज्ञान भवन देहली में हानि हुई तथा अनेकों भयंकर अग्निकाण्डों में करोड़ों रुपये की हानि हुई है। यान-दुर्घटना एवं बाढ़ आदि प्राकृतिक-प्रकोप से भी भारी हानि अनेकत्र हुई है।

(३) सं० २०४७ में पृ० १५ कालम २ में लिखा था—

''दक्षिण-प्रशान्त में फिजी एक अलग तरह का दक्षिणी अफ्रीका का रूप धारण कर लेगा। यहां जातपात रंगभेद आदि समस्याएं उभर कर सामने आएंगी। हत्याकाण्ड एवं अग्निकाण्ड से अशान्ति होगी। अल्पवर्ग की बहुवर्ग पर हावी होने की प्रवृत्ति से कुछ देशों में घोर अशान्ति पनपेगी।''

पाठक जानते ही हैं कि दक्षिणी अफ्रीका एवं फिजी आदि में भी रंगभेद आदि समस्याएं इस वर्ष उभर कर सामने आ रही हैं। अशान्ति का वातावरण बन रहा है।

(४) सं० २०४७ के पञ्चाङ्ग में पृष्ठ १४ पर कालम २ में नीचे की पंक्तियों में लिखा था—

''इस वर्ष नाभिकीय-शस्त्रास्त्रों को समाप्त करने एवं देशों में सैनिक टकराव का राजनैतिक-दृष्टि से समाधान करने एवं विभिन्न सामाजिक राजनैतिक-गुटों के देशों के बीच विश्वास को दृढ़ बनाने के प्रयास के लिए दो महाशक्तियां आगे बढ़ेंगी—कुछ सफलता भी मिलेगी।''

रूस-अमरीका ये दो महाशक्तियां इस क्षेत्र में स्पष्टरूप से अग्रसर हैं, एवं कुछ सफलता भी प्राप्त हो चुकी है, वर्षों के अन्तराल के बाद ये शक्तियां इस क्षेत्र में एकमत होकर नजदीक आई हैं, विचारों की दूरी भी कम हुई है।

(५) 'मुस्लिम देश'—शीर्षक के अन्तर्गत पृ० १३ पर कालम १ में स्पष्ट घोषणा की गई थी कि—

''शनि-यूरेनस नेपच्यून की धनुराशि में युति होने से किसी मुस्लिम देश में तूफान, भूकम्प आदि किसी भी प्राकृतिक प्रकोप से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होगा, जनधन हानि का भी योग है। कहीं जनतन्त्र पर आघात होगा। कहीं मुस्लिम-सम्प्रदायों में संघर्ष की स्थिति भी बनने के योग हैं। पाकिस्तान के बलूचिस्तान एवं सिन्ध क्षेत्रों में भी इस वर्ष कुछ जनान्दोलन दिखाई देंगे। जिसमें प्रधानशासक को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।''

इस भविष्यवाणी के अनुसार बंगलादेश एवं अन्य कई यवन देशों में समुद्री तूफान किंवा अन्य प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हुई है। पाकिस्तान में असंवैधानिक-ढंग से श्रीमती बेनजीर को अपदस्थ करके जनतन्त्र पर आघात किया गया। पाक के सिन्ध आदि प्रान्तों में आन्तरिक आक्रोश भयंकर रूप धारण कर चुका है—यह पाठक जानते ही हैं।

(६) पृष्ठ १७ पर कालम १ के अन्तिम पांच पंक्तियों में स्पष्ट घोषणा की गई थी—

''एक मुस्लिम राष्ट्र समीपस्थ-राष्ट्र के सीमा विवाद में उलझ जाएगा, अन्ततः सीमा प्रान्तों पर सैन्यबल प्रदर्शन पर उतारू हो जाएगा, जिससे देशों में अशान्ति बढ़ेगी, परन्तु इस प्रकार की कुनीति उसे महंगी पड़ेगी।''

पाठक जानते हैं कि इस वर्ष ईराक ने कुवैत के आन्तरिक विवाद में हस्तक्षेप करके उसे हड़प

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लिया, यह घटना विश्वव्यापी अशान्ति का कारण बन गई। अब U.S.A. के साथ टकराव एवं अन्य देशों से सम्बन्ध खराब होना उसे मंहगा पड़ेगा।

(७) सं० २०४७ के पञ्चाङ्ग में पृ० १६ पर कालम १ के प्रारम्भ में ही लिखा था–

"२० जून को वक्री शनि उ०षा० १ धनु में आ जाता है। धनु राशि में शनि का सम्बन्ध यूरेनस एवं नेपच्यून के साथ हो रहा है, अतः पाकिस्तान, बंगलादेश, अफगानिस्तान आदि में कहीं राजनैतिक अस्थिरता बनेगी, कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी।"

सभी जानते हैं कि पाकिस्तान में भयंकर राजनैतिक अस्थिरता के परिणामस्वरूप वहां की प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो को नाटकीय ढंग से अपदस्थ होना पड़ा, इस घटना की हमने श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग संवत् २०४७ के पृ० १६ पर कालम १ की अन्तिम लाइन में साफतौर पर इन शब्दों में घोषणा की थी–

"पाकिस्तान किंवा अन्य किसी देश-विशेष की शासन सत्ता में नाटकीय परिवर्तन आने का योग है।"

इतने स्पष्ट शब्दों में इससे अधिक क्या लिखा जा सकता है।

उल्लिखित सातवीं भविष्यवाणी के अनुसार बंगलादेश में भूकम्प, अफगानिस्तान में आन्तरिक अशांति चली आ रही है। ईरान कुवैत में अशान्ति, ये सब फलित ज्योतिष की सत्यता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

(८) गत वर्ष आकाशी कौंसिल २६ सितम्बर, १९८९ को पूर्ण होकर प्रकाशित हो चुकी थी, उस समय निर्वाचन संग्राम जोरों पर था, कांग्रेस एवं लोकदल सत्ता परीक्षण की तैयारी में लगे थे। लेकिन हमारे पञ्चाङ्ग में श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के विजय एवं विपक्षीदल में सर्वोच्च पदाप्ति की घोषणा हमने २७ अगस्त सन् १९८८ में सं० २०४६ के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग पृष्ठ १६ कालम दो पर प्रथम प्रपद्क में निम्नांकित शब्दों में की गई थी–

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के जन्माङ्ग में उच्च गुरु भाग्येश होकर लग्न में है। कर्मेश-मंगल द्वितीयस्थ होकर कर्मक्षेत्र को विशेष दृष्टि से देख रहा है। जन्माङ्ग में भाग्येश उच्च होकर भाग्यस्थान को देख रहा है, ऐसी ग्रहस्थिति को विपक्ष में सर्वोच्च राज्य सुखाप्ति हेतु ही कहेंगे। परन्तु लग्नेश-चन्द्र नीचाकांक्षी है, अतः पार्टी की एकता को ये प्रबल नहीं बना पाएंगे, अतः उच्च पदाप्ति होने पर भी अधिक चलने वाली बात नज़र नहीं आती।"

पाठक जानते हैं कि इस वर्ष लोकदल के प्रमुख घटक श्री देवीलालजी को १ अगस्त को उप-प्रधानमंत्री पद से पृथक् होना पड़ा एवं पार्टी की एकता में भारी आघात की स्थिति पैदा हो रही है।

२७ अगस्त १९८८ को सं० २०४६ के पञ्चाङ्ग में प्रकाशित इस भविष्यवाणी पर भारत के कोने-कोने से हमें प्रशंसापत्र प्राप्त हुए हैं, हम पाठकों के उत्साहवर्धक पत्रों के लिए आभारी हैं।

(९) गत वर्ष सं० २०४७ के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग में पृ० १८ पर कालम २ में इन्दिरा-कांग्रेस के अपदस्थ होने की घोषणा इस प्रकार की गई थी–

"श्री राजीव गांधी इंका के प्रतिनिधि (मुखिया) होने से इनकी वर्तमान दशा के अनुसार संवत् के आरम्भ से पूर्व किंवा इस संवत् के पूर्वार्ध में इन्दिरा-कांग्रेस की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचेगा। कांग्रेस के भीतरी-बाहरी-विघटन के योग दिखाई देते हैं। उत्तर की ओर से कोई व्यक्ति किंवा नेता आगे इंका को विघटन के कगार पर ले जा सकता है। इंका में ही अन्दरूनी कुछ व्यक्ति स्थिति को बिगाड़ देंगे, विपक्ष और जोर पकड़ जाएगा, परिणाम दूरगामी होंगे। श्री गांधी के जन्माङ्ग एवं दशान्तर्दशा का विश्लेषण करने पर मालूम देता है कि इस वर्ष का प्रारम्भ श्री राजीव गांधी के अधिकारों के क्षरण का वर्ष है, आगामी आम चुनाव में विषम स्थिति में उनकी अक्षमता का सामना करना पड़ेगा, निर्वाचन होने पर बहुत हद तक इंका को सत्ता में होने के लाभों का अभाव सहना होगा। ग्रह स्थिति के अनुसार आकर्षक घोषणा-पत्र, वायदे, सुविधाएं सब व्यर्थ सिद्ध होंगी, इंका के कई दिग्गज नेता धराशायी होंगे, साम्प्रतिक-ग्रह स्थिति के अनुसार विपक्ष का मनोबल प्रबल मालूम होगा, पक्ष-विपक्ष तथा विपक्ष के पक्ष बनने का योग है।"

गत वर्ष २६ सितम्बर को की गई इस भविष्यवाणी की सार्थकता के बारे में अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं,–पाठक फलित-शास्त्र की यथार्थता का मूल्यांकन स्वतः करें।

(१०) गत वर्ष सं० २०४७ के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग में १४ जुलाई को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र देकर अपने पार्टी प्रधान से नया नेता चुनने का आग्रह करके देश को स्तब्ध कर दिया था, इस घटना एवं श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के सामने विषम परिस्थितियों की सूचना इस प्रकार दी गई थी–

"श्री वि० पी० सिंह की जन्माङ्गगत ग्रह स्थिति से मालूम देता है कि २० जुलाई १९९० ई० तक इनके सामने अनेकों प्रश्न चिह्न उपस्थित होंगे। लेकिन वर्तमान समय में गोचर में मिथुनस्थ गुरु चतुर्थ भावस्थ चन्द्र को देख रहा है, जो लोकप्रियता से मनोबल को बढ़ाता है, भाग्येश-गुरु २० जुलाई के बाद लग्न में उच्चस्थ होकर भाग्य स्थान को देखेगा–यह राजनैतिक दृष्टि से उच्च पदाप्ति अवश्य कराने वाला है, क्योंकि लग्नस्थ गुरु एवं धनस्थ मंगल ये दोनों भाग्य स्थान को देख रहे हैं।"

(११) सं० २०४७ की आकाशी कौंसिल के प्रारम्भ में प्रमुख लाइनों में लिखा था–

"कुछ प्रगतिशील देशों में बेजोड़ जन आन्दोलन (होंगे), जिनके परिणामों का सत्ताधारी अनुमान न लगा सकेंगे।"

तदनुसार भारत जैसे प्रगतिशील देश में भी 'रिजर्वेशन' को लेकर अप्रत्याशित जनान्दोलन सर्वत्र अगस्त-सितम्बर पूर्वार्ध में जोर पकड़ गया। भारतेतर अन्य देशों में भी इन दिनों जनान्दोलन हुए हैं।

"पाठको! गतवर्ष भविष्यवाणियों की सत्यता फलितज्योतिष की वैज्ञानिकता का ज्वलन्त उदाहरण है। ये भविष्यवाणियां गतवर्ष २६ सितम्बर १९८९ ई० को लिखी गई थीं। जिन भविष्यवाणियों की सफलता पर पाठकगण हमें पत्र लिख कर उत्साहित करते हैं, उन सबका श्रेय पूर्वाचार्यों एवं ज्योति-शास्त्र-मर्मज्ञ गुरुजनों को ही जाता है, जिन्होंने हमारा आज तक मार्ग-दर्शन किया है। हम जनता जनार्दन के भी आभारी हैं, जो विभिन्न-प्रान्तों से पत्रों द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई देकर भावी वर्षों के लिए भी कुछ लिखने के लिए प्रतिवर्ष प्रेरित करते रहते हैं।

अब हम सं० २०४८ वि. की ग्रहस्थिति का पूरी तरह चिन्तन करके भावी घटनाक्रम के बारे में संक्षेपेण कुछ लिखना प्रासङ्गिक समझते हैं।"

सं० २०४८ वि० की ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

इससे पहले कि हम संवत् २०४८ वि० की ग्रहस्थिति पर विशद-विवेचन करें, हम सं० २०४७ के अन्तिम चरण पर विहंगम दृष्टिपात करना प्रासंगिक समझते हैं।

सं० २०४७ में २३ सितम्बर को शनि मार्गी होकर १४ दिसम्बर सन् १९९० को मकर (अपनी राशि) में आ जाता है। मकर-राशिस्थ शनि का मेल राहु के साथ हो रहा है तथा इन पर उच्च-बृहस्पति की दृष्टि भी है। मकरस्थ-शनि का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्वरोगाद् विनाशः।
चिन्तावस्था नृपाणां भवति सनि बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस समय शनि-मंगल-राहु की स्थिति का परिशीलन करने से विश्व के मकर-प्रभाव राशि वाले भारत, अफगानिस्तान, दक्षिणी अफ्रीका, ग्रीस, बलगेरिया, अलबेनिया आदि देशों में विशेष राजनैतिक-गतिरोध पैदा होगा। प्रधान नेता के लिए विषम-उलझन पूर्ण समय है। विशेषतः १५ सितम्बर से लेकर अप्रैल, १९९१ तक की समयावधि में कुछ परिस्थितियां इस तरह मोड़ लेंगी कि प्रधान नेता को परिस्थिति जन्य चक्रव्यूह से निकलना सम्भव न होगा, परिणामस्वरूप सत्ता में परिवर्तन किंवा नाटकीय परिवर्तन होंगे। यह समय विशेषतः वर्तमान प्रधान नेता के लिए अग्निपरीक्षा का है। शासकों में किसी विषय को लेकर विशेष वैमनस्य पैदा हो, घेराव, किंवा शासक-शासित में विरोध जोर पकड़ेगा, प्रधान नेताओं में एक विशेष चिन्ता किंवा प्रश्नचिह्न उपस्थित होगा, जिसका हल सहज सम्भव नहीं। परिणामस्वरूप स्थिति भयंकर रूप धारण करेगी, कुछ स्थानों पर रक्तपात, जातीय दंगे एवं भारी उपद्रव होंगे, स्थिति नियन्त्रणार्थ सैन्यबल का सहारा लेना पड़े।

शनि की राशि में राहु का होना भी रोगभय, कहीं आन्तरिक-क्रान्ति, युद्धभय, जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई आदि करेगा। परन्तु शनि-राहु पर बृहस्पति की दृष्टि होने से अन्ततः स्थिति नियन्त्रण में आ जाएगी। यद्यपि संवत् २०४७ के अन्त तक स्थिति मकर राशि वाले देशों की स्थिति विषम रहेगी, परन्तु किसी विशिष्ट-व्यक्ति की मध्यस्थता से स्थिति में सुधार आएगा।

संवत् २०४८ की ग्रह परिषद्

अखिल ब्रह्माण्ड में अलौकिक शक्ति का परिज्ञान कराने वाले अनन्तकोटि तारे आकाशमण्डल में हमें दिखाई देते हैं, उनमें जिन तारों किंवा ग्रहों का हमारी पृथ्वी से घनिष्ट सम्बन्ध है, उन्हीं की उच्च-नीच स्थिति एवं वक्र-मार्ग आदि अष्टधा गतियों के भ्रमणवश इस पृथ्वी पर स्थित राष्ट्रों में सुभिक्ष-दुर्भिक्ष युद्ध, विग्रह, रोग, राजनैतिक उलटफेर, शांति किंवा अशान्ति का वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन हुआ करते हैं। श्री बृहस्पति महाराज ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए लिखा है –

"ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नराधराः।
सृष्टि-रक्षण-संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः॥"

जिस तरह पृथ्वी पर लोकतान्त्रिक-राज्य की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म, स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्र पर पड़ता है। उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय-शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशी कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलटफेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं। वह अपनी तुच्छमति के अनुसार त्रिकालज्ञ ज्योतिषियों के ग्रन्थों के आधार पर यहां संक्षेपतः लिख रहे हैं।

संवत् २०४८ की घटनाओं पर प्रकाश डालने से पहले हमें नववर्ष प्रवेश कुण्डली पर ध्यान देना होगा।

गत सं० २०४७ में चैत्र कृष्ण अमावस शनिवार (१६ मार्च, १९९१ ई०) को १७ घड़ी ४३ पल पर कर्क लग्न में सं० २०४८ का शुभारम्भ होगा।

सं० २०४७ वि० का शुभारम्भ कर्क लग्न में होने से यह वर्ष अपेक्षाकृत ठीक रहेगा। पुनरपि लग्न में उच्च गुरु है, शनि-राहु की लग्नस्थ-गुरु पर दृष्टि है, अतः शनि-गुरु का समसप्तक ऐसी विशेष प्रकार की राजनैतिक-विषमताओं को जन्म देगा। जिन्हें जनता अनुमान नहीं लगा सकेगी।

नववर्ष-कुण्डली के अनुसार वैशाख-आश्विन एवं कार्तिक मास घटनापूर्ण होंगे, कहीं अग्निकाण्ड

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

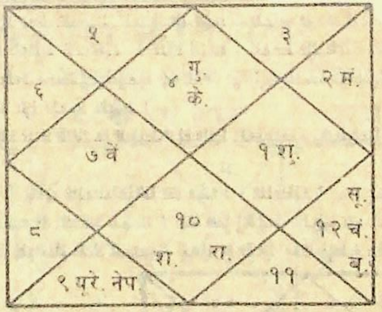

से हानि, कहीं प्रधान नेता को कष्ट, वरिष्ठ व्यक्ति के निधन से कष्ट, फाल्गुन में प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। मकर प्रभाव राशि वाले भारत आदि देशों के लिए यह वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहेगा।

"कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः।
स्वाच्छासन बलं यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि॥"

अर्थात्—पूर्वीय प्रदेशों एवं देशों में सुख-समृद्धि रहे, उत्तरी गोलार्द्ध के देशों में अराजकता, क्रान्ति, सत्तापरिवर्तन आदि घटनाएं घटित हों, पश्चिम में कहीं दुर्भिक्ष किंवा प्राकृतिक-प्रकोप से हानि भी हो।

ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व के विकासशील देशों के लिए विशेषतः उत्तर-पश्चिम गोलार्द्ध के देशों के लिए स्थिति विशेष संकटापन्न रहेगी।

जगत् लग्न कुण्डली की ग्रहस्थिति के आधार पर घटना चक्र

सं० २०४८ वि० में प्र० वैशाख कृष्ण अमावस रविवार (१४ अप्रैल सन् १९९१ ई०) को १० घड़ी ५ पल (१० घन्टा ३ मिन्ट) पर रेवती नक्षत्र के समय मिथुन लग्न में सूर्यदेव मेषराशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश (जगत्) लग्न कुण्डली

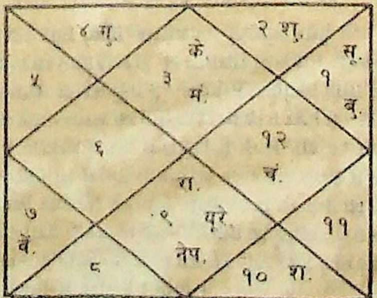

जगत् लग्न कुण्डली में लग्नस्थ केतु-मंगल पर यूरेनस-नेपच्यून एवं राहु की दृष्टि है, यह वर्ष विश्व में अघटित-घटनाओं को जन्म देगा। आरमेनिया, लोअर इजिप्ट, बेलजियम, यू०के०,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अमेरिका, उत्तर-पूर्वी अफ्रीका, कनाडा, स्पेन, आस्ट्रेलिया, मेडागास्कर, अर्जेंटिना, हंगरी, स्लेवोनिया, मेसोपोटामिया, चीन आदि में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि एवं कहीं आन्तरिक-अशान्ति बढ़े। कहीं बाढ़, तूफान, किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। कार्तिक-मार्गशीर्ष अधिक नेष्ट एवं घटनापूर्ण होंगे, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होगा। अग्निकाण्ड किंवा दुर्घटनाएं अधिक हों। गुरु-चन्द्र दृष्टियोग से बड़े देशों की मध्यस्थता से कुछ देशों के पुराने विवाद शान्त हों।

इस संवत् में शनि की दृष्टि– शनि मकर राशि में ही रहने से शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ ही रहेगी। अतः उत्तरी गोलार्द्ध के देशों एवं प्रान्तों में कहीं दुर्भिक्ष, कहीं विभाजन, कहीं युद्ध ज्वाला बढ़े, कहीं राजनैतिक अशान्ति से स्थिति विषम बनेगी। चीन, पाकिस्तान आदि देशों में स्थिति बिगड़ेगी।

इस वर्ष वैशाख **'अधिकमास'** होने से कहीं वर्षा की कमी रहेगी, लेकिन पुनरपि धनधान्य समृद्धि रहे, घी, तेल एवं कपास की फसल अच्छी रहेगी–

"स्वल्पवृष्टिः भवेन्मेघो धन-धान्य समाकुलम्।
घृतं तैलं च कार्पासं सुभिक्षं माधवद्वये।।"

ग्रहस्थिति के अनुसार– शनि-राहु का गुरु के साथ समसप्तक वर्षारम्भ से ही चल रहा है। विश्व के प्रमुख देशों में विशेष परिवर्तनों की आँधी आएगी, किसी देश विशेष की सत्ता के ढांचे में व्यापक परिवर्तन होंगे, जिससे विश्व की महाशक्तियों की राजनैतिक-प्रणाली में दूरगामी रूपान्तरणों की शुरुआत होगी। रूस में व्यापक जनवादीकरण के साथ-साथ राजनैतिक बहुदलीय प्रणाली का विकास होगा। कुछ प्रमुख देश जनतन्त्र की ओर बढ़ेंगे।

इस वर्ष शनि-मंगल-राहु-केतु एवं बृहस्पति की स्थिति का सर्वेक्षण करने से ज्ञात होता है कि एशिया एवं प्रशान्त क्षेत्र की प्राथमिकताएं बदल जाएंगी। परस्पर टकराव रोकना, राजनैतिक-विधि से समस्याओं का सरलीकरण, निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना आदि घटनाओं से एशिया प्रशान्त क्षेत्र में अनुकूल परिणाम मिलेंगे।

शनि, यूरेनस-नेपच्यून, प्लूटो ये ग्रह इस वर्ष पश्चिमी जर्मनी, जर्मन जनवादी गणतन्त्र, सोवियत संघ, ब्रिटेन, अमेरिका, इज़राइल, आईसलैंड, स्वीडन, नार्वे, डैनमार्क, फ्रांस, आस्ट्रिया--इन देशों की नीति के निर्धारण में विशेष प्रभावी रहेंगे।

विश्व में भयंकर बीमारियां बढ़ेंगी, एड्स आदि बीमारियों का सम्बन्ध प्लूटो, चन्द्र एवं शुक्र से है–इन ग्रहों के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि आनेवाले वर्षों में विश्व में भयंकर असाध्य-महामारियों से जनता को भारी कष्ट उठाना पड़ेगा।

१२ अप्रैल को राहु धन राशि में आ जाता है। मिथुन राशि के केतु-मंगल पर राहु की दृष्टि है, यह योग विश्व में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप अग्निकाण्ड किंवा दुर्घटना में जनधन हानि का संकेत देता है। १२ अप्रैल के लगभग कहीं सत्ता-परिवर्तन होने किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने का योग है।

१३ मई को मंगल केतु की अशान्तमक युति भी होगी, (अतः अग्निकाण्ड किंवा यान दुर्घटना से हानि होगी।

१५ मई को मंगल कर्क में आकर शनि के साथ सम सप्तक बनाता है, शनि-मंगल दोनों विश्व में कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं वर्षा का अभाव, कहीं बाढ़ से भारी संकट पैदा करेंगे।

१७ मई को शनि मकर-राशि में वक्री होकर ४ अक्टूबर तक शनि वक्री रहता है, इस अवधि में इस वर्ष की प्रमुख घटनाएँ घटित होंगी। किसी देश विशेष की सत्ता में नाटकीय परिवर्तन आएगा, सत्ता परीक्षण का वातावरण बनेगा, कुछ व्यक्तियों का सत्ता मोह भंग होगा। अनेक अन्य राजनैतिक-शक्तियों, आन्दोलनों, प्रवृत्तियों एवं संगठनों की भांति गुट निरपेक्ष देशों की गुटनिरपेक्षता भी एक कठिन दौर से गुजरेगी, विश्व के देशों में ध्रुवीकरण की भावना बढ़ेगी। १५ मई से ४ जून तक स्थिति वरिष्ठ नेता के लिए नेष्ट सिद्ध होगा, किसी नेता की मृत्यु से शोक व्याप्त होगा। अगस्त मास में पांचग्रह वक्री है एवं पांचग्रह अस्त हैं, अतः जुलाई अगस्त मास विशेष घटनापूर्ण होंगे। आन्दोलन, घेराव एवं अराजकता व्याप्त होगी, महंगाई चरम सीमा पर पहुँच जाएगी। लेकिन १४ अगस्त को बृहस्पति के सिंह में आने पर स्थिति में परिवर्तन होगा।

७ अक्टूबर से १९ नवम्बर तक मंगल-शनि की परस्पर दृष्टि रहने से विश्व के किसी देश विशेष का वातावरण क्षुब्ध रहेगा। आन्तरिक अशान्ति से प्रधान नेता को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। किन्हीं दो देशों में आपसी सम्बन्ध कटु होंगे, सीमाप्रान्तों पर सेना की हलचल से शान्तिभंग होने का वातावरण बनेगा, बृहस्पति की स्थिति वातावरण को शान्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

१ जनवरी १९९२ ई० से ८ फरवरी तक धनुराशि में मंगल-राहु का सम्बन्ध रहेगा। उसके बाद ९ फरवरी से १८ मार्च तक शनि-मंगल का एक राशि सम्बन्ध रहने से संवत् का उत्तरार्ध अधिक कठिन परिस्थिति को जन्म देने वाला मालूम देता है। युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी, सीमा विवाद उभरेंगे, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु किंवा अपदस्थ होने का समाचार मिलेगा। जनवरी १९९२ ई० से १८ मार्च तक यान दुर्घटना में जनधन हानि किंवा अग्निकाण्ड से हानि होगी।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ यूरोपीय-देशों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति बढ़ेगी। लेकिन कुछ देशों में परस्पर तनाव की स्थिति भी बनेगी। कुछ देशों की आर्थिक-स्थिति में गिरावट आएगी। क्योंकि धनेश-शुक्र राहु एवं शनि के साथ पंचमभाव है, अतः योजनाओं पर अधिक व्यय होगा।

यूरोपीय देशों की नववर्ष (१जन. १९९१ ई.) की ग्रहस्थिति

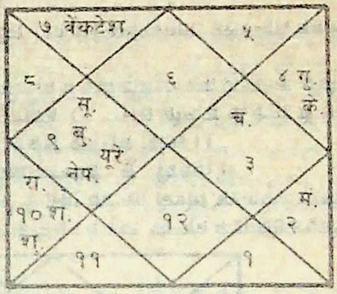

१५ मई से जून के प्रथम सप्ताह तक यूरोपीय देशों में कहीं राजनैतिक-उलझनें बढ़ेंगी। कहीं नेता को विशेष उलझनों का सामना करना पड़ेगा। यह वर्ष ब्रिटेन, अमेरिका एवं अन्य समृद्ध शक्ति सम्पन्न देशों के प्रधान नेताओं के लिए अग्निपरीक्षा का रहेगा। आन्तरिक-विशेष उलझनों का सामना करना पड़ेगा।

७ अक्टूबर से १९ नवम्बर तक कहीं राजनैतिक स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ेगी। जनतन्त्र का प्रभाव बढ़ेगा, कुछ राष्ट्र साम्राज्यवाद की तरफ बढ़ेंगे।

सोवियत संघ में आर्थिक सुधार एवं नियोजित-विकास की प्रक्रिया पर जोर दिया जाएगा। नए युग का सूत्रपात होगा, देश विशेष प्रगति की ओर उन्मुख होगा। परन्तु सोवियत जनतन्त्रों में, विशेषतः ट्रांसकाकेशिया में अलगाववादी एवं जातीय झगड़े भी होंगे। यूरोप में सामरिक-सन्तुलन के पक्ष में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रगति होगी, सत्ता एवं शस्त्रास्त्रों में कटौती पर बातचीत होगी, परन्तु कुछ शक्तिशाली देश इस प्रकार के नए राजनैतिक चिन्तन को स्वीकार नहीं करेंगे, एवं स्वार्थपूर्ण हितों से प्रेरित होकर कृत्रिम रुकावट खड़ी करेंगे। अमेरिका अपने विस्तारवादी कदमों की प्रगति एवं शस्त्रास्त्रों की वृद्धि में जोर देगा।

आगे जनवरी १९९२ से फरवरी के मध्य यूरोप के कुछ देशों में कहीं युद्ध भय वातावरण बनेगा, शनि-मंगल का सम्बन्ध कहीं स्थिति को बिगाड़ेगा।

मुस्लिम-देश

मुस्लिम-देशों की हिजरी सन् १४११ के प्रारम्भ की ग्रहस्थिति

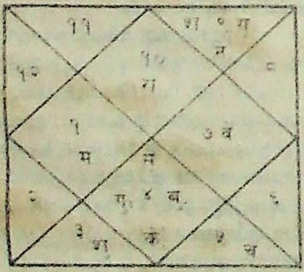

(२४ जुला. १९९० ई.)

मुस्लिम-देशों की हिजरी सन् १४१२ के प्रारम्भ की ग्रहस्थिति

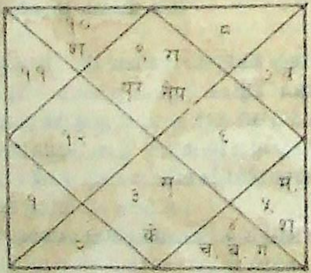

(१४ जुला. १९९१ ई.)

मुस्लिम वर्षकुण्डली में स्थित-ग्रहस्थिति के अनुसार २४ जुलाई १९९० से कर्क-धन-मकर राशि प्रधान यावन राष्ट्रों में भारी अशान्ति व्याप्त होगी। कन्याराशि वाले देश विशेषतः पाकिस्तान, टर्की, ईराक, ग्रीस, वेस्टइण्डीज, कुर्दिस्तान, बंगलादेश आदि में आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी, मई से अगस्त के मध्य एवं अक्तूबर से नवम्बर तक समुद्री तूफान से किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि होने का योग है। आगे जनवरी १९९२ से सम्वत् के अन्त तक भी यावन राष्ट्रों में भारी अघटित घटनाएं घटेंगी। कहीं युद्ध भय वातावरण से अशान्ति, कहीं सेना शासन, कहीं प्रधाननेता की हत्या से नाटकीय परिवर्तन होंगे। पाक में जनतन्त्र पर आघात होगा, सिन्ध आदि में भीषण-संघर्ष की स्थिति बनेगी, जिससे प्रधान शासक आश्चर्यचकित होंगे। मुस्लिम-सम्प्रदायों में परस्पर संघर्ष की स्थिति से सत्तारूढ़ दल किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाएगा। बेरूत, लेबनान, फिलस्तीन में जनता एवं सत्ता पक्ष में संघर्ष की स्थिति बनेगी। स्पेन, मिश्र, कुवैत, ईरान, ईराक, यूनान, टर्की में कहीं तूफान, भूकम्प, समुद्री घटना से किंवा यान दुर्घटना से भारी जनधन हानि होगी। मुस्लिम साइप्रस, सीरिया-लेबनान में अशान्ति बढ़ेगी। एक मुस्लिम राष्ट्र पड़ोसी राष्ट्र की सीमा का अतिक्रमण करेगा, सैन्यबल से अशान्ति का कारण बनेगा, परन्तु इस प्रकार की कूटनीति उसे महंगी पड़ेगी। मुस्लिम देश में कहीं सत्ता हस्तान्तरण होगा, प्रधाननेता को कठिन स्थिति का सामना करना पड़ेगा। मई से अगस्त एवं ५ अक्तूबर से १९ नवम्बर तक तथा जनवरी १९९२ से फरवरी तक की अवधि यावन राष्ट्रों के लिए विशेष संकटपूर्ण रहेगी।

भारत एवं भारत सरकार

स्वतन्त्र भारत की जन्म कुण्डली

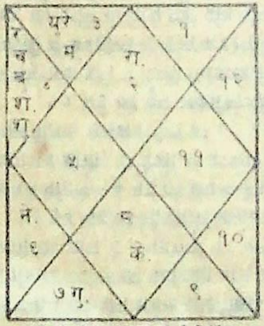

१४-१५ अगस्त १९४७

इष्ट घटयादि ४५।२५

स्वतन्त्र भारत का ४४वां वर्ष प्रवेश

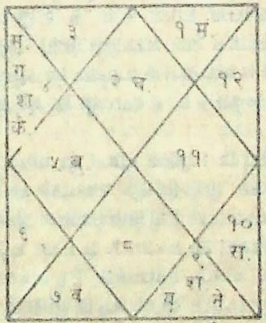

१५ अगस्त १९९० ई०

भारत गणतन्त्र का ४२वां वर्ष प्रवेश

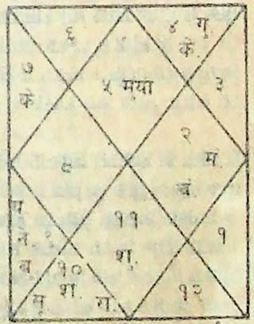

२६ जनवरी १९९१ ई.

उल्लिखित स्वतन्त्र भारत की ग्रहस्थिति से स्पष्ट है कि सन् १९४७ को अगस्त मध्यरात्रि वृष लग्न में स्वतन्त्र भारत का उदय हुआ है, इस समय राहु लग्नस्थ एवं केतु वृश्चिकस्थ है। लग्नेश शुक्र, सूर्य की सन्निधि में है। सभी ग्रह राहु एवं केतु के मध्य आ गए हैं, इस प्रकार 'कालसर्पयोग' में भारत को स्वतन्त्रता मिली है। यह 'कालसर्पयोग' भारत के लिए अनेकों समस्याओं को विरासत में लाया है, कश्मीर, पंजाब, भाषा विवाद, प्रान्तीयता, क्षेत्रवाद आदि समस्याएं उत्तरोत्तर विषम होती गई हैं।

जन्मलग्न के सापेक्ष्य स्वतन्त्र भारत के ४४वें वर्ष (जो कि १५ अगस्त १९९० से १४ अगस्त १९९१ ई० तक प्रभावी रहेगा) का लग्न भी वृष ही आ रहा है। स्पष्ट है, कि जन्म लग्न एवं वर्ष लग्न दोनों एक ही आ रहे हैं, यह एक तरह से द्विजन्मा की भान्ति नेष्ट फलप्रद वर्ष मालूम देता है। भारतीय शासनतन्त्र के समक्ष अनेक प्रश्नचिन्ह उपस्थित होंगे। अगस्त १९९० ई० से इस ग्रहस्थिति का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे, कि अक्तूबर के अन्त एवं नवम्बर के पूर्वार्ध तक भारत में विषम-घटना चक्र चलेगा, जिसका प्रभाव वर्तमान-राजनीति एवं जनसाधारण पर भी होगा। नेतावर्ग को इस विषम परिस्थितिजन्य-चक्रव्यूह से निकल पाना सम्भव प्रतीत नहीं होता। द्विजन्मा योग जैसी वर्ष लग्न की ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है कि घटनाचक्र की विषमता गम्भीररूप धारण कर सकती है, जिसका प्रभाव लगभग १२ अप्रैल सन् १९९१ ई० तक सामने आएगा। भारत शासन तन्त्र की विषमतम-सामाजिक-धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों में उलझने का योग है, परिणामस्वरूप अराजकता जैसा वातावरण उपस्थित होगा, हत्याकाण्ड, परस्पर तनाव से शान्ति भंग होगी। इस समय की ग्रहस्थिति के परिपाक का परिणाम चिन्ताजनक एवं राजनैतिक अस्थिरता देने वाला होगा। अगस्त तक भारत की राजनीति क्रियानतृत्व में विशेष उलटफेर होने वाले प्रतीत होते हैं।

गणतन्त्र वर्ष प्रवेश कुण्डली की ग्रहस्थिति का परिशीलन करने से ज्ञात होता है, कि लगभग दिसम्बर १९९० से अप्रैल १९९१ ई० तक की ग्रहस्थिति भारत की जनता में घोर अशान्ति पैदा करने वाली है। लेकिन बृहस्पति की शनि-राहु पर दृष्टि कुछ उच्च नेताओं की बुद्धिमत्ता से समस्या का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समाधान कर देगी । जनता में परस्पर विवाद एवं साम्प्रदायवाद से स्थिति बिगड़ेगी, अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए सैन्यबल का सहारा लेना पड़ेगा । गणतन्त्र कुण्डली में मुन्थेश-सूर्य, छठे भाव में शनि-राहु के साथ होने से, कहीं किसी विशेष-विषय को लेकर सरकार एवं जनता में विवाद खड़ा होगा, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे ।

गणतन्त्र वर्ष कुण्डली के तीसरे प्लूटो, पंचम यूरेनस-नेपच्यून-बुध एवं छठे शनि-राहु सूर्य का होना इस वर्ष गणतन्त्र के लिए कठिन परिस्थितियों वाला तो है, परन्तु गणतन्त्र अक्षुण्ण रहेगा । सत्तारूढ दल को राष्ट्रवाद की ओर ध्यान देना चाहिए अन्यथा क्षेत्रवाद एवं जातिवाद के विषय आगे चलकर गणतन्त्र के लिए प्रश्नचिन्ह बन जाएंगे । इस ग्रहस्थिति का परिपाक ई. सन् २००० के लगभग होगा ।

सं. २०४८ वि० का प्रवेश शनैश्चरी अमावस को होगा एवं इस वर्ष का राजा एवं मन्त्री (ये दोनों पदों का स्वामी) सूर्य ही है – **"स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्निचौरादिजं भयम्"** । दोनों प्रमुख पदों पर एक ही ग्रह का आधिपत्य होने से यह वर्ष प्रधान नेता के लिए विशेष उलझनपूर्ण सिद्ध होगा, अपने निकट सहयोगी एवं सलाहकारों की चाटुकारिता किंवा यथार्थवाद से अलग रखने की नीति से प्रधानपद विवादग्रस्त हो सकता है । देश में अग्निकाण्ड, हत्याकाण्ड एवं घेराव, चोरी ठगी की अनैतिक घटनाएं अधिक होंगी । गुरुमान से यह **'तारण'** नामक संवत्सर है : इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है –

"कथञ्चिन्निखिला लोकाः तरन्ति प्रतिपत्तनम् ।
नृपद्वन्द्वे अतीव रोगाद् भैषज्यं तारणाब्दके ।"

रोग-शोक, किसी विशेष परिस्थितिवश किंवा युद्धभय से जनता अशान्त क्षेत्र को छोड़कर शान्त क्षेत्र की तरफ पलायन करेगी । राजा सूर्य होने से **"चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम्"** फलानुसार यह वर्ष चौरभय, अग्निकाण्ड एवं किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का विछोह देने वाला है ।

इस वर्ष ग्रह परिषद् में आठ स्थान क्रूरग्रहों को प्राप्त हुए हैं, केवल दो स्थान शुभग्रहों को मिले हैं । अतः यह वर्ष ग्रहपरिषद् के अनुसार शासकों की स्वेच्छाचारिता का है, कुछ प्रान्तों में विशेष समस्या किंवा सम्प्रदाय, विशेष के उच्छृंखल व्यवहार से स्थिति नाजुक होगी, शनि की दृष्टि उत्तरी प्रान्तों पर होने से उत्तर प्रदेश एवं कुछ अन्य प्रान्त इस ग्रहस्थिति के प्रभाव में आएंगे । कश्मीर, मध्यप्रदेश, असम आदि में स्थिति बिगड़ेगी । इस समय प्रधान नेताओं को ऋतम्भरा प्रज्ञा एवं विवेक से काम लेना होगा, अन्यथा परिणाम ठीक न होंगे ।

भारत का नेतृत्व एवं सत्तारूढ़ दल का पदारूढ़ लग्न

२ दिसम्बर सन् १९८९ ई० को श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने नई दिल्ली में मध्यान्ह के समय १२ बजकर १६ मिनट पर प्रधानमन्त्री पद की शपथ ग्रहण की । उस समय की ग्रहस्थिति इस प्रकार थी –

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी का पदारोहण लग्न

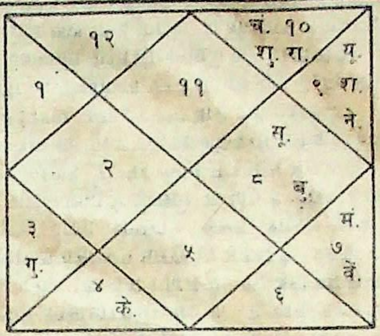

पंचमभाव (योजना स्थान) पर शनि-प्रे नेपच्यून की दृष्टि है, पंचमभाव में गुरु से ये क्रूरग्रह दृष्ट है, अतः योजनाओं को लागू करने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा । मित्र किंवा सलाहकारों से इन्हें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि मित्र क्षेत्र का स्वामी शुक्र, व्यवसाय में राहु के साथ एवं मंगल से दृष्ट है, अतः इन्हें चाटुकार एवं निजीजनों की मन्त्रणा किंवा अन्ततः निजी सहयोगीवर्ग से ही हानि पहुंचने का संकेत ग्रहस्थिति से मिलता है । शुक्र नवमेश होकर व्ययस्थान में होने से, कर्मेश-मंगल, अपनी राशि से व्यय स्थान में होने से इस संवत् का पूर्वार्ध भारी विषम-समस्याओं को लेकर उपस्थित होगा । इस समय सभी पार्टियों की मन्त्रणा एवं एकमात्र देशहित चिन्तन की भावना ही इन्हें यथावस्थ रहने देगी, अन्यथा स्थिति में परिवर्तन आएगा ही । १२ अप्रैल तक शनि-राहु का गोचर में एक जगह रहना इनके लिए श्रेयस्कर प्रतीत नहीं होता । आगे १७ मई से ४ अक्तूबर तक शनि का वक्रकाल भी इनके स्वास्थ्य के लिए एवं पद-गरिमा के अनुकूल नहीं । आगे सन् १९९२ के जनवरी-फरवरी तो इनके राजनैतिक जीवन के सामने प्रश्नचिन्ह लगाने वाले हैं, स्थिति उत्तरोत्तर दुर्भर प्रतीत होती है, संक्षेप से कहें तो सं. २०४८ भारत की राजनीति में विशेष उथल-पुथल वाला प्रतीत होता है; ग्रहगति के आधार पर लिखा है, सर्वज्ञ तो प्रभु ही है ।

हाँ, श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह का शुद्ध प्रामाणिक इष्ट काल उपलब्ध नहीं है । हमें कर्क लग्न से कुण्डली उपलब्ध हुई थी, परन्तु कुछ पत्रकारों ने इनका लग्न तुला लगाया है, अतः इस बारे में अधिक प्रामाणिक कुछ लिख पाना संभव नहीं ।

संवत् के आरम्भ में २९ मार्च को मंगल मिथुन राशि में आकर शनि-राहु को देखेगा, अतः देश में महंगाई बढ़ेगी, जनता में आक्रोश बढ़ेगा, लेकिन शनि-राहु पर वृहस्पति की दृष्टि स्थिति को विशेष बिगड़ने नहीं देगी । १० अप्रैल के बाद राहु के धनराशि में आने पर राहु एवं मंगल का सम सप्तक योग बनेगा । यह योग अनेक राजनैतिक उलझनों को पैदा करेगा, कहीं राजनैतिक उथल-पुथल होगी, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होने का योग है । अग्निकाण्ड, भूकम्प, तूफान किंवा यान दुर्घटना से हानि होने का योग है । महंगाई पर कंट्रोल करने से जनमानस का विश्वास शासन पर से क्षीण होगा ।

१४ मई को सोमवती अमावस है, अमावस वाले दिन कृतिका नक्षत्र का योग भी नेष्ट फलप्रद है, इससे पहिले १३ मई को मंगल केतु की अंशात्मक युति भी होगी, अतः आगे वर्षा की कहीं विशेष कमी अनुभव होगी, दो देशों में परस्पर तनाव की स्थिति बनेगी । या किसी प्रान्तीय सरकार के पतन से राजनैतिक उलझनें पैदा हों ।

१५ मई को वृष संक्रान्ति को वृष का ही चन्द्र है, १५ मई से ५ जुलाई तक शनि-मंगल का समसप्तक होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति को पदत्याग के लिए विवश होना पड़ेगा । सीमाप्रान्तों किंवा प्रान्तों में अशान्ति के समाचार मिलेंगे । किसी समीपस्थ-राष्ट्र में प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हो । मं. गु. शु. का शनि के साथ पूर्ण प्रति योग भी उ. प्र., म.प्र., पंजाब, जम्मू कश्मीर एवं लंका आदि में कहीं राजनैतिक-विप्लव, कहीं आन्तरिक कलह क्लेश से घोर अशान्ति बढ़ेगी । कहीं दुर्भिक्ष के आसार दिखाई दें ।

"मन्दार सौरि-सुरराज मन्त्री यदैक राशौ समसप्तके वा ।
अयोध्य-लंकापुर-मध्यदेशे क्षुधाभयं शस्त्रभयं करोति ।"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आगे अगस्त मे (बुध-श. श. रा. के) ये ५ ग्रह वक्री हैं, तथा अगस्त उत्तरार्ध में बुध-गुरु, शुक्र-राहु-केतु ये ५ ग्रह अस्त हैं । इस वर्ष समीपस्थ देश की अशान्ति के कारण हमारे देश में नई समस्याओं का जन्म होगा, लंका से युद्धाग्नि की लपटें तमिलनाडु पहुंचेंगी । तमिलनाडु में अलगाववाद किंवा अराजकता का वातावरण चिन्ता का कारण बनने की ग्रहस्थिति है, आतंकवाद जोर पकड़ेगा । अगस्त में चतुर्ग्रही एवं पञ्चग्रही योग का प्रभाव विश्वव्यापी राजनीति पर होगा, देश में नए राजनैतिक संकट उभरेंगे, स्थिति प्रधाननेता के लिए अधिक उलझनपूर्ण रहेगी, मन्त्री मण्डल में विशेष विस्तार किंवा रद्दोबदल करने पड़ेंगे । प्राकृतिक-प्रकोप किंवा वर्षा पानी के अनुकूल न होने से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी । जनजीवनोपयोगी वस्तुओं को सुलभ बनाने के लिए नए कानून बनाने पड़ेंगे । भारत-सरकार देशवासियों को सुख-सुविधा प्रदान करने के लिए वचनबद्ध रहे, नए प्रयोग हों एवं नए कानून बनें ।

७ अक्तूबर से १९ नवम्बर तक की समयावधि में शनि-मंगल की परस्पर दृष्टि विशेष घटनाचक्र को जन्म देगी । उत्तर-प्रदेशादि में राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमनस्य शक्ति परीक्षण का वातावरण बनेगा । पश्चिमी प्रान्तों एवं देशों की सीमाओं पर सैन्य हलचल रहे । भारत के सीमा प्रान्तों पर स्थिति का विशेष ध्यान रखना चाहिए । देश के सीमावर्ती प्रान्तों की अशान्ति का शत्रुदेश लाभ उठाने की ताक में रहे, लेकिन कूटनीतिपूर्ण चाल का लाभ न मिलेगा । भारत में महंगाई के विरुद्ध जोरदार आवाज उठेगी, शासनतन्त्र नयी व्यापारिक नीति निर्धारित करेगा, जिससे गरीब वर्ग को राहत मिलेगी ।

जनवरी से ९ फरवरी के लगभग तक राहु-मंगल एक राशिस्थ हैं, लेकिन इनपर बृहस्पति की दृष्टि होने से अधिक बुरा फल न कर सकेंगे) । वर्षा से कहीं अवरोध एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकते हैं, लेकिन धुन्ध एवं अधिक हिमपात से कहीं जनधन हानि हो । प्राकृतिक-प्रकोप यान दुर्घटना एवं आगजनी आदि से भी हानि संभव है ।

इस वर्ष मकर संक्रान्ति मंगलवारी होने से एवं मकर राशि में सूर्य के साथ-शनि का सम्बन्ध होने से प्रधान नेता के लिए अशुभ है । इस वर्ष आन्तरिक-विषमताएं बढ़ेंगी । उग्रवाद के अलावा बढ़ रही महंगाई से जनता में रोष फैलेगा । शासनकाल में पारस्परिक बढ़ रही विषमताओं से दृष्टिगत हो रही अस्थिरता से सरकार के प्रति जनता का मोहभंग होने से अधिक देर टाला नहीं जा सकेगा । **ग्रहों की युति प्रतियुतियों के परिणामस्वरूप जनता दल में गृहयुद्ध की सी स्थिति बनेगी, शनि-मंगल की स्थिति दृष्टि विचार से सत्तादल एवं जनता दल में बिखराव अवश्यंभावी है, परिणामस्वरूप अस्थिरता का वातावरण बनेगा । जनता दल एवं वामपंथी दलों में भी संवत् के पूर्वार्ध में ही मतभेद बढ़ेंगे । इस वर्ष दलित वर्ग का प्रतिनिधि शनि ग्रह वर्ष में तीन बार मंगल के साथ दृष्टि सम्बन्ध करेगा, अतः अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण की नीति, वोट की राजनीति एवं जनमानस में विभाजन की राजनीति से मध्यावधि चुनाव की संभावना बढ़ेगी । लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की नीति एवं जनता दल में असन्तुष्ट नेतृत्व इस सरकार को भारी दलदल में ले जाकर खड़ कर देगा । पार्टी विशेष में आपसी खेमेबाजी, व्यक्तिवाद एवं राजनैतिक-महत्त्वाकांक्षाओं का टकराव इस वर्ष और अधिक गंभीर हो जाएगा । संवत् के अन्त में शनि-मंगल का एकराशि सम्बन्ध–"युद्धदौ शनि-माहेयौ" इस प्रमाणानुसार देश के लिए चिन्ताकारक एवं सीमाप्रान्तों पर विशेष ध्यान रखने का है, कहीं समीपस्थ देश की आन्तरिक-अस्थिरता हमारे वातावरण को अशान्त कर सकती है, सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को सुदृढ़ एवं सुसन्नद्ध रखना होगा । तमिलनाडु, हि.प्र., पंजाब, कश्मीर एवं राजस्थान की तरफ हमें सतर्क रहना है । शनि-मंगल देश में एवं सीमाप्रान्तों पर अशान्ति का कारण बन सकते हैं ।**

भारत का जलवायु एवं वर्षा

इस वर्ष वर्षा-पानी के स्वामी (मेघेश) शनिदेव हैं) कहीं तूफान किंवा वायुवेग से हानि हो, वर्षा की कुछ प्रान्तों में कमी अनुभव हो । इस वर्ष नवमेघों में 'पुष्कर' नामक एवं चतुर्मेघों में 'द्रोण' नामक मेघ है, अतः वर्षा पर्याप्त हो । इस वर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर है–अतः वर्षा कुछ क्षेत्रों में बहुत कम हो, खड़ी फसल को हानि हो । इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"रोहिणी नाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत् ।
वृष्टि हानि स्तदा ज्ञेया सर्व सस्यं विनश्यति ।।"

इस वर्ष वर्षाविश्वा १७ होने से वर्षा पर्याप्त होने का संकेत मिलता है ।

इस वर्ष २२ जून १९९१ ई० को १३ घंटा ६ मिनट पर दिन में सूर्य आर्द्रानक्षत्र में शनिवार को प्रवेश करता है । "विचार्य [illegible] जलप्रक्षय कारकः" प्रमाणानुसार इस वर्ष कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी रहेगी, कुछ प्रान्त अधिक वर्षा से प्रभावित होंगे ।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

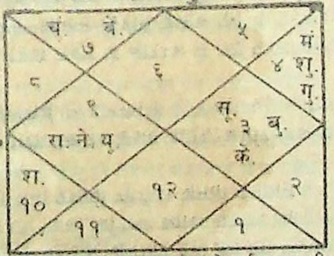

आर्द्राप्रवेश कुण्डली में पंचमस्थ-शनि पर मंगल-गुरु शुक्र की दृष्टि होने से वर्षा में अवरोधक ग्रहस्थिति बनती है । उत्तर-दक्षिणी प्रान्तों में कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से हानि, व कहीं सूखग्रस्त क्षेत्र रहेंगे ।

संवत् के प्रारम्भ में तापमान कुछ ऊंचा रहे । लेकिन मार्च २०, २१, २२, २५, २८ एवं अप्रैल ३, ४, ६, ७, १०, १२, १४ को भूटान, सिक्किम, बंगलादेश, पूर्वी आसाम, बंगाल आदि में वर्षा के योग हैं ।

अप्रैल १५, १६, २२, २७ को राजस्थान, उ. प्र. में कहीं तूफान किंवा वायुवेग से हानि, उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा । ३० अप्रैल, मई ३, ९, १०, ११, १५, १६, १७, २१, २५, ३०, जून ३, ६, से ९ तक बम्बई, गोआ, सिक्किम, भूटान, आसाम, काठमाण्डु में वर्षा पानी के योग हैं । मई, जून, जुलाई की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी अनुभव होगी, कुछ प्रान्त अतिवर्षा से बाढ़ग्रस्त होगी । लेकिन १३ से १६ एवं १९ जून को बम्बई, शिलांग, सिक्किम में वर्षा होगी । जून २९ एवं जुलाई १, २, ५, ६ को व्यापक वर्षा के योग हैं । ध्यान दें, कि–२ जुलाई से शुक्र सिंह राशि में आकर मघानक्षत्र के मंगल के साथ योग करेगा–वर्षा की कमी से किसान कुछ प्रान्तों में चिन्तित होंगे । "**सिंह शुक्र जब होय भवानी चाले पवन नहि बरसे पानी**"– अतः किसानों को भारी वर्षा की प्रतीक्षा न करके अपनी समस्या का समाधान सोच लेना चाहिए । पुनरपि १३ से १६, १९ से २२ जुलाई तक हि. प्र., पंजाब, हरियाणा आदि उत्तरी प्रान्तों में वर्षा के योग हैं । जुलाई २७, ३०, अगस्त १ से ६ एवं १३ से २२ तक उड़ीसा, बंगाल, गुजरात, सिक्किम्, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली आदि में वर्षा के योग हैं ।

सितम्बर में चतुर्ग्रही योग कहीं बाढ़ वर्षा से हानिकारक योगों वाला है, अक्तूबर, २, ४, ७, ११, १५, १७, १८, २४, ३० को लंका, मद्रास, आसाम एवं उत्तरी भारत में कहीं बादल चाल बूंदाबांदी एवं खण्डवृष्टि के योग हैं । तापमान काफी गिरेगा, कुछ प्रान्तों में वायुवेग से शीत का प्रभाव अनुभव होने लगेगा ।

नवम्बर २, ३, ५, ६, १२, १६, २०, २१, २४, २७, ३० को कहीं बादल वर्षा, कहीं खण्डवृष्टि कहीं पर्वतशिखरों पर हिमपात के समाचार मिलेंगे, शीतलहर जोर पकड़ेगी । दिसम्बर २, ३, ६, १२,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१३, १४, १९, २९, ३०, ३१ को कुछ वर्षा के योग हैं, उत्तरी भारत में शीतलहर जोर पकड़ेगी। कहीं खण्डवृष्टि एवं धुन्ध का वातावरण बनेगा। हि.प्र. आदि में जोरदार हवा के साथ वर्षा एवं भारी हिमपात होगा।

जनवरी (१९९२ ई०) में १, ५, १२, १३, १४, १८, २०, २१, २३, २४, २५, २६, को उत्तरी भारत भयंकर शीत की चपेट में रहेगा, हिमशृंग हिमपात से सजेंगे।

९ फरवरी से १८ मार्च तक शनि-मंगल एकत्र होने से जलवायु कृषकों के अनुकूल मालूम नहीं देता। ऋतु में परिवर्तन किंवा ऋतु विपर्यय अनुभव होगा।

नोट—उल्लिखित वर्षा का विचार किसी स्थान विशेष के आधार पर नहीं है, जिन जिन तारीखों में वर्षा के योग मिलते हैं, उनमें वर्षा की चर्चा की गई है। स्थानीय वर्षा की भविष्यवाणी भी सही की जा सकती है एतदर्थ काफी परिश्रम एवं समय की आवश्यकता है।

भारत के प्रमुख कुछ प्रान्त

पंजाब—प्रभाव राशि मीन है। १४ अगस्त १९९१ तक शान्त्यर्थ सक्रिय-पग उठाए जाएंगे, सत्ता के लिए शक्ति-परीक्षण का समय उपस्थित होगा, स्थिति अभी अनुकूल होती मालूम नहीं देती। साम्प्रदायिक-सद्भाव यहां होने पर भी कुछ बाह्य तत्त्व शान्ति भंग करेंगे, किसी भी सख्त पग उठाने की बजाय शान्त्यर्थ गहन चिन्तन की आवश्यकता है, जिसके आधार पर ठोस कार्यनीति, सीमा नियन्त्रण के लिए बनानी होगी, व्यवस्था किंवा सुरक्षार्थ केन्द्र को विशेष कार्यनीति बनानी पड़ेगी। पंजाब प्रान्त के लिए १५ मई से ५ जुलाई एवं ७ अक्तूबर से १९ नवम्बर १९९१ तक तथा जनवरी १९९२ से फरवरी तक की ग्रहस्थिति विशेष घटनापूर्ण एवं अशान्तिमय वातावरण बनाने वाली है।

हरियाणा—प्रभाव राशि मिथुन है। आठवें शनि है, कुछ समय के लिए राहु का सम्बन्ध शनि से है, अतः राजनैतिक-उलझनें बढ़ेंगी। जनता दल भाजपा की नीति में मतभेद बढ़ेगा। वर्तमान शासन पर जनमानस का अविश्वास बढ़ेगा। मोर्चे में बिखराव का परिणाम राजनैतिक अस्थिरता रहेगी। सत्ता प्राप्त्यर्थ शक्ति-परीक्षण का समय भी नाटकीय ढंग से उपस्थित होगा। प्रान्त-प्रगति में बाधा आएगी। गत वर्ष लिखा था, कि **"शनि के वक्री होने पर मई में मिथुन राशि पर शनि की दृष्टि पुनः आ जाएगी, यहाँ की सत्तारूढ़ पार्टी के लिए यह समय प्रतिकूल है, प्रान्त की प्रगत्या धायक योजनाओं में गतिरोध पैदा होगा। जनता का विश्वास सत्तारूढ़ दल पर से क्षीण होगा। यहाँ की सत्ता में कुछ परिवर्तन के आसार बनेंगे। साम्प्रदायिकता, एवं भाई भतीजाबाद से जनता परेशान हो।"**

सो, यह भविष्यवाणी शतप्रतिशत ठीक रही यह पाठक जानते ही हैं। अब भी यहाँ की राजनैतिक अस्थिरता का लाभ कांग्रेस ले जाएगी। १४ अगस्त के बाद यहाँ राजनैतिक उथल-पुथल होने के योग हैं।

हिमाचल प्रदेश—प्रभावराशि मीन है, १५ मई से ५ जुलाई तक शनि-मंगल की स्थिति एवं ७ अक्तूबर से १९ नवम्बर तक शनि-मं. का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध एवं जनवरी १९९२ से फरवरी तक की ग्रहस्थिति इस प्रान्त के लिए उलझनपूर्ण एवं विषम-परिस्थिति को जन्म देगी, पुनरपि सशक्त नेतृत्व स्थिति पर नियन्त्रण पा सकेगा एवं नई प्रगत्या धायक योजनाओं को सक्रियरूप दिया जाएगा। बागबानी, तथा उद्योग स्थापित होंगे। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में भी यहां प्रगति होगी। वर्तमान शासन की निष्ठा तोषणात्मक नीति में न रहने से विपक्षीदल लाभ उठाने के प्रयास में रहेगा, जिसके परिणाम दूरगामी होंगे।

उत्तर-प्रदेश—प्रभाव राशि मीन है। संवत् के आरम्भ से (किंवा संवत् के पूर्व ही) यहां साम्प्रदायिक तनाव बढ़ेगा, अशान्ति बढ़े परिणामस्वरूप शासन तन्त्र को कठोर पग उठाने पड़ें। प्रधान शासक के लिए यह वर्ष अग्निपरीक्षा का है। मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन एवं राजनैतिक उथल-पुथल होने का योग है। अगस्त १९९१ तक यहां राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण बनेगा। अनुशासनात्मक पग कठोर उठाने पड़ेंगे। हड़ताल, घेराव, आदि उपद्रव होंगे, पश्चिमी भाग अधिक प्रभावित होगा।

जम्मू कश्मीर—प्रभाव राशि तुला है। मकर के शनि का प्रभाव इस प्रान्त के लिए विशेष कष्टप्रद एवं घटनापूर्ण रहेगा। ग्रहस्थिति के अनुसार शान्ति स्थापित करने के भरपूर प्रयासों के बाद भी स्थिति विषम रहे। गुरिल्ला युद्ध की सी स्थिति को विदेशी तत्त्व जन्म देंगे। यहां आतंकवाद एवं अलगावबाद को तूल देने वाले विदेशी तत्त्व स्थिति को भयावह बनाएंगे। इस सीमावर्ती प्रान्त में सैन्यबल का प्रयोग हो एवं सीमा पर पाक की कुनीति को मुंहतोड़ उत्तर देना पड़ेगा, सेना को सीमा पर सन्नद्ध रहना पड़ेगा।

कुछ अन्य राष्ट्र

पाकिस्तान—प्रभाव राशि कन्या है। पंचमभाव में ११ अप्रैल से राहु मंगल का समसप्तक, १५ मई से ५ जुलाई तक शनि मंगल का समसप्तक यहां की शासन सत्ता में दमन की नीति को बढ़ावा देगा। यहां आन्तरिक-अशान्ति बढ़ेगी एवं सेना का शासन पर दबदबा रहेगा। आन्तरिक-अशान्ति के कारण सीमाप्रान्तों पर सेना की हलचल पैदा करेगा, परिणाम शुभ मालूम नहीं देते। आगे ७ अक्तूबर से १९ नवम्बर तक एवं जनवरी (१९९२ ई०) से फरवरी तक का समय यहां राजनैतिक अस्थिरता वाला है। पड़ौसी देश से सम्बन्ध तनावपूर्ण एवं विषम होंगे। सिन्ध-बलूचिस्तान में आन्तरिक क्रान्ति से स्थिति उलझनपूर्ण एवं अलगाबाद बढ़ेगा।

श्रीलंका—शनि-राहु एवं मंगल की युति एवं राशि सम्बन्ध के अनुसार यहां इस वर्ष भयंकर अशान्ति का साम्राज्य समाप्त न होगा, सत्ता में परिवर्तन एवं किसी विशिष्ट व्यक्ति को पद त्याग के लिए विवश होना पड़ेगा। हत्याकाण्ड उत्तरोत्तर बढ़ेंगे। सेना प्रभावी रहेगी। जनता पलायन करे, जिससे पड़ौसी देश की स्थिति उलझनपूर्ण बने।

रूस—प्रभावराशि कुम्भ है। यहां की राजनीति में सुधारात्मक पग उठाए जाएंगे, अमेरिका अन्य राष्ट्रों, विशेषतः भारत से सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे। संवत् का उत्तरार्द्ध एवं प्रारम्भ के ३, ४ मास प्रधान नेता के लिए कुछ उलझनपूर्ण रहेंगे।

अमेरिका—प्रभावराशि मिथुन है। प्रधाननेता के समक्ष संवत् के आरम्भ में कई प्रश्नचिन्ह उपस्थित होंगे। विश्वशान्ति के लिए नए आयाम बनेंगे, लेकिन विशेष प्रभाव पग न उठेंगे। निरस्त्रीकरण एवं शस्त्रीकरण द्विमुखी नीति रहेगी। यह वर्ष यहां के प्रधाननेता के लिए अग्निपरीक्षा का है।

पाठको! अतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योति-विज्ञान-दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं मेरी अल्प विषया मति में प्रस्फुटित हुई हैं। आपके समक्ष उपस्थित कर दी हैं। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुंसमर्थ, भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं, उनकी प्रबल मायाशक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य लेखन में प्रवृत्ति बाल चापल ही तो है:—"त्वं वागीश्वरो वेत्ति नाहं वेदिन कदाचन।"

लेखपूर्ण होने की तिथि—
सं. २०४७ वि. भाद्रपद शुक्ल पक्ष त्रयोदशी चन्द्रवार,
(३ सितम्बर, सन् १९९० ई०)

निवेदक—
इन्दुशेखर,
मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय,
मु. पो. कुराली (रोपड़)
पंजाब

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार विमर्श

वि० संवत् २०४७ की ग्रहचाल के आधार पर व्यापारिक-वस्तुओं में उतार-चढ़ाव का विवरण

मनुष्य का भाग्य मनुष्य के कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक मनुष्य की स्थित को कभी सुधारता है, कभी बिगाड़ता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य कभी ऊपर उठता है, कभी नीचे गिरता है- "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिये डूबा ही रहेगा—यह धारणा भ्रामक है, व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको शीघ्र ही उत्तम लाभ कब हो जाए ? जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते वे शीघ्र ही डूब सकते हैं। व्यापार तो किस्मत के सिकन्दर का ही प्रत्यक्ष भाग्य देता है। अतः किसी-भी तरह का व्यापार करने से पहिले आप पत्राचार द्वारा या प्रत्यक्ष मिलकर ग्रहस्थिति पर विचार करा लें, विश्वास रखें ग्रहस्थिति के आधार पर किए गए व्यापार में आप हानि में न रहेंगे। आप भारी हानि से भी बच सकते हैं।

जीवन में ग्रहस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने से यह बात निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुकी है कि, जितना लाभ आपको होना है, उतना ही होगा, अधिक नहीं—"यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम्" अर्थात् जो मेरा है वह मुझे मिलेगा ही, उसे और कोई नहीं ले सकता। अतः जीवन पर ग्रहों का संकेत समझकर ही व्यापार करना बुद्धिमत्ता है।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है। हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद है, उन ग्रहों के अधिकार क्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें। तभी लाभ ले सकेंगे।

हाजर एवं वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक-जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां विचार-विमर्श में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेजी मन्दी का मशवरा देते हैं, व्यापारियों, निराश न हों, हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

संवत् २०४७ में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि इस साल व्यापारिक जगत् में विशेष उथल-पुथल होगी। गुड़, ज्वार, मक्का, बाजरा, चना, ग्वार, खांड एवं दालचाना में भयंकर तेजी आयेगी। सरसों, तिल, घी एवं ग्वार, कपास, बिनौला एवं चांदी, सोना आदि के भावों में भी जबरदस्त उतार-चढ़ाव आयेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि इस वर्ष व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं। अतः वार्षिक ग्राहक बनकर समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। इस वर्ष ग्रहचाल के खिलाफ चलने वाले व्यापारी भारी हानि में रहेंगे। जिस जगह व्यापार के लेख में हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर फौरन आकर मशवरा लें तो अच्छा रहेगा, वरना अपना पूरा पता लिखकर जवाबी बन्द लिफाफा साथ भेजें, पत्र हिन्दी में दें।—नोट कर लें।

'व्यापार विमर्श' में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को सावधान करते रहे हैं। गत वर्ष भी हजारों व्यापारी सोना, चांदी एवं अन्य जिन्सों में लाभ उठा चुके हैं। ताजा परामर्श प्राप्त करके हमारे ग्राहक व्यापारी लाखों का लाभ उठा गये हैं। **सं. २०४४ में तेलों, तिलहनों में भयंकर तेजी से व्यापारी हमारे परामर्श से करोड़पति बने हैं। हमने पृष्ठ नं. ३१ पर कालम नं. २ में १९ अगस्त के** व्यापारिक फलादेश में स्पष्ट रूप से व्यापारियों को "सरकार की व्यापारिक नीति को ध्यान में रखकर काम करने की सलाह" दी थी एवं तेल, तिलहन आदि में जबरदस्त मन्दी की घोषणा की थी, तदनुसार तिलहन एवं तेलों में एकदम भयंकर मन्दी आयी और व्यापारी हानि से बच गये। सं. २०४५ में चना के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ उठा चुके हैं, सरसों, तेल, तिलहन में मन्दी का संकेत हम समयानुसार अपने व्यापारियों को देते रहे हैं, जिससे समयानुसार हमारे साथ यहां आकर मशवरा करने वाले व्यापारी भारी हानि से बचे हैं। सं. २०४६ में बिनौला, सरसों, चीनी एवं दालचाना आदि अनाजों के व्यापारी हमारे परामर्श से विशेष समयावधि में व्यापार करने पर उत्तम लाभ प्राप्त कर चुके हैं। हमारे बताए गए समय में उत्तम लाभ प्राप्त करने वाले व्यापारियों ने भारत के विभिन्न प्रान्तों से व्यापारिक सफलता पत्र लिखकर जो हमारा उत्साह बढ़ाया है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

सं. २०४८ में ग्रहगति के अनुसार तेजी-मंदी की विशेष लाइनों का संकेत यहां देंगे, तथा सामयिक तेजी-मंदी का भी विवेचन करेंगे। फिर भी व्यापारियों से आग्रह है कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखते हुए अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करने के लिये आगे बढ़ें। हमारे मशवरे के मुताबिक अगर कदाचित वायदा या हाजिर की लाइन विपरीत चले तो तुरन्त मशवरा लें या सौदा काट कर हानि से बचें—ऐसी स्थिति में हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रखो कि वायदा व्यापार में नुकसान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुकसान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुकसान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रहगति के आधार पर निर्णय कर लें कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का। मन में यह धारणा बांधकर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि यह योग भी मन्दी का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्द का हो तो ऐसी स्थिति में हर चढ़े भाव में बचाव करते रहिये। थोड़ा-थोड़ा सौदा काट कर नफा से सलटते रहिए। (५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की यह जानने के लिए 'खास' वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे, चौथे, आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नये-नये भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो कि वस्तु में अब मन्दी की लहर चल रही है, उसे मन्दी से उछाल में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जायें और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नये बनते जायें तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आये तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मान लो, आपने तेजी का काम किया। उधर सौदा करते ही बाजार में मन्दी की लहर चल रही हो तो किसी भी समय तेजी का उछाल आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे। हमेशा ग्रहयोग को आधार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मानकर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुएं अपनी पाराशरी शुभ दशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रह स्थिति वाले व्यापारियों को वायदों का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

संवत् २०४८ की शरत् सस्यकालीन कुण्डली के अनुसार केन्द्र का स्वामी शुक्र का सम्बन्ध मंगल-केतु के साथ है, राहु-यूरेनस-नेपच्यून की लग्नेस-शुक्र पर दृष्टि है। केन्द्र में कोई शुभ ग्रह नहीं है। अतः इस वर्ष खरीफ की फसल से किसान आशानुकूल उत्तम लाभ न प्राप्त कर सकेंगे। मूंग, मोठ, बाजरा की फसल को हानि होने से दालवाना के बाजार तेज रहेंगे। पश्चिमी प्रान्तों में शरद् ऋतु के धान्य सन्तोषप्रद न होंगे। सप्तमेश-मंगल पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि होने से राजनैतिक-संकट उत्पन्न हो, जिसका व्यापार पर प्रभाव पड़ेगा।

ग्रीष्म सस्य जातक—ग्रीष्मकालीन धान्य कुण्डली में लग्न में क्रूर ग्रह हैं। सूर्य में दशम भाव में उच्च का बृहस्पति है, अतः जीरी, चना, गेहूं आदि की फसल अच्छी होने पर भी मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। सरकार की व्यापार-नीति से भी साधारण जनता प्रभावित होगी; जनता में असन्तोष बढ़ेगा। बढ़ रही मंहगाई को रोकने के लिए सरकार को प्रभावी पग उठाने पड़ेंगे। अन्यथा यह वर्ष आन्दोलनपूर्ण संघर्षमय सिद्ध होगा।

इस वर्ष चार स्तम्भों के विचार से जल स्तम्भ एवं तृणस्तम्भ का अभाव है। मेघेश-शनि होने से भी वर्षा पर्याप्त न हो। पुनरपि इस वर्ष अन्न स्तम्भ ९३ प्रतिशत है। अतः अधिक जल चाहने वाले अनाजों की फसल आशा के अनुरूप न होगी। राजस्थान आदि में कहीं अकाल की स्थिति बन सकती है। **इस वर्ष सूर्य दिन के समय आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश करेगा।** अतः—"**दिवार्द्रा याति खेदभानुर्जल भक्षण कारकः**"—**इस प्रमाणानुसार समयानुकूल यथोचित वर्षा न होने से, एवं नानाविध अफवाहों से वायदा व्यापारी बहुत तेजी से लाभ ले सकेंगे**, वर्ष भर समय-समय पर कुराली आकर ताजा मशवरा करते रहें।

इस साल रोहिणी का वास पर्वत पर है,—

> **"रोहिणी नाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।**
> **वृष्टिहानिस्तदा ज्ञेया सर्व सस्य विनाशनम्।।**

स्पष्ट है, कि इस वर्ष समय पर पर्याप्त वर्षा न हो एवं खड़ी हुई फसलों को हानि भी पहुंचेगी, अतः व्यापारी विचारपूर्वक काम करें।

इस वर्ष चौमासी फसलों का स्वामी मंगल है, भारत के कुछ प्रान्तों में विशेषतः उत्तरी भू-भाग पर विशेष कारण से चौमासा के अनाजों को हानि पहुंचेगी। इस वर्ष शीतकालीन फसलों के स्वामी चन्द्र हैं अतः शीतकालीन फसलें अच्छी रहेंगी।

> **"चन्द्रे धान्येश्वरे धान्यं सुलभं जायतेऽखिलम्।**
> **द्विजगोकुल वृद्धिश्च राजानो मुदितास्तथा।।"**

चना, गेहूं, चावल, अरहर, बाजरा, मक्का आदि फसल ठीक होने पर महंगाई पर नियन्त्रण रखना सम्भव प्रतीत नहीं होता।

गतवर्ष के पंचांग में दालवाना, खाण्ड, चीनी, सरसों आदि तिलहन में जोरदार तेजी की घोषणा की थी, मेरठ, मुजफ्फर नगर, भटिण्डा, राजस्थान एवं अन्य प्रान्तों के व्यापारी हमारे परामर्श से भारी लाभ प्राप्त कर चुके हैं। बहुत से व्यापारियों ने तो लाभ होने पर हमें पुरस्कार भी भेजे हैं। अतः हमारा व्यापारियों से अनुरोध है, कि व्यापारी समय-समय पर प्रत्यक्ष मिलकर तेजी-मन्दे को मुफीद चांस प्राप्त करके लाभ लें। वायदा व्यापारियों को तो अवश्यमेव प्रत्यक्ष मिलना चाहिए, रेलवे स्टेशन मण्डी कुराली में जिला रोपड़ पंजाब में स्थित हमारे कार्यालय में आकर ताजा मशवरा हासिल करें, उत्तम लाभ के चांस इस साल आ रहे हैं।

इससे पहिले कि हम प्रत्येक मास की ग्रहस्थिति के अनुसार तेजी मन्दी का ब्योरा दें, हम इस संवत् में आने वाले मार्च १९९१ के शेष दिनों में ग्रहचाल के अनुसार तेजी मन्दी का संक्षिप्त विवरण दे देना उचित समझते हैं।

इस संवत् का प्रारम्भ रविवार (इतवार) १७ मार्च सन् १९९१ ई० को होगा। इस संवत् के राजा एवं मन्त्री दोनों पदों का स्वामी 'सूर्य' ही है। अतः अनाजों, तेलों, गुड़ खाण्ड एवं दालवाना में इस साल विशेष तेजी बनेगी। **सं. २०४८ में वैशाख मास अधिक (लौंद) है। व्यापारी गुड़ का स्टाक पहिले ही कर लें, सामान्यतः गुड़, खाण्ड, शक्कर-चीनी के व्यापारी जून से पहिले ही एक सौ रुपए की तेजी से अच्छा लाभ ले सकेंगे।**

संवत् के प्रारम्भ में बुध रेवती नक्षत्र में आता है, मीनस्थ सूर्य-बुध पर शनि की नज़र है अतः गुड़, खाण्ड, घी एवं लाल मिर्च में तेजी का प्रवाह बनेगा। (कदाचित् गुड़ मन्दा चले तो तुरन्त स्टाक करें, आगे अच्छा लाभ मिलेगा) १८ मार्च को सूर्य उ.भा. में आ रहा है, अतः रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड एवं रुई में तेजी का वातावरण रहे। १९ मार्च को वक्री गुरु पुण्य नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखल होगा, रुई आदि में अच्छी तेजी बनेगी, सरसों में टैम्परेरी मन्दे का रिएक्शन आएगा।

२१ मार्च (१९९०) को मंगल मिथुन राशि में आकर शनि-राहु को देखेगा, यहां से गुड़ खाण्ड शक्कर में जोरदार तेजी बनने लगेगी—वायदा एवं हाजर के व्यापारी उत्तम लाभ ले सकते हैं—आगे वर्षा में वर्षा की कमी अनुभव होगी। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, कुसुम्भ, मजीठ एवं लाल मिर्च में जोरदार तेजी बनेगी।

२६ मार्च को बुध मेष राशि में आकर शुक्र के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी एवं चांदी में झटके के साथ मन्दा आने का योग है। इस समय वायदा व्यापारी चांदी के बाजार के रुख को देखकर काम करें, अन्यथा भारी हानि उठानी पड़ेगी।

३० मार्च को वृहस्पति के मार्गी होने पर वायदा बाजार किंवा हाजर में अचानक परिवर्तन आ सकता है,—क्योंकि गुरु पर शनि—राहु की दृष्टि है अतः चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू में अच्छी तेजी, चांदी एवं रुई में अचानक मन्दा बने। पुनरपि बाजार के रुख को देखकर काम करें।

अप्रैल— ३ अप्रैल के मंगल आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है, आर्द्रा नक्षत्र बुध की राशि का नक्षत्र है, इस समय बुध मंगल की राशि-मेष में है, और मंगल, बुध की राशि मिथुन में है, मिथुन राशि का सम्बन्ध रुई एवं कपास-बाजारों से है, अतः रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, नमक तेज रहेंगे।

४ अप्रैल को मेष राशि का बुध वक्री हो रहा है, रुई में झटके के साथ अच्छी तेजी आएगी। गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी में भी तेजी अवश्य बनेगी, क्योंकि बुध क्रूरग्रह मंगल की राशि में है। **बुध छोटा-सा ग्रह होने से बाजारों पर स्थायी प्रभाव नहीं होगा**, टैम्परेरी तेजी-मन्दी करता है। अतः यह **चांस दैनिक तेजी मन्दी वालों के लिए ही है**। ४ अप्रैल को ही शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आकर जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, चांदी, सोना में मन्दे के रिएक्शन करेगा।

६ अप्रैल के लगभग बुध पश्चिम में अस्त हो जाता है, वायदा व्यापार की लाईन बदल जाएगी, अनाज-घी मन्दे, रुई में घटाबढ़ी —पहले रुई तेज, बीच में मन्दी रहे, अन्त में फिर तेज, सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी बने।

७ अप्रैल को बुध राशि का शुक्र रुई कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, गुड़, खाण्ड और चांदी के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार को प्रभावित करता है । अकेला शुक्र कभी-कभी जोरदार मन्दा बनाता है । हमारे अनुभव के आधार पर शुक्र की राशि व नक्षत्र चार का विशेष प्रभाव चांदी और सोने के बाजारों पर पड़ता है । वृष राशि का शुक्र बाजारों में तेजी का संकेत देता है । सिल्क इतर एवं अन्य वैभव की वस्तुओं में तेजी, सोना, चांदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी, रुई, कपास में अच्छी मन्दी का वातावरण बने ।

१० अप्रैल के लगभग गुरु पुष्य नक्षत्र के तीसरे चरण में आकर रुई आदि सभी वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनाता है । सरसों में कुछ मन्दी बने ।

इस मास की १२ अप्रैल की तारीख व्यापारी अपनी डायरी में नोट कर लें—इस दिन राहु उ. षा. नक्षत्र के प्रथम चरण में आकर धनुराशि में प्रवेश करेगा एवं केतु पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण में आकर मिथुनराशि में दाखिल होगा । इस समय मिथुन राशि में मंगल के साथ केतु का सम्बन्ध एवं मंगल की राहु पर दृष्टि भी है; अतः इस समय बाजारों में जोरदार तेजी आएगी । धनुराशि का सम्बन्ध गुड़, खाण्ड, सोना चांदी, रुई, सरसों, तिल, तेल, बिनौला, खल से है, अतः उपरोक्त चीजों में अच्छी तेजी आएगी—ऐसा विचार है । व्यापारी नोट करें—यदि इन दिनों उपरोक्त चीजों में मन्दा हो, विशेषतः रुई, सूत में मन्दा आ जाए तो तुरन्त स्टाक करने से आगे अच्छा लाभ मिलेगा । (एक आचार्य के मतानुसार रुई में तेजी, चांदी में विशेष मन्दा बनेगा, घी, अनाज भी मन्दे होंगे, खल, सूत तेज रहेंगे—अब व्यापारी बाजार के रुख को देख कर निर्णय करें ।) लेकिन हमारे अनुभव के अनुसार बाजारों में अच्छी तेजी आएगी ।

१४ अप्रैल को मेष संक्रान्ति मंगलवारी है एवं मंगलवारी अमावस भी है, सूर्य मेष राशि में उच्च माना जाता है । इस समय सूर्य का बुध एवं चन्द्रमा के साथ सम्बन्ध हो रहा है, नोट करें—कि मेष संक्रान्ति के दिन ही सूर्य एवं बुध की अंशात्मक युति भी हो रही है, जब बुध वक्री हो कर सूर्य के साथ युति करता है तब बाजारों में तेजी का तूफान आया करता है । सूर्य का प्रभाव वायदा एवं हाजिर के बाजारों पर पड़ेगा । रुई, अलसी, एरण्ड, मूंगफली तेल, अनाज, सोना, चांदी शेयर हल्दी एवं काली मिर्च के व्यापारों पर इस सूर्य का प्रभाव विशेष रूप से पड़ेगा । बुध-सूर्य का सम्बन्ध वायदा व्यापारियों को १४ अप्रैल के लगभग विशेष तूफानी तेजी से विशेष लाभ देगा । रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, बिनौला, सूरजमुखी के बीज, मूंगफली आदि में विशेष तेजी से लाभ मिलेगा । गेहूं, चावल, उड़द, मूंग, अरहर, चना, जौ, मटर आदि में यद्यपि मन्दे का योग है, फिर भी ग्रहयुति-दृष्टि से कुछ तेजी का ही वातावरण रहेगा ।

१५ अप्रैल को वक्री बुध रेवती मीन में आकर वृहस्पति से देखा गया है अतः केसर, मजीठ, लाल चन्दन, गेरू, लाल मिर्च आदि लाल चीजों में कुछ तेजी करेगा । गुड़, खाण्ड, तिल तेल सरसों घी चांदी में मन्दा रहेगा । १६ अप्रैल को मंगलवारी चन्द्रदर्शन एवं रोहिणी नक्षत्रस्थ शुक्र वायदा व्यापार में तेजी करे, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे । गुड़, सरसों एवं मूंगफली में भी तेजी हो । मूंग, उड़द, मोठ, तिल, मजीठ, नमक, कुसुम्भ में भी तेजी बनेगी ।

(१२ से १५ अप्रैल तक बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी ही रहेगी । विशेषतः १२ से १४ अप्रैल तक हाजर के व्यापारी तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे ।)

२२ अप्रैल को बुध के पूर्व में उदित होने पर रुई, सूत, चांदी, चावल, घी, सोना तेज, हों । परन्तु ध्यान रहे,—बुध के उदय होने पर कभी-कभी बाजारों का रुख बदल जाता है, अतः बाजार के रुख के मुताबिक काम करें । २७ अप्रैल को सूर्य के भरणी में आने से रुई अलसी में मन्दा, सोना चांदी तांबा, मूंगा, पीतल के बर्तन, टिन चादर, गेहूं, चना, जौ, चावल, मोठ, सरसों, गुड़ खाण्ड, घी तेज हों ।

२८ अप्रैल को शुक्र के मृगशिरा नक्षत्र में आने से गेहूं, चना, ज्वार में मन्दा एवं गुड़ खाण्ड, शक्कर में तेजी रहेगी ।

२८ अप्रैल को ही बुध भी मार्गी हो रहा है । व्यापारी नोट करें, कि जो चीजें पहले तेज हों, उनमें मन्दा एवं जो चीजें मन्दी हों उनमें तेजी का वातावरण बन सकता है । लेकिन मीन राशि के बुध पर वृहस्पति की दृष्टि है, अतः यह चांस बाजारों में मन्दे का ही सिद्ध होगा—ऐसा हमारा विचार है । आमतौर पर बुध के मार्गी होने पर गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज रहते हैं । तेल अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, रसकस मन्दे रहें सोना तेज रहता है । फिर भी हमारा विचार विशेष तेजी का नहीं है, बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें । मासान्त तक बाजार अस्थिर रहेंगे ।

मई—३ मई को शुक्र मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा । मिथुन राशि में शुक्र का सम्बन्ध मंगल एवं केतु के साथ होता है, राहु की इन पर दृष्टि है—यह मासारंभ में ही तेजी का चांस बनता है । यद्यपि मिथुन राशि का शुक्र मन्दे का सूचक है फिर भी जब यह मंगल के साथ होता है तो व्यापारियों में खरीदने की रुचि को बढ़ावा देता है, रुई एवं सूत की लिवाली ज्यादा होती है फोरेन एक्सपोर्ट की घोषणा का वातावरण बनता है, जिससे रुई बाजार में तेजी आया करती है, कच्ची रुई हाजर बाजारों पर पंजाब, बंगाल आदि पर भी इसका प्रभाव संभव है । क्योंकि मंगल भूमि का पुत्र है, मंगल का जलवायु से विशेष सम्बन्ध है, आगे जलवायु की स्थिति अनुकूल न होने से तेलवाना, रुई, कपास, सोना, चांदी, शेयर बाजार एवं जूट बाजार पर खास तेजी का प्रभाव देता है—फिर भी अगर बाजार मन्दे में रहें, तो तेजी का काम न करें । इस समय प्रत्यक्ष मिलने से विशेष लाभ होगा ।

९ मई को आर्द्रा नक्षत्र का शुक्र गेहूं आदि अनाजों के भावों में अचानक मन्दे का वातावरण बनाएगा । १० मई को बुध ग्रह अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होगा । मेषराशि में बुध का उच्च-सूर्य के साथ सम्बन्ध होगा । जब सूर्य के साथ बुध का सम्बन्ध होता है तो बुध का स्वभाव क्रूर हो जाता है । तिलहन एवं तलवाना बाजारों पर इसका प्रभाव विशेष होगा । तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, मोठ एवं सोना, चांदी के बाजारों में तेजी का वातावरण रहेगा । व्यापारी नोट करें, कि तिलहन, रसकस, रुई कपास में यद्यपि मन्दा करता है, परन्तु यहां सूर्य के सम्पर्क में होने से मन्दे की जगह बाद में हमें तेजी ही मालूम देती है ।

११ मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, रुई एवं सरसों में तेजी करेगा ।

१३ मई को मंगल एवं केतु की अंशात्मक-युति होगी, मंगल गृह का सम्बन्ध तेलवाना रुई कपास, जूट पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड, चांदी, सोना तथा शेयर बाजारों से है । इन चीजों में जोरदार तेजी बनेगी;—विशेष सावधान रहें । केतु-मं. के साथ शुक्र का सम्बन्ध होने से सोना, चांदी में भी इस समय अच्छी तेजी बनेगी ।

(३ मई से १४ मई तक , गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में, सरसों बिनौला, मूंगफली, एवं खाद्य तेलों में, खल, बिनौला, सोना चांदी, तलवाना में उत्तम लाभप्रद चांस बनेगा, यह चांस उत्तम-मध्यम रूप से तेजी प्रधान रहेगा ।)

१५ मई को बुधवारी वृष संक्रान्ति है, इसी दिन मंगल भी कर्क राशि में आ रहा है । ध्यान दें, कि इस समय नीच मंगल का स्वराशिस्थ शनि के साथ पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध हो रहा है, लेकिन मंगल का राशि सम्बन्ध वृहस्पति के साथ है, लेकिन गुरु पर भी शनि की दृष्टि है; अतः चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल-तेल, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी । विशेषतः गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी एवं लाल मिर्च में अच्छी तेजी का मौका है । जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल में कुछ मन्दा आकर तेजी आए । 15 मई को रोहिणी नक्षत्र में चन्द्रदर्शन होने से मादक द्रव्य अफीम आदि में भी तेजी आएगी । अन्य बाजारों में भी तेजी रहेगी ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१७ मई को शनि-वक्री हो रहा है । शनि ग्रह का प्रभाव कच्ची चीजों की फसल पर तथा उनकी
पैदावार पर पड़ता है । मूंगफली, अलसी, रुई, कपास, बिनौला, एरण्ड, खाद्य तेल, बीज, सरसों,
आदि की पैदावार पर अनुभव किया गया है, आशा से कम पैदावार हो, खड़ी फसल को हानि हो, अतः
बाजारों में तेजी का रुख बन जाता है । **तिलहन, कली, पीतल, सोना, चांदी, गेहूँ, ज्वार, बाजरा,**
चावल, घी, तेल, अलसी सरसों, तम्बाकू, सीमेंट, बिनौला, मूंगफली, रुई, कपास, अन्य खाद्य तेलों के
बीज एवं खाद्य तेल, घी में इस समय तेजी आएगी, इस समय गुड़, खाण्ड, शक्कर भी तेज रहेंगे ।
[यह एक दिन का चान वायदा व्यापारियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा ।] इस मास में यहां तक तेजी में
कमा ले आगे बाजार डगमगा जाएंगे । १९ मई को रुई आदि सभी धातुओं में (गुरु के पुष्य के चतुर्थ
चरण में आने से) तेजी का वातावरण बनेगा, इस दिन सरसों में कुछ मन्दा आ सकता है ।
नोट करें—१९ मई को मंगल-गुरु दोनों पुष्य नक्षत्र में आ रहे हैं, अतः इस समय सोना, चांदी के बाजारों
में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन आएंगे । वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें । इस समय
धातुओं में (विशेषतः सोने में) काफी तेजी बनेगी; चांदी में घटाबढ़ी के रिएक्शन आएंगे ।
२१ मई को शुक्र पुनर्वसु में आकर धान्य-बिनौला में तेजी, सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत में कुछ
मन्दे का वातावरण बनाएगा । २२ मई को भरणी नक्षत्र का बुध चावल आदि अनाजों में एक सप्ताह में
अच्छी तेजी का कारण बनेगा । २५ मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आता है, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी,
सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सण, सुपारी एवं मिर्च में तेजी
एवं चांदी में मन्दा बनेगा । शुद्ध वैशाख की पूर्णिमा भी मंगलवारी होने से बाजारों में अक्सर तेजी का
वातावरण रहे ।
२८ मई को शुक्र-केतु की अंशात्मक युति का प्रभाव व्यापार में तुरन्त अनुभव होगा । सरकार
कुछ चीजों के निर्यात की घोषणा या आयात की घोषणा करेगी । पैदावार अच्छी होने की अफवाहों से
व्यापारी मन्दे का विचार बनाएंगे । हमारे विचार से १८ मई के बाद तेजी में रहना खतरे से खाली
नहीं । हां, २८ मई को चांदी, रुई, कपास, चावल में तेजी से लाभ ले सकते हैं ।
३० मई को शुक्र कर्क राशि में आकर मंगल-गुरु के साथ राशि सम्बन्ध बना रहा है, इस प्रकार
गु. मं. शु. पर शनि की नजर है, इसी दिन बुध कृत्तिका नक्षत्र में आ जाता है । यह योग बाजारों में
अनिश्चितता का वातावरण पैदा करेगा, व्यापारी अपनी लाईन निश्चित नहीं कर पाएंगे— अतः
समय से पहिले ही प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशवरा हासिल करें; अच्छा लाभ ले सकेंगे । क्योंकि गुरु में
शनि-मं. के द्वारा होने वाली तेजी को रोकने की क्षमता है । अतः बाजारों में जबरदस्त घटाबढ़ी का
दौर चलेगा—बहुत सावधानी की जरूरत है । रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, चांदी के व्यापारी
बहुत सावधानी से कार्य करें तो ठीक रहेगा । इस समय भारत सरकार के ऐलान व व्यापारिक नीति को
ध्यान में रखना भी परमावश्यक है ।
हमारे विचार से इस समय रुई में पहले अच्छी मन्दी, बाद में तेजी आए । अलसी, एरण्ड, घी,
तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दे का वातावरण रहे ।
चांदी में विशेष घटाबढ़ी आकर मन्दा हो ।
जून— मासारम्भ में ही बुध वृषराशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा । **बुध जब भी सूर्य के साथ**
राशि-सम्बन्ध बनाता है तो यह क्रूर बन जाता है, और इसमें तेजी की ताकत बढ़ जाती है—ऐसा गत
वर्षों में अनुभव किया गया है । यद्यपि वृषराशि का बुध मन्दा करने वाला माना है, फिर भी मन्दा न
आकर कुछ तेजी का ही वातावरण बनाएगा । बुध का स्वभाव सच्ची झूठी चर्चा से बाजारों में तेजी
मन्दी करना है, अतः हाजर के व्यापारी बड़ी सूझबूझ से काम करें, वायदा व्यापारी बाजारी चर्चा के
अनुसार काम करके लाभ ले सकेंगे । हमारे विचार से बाजार अस्थिर रहेंगे; सभी बाजारों में घटाबढ़ी
चलेगी । गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, तिल, तेल, आदि में अस्थायी तेजी आएगी । रुई में
मन्दा होकर पीछे तेजी आए ।
३ जून को शुक्र पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा । **ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस समय शुक्र-गुरु**
एवं मंगल ये तीनों ग्रह कर्क राशि में एकत्र हैं, और ये तीनों ग्रह इस समय पुष्य नक्षत्र में ही हैं । यहां
मंगल नीच है और इन सब पर शनि की दृष्टि है । अतः चांदी व रुई में घटाबढ़ी के साथ तेजी, इस
समय सोना में झटके के साथ अच्छी तेजी आएगी, वायदा व्यापारी लाभ लें । सूत, सण, रेशम, ऊन व
अनाजों में भी तेजी का वातावरण बनेगा । सरसों आदि तेलबीया के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर
काम करें, अन्यथा हानि होगी, हमारा विचार इन दिनों सरसों आदि में कुछ मन्दे का ही है ।
६ जून को बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा । वायदा व्यापार की लाईन बदलेगी । अनाज, घी आदि
मन्दे होंगे । रुई में घटबढ़ी चलेगी—पहले तेजी, बीच में मन्दा अन्त में फिर तेज रहेगी । सोना में
घटाबढ़ी के बाद फिर तेजी आए ।
७ जून को रोहिणी नक्षत्र का बुध रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़,
खाण्ड तेज करें, रेशमी वस्त्र मन्दे होंगे ।
८ जून को सूर्य मृगशिर में आकर रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी,
उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी आदि में तेजी करेगा । ९ जून को आश्लेषा नक्षत्र का गुरु घी में
तेजी करके प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में तेज का ही वातावरण बनता है ।
१३ जून को बुध मृगशिर में एवं मंगल आश्लेषा में आता है, साथ ही गुरुवार को आर्द्रा में
चन्द्रदर्शन होगा । इस दिन बाजार अस्थिर रहेंगे । रुई-चांदी में घटाबढ़ी रहे, गुड़, तिल, सरसों, उड़द,
मन्दे होकर तेज हों ।
१४ जून से बाजारों में विशेष तेजी की लाईन बनने का योग है । १८ जून को गुरु-मंगल की
अंशात्मक युति होगी । गुरु-मंगल जब एकत्र होते हैं तो अफवाहों से तेजी, या मन्दे के झटके बजारों में
आते हैं । अतः इस समय बाजार के खिलाफ काम करने वाले व्यापारी हानि में रहेंगे । इस अंशात्मक
युति का प्रभाव कहीं अधिक वर्षा से फसलों को नुकसान, कहीं वर्षा की कमी से हानि के रूप में होगा ।
जिससे व्यापार पर असर पड़ेगा । इस समय प्रत्यक्ष मिलकर ताजा परामर्श प्राप्त करें ।
१८ जून को राहु केतु की गति के अनुसार कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में तेजी से लाभ रहे ।
१५ जून को मिथुन राशि में सूर्य के आने पर गेहूं, चना, जौ, रुई, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल-घी में तेजी
आएगी । मिथुन संक्रान्ति शनिवार को है, सूर्य मिथुन राशि में आकर केतु के साथ सम्बन्ध बना रहा
है । अतः यह योग सुनिश्चित रूप से तेजी का है, पुनरपि बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ाने का
परामर्श है । पाट, बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, लोहा, तेल, तिलहन, उड़द, चावल आदि प्रत्येक
जाति के अनाज में तेजी आएगी । सोना, चांदी में भी तेजी बनेगी ।
१६ जून को बुध मिथुन राशि में आकर एवं शुक्र आश्लेषा में आकर रुई, सोना, चांदी में मन्दे की
उम्मीद होने पर भी तेजी बनाएगा, क्योंकि इसका सम्बन्ध सूर्य एवं केतु के साथ है । इस समय सरसों
तारामीरा में भी तेजी रहेगी ।
१७ जून को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी, इस युति का प्रभाव भी रुई, कपास, तेल,
तेलवाना, पाट, बारदाना, हल्दी के बाजारों पर होगा । अफवाहों से तेजी के अच्छे रिएक्शन आएंगे ।
इस युति का सर्वाधिक प्रभाव तिलहन बाजारों पर होगा—व्यापारी सावधानी से काम करें ।
१९ जून को गुरु-शुक्र की अंशात्मक युति होगी एवं इसी दिन बुध आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रुई, सूत, कपास (अलसी, एरण्ड, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सोना, चाँदी, ये बाजारों में अच्छा उछाला
आएगा। (१८ से १९ जून तक तेजी से लाभ मिलेगा।)
२२ जून को दिन में समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा :— "विचार्य्यौ यातिं केतुभान् बल भक्षण
कारकः"। इसलिए कहीं वर्षा की कमी से फसलों के बारे में बनावटी अफवाहों का प्रभाव व्यापार पर
अवश्य होगा। सूर्य-बुध एक गृह साथ हैं अतः रुई, सूत, कपास, तेल, अलसी, एरण्ड, सोनी, गेहूं,
चावल, चना, जौ एवं चाँदी में तेजी आए।
२३ जून को मंगल एवं शुक्र की अंशात्मक-युति होगी, मं. शु. पर शनि की दृष्टि है अतः गुड़,
शक्कर, खाण्ड, चीनी, चना, गेहूं, जौ, चावल, सोना, चाँदी में झटके के साथ तेजी आएगी, यह चाल
वायदा व्यापारियों को अच्छा लाभ देगा। शुक्र-मंगल का सम्बन्ध बृहस्पति के साथ भी है अतः इस
समय वायदा बाजार जब भी तेज हो तुरन्त लाभ ले लें, तेजी अधिक ठहरेगी नहीं।
२५ जून को बुध पुनर्वसु में आकर रुई, चाँदी, कपास, सूत सूत, में काफी मन्दा आ सकता
है—विचारपूर्वक काम करें।
२८ जून को बुध एवं केतु का अंश साम्य एवं २९ जून को बुध का पश्चिम में उदय रुई एवं शेयर
बाजारों में मन्दा बनाएगा। बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है, अतः सावधानी से काम करें।
३० जून को बुध कर्क में राहु-मंगल के साथ मेल करेगा। बुध-राहु मंगल पर शनि की दृष्टि है
अतः रुई में झटके के साथ मन्दा आकर तेजी बनेगी, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आएगी। रसादि
पदार्थ गुड़, दूध, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना में पहले कुछ तेजी आकर बाद में मन्दा आए।
जुलाई— बुध कर्क में आ गया है, मंगल, राहु, शुक्र को बुध के साथ सम्बन्ध है, व शनि से देखे जा
रहे हैं, स्पष्ट है कि यह मास बाजारों में तेजी और मन्दे के मिश्रण से शुरू होता है। जब बुध का शुक्र
के साथ मेल होता है तो तूफानी तेजी या मन्दी आया करती है— अतः मास के प्रारम्भ में टम्पररी तेजी से
वायदा व्यापारी तो लाभ ले सकते हैं, परन्तु हाजर के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर काम करें।
२ जुलाई को शुक्र सिंह राशि एवं मघानक्षत्र में प्रवेश करेगा। अकेला शुक्र अनेकधा
जबरदस्त मन्दा बनाता है, 'फसल की पैदावार अच्छी है'—आदि अफवाहों से बाजार टूटते जाते हैं,
इस समय बाजार के रुख के अनुसार काम करें तो लाभ मिलेगा। शुक्र विशेषकर गुड़, खाण्ड, चाँदी,
रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चाँदी आदि में अच्छी घटाबढ़ी करता है, अतः सावधानी से
व्यापार बढ़ावें। चाँदी, रुई में मन्दे के अच्छे शिकंजे आएंगे। जौ, चना, गेहूं, लाल मिर्च, घी, रसादि
पदार्थ तेज होंगे।

(मासारम्भ से ४ जुलाई तक बाजार अनिश्चित रहेंगे, मन्दे में खरीदें, तेजी में बेच दें—यही सिद्धान्त लाभप्रद रहेगा।)

५ जुलाई को मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा, सिंह राशि में शुक्र पहिले ही आ
चुका है, एक बात अनुभव में आई है, कि जब जब शुक्र ने मंगल के साथ मेल किया है तभी सोना, चाँदी,
रुई, कपास में तेजी का बोलबाला रहा है; लोगों में खरीद शक्ति (खरीदने की मनोवृत्ति) बढ़ती है। ऐसे
समय सरकारी एलान या निर्यात नीति की पॉलिसी को भी ध्यान में रखना चाहिए। इस समय हमारे
विचार से सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, मशीनरी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूं, अलसी, लाल मिर्च, मूंग,
मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, राई एवं अनाज तेज होंगे। **व्यापारी नोट करें, कि—मघा
नक्षत्र का मंगल वर्षा में रुकावट पैदा करता है**, अतः अफवाहों से प्रत्येक बाजार तेज रहे, ऐसा विचार
है।
६ जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में आकर रुई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड,
अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल, आदि

सुगन्धित पदार्थ एवं किराना में तेजी आएगी। १७ जुलाई को आश्लेषा नक्षत्र का बुध, तेल, तिलहन, गुड़,
खाण्ड, मूंग, मूंगफली, में तेजी आनी है।
१३ जुलाई को सूर्य और केतु की परस्पर अंशयुति हो रही है; अतः यह वायदा व्यापारियों के
लिए एवं हाजर व्यापारियों के लिए अच्छा लाभ का चांस है; गेहूं, चना, चावल, उड़द, मूंग, मोठ, एवं
अन्य दालवाना में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। १३ जुलाई को चन्द्रदर्शन भी शनिवार को है, यह भी
तेजी का ही सूचक है। १४ जुलाई को आश्लेषा के तीसरे चरण का गुरु घी-तेल में तेजी तथा अन्य
व्यापारिक-वस्तुओं में भी तेजी का ही वातावरण बनाता है।
१६ जुलाई को मंगलवारी कर्क संक्रान्ति होगी। कर्कस्थ सूर्य के साथ बुध एवं उच्च बृहस्पति
का भी मेल है, इन पर शनि की दृष्टि होने पर भी बाजारों में आशा के मुताबिक तेजी आने की
सम्भावना नहीं है। चाँदी, सोना, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र तेज होंगे। गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थों
में मन्दा बनेगा। बाजार का रुख देखकर काम करें।
२३ जुलाई को वक्री शनि उ. षा. ४ में आ जाएगा; अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ,
छुहारा तेज होंगे, संग्रहकर्त्ताओं को ६ मास के भीतर दुगुना लाभ होने की सम्भावना है, परन्तु बाजार की
चाल देख एवं साथी व्यापारियों का मशवरा काम करने से पहले अवश्य लें।
२६ जुलाई को मंगल एवं शुक्र की अंशात्मक युति होगी; साथ ही २७ जुलाई को मंगल पू. फा.
नक्षत्र में आ रहा है। जब शुक्र नीच मंगल के साथ युति एवं राशि-सम्बन्ध बनाता है तो बाजारों में
तूफानी तेजी आती है, तिल-सरसों, मूंगफली, बिनौला, सोयाबीन, एरण्ड, सूरजमुखी आदि में तथा सभी
खाद्य तेलों में तेजी से लाभ मिलता है। साथ ही रुई, कपास, जूट, चाँदी, सोना, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर
में भी अच्छी तेजी आएगी। शेयर बाजार भी ऊंचे उठेंगे—ऐसा योग है। **यहां एक बात और ध्यान देने
लायक है, जिसका सीधा असर बाजारों पर पड़ेगा। सिंह का मंगल बरसात की कुछ भागों में कमी
होने की खबरों से बाजारों में तेजी के झटके भी आने लग जाते हैं, यदि ऐसा बाजार नजर आए तो तेजी
का ही काम करें— एवं ताजा मशवरा प्राप्त करना चाहिए।**
३० जुलाई को आश्लेषा के चतुर्थ चरण में बृहस्पति के आने पर घी एवं तेल में तेजी एवं अन्य
सभी व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी का ही वातावरण बनता है।
अगस्त—मासारम्भ में ही १ अगस्त को शुक्र वक्री हो रहा है, इस प्रकार इस मास में शुक्र-शनि,
गुरु-केतु ये चार ग्रह वक्री हैं। शुक्र सिंह राशि में बुध-मंगल के साथ है। यह मास विशेष तेजी मन्दी
वाला रहेगा, उत्तम लाभ के चांस इस मास में आ रहे हैं; आप इस मास में प्रत्यक्ष मिलकर विशेष लाभ
उठा सकते हैं। हाँ, शुक्र के वक्री होने पर बाजारों में उत्तम घटाबढ़ी आया करती है, अतः बाजार की
चाल को देखें, बाजार जिस दिशा में चले उसी तरफ व्यापार बढ़ा दें। क्योंकि शुक्र का प्रभाव गुड़,
खाण्ड, रुई, कपास, तिलहन, चाँदी पर विशेष रूप से देखा जाता है, अतः हमारे विचार से घी, गुड़,
खाण्ड, शक्कर, रुई, सरसों, बिनौला, मूंगफली, चावल, गेहूं, जौ, चना, एवं चाँदी में जोरदार तेजी
बनेगी, तेजी मन्दी का काम करने वाले इस मास में लाभ ले सकते हैं।
३ अगस्त को आश्लेषा नक्षत्र का सूर्य गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सरसों,
एरण्ड, अलसी, सोना, चाँदी, रुई, मिर्च, मजीठ में तेजी करेगा। **(१ से ३ अगस्त तक बाजार तेजी में रहेंगे; लाभ लें।)**
४ अगस्त को शुक्र वक्री होकर फिर से मघा नक्षत्र में आ जाता है।—गेहूं आदि अनाजों एवं
दालवाना के भाव में कुछ गिरावट आएगी।
५ अगस्त को गुरु अस्त हो जाएगा। बाजारों का रुख अचानक बदल सकता है अतः विचारपूर्वक
काम करें। रुई व शेयरों में तेजी एवं सोना, चाँदी अनाजों में मन्दा आ सकता है। ७ अगस्त को बुध भी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वक्री होकर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवं गेहूं, जौ, चना अनाजों में मन्दा करेगा। इस मास में बुध के वक्री होने पर ५ ग्रह वक्री हो गए हैं। अतः बाजारों में तेजी का अच्छा उछाल आ सकता है। १० अगस्त को शनिवारी अमावस होने से भी बाजारों में तेजी भड़केगी, ऐसा विचार है।

११ अगस्त को मघा नक्षत्र में चन्द्रदर्शन हो रहा है। मादक द्रव्य तेज होंगे, गुड़, तेल, सोना, चांदी में कुछ मन्दा रहेगा।

१४ अगस्त को गुरु मघा सिंह में आकर शुक्र-बुध-मंगल के साथ मेल करेगा। सिंह का गुरु भयंकर तेजी को रोकता है, इस समय बुध शुक्र शनि वक्री हैं। यद्यपि ग्रहस्थिति तेजीकारक है, फिर भी जलवायु के अनुकूल होने से वृहस्पति सुभिक्षकारक है, फसल अच्छी करता है। (कर्क के गुरु में जिन वस्तुओं में तेजी का बोलबाला रहा हो, उन चीजों में सिंह के गुरु में मन्दे का वातावरण रहता है– यह अनुभव में आया है। नोट करें–कुछ स्थानों पर वर्षा से भयंकर बर्बादी होगी। सिंहस्थ गुरु में गेहूं, चना, जीरी, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा की फसल उत्तम होगी। लेकिन सुभिक्ष होने पर भी गेहूं, घी, जौ तेज रहें, फसल अच्छी होने पर भी मंहगाई में कोई खास गिरावट नहीं आएगी–यह योग सं. २०२४ में आया था। हमारे विचार से अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, लोहा में मन्दा आएगा, बाजारों में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी.। इस समय प्रत्यक्ष मिलना चाहिए, ताजा मशवरा हासिल करना आवश्यक है। १४ अगस्त को बुध भी पश्चिम में अस्त हो रहा है। रुई में जल्दी ही अच्छा मन्दा बनेगा, चांदी तेज, पाट हैसियन शेयर भी मन्दे हों। १६ अगस्त को पू. षा. के तीसरे चरण में राहु पुनर्वसु के प्रथम चरण में केतु आने पर कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार की तेजी से दक्षिणी भारत में व्यापारी उत्तम लाभ लेंगे–सावधानी से काम करें।

१७ अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आ जाता है, सिंह संक्रांति शनिवार (क्रूरवार) को है; रुई, चांदी, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, मिर्च में तेजी बनेगी। नोट करें–कि, इस समय सूर्य-शुक्र-गुरु-बुध-मंगल ये सभी सिंह राशि में ही हैं, इस समय ५ ग्रह वक्री हैं, ६ ग्रह अस्त हैं, अतः भयंकर तूफानी तेजी-किंवा तूफानी मन्दा आने का योग है–बहुत ही सावधानी से बाजार के रुख को देखकर काम शुरू करें –हमारे विचार से इस समय सरकार व्यापार में हस्तक्षेप करेगी, सरकारी घोषणा का प्रभाव व्यापार पर पड़ेगा। (ग्रह स्थिति के अनुसार १४ अगस्त से १७ अगस्त तक जबरदस्त तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आएंगे–वायदा व्यापारी सूझबूझ से काम करें तो उत्तम लाभ होगा।) हमारे विचार से रुई, मूंग, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, एरण्ड, दाख, मिर्च, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल-तेल, एरण्ड, लाल मिर्च में तूफानी तेजी आएगी शेयर कुछ मन्दे रहें।

१८ अगस्त को सूर्य-गुरु एवं २१ अगस्त को सूर्य-बुध की अंशात्मक-युति का प्रभाव खाद्य तेल, सरसों, बिनौला, एरण्ड, मूंगफली, तिल, अलसी आदि एवं तेलों में जोरदार तेजी के रूप में होगा।

२२ अगस्त को मंगल कन्या राशि में आकर रुई एवं चांदी में झटके के साथ जोरदार तेजी बनाएगा, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, गेहूं, बाजरा, मूंग, मोठ, मक्का एवं ऊनी-सूती वस्त्रों में बड़ी अच्छी तेजी बनेगी–लाभ लें। ध्यान दें कि २२ अगस्त को सूर्य-शुक्र की अंशात्मक युति का प्रभाव जोरदार तेजी को बल देगा।

२६ अगस्त को बुध वक्री हालत में फिर से कर्कराशि में आ जाता है; तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मोठ, मूंगफली, खल-बिनौला आदि में तेजी आती है। नोट करें, कि–इस समय रुई में झटके के साथ मन्दा, चांदी में तेजी बनेगी।

२८ अगस्त को बुध-गुरु की अंशात्मक युति होगी, इसका प्रभाव कुछ तेजी के बाद मन्दा आ सकता है।

(१८ अगस्त से २६ अगस्त तक बाजारों में अच्छी तेजी का योग है, स्टाक को २६ अगस्त से पहिले ही निकाल देना चाहिए, अन्यथा हानि में रहेंगे।)

३० अगस्त को शुक्र एवं बुध पूर्व में उदित होंगे। शुक्र का उदय आश्लेषा नक्षत्र (अर्थात् राक्षस गण) में हो रहा है। क्योंकि शुक्र-बुध दोनों एक साथ उदय हो रहे हैं, अतः रुई में पहले मन्दा, बाद में तेजी बने। गेहूं, चना, तिल, चावल, घी, सोना तेज रहेंगे। इस समय बाजारों की लाइन बदल सकती है, अतः बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें। दो ग्रहों के एक साथ उदय होने से यह भी संभावना है, कि जिस वस्तु में पहले तेजी थी, उस वस्तु में मन्दा आ जाए या जिस वस्तु में पहले मन्दा था, उसमें तेजी बने। इस मास के अन्तिम चरण में व्यापार बहुत सूझबूझ से करें क्योंकि अभी बुध-शुक्र उदय हुए हैं, और ३१ अगस्त को गुरु भी उदित हो जाता है। बुध मार्गी भी हो रहा है। अतः व्यापार में भयंकर तेजी-मन्दे के रिएक्शन आयेंगे, सोना-चांदी में तेजी एवं रुई आदि के व्यापारी प्रत्यक्ष आकर मिलें तभी लाभ होगा।

सितम्बर– मास के प्रारम्भ में ही शुक्र वक्री होकर फिर से कर्क राशि में आ जाता है, कर्कराशि में बुध के साथ शुक्र का सम्बन्ध हो गया है, वक्री शनि की इन पर पूर्ण दृष्टि भी है, अतः २६ दिनों के अन्दर ही रुई में धमाके की तेजी आ सकती है, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, उड़द आदि का स्टाक यदि पहिले ही कर चुके हैं तो आगे अच्छा लाभ मिलेगा, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी बनेगी।

२ सितम्बर को बुध-शुक्र की अंशात्मक-युति होगी एवं तीन सितम्बर को बुध मघा-सिंह में आ जाता है, सिंह राशि में सूर्य गुरु ये दोनों ग्रह पहिले ही एक साथ बैठे हैं, सिंह राशि का बुध मूलरूप से तेजी का सूचक है। पुनरपि वृहस्पति का सम्पर्क होने से हमें सोना, चांदी, रुई, ऊनी वस्त्र, देववार में कुछ तेजी करे एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस-पदार्थों में मन्दा मालूम देता है। हाँ, २ सितम्बर को बुध-शुक्र की युति का प्रभाव बाजारों में तेजी करने वाला है, वायदा व्यापारी लाभ ले सकते हैं।

७ सितम्बर को हस्त नक्षत्र का मंगल २९ दिनों में मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा आदि क्षुद्र (छोटे) अनाजों में एवं घी, गुड़, खाण्ड में तेजी का संचार होता है। १० सितम्बर को मंगलवारी चन्द्रदर्शन हस्त नक्षत्र में होगा; गुड़, सरसों, मूंगफली में तेजी का रुख रहे, रुई में घटाबढ़ी, अन्न एवं अन्य वायदा व्यापार में तेजी का रुख रहे।

१३ सितम्बर को शुक्र राक्षस गण में मार्गी हुआ है। अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें। अचानक बाजार का रुख बदल सकता है। सामान्यता सरसों, चांदी, सोना में तेजी आएगी, अनाज गुड़, घी के स्टाक से आगे अच्छा लाभ मिलेगा। १३ सितम्बर को शुक्र के मार्गी होते ही सूर्य उ. फा. नक्षत्र में आ जाता है, रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी में तेजी का वातावरण बनेगा। १४ सितंबर को मघा ३ में गुरु गुड़, खाण्ड, अनाज, सोना, चांदी, लोहा में मन्दा, अलसी में भी मन्दा बने, बाजारों में अस्थिरता रहे।

१५ सितम्बर को पू. फा. नक्षत्र में बुएदा आ रहा है। लेकिन १५ अगस्त को ही मंगल अस्त हो रहा है; अतः रुई में मन्दी, गेहूं, अलसी में खास तेजी का संचार होगा।

१६ सितम्बर को वक्री शनि उ. षा. ३ में आकर अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारे तेज होंगे, संग्रहकर्त्ताओं को तीसरे एवं छठे मास में उत्तम लाभ मिलेगा।

१७ सितम्बर मंगलवार को सूर्य कन्या में प्रवेश करेगा। कन्या राशि में सूर्य के साथ मंगल का सम्बन्ध होगा। मंगल ग्रह जलवायु को बहुत जल्दी प्रभावित करता है। गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल में धमाके की तेजी आएगी। १७ सितम्बर को बुध पूर्व में अस्त होगा, अनाज एवं घी में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी, पहले तेज, बीच में मन्दी अन्त में फिर तेज रहे। सोना में घटाबढ़ी के बाद तेजी आए।

२२ सितम्बर को उ. फा. में बुध आएगा। उड़द, मूंग, मोठ, मसूर एवं अरहर में कुछ तेजी, रुई में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१८ अगस्त से २६ अगस्त तक बाजारों में अच्छी तेजी का योग है, स्टाक को २६ अगस्त से

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घटाबढ़ी होकर मन्दी बने। चांदी भी मन्दी ही रहे।
२४ सितम्बर को बुध कन्या राशि में आ जाता है। कन्या राशि में बुध उच्च माना जाता है।
कन्याराशि में बुध का सम्बन्ध सूर्य-मंगल से होता है, अतः क्रूरग्रहों के साथ बुध का मेल जोरदार
तेजी का इशारा करता है। चना, गेहूं, मक्का, ज्वार, बाजरा, जौ, मोठ, मूंग, गुड़, खाण्ड, शक्कर,
हल्दी, सरसों, बिनौला, मूंगफली, खली-सरसों, खली बिनौला में मोटी तेजी बनेगी।
२५ सितम्बर के लगभग शुक्र के मघा-सिंह में आने पर सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन,
मजीठ, लाल-मिर्च में, गुड़, खाण्ड-शक्कर में, सरसों आदि तिलहनों में तेजी बनेगी।
२७ सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा,—यह भी बाजारों में तेजी का सूचक है। २८
सितम्बर को चित्रा नक्षत्र का मंगल गेहूं, चावल, चना, सोना, चांदी, एवं तांबा पीतल तेज होंगे।
(२४ से २८ सितम्बर तक अनाजों, गुड़ खाण्ड, तेल, तिलहनों में अच्छी तेजी से लाभ
मिलेगा।)
३० सितम्बर को मघा के चतुर्थ चरण में गुरु के आने पर गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, मक्का, मूंग,
मोठ आदि दालवाना एवं अन्य छोटे-मोटे सभी प्रकार के अनाजों में एवं सोना, चांदी में झटके के साथ
मन्दा बनेगा। अलसी में मन्दी के बाद विशेष तेजी एवं मन्दे के रिएक्शन आएंगे।
अक्तूबर— ३ अक्तूबर को सूर्य-बुध की अंशात्मक-युति होगी, मासारंभ में ही छोटे-मोटे
अनाजों, खाद्य तेलों, सरसों, मूंगफली, बिनौला, आदि तिलहनों में झटके के साथ तेजी बनेगी,—वायदा
व्यापारी इस समय तेजी का काम करके लाभ ले सकते हैं।
४ अक्तूबर को शनि के मार्गी होने पर बाजारों का रुख बदल सकता है। अतः सावधानी से काम
करें, अन्यथा हानि संभव है। इस समय हमारे विचार से तिल, तेल, सरसों, हींग, काली मिर्च, लौंग में
अच्छी तेजी बनेगी, बिनौला, मूंगफली एरण्ड, सोयाबीन में एवं सभी खाद्य तेलों में तेजी का विचार है।
जीरी, घी, गुड़ के स्टाक से आगे उत्तम लाभ मिलेगा। ध्यान दें, यदि बाजार मन्दे के बने तो मन्दे में ही
रहें,—यह आवश्यक समझें।
**७ अक्तूबर को बुध चित्रा में एवं मंगल तुला में आकर बड़ी लम्बी तेजी की लाइन बनाने वाला
है, तुला के मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि है, शनि पर मंगल की भी विशेष दृष्टि है। इस प्रकार
शनि-मंगल का आपसी दृष्टि-सम्बन्ध देश में राजनैतिक परिस्थिति को पेचीदा बनाएगा जिसका
असर तिजारत पर पड़ेगा। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, जिससे बाजारों
में तूफानी तेजी का संचार होने की उम्मीद है। इस समय सरकारी घोषणा किंवा सरकारी नीति को
ध्यान में रखें, सरकारी किसी खास वस्तु के आयात-निर्यात की घोषणा करके, किंवा व्यापार पर
तेजी पर भी अंकुश लगा सकती है, तात्पर्य यह है कि सरकारी गतिविधि को ध्यान में रखें। हमारे
विचार से तुला का मंगल जोरदार तेजी करेगा। रुई, कपास, सूत, सण, बारदाना, पाट, सरसों,
बिनौला, एरण्ड, सूरजमुखी, मूंगफली, सोयाबीन, आदि तिलहन में एवं सभी तरह के तेलों में, गुड़,
खाण्ड, शक्कर, चीनी, खल बिनौला, खल सरसों, गेहूं, उड़द, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा एवं अन्य
दालों में भी जोरदार तेजी का तूफान आएगा; यह खास लम्बी लाइन का है, समय पर ताजा मशवरा
हासिल करें, तो उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।**
१० अक्तूबर को चित्रा नक्षत्र में सूर्य आ रहा है, एवं **११ अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर
तेजी या मन्दे की लाइन (जोकि पहले चली आ रही है) को बढ़ावा देगा। यद्यपि बुध स्वयं अपनी एवं
शुक्र की राशि में मन्दे का सूचक माना गया है, लेकिन तुलाराशि के बुध-मंगल पर शनि की विशेष
दृष्टि होने से यहां मन्दा नहीं आएगा। हमारे विचार से तूफानी तेजी आएगी।** क्योंकि बुध, बालग्रह
है, बुध बाजारों में विशेष घटाबढ़ी करने वाला ग्रह है, बुध न शुभ है न अशुभ, जैसे भी ग्रह के साथ
मिलता है, वैसा ही असर करने लगता है, अतः यहां की स्थिति के मुताबिक बुध का तुला में आना तेजी
को भड़काने वाला ही है, रुई, कपास, तेलवाना, गुड़, खाण्ड, पाट, किराना, हल्दी, तेलों में, एवं
दालवाना तथा मोटे अनाजों में भी हमें अच्छी तेजी मालूम देती है, फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही
व्यापार बढ़ाना अक्लमन्दी है। (७ से १४ अक्तूबर तक तूफानी तेजी से वायदा वाले अच्छा लाभ लेंगे,
हाजर वाले अभी माल न छोड़ें।) १५ अक्तूबर को बुध स्वाती नक्षत्र में आकर रुई में मामूली मन्दे का
रुख बना सकता है। लेकिन १५ अक्तूबर को ही बुध एवं मंगल की अंशात्मक युति हो रही है, तेल,
तिलहन, गुड़, खाण्ड, एवं अनाजों की मार्किट तेज ही रहेगी। १६ अक्तूबर को पू. फा. नक्षत्र का शुक्र
गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दा कर सकता है।
१७ अक्तूबर को सूर्य तुला में आकर बुध मंगल के साथ मेल करेगा। इस समय बुध-सूर्य-मंगल
ये तीनों ग्रह शनि की नजर में हैं। रुई, चांदी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा, लाल चन्दन,
श्रीफल, सुपारी, ऊनी वस्त्र, तिल, तेल में तेजी का वातावरण रहे, गुड़, खाण्ड एवं दालवाना में भी तेजी
का ही रुख रहेगा।
**(१५ से १७ अक्तूबर तक तेल, तिलहन, एवं दालवाना अन्य अनाजों में, सोना, चांदी में तेजी से
लाभ होगा।)**
१८ अक्तूबर को पू. फा. १ में गुरु एवं पू. षा. २ में राहु आर्द्रा ४ में केतु का प्रवेश होगा, गुड़,
खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाज मन्दे एवं रुई में भी घटाबढ़ी के बाद मन्दा रहे। तिल, तेल एवं अन्य
तिलहनों में भी मन्दे का रुख बने। लेकिन कपास, जीरा, जौ, ज्वार, दाख, छुहारा में तेजी से दक्षिण
भारत में उत्तम लाभ मिलेगा।
२० अक्तूबर को राहु एवं नेपच्यून की अंशात्मक-युति होगी, लेकिन राहु नेपच्यून पर वृहस्पति
की दृष्टि है अतः बाजारों में तेजी-मन्दी के रिएक्शन आएंगे—विचारपूर्वक काम करें।
२३ अक्तूबर को बुध पश्चिम में उदित होने से रुई एवं कुछ शेयर-बाजारों में मन्दा आने का योग
है।
२४ अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आ रहा है, इसी दिन बुध विशाखा में आ जाता है। सूत,
सण, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग,
गुग्गल एवं विशेषतः रुई में तेजी का झटका आएगा।
२७ अक्तूबर को बुध एवं बेंकटेश (प्लूटो) की युति होगी, बुध, प्लूटो; सूर्य, मंगल पर इस समय
शनि की दृष्टि भी है, अतः वायदा व्यापार में तेजी से लाभ मिलेगा। ३० अक्तूबर को शुक्र उ. फा. में
आकर चावल, चांदी, मोती, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि श्वेत रंग की चीजों में मन्दी आने
का योग है— अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें, अचानक मन्दे का रुख बनने से ३१ अक्तूबर
को बुध वृश्चिक राशि में आकर अकेला होने से बाजारों की लाइन को बदल सकता है—नोट कर
लें,—यह समय बहुत सावधानी से व्यापार करने का है। क्योंकि बुध अफवाहों को प्रसारित करने में
चतुर है, झूठी किंवा सच्ची अफवाहों से बाजारों में पलटा आ जाता है।, अतः बाजार के रुख को देखकर
काम करें। हमारे विचार से घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी, सोना मध्यम, अनाजों में कुछ मन्दे का
रुख बन सकता है।
नवम्बर— २ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र का बुध सूत, सण, रुई, सोना, चांदी में मन्दा, अनाज का
भाव सम रखेगा। ३ नवम्बर को शुक्र कन्या में आएगा; चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी, गेहूं आदि सर्व
अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों में तेजी आएगी। **इस समय चावलों में विशेष तेजी का
झटका आने का योग है।** ५ नवम्बर को विशाखा में मंगल का प्रवेश एवं ६ नवम्बर को सूर्य का
विशाखा में प्रवेश जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] करेगा, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी आएगी।

७ नवम्बर को गुरु के पू. फा. [illegible] में आने पर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं और चार-मोटे अनाजों में मन्दा बनेगा, रुई में घटाबढ़ी से मन्दा आएगा। ८ नवम्बर के चन्द्रदर्शन शुक्रवार को अनुराधा नक्षत्र में होगा। सरसों, तिल, तेल, गुड़, चावल, उड़द, चना, रुई, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी का वातावरण रहेगा।

१० नवम्बर को [illegible] नक्षत्र में बुध एवं [illegible] नक्षत्र में शुक्र आ जाता है, यह योग भी बाजारों में अस्थिरता ही बनाता है। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले [illegible] के साथ तेजी बनेगी सायंकाल में मन्दा आ जाएगा। रुई, चांदी, चावल में मन्दा, सोना [illegible] तेज रहे। नोट—इन दिनों यदि अनाज व दालवाना में मन्दा हो तो शीघ्र ही स्टाक करें, आगे उनमें लाभ की संभावना ग्रहचाल के अनुसार बनती है।

(मास के प्रारम्भ से १४ नवम्बर तक बाजारों में तेजी-मन्दे के उतार-चढ़ाव आते रहेंगे, बाजार अस्थिर रहेंगे—अतः मन्दे में खरीद कर तेजी में बेचें—इस सिद्धान्त का अनुसरण करें, तभी लाभ मिल सकेगा।)

१५ नवम्बर को मंगल एवं प्लूटो की अंशात्मक-युति होगी, मंगल एवं प्लूटो दोनों क्रूर ग्रह हैं और इन पर शनि की दृष्टि भी है, अतः प्रभावशाली रूप से तेजी बनाएगा, वायदा व्यापारी इस समय तेजी का काम करें लाभ रहेगा। सोना, चांदी, तांबा, गुड़, शक्कर, खाण्ड, लाल मिर्च, मसाले, खाद्य तेल, सरसों, मूंगफली, बिनौला आदि एवं दालवाना में तेजी आएगी।

१६ नवम्बर को वृश्चिक संक्रान्ति शनिवार को है। इस दिन सूर्य वृश्चिक-राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस दिन गुड़, रुई, सोना, चांदी आदि धातुओं एवं अनाजों, तेल, तिलहनों के भाव भी प्रायः तेजी की ओर रहेंगे। इस समय गुड़, खाण्ड में भी तेजी हो रहेगी।

१७ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र का सूर्य भी जौ, चना आदि अनाजों में, सोना, चांदी आदि धातुओं में तेजी का संकेत देता है। गुड़, अलसी और मिर्च में तेजी होकर मन्दी हो।

२० नवम्बर को मंगल वृश्चिक-राशि में प्रवेश करेगा, वृश्चिक राशि में सूर्य-मंगल पहले ही आ चुके हैं। [illegible] मंगल के [illegible] राशि में आ जाने से तो बाजारों में अच्छी तेजी का दौर आ सकता है। अतः हमारे विचार से इस समय मन्दे का काम करने वाले हानि में रहेंगे, रुई, कपास, तिल, सरसों, बिनौला, अलसी, मूंगफली, एरण्ड, [illegible] सोयाबीन आदि तेलबीयों में, खाद्य तेलों एवं खली में, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी एवं सभी अनाजों में तेजी का वातावरण रहेगा।

(१६ से २० नवम्बर तक बाजार तेज रहेंगे, विचारपूर्वक काम करके लाभ लें।)

[illegible] नवम्बर को शुक्र [illegible] नक्षत्र में प्रवेश होगा उसी दिन मंगल अनुराधा नक्षत्र में भी आ रहा [illegible] सोना, चांदी, अनाज, रुई, कपास, लाल मिर्च, लाल चन्दन एवं [illegible] चीजों में तेजी [illegible]।

[illegible] नवम्बर [illegible] परस्पर अंशात्मक-युति का प्रभाव भी सभी बाजारों पर तेजी [illegible] फिर भी बाजार [illegible] काम करें।

२६ नवम्बर को धनु में राहु के साथ बुध का मेल होगा, साथ ही यूरेनस एवं नेपच्यून भी इस राशि में ही हैं, स्पष्ट है कि बुध का सम्बन्ध क्रूर ग्रहों से हुआ है। अतः रुई, कपास, सन, चांदी एवं शेयर बाजारों में भी जबरदस्त तेजी के [illegible] आएंगे।

२७ नवम्बर को बुध के धनुराशि में वक्री होने पर २८ दिन के अन्दर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, तिलहन में तेजी आएगी, इस समय रुई में धमाके की तेजी आ सकती है। व्यापारी ध्यान दें, कि ग्रह के वक्री होने पर कई बार बाजार पलटा खा जाते हैं, अतः बाजार के रुख को देखकर ही काम करें अन्यथा भारी हानि हो सकती है। परन्तु हमारे विचार से बाजारों में अच्छी तेजी आने की उम्मीद है।

३० नवम्बर को शुक्र तुला में आकर शनि से देखा गया है। इसी दिन अर्थात् ३० नवम्बर को ही वक्री बुध ज्येष्ठ वृश्चिक में आता है, शुक्र पर शनि की नज़र है एवं बुध का मेल वृश्चिक-राशि में मंगल एवं सूर्य के साथ हो गया है। तूफानी तेजी से लाभ लेने का चांस है। इस समय सोना, चांदी, खाद्य तेल, सरसों, बिनौला आदि तेलबीया, अनाजों एवं दालवाना में गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में ज़ोरदार तेजी आएगी, उत्तम लाभ ले सकते हैं, समय आने पर प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक स्पष्ट रूप से खुलासा दे सकेंगे।

(२६ नवम्बर से मासान्त तक बाजार तेजी में रहेंगे, फिर भी बाजार के रुख के अनुसार काम करें।)

दिसम्बर—२ दिसम्बर को बुध पश्चिम में अस्त होगा, लाइन में परिवर्तन आ सकता है। सावधानी से काम करें। रुई में धमाके की मन्दी, चांदी तेज, पाट हैसियन और शेयर मन्दे होंगे। ३ दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा में आता है, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, राराल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी का वातावरण रहे। रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रहे। ६ दिसम्बर को शुक्र स्वाती में आकर गुड़ में तेजी एवं अनाजों में मन्दा बनाएगा। ७ दिसम्बर को गुरु पू. फा. के तीसरे चरण में आकर अनाजों एवं गुड़, खाण्ड में मन्दा करेगा।

८ दिसम्बर को वक्री बुध की सूर्य के साथ अंशात्मक युति हो रही है, जब भी बुध वक्री होकर सूर्य के साथ युति करता है तो बाजारों में तेजी का धमाका होता है, अतः सावधानी से काम करें। हमारे विचार से रुई, कपास, सरसों, मूंगफली, बिनौला, तथा अन्य तेलवाना में, अनाजों में तेजी का बोलबाला रहेगा। ध्यान दें—यह तेजी ठहरेगी नहीं, तेजी आते ही लाभ लेने वाले ठीक रहेंगे, क्योंकि शीघ्र ही मन्दा आने का योग है। ८ दिसम्बर को रविवार को चन्द्रदर्शन पू. षा. नक्षत्र में होगा, अतः बाजार बन्द होने से पहले ही बाजारों में मन्दा आने का भय है—सावधानी से काम करें।

१० दिसम्बर को वक्री बुध के अनुराधा में आने पर सन, सूत, रुई, सोना, चांदी, में सामान्यतः मन्दा रहेगा। ११ दिसम्बर को शनि श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा, राई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, मसूर, ज्वार, बाजरा में तेजी बनेगी। शक्कर, गुड़, खाण्ड मन्दे, एवं वर्षा का योग भी बनेगा जिसका बाजारों पर प्रभाव पड़ेगा।

१३ दिसम्बर को मंगल ज्येष्ठा में आता है, एवं इसी दिन बुध का पूर्व में उदय होता है। बाजारों में अस्थिरता रहेगी। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी, गेहूं, चना आदि में अच्छी तेजी का झटका आ सकता है। तिल, घी, लाल मिर्च में तेजी बने।

१६ दिसम्बर सोमवार को धनु संक्रान्ति होगी। धनुराशि में सूर्य-राहु इकट्ठे हो रहे हैं, इन पर **बृहस्पति की दृष्टि है।** अतः अधिक तेजी का वातावरण न बने, रुई, कपास, सन, तिल तेल, सोना चांदी आदि में कुछ तेजी बने, अनाजों में मन्दा बने। इन दिनों जिन चीजों में तेजी बनेगी, वह ठहरेगी नहीं। १७ दिसम्बर को शुक्र विशाखा में आकर रुई एवं अनाजों में मन्दा बनाएगा।

१८ दिसम्बर तक बाजारों में अस्थिरता रहेगी। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचें, मन्दे तेजी के झटके ही आएंगे, एकतरफा लाइन १८ दिसम्बर तक नहीं बनेगी।

१८ दिसम्बर को बुध मार्गी होगा, बुध एवं मंगल दोनों वृश्चिक-राशि में हैं, वृश्चिक-राशि में बुध एवं मंगल तेजीकारक होता है, अतः इस समय बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। हमारे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह के वक्री होने पर कई बार बाजार पलटा खा जाते हैं, ... बाजार के रुख को देखकर ही काम करें ... बुध एवं मंगल तेजीकारक होता है, अतः इस समय ...

विचार से इस समय गेहूं, जौ, चना आदि अनाज एवं दालवाना में तेजी रहेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि में मन्दा बनेगा। बाजार के रुख को देखकर काम करें, सोना तेज रहे।

२० दिसम्बर को शनि-राहु के नक्षत्र चार के कारण-कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में उत्तम लाभ होगा।

२४ दिसम्बर को शुक्र एवं प्लूटो की अंशात्मक-युति हो रही है। शुक्र एवं प्लूटो पर शनि की दृष्टि भी है। यह योग बाजारों में अच्छी तेजी आने का योग है। चांदी-सोना, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर खाने वाले तेलों एवं तिलहनों में तेजी बनेगी।

२५ दिसम्बर के लगभग बुध ज्येष्ठ में आकर घी, गुड़, खाण्ड एवं चावलों में कुछ तेजी करेगा।

२६ दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक में आकर मंगल-बुध के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। ये तीनों ग्रह एक जगह होकर अफवाहों से बाजारों में तेजी का संचार कर देते हैं। गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी से उत्तम लाभ होगा। रुई एवं शेयर बाजारों में कुछ मन्दा आने के बाद तेजी आएगी।

२९ दिसम्बर को सूर्य पू. षा. में एवं शुक्र अनुराधा में दाखिल होगा। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, हल्दी, गूगल, कपूर, सण एवं चांदी में तेजी रहेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाजों में मन्दा रहेगा।

३१ दिसम्बर का दिन विशेष महत्त्वपूर्ण है, इस दिन मंगल-मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश करेगा। धनु राशि में सूर्य एवं राहु पहले ही बैठे हैं। सूर्य-मंगल-राहु ये तीनों धनुराशि में आकर तेजी को ही बढ़ावा देंगे। यद्यपि धनुराशि का मंगल मूलरूप में मन्दा करता है परन्तु क्रूर ग्रहों का सम्पर्क तेजी कारक ही रहेगा। पुनरपि यदि बाजार मन्दे के बनें तो मन्दे का ही काम करें, बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें। हमारे विचार से इस समय बड़ी मन्दी की लहर तेलवाना, चांदी, सोना, शेयर एवं रुई में आकर तेजी बनेगी, अन्ततः तेजी का काम करने वाले लाभ में रहेंगे। गुड़-खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में तेजी का योग है।

३१ दिसम्बर को गुरु भी वक्री हो रहा है—गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी व घी में मन्दा बनेगा। इस समय यदि दालवाना या मोटे अनाजों में मन्दा आए तो स्टाक करें, आगे कुछ मास बाद उत्तम लाभ मिलेगा। सोना-चाँदी के व्यापारी इस समय बाजार का रुख देखकर काम करें, हमारे विचार से इनमें भी मन्दा ही बनेगा।

जनवरी, (सन् १९९२ ई०)—नए साल के प्रारम्भ (१ जनवरी सन् १९९२ ई.) में सूर्य-राहु की **अंशात्मक-युति हो रही है,** इसलिए नए वर्ष का प्रारम्भ दालवाना, अनाज एवं तेल, तिलहन, रुई में तेजी के रिएक्शन से ही होगा। १ से ३ जनवरी तक तेजी का ही बोलबाला रहेगा।

४ जनवरी को मंगल के उदित होने पर उड़द, तिल, तेल अलसी तेज रहेंगे, अनाजों में मन्दा रहेगा। लेकिन ४ जनवरी को शनिवारी अमावस तो तेजी का संकेत देती है अतः व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें, अन्यथा हानि भी सम्भव है। हमारे विचार से तेल तिलहन, सोना-चांदी एवं शेयर-बाजारों में तेजी रहेगी।

५ जनवरी को बुध मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आ रहा है, धनुराशि में पहले ही सूर्य में मं. रा. बैठे हैं, स्पष्ट है, कि-पापी ग्रहों के साथ बुध का मेल है। रुई, कपास, सूत, गुड़, शक्कर, एवं अनाजों में तेजी रहे, सोना चांदी में भी मन्दा आएगा। ६ जनवरी को चन्द्रवार को उ.षा. नक्षत्र में चन्द्रदर्शन मन्दे का संकेत देता है।

७ जनवरी को सूर्य एवं नेपच्यून की अंशात्मक-युति होगी, यह युति वायदा व्यापारियों को तेजी से लाभ देगी। तेल-तिलहन, खली एवं चना, दालवाना में तेजी से लाभ मिलेगा। ११ जनवरी को मंगल-बुध की युति होगी एवं इसी दिन सूर्य उ. षा. में आएगा। एवं शनि श्रवण २ में पदार्पण करेगा। उड़द, मूंग, चावल, चना, जौ, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लाल-शक्कर, सरसों, अलसी में अच्छी खासी तेजी बनेगी, बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ाव तभी लाभ होगा।

१३ जनवरी को शनि अस्त होगा, अनाजों, तिलहनों एवं शेयर बाजारों में तेजी का रुख रहे।

१४ जनवरी को मंगलवारी मकर-संक्रान्ति है। सूर्य मकर राशि में आकर महाक्रूर शनि के साथ सम्बन्ध करता है, सूर्य-शनि का सम्बन्ध भयंकर तेजी कारक सिद्ध हो सकता है। सूर्य का प्रभाव प्रत्येक वायदा किंवा हाजर व्यापार पर पड़ता है। रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, बिनौला एवं खाद्य तेलों पर, मोटे अनाज एवं दालवाना पर, सोना-शेयर बाजारों काली मिर्च, एवं हल्दी पर सूर्य का विशेष प्रभाव पड़ता है, इस समय इन चीजों में तूफानी तेजी बनेगी, लाभ लें। सरकारी घोषणा किंवा आयात-निर्यात नीति की घोषणा भी व्यापार को प्रभावित करेगी—ऐसा मालूम देता है।

१६ जनवरी को बुध-राहु की अंशात्मक-युति होगी। यह युति वायदा व्यापारियों के लिए तेजी से लाभ देने वाली है। सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों मूंगफली एवं अनाजों में, तेजी से लाभ लिया जा सकता है। लेकिन १८ जनवरी को पू. षा. राशि में मंगल बाजारों में मन्दे की तरफ इशारा करता है, अतः तेजी में नफा खाकर मन्दे में फिर खरीदें।

१९ जनवरी को बुध एवं यूरेनस की अंशात्मक युति होगी, साथ ही २० जनवरी को शुक्र, मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर मंगल-राहु के साथ मेल करेगा, लेकिन इन पर गुरु की दृष्टि है, अतः म. रा. श. के द्वारा आने वाली तेजी को यह रोकेगा। स्पष्ट है कि इन दिनों तेजी और मन्दे की रिएक्शन आएंगे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी, रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी आए। गेहूं, जौ, चना, आदि अनाजों में तेजी बनेगी। लेकिन बाजार का रुख देखकर काम करने से अधिक ठीक रहेगा, हानि से बचे रहेंगे।

२१ जनवरी को मंगल एवं राहु की अंशात्मक-युति होगी, एक दिन की तेजी मन्दी लगाने वाले लाभ में रहेंगे। धमाके की तेजी गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं खाद्य तेल-तिलहनों, तांबा, सोना, चांदी में बनेगी, तुरन्त लाभ लें। अन्तिम समय बाजार बन्द तक की प्रतीक्षा न करें।

२२ जनवरी को गुरु वक्री होकर पू. फा. के दूसरे चरण में आ जाता गुड़, खाण्ड, शक्कर गेहूं आदि अनाज मन्दे होंगे, रुई में घटाबढ़ी से मन्दी आएगी। २३ जनवरी को उ. षा. नक्षत्र का बुध भी अनाजों के भावों में मन्दा करेगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त हो रहा है, बाजारों में जबरदस्त घटाबढ़ी चलेगी। अनाज, घी आदि मन्दे होंगे, रुई में घटाबढ़ी पहले तेज, बीच में मन्दा, अन्त में फिर तेज, सोना में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। २४ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य बाजारों में तेजी का वातावरण बनाएगा। गेहूं, जौ, चावल, चना, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग में तेजी बनेगी।

२५ जनवरी को बुध, मकर राशि में प्रवेश करेगा। मकर राशि में बुध का सम्बन्ध शनि एवं सूर्य के साथ होगा। यह योग तेजी का है। रुई, सोना, चांदी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, मक्का, चना, चावल, मूंग, उड़द, आदि दालें तथा खाद्य तेल एवं तिलहन बिनौला आदि में तेजी आएगी।

२८ जनवरी को मंगल एवं यूरेनस, ३० जनवरी को सूर्य एवं शनि की अंशात्मक युति होगी—यह योग वायदा व्यापारियों के लिए उत्तम लाभप्रद है, इस समय अनाजों, तेलों, तेलबीया, एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, आदि में अच्छी तेजी का झटका आएगा—विचारपूर्वक काम करके उत्तम लाभ ले सकते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३० जनवरी को शुक्र पू. षा. नक्षत्र में आ रहा है । इस समय मंगल-शुक्र एवं राहु ये भी पू. षा. नक्षत्र में ही हैं--अतः बाजार के रुख को देखकर ही काम करें, अन्यथा हानि में रहेंगे । शु. रा. मं. पर गुरु की दृष्टि होने से हमें मासान्त में बाजार मन्दे में लगते हैं । मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों एव नमक आदि में मन्दा आने का योग है ।

फरवरी १९९२ ई०— मासारम्भ में ही मंगल-नेपच्यून की अंशात्मक-युति होगी । अतः गुड़, तेल तिलहन में तेजी का वातावरण रहे । गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल तेज रहेंगे । लेकिन ३ फरवरी को सोमवती अमावस मंदे का इशारा करती है ।

४ फरवरी को बुध-शनि एवं राहु-शुक्र की अंशात्मक-युति हो रही है—ये युतिया सुनिश्चित रूप से बाजारों में तेजी का उफान लाएगी । खाद्य तेलों, तिलहनों, एवं अनाजों, रुई, चांदी, सोना में तेजी से लाभ मिलेगा ।

५ फरवरी को उ. फा. का मंगल रुई में विशेष तेजी का झटका लाएगा । चावल, चना, गेहूं, उड़द, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों, में तेजी बनाएगा ।

६ फरवरी को शुक्र-यूरेनस की युति एवं इसी दिन धनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य सोना, चांदी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूंग, मसूर आदि अनाज व अलसी रुई में तेजी का वातावरण बना देगा ।

८ फरवरी को सूर्य-बुध एव शुक्र-नेपच्यून की अंशात्मक-युति एव बुध का धनिष्ठा में आना बाजारों को और तेजी की तरफ बढ़ावा देगा । ऐसा विचार है, फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही व्यापार बढ़ावें, अन्यथा हानि संभव है ।

९ फरवरी को मंगल का मकर राशि में प्रवेश होगा । इस समय मकर राशि में सूर्य-शनि हैं, यह योग भी तूफानी तेजी का है । व्यापारी ध्यान दें कि—दालवाना, अन्य अनाजों, तेलों एवं तिलहनों, गुड़-शक्कर में तूफानी तेजी ही चलेगी—**इस समय प्रत्यक्ष मिलें ताजा मशवरा हासिल करें, उत्तम लाभ होगा ।** हमारे विचार से रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल में तेजी रहेगी । गेहूं आदि अनाज व अलसी में झटके से तेजी आएगी ।

१० फरवरी को उ. षा. नक्षत्र का शुक्र बाजारों में नरमाई लाएगा । १२ फरवरी को सूर्य-बुध की अंशात्मक-युति होगी एवं इसी दिन बुध भी कुम्भ राशि में गुरु से देखा गया है अतः बाजारों में तूफानी तेजी मन्दे के रिएक्शन आयेंगे—होशियारी से काम करें, हमारा विचार मन्दे का अधिक है ।

१३ फरवरी को कुम्भ राशि का सूर्य, बुध के साथ मेल करेगा एवं इन पर वृहस्पति की नजर है, तेजी के प्रभाव को गुरु कम कर देता है । अतः बाजार के रुख को ध्यान में रखकर काम करें । हमारा विचार विशेष तेजी या विशेष मन्दे का नहीं है—बाजार के मुताबिक चलें ।

१३ फरवरी को ही शुक्र भी मकर राशि में आकर सूर्य-बुध के साथ सम्बन्ध करता है--गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि अनाज एव सोना, चांदी आदि धातुओं में पहले घटाबढ़ी बाद में कुछ तेजी बनेगी ।

१६ फरवरी को शनि उदित हो रहा है, रुई, शेयर, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली मन्दे हों, चावल, गुड़, खाण्ड तेज हो रहे । इसी दिन १६ फरवरी को कुछ शतभिषा में आकर चांदी, सोना में मन्दा एव अनाजों में कुछ तेजी बनेगी ।

१९ फरवरी को शतभिषा का सूर्य एव इससे पहिले श्रवण नक्षत्र का शनि भी तेजी करे । सोना, चांदी, सन, सण, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, बिनौला, आदि तिलहनों में २० फरवरी तक जोरदार तेजी का झटका आएगा । ग्रह-केतु नक्षत्र चार से २० तारीख को तिलहनों में जोरदार तेजी का झटका आएगा ।

२२ फरवरी को मंगल-शुक्र की अंशात्मक युति होगी, इसी दिन वक्री गुरु पू. फा. १ में आता है, अतः गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाज मन्दे, रुई में भी घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी ।

२३ को पू. फा. में बुध एवं श्रवण नक्षत्र में मंगल आएगा । बाजारों में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी । सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि में मन्दा, रुई में घटाबढ़ी से मन्दी आए । गेहूं आदि अनाजों के भावों में तेजी-मन्दे के रिएक्शन आएंगे, बाजार के रुख को देखकर काम करें ।

२८ फरवरी को बुध पश्चिम में उदित होगा, वस्त्र रुई शेयरों में १५ दिन में अच्छा मन्दा आ सकता है ।

२९ फरवरी को शुक्र-शनि की अंशात्मक-युति होगी । इसी दिन बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा । मीन राशि के बुध पर शनि की दृष्टि है, अतः यह चांस तेजी का है, सोना, चांदी, रुई, कपास, तिल, सरसों, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, बिनौला, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि के बीज, एवं खाद्य तेलों, दालवाना में अच्छी तेजी बनेगी, फिर भी बाजार के रुख को ध्यान में रखें ।

मार्च १९९२ ई०—२ मार्च को बुध उ. भा. नक्षत्र में आता है । चांदी में घटाबढ़ी, रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों का भाव सम रहे । ३ मार्च को पू. भा. का सूर्य एवं धनिष्ठा का शुक्र रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, मूंग, मोठ, चना, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी ।

६ मार्च को शुक्र कुम्भ में आकर सूर्य के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा । लेकिन इन पर वृहस्पति की दृष्टि है अतः तेजी को बढ़ावा नहीं मिलेगा । रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा चावलों में मन्दा बनेगा ।

९ मार्च को शनि श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रविष्ट होगा । शनि एव मंगल दोनों मकर राशि में एक साथ चल रहे हैं । अतः सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, तेज होंगे । गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, रुई, सूत, अनाजों में साधारण तेजी एवं मन्दा बनेगा ।

१२ मार्च को रेवती नक्षत्र का बुध, केसर, मजीठ, कुसुम्ब, लाल मिर्च, लाल चन्दन, गेरू आदि लाल चीजों में गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी में मन्दा ही रहे—ऐसा विचार है, आगे मार्किट का रुख देखकर ही काम करें, तो उत्तम रहेगा । **(१३ मार्च तक बाजार मन्दे रहेंगे)**

१४ मार्च को शनिवारी मीन संक्रान्ति एवं शतभिषा में शुक्र का प्रवेश बाजारों का रुख तेजी की ओर करते हैं । तिल, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना में तेजी, प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेजी बाद में मन्दे की तरफ झुकाव रहता है ।

१६ मार्च को बुध के वक्री होने पर घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी, रुई में झटके के साथ अच्छी तेजी बनेगी परन्तु तुरन्त ही मन्दा आ जाने का योग है, सरसों आदि तिलहन में भी तेजी का कारण बनेगा । १७ मार्च को सूर्य उत्तरा भाद्रपदा में आकर चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेलों में तेजी को ही बढ़ावा देता है ।

१९ मार्च को कुम्भ राशि में मंगल आ जाता है, कुम्भ राशि के मंगल एवं शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि है, अतः बाजारों में लाइन बदल सकती है, । इसलिए बाजार के रुख को देखकर सूझबूझ से काम करें । शुभग्रह दृष्टि सम्बन्ध होने से हमें रुई, चांदी में काफी घटाबढ़ी गेहूं आदि अनाजों, दालवाना, गुड़, खाण्ड, सोना में मामूली तेजी बन सकती है । विशेष तेजी नहीं बनेगी ।

१९ मार्च को बुध पश्चिम में अस्त होगा, रुई में मन्दी, चांदी तेज, शेयरों के बाजार मन्दे रहें । क्योंकि बुध वक्री होकर अस्त हुआ है, अतः अनाजों में तेजी का ही रुख रहेगा ।

२० मार्च को वक्री गुरु मघा के चतुर्थ-चरण में आ रहा है, गुड़, खाण्ड, सर्वविध अनाज व सोना,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

झटका आएगा ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२० मार्च को वक्री गुरु मघा के चतुर्थ-चरण में आ रहा है,

चादी, लोहा मन्दे हों, अलसी में भारी मन्दा आने का योग है, तेजी-मन्दे के रिएक्शन भी आएंगे, सावधानी से काम करें।

२१ मार्च को वक्री बुध उ. फा. में आकर उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, रुई में घटाबढ़ी होकर मन्दी, चादी भी मन्दी रहे । २५ मार्च को पू. भा. में शुक्र रुई में तेजी, अनाजों में मन्दा करेगा ।

२६ मार्च को सूर्य एवं वक्री बुध की अंशात्मक-युति हो रही है । जब भी वक्री बुध के साथ सूर्य की युति होती है तो बाजारों में नई-नई अफवाहों से जोरदार तेजी के रिएक्शन आया करते हैं । हमारे विचार से तेल, तिलहन, मोटे अनाज, दालदाना एवं रुई कपास में धमाके की तेजी बनेगी, बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए काम करके उत्तम लाभ वायदा व्यापारी अवश्य ले सकते हैं । यह तेजी ठहरेगी नहीं ।

२८ मार्च को शतभिषा नक्षत्र का मंगल अनाजों के भावों में मन्दा, रुई, सोना, चांदी में पहले मन्दी बाद में तेजी बनेगी । ३० मार्च को रेवती नक्षत्र में सूर्य आ रहा है, अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, दाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल में साधारण तेजी बनेगी ।

स्पष्ट है कि इस मास में बड़ी लाइन का चांस नहीं है, तेजी मन्दी के झटके आते रहेंगे, उनमें अक्लमन्दी से काम लेकर ही लाभ ले सकेंगे। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचकर लाभ लें—यही ढंग लाभ लेने का इस मास में रहेगा, या प्रत्यक्ष मिलकर ताजा मशवरा हासिल करें, हम इनमें भी विशेष नोट आपको दे सकेंगे ।

व्यापारी ताजा मशवरा एवं समय-समय पर अचूक चांस प्राप्त करें

इस साल व्यापार में धन कमाने के कुछ सर्वोत्तम चांस आ रहे हैं, ये चांस हम केवल उन व्यापारियों को ही भेजते हैं, जो ५१ रु० भेजकर अपना नाम हमारे रजिस्टर में दर्ज करवा लेते हैं । साथ ही लाभ होने पर लाभांश का दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा भी ईश्वर को साक्षी रखकर करते हैं । ताजा मशवरा प्राप्त करने के लिए ८० पैसे वाला लिफाफा अपना पता लिखकर अवश्य भेजें ताकि तुरन्त जवाब दे सकें । पत्र-व्यवहार हिन्दी में ही करें, अन्यथा उत्तर न मिलेगा । ताजा मशवरा भी उन व्यापारियों को ही भेजेंगे, जिनकी फीस जमा है । **वायदा व्यापारी हरेक मास की ताजा रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मास १०१ रुपये भेजें, यह योजना इस अप्रैल १९९० से ही प्रारम्भ कर रहे हैं ।**

नोट—जो व्यापारी लाभ होने पर कोई पत्र नहीं देते व लाभांश नहीं भेजते, उन्हें आगे चांस नहीं भेजे जाते । वायदा व्यापारी प्रत्यक्ष मिलकर अधिक लाभ उठा सकते हैं ।

व्यापार विमर्श लेखक-इन्दु शेखर शर्मा शास्त्री, ज्योतिषाचार्य

पत्र-व्यवहार के लिए पता :—पं. इन्दु शेखर शर्मा शास्त्री, ज्योतिषाचार्य M.A.

(सुपुत्र पं० मुकुन्द बल्लभ जी ज्योतिषाचार्य)

मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय मु०-पो० कुराली (रोपड़), पंजाब ।

पृष्ठ ४६ का शेष —

इस विधि से अनेकों नवदम्पत्तियों ने सन्तान सुख इच्छानुकूल प्राप्त किया है । आवश्यक मुहूर्त्त के अन्तर्गत "गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त" लगभग समस्त पञ्चांगों में उपलब्ध है; उसका विशेषतः ध्यान रखें । अवश्यमेव स्वेच्छा से सन्तान सुख प्राप्त होगा । आशा है, पाठकों को यह लेख पसन्द आयेगा और अपनी प्रतिक्रियायें भेजकर अनुगृहीत करेंगे । बुद्धिजीवी वर्ग से नम्र निवेदन है वे सहयोग दें ।

नोट—सारणी में संकेताक्षर निम्नवत् हैं—

A = पुत्री

B = पुत्र

"सारणी"

स्त्री की आयु	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32
मास															
जनवरी	A	B	A	B	A	B	B	A	B	A	B	A	B	B	B
फरवरी	B	A	B	A	B	B	A	B	A	B	A	B	A	A	A
मार्च	A	B	A	A	B	A	B	B	B	A	B	A	A	B	B
अप्रैल	B	A	B	A	A	B	B	A	A	B	A	A	A	A	A
मई	B	A	B	A	B	B	A	A	A	A	A	B	A	A	A
जून	B	B	B	A	A	A	B	B	B	A	A	B	A	A	A
जुलाई	B	B	B	A	A	B	B	A	A	B	B	B	A	A	A
अगस्त	B	B	B	A	B	A	A	B	B	B	B	B	A	A	A
सितम्बर	B	B	B	A	A	B	A	B	A	B	B	B	A	A	A
अक्टूबर	B	B	A	A	A	B	A	B	A	B	B	A	A	A	A
नवम्बर	B	A	B	A	A	B	A	B	A	A	A	A	B	A	A
दिसम्बर	B	A	B	A	A	A	A	B	A	B	A	A	B	B	B

प्रस्तोता :—

पं० अशोक कुमार जातुकर्ण

(ज्योतिष बृहस्पति, हस्तरेखा विशेषज्ञ,

शास्त्री, रजत पदक विजेता)

मु. पो. गागोर

जिला—मुजफ्फरनगर

पिन—२४७७७८, उ०प्र०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(किन-किन दिनों में कब-कब यन्त्र-मन्त्र आदि सिद्ध करें)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रांतियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक वचन उपलब्ध है। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त शिरोमणि' में कहा है; कि—यदि क्रान्तिसाम्य के समय जप अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है;—''पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होम दानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।'' यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे १ जनवरी १९९१ ई. से ३ अप्रैल १९९२ ई. तक की बारह सायन संक्रांतियों के पुण्यकाल तथा क्रांतिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों के निर्माण से एवं मन्त्र जाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्र ग्रहण के अलावा यन्त्रादि साधनों के लिए अर्धोदय योग, महोदय योग, महावारुणी पर्व, वारुणी पर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्धोदय योग आदि कभी-कभी आते हैं। नीचे कोष्ठक में साधकों के लिए इन सभी का निर्देश किया गया है।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप से सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल से साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक ही निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल (१ जन. ९१ से ३ अप्रै. ९२ तक)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
२० जन.	१३/२९	२१ जन.	१/२९
१९ फर.	२/४१	१९ फर.	१४/४१
२१ मार्च	२/१७	२१ मार्च	१५/५
२० अप्रै.	१३/१५	२१ अप्रै	२/३
२१ मई	१२/३४	२२ मई	१/२२
२१ जून	२०/२६	२२ जून	९/१४
२३ जुला.	७/१७	२३ जुला.	२०/५
२३ अग.	१४/२०	२४ अग.	३/८
२३ सित.	११/५२	२४ सित.	०/४०
२३ अक्तू.	२१/८	२४ अक्तू.	९/५६
२२ नव.	१८/४१	२३ नव.	९/२९
२२ दिस.	७/५८	२२ दिस.	२०/४६
सन् १९९२ ई.			
२० जन.	१८/३८	२१ जन.	७/२६
१९ फर.	८/४९	१९ फर.	२१/३७
२० मार्च	७/५३	२० मार्च	२०/४१

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यन्त्रादि साधना की जा सकती है, लेकिन सायन-संक्रान्तियों के पुण्यकाल इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व रखते

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) (१ जन. ९१ से ३ अप्रै. ९२ तक)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
१० जन.	११/५९	१० जन.	२०/२९
२४ ,,	३/२३	२४ ,,	८/४५
५ फर.	५/२५	५ फर.	१०/५९
१८ ,,	२०/६	१९ ,,	०/३२
३ मार्च	२२/३०	३ मार्च	२६/४६
१६ ,,	११/२३	१६ ,,	१५/२९
२९ ,,	१४/२१	२९ ,,	१८/२८
११ अप्रै.	१/३०	११ अप्रै.	६/०
२३ ,,	२/३८	२३ ,,	७/५०
६ मई	१४/३	६ मई	२०/४०
१८ ,,	१३/५४	१८ ,,	२३/४५
१ जून	३/२०	१ जून	१२/२२
१३ ,,	०/५५	१३ ,,	९/४५
२७ ,,	१६/५६	२७ ,,	२९/४६
७ जुला.	२३/४८	८ जुला.	१४/१२
२० ,,	५/१३	२० ,,	१२/५८
३ अग.	२/४९	३ अग.	८/१४
१५ ,,	०/३४	१५ ,,	५/३७
२८ ,,	१८/११	२८ ,,	२२/४९
९ सित.	११/२७	९ सित.	१५/३३
२३ ,,	१/२९	२३ ,,	५/५५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१८ ,,	१७/२४	१८ ,,	२१/३५
३१ अक्तू.	०/३५	३१ अक्तू.	५/२३
१३ नव.	२१/९	१३ नव.	७/५८
२५ ,,	१४/१९	२५ ,,	२१/५६
८ दिस	११/५१	९ दिस.	१/३४
१९ ,,	१०/५३	२० ,,	२/५०
सन् १९९२ ई.			
१ जन.	२/५३	१ जन.	१७/१६
१५ ,,	३/१९	१५ ,,	११/५७
२७ ,,	१७/५१	२६ ,,	०/११
१० फर.	१९/४४	९ फर.	१/१८
२१ ,,	१६/११	२१ ,,	२०/४८
६ मार्च	४/१६	६ मार्च	९/५
१८ ,,	४/३१	१८ ,,	८/२९
३१ ,,	१२/३७	३१ ,,	१७/३४

सूर्य और चन्द्रमा की राशियों के अनुसार जाना गया क्रान्तिसाम्य बहुत ही स्थूल होता है। यहाँ दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल महापात गणित से जाना गया है, जोकि प्रामाणिक है। यहाँ दिए गए क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ-समाप्ति कालों में [illegible]

षडशीतिमुख संक्रान्ति पुण्यकाल (भा० स्टै० टा०)

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
सन् १९९१ ई.			
१० जन.	१७/२७	१० जन.	२३/२७
१० अप्रै.	७/१५	१० अप्रै.	१३/१४
४ जुला.	१०/८	४ जुला	१६/८
१ अक्तू.	१६/३१	१ अक्तू.	२२/३१
सन् १९९२ ई.			
११ जन.	१/४४	११ जन.	७/४४

महोदय योग १९९२ ई.

प्रारम्भ तारीख	घं. मि.	समाप्त तारीख	घं. मि.
३ फर.	१०/२४	४ फर.	०/३१

१० घ २४ मि. के बाद व्यतिपात योग भी आ जाता है अतः १० घ २४ मि. के बाद महोदय योग बनेगा क्योंकि इस दिन रविवार न होने से पूर्ण अर्धोदय नहीं बनता।

इस वर्ष वारुणी, महावारुणी पर्व नहीं बनते। माघ की अमा को श्रवण नक्षत्र है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यन्त्र मन्त्र एवं तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गत कई वर्षों से देते आ रहे हैं। मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरु-मुख से प्राप्त करें एवं दृढ़ निश्चयी होकर जप अनुष्ठान आदि द्वारा सिद्धि प्राप्त करके यशोलाभ करें। ध्यान रहे—दीपमाला की रात्रि, क्रान्तिसाम्य काल, सायन निरयण संक्रान्तिकाल में या ग्रहण के समय यन्त्रों को लिखकर मन्त्रों को जप पूर्वक सिद्ध करके अविलम्ब ही चमत्कार देख सकते हैं। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने दैदय में अक्षुण्ण यश को प्राप्त करता है—"सिद्धिर्भवति विद्याम्" — सम्पादक।

(१) पति-पत्नी में कटुता को दूर करने का यन्त्र

निम्नांकित यन्त्र को भोजपत्रादि पर अष्टगन्धादि से दीपमाला की रात्रि में १०८ बार लिखें। स्त्री या पुरुष एक यन्त्र अपने पास रखे तो परस्पर प्रेम सम्बन्ध बना रहेगा। मांस-मदिरा आदि का सेवन छोड़ दें। अन्यथा सिद्धि न होगी। यन्त्र के नीचे जहां नाम लिखा है, वहां स्त्री या पुरुष (जिससे सम्बन्ध रखना चाहता है, उस व्यक्ति) का नाम लिखें।

	४	२	२	६
यन्त्र	व	न	६	ह
	व्य	न	अ	अ

(२) सर्वविध ज्वरनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को नागबेल के पत्र पर शुद्ध होकर विधिपूर्वक धतूरे के कांटे या अनार की कलम से लिखकर भगवान् का स्मरण करते हुए खावे, ज्वर शान्त होगा।

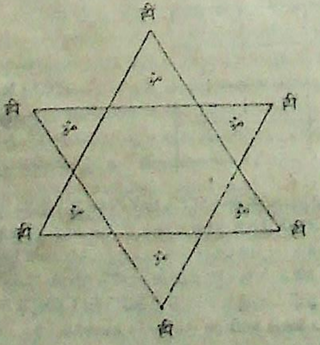

(३) सिद्ध आकर्षण विधान

घर से स्त्री, पुरुष या बालक रूठ कर चला गया हो, या विदेशी घर आने का विचार न रखता हो तो
निम्नलिखित विधान उस व्यक्ति को लौटाने में अमोघ प्रभावप्रद सिद्ध होता है। कुम्हार के घर से स्वयं जाकर एक
नया पक्का घड़ा, जो कहीं से फटा टूटा न हो, ले आइये, और साथ ही एक कसोरा भी। स्मरण रहे, कि — उनमें
कहीं भी काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में निम्नलिखित 'नवार्ण मंत्र' का यन्त्र केसर से
लिखिये, और साथ ही एक यन्त्र भोजपत्र पर लिखकर उसी घड़े में डाल दीजिये और तांबे के ४ पैसे भी, कम ज्यादा
नहीं। कसोरे से ढककर घड़े को बाईं ओर घुमाइये और यह मंत्र पढ़िये—

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैविच्चे" सातबार घुमाकर घड़े को एकान्त में रख दीजिये। ऐसे सात रोज करें।
सात दिन में ही वहां से वह व्यक्ति चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा। इस आकर्षण विधान करने से पहले
उपरोक्त मन्त्र को ब्रह्मचर्य पूर्वक सवालक्ष जप लेवें और यन्त्र को भी दिवाली की रात में लिखकर चलता कर
लेवें, फिर देखें चमत्कार।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे

(४) मृतवत्सा-दोष शान्ति के लिए अनुभूत प्रयोग

बच्चों का उत्पन्न होकर मर जाना मृतवत्सा दोष या अठराहादि कहलाता है। इसकी शान्ति के लिए
अनुभूत विधान लिखते हैं — गर्भवती स्त्री किसी भी कृष्ण पक्ष की रात्रिव्यापनी अमावस्या को सात स्थानों (कूप,
नदी, तालाब या नलों) का जल लेकर उसमें सात वृक्षों के हरे पत्ते डाल दे। तदनन्तर श्वेत सरसों को—

ओ३म् शूलेन पाहिनो देवि, पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।
ओ३म् प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।

इस मन्त्र को २१ बार अभिमन्त्रित करके उस जल में छोड़ देवें। फिर १ पग रात व्यतीत होने पर ग्राम के
बाहर एकान्त स्थान में पति के साथ बदरी वृक्ष (बेरी) के नीचे जावें। उस बेरी को लाल मंगल-सूत्र (मौली परांदा)
बांधे और फूल, चावल, रोली, गुड़ चढ़ावे। फिर केवल एक वस्त्र पहनकर उसके नीचे जड़ पर बैठकर वह
अभिमन्त्रित सरसों वाला जल सिर में डालकर स्नान करे। फिर वह स्नान वाला वस्त्र वहीं छोड़ सूखे वस्त्र धारण
करके बेरी को चिपट कर कहे कि "हे बहिन मेरे फल तुम ले लो अपने फल मुझे दे दो। ऐसा कहकर तीन बार बेरी
से चिपटे और तीन बार ही बेरी से अलग हो जावे। प्रत्येक बार इसी तरह चिपटकर वही उपरोक्त शब्द कहे।

जब स्त्री बेरी को चिपट रही हो तब वहां उपस्थित पति को चाहिए कि उसके शरीर पर टार्च आदि से ऐसे
प्रकाश डाले, कि जिससे बेरी पर उसकी (पत्नी की) छाया पड़ जावे पर बेरी की छाया उसके शरीर पर न पड़े।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फिर घर आकर रातभर एकान्त में मौन रहे। प्रातः सूर्योदय के बाद ही बोले। उस रात गीले सिर किसी स्त्री व कन्या पर अपनी छाया न पड़ने देवे। तदनन्तर शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को निम्नलिखित यन्त्र अनार की कलम से भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखे। फिर तांबे के ताबीज में सिन्दूर नीचे रखकर ऊपर यंत्र रखे और उसके ऊपर शालिग्राम पर चढ़ी हुई तुलसी का पत्र चढ़ाकर ताबीज का मुख बन्द कर देवे। यह ताबीज कन्या कुमारी के द्वारा काते हुए लाल सूत्र से स्त्री की कमर में धूप देकर बांध दे। फिर ढाई सेर गेहूं के आटे में ढाई पाव मीठा डालकर २१ अपूप (पुआ) शुद्ध घृत से बना श्री माता दुर्गा के समर्पण करके बच्चों को खिला देवे। ऐसा करने से अठराहादि दोष दूर होकर सन्तान चिरञ्जीवी रहेगी। बच्चे के जन्म के बाद यन्त्र को चलते जल में बहा देवे। अठराहे का यन्त्र यह है।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

नोट : इस यन्त्र को पहले दीपमाला या ग्रहण में १०८ बार अष्टगन्ध से लिखकर सिद्ध कर लेवे।

(५) सन्तान रक्षा यन्त्र

बहुत से व्यक्ति सन्तान प्राप्त होने पर भी सन्तान के न रहने पर अत्यन्त दुःखी रहते हैं, निम्नांकित यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि में विधिपूर्वक लिखा जाने पर अपना प्रभाव दिखाता है।

२	१	०	१
६	३	२२	२२
४	६	८	१
७	६	३	२०

इस यन्त्र को बच्चा होने से पहिले माता के गले में धारण कराए। बच्चे के जन्म के बाद माता के गले से उतार धूप देकर बच्चे के बाधे। चिरायु होगा।

(६) शत्रु में भी मैत्री-भावना उत्पन्न करने के लिए अवधूत मन्त्र

जब शत्रु संकट का कारण बन जायें तो शनिवार के दिन विरोधी व्यक्ति के पैर के तले की मिट्टी, चौराहे की मिट्टी, जहां गधा लेटा हो वहां की मिट्टी लेकर नीचे लिखे मंत्र को २१ बार पढ़कर अभिमन्त्रित कर लें और उसी दिन यानी शनिवार को और अगले शनिवार को चुपके से विरोधी व्यक्ति के सिर में डाल दे। शत्रुता छोड़कर मित्र बन जायगा जो कहोगे वही करेगा। इस मंत्र का प्रभाव प्रत्यक्ष सिद्ध है। दीपावली की रात्रि को जाप करके सिद्ध कर लें।

ॐ नमो धोबी धोती सुरजी धुसी परमेश्वरी जहां लगाऊँ तहां लगे नहीं तो राजा रामचंद्र जी की आन।

(७) रूठे हुए व्यक्ति को अनुकूल करने के लिए मंत्र

जब घर का कोई व्यक्ति रुष्ट हो जाये और कहना न माने तो शुक्ल पक्ष के शनिवार से शुक्रवार तक कुछ चावल लेकर उस मंत्र का ग्यारह हजार जाप करो—शुक्रवार को उन चावलों की खीर बनाओ और उस खीर पर ११ बार मंत्र पढ़कर फक मारो फिर खिलाओ और चमत्कार देखो।

मन्त्र : ॐ नमः आदर्य 'अमुकं' मे वशं कुरु स्वाहा।

(नोट—मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द का प्रयोग है, वहां जिस व्यक्ति को वश करना हो उसका नाम लें।)

(८) दुकान की बिक्री बढ़ाने का अवधूत यन्त्र

२१	८	२	७
६	६	२५	२९
२७	१२	८	१
६	५	२३	२६

विधि— शुक्ल पक्ष के रविवार को तुलसी के रस से चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखकर आसन के नीचे गाढ़ दो। दुकान की बिक्री बढ़ने लगेगी।

(९) धनदायक्षिणी का अवधूत मन्त्र

दान्तं बिन्दु समारूढं महामायां हरिप्रियाम्।
रतिप्रिये ततः पंचाद्विआयां ततः प्रिये।।
नवाक्षरो महामन्त्रो वृतं सिद्धिप्रदायकः।।

—गुप्तसाधन पटल

मन्त्र — ह्रीं ह्रीं श्रीं रतिप्रिये स्वाहा''।

यह नौ अक्षर का मन्त्र है। इस मन्त्र को जपने से साधक को शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। इस देवी की आराधना से दारिद्रय दूर होकर रसायन और भूमिगत द्रव्य की प्राप्ति होती है।

कुछ तन्त्र एवं औषध-प्रयोग

तन्त्र विज्ञान का ही अंग है जोकि रहस्यमय एवं गुप्त है परन्तु इसके प्रयोग से तत्काल चमत्कार अनुभव किया गया है।

(१) कुंकुम, गोरोचन और सिंदूर तीनों को आंवले के रस में पीसकर तिलक करे तो जो देखे मोहित हो।

(२) **बांझ स्त्री के सन्तान**—बिना छेद का आधा सच्चा मोती, आधा जायफल, असली आधा मूंगा, इन तीनों का चूर्ण कर खरल कर इतने ही वजन की मात्रा बनाकर मासिक धर्म पश्चात् ३ दिन सेवन करने से गर्भ धारण होगा।

(३) **बालों का गिरना रोकना**—चाय की पत्तियां और त्रिफला समान भाग लेकर कूटकर यदि पाव भर है तो ½ सेर पानी में उबालो जब चार छटांक पानी रह जाय तो उतार कर ठंडा होने पर मल छानकर सिर पर मलो तो बाल गिरना बन्द हों।

मिरगी (अपस्मार) रोग का अनुभूत उपचार

बेलगिरी (बिल्व वृक्ष) के पन्द्रह पत्ते और काली मिर्च के पांच दाने लेकर बारीक पीस लें। तत्पश्चात् इसे १०० ग्राम ताजा पानी में घोल लें। इसमें थोड़ी सी देशी खांड मिला लें और रोगी को पिला दें। इसी प्रकार इतनी ही मात्रा सुबह शाम एक मास तक पिलावें। मिरगी रोग जीवन में कभी नहीं होगा। यह अनुभव है। हर तरह के दौरों के लिए यह दवा अत्युत्तम एवं सफल रही है। उपचार के समय खटाई, लाल मिर्च, तली हुई वस्तु, गुड़, चाय एवं अन्य गर्म वस्तुओं का सेवन बिल्कुल न करें। श्रावण एवं चैत्र में (प्रातः सायं) दोनों वक्त बिल्ववृक्ष के पत्तों का ऊपर लिखी विधि के अनुसार प्रयोग करने से तुरन्त लाभ अनुभव किया गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

विशेष लेख –

अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र का विचलन

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, अभिजित् ५९/६, पंचकूला (हरियाणा)

[अब भी, जबकि भारत के लगभग ९५ प्रतिशत पञ्चांग संशोधित वेधसिद्ध (दृक्तुल्य) ग्रहगणित के अनुसार बनते हैं, बहुत से फलित ज्योतिषी वर्षफल आदि के निर्माण के लिए प्राचीन परम्परा से चले आ रहे सूर्य सिद्धान्तीय उस वर्षमान (सौर वर्षमान) को ही अपनाते चले आ रहे हैं जोकि वास्तविक दृक्तुल्य शुद्ध वर्षमान से लगभग ८½ पल अधिक है। इस अशुद्ध वर्षमान को हम पिछले लगभग १५०० वर्षों तक प्रयोग में लाते रहे हैं। इसे इतने दीर्घकाल तक प्रयोग में लाते रहने से क्रान्तिवृत्त (सूर्य के भ्रमणवृत्त) पर हमारी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु किस प्रकार विचलित हो गए हैं – इसके स्पष्टीकरण के लिए यह लेख अत्यन्त सरल सुबोध शैली में श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग के पाठकों के लिए लिखा गया है। इससे पाठकों को कई ऐसी आश्चर्यजनक बातें हमारे राशिचक्र के बारे में ज्ञात होंगी, जिनसे वे आज तक अपरिचित रहे हैं।

अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशिचक्र में पैदा हुए विचलन तथा उसे संशोधित करने एवं रोकने के लिए किए गए प्रयासों को ज्योतिष का साधारण ज्ञान रखने वाला पाठक भी आसानी से समझ सके – इस दृष्टि से यह लेख अध्यापन शैली में सरल व्याख्यात्मक माध्यम से लिखा गया है। दुरूह प्रतीत होने वाले विषय एवं स्थलों को दो-दो, तीन-तीन प्रकारों से पूरी तरह स्पष्ट एवं बुद्धिगम्य बनाने का पूरा प्रयास किया गया है, जिससे कुछ प्रबुद्ध पाठकों को यहां अनेकत्र पुनरुक्ति भी मिलेगी।

चित्रापक्षीय एवं रैवत-पक्षीय पञ्चांगों में क्या अन्तर है – यह भी पाठक को यह लेख पूरी तरह समझा देगा। मेरा विश्वास है – मेरे इस लेख को दत्तचित्त होकर पढ़ लेने के बाद ज्योतिष में रुचि रखने वाला कोई भी पाठक भारतीय पञ्चांगों की गणित में होने वाली विविधता एवं मतभेदों का मूल समझने की स्थिति में आ जाएगा। ऐसे पाठकों के लिए हम भविष्य में इस विषय से सम्बद्ध विवेचनात्मक और भी लेख पञ्चांग में देंगे।
--प्रियव्रत शर्मा]

ग्रहस्थिति एवं तत्सम्बद्ध सभी प्रकार की गणना पद्धति में संशोधन की परम्परा उतनी ही पुरानी है जितना कि सिद्धान्त ज्योतिष (Astronomy) का इतिहास। भारतीय ज्योतिष में उत्तरोत्तर संशोधन की प्रक्रिया हमें वैदिक ज्योतिष से लेकर अद्यतनीन ज्योतिष तक निरन्तर उपलब्ध होती है। हमारे प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों में तिथ्यादि पञ्चांग, ग्रहस्थिति, ग्रहण आदि सभी ज्योतिः सम्बन्धी गणना प्रक्रियाओं का परम विकास जिस सिद्धान्त ग्रन्थ में मिलता है वह है "सूर्य सिद्धान्त"। यही कारण है – प्राचीन काल से ही भारतीय पञ्चांगकारों एवं लगभग सभी फलित-सिद्धांत के भारतीय ज्योतिषियों ने सभी प्रकार की ज्योतिष-गणना के लिए सूर्य सिद्धान्त के प्रतिपादन को ही सर्वाधिक प्रामाणिकता दी। सूर्य सिद्धान्त का निर्माण काल ईसा की लगभग चतुर्थ शताब्दी माना जाता है। सूर्य सिद्धान्त के निर्माण काल के अनन्तर भी अनेक प्रबुद्ध सिद्धान्तज्ञ विद्वान्, भारतीय ज्योतिष क्षेत्र में आए, जिन्होंने सूर्य सिद्धान्त के मूलांकों में होने वाली स्थूलता के निवारण के लिए पर्याप्त प्रयास किया। लेकिन लगभग १५ शताब्दियों (शाक १८००) तक कोई ऐसी रचना भारतीय सिद्धान्त ज्योतिष के क्षेत्र में नहीं उतरी जो सूर्य सिद्धान्त के परम्परा प्राप्त प्रभाव को समाप्त कर सकती, जबकि इस कालावधि में कई महत्त्वपूर्ण कृतियां पञ्चांग संशोधन के लिए ज्योतिष जगत् में आई, लेकिन वे भी सूर्य सिद्धान्त के प्रति भारतीय पंचांगकारों की दीर्घ परम्परा प्राप्त दृढ़ आस्था को शिथिल करने में बुरी तरह असमर्थ रहीं, क्योंकि सभी भारतीय ज्योतिषी इस ग्रन्थ को सूर्य भगवान की कृति समझ कर अत्यन्त आदरणीय समझते थे। लेकिन हमारी इसी २०वीं शताब्दी में लो.मा. तिलक, छत्रे, दफ्तरी, बा.शं. दीक्षित, गोविन्द सदाशिव आप्टे एवं वेंकटेश केतकर आदि अनेक ज्योतिष विद्वानों ने अपनी रचनाओं तथा अनेक ज्योतिष सम्मेलनों के आयोजनों द्वारा सभी भारतीय ज्योतिषियों तथा पञ्चांगकारों को ग्रहगणित के वेधसिद्ध मूलांकों तथा संस्कारों को स्वीकार करने के लिए बाधित किया। जिसके परिणामस्वरूप आज भारत के लगभग ९५ प्रतिशत पञ्चांग वेधानुसारी दृक्तुल्य ग्रहगणित के अनुसार बनने लगे हैं। अब इन दृक्तुल्य पञ्चांगों के आधार पर व्रतोत्सवों का निर्णय होता है। वेधागत संस्कारों से संस्कृत दृक्पक्षीय ग्रहस्थिति आदि को फलित ज्योतिष में भी फलादेश का आधार बना लिया गया है। फलित सम्बन्धी सभी गणित प्रक्रियाओं का मूल अब आकाश में प्रत्यक्ष दृश्य संशोधित यही ग्रहगणित है।

अब, जबकि फलित क्षेत्र में भी सूर्य सिद्धान्त, ब्रह्म सिद्धान्त आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार निर्णित ग्रह भोगांश (स्पष्ट ग्रह) आदि के स्थान पर संशोधित ग्रह भोगांश आदि का ही प्रयोग होने लगा है, जन्म पत्र एवं वर्षफल के निर्माण के लिए दृक्तुल्य गणित वाले पञ्चांगों का ही आश्रय लिया जा रहा है तब सूर्य के भगण काल (सौर वर्ष मान) के लिए सूर्य सिद्धान्त को ही प्रामाणिक मानते जाना दैवज्ञों की भारी गलती होगी। बहुत से ऐसे फलित ज्योतिषी अब भी भारत में हैं जो वर्षफल आदि की गणित के लिए तो संशोधित ग्रह गणित वाले दृक्तुल्य पञ्चांगों को ही प्रयोग में लाते हैं लेकिन वर्ष फल निर्माण के लिए सूर्य सिद्धान्तीय "वर्ष प्रवेश सारणी" के प्रयोग की परम्परागत प्रवृत्ति से वे अभी तक मुक्त नहीं हुए हैं, क्योंकि उनकी यह भ्रान्त धारणा है कि वर्ष प्रवेश काल के साधन की ताजिकोक्त "गताः समाः पादयुताः...." प्रक्रिया का संशोधित ग्रहगणित से कोई सम्बन्ध नहीं है। उन्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि वर्षफल जन्म-पत्र के निर्माण में सूर्य के संशोधित दृक्पक्षीय भोगांश (राश्यादि) लेना और वर्षमान (सौर-वर्षमान) के लिए सूर्यसिद्धान्त को प्रामाणिकता देना – ये दोनों परस्पर विरोधी हैं। सौर वर्ष या सूर्य का भगणकाल (१२ राशियों में सूर्य जितने समय में घूम जाता है, वह काल) सूर्य सिद्धान्त के मत से ३६५ दिन १५ घड़ी ३१ पल ३० विपल जबकि वेधसिद्ध (आकाश में वेधयन्त्रों द्वारा जाना गया, वास्तविक भगणकाल ३६५ दिन १५ घ. २२ प. ५३ विप. है। किसी भी ग्रह के शुद्ध भोगांश ज्ञात करने के लिए ग्रहगणित की प्रक्रिया में उसके शुद्ध भगणकाल का ही प्रयोग होता है। अतः यह स्पष्ट है कि दृक्तुल्य पञ्चांगों में दिए गए सूर्य के भोगांशों को वर्षफलादि के लिए प्रयोग में लाने वाला दैवज्ञ यदि सूर्य के भगणकाल (सौर वर्ष मान) के लिए दृग् विरोधी सूर्य सिद्धान्त को प्रामाणिक मानता है तो यह उसका अबोध है, वह 'वदतो व्याघात' करता है। वह यदि दृक्तुल्य सौर वर्ष को प्रयोग में नहीं लाता है तो उसके द्वारा निर्मित वर्षफल "भानुमती का कुनबा" ही कहा जाएगा, उसकी गणित "इतोभ्रष्टस्ततो भ्रष्टः" ही होगी।

सूर्य सिद्धान्तीय तथा वेधसिद्ध वर्षमान में अन्तर

सूर्य अपने भ्रमणवृत्त (क्रान्तिवृत्त) में स्थित १२ राशियों (३६० अंशों) को पार करने में जितना समय लेता है – उस समय को ही सौर वर्ष कहा जाता है। दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि क्रान्तिवृत्त के किसी भी बिन्दु (Point) से चलकर सूर्य जितने समय में पुनः उसी बिन्दु पर आ जाता है उस समयावधि को सौर वर्ष कहते हैं। सूर्य सिद्धान्तीय सौर वर्ष का मान ३६५ दि. १५ घ. ३१ प. ३० वि. और सौर वर्ष का वास्तविक मान ३६५ दि. २२ प. ५३ विप. है। इस प्रकार स्पष्ट है – सौर वर्ष के शुद्ध वास्तविक मान से सूर्य सिद्धान्तीय सौर वर्षमान लगभग ८½ पल अधिक है। इसका अर्थ यह हुआ कि सूर्य सिद्धान्त के अनुसार सूर्य क्रान्तिवृत्त का पूरा चक्र लगाने (पूरी १२ राशियां पार करने) में ३६५ दि. १५ घ. ३१ प. ३० वि. लेता है, जबकि सूर्य आदि ग्रहों की गतियों का सक्षमता से यथार्थ निर्णय करने वाले आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों द्वारा उपलब्ध परिणाम बतलाते हैं कि सूर्य को क्रान्तिवृत्त का पूरा भ्रमण करने में लगने वाला वास्तविक काल सूर्य सिद्धान्तोक्त काल से लगभग ८½ पल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कम है। प्राचीन काल में वेधयन्त्र इतना सूक्ष्म परिणाम नहीं दे सकते थे। काल ज्ञापक यन्त्र भी इतने सूक्ष्म परिणाम देने में समर्थ नहीं थे, जिससे सौर वर्ष के मान में इतनी सी स्थूलता रह जाना स्वाभाविक था।

हमारे प्राचीन अन्य भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में उपलब्ध सौर वर्ष के मानों में भी अनेकत्र विषमता है। उनका ऐतिहासिक क्रम से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि हमारे पूर्वज इन नक्षत्रविदों ने उत्तरोत्तर सौर वर्ष मान को वास्तविक (दृक्तुल्य) बनाने का भारी प्रयास किया है। हमें इन प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों में अपेक्षाकृत शुद्ध सौर वर्ष मान सूर्य सिद्धान्त में ही मिलता है। सूर्य सिद्धान्त से पूर्व वर्त्ती ग्रन्थों में तो सौर वर्ष मान ८½ पल से भी अधिक अशुद्धि रखता है। इससे यह स्पष्ट है कि यह गणित सम्बन्धी भारतीय साहित्य में अन्य मूल तत्त्वों के साथ-साथ वर्षमान में भी उत्तरोत्तर संशोधन करने की प्रवृत्ति हमारे प्राचीन नक्षत्रविदों में स्पष्ट रूप से रही है। अतः यदि कोई सूर्य सिद्धान्त का पक्षपाती दैवज्ञ सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान में संशोधन का विरोध करता है तो स्पष्ट है वह हमारे भारतीय ज्योतिष के इतिहास में परम्परा प्राप्त संशोधन प्रवृत्ति से सर्वथा अनभिज्ञ है।

अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग से भारतीय राशि चक्र पर क्या प्रभाव पड़ा, अब हम इसका विवेचन करेंगे–

सूर्य सिद्धान्तीय स्थूल वर्षमान् का प्रयोग हमारे पञ्चांगकार ईसा की चौथी शताब्दी से लेकर १९ वीं शताब्दी के लगभग अन्त तक (लगभग १५०० वर्ष तक) करते रहे। आप्टे, केतकर आदि ज्योतिर्विदों ने १८०० शकाब्द में जब पञ्चांग गणित के संशोधन पर 'सर्वानन्दकरण', 'केतकी ग्रहगणित', 'ज्योतिर्गणित' आदि ग्रन्थों की रचना की तब सभी ग्रहों के भगणकालों के शुद्धमान के साथ सूर्य के भगणकाल (सौर वर्ष) के शुद्ध मान का प्रयोग कुछ पञ्चांगकारों ने प्रारम्भ किया। आज उनका अनुसरण करते हुए भारत के लगभग ९५ प्रतिशत पञ्चांगकार वेधसिद्ध वर्षमान का प्रयोग कर रहे हैं।

सौर वर्ष मान का संशोधन करने में हमारे पञ्चांग संशोधक ज्योतिर्विदों को जिस बड़ी समस्या का सामना करना पड़ा वह था विचलित राशि चक्र का संशोधन। इस समस्या का विशकलन इस प्रकार है–

क्योंकि सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक वर्षमान से ८½ पल अधिक है इसलिए क्रान्तिवृत्त में स्थित मूल मेषारम्भ बिन्दु (मेषारम्भ के सूर्य सिद्धान्तकालीन बिन्दु) के साथ-साथ अन्य सभी राशियों के मूल (सूर्य सिद्धान्त निर्माण कालीन) प्रारम्भ बिन्दु भी प्रतिवर्ष ८½ विकला आगे-आगे (पश्चिम से पूर्व की ओर) खिसकते रहे। जिसका परिमाण यह हुआ कि सूर्य सिद्धान्त के निर्माण काल लगभग (चौथी शताब्दी) से शकाब्द १८०० तक के

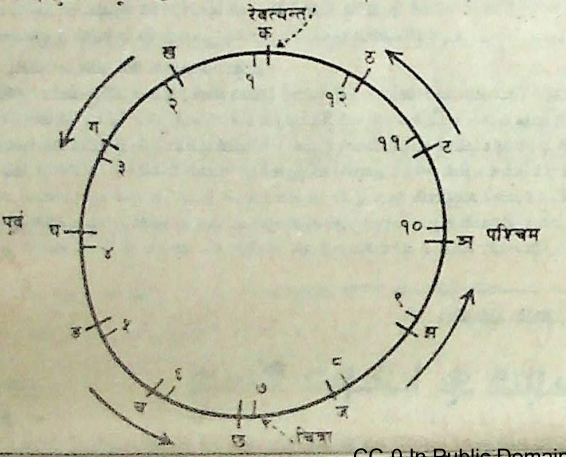

लगभग १५०० वर्षों में सभी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु उनके अपने-अपने मूल प्रारम्भ बिन्दुओं से लगभग १२७५० विकला (= ८½ × १५००) अर्थात् लगभग ३½ अंश आगे (पूर्व की ओर) खिसक गए। जिससे इस समय भारतीय ज्योतिष में इस्तेमाल किए जा रहे मेष आदि सभी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु उनके मूल (सूर्य सिद्धान्त रचना कालीन) प्रारम्भ बिन्दुओं से भिन्न हैं।

सामान्य पाठक को उपरोक्त विवरण और भी स्पष्ट करने के लिए हम यहाँ क्रान्तिवृत्त का चित्र दे रहे हैं, इसे देखिए –

यह क्रान्तिवृत्त का चित्र है, जिसमें सूर्य अपनी लगभग एक अंश की दैनिक गति से पश्चिम से पूर्व की ओर चलते हुए मेषादि १२ राशियों का उपभोग करता है। मेष आदि १२ राशियां इसी वृत्त में हैं। इस वृत्त पर क, ख, ग आदि अक्षर जिन स्थानों पर लिखे गए हैं, मान लीजिए वे राशियों के मूल प्रारम्भ बिन्दु हैं। अर्थात् जब सूर्य सिद्धान्त का निर्माण हुआ तब (यानी ईसा की लगभग चौथी शताब्दी में, मेष आदि राशियां क्रान्तिवृत्त में क्रमशः क, ख, ग आदि बिन्दुओं (Points) से प्रारम्भ होती थीं। मेष के मूल प्रारम्भ बिन्दु को सूर्य सिद्धान्त में पौष्णान्त बिन्दु (अर्थात् रेवती का अन्तिम बिन्दु) भी कहा गया है। इस बिन्दु पर रेवती नक्षत्र पुंज का अन्तिम तारा, जिसको पाश्चात्य नक्षत्रविदों ने "ज़ीटा पिशियम" कहा है, स्थित है। इस तारे को हम रेवत्यन्त तारा कहते हैं। यह तारा भी अन्य तारों की भांति अपने स्थान पर स्थिर है।

क्योंकि वेधसिद्ध वास्तविक वर्षमान (सौर वर्ष मान) से सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान ८½ पल अधिक है, अतः स्पष्ट है सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान में सूर्य ३६० अंश से लगभग ८½ विकला अधिक चलता है। प्रकारान्तर से इसे ऐसे समझिए कि वास्तविक वर्षमान ३६५ दि. १५ घ. २२ प. ५३ विप. है अर्थात् सूर्य को ३६० अंश चलने में लगने वाला वास्तविक काल यही है। अतः इस वास्तविक वर्षमान से ८½ पल अधिक वाले सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान के काल में सूर्य ३६० अंश से ८½ विकला अधिक चलेगा ही, क्योंकि ८½ पलों में सूर्य लगभग ८½ विकला चलता है। इस चित्र में क्रान्तिवृत्त पर अंकित 'क' वह बिन्दु है जिसे सूर्य सिद्धान्त के निर्माण के समय (लगभग ४०० ई. में) मेष का प्रारम्भ बिन्दु माना गया। अतः उस समय सूर्य के इस बिन्दु पर आने पर मेष संक्रान्ति मानी गई। लेकिन उसके बाद सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान के अनुसार ही प्रतिवर्ष मेष संक्रांति काल का निर्णय करने पर मेष संक्रान्ति स्थान (क्रान्तिवृत्त का वह बिन्दु जहां सूर्य के पहुँचने पर मेष संक्रान्ति मानी जाती है अर्थात् मेषारम्भ बिन्दु) इस 'क' बिन्दु से हर वर्ष ८½ विकला उत्तरोत्तर आगे-आगे (पूर्व की ओर) बढ़ना शुरू हो गया। इस प्रकार सूर्य सिद्धान्त के निर्माण काल (चतुर्थ शताब्दी) से सन् १९०० ई. तक लगभग १५०० सौर वर्षों में सूर्य सिद्धान्तीय स्थूल वर्षमान के अनुसार ही संक्रान्ति काल का निर्णय करते रहने से मेष संक्रान्ति का स्थान (मेषारम्भ बिन्दु) अपने मूल स्थान से १२७५० वि. (८½ × १५०० = १२७५०) यानी लगभग ३½ अंश पूर्व की ओर क्रान्तिवृत में खिसक गया, हम इस पूर्वोक्त विषय को अन्य प्रकार से भी विशकलित करते हैं ताकि और भी स्पष्ट हो जाए–

चित्र देखिए–ई. सन् ४०० में (सूर्य सिद्धान्त का जब प्रयोग प्रारम्भ हुआ तब) 'क' बिन्दु पर सूर्य की स्थिति होने पर मेष संक्रान्ति (सूर्य की मेष के प्रारम्भ बिन्दु पर स्थिति) मानी गई। इसके अनन्तर सूर्य सिद्धान्तीय सौरवर्षमान (३६५ दिन १५ घ. ३१ प. ३० विप.) के बराबर समय बीत जाने पर जब ई. सन्. ४०१ में मेष संक्रान्ति सूर्य सिद्धान्तीय पचांगों में लिखी गई तब सूर्य 'क' बिन्दु पर नहीं अपितु वह वास्तव में उससे ('क' बिन्दु से) ८½ विकला आगे (पूर्व की ओर) था (अर्थात् तब मेषारम्भ बिन्दु 'क' नहीं, अपितु वह 'क' से ८½ विकला आगे खिसक गया)। इसी प्रकार ई. सन् ४०२ में सूर्य सिद्धान्तीय सौर वर्ष मानानुसार जो मेष संक्रान्ति काल आना गया, उस समय-सूर्य 'क' बिन्दु से १७ विकला (८½ × २ = १७) आगे चला गया, अर्थात् तब (दो वर्ष बाद) मेषारम्भ बिन्दु 'क' बिन्दु से १७ कला आगे खिसक गया। इसी प्रकार प्रतिवर्ष सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान के अनुसार निर्धारित किए गए मेष संक्रान्ति के समय सूर्य की स्थिति 'क' बिन्दु (मेष राशि के मूल प्रारम्भ बिन्दु) से प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर ८½ विकला आगे-आगे (पूर्व की ओर) क्रान्तिवृत्त में खिसकती गई और ४०० ई. से १९०० ई. तक इस स्थूल वर्षमान का प्रयोग करते रहने से क्रान्तिवृत्त में मेष संक्रान्ति का स्थान (मेषारम्भ बिन्दु) 'क' बिन्दु (मेष के मूल प्रारम्भ बिन्दु) से १२७५० विकला (८½ × १५०० = १२७५०) यानी लगभग ३½ अंश आगे (पूर्व की ओर) खिसक गया। इस प्रकार स्पष्ट है कि ई. सन् १९०० में सूर्य सिद्धान्तानुसार। मेष संक्रान्ति के समय सूर्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...में सूर्य सिद्धान्तानुसार । मेष संक्रान्ति के समय सूर्य

क्रान्तिवृत्त में जहाँ स्थित था, क्रान्तिवृत्त का वह बिन्दु ४०० ई. के मेष संक्रान्ति बिन्दु (सूर्य सिद्धान्त निर्माण कालीन मेषारम्भ बिन्दु) से लगभग ३½ अंश पूर्व की ओर खिसक गया था। दूसरे शब्दों में हम ऐसा कहेंगे कि सूर्य सिद्धान्त के इस स्थूल वर्षमान के प्रयोग से हमारे राशिचक्र का प्रारम्भ बिन्दु (मेषारम्भ बिन्दु) १९०० ई. तक अपने मूल स्थल से हटकर ३½ अंश आगे हो गया। क्योंकि मेषारम्भ बिन्दु ३½ अंश आगे खिसक गया, अतः यह अनुकूल ही है कि शेष वृष आदि अन्य सभी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी साढ़े तीन-साढ़े तीन अंश आगे खिसक गए, क्योंकि मेषारम्भ बिन्दु से ही प्रारम्भ करके क्रान्तिवृत्त में ३०-३० अंशों के अन्तर पर शेष सभी राशियों के प्रारम्भ बिन्दु माने जाते हैं।

अब यहाँ दिया गया चित्र पुनः देखिए -- इस चित्र में क्रान्तिवृत्त पर 'क', 'ख' आदि बिन्दु मेष आदि राशियों के मूल प्रारम्भ बिन्दु हैं। और १, २, ३ आदि अंकों वाले बिन्दु क्रान्तिवृत्त में क्रमशः उन स्थलों को बतलाते हैं, जहाँ सन् १९०० ई. तक मेष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु खिसक कर पहुँच गए अर्थात् चित्र में १ अंक १९०० ई० वाला मेष का प्रारम्भ बिन्दु है जो अपने मूल प्रारम्भ बिन्दु 'क' से लगभग ३½ अंश आगे है। इसी प्रकार-२ आदि अंक भी १९०० ई. वाले वृष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु हैं जो अपने-अपने ख, ग आदि मूल प्रारम्भ बिन्दुओं से ३½ अंश आगे चित्र में खिसके हुए अंकित किए गए हैं।

यहाँ यह भी स्पष्ट ही है कि अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के प्रारम्भ बिन्दु भी अशुद्ध वर्षमान के प्रयोग के कारण अपने-अपने मूल (सूर्य सिद्धान्त निर्माण कालीन) प्रारम्भ बिन्दुओं से राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं की ही भाँति साढ़े तीन-साढ़े तीन अंश आगे-आगे खिसक गए हैं, क्योंकि अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि का प्रारम्भ बिन्दु एक ही माना जाता है।

उपरोक्त विवरण से पाठक समझ गए होंगे कि सूर्य सिद्धान्त में 'पौष्णान्त' नाम से वर्णित क्रान्तिवृत्तस्थ वह बिन्दु जहाँ ''रेवत्यन्त तारा' स्थित है, जिसे सूर्य सिद्धान्तकार ने राशि चक्र का मूल प्रारम्भ बिन्दु माना था, सन् १९०० ई. में हमारे राशिचक्र का प्रारम्भ बिन्दु नहीं रहा, अपितु वह हमारे मेषारम्भ बिन्दु से ३½ अंश पश्चिम की ओर रह गया। सूर्य सिद्धान्त निर्माण काल में ''रेवत्यन्त तारा'' रेवती नक्षत्र की समाप्ति एवं अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि का प्रारम्भ बिन्दु था। अब वह ऐसा (अश्विनी और मेष का प्रारम्भ बिन्दु) नहीं रहा।

सन् १९०० ई. के लगभग लोकमान्य तिलक, छत्रे दफ्तरी, आप्टे, केतकर आदि ज्योतिर्विदों ने वर्षमान की इस अशुद्धि से उत्पन्न राशिचक्र के इस विचलन की ओर भारतीय ज्योतिषियों, पञ्चांगकारों का ध्यान आकृष्ट किया और इसका समाधान करने के लिए ये दो सुझाव रखे--

(१) पहिला सुझाव था कि राशियों के विचलित प्रारम्भ बिन्दुओं को पुनः उनके मूल प्रारम्भ बिन्दुओं पर लौटा कर ले जाया जाए (अर्थात् रेवत्यन्त तारे को ही राशिचक्र का प्रारम्भ बिन्दु बनाया जाए) और इसके साथ ही सौर वर्ष के वास्तविक मान को ही स्वीकार किया जाए ताकि भविष्य में फिर राशिचक्र विचलित न हो सके।

(२) दूसरा सुझाव यह था कि शक सं. १८०० के प्रारम्भ में राशियों के प्रारम्भ बिन्दु जहाँ पर थे (अर्थात् वर्षमान की अशुद्धि के कारण खिसककर जिन-जिन बिन्दुओं पर क्रान्तिवृत्त में वे स्थित थे) उन्हें यथावत् ही स्वीकार कर लिया जाए, उन्हें लौटा कर पुनः उनके मूल प्रारम्भ बिन्दुओं पर न ले जाया जाए और इसके साथ ही सौर वर्ष का वास्तविक मान स्वीकार किया जाए, ताकि भविष्य में राशियों के प्रारम्भ बिन्दु और न खिसकने पाएं। इस सुझाव के अनुसार चित्र में निर्दिष्ट १, २, ३ आदि बिन्दुओं को ही क्रमशः मेष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु हमेशा के लिए स्वीकार करने का परामर्श था।

पहिला सुझाव मुख्यतः लो. मा. तिलक की ओर से था। इनका अभिप्राय था कि ''जब हम संशोधन करने ही लगे हैं तब जो त्रुटि आज तक हो चुकी है उसका पूरी तरह मार्जन कर देना ही ठीक है। अतः 'रेवत्यन्त तारा' को ही मेषारम्भ बिन्दु मानकर पञ्चांग का निर्माण किया जाए, तदनुसार ही सूर्य संक्रान्तियों का निर्णय किया जाए'' तिलक का यह सुझाव यद्यपि शत-प्रतिशत यथार्थ और पूर्णतया तर्क संगत था, लेकिन इसे कार्यान्वित करना आसान नहीं था। इसे कार्यान्वित करने के लिए सभी सौर संक्रान्तियों के दिनों को तीन या चार दिन पीछे (पहिले) करना पड़ता, जोकि व्यवहारानुकूल नहीं था। स्पष्टता के लिए यूं समझिए -- शक १८०० में मेष संक्रान्ति सूर्य सिद्धान्तानुसार लगभग १३ अप्रैल को घटित होती थी। इस संक्रान्ति को तिलक के इस सुझाव के अनुसार अपने मूल प्रारम्भ बिन्दु के अनुसार बनाने के लिए लगभग ९, अप्रैल पर ले जाना पड़ता, क्योंकि सूर्य की स्थिति लगभग इसी तारीख को मेष के मूलारम्भ बिन्दु पर थी। इसी प्रकार शेष सभी संक्रान्तियों के दिन भी तिलक के सुझाव के अनुसार तीन-तीन या चार-चार दिन पहिले खिसकाने पड़ते। इस तरह के संशोधन का कुछ विद्वान् ज्योतिषी या पञ्चांगकार भले ही स्वीकार कर लेते, लेकिन साधारण जनता पञ्चांग के इन (संक्रान्ति जैसे) महत्त्वपूर्ण तत्त्व में इस प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं होती, क्योंकि ऐसा करने से स्पष्ट सूर्य के भोगांशों में सर्वत्र लगभग ३½ अंश जोड़ने पड़ते, जिससे सहसा स्पष्ट सूर्य में ३½ अंश का अन्तर लोगों को सह्य नहीं होता, अपितु सौर मासों का प्रारम्भ परम्परागत तारीखों से तीन-तीन या चार-चार दिन पहिले हो जाता और जिस दिन परम्परानुसार पहिला सौर प्रविष्टा (गता) होना चाहिए था उस दिन लगभग चौथा प्रविष्टा हो जाता ....इत्यादि ऐसी अनेक बातें हमारे पंचांगों में सहसा उत्पन्न हो जातीं जिन्हें साधारण जन द्वारा स्वीकार्य बना सकना अत्यन्त कठिन था। यह तो पाठक जानते ही हैं कि सौर मास तथा प्रविष्टों (देशी तारीखों) का सम्बन्ध सर्वसाधारण से है और तिलक के सुझाव को लागू करने से सर्वसाधारण में भारी विक्षोभ होता। यही कारण था जिससे तिलक के इस सुझाव को अन्य संशोधन पक्षपाती ज्योतिर्विदों ने व्यवहार प्रतिकूल मानकर स्वीकार नहीं किया। उन्होंने दूसरे सुझाव का ही समर्थन किया। इन विद्वानों ने यही निर्णय लिया कि शक १८०० के प्रारम्भ में राशियों के प्रारम्भ बिन्दु क्रान्तिवृत्त पर जहाँ पर हैं, उन्हें वहीं पर अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया जाए क्योंकि उन्हें उनके मूल प्रारम्भ बिन्दुओं पर लगभग ३½ अंश पीछे लौटाकर ले जाना व्यवहारानुकूल नहीं है। भविष्य में राशियों के प्रारम्भ बिन्दुओं में और विचलन न हो सके इसके लिए वेधसिद्ध सौर वर्षमान का ही प्रयोग किया जाए, यह अनिवार्य प्रतिबन्ध तो दूसरे सुझाव में भी था।

इस दूसरे सुझाव के अनुसार बनने वाले पञ्चांगों और प्रचलित सूर्य सिद्धान्तीय पञ्चांगों की सूर्य संक्रान्तियों के दिनों में कोई अन्तर न होने से परम्परानुकूल होने के कारण यह दूसरा सुझाव ही भारतीय पंचांगकारों को अपने पक्ष में खींच लाया। यही कारण है आज कल संशोधित गणित के अनुयायी लगभग शत-प्रतिशत पंचांग इस दूसरे सुझाव का ही अनुसरण करते हैं। (चित्र देखिए) इस सुझाव के अनुसार अब सदा के लिए १, २, ३ आदि बिन्दु ही क्रमशः मेष आदि राशियों के प्रारम्भ बिन्दु रहेंगे क्योंकि शुद्ध वर्षमान को प्रयोग में लाने से अब इनका और विचलन रुक गया है। अब इस पक्ष के अनुयायी पंचांगों में हमेशा १, २, ३ आदि बिन्दुओं पर सूर्य की स्थिति होने पर क्रमशः मेषादि संक्रान्तियां मानी जाती हैं। अतः अब भविष्य में हमेशा मेषादि राशियों के ये १, २, ३ आदि प्रारम्भ बिन्दु अपने-अपने मूल प्रारम्भ बिन्दुओं से ३½ अंश के अन्तर पर ही रहेंगे। इनका परस्पर यह अन्तर अब स्थिर रहेगा। हम इसे प्रकारान्तर से इस प्रकार भी कह सकते हैं कि दूसरे सुझाव के अनुयायी पंचांगों में हमारे राशिचक्र का प्रारम्भ बिन्दु (मेषारम्भ बिन्दु) अब हमेशा के लिए 'रेवत्यन्त तारा' से ३½ अंश आगे (पूर्व की ओर) ही रहेगा।

इस दूसरे सुझाव के अनुयायी पंचांगों को चित्रा पक्षीय पंचांग'' कहा जाता है क्योंकि इन पंचांगों में जिस क्रान्ति वृत्तीय बिन्दु को मेषारम्भ बिन्दु माना गया है (चित्र में १ अंक वाला बिन्दु) वह 'चित्रा' नामक तारे से १८० अंश पर स्थित है। अर्थात् इन पंचांगों में स्वीकृत मेषारम्भ बिन्दु के अनुसार चित्रा तारा तुला के ठीक प्रारम्भ बिन्दु पर है। (देखिए चित्र)।

वेंकटेश केतकर चित्रापक्ष के प्रमुख समर्थक ज्योतिर्विद थे, जिन्होंने चित्रापक्ष के अनुसार पंचांग निर्माण के लिए केतकी ग्रहगणित एवं ज्योतिर्गणित आदि महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की।

यद्यपि लो. मा. तिलक वाले पहिले सुझाव को भारी बहुमत वाले इन चित्रापक्षीय पंचांगकारों एवं ज्योतिर्विदों ने ठुकरा दिया, फिर भी तिलक निराश नहीं हुए। उन्होंने भी दफ्तरी, पटवर्धन आदि ज्योतिर्विदों की सहायता से अपने मत का प्रचार किया, लेकिन चित्रापक्ष तीव्रगति से प्रचलित होने लगा। तिलक ने अपने मतानुसार पंचांग प्रकाशित करने के लिए कई पंचांगकारों को प्रेरित किया। इस पक्ष के पंचांग परिगणित ही हैं। जो महाराष्ट्र में ही प्रचलित हैं। इस पक्ष का प्रमुख पंचांग ''तिलक पंचांग'' है। तिलक के इस पक्ष को ''रैवत पक्ष'' कहा जाता है, क्योंकि तिलक के सुझाव के अनुसार इन पंचांगों में रेवत्यन्त तारे को ही मेषारम्भ बिन्दु (राशि चक्रारम्भ बिन्दु) माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जैसा कि हम पहिले भी बतला चुके हैं, तिलक के इस मत (रैवत पक्ष) के अनुसार सूर्य संक्रान्तियां परम्परागत (सूर्य सिद्धान्तीय) सूर्य संक्रान्तियों से लगभग ४ दिन पहिले ही घटित होती हैं। तदनुसार रैवतपक्षीय तिलक पंचांग में भी ठीक यही स्थिति है। इस पंचांग में सभी संक्रान्तियां अपने परम्परागत (सूर्य सिद्धान्तीय) दिनों (तारीखों) से ३-४ दिन पहिले ही लिखी रहती हैं क्योंकि चित्रापक्षीय पंचांगों की संक्रान्तियों की तारीखें आजकल अपनी परम्परागत तारीखों के आसन्न ही घटित होती हैं अतः रैवतपक्षीय पंचांगों में निर्दिष्ट संक्रान्तियों की तारीखों से ये ३-४ दिन बाद ही रहती हैं।

चित्रापक्षीय और रैवतपक्षीय पंचांगों की संक्रान्ति तिथियों में अन्तर होने के कारण कई बार अधिक मास क्षयमास के बारे में भी इन दोनों पक्षों के पंचांगों मे मतभेद उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि अधिक मास और क्षय मास के निर्णय का आधार सूर्य संक्रान्तियां ही हैं।

ध्यान रहे रैवतपक्षीय पंचांग बहुत ही कम हैं, जोकि अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं, इन पंचांगों का क्षेत्र महाराष्ट्र ही है, जबकि चित्रापक्षीय पंचांगों की संख्या भारत में दो सौ से भी अधिक है और ये भारत के प्रत्येक प्रान्त में प्रचलित हैं। भारत सरकार द्वारा बनाई Calendar Reform committee ने भी चित्रापक्ष को ही मान्यता दी। भारत सरकार द्वारा १३ भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किए जाने वाले "राष्ट्रीय पंचांग" भी चित्रापक्षीय हैं।

यह विवेचन अभी हम यहीं छोड़ते हैं। हमारा विश्वास है – इस विवेचन को ध्यान से पढ़ लेने के बाद पाठक इस स्थिति में आ जाएगा कि वह चित्रापक्षीय एवं रैवतपक्षीय अयनांशों एवं सायन तथा निरयण गणना पद्धतियों में अन्तर तथा इनके रहस्य को भी पूरी तरह समझ सकेगा। हम आगामी वर्षों के पंचांगों में भी इस प्रकार के सैद्धान्तिक विवेचन सरल शैली में उपस्थित करते रहेंगे। इस विषय के पाठक को चाहिए कि वह इस लेख के विषय को मननपूर्वक आत्मसात् कर ले क्योंकि अगले वर्ष के पंचांगों में जो हम इस विषय की शृंखला के लेख देंगे, वे सभी इस लेख के सन्दर्भ में होंगे। दूसरे शब्दों में यूं समझिए कि वे लेख इस लेख के पूरक होंगे।

इस लेख के सम्बद्ध अपनी शंकाएं एवं अस्पष्टताएं मुझे "अभिजित् ५९/६ पंचकूला (हरियाणा)" वाले मेरे पते पर भेजिए। उनके अपाकरण का प्रयास करूंगा।

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब या बन वा शिव के मन्दिर में जाकर वहां मेघों का आवाहन करें। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करें। (मेघों के नाम और आवाहन मंत्र) ॐ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ २ स्वाहा।।१।। ॐ ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा।।२।। ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा।।३।। ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा।।४।। ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा।।५।। ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामशृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा।।६।। ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणशृङ्गमेरु-निवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा।।७।। फिर नाभि मात्र जल में खड़ा होवे ऊपर लिखे मन्त्र को १०००-१००० जपे पश्चात् गूगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मन्त्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे।। अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग। "ॐ नमो हनुमन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली बर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी।" अति वर्षा के समय इस मंत्र का ७-७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मन्त्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले।।

मास प्रवेश का यथार्थ काल

(वर्ष फलोपयोगी लेख)

लेखक – प्रियव्रत शर्मा

जिस प्रकार जातक की आयु के प्रत्येक वर्ष के आरम्भ (प्रवेश) का समय वार्षिक फलादेश के लिए जानना आवश्यक है उसी प्रकार उसकी आयु के प्रत्येक मास के आरम्भ (प्रवेश) का समय भी मासिक फलादेश के लिए आवश्यक है, क्योंकि फलित-ग्रन्थों (विशेष कर ताज़िक ग्रन्थों) में मास प्रवेश कालीन लग्न कुण्डली के आधार पर मासिक फलादेश लिखा मिलता है।

जातक के जन्म कालिक मध्यम सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के समान जब-जब मध्यम सूर्य की अंश, कला, विकलाएं होंगी तब-तब जातक की आयु का मासारम्भ (मास प्रवेश) हुआ करता है। इसके लिए हमें जन्म कालिक मध्यम सूर्य और प्रत्येक राशि में उसके तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर पहुँचने का दिन (तारीख) व काल जानने के लिए किसी प्रकार के गणित की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम यह जानते हैं कि मध्यम सूर्य को एक राशि पार करने में हमेशा ३० दिन १० घण्टे ३१ मिनट लगते हैं। इससे स्पष्ट है कि जातक के जन्म के बाद प्रत्येक "३० दि. १० घं. ३१ मि." के अन्तराल पर मध्यम सूर्य की वही अंश, कला, विकलाएं होंगी जोकि उसके जन्म के समय थी। अतः जातक के जन्म की तारीख व काल (घं.मि.) अथवा उसके वर्ष प्रवेश की तारीख व काल में ३० दि. १० घं. ३१ मि., ६० दिन. २१ घं. २ मि., ९१ दि. ७ घं. ३२ मि. .... आदि क्रमशः जोड़ने पर जातक के उस वर्ष में क्रमशः द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि मासों के प्रवेश की तारीख व काल ज्ञात हो जाएगा। ध्यान रहे जातक की आयु के प्रथम वर्ष का प्रथम मास जातक के जन्म की तारीख व काल से तथा उसकी आयु के शेष प्रत्येक वर्ष का प्रथम मास उस वर्ष के प्रवेश की तारीख व काल से ही प्रारम्भ हुआ करता है।

जैसा कि ऊपर अभी हमने बतलाया कि जातक की जन्म तारीख व काल और वर्ष प्रवेश की तारीख व काल में मध्यम सूर्य के एक राशि भोग काल (३० दिन १० घं. ३१ मि.) को उत्तरोत्तर जोड़ते रहने से जातक की आयु के प्रत्येक मास के प्रवेश की तारीख व काल ज्ञात हो जाता है। लेकिन ऐसे सतत जोड़ की इस क्रिया से दिनों की संख्या आगे-आगे इतनी हो जाएगी कि उससे हमें मास प्रवेश का मास (जन. फर. आदि) एवं उसकी तारीख का निर्णय करने में काफी परेशानी होगी। अतः हमने इस प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए यहाँ आगे तीन कोष्ठक [कोष्ठक (१), कोष्ठक (२) कोष्टक (३)] दिए हैं जिनकी सहायता से मास प्रवेश की तारीख व काल (भा.स्टैं.टा.) का ज्ञान सरलता से ज्ञात हो जाएगा। इन कोष्ठकों के प्रयोग की सोदाहरण विधि नीचे दी जा रही है–

कोष्ठकों के प्रयोग की विधि बतलाने से पूर्व कुछेक परिभाषिक शब्द यहाँ स्पष्ट कर दें–

जातक की आयु के जिस वर्ष में मास प्रवेश का काल आदि जानना चाहते हैं उस वर्ष को हम यहाँ "अभीष्ट वर्ष" और जिस मास (प्रथम मास, द्वितीय मास....) के प्रवेश काल आदि जानना चाहते हैं उसे हम यहाँ "अभीष्ट मास" कहेंगे।

इन कोष्ठकों से मास प्रवेश काल जानने के लिए अभीष्ट वर्ष के प्रवेश का काल (भा.स्टैं.टा.) व तारीख ज्ञात होनी चाहिए। अभीष्ट वर्ष का प्रवेश जिस मास (जन. आदि) की जिस तारीख को हो रहा है, उस मास और उस मास की तारीख के द्वारा कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से दिन संख्या उठा लें। इसे कोष्ठक (२) से प्राप्त अभीष्ट मास (प्रथम, द्वितीय आदि मास) के आगे लिखे दिन.घं.मि. में जोड़ दें। इस जोड़ में अभीष्ट वर्ष के प्रवेश काल के घं.मि. में भी जोड़ दें। इस प्रकार से प्राप्त घं.मि. जातक के अभीष्ट मास के प्रवेश का काल (भा.स्टैं.टा.) होगा। उपरोक्त जोड़ से प्राप्त दिन संख्या को कोष्ठक (१) के दोनों (प्रथम व द्वितीय) भागों में देखिए। यह संख्या इस कोष्ठक में जहाँ पड़ी है उसके बिल्कुल ऊपर कोष्ठक (१) की पहली पंक्ति में लिखा मास और इस संख्या के बाईं ओर पहिले कालम में लिखी तारीख यह बतलाते हैं कि अभीष्ट मास का प्रवेश (प्रारम्भ) इस मास की इस तारीख को होगा। अभीष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास के प्रवेश का काल तो हमें पहिले ही ज्ञात हो चुका है। इस प्रकार अभीष्ट मास के प्रवेश की तारीख व काल ज्ञात हो जाता है। इसके प्रवेश का वर्ष (ई. सन्) वही होगा जोकि अभीष्ट वर्ष के प्रवेश का है। यदि जोड़ से प्राप्त हमारी दिन संख्या कोष्ठक (१) के द्वितीय भाग में हमें प्राप्त हुई है तब अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष अभीष्ट वर्ष प्रवेश के वर्ष से अग्रिम समझना चाहिए।

यहाँ सर्वत्र योग करने पर यदि घण्टे २४ हों या २४ से अधिक हों तो उनमें से २४ घटा कर शेष घण्टे स्वीकार करें और योग से प्राप्त दिन संख्या में १ जोड़ दें।

कोष्ठक (१) को प्रयोग में लाते समय निम्नलिखित तीन बातों का ध्यान रखिए –

(i) यदि अभीष्ट वर्ष के प्रवेश का वर्ष लीप इयर और इसकी तारीख २९ फरवरी के बाद की हो तो कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से प्राप्त दिन संख्या में एक जोड़ लेना चाहिए।

(ii) यदि अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष लीप इयर और उसकी तारीख २९ फरवरी के बाद की हो, तो कोष्ठक (१) के प्रथम या द्वितीय भाग से प्राप्त अभीष्ट मास प्रवेश की तारीख में से एक घटा देना चाहिए।

(iii) यदि आपकी अभीष्ट संख्या कोष्ठक (१) के प्रथम भाग में है तो अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष (ई. सन्) वही होगा जोकि अभीष्ट वर्ष प्रवेश का है। यदि वह संख्या इस कोष्ठक के द्वितीय भाग में है तो अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष अभीष्ट वर्ष प्रवेश के वर्ष से एक आगे होगा।

स्पष्टता के लिए अब ये उदाहरण देखिए–

उदाहरण (१) जातक का १३वाँ वर्ष प्रवेश सन् १९७७ ई. की ५ फर. को दिन के १० घ. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ। इसके १३वें वर्ष के षष्ठ (छठे) मास को प्रारम्भ (प्रवेश) का काल तथा तारीख ज्ञात कीजिए?

इस उदाहरण में अभीष्ट वर्ष १३वाँ और अभीष्ट मास छठा है। उपरोक्त निर्देशानुसार अभीष्ट वर्ष प्रवेश के मास (फर.) और तारीख ५ द्वारा कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से ३६ संख्या मिली। इसे कोष्ठक (२) से अभीष्ट मास षष्ठ (छठे) द्वारा प्राप्त १५२ दिन ४ घ. ३४ मि. में जोड़ने पर १८८ दिन ४ घं. ३४ मि. हुए। इसमें अभीष्ट वर्ष प्रवेश काल के १० घ. ३० मि. जोड़ देने पर १८८ दि. १५ घ. ४ मि. बने। ये १५ घं. ४ मि. अभीष्ट मास प्रवेश का काल (भा.स्टैं.टा.) है। इस जोड़ से प्राप्त दिन संख्या १८८ को कोष्ठक (१) में ढूंढा तो यह इस कोष्ठक के प्रथम भाग में ७ जुलाई वाले खाने में मिली। इसका अभिप्राय यह हुआ कि जातक के अभीष्ट मास का प्रवेश ७ जुलाई को होगा। क्योंकि १८८ संख्या हमें कोष्ठक (१) के प्रथम भाग में मिली है अतः अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष अभीष्ट वर्ष प्रवेश वाला (सन् १९७७ ई.) ही है। इस तरह अभीष्ट मास प्रवेश की तारीख ७ जुलाई सन् १९७७ ई. हुई। अभीष्ट मास प्रवेश काल हमें पहिले ही ज्ञात हो चुका है जोकि १५ घं. ४ मि. (भा.स्टैं.टा.) है। इस तरह यह स्पष्ट हो गया कि जातक के १३वें वर्ष का छठा मास ७ जुला. १९७७ ई. को १५ घ. ४ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ होगा।

उदाहरण (२) जातक के २०वें वर्ष का प्रवेश सन् १९७६ ई. की ५ जन. को २१ घं. ४५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ। इसके २०वें वर्ष के द्वितीय मास का प्रारम्भ कब होगा – यह जानना है।

यहाँ अभीष्ट वर्ष २०वाँ और अभीष्ट मास द्वितीय है। अभीष्ट वर्ष प्रवेश के मास जनवरी और तारीख ५ से कोष्ठक (१) के प्रथम भाग में ५ दिन संख्या मिली। क्योंकि अभीष्ट वर्ष प्रवेश की तारीख (५ जनवरी) २९ फर. से पहिले पड़ती है अतः अभीष्ट वर्ष प्रवेश का वर्ष लीप इयर होने पर भी उपरोक्त नियमानुसार कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से प्राप्त दिन संख्या (५) में एक नहीं जोड़ा गया। अब इस ५ संख्या को कोष्ठक (२) से अभीष्ट मास (द्वितीय) द्वारा प्राप्त ३० दिन १० घं. ३१ मि. में जोड़ने पर ३५ दिन १० घ. ३१ मि. मिले। इसमें अभीष्ट वर्ष प्रवेश काल के २१ घ. ४५ मि. भी जोड़े तो ३६ दिन ८ घं. १६ मि. हुए। इससे पता चला कि अभीष्ट मास के प्रवेश का समय ८ घ. १६ मि. (भा.स्टैं.टा.) है। अब जोड़ से प्राप्त दिन संख्या (३६) को कोष्ठक (१) में ढूंढा तो यह इस कोष्ठक के प्रथम भाग में ही ५ फर. वाले खाने में मिली। अतः यह स्पष्ट हो गया कि जातक के २०वें वर्ष का दूसरा मास ५ फरवरी को ८ घं. १६ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ होगा। क्योंकि हमें जोड़ से प्राप्त दिन संख्या कोष्ठक (१) के प्रथम भाग में ही मिली है अतः अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष भी वही (१९७६ ई.) है जोकि अभीष्ट वर्ष प्रवेश का है। इस प्रकार यह ज्ञात हो गया कि जातक के २०वें वर्ष के दूसरे मास का प्रवेश ५ फर. १९७६ ई. को ८ घं. १६ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

ध्यान दें – उपरोक्त उदाहरण में यद्यपि अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष (१९७६ ई.) लीप इयर ही है। फिर भी इसके प्रवेश की तारीख ५ फर. (जो हमें कोष्ठक (१) से प्राप्त हुई है) में से एक घटाया नहीं गया है, क्योंकि उपरोक्त नियमानुसार २९ फर. से पहिले की तारीखों में एक घटाया नहीं जाता।

उदाहरण (३) जातक के ५०वें वर्ष का प्रवेश सन् १९८८ ई. की १५ अप्रै. को २० घं. २० मि. (भा.स्टैं.टा.) पर हुआ। इसके इस ५०वें वर्ष का सप्तम मास कब प्रारम्भ होगा? ज्ञात करें।

यहाँ अभीष्ट वर्ष ५०वाँ और अभीष्ट मास सप्तम है। अभीष्ट वर्ष प्रवेश के मास (अप्रै.) व तारीख (१५) द्वारा कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से १०५ दिन संख्या मिली, इसमें १ जोड़ने पर यह १०६ हुई (यहाँ अभीष्ट वर्ष प्रवेश का वर्ष लीप इयर और इसकी तारीख २९ फरवरी के बाद की है अतः ऊपर बतलाए नियमानुसार कोष्ठक (१) के प्रथम भाग से प्राप्त तारीख में एक जोड़ लिया गया है।) इस संख्या (१०६) में कोष्ठक (२) से अभीष्ट मास (सप्तम) द्वारा प्राप्त १८२ दिन १५ घ. ५ मि. जोड़ने पर २८८ दिन १५ घ. ५ मि. हुए। इसमें अभीष्ट वर्ष प्रवेश काल के २० घं. २० मि. भी जोड़ दिए तो २८९ दि. ११ घं. २५ मि. बने। इससे अभीष्ट मास प्रवेश का काल ११ घ. २५ मि. (भा.स्टैं.टा.) ज्ञात हुआ। अब प्राप्त दिन संख्या २८९ को कोष्ठक (१) में ढूंढने पर यह इस कोष्ठक के प्रथम भाग में ही १६ अक्तू. के खाने में मिली। यह संख्या कोष्ठक (१) के प्रथम भाग में ही है अतः स्पष्ट है – अभीष्ट मास प्रवेश का वर्ष भी अभीष्ट वर्ष प्रवेश वाला (सन् १९८८) ही है। क्योंकि अभीष्ट मास प्रवेश का यह वर्ष भी लीप इयर है और अभीष्ट मास प्रवेश की तारीख भी २९ फर. के बाद की है। अतः जोड़ से प्राप्त दिन संख्या २८९ द्वारा कोष्ठक (१) से मिली तारीख (१६ अक्तू.) में से एक घटाया तो १५ अक्तू. हुआ। यह अभीष्ट मास प्रवेश की तारीख हुई। इस प्रकार सारांश यह निकला कि जातक के ५०वें वर्ष के सप्तम मास का प्रारम्भ सन् १९८८ ई. के १५ अक्तूबर को ११ घं. २५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

मैं समझता हूँ – ये तीन उदाहरण मास प्रवेश की प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं।

यहाँ एक यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि नीलकण्ठ दैवज्ञ (ताजिक नीलकण्ठी के प्रणेता) ने मास प्रवेश लेकिन मेरा मत है कि इसका निर्णय मध्यम सूर्य के अनुसार का निर्णय स्पष्ट सूर्य की राश्यादि के अनुसार किया है। स्पष्ट सूर्य से मास प्रवेश का समर्थन ही होना चाहिए, क्योंकि आयुर्दाय एवं दशा साधन आदि की गणित प्रक्रियाएं स्पष्ट सूर्य से मास प्रवेश का समर्थन नहीं करती हैं।

अब इस लेख को स्थानाभाव के कारण यहीं समाप्त करते हैं। यहाँ दिए गए कोष्ठक (३) का हमने कोई प्रयोग इस उक्त गणित प्रक्रिया में नहीं किया है। इस कोष्ठक (३) से मास प्रवेश के काल एवं तारीख का ज्ञान अत्यन्त सरलता से हो जाता है – इसका विवेचन हम अगले वर्ष के पंचांग के लिए छोड़ देते हैं। वैसे – यह कोष्ठक (३) दृग्गणितानुसारी "वर्ष प्रवेश-सारणी" ही है। जो दैवज्ञ शुद्ध वर्ष प्रवेश काल जानना चाहते हैं – वे इसका प्रयोग कर सकते हैं।

–: मध्य प्रदेश के नगरों के अक्षांश आदि :–

पाठक क्षमा करेंगे। विगत वर्ष के पंचांग में की गई घोषणा के अनुसार मध्य प्रदेश के नगरों के अक्षांश, रेखांश, लग्न व सूर्योदयास्त काल इस वर्ष (सं. २०४८ वि.) के पञ्चांग में प्रकाशित करने चाहिए थे। लेकिन ऐसा नहीं किया जा सका, क्योंकि मुझे अपनी पत्नी की चिकित्सा हेतु जून से अगस्त ९० तक कैलिफार्निया (U.S.A.) में रहना पड़ा, जिससे मानसिक अशान्ति और व्यग्रता के कारण यह सामग्री इस वर्ष के पञ्चांग में प्रस्तुत नहीं की जा सकी। अगले वर्ष (वि.सं. २०४९) के पञ्चांग में यह पाठकों तक अवश्य पहुँचेगी।

– प्रियव्रत शर्मा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिताएं–

ताराओं से काल का ज्ञान

–शक्तिधर शर्मा

ताराओं की दैनिक गति से समय का ज्ञान करना बहुत आवश्यक है। कई बार रात्रि के समय घड़ी नहीं होती। कई बार युद्धों के समय में रात्रि के वक्त प्रकाश में देखना खतरनाक होता है। समय पर अभियान तथा प्रहरियों के कार्यों तथा विश्राम समयों एवं अभियानों की अन्य आवश्यकताओं के लिये ताराओं की गति से समय ज्ञान की पद्धति आना बहुत लाभप्रद है।

हमें पता ही है कि पृथ्वी लगभग २३ घ. ५६ मि० में एक बार अक्षभ्रमण पूरा करती है। अगर किसी तारे की स्थिति का हमें ज्ञान है तो ध्रुव के सापेक्ष इसकी भ्रमणगति के साधारण अध्ययन से ही हमें काल का व्यवहारार्थ स्वल्पान्तरित ज्ञान तो सरलता से ही हो सकता है। इस पद्धति में गणित साधारणतया बौद्धिक रूप में ही की जा सकती है–कापी पैंसिल की भी आवश्यकता नहीं।

यहां हम पहले उत्तरी गोलार्द्ध में समय ज्ञान का विचार करेंगे। रात्रि के वक्त केवल काल ज्ञान के लिए कुछ विशेष तारों का प्रयोग किया जाता है। वे ये हैं–

(१) ध्रुव तारा

(२) सप्तर्षियों में दो तारे जो सूचक (Pointer) का काम करते हैं। ध्रुव के पास का Pointer का तारा (Ursae Majoris) स$_1$ प्रयोग में लाया जाता है।

(३) जिन स्थानों पर "स$_1$" तारा पृथ्वी के नीचे भी चला जाता है इन स्थानों के लिये कश्यप मण्डल (cassiopeiae) का मध्यतारा प्रयोग में लाया जाता है। इस मण्डल की आकृति अंग्रेजी के अक्षर W जैसी है। मध्य का तारा W के ऊपर के दो तारों से नीचे मध्य में है। इसे हम तारा स$_2$ कहेंगे।

नीचे चित्र में ध ध्रुव है जिसके चारों तरफ तारा स$_1$ घूमता है। क एवं ख पश्चिम एवं पूर्व दिशाओं में बिन्दु है तथा उ ऊपर का बिन्दु एवं न नीचे का बिन्दु है।

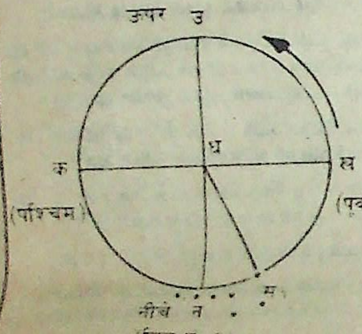

(चित्र नं. १)

(उत्तरी गोलार्द्ध में काल ज्ञान के लिये सप्तर्षिमण्डल के प्रथम तारे स$_1$ का प्रयोग होता है।)

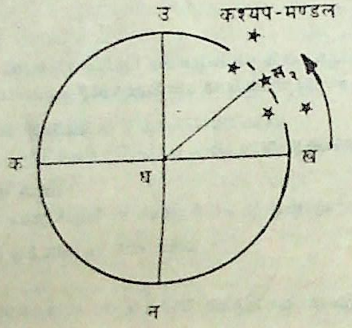

(चित्र नं. २)

(यदि सप्तर्षि न दीखते हों तो कश्यप मण्डल के मध्य के ...)

स$_1$ तारा लगभग २४ घण्टों में एक चक्कर लगाता है–यदि स$_1$ बिन्दु "उ" पर हो तो इसे "क" पहुँचने के लिये ६ घण्टों का समय लगेगा। आगे "न" बिन्दु पर पहुँचने के लिये और ६ घण्टे (लगभग) लगेंगे। २१ जून के दिन स$_1$ तारा लगभग १७ घं०-००मि० (स्थानीय समय) पर उ बिन्दु पर होगा। वस्तुतः २३ जून को यह स्थिति होती है–२१ जून को तो यह घ १७-०६ मि. पर "उ" बिन्दु पर होता है। हम याद रखने में सरलता के लिये सबसे बड़ा दिन (२१ जून) ले सकते हैं। बस केवल मात्र यह जानकर कि तारा स$_1$ लगभग १७-०० पर "उ" बिन्दु पर होता है–काल का ज्ञान बड़ा सरल है। फर्ज करो कि किसी समय तारा स$_1$ ऐसे बिन्दु पर है जोकि बिन्दु "न" से लगभग ३०° "ख" की तरफ है। यह स्पष्ट है कि "क" पर यह २३-०० पर पहुंचा होगा। और "न" बिन्दुपर ५-०० पर होगा। स$_1$ बिन्दु पर यह ३०×६/९०=२ घंटा बाद होगा। अतः इस स्थिति में समय ७ घ. ०० मि. होगा। इस प्रकार अनुपात से समय ज्ञान बहुत सरल है।

उत्तरी गोलार्द्ध के लिये निम्नलिखित नियम याद रखने पर्याप्त होंगे –

(१) स$_1$ २१ जून को "उ" बिन्दु पर होगा।

(२) इस तारीख के बाद प्रतिमास स$_1$ "उ" बिन्दु पर २ घंटा बाद पहुँचता है। एक दिन से दूसरे दिन में ४ मिनट का अन्तर पड़ता जाता है।

(३) प्रतिदिन स$_1$ ६ घण्टे में ९०° (एक पद) चलता है। अनुपात से १५° को १ घण्टे में तय करता है और १° चार मिनट में तय होती है।

(४) यदि किसी स्थान पर स$_1$ पृथ्वी के नीचे भी जाता हो तो वहां कश्यप मण्डल के मध्य तारे स$_2$ को ही स$_1$ के स्थान पर लें और गणित करें। कश्यम मण्डल के मध्य का तारा स$_1$ से लगभग १० घं० आगे है। अतः स$_1$ से स्थान पर स$_2$ तारा लेने से आए समय में से १० घण्टे घटा दें।

यहां हमने स्थानीय एवं स्पष्ट समय में अन्तर नहीं माना। इस की प्रामाणिक रेखा (Standard Meridian) से 2° तक उपेक्षा की जा सकती है क्योंकि–इस स्थूल पद्धति में पहले ही हमने मध्यम एवं स्पष्ट समय के अन्तर से अधिक अन्तर तुल्य भ्रमणकोण की उपेक्षा कर दी है। प्रमाणिक रेखा से अधिक अन्तर होने पर स्टैण्डर्ड संस्कार देना होगा। इस समय का मान व्यवहारार्थ पर्याप्त सूक्ष्म है। इसे स्टैण्डर्ड टाइम में व ग्रीष्म समय में परिवर्तित किया जा सकता है।

दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी ध्रुव सिग्मा आक्टैन्टी (Sigma-octanti) का प्रयोग किया जाता है। यह बहुत मन्द है– यह पूर्ण चन्द्रमा के समय दिखाई नहीं देता। इसकी स्थिति का कुछ तारों से अनुमान लगाना पड़ता है। दक्षिणी क्रास (southern cross) के एक तारे की सहायता से इसे पहचाना जा सकता है। सूचक (Pointer) के लिये दक्षिणी ध्रुव एवं आल्फा सैन्टूरी को मिलाने वाली रेखा ली जाती है। (देखें चित्र नं. ३)(Centuri बहुत प्रकाशमान तारा है) दक्षिणी Cross के प्रथम तारे को हम स$_3$ कहेंगे। यह अप्रैल ३०–मई १ को मध्य रात्रि के समय दक्षिणी ध्रुव से बिल्कुल ऊपर होता है। उससे समय ज्ञान उन्हीं नियमों अनुसार सम्भव है जो पहले बतलाए गए हैं।

यदि स$_3$ किन्हीं स्थानों पर कभी पृथ्वी के नीचे जाने पर दृश्य न हो तो यमुना-नदी मुख तारा (Acherner–का–तेरिडानी) का प्रयोग किया जाता है। यह तारा यद्यपि प्रथम प्रकाश वर्ग का है

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

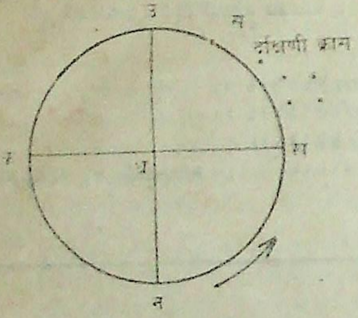

(चित्र नं. ५)

दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी क्रान के तारे म. का प्रयोग होता है।

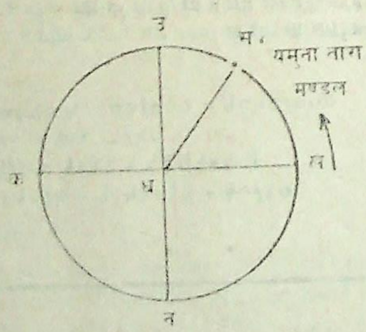

(चित्र नं. ६)

यदि दक्षिणी क्रान कहीं दिखाई न दे तो यमुना तारा मण्डल के प्रथम तारे म. का प्रयोग किया जाता है।

परन्तु केवल तारों के बीच में होने से भी साधारणतया पहचाना नहीं जा सकता। यह अगस्त्य एवं फोमल्हाट तारों के मध्य में गुजरने वाली रेखा को लगभग आधे पर काटता है। यह म. तारा से ११ घण्टा पीछे उ. पर आता है। अतः इस तारे को म. मान कर जो समय ज्ञात होगा उसमें ११ घण्टे जोड़ने से वास्तविक समय ज्ञात होगा। चित्र नं. ६ में इस म. मण्डल में बतलाया गया है।

इस प्रकार तारों की सहायता से रात्रि के समय की स्थूल रूप से गणना से बिना कापी पेंसिल के अनुमानतः ही समय का बोध हो सकता है।

आभार-प्रदर्शन

इस पञ्चाग के प्रूफ पढ़ने, शुद्ध करने में चि. प्रेमचंद शर्मा, फतह चंद शर्मा ने सहायता की। इस कार्य में सहयोग के लिए हम इनको हार्दिक आशीर्वाद देते हैं और इस पञ्चाग के प्रकाशन में सभी सम्भव सहायता करने के लिए श्री आर. के. सब्बरवाल जी तथा अन्य एस०बी०डी० स्टाफ के कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद।

शक्तिधर शर्मा

फलित शास्त्र के गूढ़ रहस्य

फलितशास्त्र की प्रामाणिकता एवं वैज्ञानिकता इस शास्त्र के गूढ़ रहस्यों के बिना सिद्ध नहीं की जा सकती। गूढ़ रहस्यों को हृदयंगम कर लेने पर ही दैवज्ञ अव्यभिचरित भविष्य कथन में समर्थ हो सकता है—यह तथ्य है। इसी दृष्टिकोण से हम फलित जिज्ञासु-सज्जनों के लिए प्रतिवर्ष इस स्तम्भ के अन्तर्गत फलित-शास्त्र का कोई एक मार्मिक रहस्य दिया करेंगे। जिज्ञासु पाठक लाभान्वित होंगे;—ऐसा विश्वास है।

फलित में नवांश व वर्गोत्तमी ग्रह-भाव का महत्व

बहुधा देखने में आता है, कि किसी व्यक्ति की कुण्डली में विशिष्ट राजयोग पड़ा हुआ है, परन्तु उसका जीवन गिरी हुई हालत में ही गुजरता है, ऐसे ही किसी की कुण्डली में अधिकांश ग्रह या विशिष्ट ग्रह नीच के हैं, परन्तु वह महाभाग्यवान् है। इसका कारण नवांश-गत-ग्रहों की परिस्थिति है। क्योंकि फलादेश-कथन में नवांश-कुण्डली व वर्गोत्तमी ग्रहभाव का विशेष महत्व है। नवांश कुण्डली के बिना फलादेश कहना लंगड़े की दौड़ के समान ही है। क्योंकि, विशेष विचारों में जन्म कुण्डली से भी अधिक विशेष महत्व नवांश कुण्डली का होता है, तद्यथा—"स्वोच्चे नीचांशके दुःखी नीचे स्वोच्चांशके सुखी। स्वांशे वर्गोत्तमे भोगी राजयोगो भविष्यति॥"

जैसे जन्म कुण्डली में कोई ग्रह अपनी उच्च राशि का है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में नीचराशिगत है तो उसकी राशिगत उच्चता निरर्थक है। नवांश की स्थिति को देखते हुए वह ग्रह नीच ही समझा जाएगा। इस के विपरीत यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में नीचस्थ है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में उच्च का है तो उसका नीचत्व भंग हो जाता है। वह ग्रह उच्च सदृश फलप्रद रहेगा। विशेष यह भी समझ लें, कि-जन्म कुण्डली में नीचस्थ ग्रह यदि नवांश कुण्डली में भी नीच का ही रहे, तो वह ग्रह वर्गोत्तमी समझा जाएगा और अपनी वर्गोत्तम-स्थिति के कारण अशुभ फल न देकर शुभफल ही देगा, उसकी राशिगत नीचता लुप्त हो जाएगी।

इसी तरह यदि कोई ग्रह शत्रु क्षेत्रवर्ती है, लेकिन नवांश कुण्डली में भी उसी राशिगत है तो वह वर्गोत्तमी एवं स्वक्षेत्री ही समझा जाएगा, अतः शुभ फलप्रद रहेगा।

चन्द्र एवं गुरु का केवल वर्गोत्तम होना राजयोगप्रद है। शुक्र भी वर्गोत्तमी होकर शुभ उत्तम भाग्य योग बनाता है। लग्न का वर्गोत्तमी होना विशेष लाभप्रद है। वर्गोत्तम लग्न-गत चन्द्र या स्वनवांशगत-चन्द्रमा शुभ सौभाग्यप्रद कहा है। शुभग्रह किंवा पाप ग्रह भी वर्गोत्तम स्थिति में शुभ फलप्रद ही सिद्ध होता है। वर्गोत्तम-लग्नेश यदि वक्री हो साथ ही आत्मकारक ग्रह के साथ हो तो उसे अधिक बलशाली एवं श्रेयस्कर समझना चाहिए।—इस प्रकार ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए भविष्य कथन में आश्चर्यजनक रूप से सफलता मिलती है—यह अनुभव है।

नोट—अगामी वर्ष (सं. २०४८ वि.) में हम जातक की कुण्डली के आधार पर जातक के सम्बन्धी विशेष किंवा जातक की दुर्घटना की भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है?—यह देंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शास्त्र संरक्षण योजना के अन्तर्गत —

मणित्थ ताजिक

—शक्तिधर शर्मा

मणित्थ ताजिक वर्ष फल सम्बन्धी एक लघु ग्रन्थ है, जिसे एक यवन आचार्य मणित्थ ने लिखा था। इसका एक प्रकाशन वि सं २००० में सोलन निवासी श्री विद्याधर विद्यालङ्कार जी ने किया। यह ग्रन्थ अपूर्ण है इसमें काफी श्लोक मिलते नहीं। कुल श्लोक संख्या १०४ प्रतीत होती है। इसकी वर्ष फल के योग आदि ताजिक नीलकण्ठी से मिलते हैं। इसके लगभग १४ श्लोक लुप्त हैं इन्हें प्राप्त करने के लिए लाइब्रेरियों में खोज जारी है। यहां इस ग्रन्थ का प्रारम्भिक विषय वर्षफल गणित प्रकरण दिया जाता है। बाद में फलादेश सम्बन्धी विषयों का विवेचन होगा—

अथमङ्गलाचरणम्—

पूर्वं प्रणम्येश्वर पाद-पद्मं ततो भवानी गण नायक च।
करोति रम्य फलमत्र हायनं भवन्ति तज्ज्ञाः विदितेन येन।।१।।

पहले मैं (मणित्याचार्य) परमेश्वर के चरणों में नमस्कार करता हूँ तदनन्तर श्री गणेश जी तथा श्री पार्वतीजी को प्रणाम करता हुआ मनोहर वर्षफल वर्णन करता हूँ। जिसे जानने से लोग ज्योतिर्विद् बनते हैं।

वर्ष प्रवेश-साधनम्—

गताब्द वृन्दाः मुनिखाभ्रचन्द्रैः निघ्नाः नभो व्योम गजैश्च भक्ताः।
१००७ ८००
त्रिधा फलं वार घटी पलानि स्युर्जन्मवारादि युतानि तानि।।२।।

गत वर्ष संख्या को १००७ से गुणा करें ८०० से भाग दें। यहां लब्धि में तीन फल लें (वार घड़ी पल) इनमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल जोड़ दें तो वर्ष प्रवेश के वार एवं इष्ट घड़ी पल होंगे। इस सूत्र की उपपत्ति स्पष्ट है। +

वर्ष प्रवेश तिथि साधनम् :—

द्विःस्थाः गताब्दाः गुणयेच्च रुद्रैः अधः खसप्तेन्दुभिः लब्धयुक्ताः।
युक्ता स्तथा जन्मगतै र्दिनैश्च खराम भक्ताश्च तिथिरत्र शेषम्।।३।।

गतवर्षों की संख्या को दो जगह रखकर ११ से गुणा करें। एक गुणन फल को १७० से भाग देकर दूसरी गुणनफल संख्या में जोड़ दें। योगफल को ३० से भाग देकर जो शेष रहे उसमें जन्म की तिथि शुक्ल—प्रतिपदा से गिनकर जोड़ें, तो वर्ष प्रवेश की तिथि आ जाती है।

यहाँ दिये गए सूत्र की उपपत्ति सौर एवं चान्द्र वर्ष मानों को देखने से स्पष्ट है। ★

अथ वर्ष-प्रवेश-समये नक्षत्र-ज्ञान-प्रकारमाहः—

शेषे तिथेर्न्नामित गतवर्ष-पिण्डे दिक्संगुणे जनन-धिष्ण्य-युते हृते च।
भूभृद् विलोचन-मितैर्नुमान-युक्त धिष्ण्यस्य ताजिक-रसामृतपान-तृप्तैः।।४।।

तिथि के शेषमान का (ऊपर दी गई गणित में भिन्नात्मक शेषमान द्वारा) अनुमान लगाने के बाद, ताजिकशास्त्र के रसामृत पान से तृप्त विद्वान् गतवर्ष संख्या को दस से गुणा करें। इसमें जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़ कर २७ से भाग देने पर जो लब्धि हो वह नक्षत्र की संख्या होगी। इसमें भी (भिन्नात्मक शेषमान से) नक्षत्र के मान का अनुमान लगाया जा सकता है। ध्यान रहे इन सभी गणित में ± १ दिन का अन्तर हो सकता है। •

+ सूर्य सिद्धान्तीय सौरवर्षमान— ३६४= १।१५।३१।३० = १।१५।३१ + ३०/६०
= १।१५।३१ १/२ = १।१५ + ६३/(२×६०)
= १।१५।२१/४० = १।६२१/४०
= १+६२१/(४०×६०)= १।२०७/८०० = १००७/८००

अतः इस सूत्र में सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष मान से ही अनुपात पद्धत्या वर्ष प्रवेश का इष्ट साधित किया है। इसमें विपलान्त सौरवर्ष मान लिया है। ताजिक नील घटी में एत द्विषयक सूत्र इससे भिन्न है।

★ सावन सौर वर्ष एवं चान्द्र वर्ष का अन्तर लेकर उसे अनुपात से तिथ्यात्मक बनाकर एक सौर वर्ष में अधिक तिथि-मान ज्ञात किया जा सकता है—

सौरवर्ष मां—चान्द्रवर्ष मान = १० दि। ५२ घ। ३० प सावन दिन = १०.८७५ सावन दिन = ११.०७ तिथियां = ११+११/१७० तिथियां

इस प्रकार अंकोत्पादन स्पष्ट है। अब अनुपात से गत—सौरवर्षों में अधिक तिथि—मान ज्ञातकर ३० से भाग देने पर शेष में जन्म वर्ष के शुक्ल प्रतिपदा से जन्मदिन तक की तिथियां जोड़ दी जाएं तो स्पष्ट है कि हमें वर्ष प्रवेश कालीन तिथि प्राप्त होगी। शेष के भिन्नात्मक मान से मध्यम तिथि के बाकी भाग का अनुमान भी लगाया जा सकता है। ध्यान रहे इन सूत्रों से प्राप्त परिणामों में वास्तविक परिणामों से एक दिन तक का अन्तर पड़ सकता है। •

हमारे विचार में यहां उपपत्ति नाक्षत्र मास एवं सौर वर्ष के मानों से स्पष्ट हो जाती है—

१३ नाक्षत्र मास—१ सौरवर्ष = १० दिन ४ घ. सावन दिन
= १०.०७ नक्षत्र

अतः गतवर्ष संख्या को १० से गुणा करने पर अधिक नक्षत्र संख्या प्राप्त होगी। जन्म नक्षत्र जोड़ने पर २७ से भाग देने से वर्ष प्रवेश के समय का नक्षत्र प्राप्त होगा यह स्पष्ट ही है। इस गणित में अर्थात [illegible] अधिक होगी। यह मत इस ग्रन्थ में भी [illegible] है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

है। इसमें विपलान्त सौरवर्ष मान लिया है। ताजिक नील...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथना लग्न-ग्रह स्पष्ट-सन्धा-वर्षेशादि-विषयं आह–
ततश्च लग्न गतराशियुक्ता स्फुटाश्चकार्या सकलाश्च खेटाः ।
द्विचन्द्रभवने च गताह्व पिण्ड शेष स्थित स्यादिह जन्मलग्नात् ।।५।।
क्रमेण यवना मथना प्रमाण शुभाशुभान्यपि निरूपणाय ।
दिवा विलग्न ... रात्रौ शशी जन्मविलग्नपश्च ।।६।।
वर्ष प्रवेश-लग्नपश्च पश्चात् त्रिराशिनाथ कथितोऽधिकारी ।
एषां बल ... समर्थ स च हायनेश ।।७।।
सर्वार्थ ... कार्याणि अभीप्सितानि ।
बलाबल ज्ञानेन विना कदाचित् विवेचितं नैव शुभाशुभं तु ।।८।।

इस प्रकार वर्षेष्ट साधन करके तात्कालिक लग्न एवं राश्यादि ग्रह साधन करें। गत वर्ष संख्या को १२ से भाग देकर शेष को जन्मलग्न में जोड़ने से क्रमशः (गणना करने पर) मुथहा होतीहै।

यदि दिन का लग्न हो तो सूर्य वर्षेश होता है। यदि वर्ष प्रवेश रात्रिकाल में हुआ हो तो चन्द्रराशीश, जन्म लग्नपति, वर्षलग्नपति, त्रिराशिपति (मुन्थेश) इनमें से जो भी अधिक बलवान् हो वह वर्षेश होता है। यदि वर्षेश बली हो तो सभी अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं। बलाबल के ज्ञान के बिना शुभाशुभ फल का विवेचन नहीं हो सकता।

अथ यवनाचार्यानुसार बलाबल विचारमाह–
तत्र प्रवक्ष्ये यवनानुसाराद् बलाबलं यद् ग्रह सम्भवं च ।
त्रिकोण संस्थे फलमत्र पाद-हीनं भवेत्स्वे भवनेऽधिमित्रे ।।९।।
त्रिसप्तभावे सुहृदश्च गेहे समश्च गेहे कथितो हि भागः ।
एवं परस्यापि परस्य गेहे तथा क्रमेण प्रवदामि चिन्त्यम् ।।१०।।

यवनाचार्य के मतानुसार से ग्रहों के स्थानादिवश सम्भव बलाबल बतलाता है। त्रिकोण (पञ्चम एवं नवम) में ग्रह का फल अपने क्षेत्र (अपनी राशि) में एवं मित्रग्रहकी राशि में होने वाले फल की अपेक्षा एक पाद कम होता है ।।९।।

तृतीय तथा सप्तम भाव में एवं मित्र राशि में ग्रह के फल भाग बराबर ही होते हैं और शत्रु के क्षेत्र में कुफल होता है ।।१०।।

इसके बाद फलादेश के लिये बहुत से श्लोक हैं और अन्य विषय भी हैं। इस पुस्तक की ताजिक नील कण्ठी के साथ तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है–ताजिक नीलकण्ठी बहुत बड़ा ग्रन्थ है इसमें योग कयोग बहुत हैं जोकि इस ग्रन्थ में नहीं हैं। इस ग्रन्थ के अन्य विषयों का विश्लेषण बाद में अग्रिम प्रकाशनों में किया जाएगा। इसकी लिपिक द्वारा की अशुद्धियों का ठीक करना आवश्यक है।

ऊपर के अनूदित व व्याख्यात श्लोकों में परिश्रम से गणितीय विसंगतियों का निवारण करते हुए व्याकरण दोष हटाने पड़े। कुछ जगह पर अभी भी छन्दोभंग दोष हैं–एवं व्याकरण की दृष्टि से कुछ अशुद्धियां हैं। व्याकरण एवं गणितीय सामंजस्य देखते हुए इनकी उपेक्षा करनी पड़ी। अग्रिम प्रकाशन में संशोधन एवं लुप्त भावों को प्राप्त कर के व्याख्या पूरी करने का प्रयत्न किया जाएगा।

पूर्णिमाश्राद्ध

पिछले कई वर्षों से पण्डितों में पूर्णिमा तिथि के श्राद्ध के विषय में काफी चर्चा चलती रही है। कुछ सर्व पितृ-अमा के दिन ही पूर्णिमा श्राद्ध लिखते हैं तो कुछ प्रोष्ठपदी पूर्णिमा के दिन। हमने इस वर्ष प्रोष्ठपदी पूर्णिमा के दिन पूर्णिमा तिथि का श्राद्ध लिखा है। हम भी पिछले वर्षों में सर्वपितृ अमा के दिन ही पूर्णिमा श्राद्ध–लिखते रहे हैं। यद्यपि सर्व पितृ अमा को तो सभी पितरों के श्राद्ध हो सकते हैं। (अतः हमारे पीछे लिखने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये) परन्तु फिर भी शास्त्रीय प्रमाणों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि–पूर्णिमा का श्राद्ध प्रोष्ठपदी (भाद्रपद शुक्ल) पूर्णिमा को करना विहित है। इस विषय में शताब्दी पंञ्चांग-कर्ता पं० श्री ईश्वरी दत्त जी की जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी जी से शास्त्र चर्चा हुई। जिसमें पण्डित जी ने सप्रमाण सिद्ध किया-कि-पूर्णिमा तिथि का श्राद्ध भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को ही करना चाहिए। इस विषय में पारस्कर गृह्य सूत्र में कातीय श्राद्ध सूत्र की श्राद्ध काशिका व्याख्या में लिखा है–
"तर्हि पौर्णमास्यां मृतस्य कस्यां तिथौ ? इति। तत्रामावास्यायामित्येके, तत्र तिथ्याश्रयाभवात्। दर्श मृतस्यैव तत्रोचितत्वात् अतः भाद्रपद्यामेव युक्तम्"... इत्यादि। मातामह श्राद्ध के दिन को छोड़ कर भी पितृपक्ष को षोडश तिथिपक्ष माना गया है। किञ्च भाद्रपदी पूर्णिमा को "अनुमति" कहा गया है। इसमें चन्द्रमा की एक कला हीन होती है। अतः इसी दिन यह श्राद्ध विहित है।

....शक्तिधर

पञ्चांग, सिद्धान्त-ज्योतिष प्रेमियों के लिए संग्रहणीय ग्रन्थ

(१) "काशी मान मन्दिर वेधालय वर्णनम्" (Observatory of Kashi) श्री बापू देव शास्त्री द्वारा लिखित, डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा अंग्रेजी में अनूदित एवं टीकित। मूल्य ३६)

(२) "प्रतोद यन्त्रम्" श्री गणेश दैवज्ञ कृत, टीका (अंग्रेजी में) डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा– मूल्य १२)

(३) "शास्त्रीय पञ्चांग मीमांसा" पञ्चांग-विवाद एवं सैद्धान्तिक दृष्टि से मान्य पञ्चांग पद्धति का समर्थक प्रकाशन। प्रो. प्रियव्रत शर्मा एवं डा. शक्तिधर शर्मा द्वारा विरचित। मूल्य १२५)

प्राप्ति का स्थान :–

डॉ० शक्तिधर शर्मा

मार्त्तण्ड भवन
पो० कुराली (रोपड़),
पंजाब

अथवा

C/o फिजिक्स विभाग
पंजाबी विश्व विद्यालय
पटियाला (पंजाब) १४७००२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राग् वैदिक-काल का नक्षत्र चक्र

शक्तिधर शर्मा

इस लेख में नक्षत्र चक्र के विकास की तीन परम्पराओं का विवेचन किया गया है प्राचीनतम परम्परा में नक्षत्र चक्र में २४ नक्षत्र ही थे–तीनों उत्तरा पूर्वा नक्षत्र युग्म नक्षत्र रहे फाल्गुनी, आषाढ़ा एवं भाद्रपदा। दूसरे विकास क्रम में असम विभाग परम्परा आई। बाद में नक्षत्र सम विभाग वाले लिये जाने लगे। यह भी स्पष्ट किया गया है कि भगवान् रामचन्द्र आदि की वर्तमान पद्धति से बनी कुण्डलियों के विषय में इन प्राचीन परम्पराओं की उपेक्षा करते हुए विवेचन तर्क संगत नहीं है।

पूर्व वेदांग ज्योतिष-काल में चन्द्रमा के नक्षत्र-पथ का निर्धारण करने में ज्योतिषज्ञों को बहुत समय लगा होगा। इस विकास क्रम मे हजारों वर्ष लगे होंगे। तभी वेदांग ज्योतिष की नींव पड़ी होगी। उस समय तो चन्द्रमा की गति से नक्षत्रों का परिचय करने में काफी कठिनाईयां आई।

नक्षत्र चक्र का स्वाभाविक विभाजन तुल्य भागों में नहीं हो सकता था। क्योंकि चन्द्रमा की गति में काफी वैषम्य आता रहा है। यह प्रतिदिन ११° से १५°-३०' तक सम्भव है। इसके अतिरिक्त यह भी सम्भावित है– कि चन्द्रमा को एक दिन में नक्षत्र चक्र में कोई भी तारीख युति या सान्निध्य के लिये प्राप्त न हो। कभी यह भी सम्भव है कि चन्द्रमा एक ही दिन में दो योग ताराओं (युतियोग्य ताराओं) से सान्निध्य या युति कर सके। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि चन्द्रमा की गति द्वारा नक्षत्र चक्र का अंकन कठिन कार्य है। यदि अंकन होगा भी तो सम-विभाजन नहीं होगा, विषम अंकन ही सम्भव होगा। ताराओं के अतिरिक्त आकाश में विभाजक मापदण्ड अन्य कुछ भी नहीं। ये ही चन्द्रमा को मार्ग में विभाजक माइल-प्रस्तर (Milestones) का काम करते हैं।

वैदिक साहित्य में चन्द्रमा की नक्षत्रों के साथ युति की घटनाएं यत्र तत्र बहुत स्थलों पर मिलती हैं। सूर्य प्रज्ञप्ति आदि जैन ग्रन्थों में तो इनका संग्रह करके विवेचन किया गया है और इनके विश्लेषण से महत्त्वपूर्ण परिणाम प्राप्त किये गए। इस ग्रन्थ में नक्षत्र योग ताराओं की युति योग्यता व सम्भव सान्निध्य के आधार पर वर्गीकरण किया गया। कुछ तारे बहुधा युति (Occultations-overlaps) में आते रहते हैं। कुछ तारों को चन्द्रमा उत्तर को छोड़कर ही निकलता है परन्तु युति नहीं होती सान्निध्य मात्र होता है। कुछ तारे इससे दक्षिण की तरफ ही रहते हैं इत्यादि। ये सब स्थितियां सम्भव हैं–आज राहु केतु की गति के आधार पर इनकी व्याख्या सम्भव है। कुछ तारों के साथ चन्द्रमा काफी वर्षों बाद कुछ मासों के लिए युति करता है। इत्यादि सभी परिणाम पूर्व-वेदांग-ज्योतिष काल में पहले ज्ञात हुए होंगे। नक्षत्रों से परिचय चन्द्रयुतियों द्वारा हुआ होगा और बाद में ही नक्षत्र चक्र का विकास हुआ। रोहिणी शकट भेद तथा चित्रा के साथ छत्राति–छत्रयोग* आदि घटनाओं ने बिना यंत्रों की सहायता के केवल खुली आंख से वेध करने वाले आचार्यों ऋषियों को आकृष्ट किया होगा जिसके परिणामस्वरूप इस साहित्य की सृष्टि हुई और ये सभी प्रकृति-नियम बाद में ग्रन्थ रूप में बद्ध किये गए। इन सभी श्रुतियों को लिपिबद्ध किया गया। इन अध्ययनों से सूर्य एवं चन्द्रमा के गति एवं कक्षाओं के परामिति-स्थिरांक (Parameters) निर्धारित हुए। जिससे ऋषि लगध के वेदांग-ज्योतिष की आधारशिला बनी। चन्द्रमा के नक्षत्र चक्र के विकास के इतिहास को तीन विभागों में विभक्त किया जा सकता है :–

(१) प्राग्-वेदांग ज्योतिषकाल–जिसमें चन्द्रमा के गति नियमों के अध्ययन चल रहे थे। नक्षत्र योग ताराओं से परिचय बढ़ रहा था। इन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप पहले २४ योग ताराओं की लिस्ट बनी

नक्षत्र-सारणी (कृत्तिकादि गणना)

नक्षत्रों के असम विभाग (मुहूर्तों) में और इनके योगताराओं के सायन भोगांश शर तथा चाक्षुष्य वर्ग (Magnitude)

नक्षत्र नाम	असम विभाग (मुहूर्त)	योगतारा नाम	सायन भोगांश	शर (अंश)	चाक्षुष्य वर्ग	
कृत्तिका	३०	η Tauri	५९°	+ ४	३	युतिदृश्य
रोहिणी	४५	α Tauri	६९°	– ५	१	युतिदृश्य
मृगशिर	३०	λ Orionis	८३°	– १३	४	– –
आर्द्रा	१५	α Orionis	८८°	– १६	१	– –
पुनर्वसु	४५	β Geminorium	११३°	+ ७	१	– –
पुष्य	३०	δ Cancri	१२८°	०°.१	४	युतिदृश्य
आश्लेषा	१५	ε Cancri	१३२°	– ११	३	– –
मघा	३०	α Leonis	१४९°	–०°.५	१	युतिदृश्य
पूर्वाफाल्गुनी	३०	δ Leonis	१६०°	+ १२	३	– –
उत्तरा फाल्गुनी	४५	β Leonis	१७१°	+ १२	२	– –
हस्त	३०	δ Corvi	१९३°	– १२	३	– –
चित्रा	३०	α Virginis	२०३°	– २	१	युतिदृश्य.
स्वाती	१५	α Bootis	२०४°	+ ३१	१	– –
विशाखा	४५	α Librae	२२४°	– ०.३	५	युतिदृश्य
अनुराधा	३०	δ Scorpii	२४२°	– २	२.५	युतिदृश्य
ज्येष्ठा	१५	α Scorpii	२४९°	– ५	१.२	युतिदृश्य
मूल	३०	λ Scorpii	२६४°	– १४	२	– –
पूर्वाषाढ़ा	३०	δ Sagittari	२७४°	– ६.५	३	– –
उत्तराषाढ़ा	४५	σ Sagittari	२८२°	– ३.५	२	युतिदृश्य
अभिजित्	९ २७/६७	α Lyrae	२८४°	+ ६२	१	– –
श्रावण	३०	α Acquilae	३०१°	+ २९	१	– –
धनिष्ठा	३०	β Delphini	३१६°	+ ३२	३.५	– –
शतभिषा	१५	λ Acquilae	३४१°	०°.४	४	युतिदृश्य
पूर्वाभाद्रपदा	३०	α Pegasi	३५३°	+ १९	३	– –
उत्तराभाद्रपदा	४५	γ Pegasi	८°	+ १३	२	– –
रेवती	३०	ζ Piscium	१९°.	– ०.२	५	युतिदृश्य
अश्विनी	३०	β Arietis	३३°	+ ८	३	– –
भरणी	१५	41 Arietis	४८°	+ १०	४	– –

*जैन ग्रन्थों में चन्द्रमा की चित्रा के साथ युति बड़े रोचक ढंग से वर्णित है इसे छत्रातिछत्रयोग कहा गया है

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(Overlap of rays) सम्भव होगा। केवल उत्तराषाढ़ा योगतारा की युति सम्भव है। सूर्य प्रज्ञप्ति में

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होगी। इस समय पूर्वा फाल्गुनी एवं उत्तरा फाल्गुनी दोनों एक ही नक्षत्र विभाग में थे इसको नाम फाल्गुनी नक्षत्र था। इसी प्रकार पूर्वाषाढ़ा एवं उत्तराषाढ़ा भी तथा पूर्वा भाद्रपदा एवं उत्तरा भाद्रपदा एक-एक युग्म नक्षत्र रहे होंगे। उस समय चन्द्रमा की एक दिन की गति के आधार पर विभाजन शुरू नहीं हुआ था। इस प्रकार उस समय २७ नक्षत्र नहीं थे २४ रहे होंगे। चीन की परम्परा में भी पहले २४ नक्षत्र थे।

(२) दूसरा प्राग्वेदांग ज्योतिष काल—नक्षत्र चक्र के विकास की वह कड़ी है जिसमें चन्द्रमा की दैनिक गति के आधार पर नक्षत्र चक्र के विभाजन के प्रयत्न किए गए। क्योंकि सम विभाजन अस्वाभाविक एवं अप्राकृतिक था। अतः योगताराओं के आधार पर नक्षत्र प्रदेशों, गगन खण्डों के नामकरण करते समय वे असम विभाजन स्वीकार करने के लिए बाधित हुए क्योंकि उन्हें अपने विभाजन में एक एवं केवल एक मात्र योगतारा लेनी थी जिससे उन छोटे व बड़े नक्षत्रों के नाम पड़ते। चन्द्रमा मध्यम मान से एक दिन में यानी ३० मुहूर्त में (१ मुहूर्त = २ घड़ी = ४८ मिनट) लगभग १३.१/३° चलता है। योगताराओं को बीच में लेने के लिए नक्षत्रों के तीन प्रकार से वर्गीकरण करने पड़े। १५ मुहूर्त के नक्षत्र, ३० मुहूर्त के नक्षत्र तथा ४५ मुहूर्त के नक्षत्र। १५ मुहूर्त के नक्षत्र वे नक्षत्र हैं जिनमें आधे से कम दिन में ही अग्रिम योगतारा प्राप्त हो जाता है। ३० मुहूर्त वाले वे नक्षत्र हैं, जिनमें एक दिन (= ३० मुहूर्त) में एक योगतारा से युति व सान्निध्य संभव है। ४५ मुहूर्त वाले वे नक्षत्र हैं जिनमें एक दिन से अधिक लगभग १.१/२ दिन तक योगतारा प्राप्त होती है। यहां संलग्न सारणी में कृत्तिकादि नक्षत्र परिगणना लेकर असम विभाजन के मुहूर्तांक, योगताराओं के नाम, उनके सायन भोगांश एवं शर तथा चाक-चक्य प्रकाश वर्ग (magnitude) दिये गए हैं। जिस तारे का चाकचक्य वर्ग अधिक होता है—वह मन्द होता है। लगभग पाञ्च चाक चक्य वर्ग वाले तारे खुली आंख से देखे जा सकते हैं। अतः इससे अधिक चाक चक्य वर्ग वाले तारों के साथ युति देखी ही नहीं जा सकती। किञ्च—चन्द्रमा का शर लगभग ±५° सम्भव है अतः इससे अधिक शर वाले योग ताराओं के साथ युति सम्भव नहीं केवल सान्निध्य सम्भव हो सकता है। इस सारणी में ६ नक्षत्र ४५ मुहूर्तों के हैं—जिनका विवेचन आगे किया जाएगा।

(३) नक्षत्र चक्र की तीसरी स्टेज वह है जिसमें सौ विध्य के लिये नक्षत्र चक्र के समविभाग स्वीकार कर लिये गए। इस वर्गीकरण को आगे वेदांग ज्योतिष ने भी स्वीकार किया। बाद में सिद्धान्त ज्योतिष में भी यही परिपाटी स्वीकृत हुई। ध्यान रहे यदि किसी प्राचीन ग्रन्थ में महाराज अशोक या भगवान् बुद्ध आदि के समय तक या इससे पूर्व किसी घटना में नक्षत्र का उल्लेख है तो यह विचारणीय होगा कि वह नक्षत्र किस परम्परा के अनुसार किस कोटि की नक्षत्र गणना के अनुसार है। वर्तमान नक्षत्र-गणना की परिपाटी के अनुसार उन वाक्यों की गणितीय व्याख्या करना संगत नहीं होगा।

अब हम यह विचार करते हैं कि सर्वप्रथम प्राचीनतम स्टेज में नक्षत्र २४ कैसे थे? सारणी से स्पष्ट है कि तीनों उत्तरानक्षत्र (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा एवं उत्तरा भाद्रपदा) ४५ मुहूर्तों के हैं, और आगे पीछे ३० मुहूर्त के नक्षत्रों के मध्यगत हैं। इस विवेचन में अभिजित् नक्षत्र नहीं लेना होगा—क्योंकि इसका शर बहुत अधिक है और यह बाद में लिस्ट से निकाल भी दिया गया। अतः उत्तराषाढ़ा के सान्निध्य में श्रवण नक्षत्र ही लिया जाना चाहिये।

ध्यान रहे—तीनों पूर्वानक्षत्रों के योगताराओं के साथ चन्द्रमा की युति सम्भव नहीं है—क्योंकि इन सभी के शर ५ अंश से अधिक है। भले ही वे प्रकाश वर्गांक के अनुसार कोरी आंख से दृश्य हैं। चन्द्रमा इनकी सन्निधि में आ सकता है युति नहीं कर सकता। पूर्वाभाद्रपदा एवं पूर्वाफाल्गुनी के योगतारा काफी दूर रहेंगे। परन्तु पूर्वषाढ़ा का योगतारा इनकी तुलना में चन्द्रमा के काफी पास आ सकता है फिर भी युति सम्भव नहीं। लम्बन संस्कार करने पर भी युति तो नहीं बनेगी—काफी सान्निध्य या अंशमर्द युति (Overlap of rays) सम्भव होगा। केवल उत्तराषाढ़ा योगतारा की युति सम्भव है। सूर्य प्रज्ञप्ति में इस युति का विशेष विवेचन उपलब्ध होता है। इन युग्म नक्षत्रों के क्रमागत पहिले एवं आगे के युतियोग्य योगताराओं से अन्तर इतने ज्यादा हैं कि ये अन्तर अधिकांशतः दो तीन दिनों में भी कोरी आंख से स्पष्ट दृश्य ताराओं से बिना युति ही परमचन्द्रगति से लंघित होते हैं। अतः इन प्रदेशों में ३०, ३० मुहूर्त के नक्षत्रों के मध्य ४५ मुहूर्त के नक्षत्र मानने पड़े। युग्म नक्षत्रों के "पूर्वा" नक्षत्र ३० मुहूर्त के हैं और "उत्तरा" नक्षत्र ४५ मुहूर्त के हैं। इस "पूर्वा", "उत्तरा" विभाजन का संबंध आकृति संस्थान से भी होगा। यह विषय विचारणीय है। प्राग्वैदिक परम्परा में इन युग्म नक्षत्रों के लिए एक-एक ही नाम था, पूर्वा और उत्तरा विभाग नहीं थे—इसमें संदेह नहीं।

इन ४५ मुहूर्त के नक्षत्रों के अतिरिक्त तीन और नक्षत्र रोहिणी पुनर्वसु एवं विशाखा भी ४५ मुहूर्ती हैं। इनके पूर्ववर्ती एवं अग्रिम नक्षत्र—योगताराओं के शर एवं चाकचक्य—वर्ग देखने से भी यही बात स्पष्ट होती है कि इनमें डेढ़ दिन तक या इससे भी अधिक समय में चन्द्रयुति व सान्निध्य नहीं होता। अतः इन नक्षत्रों को भी ४५ मुहूर्तों के नक्षत्रों की लिस्ट में लेना तर्कसंगत है।

४५ मुहूर्त के ६ नक्षत्रों में चान्द्रनक्षत्र मास के प्रतिनक्षत्र के भागों से काफी अधिक भाग आ गए। इसके विपरीत ४५ मुहूर्त के नक्षत्रों में कम भाग ही गणना में आए। १५ मुहूर्त नक्षत्र भी ६ हैं इनमें से चार नक्षत्रों के योगताराओं के पूर्ववर्ती योगताराओं से अन्तर ७° से कम है। आर्द्रा योगतारा का मृगशिर योगतारा से अन्तर ५°, आश्लेषा योगतारा का पुष्य योगतारा से अन्तर ५°, स्वाती योगतारा का चित्रा योगतारा से अन्तर १°, और ज्येष्ठा योगतारा का अनुराधा योगतारा से अन्तर ७° है। बाकी १५ मुहूर्त के दो नक्षत्र भरणी एवं शतभिषा इस संदर्भ में अपवाद प्रतीत होते हैं। भरणी योगतारा का अश्विनी योगतारा से अन्तर १६° और अग्रिमवर्ती युतियोग्य कृत्तिका योगतारा से अन्तर ११° है। शायद कृत्तिका के सापेक्ष तुलना में इसे १५ मुहूर्ती लिया गया। शतभिषा योगतारा का धनिष्ठा योगतारा से अन्तर १६° और पूर्वा भाद्रपदा योगतारा से अन्तर १२° है। ये दोनों पूर्ववर्ती व अग्रिम योगतारा कोरी आंख से अदृश्य हैं। किञ्च इस योगतारा के विषय में मतभेद ही है। अतः यह स्पष्ट है कि नक्षत्र चक्र की सम विभाग परम्परा से पूर्व विषम विभाग की परिपाटी प्रचलित थी और वही अधिक तर्क संगत कही जा सकती है। सिद्धांत ग्रन्थों तथा अब की परम्परा में स्वीकृत सम विभाग पद्धति काल्पनिक (Fictitious) विभाजन पद्धति है और इसे व्यवहारार्थ स्वीकृत किया गया है।

ऊपर के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के जातक नक्षत्र आदि के उल्लेखों में आधुनिक परिपाटी का प्रयोग तर्क संगत नहीं होगा। यही नहीं प्राचीन तिथियां भी ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार चन्द्रोदय से चन्द्रोदय तक सावन चन्द्रदिन के रूप में परिभाषित रही हैं। इस परम्परा के बाद वेदांग ज्योतिष की पञ्च संवत्सर गणना पद्धति प्रचलित रही। जिसके अनुसार तिथि मान वर्तमान परिभाषा से प्राप्त मानों से भिन्न रहे हैं। अतः प्राचीनतम साहित्य में यदि तिथि नक्षत्र का उल्लेख हो तो उसकी व्यवस्था वर्तमान पद्धति से करना उचित नहीं। तब पञ्चांग में तिथि और नक्षत्र दो ही अंग थे। उस समय में ग्रह स्थिति आदि का उल्लेख भी नहीं होता था। अतः यह स्पष्ट है कि भगवान् रामचन्द्र आदि की जन्म कुण्डलियां अर्वाचीन फलित शास्त्रियों ने श्रद्धावश अब प्रचलित पद्धतियों से बनाई। इसमें सन्देह नहीं कि जीसस क्राइस्ट, मुहम्मद तथा हिन्दु अवतारों की जन्म कुण्डलियां ग्रहस्थिति आदि सब बहिर्न्यास पद्धति (Extrapolation-method) से बनाई गई हैं। ये तो केवल मात्र नष्ट जातक पद्धति से ज्ञात की गई। एवं इन में उच्चस्थ ग्रहयोग आदि इन विद्वानों ने अपनी श्रद्धावश अथवा फलित शास्त्र में प्रामाणिकता की धारणावश दिए होंगे। ये सब इन विद्वानों द्वारा नष्टजातक पद्धति के प्रयोग मात्र हैं इसमें संदेह नहीं। इनके विवेचन तो वस्तुतः प्राचीन परम्परागत तत्कालीन पद्धति से ही करने चाहिएं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंग्रेजीं तारीख को हिज़री तारीख में बदलने की विधि

शक्तिधर शर्मा

पिछले वर्ष हमने मुस्लिम हिजरी तारीख को अंग्रेजी तारीख में बदलने की विधि बतलाई। अब हम उसकी विपरीत प्रक्रिया बतलाते हैं। इसके लिये हमें पिछले वर्ष दी गई सारणी (ख) (ग) (घ) की आवश्यकता है। इन्हें यहा पुनः दिया गया है। प्रक्रिया निम्नलिखित है–

(१) दी गई अंग्रेजी तारीख की वर्ष संख्या में से ६२१ घटाए, और प्राप्त शेष (मध्यवर्ती) वर्षों को ३६५ से गुणा करें।

(२) शेष को ४ से भाग दें – पूर्णांक लब्धि प्लत दिनों (Leapdays) की संख्या होगी। इसे (१) प्रक्रिया में प्राप्त गुणनफल के नीचे लिखें।

(३) अंग्रेजी A.D. वर्ष के प्रारम्भ से दी गई तारीख तक के (जन. १ के बाद की) दिनों की संख्या गिनकर या सारणी "घ" से प्राप्त संख्या को भी गुणनफल के नीचे लिखें। ध्यान रहे – इस तारीख तक के दिनों की गिनती में यदि फरवरी का प्लत दिन भी आ रहा हो तो उसे भी बीच में गिनें।

(४) प्रक्रियाएं (१), (२), (३) के प्राप्त अंकों को जोड़कर ५६१ दिन घटाएं।

(५) यदि A.D. वर्ष नई परिपाटी (अर्थात् २ सित. १७५२ ई. जब पोप ने ११ दिन बढ़ाए थे) के बाद का हो तो १८ वीं शती में ११ दिन १९वीं शती में १२ दिन २०वीं एवं २१वीं शती में १३ दिन, २२वीं शती में १४ दिन घटाएं। शेष को श कहें।

(६) 'श' में से सारणी "ख", "ग" की सहायता से यथा सम्भव घटने योग्य दिनों को घटाते जाएं साथ-साथ हिज़री वर्ष लिखते जाएं (या सारणियों ख और ग से प्राप्त संख्याओं से अंकों के जोड़ को 'श' में से घटाएं) इसके बाद हिज़री तारीख तक के दिनों की संख्या (सारणी 'घ' की सहायता से) जहां तक घट सके घटाएं। शेष दिन संख्या अग्रिम हिजरी मास की तारीख होगी। सारणियों "ख", "ग" से प्राप्त हिज़री वर्ष संख्याओं को जोड़ कर १ जोड़ने से वर्तमान हिज़री वर्ष (अंग्रेजी वर्ष के मुताबिक हिजरी वर्ष) प्राप्त होगा। यह सब नीचे लिखे उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा।

प्राप्त हिज़री तारीख को वार जानने के लिए सूत्र निम्नलिखित है–

(इतवार = १) $\frac{\text{श} + ६}{७}$ भाग देने में शेष संख्या = वार

उदाहरण–हम यहा उदाहरण के रूप में सन् १९१९ की ३१ मई को हिज़री तारीख प्राप्त करेंगे। गणित न्यास निम्नलिखित है–

(१) १९१९-६२१ = १२९८ = क्रिश्चियन एवं हिज़री वर्षों की मध्यवर्ती संख्या

(२)	(अ)	१२९८ × ३६५	= ४७३, ७७०
	(आ)	पूर्णांक १२९८/४	= ३२४ लीप दिन
(३)		जन. १ से मई ३१ तक के दिन सारणी (घ)	= १५०
		योग	= ४७४, २४४
(४)		घटाए स्थिरांक ५६१	– ५६१
			४७३६८३
(५)		शती संस्कार (२० वीं शती)	–१३
		शेष	४७३६७०
(६)		सारणी "ख" १२०० वर्ष (हिजरी)	–४२५,२४०
		अन्तर	=४८,४३०
		" १२०	–४२,५२४
		अन्तर	= ५,९०६
		सारणी "ग" १६ वर्ष	५,६७०
			२३६
		मुहर्रम १ से शाबान के अन्त तक (सारणी घ)	२३५
		रमजान	१

हिजरी वर्षों का योग = १३३६

१ जोड़े + १

वर्तमान हिजरी वर्ष १३३७

अतः ३१ मई १९१९ ई. को १ रमजान १३३७ हिजरी था।

वार = (४७३६७० + ६)/७ – शेष = ० = शनिवार

कभी-कभी वार में फर्क आ सकता है अतः तदनुसार हिजरी तारीख एक आगे या पीछे कर लें।

सारणी (ख)

हिज़री चक्रों के लिये दिन व क्रिश्चियन वर्ष, दिन तथा वारों में वृद्धि

चक्र	हिज़री सन् वर्ष	हिज़री सन् दिन	क्रिश्चियन सन् वर्ष	क्रिश्चियन सन् दिन	वार
१	३०	१०६३१	२९	४६	५
२	६०	२१२६२	५८	९२	३
३	९०	३१८९३	८७	१३८	१
४	१२०	४२५२४	११६	१८४	६
५	१५०	५३१५५	१४५	२३०	४
६	१८०	६३७८६	१७४	२७६	२
७	२१०	७४४१७	२०३	३२२	०
८	२४०	८५०४८	२३३	३	५
९	२७०	९५६७९	२६२	४९	३
१०	३००	१०६३१०	२९१	९५	१
२०	६००	२१२६२०	५८२	१९०	२
३०	९००	३१८९३०	८७३	२८५	३
४०	१२००	४२५२४०	११६५	१५	४
५०	१५००	५३१५५०	१४५६	११०	५

... (प्रविष्टे) को हिज़री में बदलने की विधि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सारणी (ग)

हिजरी कैलेण्डर के अतिरिक्त वर्षों के लिये क्रिश्चियन वर्ष दिन वारों में वृद्धि

हिजरी वर्ष	हिजरी दिन	क्रिश्चियन वर्ष	क्रिश्चियन दिन	हिजरी वार	हिजरी वर्ष	क्रिश्चियन दिन	क्रिश्चियन वर्ष	क्रिश्चियन दिन	क्रिश्चियन वार
१	३५४	०	३५४	४	१६*	५६७०	१५	१९५	०
२*	७०९	१	३४४	२	१७	६०२४	१६	१८४	४
३	१०६३	२	३३३	६	१८*	६३७९	१७४	२	
४	१४१७	३	३२२	३	१९	६७३३	१८	१६३	६
५*	१७७२	४	३१२	१	२०	७०८७	१९	१५२	३
६	२१२६	५	३०१	५	२१*	७४४२	२०	१४२	१
७*	२४८१	६	२९१	३	२२	७७९६	२१	१३१	५
८	२८३५	७	२८०	०	२३	८१५०	२२	१२०	२
९	३१८९	८	२६९	४	२४*	८५०५	२३	११०	०
१०*	३५४४	९	२५९	२	२५	८८५९	२४	९९	४
११	३८९८	१०	२४८	६	२६*	९२१४	२५	८९	२
१२	४२५२	११	२३७	३	२७	९५६८	२६	७८	६
१३*	४६०७	१२	२२७	१	२८	९९२२	२७	६७	३
१४	४९६१	१३	२१६	५	२९*	१०२७७	२८	५७	१
१५	५३१५	१४	२०५	२	३०	१०६३१	२९	४६	५

दिन एवं वारों में प्रतिमासान्त वृद्धि

सारणी (घ)

हिजरी वर्ष: १ मह. के बाद मासान्त तक	दिन	वार	क्रिश्चियन वर्ष: १ जन. के बाद मासान्त तक	दिन	वार
महरम	२९	१	जनवरी	३०	२
सफर	५८	२	फरवरी	५८	२
रबी उल अव्वाल	८८	४	मार्च	८९	५
रबी उलाखीर	११७	५	अप्रैल	११९	०
जमद उल अव्वल	१४७	०	मई	१५०	३
जमद उलाखीर	१७६	१	जून	१८०	५
रजब	२०६	३	जुलाई	२११	१
शाबान	२३५	४	अगस्त	२४२	४
रमजान	२६५	६	सितम्बर	२७२	६
शव्वाल	२९४	०	अक्तूबर	३०३	२
जिल्काद	३२३	१	नवम्बर	३३३	४
जिल्हिज	३५३	३	दिसम्बर	३६४	०

नोट : *से चिन्हित वर्ष प्लुत वर्ष है जिनमें जिल्हिज्ज का महीना २९ दिन की बजाए ३० दिन का है।

शाक वर्ष की सौर तारीख (प्रविष्टे) को हिजरी में बदलने की विधि

सौर शाक तारीख को हिजरी में बदलने के लिये पहिले सौर शाक मेष सक्रान्ति के दिन हिजरी वर्ष का गत अंशात्मक भाग निकालना आवश्यक है। मर्षादि के समय भिन्नात्मक हिजरी वर्ष ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करें –

$$\text{हि} = \text{शा} - \text{५१८} + \frac{\text{शा} - \text{१३६८}}{\text{३२ ५६}}$$

जहां हि = हिजरी वर्ष, शा = शाक वर्ष

तारीख परिवर्तन की पूरी विधि निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगी –

उदाहरण–पहिले उदाहरण रूप में हम १८४१ शाक वर्ष के मेष सक्रान्ति के दिन गत भिन्नात्मक हिजरी वर्ष ज्ञात करते हैं–

$$\text{हि} = \text{१८४१} - \text{५१८} + \frac{\text{१८४१} - \text{१३६८}}{\text{३२ ५६}} = \text{१३३७ ५४}$$

= १३३७ वर्ष ६.५ मास गत

अतः ७वें मास रजब की कोई तारीख शाक १८४१ की मेष सक्रान्ति के दिन थी। अर्थात् मेष सक्रान्ति के दिन रजब मास चल रहा था। क्योंकि लगभग ०.५ मास = १५ दिन गत हैं – अतः मध्यम मान में लगभग रजब मास का मध्य मेष सक्रान्ति के दिन था। इस विधि से ठीक तारीख ज्ञात नहीं की जा सकती – क्योंकि ये सब मध्यम अधिमास पर आधारित है। अतः कई बार एक मास तक अन्तर आ सकता है। ऐसी स्थिति में विगत समीपतम अधिमास को ध्यान में रखते हुए संस्कार कर लेना पड़ेगा।

इस तरह मेष सक्रान्ति के दिन हिजरी वर्ष मास ज्ञात हो जाने पर आगे के महीनों की सक्रान्तियों के दिन हिजरी वर्ष मास की स्थूल तारीख ज्ञात हो जाएगी सौर तारीखों एवं मासों के तुल्य चान्द्र तिथि एवं मास लेकर गणना करने पर ही वास्तविक तारीख का ज्ञान होगा उसमें भी एक दिन का अन्तर हो सकता है।

हिजरी तारीख को शाक सौर तारीख (प्रविष्टे) में बदलने की विधि

हिजरी तारीख को शाक सौर प्रविष्टे में बदलने के लिये महर्रम १ से सम्बद्ध चन्द्रदर्शन की तारीख को शाक मास की भिन्नात्मक गत तारीख करनी होगी। उसके ज्ञान के लिये सूत्र निम्नलिखित है –

$$\text{शा} = \text{हि} + \text{५१८} - \frac{\text{हि} - \text{८५०}}{\text{३३ ५४}}$$

निम्न उदाहरण से सम्पूर्ण प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी –

उदाहरण– उदाहरण के रूप में हम पहिले हिजरी १३३७ के प्रारम्भ (महर्रम मास के प्रारम्भ) के दिन शाक मास का गत ज्ञात करेंगे–

$$\text{शा} = \text{१३३७} + \text{५१८} - \frac{\text{१३३७} - \text{८५०}}{\text{३३ ५४}}$$

= १८४० ५०

= १८४० शाक वर्ष के छठे मास का लगभग प्रारम्भ

यदि हम १८४१ शाक वर्ष में ज्येष्ठ के प्रारम्भ की लगभग हिजरी तारीख जानना चाहते हैं – तो निम्न ढंग से जान सकते हैं–

शा १८४० का ७वां मास	हिजरी १३३७ का पहिला मास
+ ८ मास	+ ८ मास
१८४१ शाक का ज्येष्ठ मास	हिजरी १३३७ के ९वें मास रमजान के साथ चल रहा होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"गर्भ में पुत्र है अथवा पुत्री, जन्म कब होगा ?

यह पूर्व ही कहा जा चुका है कि भारतीय ज्योतिष का प्रयोजन आत्मकल्याण के साथ लोक व्यवहार सम्पन्न करना है। लोक व्यवहार के निर्वाह के लिए ज्योतिष के दो सिद्धांत हैं–गणित एवं फलित। गणित ज्योतिष के शुद्ध गणित के अतिरिक्त करण, तन्त्र एवं सिद्धान्त ये तीन भेद तथा फलित के जातक, ताजिक, मुहूर्त, प्रश्न एवं शकुन ये पाँच भेद किये गये हैं। फलित के अन्तर्गत 'प्रश्न' भेद का उल्लेख इस लेख में किया जा रहा है।

आज इस वैज्ञानिक युग में गर्भगत सन्तान के बारे में जिज्ञासु व्यक्ति अल्ट्रासाउन्ड एक्स-रे आदि कराते हैं। किन्तु इस लेख को पढ़ने के बाद शायद उसकी आवश्यकता आप अनुभव नहीं करेंगे, ऐसी आशा है। ज्ञात सारणी की सहायता से एक साधारण व्यक्ति भी अपनी उत्पन्न होने वाली भावी सन्तान के बारे में जान सकेगा कि गर्भगत सन्तान पुत्र होगा या पुत्री होगी तथा कब उत्पन्न होगी ? कलियुग में निरन्तर ज्योतिष शास्त्र से मानव जाति का विश्वास उठता जा रहा है। ये आस्थारहित मानव ज्योतिष के सूक्ष्म गणित पर तो विश्वास रखते हैं अपितु ज्योतिष फलित पर नहीं। मैंने अपने अल्प अनुभव एवं पूज्य पिताश्री के दीर्घ अनुभव, शोध आदि को एकत्रित करके तथा इस एकत्रित सारणी का अनुभवी चिकित्सकों द्वारा भी परिणाम प्राप्त करके; जिज्ञासु पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित कराया है।

जैसे "यह कुण्डली पुरुष की है या स्त्री की है" के प्रश्न का उत्तर सुगमता से नहीं दिया जा सकता; ठीक इसी भांति गर्भगत सन्तान लिंग एवं सन्तानोत्पत्ति काल स्पष्ट करना कठिन होता है। ऐसे प्रश्नों का उत्तर देना आचार्य श्रेष्ठ हेतु समस्या बन जाती है। परन्तु आप इस सारणी के माध्यम से छोटा सा गणित करके ही उक्त प्रश्न का उत्तर सटीक देने में समर्थ हैं।

क्या ज्योतिष शास्त्र का फलित निराधार है ? जी नहीं, ऐसा नहीं है। यदि आपके प्रश्न का उत्तर गलत मिलता है तो वह ज्योतिष गणित अथवा ज्योतिष फलित का दोष नहीं है अपितु भविष्यवक्ता द्वारा ग्रह परिशीलन का दोष है। इसका अर्थ ये तो नहीं, कि ज्योतिष असत्य है। यदि बुद्धिजीवी वर्ग इस ओर थोड़ा भी अमूल्य समय दें तो बड़े-बड़े चमत्कृत फल एवं शोधकार्य होने सम्भव हैं।

उपरोक्त प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व कुछ निम्नवत् बातें विशेष रूप से ध्यान में रखना नितान्त आवश्यक हैं–

(१) गर्भवती स्त्री की वास्तविक "जन्म तिथि" होनी चाहिए।

(२) गर्भवती स्त्री की "गर्भ तिथि" होनी चाहिए।

"गर्भ तिथि" का निर्णय करना महाकठिन कार्य है। यह तो कोई दैविक शक्ति ही स्पष्ट कर सकती है। सामान्य व्यक्ति या गणित निर्णय नहीं कर सकता कि अमुक स्त्री, अमुक तिथि में गर्भवती हुई है। ऐसा तो मात्र आचार्य वराहमिहिर ने अपनी विख्यात पुस्तक "वराहसंहिता" में गर्भ शोधन पद्धति को विस्तार से समझाया है; किन्तु यह विधि तभी व्यवहार में सफल हो सकती है जब हमें गर्भधारण क्षण का ज्ञान हो; जो कि श्रमसाध्य कार्य है एवं कठिन भी है।

"गर्भ तिथि निर्णय"–यह तो सर्व विदित है कि मासिक धर्म यदि निश्चित तिथि पर न हो तो उस मास गर्भधारण स्वीकार कर लिया जाता है। माना किसी स्त्री को मासिक धर्म ९ दिसम्बर, १९९० को होना था किन्तु निर्धारित तिथि पर उस स्त्री को रजो धर्म नहीं हुआ अर्थात् उस स्त्री को गर्भ ठहर गया है यानि कि वह गर्भवती हो चुकी है। इस का तात्पर्य है कि अमुक स्त्री गत ९ नवम्बर, १९९० से ९ दिसम्बर, १९९० के कालखण्ड में किसी तिथि में गर्भवती हो चुकी है। सर्वसाधारण जानते ही हैं कि चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। अतः उक्त ९ दिसम्बर, १९९० को गर्भवती स्त्री एक मास व्यतीत कर चुकी होती है; ऐसा हमने मान लिया है अर्थात् स्त्री ने ९ नवम्बर, १९९० को ही गर्भधारण कर लिया, ऐसा मान लेते हैं जबकि ऐसा अनिवार्य नहीं है। क्योंकि हमने सारणी इसी गणित के माध्यम से बनायी है। यानि कि "गर्भ तिथि" ९ नवम्बर, १९९० निश्चित हुई।

गणित प्रक्रिया–माना किसी स्त्री की जन्म तिथि १५.१२.१९६७ ई० है तथा "गर्भ तिथि" ९ नवम्बर, १९९० ई० है।

नोट–गर्भवती स्त्री की "गर्भ तिथि" में से उसकी "जन्म तिथि" को घटायें। फिर सारणी में प्राप्त गणित से फल देखें। इससे स्पष्ट होगा कि गर्भगत् सन्तान पुत्र है अथवा पुत्री। सन्तान का जन्म कब होगा ? इसके लिए प्राप्त "गर्भ तिथि" में २७० दिन जोड़ दें। सन्तोनोत्पत्ति काल ज्ञात हो जायेगा। इस काल में एक सप्ताह का अन्तर कभी-कभी आता है। अतः ज्योतिष प्रेमी ध्यान रखें एवं स्वयं का भी मस्तिष्क प्रयोग करें।

गर्भ तिथि–	९.११.१९९०
जन्म तिथि–	१५.१२.१९६७
(घटाया)	२४.१०.२२

लब्धि २२ वर्ष १० मास २४ दिन आई। सारणी में २३वें वर्ष के नीचे ११वें मास यानि नवम्बर मास का फल देखेंगे। यही अभीष्ट उत्तर मिला अर्थात् पुत्र होगा।

गर्भ तिथि–	९.११.१९९०
(२७० दिन के मास बना कर जोड़ें)	०. ९. ०
(जोड़ा)	९. ८.१९९१

अर्थात् भावी सन्तान ९ अगस्त, १९९१ में जन्मेगी। इस तिथि में ७ दिन का अन्तर आ सकता है।

उत्तर–"९अगस्त, १९९१ में अमुक स्त्री को पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।"

इस सारणी के माध्यम से इच्छानुसार सन्तान भी प्राप्त की जा सकती है। इसका गणित निम्नवत् है–

माना अमुक स्त्री की जन्म तिथि २० जनवरी, १९६९ ई० है, तथा वह इच्छानुसार अगस्त, १९९० ई० में सन्तान हेतु गर्भधारण करना चाहती है। यदि वह इस मास गर्भवती होती है तो क्या सन्तान उत्पन्न होगी ?

माना अमुक स्त्री को रजोधर्म १३ अगस्त, १९९० को हुआ है। इस तिथि को ही आप "गर्भ तिथि" स्वीकारें।

गर्भ तिथि–	१३.८.१९९०
जन्म तिथि–	२०.१.१९६९
(घटाया)	२३.६.२१

फल–सारणी में २२ (बाइस) वें वर्ष के नीचे ७वें मास अर्थात् जुलाई के सामने देखा पुत्री लिखा है। यदि अमुक स्त्री इस मास गर्भ धारण करेगी तो पुत्री प्राप्त होगी। जन्मतिथि भी उक्त नियमानुसार प्राप्त कर लें।

शेष पृ.२९ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

१९९० के कालखण्ड में किसी तिथि में गर्भवती हो चुका है। सर्वसाधारण जानते हैं कि चन्द्रमा के ... अमुक स्त्री इस मास गर्भ धारण करेगी तो पुत्र प्राप्त होगा। जन्मतिथि भी उक्त नियमानुसार प्राप्त
भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। शेष पृ. २९ पर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

: समस्याएं और समाधान :

प्रियव्रत शर्मा

[जैसा कि हम पहिले भी पाठकों को बतला चुके हैं – इस स्तम्भ में हम उनकी फलित (मुहूर्त, जातक, ताजिक आदि) एवं सिद्धान्त ज्योतिष (ग्रहों की गति, स्थिति आदि) से सम्बद्ध समस्याओं का समाधान करते हैं। भारतीय पचांग से सम्बद्ध धर्मशास्त्र सम्बन्धी समस्याओं का समाधान भी यहाँ किया जाता है। अत: पाठक इन्हीं विषयों से सम्बद्ध समस्याएं ही हमें भेजा करें। फलित ज्योतिष सम्बन्धी ऐसी समस्याएं जो किसी जातक विशेष से सम्बद्ध हों एवं धर्मशास्त्र आदि से सम्बन्ध रखने वाली वे समस्याएं जिनका पचांग या ज्योतिषशास्त्र से कोई वास्ता नहीं है – ऐसी समस्याओं के समाधान हम इस स्तम्भ में नहीं देते। क्योंकि इस स्तम्भ के लिए प्रतिवर्ष पाठकों की अनेक समस्याएं हमें प्राप्त होती हैं अत: हम उनमें से ऐसी समस्याओं को ही समाधानार्थ चुनते हैं जिनसे अन्य पाठकों का भी ज्ञानवर्धन होता है। स्थानाल्पता के कारण हम प्रतिवर्ष प्राप्त होने वाली सभी समस्याओं का समाधान एक ही वर्ष के पचांग में नहीं दे सकते, अत: हम इनमें से अनेक समस्याओं को आगामी वर्ष या वर्षों के पचांगों में प्रकाशित करने के लिए बाधित हैं।

प्रियव्रत शर्मा]

समस्या—जन्मकालिक महादशा के भुक्त या भोग्यकाल जानने के लिए तात्कालिक नक्षत्र के भुक्त या भोग्यकाल को जन्मकालिक ग्रहदशा के वर्षों से गुणा करके भभोग से भाग दे कर लब्धि वर्ष, शेष को १२ से गुणा करके भभोग से भाग देकर लब्धि मास एवं पुन: शेष को ३० से गुणा करके भभोग से भाग देकर लब्धि दिन होते हैं। क्या इस प्रक्रिया से यह प्रकट नहीं होता कि ग्रहदशाओं के वर्ष जो पचांगों तथा ज्योतिष ग्रन्थों में दी गई महादशा और अन्तर्दशा सारणियों में निर्दिष्ट हैं, ३६० दिन के होते हैं, ३६५¼ दिन के नहीं ?

— अभिनिवेश बाडीच ....(राजस्थान)

समाधान— यहाँ जन्मकालिक महादशा का भुक्त या भोग्यकाल निकालने की प्रक्रिया में मासों को ३० दिन का माना गया है – यह ठीक है लेकिन ये ३० दिन सावन नहीं; अपितु सौर हैं। यहाँ ३० दिन का अभिप्राय, सूर्य द्वारा ३० अंशों का भोगकाल है अर्थात् सौरमान से एक दिन वह काल है जिसमें सूर्य एक अंश चलता है। जितने समय में सूर्य ३० अंश या एक राशि पार करता है उस समय को एक सौर मास कहा जाता है। जितने समय में सूर्य ३६० अंश (१२ राशियां) पार करता है उस कालावधि को ३६० सौर दिन या एक सौर वर्ष कहा जाता है। इस प्रकार सौर वर्ष में जो ३६० दिन माने गए हैं वे सावन दिन नहीं, अपितु सौर दिन हैं।

सूर्योदय से सूर्योदय तक के काल को "सावन दिन" कहा जाता है।

समस्या—पृथ्वी पूरे २४ घण्टों में अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर ३६० अंश घूम जाती है, और सूर्य इतने ही समय में (२४ घण्टों में) लगभग एक अंश पश्चिम से पूर्व की ओर अपने भ्रमणवृत्त में खिसक जाता है। इस स्थिति में सूर्य का पूर्वी क्षितिज पर उदय प्रतिदिन २४ घण्टा ४ मिनट बाद होना चाहिए। लेकिन वह लगभग २४ घण्टे बाद ही पूर्वी क्षितिज पर आ जाता है - इसका कारण क्या है ?

—चित्रधक शाह ....बम्बई

समाधान— पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर ३६० अंश घूमने में २४ घण्टा लेती है यह साधारणतया कहा जाता है लेकिन वास्तविकता यह है कि वह अपने अक्ष पर पूरा (३६० अंश का) चक्र लगाने में लगभग २३ घं. ५६ मि. ही लेती है। यही कारण है प्रतिदिन १ अंश पूर्व की ओर खिसका हुआ सूर्य पृथ्वी के पूर्ण भ्रमण के लगभग ४ मिनट बाद (यानी कुल २४ घण्टा बाद) पूर्वी क्षितिज पर आता है। यदि वह (सूर्य) १ अंश पूर्व की ओर खिसका न होता तो वह पृथ्वी के पूर्ण भ्रमण होते ही (२३ घं. ५६ मिनट बाद ही) पूर्वी क्षितिज पर आ जाता।

पृथ्वी जितने समय में अपने अक्ष पर ३६० अंश घूमती है उसे नाक्षत्र दिन (Sidereal day) कहा जाता है। जो तारा इस समय आपको अपने स्थानीय पूर्वी क्षितिज पर लगा दिखाई देता है वह लगभग २३ घं. ५६ मि. बाद आपके पूर्वी क्षितिज पर पुन: आकर लग जाएगा क्योंकि वह स्थिर है, सूर्य की भान्ति वह चलता नहीं है। इसी प्रकार क्रान्ति वृतस्थ १२ राशियों के प्रारम्भ बिन्दु भी स्थिर हैं। इसीलिए इनमें से प्रत्येक बिन्दु भी किसी स्थानीय पूर्वी क्षितिज पर अपने पहिले उदय के २३ घं. ५६ मि. बाद ही आ जाता है, अर्थात् किसी भी राशि या लग्न का किसी स्थानीय क्षितिज पर उदय अपने पहिले उदय के लगभग २३ घं. ५६ मि. बाद होता है। इस प्रकार स्पष्ट है—बारह राशियों (लग्नों) का किसी स्थानीय क्षितिज पर उदयकाल (अर्थात् उनके स्वोदय कालों का योग) लगभग २३ घं. ५६ मि. ही होता है।

यहाँ यह भी जान लेना चाहिए कि किसी भी स्थल पर दो सूर्योदयों का मध्यवर्ती काल हमेशा २४ घण्टे नहीं होता। वह एक सौर वर्ष में कम से कम २३ घण्टे ५९ मि. ३५ से. और अधिक से अधिक २४ घं. ० मि. २६ से. का होता है। मध्यम मान से वह पूरे २४ घण्टे का होता है।

दो सूर्योदयों के मध्यवर्ती काल को सावन दिन कहा जाता है। उक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि मध्यम मान से सावन दिन २४ घण्टे का और स्पष्ट मान से इसका न्यूनतम मान २३ घं. ५९ मि. ३५ से. और अधिकतम मान २४ घं. ० मि. २६ से. है।

समस्या—श्री मार्त्तण्ड पंचांग के तिथि, नक्षत्र आदि के समाप्ति काल को अन्य किसी अभीष्ट नगर का काल कैसे बनाया जाए ?

श्री जी.ऐल. आदित्य
हज़रतपुर P.O बाहिच
(बुलन्दशहर) उ.प्र.

समाधान— मार्त्तण्ड पंचांग में तिथि नक्षत्र आदि का समाप्तिकाल घड़ी पलों में तो दिया ही जाता है। साथ ही यह भा.स्टैं.टा. में घण्टा मिनटात्मक भी दिया रहता है। यहाँ दिया गया घड़ी पलात्मक काल चण्डीगढ़ के सूर्योदय से सम्बद्ध है। अर्थात् ये घड़ी पल यह बतलाते हैं कि अमुक तिथि नक्षत्र आदि की समाप्ति चण्डीगढ़ के उस दिन के सूर्योदय के बाद इतने घड़ी पल बीतने पर होगी। स्पष्ट है इन घड़ी पलात्मक समाप्ति कालों को चण्डीगढ़ के अतिरिक्त अन्य किसी भी नगर के लिए प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। (ध्यान रहे—चाहे कोई भी पंचांग हो बनारस का, बम्बई का या जयपुर का, यदि वहाँ तिथि आदि के लिए घड़ी पल लिखे गए हैं तो उनका प्रयोग उसी नगर के लिए हो सकेगा, जहाँ के लिए वह पचांग बनाया गया है।) यदि हम मार्त्तण्ड पंचांग के इन घड़ी पलों को अपने किसी अन्य नगर के लिए बनाना चाहते हैं तो हमें इनमें चण्डीगढ़ और अपने अभीष्ट नगर के तद्दिनीय सूर्योदय कालों के अन्तर से संस्कृत करना होगा। यदि उस दिन आपके अभीष्ट नगर का सूर्योदय चण्डीगढ़ के सूर्योदय से पहिले हो रहा हो तो दोनो नगरों के सूर्योदयकाल के घड़ी पलात्मक अन्तर को पंचांगस्थ घड़ीपलों में जोड़ना होगा। अन्यथा (अभीष्ट नगर का सूर्योदय चण्डीगढ़ के सूर्योदय के बाद हो रहा हो तो) इस घड़ी पलात्मक अन्तर को पंचांगस्थ इन घड़ी-पलों में से घटाना होगा, इस प्रकार आपके अभीष्ट नगर में उस तिथि, नक्षत्र आदि का समाप्ति काल घड़ी पलों में ज्ञात हो जाएगा। यही विधि भद्रा, पंचक आदि के प्रारम्भ-समाप्ति काल, चन्द्रराशि प्रवेश, ग्रहों के राशि-नक्षत्र प्रवेश काल आदि के घड़ी पलों को भी अभीष्ट नगरीय बनाने के लिए अपनाइए। इस पद्धति को "पंचांग परिवर्त्तन पद्धति" कहा जाता है।

उपरोक्त पंचांग परिवर्त्तन पद्धति का प्रयोग आजकल के स्टैण्डर्ड टाईम वाले युग में अर्थहीन है। अब सर्वत्र स्टै.टा. का ही प्रयोग में लाया जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति की कलाई पर और उसके घर की दीवार पर या उसके

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

टेबल पर आधुनिक घड़ियां (Watches) हैं, जो स्टैं.टा. ही बतलाती हैं। स्टैं. टा. ऐसा समय है जो एक देश या क्षेत्र में सर्वत्र एक ही रहता है। स्थान भेद से उसमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं रहती। इसी बात को दृष्टि में रखते हुए श्री मार्तण्ड पचांग में घड़ी पलात्मक तिथ्यादि वाले २४ पक्षों के पृष्ठों के तुरन्त बाद भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथ्यादि, भद्रा, चन्द्रराशि प्रवेश और ग्रह नक्षत्र-राशि प्रवेश का काल बतलाने वाला पचांग भी प्रतिवर्ष दिया रहता है। तिथ्यादि, भद्रा आदि का जो काल भा.स्टैं. टा. में यहां दिया गया है वह समस्त भारत के समस्त नगरों के लिए "पचांग परिवर्तन पद्धति" के प्रयोग के बिना ही ज्योतिषी लोग प्रयोग में ला सकते हैं। अर्थात्, भारत के सभी स्थलों पर इस भा.स्टैं.टा. को इसी रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरणार्थ–२१ फर. ९१ को फाल्गु. शु. सप्तमी तिथि भा.स्टैं.टा. के अनुसार दिन के १७ घ. २७ मि. पर समाप्त हो रही है। इस तिथि का समाप्ति काल चण्डीगढ़, दिल्ली, कानपुर आदि सभी शहरों में यही होगा, इसमें "पचांग परिवर्तन पद्धति" के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि, तिथ्यादि के लिए घड़ी पलों के स्थान पर भा.स्टैं.टा. को प्रयोग में लाने में भारी लाघव है।

ध्यान दें–तिथि, नक्षत्र, योग, करण भद्रा व पचक की समाप्ति एव प्रारम्भ चन्द्र राशि प्रवेश, सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र-चरण-राशि प्रवेश, ग्रहों के वक्र-मार्ग एवं चन्द्रग्रहण की प्रारम्भ समाप्ति तथा स्पष्ट ग्रहों के राश्यादि क्रान्ति, शर और अयनांश के मान को बतलाने वाला स्टैण्डर्ड टाईम देश के सभी स्थलों के लिए एक सा ही होता है। लेकिन सूर्य, चन्द्र एव अन्य सभी ग्रहों के उदय-अस्त, लग्नों की प्रारम्भ-समाप्ति तथा सूर्य ग्रहण के प्रारम्भ तथा समाप्ति को बतलाने वाला काल भले ही स्टैण्डर्ड टाईम में क्यों न हो, वह स्थानीय (जिस नगर के लिए वह लिखा गया है उसी नगर के लिए) माना जाएगा और इनके घ.मि. को आप अन्य नगरों के लिए प्रयोग में नहीं ला सकते।

समस्या (i) "नाडी दोषस्तु विप्राणाम् ...." यह वाक्य नाडी दोष को ब्राह्मणों के लिए वर्जित कहता है, यहां पर "विप्र" शब्द ब्राह्मण जाति वाले वर-कन्या के लिए प्रयुक्त है, अथवा ब्राह्मण राशि वाले वर-कन्या के लिए ?

(ii) पचांगों में चैत्र शुक्ल के बाद चैत्र कृष्ण न लिखकर वैशाख कृष्ण लिखा रहता है, और चैत्र कृष्ण वर्षान्त में होता है। ऐसा क्यों ?

–श्री राजेन्द्र बड़कुलिया
कठुआ (कश्मीर)

समाधान (i) इस वाक्य को हमारे प्रामाणिक मुहूर्त ग्रन्थकारों ने स्वीकार नहीं किया है। अष्टकूटों का विवेचन एवं उनका परिहार बतलाने वाले संहिता ग्रन्थों में भी इसकी चर्चा नहीं है। अतः मिलान में इसे प्रामाणिकता प्राप्त नहीं है। वैसे–'मुहूर्त मार्त्तण्ड'कार ने इसकी चर्चा की है, उसने 'विप्र' शब्द से वर-कन्या की जाति ली है।

(ii) चान्द्रमास पक्षों के विन्यास क्रम की दृष्टि से दो प्रकार का माना गया है–(i) कृष्णादि। (ii) शुक्लादि। कृष्णादि चान्द्रमास उसे कहते हैं जहाँ पहिले कृष्ण और बाद में शुक्ल पक्ष आता है। इसे "पूर्णिमान्त मास" भी कहा जाता है। इस प्रकार के चान्द्रमास उत्तरी भारत में प्रचलित हैं। शुक्लादि चान्द्रमास उसे कहा जाता है जिसमें पहिले शुक्ल और बाद में कृष्ण पक्ष आए। इसे "अमान्त मास" भी कहते हैं। इस प्रकार के चान्द्रमासों का प्रयोग महाराष्ट्र एवं समस्त दक्षिण भारत में होता है। कृष्णादि चान्द्रमास वाले पंचांगों में पक्षों का क्रम इस प्रकार होता है– चैत्र शु. वैशा. कृ. वैशा. शु. ज्ये.कृ., ज्ये. शु. इत्यादि। शुक्लादि चान्द्रमास वाले पंचांगों में पक्षों का क्रम इस प्रकार रहता है चैत्र शु. चैत्र कृ. वैशा. शु. वैशा. कृ. ज्ये. शु. ज्ये. कृ. .... इत्यादि। इस तरह यह समझ लेना चाहिए कि कृष्णादि चान्द्र मासों वाले पचांगों में जो चैत्र शु. वैशा. शु. ज्ये. शु. आदि शुक्ल पक्ष हैं वे शुक्लादि चान्द्रमास वाले पचांगों में भी ठीक इसी प्रकार चैत्र शु. वैशा. शु. ज्ये. शु. आदि ही हैं। लेकिन कृष्णादि चान्द्रमास वाले पचांगों में जो वैशा. कृ. ज्ये. कृ. आषा. कृ. .... आदि हैं उन्हें शुक्लादि चान्द्रमासों वाले पचांगों में क्रमशः चैत्र कृ., वैशा. कृ., ज्ये. कृ. आदि लिखा जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारे उत्तर भारतीय (कृष्णादि चान्द्रमास वाले) पचांगों में जो चैत्र कृष्ण पक्ष है। वह दक्षिण भारतीय (शुक्लादि चान्द्रमास वाले) पचांगों में फाल्गुन कृष्ण पक्ष है।

शुक्लादि चान्द्रमास पद्धति के समर्थकों का मत है कि जब से चन्द्रमा की कलाएं बढ़नी प्रारम्भ होती हैं तभी से चान्द्रमास का आरम्भ मानना चाहिए। सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थों के अनुसार सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से हुआ। इसके अनुसार भी शुक्ल पक्ष ही मासारम्भ में होना चाहिए। कृष्णादि चान्द्रमास पद्धति के अनुयायियों का कहना है कि चान्द्रमास का अन्त तभी मानना चाहिए जबकि चन्द्र की सब कलाएं पूर्ण हों (अर्थात् जब पूर्णिमान्त हो)। इस पक्ष का समर्थन 'पूर्णमासी' शब्द से भी होता है, जिसका अर्थ है मासान्त तिथि (वह तिथि जहाँ मास पूर्ण हो जाता है)।

ये दोनों पक्ष प्राचीन काल से ही चले आ रहे हैं। लेकिन शास्त्रकारों ने शुक्लादि चान्द्रमासों का मुख्य और कृष्णादि चान्द्रमासों को गौण (अप्रधान) माना है (शुक्लादिः मुख्यः, कृष्णादि गौणः) अधिक मास और क्षय मास का निर्णय करने के लिए शुक्लादि चान्द्रमास पद्धति को ही आधार माना जाता है।

भले ही कृष्णादि पद्धति वाले पचांग पूर्णिमा पर मासान्त मानते हैं लेकिन वे भी अमावस्या तिथि के लिए ३० (तीस) अंक का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार अमावस्या को वे भी ३० वीं (मासान्त की) तिथि मानते हैं।

हमारे पुराणों में इन दोनों पद्धतियों का निर्देश मिलता है।

समस्या–एक पचांग में मैंने पढ़ा है कि इष्ट काल में वेलान्तर संस्कार करना चाहिए।

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
१७ मुखर्जी नगर
श्रीगंगानगर (राज.)

समाधान–इष्टकाल का अर्थ है स्थानीय सूर्योदय से बीता काल। अमुक घटना आज के सूर्योदय के जितने घड़ी-पल बाद घटी है वह घड़ी-पलात्मक काल ही उस घटना का इष्ट काल है। यह इष्ट काल तो स्वयं स्पष्ट काल है। इसमें किसी संस्कार की आवश्यकता क्या है ? वेलान्तर संस्कार स्पष्ट और मध्यम काल का अन्तर ही तो है। हमें जातक का जन्मकाल आजकल स्टैं.टा. में ही तो ज्ञात होता है। पंचांगों में सूर्योदय काल भी स्टैं. टा. में ही दिया रहता है। जन्मकाल और स्थानीय सूर्योदय काल का मध्यवर्ती घण्टा मिनटात्मक अन्तर निकालकर उसे घड़ी-पलों में बदल लीजिए। बस इतने मात्र से आपको जातक जन्म का इष्ट काल ज्ञात हो जाता है। जन्म काल और स्थानीय सूर्योदयकाल–दोनों यदि स्टैं.टा. में नहीं हैं, इनमें से कोई एक स्थानीय मध्यम काल या स्थानीय स्पष्ट काल में है, तो इष्टकाल जानने के लिए इन दोनों का अन्तर करने से पहिले यह आवश्यक है कि इन दोनों को एक जातीय बना लें (दोनों को स्टैं.टा. में, स्थानीय मध्यमकाल में या स्थानीय स्पष्ट काल में बदल लें)। अन्यथा दोनों का अन्तर करना अनुचित होगा। जब सूर्योदय और जन्म काल में से एक स्थानीय स्पष्ट काल और दूसरा स्थानीय मध्यकाल हो तब वेलान्तर संस्कार द्वारा दोनों को स्थानीय स्पष्ट काल या स्थानीय मध्यम काल बनाकर ही इन का अन्तर करके इष्ट काल बनाया जा सकता है। इन्हें एक जातीय बनाए बिना ही इनका अन्तर करके उसमें (अन्तर में) वेलान्तर संस्कार देने की बात करना गणित के विरुद्ध है, क्योंकि विजातीय राशियों का योग और अन्तर नहीं होता।

साराश यह है–आजकल जन्मकाल एव सूर्योदकाल दोनों भा.स्टैं.टा. में ही दैवज्ञ को उपलब्ध होते हैं, अतः इनसे ज्ञात इष्टकाल में वेलान्तर संस्कार की बात सोचना बुद्धिमत्ता नहीं है। जो इस प्रकार की बात सोचता है उसे इष्टकाल की भी परिभाषा नहीं आती।

समस्या (i) किसी जातक की जन्मकुण्डली में षष्ठभावस्थ मंगल यदि भावकुण्डली में सप्तमस्थ हो जाए तो क्या वह मंगलीक माना जाएगा ?

(ii) स्वराशि अथवा स्वोच्चराशि में स्थित ग्रह वक्री हो तो वह निर्बल माना जाता है–ऐसा कुछ ग्रन्थों में मैंने पढ़ा है। इसके अनुसार शत्रु राशिस्थ व मित्र राशिस्थ शुभ या अशुभ ग्रह वक्री हो तो उसका फल कैसा होगा ?

– श्री दीनानाथ शर्मा
पो. बातल (अर्की) (हि.प्र.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वेशा कृ, ज्यं कृ आदि लिखा जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमारे उत्तर भारतीय

पो. बातल (अर्जी) (हि.प्र.)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समाधान (i) ग्रह किस भाव का कितना फल देगा—इसका वास्तविक निर्णय तो भाव के मध्यबिन्दु से पहिले या आगे स्थित ग्रह के अन्तर पर निर्भर करता है। भाव मध्य बिन्दु पर स्थित होने पर ग्रह उस भाव का शत-प्रतिशत फल देता है और वह भाव मध्य बिन्दु से जितना आगे या पीछे होता है उसका फल उतना ही घटता जाता है। पूर्व एवं परवर्ती भावसन्धियों पर भावफल शून्य हो जाता है। ग्रह के भावफल की मात्रा के ज्ञान के लिए श्रीपति केशव आदि द्वारा प्रणीत जातक पद्धतियों में "भावप्रवृत्ती हि फल प्रवृत्ति ...." आदि गणित प्रक्रिया लिखी है, जिसके अनुसार ग्रह का भावफल कलाओं अथवा प्रतिशत में प्राप्त हो जाता है। "ताजिक नीलकण्ठी" आदि द्वारा निर्दिष्ट भावकुण्डली या चलित कुण्डली में निर्णीत भावफल तो काफी स्थूल होता है, क्योंकि वहां भाव को मोटे-मोटे तीन भागों (पूर्वसन्धि, भाव एवं परसन्धि) में ही विभाजित किया जाता है। अतः वह इतनी सूक्ष्मता से भावफल का निर्धारण नहीं कर सकती। इस प्रकार की चलित कुण्डली में यदि मंगल सप्तम में भी चला जाता है तो भी यह आवश्यक नहीं कि वह वहां सप्तम भाव का पूरा फल देगा, और जातक को पूरा मंगलीक बना ही देगा। सारांश यह है—चलित कुण्डली द्वारा ग्रह का भावफल पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता, इसके लिए "जातक पद्धति" निर्दिष्ट प्रकार को ही प्रामाणिक माना जाता है।

(ii) ग्रह मार्गी हो या वक्री वह स्वराशि और स्वोच्च में होने पर बलवान् ही माना जाता है सभी जातक ग्रन्थों का यही प्रतिपादन है। स्वराशि एवं स्वोच्चस्थ शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों का वक्री एवं मार्गी दोनों स्थितियों में हमारी जातक पद्धतियों में भी बलवान् ही बतलाया गया है। कतिपय वाक्य तो ऐसे भी उपलब्ध हैं, जहां वक्री ग्रह को बलवान् लिखा है। क्रूर ग्रह वक्री होने पर महाक्रूर हो जाते हैं— ऐसा वाक्य भी है— "क्रूरा वक्रा महाक्रूराः।"

जातक ग्रन्थों में जहाँ तक मैं जानता हूँ, आयुसाधन प्रक्रिया में शत्रुगृह में बैठे सभी मार्गी ग्रहों द्वारा दी जाने वाली आयु का तृतीया भाग नष्ट हो जाने का जहाँ निर्देश है, वहाँ वक्री ग्रह होने पर उस द्वारा दी जाने वाली आयु का तृतीय भाग नष्ट न होने का निर्देश भी है - "हित्वा वक्रं रिपुगृह गतैः हीयते स्वत्रिभागः" (बृहज्जातक)। इससे यह संकेत तो मिलता है कि शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह वक्री होने पर बलवान् होते हैं। लेकिन आश्चर्य यह है कि आयुसाधन की इस प्रक्रिया के अलावा अन्य किसी भी स्थल पर हमारे जातककारों एवं जातकपद्धतिकारों ने ग्रहों के षड्बलों का निर्धारण करने के प्रसंग में ग्रह की वक्रता के बल का विचार नहीं किया है।

समस्या (i) अभिजित् नक्षत्र में उत्पन्न जातक का नाम उ.षा. के चतुर्थ चरण तथा श्रवण के प्रथम चरण के वर्णों के अनुसार ही रख दिया जाता है। क्या अभिजित् के अपने वर्णों का वहां ग्रहण ठीक नहीं है?

(ii) राहु केतु का कोई आकार नहीं है। इनका जीवन पर प्रभाव किस आधार पर फलित शास्त्र में माना है? इनकी स्वराशि स्वोच्च आदि के बारे में भी एकमत्य नहीं है। ऐसा क्यों?

(iii) एक ज्योतिषी का मत है कि नव ज्ञात ग्रहों (यूरे, नेप्च्यून व प्लूटो) के दशा वर्ष क्रमशः २२, २५, २८ हैं, जिन्हें विंशोत्तरी दशा वर्षों में जोड़ कर कुल दशा वर्ष १९५ मान लेने चाहिए। उनका कहना है—ऐसा मानने पर उन्होंने फलादेश यथार्थ रूप में घटित होता पाया है। क्या आप इसे संगत मानते हैं?

— श्री हसराज 'सुमन' M.A.
मुहल्ला तबेला, मुरादाबाद

समाधान (i) अभिजित् नक्षत्र उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के बीच क्रान्तिवृत्त (राशिवृत्त) से बहुत दूर उत्तर की ओर स्थित है। इसका शर लगभग ६२ अंश (उत्तर) है। क्रान्तिवृत्त से इतनी दूरी (६२ अंश) पर स्थित तारे को यद्यपि राशि वृत्त में स्थान नहीं मिलना चाहिए था, पुनरपि इसे भारतीय ज्योतिषियों ने उत्तरी गोलार्द्ध का सर्वाधिक चमकदार तारा होने के कारण उपनक्षत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। अभिजित् (Vega) का वर्ण ०.१८ है और यह उ. ध्रुव तारे से लगभग छः गुना अधिक चमकदार है। ध्यान रहे—अभिजित् से कहीं ज्यादा चमकदार लुब्धक (Sirius) और अगस्त्य (Canopous) हैं, जिनके वर्ण क्रमशः −१.५८ और −०.८६ हैं। लुब्धक तो अभिजित् की अपेक्षा क्रान्तिवृत्त के अधिक समीप भी है। पुनरपि इन्हें नक्षत्रमण्डल में भारतीय ज्योतिषियों ने स्थान नहीं दिया। यहाँ यह सम्भव है कि उत्तरदिशा से उन्हें ज्यादा लगाव रहा है। ये दोनों तारे दक्षिण गोलार्द्ध में हैं, इन्हें शायद इसी लिए उत्तरीगोलार्द्ध में स्थित अभिजित् की भान्ति नक्षत्रमण्डल (राशिवृत्त) में स्थान नहीं दिया गया। फलित शास्त्रियों का तो यही कहना है कि अभिजित् को क्रान्तिवृत्त से सुदूर रहने पर भी 'नक्षत्र' का पद इसलिए दिया गया क्योंकि हमारे पूर्वज ज्योतिर्विदों ने मानव जीवन पर अन्य नक्षत्रों की ही तरह इसके प्रभाव का भी अध्ययन किया।

स्वर शास्त्र में अभिजित् नक्षत्र के चारों चरणों को शतपद चक्रानुसार अन्य नक्षत्रों की ही तरह क्रमशः जू, जे, जो, खा, ये वर्ण दिए हैं। इससे यह स्पष्ट है कि अभिजित् में उत्पन्न जातक के नाम का आदि अक्षर इसके चरणों के अनुसार होना चाहिए। गृह्यपरिशिष्ट का वचन है— "तदक्षरादिकं नाम धिष्ण्ये तदक्षरम्।" लेकिन अभिजित् स्वतन्त्र नक्षत्र नहीं है। यह उ.षा. के चतुर्थ चरण और श्रवण के प्रथम चरण के कुछ भाग से ही बनाया गया है। अतः साधारण दैवज्ञ यहां इस दुविधा में रहता है कि अभिजित् नक्षत्र वाले जातक के नाम का आदि अक्षर अभिजित् के चरण के अक्षर से लिया जाए अथवा उ.षा. के चतुर्थ चरण या श्रवण के प्रथम चरण के अक्षर से? इसका उत्तर स्पष्ट है कि यहाँ जातक के माता पिता या दैवज्ञ के लिए विकल्प है। अभिजित् में उत्पन्न बालक के नाम का आदि अक्षर अभिजित् के चरणाक्षर के अनुसार यदि रखना चाहें तो भी ठीक है, उ.षा. के चतुर्थ एवं श्रवण के प्रथम चरण के अनुसार भी उसके नाम का आदि अक्षर चुना जा सकता है। इस विकल्प की पुष्टि में तर्क यह है कि यदि अभिजित में उत्पन्न जातक के नाम का आदि अक्षर अभिजित् के अक्षरों (जू, जे, जो खा) से ही लेने का दृढ़ नियम हो तो उ.षा. के चतुर्थ चरण का अक्षर (जी) नाम का आदि अक्षर कभी नहीं बन सकेगा। (श्रवण के प्रथम चरण के अक्षर का प्रयोग तो फिर भी हो सकेगा। क्योंकि अभिजित् में श्रवण के प्रथम चरण का चतुर्थांश ही समाविष्ट है), यदि उ.षा. के चतुर्थ चरण और श्रवण के पहिले १५ वें भाग (अभिजित् वाले भाग) में उत्पन्न बालक के नाम का आदि अक्षर उ.षा. के चतुर्थ तथा श्रवण के प्रथम चरणों के अनुसार ही लेने का दृढ़ नियम बना दिया जाए तब अभिजित् के चरणाक्षर (जू जे जो खा) नाम के आदि अक्षर बन ही नहीं सकेंगे। अतः अभिजित् नक्षत्र वाले जातक के नाम के आदि अक्षर का चयन करने में हम स्वतन्त्र हैं, क्योंकि यहाँ एक को ही स्वीकार करने से दूसरा निरर्थक हो जाता है। अतः "व्यर्थं सत् किंचिज् ज्ञापयति" नियमानुसार यहाँ विकल्प तर्क संगत है। अपिच मीमांसा का यह नियम भी है कि जहा शास्त्र द्वारा व्यवस्था न हो वहां मनुष्य स्वेच्छया प्रवृत्त हो सकता है— "असति व्यवस्थापके शास्त्रे पुरुषेच्छया प्रसारः।"

(ii) राहु-केतु दोनों सूर्य चन्द्र के भ्रमण वृत्तों के सम्पात बिन्दु हैं जो मध्यममान से लगभग ३ क. ११ वि. की दैनिक वक्र गति से चलते हैं। ये दोनों ज्यामितीय बिन्दुमात्र हैं। इनके कोई पिण्ड नहीं है। यद्यपि भौम आदि अन्य सभी ग्रहों के भ्रमण वृत्तों के सूर्यभ्रमणवृत्त (क्रान्तिवृत्त) से उत्पन्न सम्पात बिन्दु भी गतिशील है लेकिन उन्हें राहु केतु की भान्ति ग्रहों के रूप में हमारे ज्योतिषियों ने स्वीकार नहीं किया है। इसका कारण फलितविदों ने यही बतलाया है कि हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने राहु-केतु (सूर्य चन्द्र के भ्रमणवृत्तों के सम्पात बिन्दुओं) का ही जीवन पर प्रभाव देखा, अन्य सम्पात बिन्दुओं का नहीं। द्रव्यमान रहित काल्पनिक अदृश्य सम्पात बिन्दु रूप इन 'तथाकथित' ग्रहों (राहु केतु) का जीवन पर प्रभाव कैसे सम्भव है—इसका उत्तर देना तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम सूर्य आदि के इन द्रव्यपिण्डरूप ग्रहों के जीवन पर प्रभाव का वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं कर लेते। निर्जीव ग्रह पिण्डों द्वारा मानव के मस्तिष्क, हृदय तथा जीवन की अन्य सभी प्रकार की गतिविधियों पर उस अद्भुत नियन्त्रण का जिसका निर्देश हमारे फलित ग्रन्थों में मिलता है, तार्किक विश्लेषण भी तो अभी तक हम नहीं कर पाए हैं, राहु-केतु जैसे काल्पनिक बिन्दुओं के प्रभाव का विश्लेषण तो बहुत दूर की बात है। जब हम फलित के आधारभूत इन प्रचलित सिद्धान्तों का वैज्ञानिक प्रतिपादन कर पाएंगे तब तक प्राचीन ज्ञान की इस शाखा को हम अनेक लोगों की सन्देह दृष्टि से मुक्त नहीं कर सकते। आज तक फलित शास्त्र पर हमारी आस्था का मूल आगम-प्रामाण्य है। वराह ने भी फलित ज्योतिष शास्त्र में उपलब्ध वैमत्य के निवारण के लिए तर्क या उपपत्ति को अकिंचन मानकर बहुमत को ही अपनाने का निर्देश बृहज्जातक में किया है।

अकेले राहु-केतु ही फलित में ऐसे अदृश्य काल्पनिक बिन्दु नहीं हैं जिनका हमारी फलित, ज्योतिष में फलादेश के लिए प्रयोग है। इसी तरह के आकार शून्य अनेक गणितीय बिन्दुओं को हमारे फलित में प्रयुक्त किया जा रहा है जिनका विस्तृत भाव फलादेश हमारे जातक ग्रन्थों में उपलब्ध है। इन बिम्ब रहित ग्रहों को अप्रकाश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(अदृश्य) ग्रह की संज्ञा दी गई है। वे हैं–धूम, व्यतीपात, परिवेश, इन्द्रचाप, केतु आदि। वर्षफल में प्रयुक्त होने वाली मुन्था तथा प्रश्नतन्त्र के पण्य आदि सहम भी तो इसी प्रकार के गणितागत काल्पनिक बिन्दु ही हैं। पंचाग गत विष्कम्भ आदि योग भी तो कोई बिम्ब नहीं रखते इनकी केवल गणितीय परिभाषा ही है। आकाश में राशि एवं नक्षत्रों तथा नक्षत्र चरणों (नवांशों) को विभाजित करने वाली काल्पनिक रेखाओं का भी तो हमारे फलित में महत्त्वपूर्ण स्थान है जो अपने-अपने क्षेत्र में हमारी संहिताओं द्वारा प्रतिपादित फल विशेषों को समेटे पड़ी हैं। लग्न एवं अन्य द्वितीय आदि भाव भी तो क्षितिज आदिवृत्त एवं क्रान्तिवृत्त के सम्पात बिन्दुओं की ही उपज हैं। सारांश यह है इस प्रकार के काल्पनिक निराकार तत्त्वों से हमारा फलित ज्योतिष भरा पड़ा है। जिनकी प्रभावकता का वैज्ञानिक प्रतिपादन अभी तक सम्भव नहीं हो सका है। यदि कभी यह सम्भव हुआ तो इस ज्ञान शाखा को परिपूर्ण विज्ञान के क्षेत्र में प्रविष्ट होने से कोई रोक नहीं सकेगा।

राहु केतु की स्वराशि स्वोच्चराशि आदि के बारे में अधिकतर मूल ग्रन्थ सर्वथा मौन है। जिन ग्रन्थों ने इनकी चर्चा की है इस विषय में वे लगभग सभी परस्पर भारी वैमत्य रखते हैं। जिससे दैवज्ञ लोग बुरी तरह संशयग्रस्त एवं भ्रान्त हैं। लघुपाराशरीकार इनकी कोई राशियां नहीं मानता। वराहमिहिर आदि के बृहज्जातक आदि ग्रन्थों में तो इनके फलादेश की चर्चा तक नहीं है। केशव, श्रीपति आदि जातक पद्धतियों में केवल सूर्य आदि सात ग्रहों के ही षड्बलों का साधन है। राहु-केतु के बलों का साधन किसी पद्धतिकार ने नहीं किया है। क्योंकि बल साधन के लिए ग्रहों की स्वराशि स्वोच्चराशि, मूलत्रिकोण, शत्रु मित्र आदि ग्रहों की अपेक्षा होती है और राहु केतु के ये तत्त्व अनिर्णीत हैं। स्पष्ट है जब सूर्य आदि सात ग्रहों की स्वराशि उच्च राशि आदि का निर्धारण हुआ तब राहु-केतु को ग्रहों के रूप में नहीं माना जाता था। राहु-केतु को वारों का स्वामित्व भी प्राप्त नहीं है जिससे ये कभी न तो वारेश हो सकते हैं और न ही वर्षेश। वारेश और वर्षेश हुए बिना ग्रह का षड्बल अपूर्ण रहता है। अन्य कई कारणों से राहु-केतु के षड्बल आदि का निर्णय असम्भव है, जिससे इन्हें सूर्य आदि सात ग्रहों के समकक्ष मानने में अनेक फलित शास्त्रियों ने सकोच किया है। ध्यान रहे – हमारे सूर्य सिद्धान्त आदि प्राचीन सिद्धान्त ग्रन्थों में सूर्य-चन्द्र के भ्रमण मार्गों के सम्पात बिन्दुओं को ग्रह के रूप में बिल्कुल नहीं माना है। आश्चर्य तो यह है कि इन ग्रन्थों में इन्हें राहु-केतु के नाम से भी नहीं पुकारा गया। वहां इन्हें केवल 'पात' नाम से ही चर्चित किया है। इन दोनों पातों को पहिले केवल 'राहु' संज्ञा ही दी गई। जिसे आजकल केतु कहा जाता है उसे (अर्थात "राहु + १८० अंश" को) भी हमारी प्राचीन वसिष्ठ आदि की सभी संहिताओं में राहु ही कहा गया है। इन संहिताओं में "केतु" शब्द का प्रयोग सर्वत्र धूमकेतु (Comet) के लिए ही किया गया है। सारांश यह है–राहु केतु ग्रहों के रूप में इन सम्पात बिन्दुओं की कल्पना परवर्ती चिन्तन का फल है जिससे इनकी स्वराशि स्वोच्च राशि तथा इनके मित्र शत्रु ग्रहों के निर्धारण में हमारे फलिताचार्य अभी तक अनिश्चय की स्थिति में हैं। स्व राशि स्वोच्चराशि एवं मित्र, शत्रु ग्रहों के निर्धारण की कोई तर्क युक्त विधि या उपपत्ति फलित वेत्ताओं के पास अभी तक नहीं है इसी लिए राहु-केतु की स्वराशि स्वोच्चराशि आदि के बारे में जातक ग्रन्थकारों की ऐच्छिक प्रवृत्ति पर कोई अंकुश नहीं लगाया जा सकता। किञ्च राहु केतु की स्वराशि आदि का निर्णय बहुमत आदि के आधार पर अन्तिम रूप से कर लेने पर भी हमारे अनेक प्रामाणिक फलित ग्रन्थों में निर्दिष्ट राहु-केतु के फल-कथन के मूल आधारों पर भी असह्य आघात होगा।

(iii) विंशोत्तरी दशा में तीन नवज्ञात ग्रहों (यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो) के स्वकल्पित दशा वर्ष जोड़कर उसे १९५ वर्ष की दशा बनाने वाले इस दैवज्ञ महानुभाव से यह पूछना चाहिए कि यदि उनके अनुभवानुसार १९५ वर्ष की दशा द्वारा ही दशाफल यथार्थ मिलता है तब विगत सैकड़ों वर्षों से विंशोत्तरी दशा के आधार पर लगभग सभी भारतीय दैवज्ञों द्वारा आजतक बतलाया जा रहा फलादेश क्या प्रवञ्चनामात्र था? यदि यू. ने. प्लू. के दशा वर्षों के समावेश से ही ग्रहदशाफल रामबाण की तरह अचूक मिलता है, तब स्पष्ट है इनके ७५ दशा वर्षों के समावेश के बिना इस परम्परागत विंशोत्तरी दशा का फल पदे-पदे व्यभिचरित होना चाहिए, क्योंकि विंशोत्तरी में ७५ वर्षों की तीन महादशाओं के समावेश से महादशाओं के अन्तर एवं प्रत्यन्तरदशाओं के परम्परीण क्रम में बुरी तरह उथल-पुथल अनिवार्यतः होगी। इसका परिणाम होगा दशाफलों के आधारभूत "लघुपाराशरी" आदि ग्रन्थों में प्रतिष्ठापित मारक-कारक आदि का निर्णय करने वाले सभी सिद्धान्तों का मूलतः उच्छेद हो जाएगा। उनके फलादेशक्रम में व्यत्यय आदि अनेक असाध्य समस्याएं हमारे भारतीय फलित ज्योतिष में उपस्थित होंगी। षड्बल साधन, अष्ट वर्ग निर्धारण आदि भारतीय फलित ज्योतिष की सभी प्रक्रियाएं इससे बुरी तरह प्रभावित होंगी। मुझे नहीं मालूम इन दैवज्ञ महोदय ने यू. ने. प्लू. के स्वकल्पित इन (२२, २५, २८) दशावर्षों का निर्धारण किस उपपत्ति के आधार पर किया है। यदि वे इस निर्धारण की उपपत्ति बतलाते हैं तब यह आवश्यक है कि वही उपपत्ति सर्यादि ग्रहों के विंशोत्तरी दशा वर्षों पर भी घटित होनी चाहिए। अन्यथा विभिन्न उपपत्ति वाले इन दशावर्षों का विंशोत्तरी दशा वर्षों में समावेश किसी भी दृष्टि से तर्कसंगत नहीं होगा। ध्यान रहे–विंशोत्तरी दशापद्धति में ग्रहों की दशाओं के क्रम, अवधिकाल एवं उद्गम की उपपत्ति अभी तक अज्ञात ही है।

ये दैवज्ञ महोदय जो १९५ वर्ष की दशा का समर्थन करते हैं, उनकी अपनी ही एक पुस्तक में उन्होंने विंशोत्तरी दशा को सर्वोत्तम दशा लिखा है। उस पुस्तक से इस बारे में लिखा उनका वाक्य अविकल रूप में यहां उद्धृत करता हूं–

"मेरा ऐसा विचार है कि जातक के शुभाशुभ का ज्ञान विंशोत्तरी दशा से ही करना चाहिए। अनुभव के आधार पर विंशोत्तरी दशा के फल पूर्णतः सही उतरे हैं।"

"करणों का उद्भव"

शक्तिधर शर्मा

पञ्चाग का एक अंग "करण" सम्भवतः प्राचीन वैदिक परम्परा की "तिथियों" के अनुसार अधिक महत्त्वपूर्ण था। आजकल की "तिथि परिभाषा के अनुसार यह प्रायः अर्थहीन सा हो गया है। इनके रहस्यमय नाम तथा इनके फलादेश बहुत ही अनसुलझी गुत्थी हैं। इनके विषय में बहुत से जिज्ञासुओं ने प्रश्न किये और विगत दस वर्षों से भी अधिक समय से इस विषय में चिन्तन एवं अध्ययन से जो कुछ हमें ज्ञात हुआ–यद्यपि वह अभी भी अधूरा ही है परन्तु साधारण पञ्चांग कर्ता जिज्ञासुओं के लिये चिन्तन धारा निर्धारित कर सकता है। अतः उनके हितार्थ एवं इस विषय में अन्य विद्वज्जनों के चिन्तन अध्ययन के परिणामस्वरूप प्राप्त तथ्यों को जानने के लिये यहां अब तक प्राप्त विषयवस्तु का कुछ विवेचन करते हैं, आशा है विद्वज्जन इस विषय पर अपने विचार भी लिखने का प्रयत्न करेंगे।

आजकल की परिभाषा के अनुसार तिथि सूर्य एवं चन्द्रमा के भोगांशों का अन्तर है। "तिथि" की समयावधि के रूप में परिभाषा चन्द्रमा के भोगांशों में सूर्य के भोगांशों से १२° तुल्य अन्तर होने में लगे समय पर आधारित है। इसका आधा ही करण का कालात्मक मान है, अर्थात् चन्द्रमा के भोगांशों में सूर्य के भोगांशों के सापेक्ष ६° तुल्य अन्तर अधिक होने में जितना समय लगता है वही करण का मान है। अमावास्या से अमावास्या तक एक मास में ३० तिथियां या ६० करण होंगे। अमावास्या से करणों की गिनती प्रारम्भ करने पर हमें तब तक तिथि परिभाषा से अधिक तथ्य-संकेत नहीं मिलते, जब तक करणों के नामों को साथ न लिया जाए। तिथियों के तो संख्यात्मक नाम ही हैं, परन्तु करणों के नाम कुछ गूढ़ रहस्य लिये हुए हैं। नीचे तालिका में इनके नाम दिये गए हैं। इनमें सात करण बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि चल हैं। ये पुनरावृत्ति लेते हुए एक मास में ४ चक्र पूरे करते हैं और अमावास्या के दो करण चतुष्पद एवं नाग तथा अमावास्या से पूर्व कृष्ण चतुर्दशी का द्वितीय करण (शकुनि) तथा अमावास्या के बाद की शुक्ल प्रतिपदा का प्रथमकरण (किंस्तुघ्न) ये चार करण स्थिर माने जाते हैं। इनकी चल स्थिर प्रकृति का रहस्य वैदिक परम्परा के परिशीलन से स्पष्ट होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फलादेशक्रम में व्यत्यय आदि अनेक असाध्य समस्याएं हमारे [illegible] चल स्थिर प्रकृति का रहस्य वैदिक परम्परा के परिशीलन से स्पष्ट होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करण-सारणी

तिथि संख्या	शुक्लपक्ष: दिन के करण	शुक्लपक्ष: रात के करण	कृष्णपक्ष: दिन के करण	कृष्णपक्ष: रात के करण
१	किंस्तुघ्न	१(१) बव	३०(२) बालव	३१(३) कौलव
२	२(२) बालव	३(३) कौलव	३२(४) तैतिल	३३(५) गर
३	४(४) तैतिल	५(५) गर	३४(६) वणिज	३५(७) विष्टि
४	६(६) वणिज	७(७) विष्टि (भद्रा)	३६(१) बव	३७(२) बालव
५	८(१) बव	९(२) बालवा	३८(३) कौलव	३९(४) तैतिल
६	१०(३) कौलव	११(४) तैतिल,	४०(५) गर	४१(६) वणिज
७	१२(५) गर	१३(६) वणिज	४२(७) विष्टि	४३(१) बव
८	१४(७) विष्टि	१५(१) बव	४४(२) बालव	४५(३) कौलव
९	१६(२) बालव	१७(३) कौलव	४६(४) तैतिल	४७(५) गर
१०	१८(४) तैतिल	१९(५) गर	४८(६) वणिज	४९(७) विष्टि
११	२०(६) वणिज	२१(७) विष्टि	५०(१) बव	५१(२) बालव
१२	२२(१) बव	२३(२) बालव	५२(३) कौलव	५३(४) तैतिल
१३	२४(३) कौलव	२५(४) तैतिल	५४(५) गर	५५(६) वणिज
१४	२६(५) गर	२७(६) वणिज	५६(७) विष्टि	शकुनि
	पूर्णिमा २८(७) विष्टि	२९(१) बव	(अमावस) चतुष्पद	नाग

अथर्ववेदांग ज्योतिष तथा प्राचीन जैन ग्रन्थों में करण दिन एवं रात्रि से सम्बद्ध रूप में परिभाषित किये गए हैं।

ऊपर दी गई सारणी से यह स्पष्ट है कि चल करण पुनरावृत्ति करते हुए ८ चक्र लगा देते हैं जबकि स्थिरकरण पुनरावृत्त नहीं होते। ऊपर सारणी में करणों के दो प्रकार लिखे हैं – दिन के करण एवं रात्रि के करण। यह वर्गीकरण प्राचीन वैदिक परम्परा की परिभाषा के अनुसार है। अथर्ववेदांग ज्योतिष में शुक्ल पक्ष प्रतिपदा की रात्रि के समय बव करण और शुक्ल पक्ष द्वितीया के दिन में बालव करण होता है, ऐसा लिखा है। आजकल की परिभाषा के अनुसार तो करणों का वर्गीकरण तिथियों के पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध के रूप में ही होता है। प्राचीन जैन ग्रंथ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि में तैतिल के स्थान पर "स्त्री विलोचन" तथा गर के स्थान पर "गराबि" वणिज के स्थान पर वणिज्य शब्द का प्रयोग होता रहा है। किंस्तुघ्न के स्थान पर कौस्तुभ शब्द का प्रयोग भी पाया जाता है। ऊपर सारणी में चलकरणों की पुनरावृत्ति में प्राप्त संख्या कोष्ठक (   ) में दी है और कुल संख्या (   ) से बाहर पहले लिखी है। स्थिरकरणों को नम्बर नहीं दिये।

करणों की वैदिक परम्परागत परिभाषा

जैसा ऊपर सारणी में करणों का वर्गीकरण दिनकरण तथा रात्रिकरण के रूप में किया गया है इसका क्या रहस्य है ? ऐसा जानने के लिये हमें ऐतरेय ब्राह्मण में परिभाषित तिथि पर ध्यान देना होगा। जैसे सूर्योदय से सूर्यास्त तक सौर दिन और सूर्यास्त से सूर्योदय तक रात्रि कहलाती है और सूर्योदय से अग्रिम सूर्योदय तक का समय ही सौर सावन दिन होता है उसी प्रकार यह स्वाभाविक था कि तिथि (चान्द्र दिन) की पहली परिभाषा चन्द्रोदय से चन्द्रोदय तक का समय माना जाता। इस प्रकार चन्द्रोदय से चन्द्रास्त तक का समय चान्द्र सावन दिन तथा चान्द्र सावन रात्रि मान लेना बहुत स्वाभाविक एवं अर्थ संगत था। ऐतरेय ब्राह्मण की यही तिथि परिभाषा अथर्ववेदांग ज्योतिष तथा प्राचीन जैन ग्रन्थों में पाई जाती है। प्राचीन परिभाषा के अनुसार करणों की परिभाषा बहुत संगत है। वस्तुतः आजकल की "करण" की परिभाषा कृत्रिम भी है और इतनी अर्थसंगत भी नहीं। इसी परिभाषा से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि बवादि चलकरण पुनः पुनः आवृत्त होते हैं। "कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का द्वितीय करण अमावास्या के दो तथा शुक्ल प्रतिपदा को प्रथम करण ये चारों पुनरावृत्ति में नहीं आते। किंस्तुघ्न शुक्ल प्रतिपदा के दिन में तथा अमावास्या को चतुष्पद नाग एवं कृष्ण चतुर्दशी का द्वितीय चरण तिथि ये चार स्थिर करण हुए जोकि दिन या रात्रि में ही होते हैं। जो रात्रि में होता वह दिन में नहीं आता इत्यादि। इन करणों में चन्द्र दृश्य नहीं होता।

करणों के नाम– अब यह स्पष्ट है कि पञ्चाग के पांच अंगों के विकास क्रम में करणों की वैदिक परिभाषा प्राचीन है। सौर चान्द्र दिनों में अनुनाद (Consonance) न होने से ये दिन एवं रात्रि में आते रहते हैं। इनके नामकरण से इन्हें सम्बोधित करना भी आवश्यक था अन्यथा तो यह पता नहीं चल सकता था कि यह करण विशेष अब दिन में है या रात्रि में ? करणों के नामों से यह भ्रान्ति तो दूर हो जाती है ? परन्तु इन नामों के अर्थ क्या हैं? यह स्पष्ट नहीं। श्री तिलक आदि के अनुसार ये नाम शायद विदेश से आए। हमारे प्रयत्न करने पर ज्ञात हुआ कि अरब परम्परा में बव का अर्थ गधे के शरीर के ऊपर का खोल (चर्म) होता है। परन्तु ऐसे अर्थों से कुछ भी समस्या का समाधान नहीं होता। केवल बव, कौलव, बालव तथा तैतिल शब्द अधिक रहस्यपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त भद्रा को विष्टि किस अर्थ में कहा गया ? यह स्पष्ट नहीं। भद्रा के मुख, पुच्छ आदि का वास्तविक तात्पर्य क्या है ? एवं संक्रान्ति आदि के साथ करणों का सम्बन्ध तथा संक्रान्ति वाहन आदि के विवेचन सांकेतिक रूप से किन तथ्यों के द्योतक हैं ? यह स्पष्ट नहीं। इन करणों के देवताओं के भी उल्लेख मिलते हैं – ये सम्बन्ध किस प्रकार स्थापित किये गए थे ? इत्यादि सभी अनुत्तीर्ण प्रश्न हैं।

अरब देश के विद्वान् अल्बेरूनी तथा अलकिन्दी में करणों के विषय में मतभेद–यद्यपि ऊपर लिखी समाधान रहित समस्याएं अधिक हैं परन्तु वैदिक परम्परागत परिभाषाओं से करणों की प्राचीनता तथा इनका चन्द्रोदयों चन्द्रास्तों के साथ सम्बन्ध स्पष्ट हो जाते हैं। यहां यह बता देना आवश्यक है कि अरब के विद्वान अल-बे-रूनी ने। (लगभग ११ वीं सदी A.D. से पूर्व) भारत में आकर ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया और उसे अरब तक पहुंचाया। उस समय उसे यहां से सैद्धान्तिक करण परिभाषा सूर्य चन्द्र भोगांशान्तर के रूप में मिली। अरब देशों में पहिले ही अथर्ववेदांग ज्योतिष में प्राप्त परिभाषा प्रचलित थी। अतः अल्बेरूनी भी भ्रान्त हो गए। अरब में पुरानी प्रचलित परिभाषा को अलकिन्दी का समर्थन प्राप्त था। अल्बेरूनी ने करणों के विषय में एक अलग ग्रन्थ लिखा था। इसकी अरब देशों की लाइब्रेरियों में खोज की जा रही है। अभी तक हमें यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ। अतः इन दो परिभाषाओं ने अरब विद्वानों में भ्रान्ति पैदा कर दी। अब हमारे विश्लेषण के अनुसार यह स्पष्ट है कि वेदांग ज्योतिष की एवं बाद की सैद्धान्तिक करण परिभाषा दोनों भिन्न भिन्न समयों में अरब में पहुंची। इस प्रकार कृत्रिम सैद्धान्तिक परिभाषा का वेदांग कालीन स्वाभाविक चान्द्र सावन दिन (रात्रि) के रूप में प्राप्त परिभाषा से विरोध हो गया। इस प्रकार करणों के विषय में इन भ्रान्तिओं का समाधान हो गया फिर भी बहुत से प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे। इस विषय में यदि विद्वान् अपने चिन्तन व अध्ययन का विवरण देते हुए लिखें तो शायद इन समस्याओं के समाधान भी हो जाएं।

सूचना

कुछ सज्जन जन्मपत्र, कुण्डली-मिलान एवं प्रश्न आदि के लिए पंचकूला के पते पर मुझसे पत्र-व्यवहार किंवा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क स्थापित करते हैं, उनसे विनम्र निवेदन है कि वे जन्मपत्र एवं फलादेश सम्बन्धित कार्य के लिए पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (रोपड़, पंजाब) से ही पत्र व्यवहार करें। हाँ, जन्मपत्र किंवा फलादेश सम्बन्धी विषय को छोड़कर ज्योतिष शास्त्रीय विशेष समस्या के समाधानार्थ आप मुझे लिख सकते हैं, जिसका उत्तर आगामी पञ्चांग में किंवा समयानुसार मिलेगा।

–प्रियव्रत शर्मा,
अभिजित, ५९/६, पंचकूला (हरियाणा)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।६।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८९ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२१।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या कृष्ण वस्त्र, कष्ट अधिक कमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ६५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।२६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।
सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो भाषत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होय। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोय?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूतिका—माता का दक्षिण वा उत्तर में ...

शनि से कमुल (मैला) स्थान जानना चाहिए। दोहा—लग्नगाय जो केन्द्र में तीन दिशा की द्वार। या लग्नपै दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो० तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं। सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब याम, दीपक तैल सो युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नान्तर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फला-नुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हो तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्नचन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो शुभ-ग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्कान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल। अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल ॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमान ॥ भानु तथा सौरी तनधन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वाम कर्ण वा मस्तके अथवा चिह्न दरसाहु ॥ सुहृद भाव में कदि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु का पीछे ... । मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणद।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-चूनाष्टमतनु पाप खग, बरहैं शशी जो खीन। कण्टक शुभ लगना असै, बेगि ताहि यमलीन। बसै चन्द्रा द्वादसी अष्ट भवन २ पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता सताप ॥ लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रियूघर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्वसह अज. दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।

दुःखदयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तन भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तन मुख विश्वावीस ॥ पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि कजलाय ॥

बन्धनयोगा—क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार ॥

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे।—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु केवल हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना। अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में आकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

सुखयोगा:—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह २ परे सो जानो सुख संग॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि ता पर परे सबं सुखी नर होय॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्र भवन ते रिप्फ पट बसे विलब भानु॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु। श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून। अमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुम:—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं आसू। क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्याभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहे पति को तजे तमारि॥ छठे आठवें चन्द जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो ‑ीन ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नाशै कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसैं सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसैं बुधजन कहत विचारि॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार॥ साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय॥ बुधवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग सबै जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत अन्य सदन शनि आन। सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादियोग:—शे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टपे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रघात नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुग बसे तनु जाई। लाभ धन गुरु आवे धाई॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जन विख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्र भवन में होई॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी॥ रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा.....कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताकों पति नृप शूर॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत॥

अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है।

त्रिखलजन्य फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हों तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, पड़ोसियों को एव टेवा बनाने वाले ज्योतिषी को भी भय होता है। ऊपर की प्रथम पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, साधारण शान्ति करे। पहिले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में ज्येष्ठ भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

एकनक्षत्रजनन-फलम्:—वृद्ध गर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट भी जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुहे	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	६	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना	धन ला	कुटिला	धनना.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र फलम्	मूल (१।२।३च.) श्वसुरहानि	आश्लेषा (२।३।४च.) सास नाश	ज्येष्ठा ज्येष्ठ नाश	विशाखा (४च) देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	म. क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	६	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	अतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्ग
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तद्वद् गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम् ॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अभुक्तमूलविचार:—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष बाधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखें। धनगडे दरिद्रोऽपि शान्ति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुकार्ये विशेषत ॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर क्षय	पशु हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरअमपीड़ा	कान्तिमुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुःखी	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	रोगी	शरीररोगी	गुणी	नीचस्थ	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सपत्तिमान्	सपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहृत्	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सखिता	रोगिणी
सुहृद् ४	सपीडा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	श्रीकान्तियुक्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	सरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कुलघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुयोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	व्यया	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूका	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पाचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हो तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे सग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भृगु राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो पराए ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्र.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना.	भय	श्री:	मानभंग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्र:	अन्नला:	धननाश	सुख	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मना.	सौख्य	धनलाभ	धनना.
भौम:	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुध:	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	कलह	धननाश:	सुख	शोक:	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दु:ख	धनलाभ	धनला.
शनि:	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभी:	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनला.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भय	सुखं	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है ; केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकर्क्षे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहा:
मा.१	दि. २॥	मा१॥	मा१	मा१२	मा. १	मा३०	मा १८	एकार्क्षभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते ·	अन्ते	फलसमय:
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गतव्यराशे प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणीय मणय:

सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल:	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो शष्कुलिका नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुण्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुने हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुकुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा— जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निधासश्च तत्र रात्रौ—ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो न: सुतानिव ॥ इत्यस्य जप: तनोऽनेनैव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति: ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐ वासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि:। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशुं शङ्ख मधुकैटभ-मर्दन:। प्रात: सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने पुन सन्ध्ययो ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदन:। यद्गोरज: त्रिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि. महाभयान। त्राहि त्राहि हरेर्नित्यं त्वद्रक्षाभूषित शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहवान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गौघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रांह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टाग्रहा गच्छ-न्वितः स्थानाद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	लसुन, गौशृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गौघृत
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, सायं, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णअस्त्र ठःठः चामुंडे सर्वार चण्डिकेठःठः स्वाहा ।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, वटकारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत ।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ७ पूड़ियां सायं काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	बिडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी५ दीपक ५ ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	बिडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ओं नमो भगवतेवासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन२ हुंफट्स्वाहा	गौशृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गौघृत
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुने चावल, गौ घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्दशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ अफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन ओं ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अवपुत्ता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर ।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय२ हुं२ हन २ दुष्टानां ह्रांह्रूं स्वाहा	

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान-स्पर्श निम्न-लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें। चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ॥ तदनन्तर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ... इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन व मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरतु हुं रादय२ स्फोटय २ स्वाहा। गर्ज २ से २ गृह्ण २ आमर्दय २, हिन २, हवः एवं सिद्धि कुरु ज्ञापय स्वाहा ॥ इति रक्षा मन्त्रः ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	दोषशांत्यर्थ जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्यर्थं बलि
अश्विनी	गोबनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे।
भरणी	गो-अन्नादिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मयवेति मन्त्रः	सर्प को दूध दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिर्द्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽश्वादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंस को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रौप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोते की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	९	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पूषन्तवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पुरी-पूओं की बलि दे

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	८	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) सा० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रो० उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे।

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है। रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'—वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें—ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।६।१४ आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।८।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमा
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो.	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्न-लिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग →	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

तिथिकष्टावली

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्करावलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	सूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "ॐ सुदर्शनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] प्रत्येक-ग्रह-दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधाः
सूर्य	माणिक्य	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	[illegible]	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नम	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुख्य	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	मुख्येशमन्त्रः	मुख्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करे। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इच्छानुसार खा कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर पत्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त अर्घ प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एवं अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :- सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावे।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा श्रृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दान आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार —पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है : लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के पर्दे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माल. जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधै: रोगा: नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोष: प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए ... के लिए ...

देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करें, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध्र इन औषधियों के जल एवं से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, चन्दन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपति:) ॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधि: बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दु:खादि वह्निभयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनि:। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानि: स्थान्भ्रमणं विदेश-गमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४.जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. सप्तगंध—अगर, कस्तूरी, कुंकुम कपूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदार।

[illegible] धूप—अगर, करीला, जटामासी, कपूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु [illegible] [illegible]।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेषः—
नक्षत्र या राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोग वाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्य तत्राऽदिमक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फा	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह घ, ञ की जगह दु तथा ण की जगह पू से नाम प्रारम्भ करें। ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाक्षवर्गो या मात्रा न स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभिजित का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या ॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः।
भोजा खागी मकरः गुसद कुम्भः दीथझञची मीनः ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे—मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

टिप्पणी—(१) जज्ञोर्ज्ञः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः। कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं त्रालारानस्य कुम्भराशि। (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम। गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाहः षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभाता रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०४८ विक्रमी

	वैशाख (१४ अप्रैल से १४ मई तक)	ज्येष्ठ (१५ मई से १४ जून तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	शुभयात्रा, अर्थलाभ, बन्धुसुख, अच्छे मित्रों से मेल मिलाप, कारोबार में रुकावट फिर भी आमदन अच्छी। ता० अप्रै. २०, २१, २२, ३०, मई १, १०, ११ अशुभ।	वायु विकार, वृथा व्यय, शत्रुभय, निजीजन असहयोग, बन्धुसुख, कारोबार में रुकावट, आर्थिक संकट। ता. मई १८, १९, २७, २८, जून ६, ७, १४ अशुभ।	धन लाभ निजीजनों से वैमनस्य, अच्छेजनों से मेल मिलाप, कारोबार में रुकावट शुभ में खर्च। ता. जून १५, २३, २४, २५, जुला. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति कमजोर, निजीजनों से मदद, निजीजनों से मेल, पैर में चोट, कारोबार ठीक ता० अप्रै. १४, १५, २३, २४, मई २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, वृथा व्यय, भाइयों से मदद, नई योजना, यात्रा में कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। ता. मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, स्वतंत्र कारोबार में हानि, निजीजनों से लाभ, मास मध्य में वायु विकार, नौकरी में लाभ। ता. जून १६, १७, २६, २७, जुला. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।
मिथुन	उदर विकार, आर्थिक लाभ होकर भी हाथ से निकले, स्त्रीकष्ट, रोगभय, आय से व्यय अधिक। ता० अप्रै. १६, १७, २५, २६, मई ५, ६, १४ अशुभ।	नेत्र व सिर पीड़ा, आर्थिक लाभ, निजीजनों से अनबन, सन्तान की तरफ से चिन्ता, शत्रुभय। ता० मई १५, २२, २३, जून १, २, १०, ११ अशुभ।	उदर विकार, धन लाभ होकर हाथ से निकले, भ्रातृजन सहयोग, मित्रों से मेल मिलाप, स्त्रीकष्ट, ता. जून १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जुला. ८, ९ अशुभ।
कर्क	सेहत ठीक, धन लाभ, सन्तान की तरफ से चिन्ता, शत्रु हतोत्साह, स्त्री सुख, कारोबार यथावत्। ता० अप्रै. १८, १९, २७, २८, २९, मई ७, ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। ता० मई १७, २४, २५, २६, जून ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	रक्त विकार, अर्थ हानि, निजीजनों से अनबन, सन्तति कष्ट, उत्साह बना रहे, शत्रु कमजोर। ता. जून २१, २२, जुला. १, २, १०, ११ अशुभ।
सिंह	सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृसुख, दोस्तों से अनबन, योजना में असफलता, वायु रोग भय, स्त्री पक्ष से चिन्ता। ता० अप्रै. २०, २१, २२, ३०, मई १, १०, ११ अशुभ।	उत्साह बना रहे, योजना में असफलता, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर से लाभ, मासान्त में आर्थिक तंगी। ता. मई १८, १९, २७, २८, जून ६, ७, १४ अशुभ।	सेहत मध्यम, आर्थिक सुख, योजना गड़बड़, शत्रु कमजोर, भाग्य साथ न दे, ता. जून १५, २३, २४, २५, जुला. ३, ४, १२, १२ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, यात्रा में कष्टभय, बन्धुओं से अनबन, सन्तान पक्ष शुभ, स्त्री पक्ष शुभ। ता० अप्रै० १४, १५, २३, २४, मई २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	वायु रोग, यात्रा में कष्ट, मित्रों से अनबन, शुभ समाचार, स्त्री पक्ष ठीक, कारोबार में रुकावट। ता० मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजीजनों से अनबन, रोग व शत्रुभय, सन्तान सुख, स्त्री पक्ष से लाभ। ता. जून १६, १७, २६, २७, जुला. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।
तुला	वायु रोग, खर्च बढ़े, निजीजनों का असहयोग, यात्रा में सुख, स्त्री पक्ष से चिन्ता कारोबार कमजोर। ता. अप्रै. १६, १७, २५, २६, मई ५, ६, १४ अशुभ।	शरीर कष्ट, उत्साह बना रहे, बन्धुसुख, कारोबार की तरफ से चिन्ता, व्यय अधिक। ता० मई १५, २, २३, जून १, २, १०, ११ अशुभ।	सेहत अपेक्षाकृत ठीक, निजीजन कष्ट, दोस्तों से मेल, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ ठीक। ता. जून १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जुला. ८, ९ अशुभ।
वृश्चिक	पित्त विकार, धन हानि, बन्धु सुख, योजना सफल, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। ता. अप्रै. १८, १९, २७, २८, २९, मई ७, ८, ९ अशुभ।	रोगभय, कोष में कमी, निजीजनों से उत्साह, योजना में सफलता, स्त्री पक्ष शुभ, चोट भय। ता. मई १६, १७, २४, २५, २६, जून ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	पित्त विकार, वृथा खर्च, अच्छी योजना, रोगभय, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, मासान्त में खर्च अधिक। ता. जून २१, २२, जुला. १, २, १०, ११, अशुभ।
धनु	उदर विकार, धन लाभ, बन्धु सुख, स्त्री कष्ट, आय से व्यय अधिक। ता. अप्रै. २०, २१, २२, ३०, मई १, १०, ११ अशुभ।	हानि भय, वायु विकार, आर्थिक लाभ, निजीजन सहयोग, सन्तति चिन्ता, शत्रु सिर उठायें, गुप्त शत्रु से भय। ता० मई १८, १९, २७, २८, जून ६, ७, १४ अशुभ।	शत्रु भय, वायु विकार, अर्थलाभ, मित्रों से मदद, योजना असफल स्त्रीकष्ट। ता. जून १५, २३, २४, २५, जुला. ३, ४, १२, १३ अशुभ।
मकर	क्रोध बढ़े, अर्थलाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन सहयोग, स्त्रीसुख, शत्रुक्षीण। ता. अप्रै. १४, १५, २३, २४, मई २, ३, ४, १२, १३ अशुभ।	हानि भय, सेहत ठीक, योजना में सफलता, सुख लाभ, मास मध्य में अचानक खुशी का समाचार, आय से व्यय अधिक। ता. मई २०, २१, २९, ३०, ३१, जून ८, ९, अशुभ।	आर्थिक संकट भय, निजीजनों से मदद, स्वार्थी मित्रों से सावधान, वृथा व्यय, गुप्त चिंता, स्त्री से सुख, ता. जून १६, १७, २६, २७, जुला. ५, ६, ७, १४, १५ अशुभ।
कुम्भ	आलस्य बढ़े अर्थलाभ, मित्रों से मेल, असफल योजनाएं, आय से व्यय अधिक। ता. अप्रै. १६, १७, २५, २६, मई ५, ६, १४ अशुभ।	शारीरिक कष्ट, कारोबार में हानि, कार्यान्तर से कुछ लाभ, बन्धु सुख, विद्या या योजना में असफलता, शत्रु कमजोर। ता. मई १५, २२, २३, जून १, २, १०, ११ अशुभ।	शत्रु प्रबल, सेहत कुछ ठीक, भाइयों से अनबन, नए मित्र बनें, सन्तान की तरफ से चिंता, कष्ट भय। ता. जून १८, १९, २०, २८, २९, ३०, जुला. ८, ९ अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, नई योजना, शुभ में खर्च, अच्छे लोगों से मेल, बनते काम में रुकावट, मासान्त में वृथा व्यय। ता. अप्रै. १८, १९, २७, २८, २९, मई ७, ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थहीन भय, मित्रों से अनबन, बन्धुओं से मदद, सन्तान से सुख, शत्रु कमजोर। ता० मई १६, १७, २४, २५, २६, जून ३, ४, ५, १२, १३ अशुभ।	वायु पीड़ा, हाथ तंग, भ्रातृ पक्ष शुभ, मित्रों से अनबन, नई योजना से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर, का विचार। ता. जून २१, २२, जुला. १, २, १०, ११ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०४८ विक्रमी

	श्रावण (१६ जुलाई से १६ अगस्त तक)	भाद्रपद (१७ अगस्त से १६ सित. तक)	आश्विन (१७ सित. से १६ अक्तू. तक)
मेष	सेहत गड़बड़, उत्साह बना रहे, अच्छे लोगों से मेल, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री कष्ट जुलाई ता. २०, २१, २२, ३०, ३१, अग. १, ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, अचानक धन प्राप्ति योग, निजीजनों से अनबन, जायदाद विवाद, यश वृद्धि, स्त्री सुख, कारोबार यथावत्। ता. अग. १७, १८, २७, २८, सित ४, ५, १३, १४ अशुभ।	सेहत ठीक, सम्पत्ति लाभ, निजीजन चिन्ता, सन्तान सुख, शत्रु कमजोर, मासान्त में अचानक व्यय। ता. सित २३, २४, अक्तू. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, बन्धु सुख, स्थाई सम्पत्ति विवाद, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। ता. जुला. २३, २४, अग. २, ३, १०, ११ अशुभ।	सेहत ठीक, धन हानि, सम्पत्ति लाभ, शत्रु सिर उठायें। मास मध्य में रोग भय, कारोबार में कुछ रुकावट। ता. अग. १९, २०, २१, २९, ३०, सित. ६, ७, ८, १५, १६ अशुभ।	सेहत गड़बड़, हानिभय, सम्पत्तिलाभ, योजना असफल, यात्रा में सुख, कारोबार में फेर बदल। ता. सित. १७, २५, २६, अक्तू. ४, ५, १३, १४ अशुभ।
मिथुन	नेत्र व सिर पीड़ा, अर्थ लाभ, निजीजन कष्ट, गुप्त शत्रु भय, कारोबार में लाभ। ता. जुला. १६, १७, २५, २६, २७, अग. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	गुप्त शत्रु भय, हाथ तंग रहे, निजीजन सुख, नए व्यापार की चिन्ता, नीच से अपमान भय। ता. अग. २२, २३, ३१, सित. १, ९, १० अशुभ।	गुप्त चिंता, रक्तचाप, निजीजन सुख, वृथा कलह से सावधान, गृह कलह, स्त्री कष्ट कारोबार कमजोर। ता. सित. १८, १९, २०, २७, २८, २९, अक्तू. ६, ७, १५, १६ अशुभ।
कर्क	बिगड़े काम बनें, सेहत ठीक, हाथ तंग, शत्रु कष्ट, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। ता. जुला. १८, १९, २८, २९, अग. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।	अचानक लाभ का योग, मित्रों से अनबन, उत्साह बना रहे, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। ता. अग. २४, २५, २६, सित. २, ३, ११, १२ अशुभ।	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजनों से अनबन, कारोबार से लाभ। ता. सित. २१, २२, ३०, अक्तू. १, ८, ९ अशुभ।
सिंह	नेत्र कष्ट, सेहत कुछ गड़बड़, आर्थिक लाभ होने पर भी हाथ न लगे, स्थिर सम्पत्ति लाभ, योजना असफल। ता. जुला. २०, २१, २२, ३०, ३१, अग. १, ८, ९ अशुभ।	रोग भय, निजीजन... से अनबन, सन्तान कष्ट, शत्रु प्रबल, नए कारोबार से लाभ। ता. अग. १७, १८, २७, २८, सित. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	नेत्र कष्ट, कारोबार में हानिभय, साझेदारी में विवाद, चिंता, हिम्मत बनी रहे। ता. सित. २३, २४, अक्तू. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, आर्थिक तंगी, निजीजनों से अनबन, गुप्त शत्रु से परेशानी, यश वृद्धि, शत्रु प्रबल। ता. जुला. २३, २४, अग. २, ३, १०, ११ अशुभ।	सेहत गड़बड़, धन हानि, उत्साह क्षीण, सन्तान सुख, स्त्री चिन्ता, कारोबार में हानि। ता. अग. १९, २०, २१, २९, ३०, सित. ६, ७, ८, १५, १६ अशुभ।	क्रोध बढ़े, वृथा कलह से बचें, सन्तति कष्ट, स्त्री चिंता, कार्यान्तर से लाभ। ता. सित. १७, २५, २६, अक्तू. ४, ५, १३, १४ अशुभ।
तुला	सेहत मध्यम, लाभ हो, उत्साह वृद्धि, नई योजना, स्त्री कष्ट, कार्यान्तर से लाभ मासान्त में विशेष खर्च। ता. जुला. १६, १७, २५, २६, २७, अग. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	मन चिन्तित, धन लाभ, उत्साह कमजोर, निजीजन सहयोग, कारोबार कमजोर, मासान्त में अचानक लाभ। ता. अग. २२, २३, ३१, सित. १, ९, १० अशुभ।	सेहत ठीक, गृह कलह, स्त्री कष्ट, कारोबार पूर्ववत्, खर्च विशेष, ता. सित. १८, १९, २०, २७, २८, २९, अक्तू. ६, ७, १५, १६ अशुभ।
वृश्चिक	सेहत ठीक, वृथा व्यय, सुख लाभ, स्त्री सुख, कारोबार में रुकावट, अशुभ समाचार। ता. जुला. १८, १९, २८, २९, अग. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।	सेहत कुछ ठीक, वृथा व्यय, निजीजन सहयोग, कारोबार में परिवर्तन की योजना। ता. अग. २४, २५, २६, सित. २, ३, ११, १२ अशुभ।	पित्त विकार, हानिभय, भ्रातृ सुख, मित्रों से मेल, स्त्री सुख, पैर पर चोट भय। ता. सित. २१, २२, ३०, अक्तू. १, ८, ९ अशुभ।
धनु	हानि भय, शारीरिक कष्ट, अर्थ लाभ, स्त्री पक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, कारोबार में गिरावट। ता. जुला. २०, २१, २२, २३, ३०, ३१, अग. १, ८, ९ अशुभ।	उदर विकार, धन लाभ हो, गुप्त शत्रु से हानिभय, कारोबार में कुछ ठीक मासान्त में खर्च अधिक। ता. अग. १७, १८, २७, २८, सित. ४, ५, १३, १४ अशुभ।	चिंता, विवाद से सावधान, निजीजनों से अनबन, कारोबार कमजोर। ता. सित. २३, २४, अक्तू. २, ३, १०, ११, १२ अशुभ।
मकर	सेहत ठीक, धन हानिभय, निजीजन सहयोग, स्थिर सम्पत्ति विवाद, स्त्री सुख, रोग भय, खर्च अधिक। ता. जुला. २३, २४, अग. २, ३, १०, ११, अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ होकर भी हाथ न लगे, नए मित्र बनें, सन्तान पक्ष शुभ, उत्साह बना रहे। ता. अग. १९, २०, २१, २९, ३०, सित. ६, ७, ८, ९, १५ अशुभ।	रक्त पित्त विकार, अर्थ लाभ, निजीजनों से मन मुटाव, मास मध्य में शारीरिक कष्ट, कारोबार कमजोर। ता. सित. १७, २५, २६, अक्तू. ४, ५, १३, १४ अशुभ।
कुम्भ	रक्त विकार, बन्धु कष्ट, सन्तान की तरफ से चिन्ता, अपमान भय, आय से व्यय अधिक। ता. जुला. १६, १७, २५, २६, २७, अग. ४, ५, १२, १३ अशुभ।	कारोबार कमजोर, वृथा खर्च, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री सुख, आय से व्यय अधिक। ता. अग. २२, २३, ३१, सित. १, ९, १० अशुभ।	बन्धु सुख, स्वार्थी मित्रों से सावधान, स्त्री सुख, कारोबार कुछ कमजोर, व्यय अधिक। ता. सित. १८, १९, २०, २७, २८, २९, अक्तू. ६, ७, १५, १६ अशुभ।
मीन	स्थिति अनुकूल रहे, बन्धु सुख, सम्पत्ति विवाद, योजना सफल, शत्रु कमजोर, मासान्त में खर्च अधिक। ता. जुला. १८, १९, २८, २९, अग. ६, ७, १४, १५, १६ अशुभ।	वायु रोग, धन ला... मित्रों से मेल, मन चिन्तित, कारोबार में फेर बदल। ता. अग. २४, २५, २६, सित. २, ३, ११, १२ अशुभ।	शरीर कष्ट, अर्थलाभ हो, घरेलू झंझट बढ़े, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर, खर्च अधिक। ता. सित. २१, २२, ३०, अक्तू. १, ८, ९ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०४८ विक्रमी

	कार्तिक (१७ अक्तूबर से १५ नवं. तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवंबर से १५ दिसं. तक)	पौष (१६ दिसं. से १३ जन. सन् १९९२ ई. तक)
मेष	क्रोध बढ़े, धन लाभ, वायु रोग, सन्तान सुख, स्त्री से अनबन, कारोबार की चिंता। ता. अक्तू. २०, २१, २२, २९, ३०,नवं. ७, ८ अशुभ।	सेहत ठीक, उत्साह बढ़े, सन्तान सुख, स्त्री की तरफ से चिन्ता, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। ता. नवं. १७, १८, २५, २६,दिसं. ४, ५, १४, १५ अशुभ।	सेहत गड़बड़, कर्जा बढ़े, बन्धुकष्ट, दोस्तों से सहयोग, योजना से लाभ, मासान्त में क्रोध बढ़े। ता. दिसं. २३, २४, ३१,जन. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।
वृष	सम्पत्ति लाभ, खर्च विशेष, निजीजन सहयोग, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, कर्जा बढ़े। ता. अक्तू. २३, २४, ३१,नवं १, ९, १०, ११ अशुभ।	वायु विकार, नेत्र व कर्ण, सम्पत्ति लाभ, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट। ता. नवं. १९, २०, २४, २८,दिसं. ६, ७, ८ अशुभ।	गुप्त चिंता, वृथा खर्च, यात्रा सुख, स्त्री सुख, शत्रु प्रबल, आय से खर्च अधिक। ता. दिसं. १६, १७, १८, २५, २६,जन. ३, ४, १३ अशुभ।
मिथुन	उदर विकार, भ्रातृसुख, नई योजना में हानि, गुप्त चिन्ता, आय से व्यय विशेष। ता. अक्तू. १७, २५, २६, नवं. २, ३, १२, १३ अशुभ।	उदर विकार, निजीजन से मेल, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट, साझेदारी में हानिभय। ता. नवं. २१, २२, २३, २९, ३०,दिसं. १, ९, १० अशुभ।	कष्ट भय, कारोबार में कुछ लाभ, बन्धु सुख, स्त्री पक्ष से चिंता, शिवपूजन से कल्याण। ता. दिसं. १९, २०, २७, २८,जन. ५, ६, ७ अशुभ।
कर्क	सेहत कुछ गड़बड़, धन लाभ योग, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। ता. अक्तू. १८, १९, २७, २८, नवं. ४, ५, ६, १४, १५ अशुभ।	शरीर कष्ट, हानि भय, निजीजनों से अनबन, कारोबार कुछ ठीक, खर्च अधिक। ता. नवं. १६, २३, २४, दिसं २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	वायु विकार, धन लाभ, नए मित्र बनें, नई योजना, स्त्री सहयोग, कारोबार में तरक्की। ता. दिस. २१, २२, २९, ३०,जन. ८, ९ अशुभ।
सिंह	उत्साह बना रहे, कारोबार की चिंता, निजीजनों से कुछ अनबन, शत्रु प्रबल, कारोबार में फेरबदल। ता. अक्तू. २०, २१, २२, २९, ३०,नवं. ७, ८ अशुभ।	चिन्ता, कर्जा बढ़े, घरेलू झंझट, कारोबार में फेरबदल, शिव पूजन से लाभ। ता. नवं. १७, १८, २५, २६,दिसं. ४, ५, १४, १५ अशुभ।	सेहत ठीक, भ्रातृसुख, अच्छे लोगों से मेल, यात्रा हो, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री कष्ट, खर्च अधिक। ता. दिसं २३, २४, ३१, जन. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।
कन्या	अर्थ हानि भय, वृथा विवाद से बचें, सन्तान पक्ष से चिन्ता, अपमान से बचें, कार्यान्तर का विचार। ता. अक्तू. २३, २४, ३१,नवं. १, ९, १०, ११ अशुभ।	वायु विकार, धन हानिभय, सम्पत्ति विवाद, स्त्री सुख, कारोबार में फेरबदल। ता. नव. १९, २०, २७, २८,दिसं. ६, ७, ८ अशुभ।	निजीजन सुख, लाभ हो, गुप्त शत्रु से सावधान, सन्तान सुख, स्त्री को रोग कारोबार में फेरबदल। ता. दिसं. १६, १७, १८, २५, २६,जन. ३, ४, १३ अशुभ।
तुला	शरीर कष्ट, अर्थ लाभ होकर भी हाथ न लगे, हिम्मत बढ़े, सम्पत्ति विवाद, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक। ता. अक्तू. १७, २५, २६,नवं. २, ३, १२, १३ अशुभ।	अकारण क्रोध, परिस्थितियां प्रतिकूल, कारोबार में हानि, शनि मंगल का दान से कल्याण। ता. नवं. २१, २२, २९, ३०,दिसं. १, ९, १० अशुभ।	सेहत ठीक, अर्थलाभ, निजीजन कष्ट, मित्र सहयोग, रोग भय, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार। ता. दिसं. १९, २०, २७, २८, जन, ५, ६, ७, अशुभ।
वृश्चिक	क्रोध बढ़े, हानि भय, मन अशान्त, स्त्री सुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, खर्च विशेष। ता. अक्तू. १८, १९, २७, २८, नवं. ४, ५, ६, १४, १५ अशुभ।	हानि भय, शारीरिक कष्ट, भ्रातृ सुख, मित्रों से अनबन, स्त्री कष्ट, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक। ता. नवं. १६, २३, २४,दिसं. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, निजीकाम में हानि भय, स्वार्थी मित्रों से सावधान, सन्तान में सुख, घरेलू झंझट। ता. दिसं. २१, २२, २९, ३०,जन. ८, ९ अशुभ।
धनु	वायु विकार, निजीजन सहयोग, हाथ तंग, सन्तान सुख, आय से खर्च अधिक। ता. अक्तू. २०, २१, २२, २९, ३०, नवं. ७, ८ अशुभ।	घरेलू झगड़े, वृथा खर्च, सन्तान पक्ष शुभ, गुप्त चिन्ता, कारोबार कुछ कमजोर, खर्च अधिक। ता. नवं. १७, १८, २५, २६,दिसं ४, ५, १४, १५ अशुभ।	उदर व सिर-कष्ट, अर्थ लाभ, अच्छे मित्र, लाभप्रद योजना, मन कुछ चिन्तित। खर्च अधिक। ता. दिसं. २३, २४, ३१,जन. १, २, १०, ११, १२ अशुभ।
मकर	गुप्त चिंता, धन लाभ होकर हाथ से निकले, नए मित्र बनें, शत्रु भय, कारोबार में रुकावट, कर्जा बढ़े। ता. अक्तू. २३, २४, ३१,नवं. १, ९, १०, ११ अशुभ।	सेहत ठीक , आर्थिक संकट, मित्रों से लाभ, स्त्री रोग, कारोबार में रुकावट। ता. नवं. १९, २०, २७, २८, दिसं. ६, ७, ८ अशुभ।	वायु विकार, बन्धु से लाभ, यात्रा सुख, कारोबार ठीक फिर भी आय से खर्च अधिक। ता. दिसं. १६, १७, १८, २५,जन. ३, ४, १३ अशुभ।
कुम्भ	सेहत कुछ ठीक, भ्रातृ सुख, मित्रों का सहयोग, योजना गड़बड़, हौसला बना रहे। ता. अक्तू. १७, २५, २६,नवं. २, ३, १२, १३ अशुभ।	वायु विकार, निजीजनों से सहयोग, स्वार्थी मित्रों से सावधान विद्या में असफलता। ता. नवं. २१, २२, २९, ३०,दिसं १, ९, १० अशुभ।	सेहत गड़बड़, नई योजना में हानि, मित्रों से मदद, स्त्री सुख, कारोबार ठीक फिर भी चिंता। ता. दिसं. १९, २०, २७, २८,जन. ५, ६, ७ अशुभ।
मीन	वायु विकार, धन लाभ, बन्धु सुख, स्वार्थ मित्रों से सावधान, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। ता. अक्तू. १८ १९, २७, २८,नवं. ४, ५, ६, [illegible] अशुभ।	सेहत कुछ ठीक, धन लाभ, निजीजनों से मेल, घरेलू विवाद बढ़ें, स्त्री सुख, कारोबार में रुकावट। ता. नवं. १६, २३, २४,दिसं. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	मन चिन्तित, धन लाभ, घरेलू झंझट, व्यर्थ कलह, कारोबार में रुकावट, आय से व्यय अधिक। ता. दिसं. २१, २२, २९, ३०,जन. ८, ९ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

[illegible]

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बारह राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०४८ विक्रमी

	माघ (१४ जनवरी से १२ फरवरी तक)	फाल्गुन (१३ फरवरी से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, जायदाद से सुख, लाभप्रद योजना, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट। ता. जन. १९, २०, २८, २९, फर. ७, ८ अशुभ।	चोटभय, क्रोध बढ़े, धन लाभ, गुप्त शत्रु से भय, सन्तति पक्ष शुभ, झगड़े से बचें। ता. फर. १५, १६, २४, २५, मार्च ५, ६, अशुभ।	रक्त चाप, धन लाभ, उत्साह बना रहे, बन्धु से अनबन, सन्तान सुख, कारोबार कमजोर। ता. मार्च १४, १५, २२, २३, २४, अप्रै. १, २ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, अर्थ हानि, यात्रासुख, स्त्री सुख, कारोबार में रुकावट, वृथा व्यय। ता. जन. १४, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	मन ठीक रहे, अर्थ हानि, यात्रा सुख, शत्रु प्रबल, कारोबार ठप्प, चोर से हानिभय। ता. फर. १७, १८, २६, २७, २८, मार्च ७, ८, ९ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ होकर हाथ से निकले, नए मित्र बनें, निजीजनों से अनबन, भाग्य साथ न दे। ता. मार्च १६, १७, २५, २६, अप्रै. ३ अशुभ।
मिथुन	क्रोध बढ़े, हानिभय, उत्साह बढ़े सन्तति कष्ट, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। ता. जन. १५, १६, २३, २४, फर. २, ३, ११, १२ अशुभ।	उदर विकार, निजीजनों का सहयोग, बन्धु सुख, स्त्रीकष्ट, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर। ता. फर. १९, २०, २१, २९, मार्च १, १०, ११ अशुभ।	उदर विकार, आर्थिक चिन्ता, चोटभय, कारोबार कुछ ठीक, गुप्त शत्रु से सावधान। ता. मार्च १८, १९, २७, २८, २९ अशुभ।
कर्क	वायु विकार, अर्थलाभ, नई योजना, हिम्मत बढ़े, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट। ता. जन. १७, १८, २५, २६, २७, फर. ४, ५, ६ अशुभ।	गुप्त शत्रु से सावधान, धन लाभ होकर हानिभय, गृहस्थ सुख में बाधा, भारी कष्ट। ता. फर. १३, १४, २२, २३, मार्च २, ३, ४, १२ अशुभ।	मन चिंतित, घरेलू झंझट, स्त्री से अनबन, कारोबार में कुछ लाभ, शनि, मंगल का दान करें। ता. मार्च २०, २१, ३०, ३१ अशुभ।
सिंह	मन शान्त, सम्पत्ति लाभ, सन्तति पक्ष से चिन्ता, शत्रु प्रबल, राज पक्ष से हानि, खर्च अधिक। ता. जन. १९, २०, २८, २९, फर. ७, ८, अशुभ।	सेहत ठीक, धनलाभ, योजना में गड़बड़ी, चोट भय, स्त्री को रोग, शुभ में खर्च ता. फर, १५, १६, २४, २५, मार्च ५, ६ अशुभ।	मन शान्त, स्त्री पक्ष से लाभ, अर्थ लाभ, योजना असफल, पैर पर चोटभय, शत्रु प्रबल। ता. मार्च १४, १५, २२, २३, २४ अप्रै. १, २ अशुभ।
कन्या	सेहत गड़बड़, सम्पत्ति विवाद, घरेलू झंझट, स्त्री कष्ट, कर्जा बढ़े, कारोबार कमजोर। ता. जन. १४, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	सेहत गड़बड़, सम्पत्ति लाभ, अशुभ समाचार, सन्तान कष्ट, कार्यान्तर का विचार। ता. फर. १७, १८, २६, २७, २८, मार्च ७, ८, ९, अशुभ।	वात पीड़ा, सम्पत्ति विवाद, सन्तान की तरफ से कष्ट, स्त्री चिन्ता, कार्यान्तर से लाभ। ता. मार्च १६, १७, २५, २६ अप्रै. ३ अशुभ।
तुला	मन चिंतित, निजीजनों से अनबन, यात्रा में कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार ढीला, खर्च अधिक। ता. जन. १५, १६, २३, २४, फर. २, ३, ११, १२ अशुभ।	वायु विकार, बन्धु से अनबन, यात्रा में कष्ट, सम्पत्ति विवाद, सन्तान कष्ट, स्त्री सुख। ता. फर. १९, २०, २१, २९, मार्च १, १०, ११ अशुभ।	सेहत कुछ ठीक, आर्थिक संकट, यात्रा में दुर्घटना भय, मित्रों से अनबन, स्त्री सुख। ता. मार्च १८, १९, २७, २८, २९ अशुभ।
वृश्चिक	वात पित्त विकार, वृथा विवाद, अर्थ हानि, अचानक कष्ट, स्त्री सहयोग, कारोबार ठीक। ता. जन. १७, १८, २५, २६, २७, फर, ४, ५, ६ अशुभ।	क्रोध बढ़े, घरेलू झंझट, निजीजनों से मन मुटाव, शत्रु प्रबल, स्त्री सहयोग। ता. फर. १३, १४, २२ २३, मार्च २, ३, ४, १२ अशुभ।	निजीजनों से अनबन, आर्थिक संकट, नई योजना में हानि, शत्रु प्रबल। ता. मार्च २०, २१, ३०, ३१ अशुभ।
धनु	भय, हानि, कर्जा चढ़े, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट। ता. जन. १९, २०, २८, २९, फर. ७, ८, ९ अशुभ	सेहत गड़बड़, भारी आर्थिक हानि, सन्तति पक्ष ठीक, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक। ता. फर. १५, १६, २४, २५, मार्च ५, ६ अशुभ।	नेत्र व सिर पीड़ा, कर्जा सिर चढ़े, भाई से मदद, सन्तान सुख, स्त्री कष्ट। ता. मार्च १४, १५, २२, २३, २४ अप्रै. १, २, अशुभ।
मकर	स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, राज पक्ष से भय, मन चिंतित, कारोबार ठप्प, कर्जा सिर चढ़े। ता. जन. १४, २१, २२, ३०, ३१, फर. १, ९, १० अशुभ।	शनि, मंगल इकट्ठे हैं, कष्ट अधिक, कारोबार कमजोर, वृथा खर्च, शिव पूजन व शनि-मंगल का दान करें। ता. फर. १७, १८, २६, २७, २८, मार्च ७, ८, ९ अशुभ।	दुर्घटना से बचें, राजपक्ष से भय, धन हानि, मित्रों से लाभ, शत्रु प्रबल। ता. मार्च १६, १७, २५, २६ अप्रै. ३ अशुभ।
कुम्भ	आय से व्यय अधिक, द्रव्य लाभ, यात्रा सुख, सन्तान कष्ट, स्त्रीसुख, खर्च अधिक ता. जन १५, १६, २३, २४, फर. २, ३, ११, १२ अशुभ।	शारीरिक कष्ट, बीमारी पर खर्च, बन्धु सुख, मित्रों से मेल, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री सुख। ता. फर. १९, २०, २१, २९, मार्च १, १०, ११ अशुभ।	सेहत ठीक, निजीकार्य में हानि, बन्धु सहयोग, योजना असफल, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार गड़बड़। ता. मार्च १८, १९, २७, २८, २९ अशुभ।
मीन	सेहत गड़बड़, अर्थलाभ, निजीजनों से मदद, मित्रों से अनबन, कारोबार में रुकावट, हाथ तंग रहे। ता. जन. १७, १८, २५, २६, २७, फर. ४, ५, ६ अशुभ।	अर्थ लाभ, उत्साह बढ़े, स्वार्थी मित्रों से सावधान, स्त्री से हानि, खर्च अधिक। ता. फर. १३, १४, २२, २३, मार्च २, ३, ४, १२ अशुभ।	चिन्ता बढ़े, आर्थिक लाभ होकर हानिभय, मित्र कष्ट, योजना में हानि, कर्जा बढ़े। ता. मार्च २०, २१, ३०, ३१ अशुभ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल १ का वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम्। मकरन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकं जनः कालज्ञानमहापनाः। तिथिं पर्वेण सन्तुष्टा भवन्त्विह यथार्थतः ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नानकर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजाकर स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सेंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है। (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय हो जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याऽधिपं, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं वाञ्छितम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्व सुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका–समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष प्रथम दिन का उदय है। इस दिन को १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है–एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्ष संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अट्ठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था–सत्ययुग–कार्तिकशुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्री नारायणके मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये चार अंशावतार हुए श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारणकर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्री वराह जी ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतारने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएं कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियाँ पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) बड़े न्यायपरायणतापूर्वक करने से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग–वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान के श्रीवामन श्री परशुराम और श्रीरामचन्द्र जी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समस्त पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुरामजी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्रीरामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी। एकबार अन्न का बीज बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। द्वापर-माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरीयान योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्मा के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएं दो वक्त घटपूर्ण दूध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एकबार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्ध वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने २ वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। कलियुग–भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शम्भल गांव में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायगा। गौएं दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कागज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्र निन्दित मत चर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या का विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राजव्यवस्था से धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः–पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षजिह्वाञ्च नृत्यति॥ अथ कलि महात्म्यम्–धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला धराः कपटिनः शौचं च शाठ्याञ्चितम्। राजानोऽर्थपरा न रक्षणपराः पुत्राः पितृद्वेषिणः साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितृद्वेषिणो, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः। न देवं देवत्वं कपटपटवस्तापसजना, जना मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह! कलिकाला विलसति॥ कलौ गंगातया स्थितं। पृथ्वी गंगया हीना भविष्यतितमां कलौ तदेव विप्रास्सत्यजातिं सीदन्ती नर-पुंगव॥ भगीरथं प्रतिगंगावाक्यञ्च–यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते तावदहं भूमौ पतिष्यामि [illegible]

[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पुष्कर प्रधान था।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथवर्षराजादि विचार:

संवत् २०४८ वि.

कल्पादि से गत वर्ष १९,७२९, ४९०९२ सृष्टि संवत् १९५५८८५०९२, श्री विक्रम संवत् २०४८, शक संवत् १९१३, श्रीकृष्ण जन्म संवत् ५२२७, कलिसंवत् ५०९२, श्रीजैन महावीर निर्वाण संवत् २५१६-२५१७, श्री बुद्ध संवत् २६१४-२६१५, हिजरी सन् १४१२-१४१३, फसली सन् १३९८-१३९९, ईस्वी सन् १९९१-१९९२।

वर्षारम्भ में गुरुमान से "तारण" नामक संवत्सर है, इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"क्वचिच्चिन्निविका लोका व्रजन्ति प्रतिपत्तनम्।
नृपाहवे क्षताद् रोगात् शोकाद् तारणकाह्वके।।"

अर्थात् रोग-शोक-संकट, युद्धादिभय किंवा अन्यकारण से जनता अशान्त क्षेत्र को छोड़कर शहर की तरफ या किसी शान्त क्षेत्र की तरफ पलायन करे।

किञ्च- "तारणे शक्र: स्वामी, पूर्वस्या दौर्भिक्षं, लोक सुखी, चैत्रे महर्घता, वैशाख-ज्येष्ठयो: रोगपीड़ा, आषाढ़ेऽन्न महर्घम्, श्रावणे मघाऽन्न समता, भाद्रे महार्घ्य, आश्विने रोगपीड़ा, गोधूम समता, युगन्धरी मुद्गादिकाना प्रति फटिग्रामाणकानि, धान्य सर्ववस्तु महर्घ, घृत समता, कार्तिकादि मासद्वय मध्यमं, राजपीड़िता लोका:, पौषादि मासत्रये रोगपीड़ा, क्षयकर: परस्पर विरोध:।।"

इस वर्ष का राजा (ग्रह परिषद् के प्रधान) सूर्य एवं मन्त्री सूर्य है। इस वर्ष सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) मंगल, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) चन्द्र, मेघेश (वर्षापानी के स्वामी) शनि, रसेश (गुड़ खाण्ड रसकस आदि के स्वामी) गुरु, नीरसेश (सर्वधातु एवं व्यापार आदि के स्वामी) मंगल, फलेश (फल फूल आदि के स्वामी) शनि, धनेश (धन दौलत एवं खजाने के स्वामी) मंगल, दुर्गेश (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी) शनि है।

प्रत्येक पदाधिकारी का फल इस प्रकार है–

राजा सूर्य का फल–

"सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्च मेघा:
स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीड़ा।
स्वल्पं च धान्यं फलमल्पवृक्षा:
चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम्।।

अर्थात्–वर्षा पर्याप्त न हो, चौपायों एवं जनता में रोगभय व्याप्त हो, अनाज-फलों की फसल अपेक्षाकृत, कम, चौरभय रहे, अग्निकाण्ड आदि से जन-धन हानि किंवा विशिष्ट व्यक्ति का निधन हो।

मन्त्री सूर्य का फल

"नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात्-
प्रचुर धान्य धनानि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा,
रविरमात्यपदं हि समागते।।"

अर्थात्–राजभय, शासकों में वैमनस्य, रोग विशेष किंवा चोरभय रहे, परन्तु धन-धान्य समृद्धि रहे। गुड़, रसकस, दूध आदि के भाव तेज रहे।

सस्येश-मंगल का फल–चौमासी फसलों को हानि पहुँचे, वर्षा पर्याप्त न हो, गाय, घोड़ा आदि चौपाए पशुओं में रोग फैले, जनता में भी रोग-विशेष से हानि हो।

धान्येश-चन्द्र का फल–अनाज सुलभ हों, जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हो, शासकों में परस्पर स्नेह सद्भाव रहे।

मेघेश-शनि का फल–कहीं तूफान, किंवा वायुवेग से हानि, कहीं वर्षा, कहीं खड़ी फसल को हानि, कहीं क्षेम रहे।

रसेश गुरु का फल–चन्दन, कपूर, कदमूल और सब प्रकार के रस सस्ते हों, केसर का भाव तेज रहे।

नीरसेश-मंगल का फल–मूंगा, लाल चन्दन, लाल रंग की चीजें, ताम्बा आदि, धातुओं में काफी तेजी आएगी।

फलेश-शनि का फल–फलों की फसल को हानि, पुष्प की हानि, वृक्षों का नाश हो, पर्वतीय भूभाग पर कहीं हिमपात से हानि, जनता में चोर-रोग आदि से हानि हो।

धनेश-मंगल का फल–महगाई में उत्तरोत्तर वृद्धि हो, ऋतु विपर्यय अनुभव हो, अनाजों की फसल को हानि पहुँचे, अशुभ समाचार से शोक व्याप्त हो, राजनैतिक गतिरोध बने।

दुर्गेश-शनि का फल–दंगे फिसाद किंवा युद्धभय से विश्व के किसी देश विशेष में वातावरण अशान्त रहे, नागरिकों का पलायन एक समस्या बनेगा। जनता में पारस्परिक भेदभाव बढ़े, चूहा-टिड्डी आदि से फसल को भारी हानि पहुँचे।

सूचना–यद्यपि वर्ष के इन दशाधिकारियों का साधारण फल सर्वत्र ही होता है, किन्तु विशेषकर राजा का फल कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, बाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र-विदर्भ में धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

चतुर्मेघों में द्रोण नामक मेघ का फल– "द्रोणे वर्षति सर्वदा"–वर्षा अधिक हो, सम्पूर्ण पृथ्वी पर धन-धान्य समृद्धि रहे) कहीं-कहीं बाढ़ से हानि भी हो।

नव मेघों में 'पुष्कर' नामक मेघ का फल–"पुष्करे मध्यमं तोयत्र"–वर्षा सामान्य हो।

बारह नागों में "कम्बल" नामक नाग का फल–वर्षा मध्यम, पुनरपि सर्वविध अनाज उत्तम (पर्याप्त मात्रा में) हो।

अष्ट नागों में सतक्ष नाम नाग है, उसका फल इस प्रकार लिखा है– वर्षा पर्याप्त, फल उत्तम हो।

सप्तवायु में 'अति वायु' नामक वायु का फल–झंझावात, चक्रवात एवं वायुवेग से जन-धन हानि हो।

रोहिणी का वास पर्वत पर है

फल– "रोहिणी नाम नक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टिहानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य विनाशनम्।।"

अर्थात्–वर्षा की कमी अनुभव होगी, सर्वविध अनाज किंवा चारे की कमी भी रहेगी।

संवत् का वाहन 'अश्व (घोड़ा) है' संवत्सर का वास 'कुम्भकार' के घर है।

शनि की दृष्टि–इस संवत् में शनि मकर राशि में ही रहता है, अत: शनि की दृष्टि सारा साल उत्तर की तरफ ही रहेगी।

फल– "शनैश्चर: क्रमात्पश्यन्,
तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष देशभंगाद्यै,
विग्रहो राजविड्वरै:।।"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तरी गोलार्द्ध के देशों एवं प्रान्तों में कहीं दुर्भिक्ष, कहीं विभाजन, कहीं देशों में युद्धाग्नि किंवा राजनैतिक अशान्ति से स्थिति विषम बनेगी।

इस वर्ष में 'सोमवती अमावस्याएं' हैं –आश्विन एवं माघ में। भौमवती अमावस केवल एक (द्वि. वैशाख कृष्ण में) है। शनैश्चरी अमावस दो (श्रावण कृष्ण एवं पौष कृष्ण में) हैं।

इस वर्ष वैशाख अधिमास है, इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

"स्वल्पवृष्टि र्भवेन्मेघो धन धान्य समाकुलम्।
घृतं तैलं च कार्पासं सुभिक्षं माधवद्वये।।"

अर्थात्–वर्षा कम, लेकिन धन धान्य समृद्धि रहे, घी, तेल, एवं कपास की फसल अच्छी हो।

वर्षा आदि के विश्वामान–इस वर्ष वर्षा विश्व १७, धान्य ५, तृण ११, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा ११, निद्रा ११, आलस्य ९, उद्यम ३, शान्ति ७, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ५, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रत्व ९, पाप ३, पुण्य ३, व्याधि १५, व्याधिनाश ९, आचार ५, अनाचार ७, मृत्यु १, जन्म ७, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य ५, चोरभय ५, चोरनाश ११, अग्निभय ३, अग्निशान्ति १, उद्भिज्ज ९, जरायुज ३, अण्डज ११, स्वेदज ५, टिड्डी १९, तोता १३, मूषक ५, सोना ७, ताम्बा १५, स्वचक्र ९, परचक्र ५, वृष्टि ५, वृष्टिनाश ९, संवत् विश्व ८ हैं।

इस वर्ष के चार स्तम्भ

(१) **जल स्तम्भ**–(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) का अभाव है।
(२) **वायु स्तम्भ**–(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र) ७५ प्रतिशत है।
(३) **तृणस्तम्भ**–(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) का अभाव है।
(४) **अन्न स्तम्भ**–(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ६३ प्रतिशत है।

फल–उल्लिखित चार वर्ष स्तम्भों के विचार से यह वर्ष विशेष अच्छा नहीं है। क्योंकि जल एवं तृण स्तम्भ का अभाव होने से वर्षा की कमी एवं पशुचारे की कमी रहेगी, वायुवेग (तूफान) से कहीं हानि हो एवं अनाज पर्याप्त मात्रा में हो।

आर्षमान विचार–वर्षरक्षा के लिए चार दुर्ग–

(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीय को रोहिणी नक्षत्र) का अभाव है।
(२) **द्वितीय आर्ष** (सं. २०४७ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) दस प्रतिशत है।
(३) **तृतीय आर्ष** (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) का अभाव है।
(४) **चतुर्थ आर्ष** (कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६७ प्रतिशत है।

फल–आर्षमान विचार से यह संवत् विश्व में अघटित घटनाओं वाला है। कहीं युद्ध, कहीं शासक-शासित में मतभेद कहीं सीमा अतिक्रमण, कहीं रोग व प्राकृतिक प्रकोप से हानि, सत्ताहस्तान्तरण की संभावनाएं हैं।

दोहा–

"आखै तीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणों हीन विचारो, कार्तिक पुन्यो कृत्तिका टारो।
महि मांह खलबली प्रकासै, कहै भड्डली साख विनासै।"

नववर्ष प्रवेश–गत संवत् २०४७ में चैत्र कृष्ण आमावस दिन शनिवार को १७ घडी ४३ पल (तदनुसार १६ मार्च १९९१ ई. को १३ घंटा ४१ मिनट) पर पू.भा. नक्षत्र के समय कर्क लग्न में श्री विक्रमी संवत् २०४८ का शुभारम्भ होगा।

फल–कर्क लग्न में नए वर्ष का उदय हुआ है। "कर्के सुख तु पूर्वस्यां मुलरस्यां तु विग्रहः। स्याच्चाग्रन बल यावद् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि।।" पूर्वीय-देशों एवं प्रान्तों में सुख-समृद्धि रहे, उत्तरी गोलार्द्ध के देशों में अराजकता-क्रान्ति सत्तापलट आदि घटनाएं घटित होंगी। पश्चिम में कहीं दुर्भिक्ष किंवा प्राकृतिक-प्रकोप से हानि हो।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

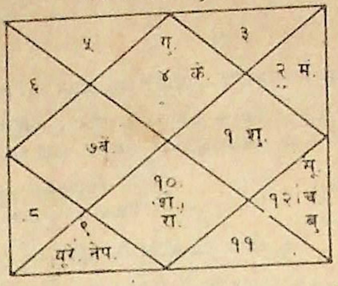

नव वर्ष कुण्डली के अनुसार वैशाख, आश्विन एवं कार्तिक मास घटनापूर्ण रहेंगे। कहीं अग्निकाण्ड से हानि, कहीं प्रधान नेता को कष्ट किंवा वरिष्ठ व्यक्ति का निधन हो। फाल्गुन में प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। मकर प्रभावराशि वाले देशों के लिए यह वर्ष कुछ कठिन परिस्थितियों वाला रहेगा।

वर्षेश (जगत् लग्न)–सं. २०४८ वि. में प्र. वैशा. कृष्ण अमावस रविवार (१४ अप्रैल सन् १९९१ ई.) को १० घडी ५ पल (१० घण्टा ३ मि.) पर रेवती नक्षत्र के समय मिथुन लग्न में सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल–लग्नस्थ केतु- मंगल पर यूरेनस-नेपचून एवं राहु की दृष्टि है; अतः कहीं बाढ़, तूफान किंवा अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। कार्तिक-मार्गशीर्ष अधिक नेष्ट घटनापूर्ण होंगे। अग्निकाण्ड किंवा दुर्घटनाएं अधिक हों। गुरु की धनु पर दृष्टि होने से बडे देशों की मध्यस्थता से कुछ देशों के विवाद शान्त होंगे।

वर्षेश लग्न कुण्डली

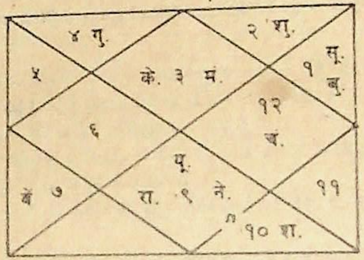

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार–जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्म राशि से जगत्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से वर्षेश लग्न (जगत्-लग्न) आठवें, बारहवें हों तो यह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए ग्राम या नगर की जो राशि हो उसके

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फल—कर्क लग्न में नए वर्ष का उदय हुआ है।

जन्म लग्न से जगत् लग्न फल—१. देह सुख, २. धन लाभ, ३. कुटुम्ब वृद्धि, ४. मित्र सौख्य, ५. पुत्र सौख्य, ६. शत्रु जय, ७. स्त्री सुख, ८. रोग भय, ९. धर्म लाभ, १०. धन लाभ, ११. लाभ सुख, १२. व्यर्थ दुःख।

आर्द्रा प्रवेश—ज्येष्ठ शु. ११ शनिवार (तदनुसार २२ जून १९९१ ई.) को ११ घड़ी १७ पल (१३ घंटा ६ मि.) पर स्वाती नक्षत्र एवं शिवयोग के समय चन्द्रमा के तुला में रहते कन्या लग्न में सूर्यदेव आर्द्रा में प्रविष्ट होंगे।

आर्द्रा प्रवेश कुं.

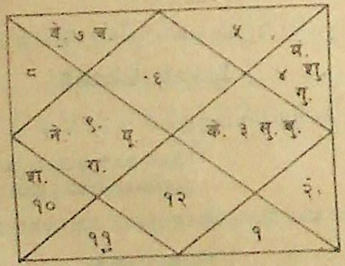

फल—सूर्य शनिवार को आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में शनि—पर म. गु. शु. की नजर है, अतः श्रावण-भाद्रपद में विशेष कष्टप्रद घटनाएँ घटेंगी। कहीं युद्धमय वातावरण से अशान्ति रहे, कहीं दुर्घटना में जनधन हानि किंवा विशिष्ट व्यक्ति का निधन होगा। दिन में सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश वर्षा में कमी का द्योतक है।

"दिवार्द्रा याति चेत्सूर्यो जल-नाशस्य कारकः"।।

ग्रहस्थिति के अनुसार— दक्षिण-उत्तर दिशास्थ देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि किंवा राजनैतिक विशिष्ट घटनाएँ घटित होंगी।

सस्य आतंक

(१) शरत्सस्य विचार—

लग्नेश-शुक्र, केतु-मंगल के साथ हैं, शुक्र मंगल केतु पर राहु यूरेनस नेपच्यून की दृष्टि होने से इस वर्ष में खरीफ की फसल से किसान उत्तम लाभ न प्राप्त कर सकेंगे। मूंग-मोठ बाजरा के बाजार तेज रहेंगे। पश्चिमी प्रान्तों में शरद् ऋतु के धान्य सन्तोषजनक न होंगे। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। सप्तमेश मंगल क्रूर ग्रह कष्ट होने से राजनैतिक संकट उत्पन्न हो।

शरत्सस्य कुं.

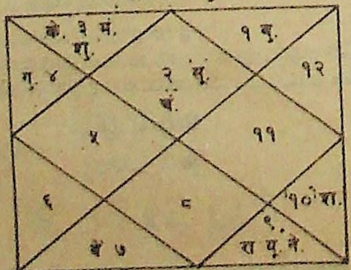

ग्रीष्म सस्य आतंक विचार—ग्रीष्मकालीन धान्य कुण्डली के अनुसार लग्नेश छठे क्षीण है, सप्तम भाव में रा. यू. ने क्रूर ग्रह हैं, अतः चावल, चना, गेहूं की फसल अच्छी होने पर भी महगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी।

ग्रीष्म सस्य कुं.

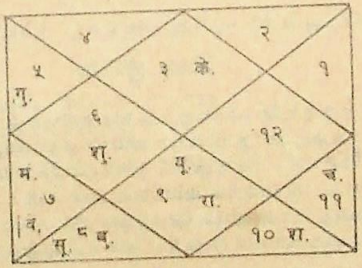

प्रशासन की नीति से भी ग्रीष्मकालीन अनाजों पर प्रभाव पड़ेगा। महगाई से जनता परेशान होगी। जनता में असन्तोष बढ़े।

गुर्रा— वि. सं. २०४७ में श्रावण शु. तृतीया मंगलवार (२४ जुलाई १९९० ई.) से हिजरी सन् १४११ प्रारम्भ होकर सं. २०४८ वि. में आषाढ़ शु. २ शनिवार १३ जुलाई १९९१ ई.) को समाप्त होगा।

वि सं. २०४८ में आषाढ़ शुक्ल ३ रविवार (१४ जुलाई १९९१ ई.) को हिजरी सन् १४१२ प्रारम्भ होगा।

मंगलवारी गुर्रे का फल—दुर्भिक्ष, धान्य कम, तूफान से हानि, महगाई बढ़े, गुड़ तिल गेहूँ महंगे। अग्निकाण्ड व प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

रविवारी गुर्रे का फल—वर्षा पर्याप्त अनाज, फल सस्ते, शासक सुव्यवस्थित कार्य करें, चौपाए पशु स्वस्थ्य, दूध, घी पर्याप्त हो।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

आय-व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से एक घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचे तो वर्ष में उत्तमलाभ ३, ४, ५, ० बचे तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था
(सं २०४८ वि.)

प्रियव्रत शर्मा

गौरी तृतीया :

चैत्र शुक्ल तृतीया गौरी तृतीया कहलाती है। यह (तृतीया) यदि दूसरे दिन एक मुहूर्त भी हो तो भी दूसरे दिन ही गौरी तृतीया मनाई जाती है। ब्रह्म वैवर्त पुराण का वचन है कि गौरी तृतीया चतुर्थी युता ही लेनी चाहिए, जबकि रम्भा व्रत के लिए इसे द्वितीया युता लेने का नियम है–

रम्भाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तम।
अन्येषु सर्वकार्येषु गणविद्धा प्रशस्यते।।

धर्मसिन्धुकार ने इस बारे में इस प्रकार लिखा है–

"अत्र (चैत्र शुक्ल) तृतीया मुहूर्तयुताऽपि परैव ग्राह्या। द्वितीया युता न कार्या।"

इस वर्ष (सन् १९९१ में) १९ मार्च को चैत्र शुक्ल तृतीया एक मुहूर्त से कहीं अधिक है। अतः इसी दिन गौरी तृतीया (गण गौरी उत्सव) मनाना होगा।

कूर्म जयन्ती :

सायं व्यापिनी वैशाख पूर्णिमा के दिन यह जयन्ती मनाई जाती है। इस वर्ष यह पूर्णिमा २७ और २८ मई ९१ को दोनों दिन सायं व्यापिनी है। अतः युग्म वाक्यानुसार यह पर्व परविद्धा पूर्णिमा के दिन २८ मई को ही मनाना होगा। धर्मसिन्धु का वाक्य है–

पूर्णिमामावस्ये तु सावित्रीव्रतं विनापरेग्राह्ये।

कुमार षष्ठी :

आषाढ कृष्ण षष्ठी जिस दिन पूर्व (पंचमी) विद्धा हो उसी दिन कुमार षष्ठी मनाई जाती है। वसिष्ठ का वचन है–

कृष्णाष्टमी स्कन्द षष्ठी शिवरात्रिश्चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताः कार्याः तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।

इसके अनुसार कुमार षष्ठी १६ जुलाई ९१ को पञ्चमी विद्धा षष्ठी के दिन ही लिखी गई है।

विवस्वत् सप्तमी :

षष्ठीयुता आषाढ शुक्ल सप्तमी के दिन विवस्वत् सप्तमी मनाने का नियम है। ब्रह्मपुराण का यह वाक्य देखिए–

षष्ठी च सप्तमी तात अन्योन्यं तु समाश्रिते।
पूर्वविद्धा द्विजश्रेष्ठ कर्त्तव्या सप्तमी तिथिः।।

इसके अनुसार यह पर्व षष्ठीयुता सप्तमी के दिन १७ जुलाई ९१ को ही लिखा गया है।

ऋग्वेद उपाकर्म :

को मुख्यता दी गई है। यह उपाकर्म पूर्वाह्ण में किया जाता है। इस वर्ष श्रवण नक्षत्र २३ और २४ अगस्त ९१ को दोनों दिन पूर्वाह्ण में उपलब्ध है। ऐसी स्थिति में शास्त्रानुसार २४ अगस्त को ही ऋग्वेदियों द्वारा उपाकर्म किया जाएगा, क्योंकि उ.षा. युक्त श्रवण को उपाकर्म में वर्जित किया गया है। धर्मसिन्धु में लिखा है –

यदि पूर्वदिने श्रवण नक्षत्रं सूर्योदये नास्ति, परदिने मुहूर्तद्वयं वर्तते, तदा उत्तर दिन एव, उ.षा. वेधनिषेधात्।

यहा २४ अगस्त ९१ को श्रवण दो मुहूर्त तक व्याप्त भी है, अतः इसी दिन ऋग्वेदियों का उपाकर्म होगा। यहाँ श्रवण धनिष्ठायुक्त भी है, जिसे धर्मशास्त्रकारों ने उपाकर्म के लिए प्रशस्त माना है।

दूर्वाष्टमी व्रत :

सामान्यतः भाद्रशुक्ल अष्टमी के दिन स्त्रियां यह व्रत करती हैं। अगस्त्य तारा उदित हो जाने पर तथा कन्यार्क में यह व्रत ठीक नहीं माना जाता। यदि भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन अगस्त्य दृश्य (उदित) हो तो भाद्र कृष्ण अष्टमी में ही इसे मनाने का विधान है। हेमाद्रि का वाक्य है–

भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनि सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।

इस वर्ष पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर व दिल्ली आदि प्रदेशों में अगस्त्य भाद्र शुक्ल अष्टमी से पहिले ही उदय हो जाएगा। अतः इन प्रदेशों में यह व्रत इस वर्ष भाद्र कृष्ण अष्टमी के दिन १ सित. ९१ को ही किया जाएगा जब कि वहाँ अगस्त्य अस्त रहेगा। किंच इस दिन सूर्य भी सिंह में होगा, जो कि इस व्रत के लिए शुभ लिखा गया है (**सिंहस्थे सोत्तमा सूर्येऽनु दिते मुनिसत्तम।**)

ध्यान रहे १ सित. ९१ को अष्टमी रौहिण मुहूर्त में विद्यमान रहेगी २ सित. को नहीं। दूर्वापूजन रौहिण व्यापिनी अष्टमी में ही किया जाता है। पुराण समुच्चय में लिखा है।

मुहूर्ते रौहिणेऽष्टम्यां पूर्वा वा यदि वा परा।

दिनमान के १५वें भाग को एक मुहूर्त्त माना गया है। दिन का नवम मुहूर्त रौहिण कहलाता है। १ और २ सित. ९१ को चण्डीगढ़ में रौहिण मुहूर्त भा.स्टैं.टा. के अनुसार दिन के १२ घं. ९ मि. से १ घं. ४० मि. तक रहेगा। इससे स्पष्ट है कि भाद्रकृष्ण अष्टमी इस वर्ष १ सित. को ही रौहिण मुहूर्त को व्याप्त करती है, जब कि २ सित. को वह इससे लगभग २ घण्टा पहिले ही समाप्त हो जाती है।

आश्विन कृष्ण में नवमी से त्रयोदशी तक के श्राद्ध :

इस वर्ष आश्विन कृष्ण दशमी तिथि २ अक्तू. ९१ को ही अपराह्ण व्यापिनी है। ३ अक्तू. को तो वह अपराह्न प्रारम्भ होने से पहिले ही समाप्त हो जाती है। अतः दशमी का श्राद्ध २ अक्तू. को ही होगा। नवमी का श्राद्ध भी दशमी के श्राद्ध के साथ २ अक्तू. को ही किया जाएगा, क्योंकि नवमी तिथि भी केवल इसी दिन अपराह्ण व्यापिनी है। इसी प्रकार एकादशी से त्रयोदशी तक के श्राद्ध भी क्रमशः ३ से ५ अक्तू. को किए जाएंगे क्योंकि ये तिथियां क्रमशः केवल इन्हीं तारीखों को ही अपराह्ण में विद्यमान हैं। इन दिनों जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा व दिल्ली आदि प्रान्तों में अपराह्ण काल दिन के लगभग डेढ़ बजे से साढ़े तीन बजे तक रहेगा।

भरणी श्राद्ध :

आश्विन कृष्ण में भरणी नक्षत्र का भी मघा नक्षत्र की भान्ति श्राद्ध के लिए महत्त्व शास्त्रों में लिखा है। 'मत्स्यपुराण' का वचन है –

भरणी पितृपक्षे तु महती परिकीर्तिता।
तस्यां श्राद्धं कृतं येन स गया श्राद्धकृत् भवेत्।।

(प्रदोष) के समय जब तारे आकाश में दिखाई देना प्रारम्भ हो जाए तब ... भृगु का कथन है–

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करने का माहात्म्य है।

यह श्राद्ध मघाश्राद्ध की भांति पिण्ड रहित किया जाता है।

सरस्वती आवाहन :

आश्विन शुक्ल में मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में सरस्वती आवाहन विधान है। सूर्यास्त से कम से कम तीन मुहूर्त पहिले यदि मूल नक्षत्र प्रारम्भ हो तब भी उसी दिन सायंकाल (दिनमान के अन्तिम पंचमांश) में सरस्वती का आवाहन करने के लिए शास्त्राज्ञा है। यदि सूर्यास्त से पूर्व मूल नक्षत्र तीन मुहूर्त से कम हो (अर्थात् मूल नक्षत्र सायं काल को पर्याप्त व्याप्त न करे) तब सरस्वती आवाहन दूसरे दिन ही किया जाता है। धर्मसिन्धु में यही लिखा है–

तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त व्यापिनि सरस्वत्यावाहनम्। त्रिमुहूर्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपाद सत्वे तस्य विभाग वचन विना प्राधान्याभावात् द्वितीयादिपादे पर दिन एवावाहनम्।

इस वर्ष १३ अक्तू. को मूल नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त से भी अधिक काल को व्याप्त करता है अतः इसी दिन सायं काल में सरस्वती आवाहन होगा।

महानवमी :

महानवमी दो प्रकार की है – (i) पूजा एवं उपवास वाली, (ii) बलिदान वाली। पूजा और उपवास के लिए अष्टमी विद्धा और बलिदान के लिए पर (दशमी) विद्धा नवमी लेने का विधान है। अष्टमी विद्धा नवमी के लिए आवश्यक है कि वह नवमी अष्टमी तिथि वाले दिन सूर्यास्त से पहिले कम से कम तीन मुहूर्त तक अवश्य विद्यमान हो। अन्यथा पूजा, उपवास के लिए भी महानवमी दूसरे दिन ही मानी जाएगी। यदि नवमी की वृद्धि हो और वह दूसरे दिन सूर्योदय के अनन्तर भी इष्ट काल को व्याप्त कर रही हो। (अर्थात् वह साह्वाधिका हो) तो बलिदान के लिए भी पहिले ही दिन पूजा नवमी में ही महानवमी मनाने का शास्त्र निर्देश है। धर्म सिन्धु में यही स्पष्ट लिखा है–

महानवमी तु बलिदान व्यतिरिक्त विषये पूजा पोषणादौ अष्टमी विद्धा ग्राह्या। सा च यदि अष्टमीदिने सायं त्रिमुहूर्ता स्यात्तदैव ग्राह्या। त्रिमुहूर्तन्यूनत्वे परैव ग्राह्या। नवमी प्रयुक्त महाबलिदाने तु दशमी विद्धा। यदा सह्वाधिका नवमी तदा बलिदानमपि पूर्वस्यात् पूर्वैव कार्यम्।

इस वर्ष अष्टमी तिथि १३ अक्तू. ९१ को दोपहर के १२ घ. २० मि. तक है। इस तरह यहां नवमी अष्टमी विद्धा है। अतः पूजा और उपवास के लिए महानवमी १३ अक्तू. को ही होगी। किन्तु १७ अक्तू. ९१ को नवमी दशमी से विद्धा है। अतः बलिदान के लिए महानवमी १७ अक्तू. को होगी।

विजयादशमी :

आश्विन शुक्ल दशमी को विजयादशमी पर्व मनाया जाता है। इस पर्व में प्रस्थान, अपराजिता पूजन और सीमोल्लंघन इन दो अनुष्ठानों का विधान है। अपराजिता पूजन अपराह्ण व्यापिनी दशमी में करने का नियम है। इस बारे में पुराण समुच्चय का वाक्य है–

दशम्यां च नरैः सम्यक्पूजनीयापराजिता।
ऐशानीं दिशमाश्रित्य अपराह्णे प्रयत्नतः।।

सीमोल्लंघन के बारे में कश्यप का वचन है कि श्रवण नक्षत्र युक्त दशमी में सीमोल्लंघन करना चाहिए, क्योंकि श्रीराम ने श्रवणयुता दशमी में ही लंका पर विजय के लिए प्रस्थान किया था–

श्रवणर्क्षे तु पूर्णायां काकुत्स्थः प्रस्थितो यतः।
उल्लंघयेयुः सीमानं तद्दिनर्क्षे ततो नराः।।

यह सीमोल्लंघन सायं या विजयमुहूर्त (प्रदोष) के समय जब तारे आकाश में दिखाई देना प्रारम्भ हो जाएं तब करना चाहिए ऐसा शास्त्रों में निर्देश है। भृगु का कथन है–

आश्विनस्य सितेपक्षे दशम्यां सर्वराशिषु।
सायंकाले शुभा यात्रा दिवा वा विजयक्षणे।।

विजयक्षण (विजयमुहूर्त) प्रदोष का ही प्रारम्भ काल माना गया है, जबकि आकाश में तारे चमकना प्रारम्भ करते हैं –

ईषत्सन्ध्यामतिक्रान्तः किञ्चिदुद्भिन्न तारकः।
विजयो नाम कालोऽयं सर्वकार्यार्थ साधकः।।

निबन्धकारों ने इसे प्रदोषकाल ही माना है। तदनुसार उन्होंने सीमोल्लंघन या विजय यात्रा के लिए प्रदोष काल को ग्राह्य माना है।

इस प्रकार विजयादशमी के लिए धर्मशास्त्रकारों ने अपराह्ण व्यापिनी, प्रदोष व्यापिनी एवं श्रवण नक्षत्रयुता दशमी को निर्णायक माना है।

इस वर्ष (सं. २०४८ वि. में) आश्विन शुक्ल दशमी दो दिन (१७ और १८ अक्तू. ९१ को) अपराह्ण व्यापिनी है। अतः इस स्थिति में हमें यह निर्णय करना है कि यहां किस दिन विजयादशमी मानी जाए।

जब दोनों दिन दशमी अपराह्णव्यापिनी हो तब हमारे पास विजयादशमी का निर्णय करने के लिए निम्नलिखित तीन निर्णायक (उपाय) हैं–

(१) युग्म वाक्य
(२) श्रवण नक्षत्र का योग   (३) सीमोल्लंघन (प्रदोष) के समय दशमी की व्याप्ति।

युग्मवाक्य : जब तिथि कर्मकाल को दोनों दिन व्याप्त करती हो या न करती हो तब युग्म वाक्य के अनुसार पर्व का निर्णय करने का विधान है। युग्म वाक्यों से यह निर्णय किया जाता है कि अमुक तिथि को पूर्वविद्धा स्वीकार किया जाए या परविद्धा। दशमी तिथि के बारे में युग्मवाक्य कहते हैं कि इसे पूर्वविद्धा (नवमीयुता) ही स्वीकार किया जाए। सौर पुराण एवं नारद का वाक्य है कि दशमी को कभी भी एकादशी विद्धा नहीं लेना चाहिए।

नागविद्धा तु या षष्ठी शिवविद्धा तु सप्तमी।
दशम्येकादशी विद्धा नोपोष्या स्यात्कथंचन।।

ब्रह्मवैवर्त का भी यही कहना है–

नवमी दशमी चैव नोपोष्या पर संयुता। पुराण समुच्चय में तो स्पष्ट कहा है कि अपराजिता पूजन नवमी विद्धा दशमी में ही करना चाहिए –

या पूर्णा नवमीयुक्ता तस्यां पूज्यापराजिता।

इस प्रकार युग्म वाक्यानुसार विजयादशमी इस वर्ष १७ अक्तू. ९१ को ही होनी चाहिए क्योंकि इस दिन दशमी नवमी विद्धा है। १८ अक्तू. को वह एकादशी विद्धा होने से त्याज्य है।

श्रवण नक्षत्र योग : सीमोल्लंघन के लिए श्रवण युता दशमी का शास्त्रों में निर्देश है, १७ अक्तू. ९१ को ही दशमी का श्रवण नक्षत्र से योग है। इस दृष्टि से भी १७ अक्तू. को ही विजयादशमी सिद्ध होती है। १८ अक्तू. को तो श्रवण का दशमी से यत्किञ्चित भी स्पर्श नहीं है। केवल सीमोल्लंघन के लिए ही नहीं अपितु अपराजिता पूजन के लिए भी श्रवण को ग्राह्य लिखा है–

मूलेनावाहनं देव्याः पूर्वाषाढासु पूजनम्।
उत्तरासु बलिः दद्यात् श्रवणे चापराजिता।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रदोष काल में दशमी : सीमोल्लंघन या यात्रा का काल शास्त्रों में वह बतलाया है जबकि तारे आकाश में कुछ-कुछ चमकने लगें। यह लगभग प्रदोष काल ही माना गया है। १७ अक्तू. को ही दशमी प्रदोष काल में पूरी तरह विद्यमान है। १८ अक्तू. को तो दशमी सूर्यास्त से कहीं पहिले ही समाप्त हो जाती है।

यदि भृगु के पूर्वोक्त वचन ("सायंकाले शुभा यात्रा ...") के अनुसार यात्रा के लिए सायंकाल का भी कोई वाक्य मानें तब भी १७ अक्तू. को विजयादशमी सिद्ध होती है, क्योंकि इस दिन दशमी सायंकाल में भी विद्यमान है।

उपरोक्त इन तीनों निर्णायक तत्त्वों के आधार पर भी विजयादशमी का पर्व १७ अक्तू. '९१ का ही पूरी तरह निर्विवाद सिद्ध होता है।

एक यह निम्नांकित वाक्य मिलता है जिसके आधार पर नवमी विद्धा दशमी को कुछ लोग विजयादशमी के लिए वर्जित कह सकते हैं–

इषस्य दशमीं शुक्लां पूर्वविद्धां न कारयेत्।
श्रवणेनापि संयुक्तां राज्ञां पट्टाभिषेचने।
सूर्योदये यदा राजन् दृश्यते दशमी तिथिः
आश्विनेमासि शुक्ला तु विजयां तां विदुर्बुधाः।

यह वाक्य यह कहता है कि सूर्योदय के समय आश्विन शुक्ल दशमी तिथि हो तो उसे 'विजया' कहा जाता है।

यह पूर्वोक्त वाक्य विजयादशमी के निर्णायक अन्य पौराणिक वाक्यों के प्रतिकूल है अतः इसे 'जयसिंह कल्पद्रुम' आदि निबन्धकारों ने 'विजयादशमी परक (विजयादशमी पर्व से सम्बद्ध) नहीं माना है। उनका कहना है कि यह वाक्य राजाओं के अभिषेक (सिंहासनारोहण) से सम्बन्ध रखता है क्योंकि यहां यह स्पष्ट लिखा भी है "**राज्ञां पट्टाभिषेचने**"। उन निबन्धकारों का कहना है कि यदि इस वाक्य को बलात् विजयादशमी का निर्णायक मान लिया जाए तब पुराणों के इन वाक्यों से इसका स्पष्ट विरोध उपस्थित होता है, जिनमें विजयादशमी (अपराजिता पूजा) के लिए नवमीविद्धा दशमी के ग्रहण का स्पष्ट निर्देश है–

या पूर्णा नवमी युक्ता तस्यां पूज्या पराजिता।
क्षेमार्थं विजयार्थं च प्रसिद्ध विधिना नरैः।।
नवमी शेष संयुक्त दशम्यामपराजिता।
ददाति विजयं देवी पूजिता जयवर्धिनी।।
आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेन्नरः।
एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्।। (पुराण समुच्चय)

... यह वाक्य केवल उदय व्यापिनी दशमी को विजया बतला रहा है, जबकि ... का यह वचन (उदये दशमी किंचित्सम्पूर्णैकादशी यदि। श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथि विजयाभिधा।।) ... है कि उदयव्यापिनी दशमी तभी विजया होगी जबकि अपराह्ण काल या विजयमुहूर्त के समय श्रवण नक्षत्र विद्यमान हो। इस प्रकार इस विरोध के परिहार के लिए निबन्धकारों ने इस वाक्य को 'राजाभिषेक' से सम्बद्ध बतलाया है। विजयादशमी से इसका सम्बन्ध उन्होंने स्वीकार नहीं किया है। धर्मसिन्धुकार का भी वाक्य है।

"राज्ञां पट्टाभिषेके नवमीविद्धा दशमी श्रवणयुताऽपि न ग्राह्या, किन्तु औदयिकी एव ग्राह्या।"

इस प्रकार स्पष्ट है – नवमी विद्धा श्रवणयुक्त दशमी को भी अग्राह्य और केवल सूर्योदय व्यापिनी दशमी को ग्राह्य बतलाने वाला यह वाक्य विजया दशमी के लिए नहीं, अपितु राजाभिषेक के लिए ही है।

दिन दशमी की अपराह्ण व्याप्ति होने पर सभी धर्मशास्त्रियों ने श्रवण नक्षत्रयुता दशमी वाले दिन ही विजयादशमी मनाने का एक स्वर से निर्णय दिया है। 'धर्मसिन्धुकार कहते हैं–

दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्यव्याप्त्योः एकतर दिने श्रवण योगे, यद्दिने श्रवण योगः सैव ग्राह्या।

मीमांसक नारायण भट्ट ने 'तिथिनिर्णय' में स्पष्ट कहा है कि यदि दूसरे दिन दशमी का श्रवण से योग नहीं है तो प्रत्येक स्थिति में नवमीविद्धा अपराह्णव्यापिनी दशमी में ही अपराजिता पूजन करना चाहिए–

"**उत्तरस्यां श्रवणयोगाभावे तु सर्वपक्षेषु नवमी युतैव। अपराह्ण काल व्याप्ति साम्यात्।**"

लेकिन १७ अक्तू. '९१ को तो श्रवण का योग भी है, अतः इस दिन को छोड़ कर दूसरे दिन (१८ अक्तू. को) विजयादशमी की कल्पना करना भी शास्त्र-तिरस्कार होगा।

ध्यान रहे १७ और १८ अक्तू. '९१ को जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा व दिल्ली में अपराह्णकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार लगभग १३ घ. १५ मि. से १५ घ. ३० मि. तक रहेगा। १७ अक्तू. को नवमी तिथि की समाप्ति १४ घ. ४९ मि. (भा.स्टै.टा.) पर होगी। इस प्रकार स्पष्ट है इस दिन दशमी तिथि १४ घ. ४९ मि. से १५ घ. ३० मि. तक अपराह्ण को व्याप्त करेगी। श्रवण नक्षत्र तो इस दिन सारा दिन ही विद्यमान है। दूसरे दिन (१८ अक्तू. को) यद्यपि दशमी अपराह्ण को पूर्णतया व्याप्त किए हुए है, लेकिन वहां श्रवण का तनिक भी स्पर्श नहीं है। उ.प्र., म.प्र. तथा राजस्थान में भी केवल १७ अक्तू. को ही विजयादशमी मनाई जाएगी, क्योंकि इन प्रदेशों में भी १७ अक्तू. को अपराह्णव्यापिनी दशमी का श्रवण से योग रहेगा। हां, लगभग ८९ अ. ३० क. (पूर्व) रेखांश से पूर्ववर्ती (अधिक) रेखांश वाले आसाम, मणिपुर, त्रिपुरा आदि प्रदेशों में १७ अक्तू. '९१ को दशमी का अपराह्णकाल से सम्पर्क नहीं होगा क्योंकि वहां अपराह्णकाल दशमी के प्रारम्भ होने (१४ घ. ४९ मि.) से पहिले ही समाप्त हो जाएगा। अतः इन प्रदेशों में कुछ निबन्धकारों के मतानुसार विजयादशमी १८ अक्तू. को मनाई जा सकती है, क्योंकि वहां केवल इसी दिन दशमी अपराह्णव्यापिनी होगी। लेकिन इस स्थिति में भी अधिकतर निबन्धकारों का यही निर्णय है कि एकादशी विद्धा दशमी के दिन विजयादशमी तभी हो सकती है जबकि वहां अपराह्ण या विजय मुहूर्त्त में श्रवण भी हो। अन्यथा हर स्थिति में नवमी विद्धा दशमी के दिन ही यह पर्व होगा। समय प्रकाश का इसी प्रसंग में वचन है "अन्येषु पक्षेषु नवमीयुतैव।"

भीष्म पंचक प्रारम्भ

इस वर्ष कार्त्ति. शुक्ल चतुर्दशी का क्षय हो जाने से कार्त्ति शु. एकादशी से कार्त्ति. पूर्णिमा तक कुल चार दिन ही बनते हैं। अतः इस वर्ष भीष्म पंचक व्रत का प्रारम्भ दशमी विद्धा एकादशी (१७ नव. '९१) से ही होगा, क्योंकि धर्मशास्त्र की व्यवस्था है कि भीष्म पंचक व्रत पूरे पांच दिन ही करना चाहिए। यदि एकादशी और पूर्णिमा तक के दिन किसी तिथि के क्षय के कारण कुल चार ही बनते हों तब इस व्रत का प्रारम्भ दशमी विद्धा एकादशी से ही कर लेना चाहिए। यही बात 'धर्मसिन्धु' में इस प्रकार कही है –

एकादश्यादि दिनपंचके भीष्म पंचक व्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यादिवृद्धौ षष्ठिक पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारभ्य क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रत समाप्ति न घटते तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः।

अतः इस वर्ष भीष्मपंचक व्रत १७ नव. '९१ को ही प्रारम्भ होंगे।

नासिक में कुम्भ महापर्व

इस वर्ष भाद्रकृष्ण अमा. (ता. ८ सित. १९९१) को सिंहस्थ गुरु चन्द्र एवं सूर्य हैं अतः नासिक में कुम्भ महापर्व होगा। यद्यपि आगामी वर्ष में २०४९ में भाद्र कृ. अमा. के दिन भी ऐसी स्थिति बनेगी परन्तु परम्परा अनुसार इससे कुम्भ महापर्वों के सापेक्ष क्रम का विचार करते हुए इस वि.सं. २०४८ में ही मनाया जाता है। फिर भी

(१७ से ३० मार्च तक, सन् १९९१ ई०)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाके १९१३, चैत्र शुक्ल पक्ष १ — (१७ से ३० मार्च तक, सन् १९९१ ई०) उत्तरायण, बसन्त ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन — प्रातः शनि पूर्व कपाल में एवं गुरु पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। सूर्यास्त बाद मंगल याम्योत्तर गमन करता और शुक्र पश्चिम में दिखाई देगा। इसी समय बुध पश्चिम में देखा जा सकेगा।

दि मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा	अं.	क.	वि.	
२९	४०	१	र	१४	४१	उ भा	२४	३५	शु	२७	३८	ब	१४	४१	४	१७	२६	२९	मीन	६	३५	६	२७	११	२	११	३१	चन्द्र दर्शन म १४ बुध रेवती में २८।३२, नवरात्र प्रा., घट स्थापन, A.
२९	४४	२	च	१०	४७	रे	२२	१६	ब्र	२१	००	कौ	१०	४७	५	१८	२७	१	मे २२।१६	६	३३	६	२७	११	३	११	१३	पञ्चक म २२।१६, सूर्य उ भा में ८।१६, श्री मत्स्य जयन्ती, रमजान प्रा.
२९	५०	३	म	६	१७	अ	११	१६	ऐ	१४	३८	ग	६	१७	६	१९	२८	२	मेष	६	३२	६	२८	११	४	१०	५६	भ ३३।४४ उ, वक्री गुरु पुष्य २ में २७।१०, गौरी तृतीया B.
२९	५५	४	बु	१	१२	भ	१५	५५	वै	७	३४	वि	१	१२	७	२०	२९	३	वृ ३०।१२	६	३१	६	२९	११	५	१०	३१	भ १।१२ या. श्री (लक्ष्मी पञ्चमी)
क्षय		५	बृ	५५	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी तिथिक्षय
३०	१	६	गु	५०	२०	कृ	१२	२४	वि	० ५३	०	कौ	२२	९	८	२१	३०	४	वृष	६	३०	६	२९	११	६	१०	७	मंगल मिथुन में ५२।१५, सायन मेष में सूर्य ५।३३, स्कन्द षष्ठी,
३०	५	७	शु	४५	१६	मृ	८	४२	आ	४४	४९	ग	१७	४२	९	२२	चै १	५	मि ३३।१३	६	२८	६	३०	११	७	९	४२	भ ४५।१६ उ, शाक चैत्र प्रा., आली प्रा (जैन)
३०	१०	८	श	४०	१२	म	५	३२	सौ	३०	१	वि	१२	४६	१०	२३	२	६	मिथुन	६	२७	६	३१	११	८	९	१४	भ १२।४४ या., अशोकाष्टमी, दुर्गाष्टमी
३०	१३	९	र	३४	२६	आ	५०	३९	शो	३२	१६	बा	७	४९	११	२४	३	७	क ४५।१६	६	२६	६	३१	११	९	८	४३	शुक्र भरणी में ४३।२ श्री राम नवमी (पुनर्वसु युक्ता), नवरात्र समाप्त
३०	१७	१०	च	३०	२८	पु	४६	४०	अ	२२	४०	तै	३	१२	१२	२५	४	८	कर्क	६	२४	६	३२	११	१०	८	१०	भ ५८।५८ उ
३०	२१	११	म	२६	४०	आश्ले	४४	४५	म	१९	३४	वि	२६	४०	१३	२६	५	९	सिं ४४।४५	६	२३	६	३३	११	११	७	३४	भ २६।४० या., बुध अश्वि. मेष में १८।५५, कामदा एकादशी (स)
३०	२७	१२	बु	२३	८	म	४३	०	पू	१३	४०	बा	२३	८	१४	२७	६	१०	सिंह	६	२२	६	३३	११	१२	६	५७	प्रदोष व्रत
३०	३३	१३	गु	२०	२	पू फा	४२	७	शु	८	१५	तै	२०	२	१५	२८	७	११	सिंह	६	२१	६	३४	११	१३	६	१८	अनङ्ग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती (जैन), दमनक चतुर्दशी
३०	३८	१४	शु	१७	४०	उ फा	४१	४६	ग	३	२६	व	१७	४०	१६	२९	८	१२	क ७।४	६	२०	६	३४	११	१४	५	३७	भ १७।४० उ., ४६।५७ या., श्री सत्यनारायण व्रत
३०	४२	१५	श	१६	१४	ह	४२	४२	धृ	५५	२८	ब	१६	१४	१७	३०	९	१३	कन्या	६	१८	६	३५	११	१५	४	५४	गुरु मार्गी ७।२०, वैशाख स्नान प्रा. ओली समाप्त (जैन) हनुमज्जयन्ती

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'तारण' नामक संवत्सर है। अतः वर्षान्त तक इस ही संकल्प में प्रयोग करें।

A चान्द्रसंवत्सर प्रा., वर्षफल श्रवण, गुड़ी पड़वा, तैलाभ्यङ्ग,अपूप दान, B (गणगौर)(वेशों सन्निग्ध व्रतपर्व व्यवस्था),

चैत्र शुक्ल ८ शनि, इष्ट ५७।३८

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	२	११	३	०	९	९	३
०	१८	१	२७	९	१२	१०	१	१
६	५३	३	७	५२	२५	४८	२	२
२४	५९	४०	४१	२२	२०	४८	५९	५९
५९	[illegible]	३०	७७	१	७२	४	३	३
३३	४३	४२	३३	१०	१५	५६	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के. सूर्योदये

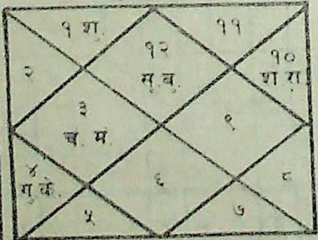

लोक भविष्य — इस वर्ष का राजा एवं मन्त्री पद का स्वामी सूर्य है। — "स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्नि चौरादिकं भयम्।" इस वर्ष अग्निकाण्ड से जनधन हानि चोर किंवा दुष्टप्रकृति के व्यक्तियों से जनता में आक्रोश व्याप्त हो। इस पक्ष में शनिवारी पूर्णिमा होने से उत्तरी प्रान्तों किंवा देशों में दुर्भिक्ष की स्थिति बने। कहीं युद्धमय वातावरण से जन जीवन अस्त व्यस्त हो। इस पक्ष में मिथुन राशिस्थ मंगल की शनि-राहु पर दृष्टि मकर-प्रभाव राशि वाले देशों के लिए राजनैतिक संघर्ष पैदा करने वाली है। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। राहु-शनि का मकर में साथ समसप्तक मध्य प्रदेश, लंका एवं चीन आदि में हिंसा किंवा भयंकर अशान्ति को जन्म देती है। **ग्रहचाल और बाजार का रुख** — पक्षारम्भ से गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, तांबा, केसर, कुसुम्भ, लालचन्दन, लाल मिर्च में अच्छी तेजी बनेगी। २४ मार्च के बाद सरसों, तिल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में मन्दा बने। पक्षान्त में गेहूं, जौ, बाजरा, ज्वार, चना, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल, तेल में कुछ मन्दा तेजी के निशान आएंगे। **आकाश लक्षण** — मार्च २०, २१, २२, २५, २८ को लंका के पश्चिमी छोर, बंगला देश, सिक्किम, बंगाल एवं हि. प्र. एवं मध्य प्रदेश के कुछ भागों में कहीं बादल चाल बदा-बादी व खण्डवृष्टि हो। वायु का जोर रहे। **शकुन विचार** — यदि चैत्र शुक्ल सप्तमी को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो आगे वर्षा ऋतु में वायु का प्रकोप एवं आकाश निर्मल रहता है। [illegible]

के. सूर्योदये

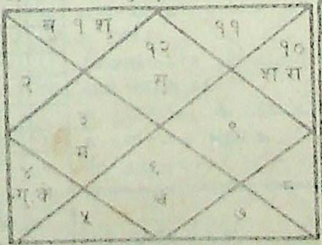

चैत्र शुक्ल १५ शनि, इष्ट ५८।१०

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	२	०	३	०	९	९	३
१६	२४	४	३	९	२०	११	०	०
१	२६	४०	५५	४८	४९	२०	४०	४०
९	३४	५८	०	१७	२८	१६	४३	४३
५९	७१	३१	३१	०	७१	४	३	३
१४	१६	२९	३७	१२	४३	१५	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, प्रथम वैशाख कृष्ण पक्ष २

(३१ मार्च से १४ अप्रैल तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तरायण, वसन्त ऋतु, उत्तर गोल

ति. घा. घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	तारीखें प्र.	अं.	श.	म.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३०	[illegible]	१	र	५१	२	चि	५५	४	व्या	५३	४४	कौ	१६	२	१८	३१	१०	१४	तु २३।५८	६	१३	६	३६	११	१६	४	८
३०	४२	२	सो	[illegible]	११	स्वा	४८	३८	ह	५०	३७	ग	१७	११	१९	अ १	११	१५	तुला	६	१६	६	३६	११	१७	३	२०
३०	४४	३	म	४९	४७	वि	[illegible]	[illegible]	व	५०	४१	वि	१९	४७	२०	२	१२	१६	वृ ४७।२०	६	१५	६	३७	११	१८	२	३०
३१	०	४	बु	५३	५२	[illegible]	३	[illegible]	[illegible]	५३	४७	बा	२३	५२	२१	३	१३	१७	वृश्चिक	६	१४	६	३८	११	१९	१	३७
३१	२	५	गु	५९	१३	अ	५९	[illegible]	[illegible]	५५	४८	तै	२०	१३	२२	४	१४	१८	वृश्चिक	६	१२	६	३८	११	२०	०	४३
३१	१०	६	शु	२५	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८	१५	ग	५	३१	२३	५	१५	१९	ध १७।३३	६	११	६	३९	११	२०	५९	४८
३१	१२	७	श	४२	३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	६०	०	वि	८	४६	२४	६	१६	२०	धन	६	१०	६	३९	११	२१	५८	५१
३१	१८	८	र	५७	१७	उ षा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५७	बा	१५	१०	२५	७	१७	२१	म ४९।२८	६	९	६	४०	११	२२	५७	५२
३१	२२	९	च	५३	३४	श्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	तै	२०	५५	२६	८	१८	२२	मकर	६	८	६	४१	११	२३	५६	५१
३१	२७	१०	म	५३	१९	ध	४५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२५	व	२४	२५	२७	९	१९	२३	मकर	६	६	६	४१	११	२४	५५	४८
३१	३१	११	बु	५९	७	श	४८	२६	[illegible]	[illegible]	३१	ब	२८	१२	२८	१०	२०	२४	कु १६।५५	६	५	६	४२	११	२५	५४	४३
३१	३६	१२	गु	५८	५९	पूभा	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३१	कौ	२८	५९	२९	११	२१	२५	कुम्भ	६	४	६	४३	११	२६	५३	३६
३१	४०	१३	शु	५१	४४	उ भा	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	२७	३०	३०	१२	२२	२६	मी ३५।२२	६	३	६	४३	११	२७	५२	२७
३१	४४	१४	श	४३	[illegible]	रे	६०	३१	[illegible]	४०	५१	वि	२४	५३	३१	१३	२३	२७	मीन	६	२	६	४४	११	२८	५१	१५
३१	४९	३०	र	४०	४६	र	३२	१३	वै	३३	[illegible]	च	२०	५२	वै १	१४	२४	२८	मे ४५।१३	६	१	६	४५	११	२९	५०	११

ग्रह दर्शन – बुध २ अप्रैल को पश्चिम में अस्त होगा। सूर्योदय से पूर्व शनि पूर्व कपाल में एवं गुरु पश्चिम में दिखाई देगा। साय मंगल [illegible] तथा शुक्र पश्चिम में होगा।

- सूर्य रेवती में ३६।५.
- भ ४८।२९ उ. अप्रैल प्रा.
- भ. १९।४७ या. श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बुध पश्चिमास्त
- मंगल आर्द्रा में ४४।०.
- बुध वक्री २९।५, शुक्र कृत्ति में ५१।५८
- भ. ३५।२९ उ.
- भ. ८।४६ या.
- शुक्र वृष में ४०।३५
- भ. २५।२५ उ., ५७।१६ या.
- पञ्चक प्रा. १६।५५, गुरु पुष्य ३ में ३८।४२., श्री वल्लभाचार्य. A
- वरूथिनी एकादशी (वै.)
- भ. ५६।४५ उ., राहु उ.षा. १ धनु में, केतु पुन. ३ मिथुन में ४७।० B
- भ. २४।५३ या.
- पञ्चक मं. ४५।१३, सूर्य अश्वि. मेष में १०।७ मु. ३०. C

A [illegible] B प्रदोष व्रत. C पुण्यकाल २६।७ तक, मेला वैशाखी, (पंजाब, हरियाणा, हिमाचल)

प्र. वैशाख कृ. ८ रवि, इष्ट ५८।२२

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] सूर्योदये

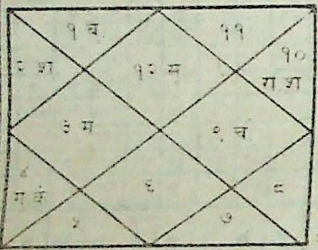

लोक भविष्य – इस मास में ५ रविवार है। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महर्घता से जनता में क्षोभ पैदा हो। रोग विशेष से जनता में परेशानी हो। लंका, पाकिस्तान किंवा किसी यावन देश में सैन्यबल का प्रयोग हो। इस पक्ष में धन राशि का राहु भी अप्रत्याशित महर्घता से जनाक्रोश बढ़ेगा। राहु-मंगल का समसप्तक देश विशेष में राजनैतिक अस्थिरता एवं दुर्घटना में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदारिक्त होने का संकेत देता है। कहीं प्राकृतिक-प्रकोप से जन-धन हानि होने का भी संकेत मिलता है। ग्रह स्थिति के अनुसार अनाजों में महंगाई आगे चरम सीमा पर पहुंचेगी। राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमनस्य बढ़ने से राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा।

कुं. सूर्योदये

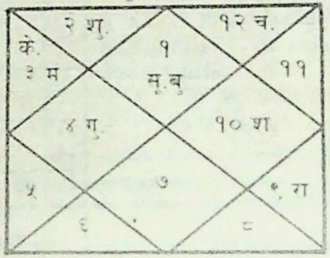

प्र. वैशाख कृ. ३० रवि, इष्ट ५८।४२

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०	०	२	०	३	१	९	८	२
०	३	१२	०	१०	८	१२	२९	२९
४७	१२	४३	३३	१०	३६	१५	५३	५३
३८	५९	५	३	४७	२०	४८	२	२
५८	[illegible]	३२	४४	२	७०	३	३	३
४९	१६	२०	२४	५८	२४	१	११	११
.	.	मा	व	मा	मा	मा	व	व
.	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रेवती ४	अश्विन १	आर्द्रा २	अश्विन १	पुष्य ३	कृत्तिका ४	मूल १	उ षा १	पुन ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में तेल-तिलहन एवं अनाज तेज रहेंगे। रूई, सूत, कपास में तेजी रहे। ४ अप्रैल के आसपास रूई में तेजी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में तेजी, अनाजों में कुछ मन्दा बने। ६ अप्रैल के लगभग बाजार में [illegible] मन्दे का वातावरण बने। रूई, कपास में भी अच्छी मन्दी बने। ११ अप्रैल से सोना चांदी में विशेष मन्दा आए, रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। नोट – यदि रूई, सन पहले मन्द हो तो स्टाक करने पर धन के राहु से आगे उत्तम लाभ होगा।

आकाश लक्षण – [illegible] अप्रैल को [illegible] सिक्किम, बंगलादेश, हि. प्र., पूर्वी आसाम, बंगाल व बिहार में बादल वर्षा के योग हैं। [illegible] शकुन विचार – वैशाख [illegible]

[illegible]

(१५ से २८ अप्रैल तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तरायण, वसन्त ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, प्रथम [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS (१५ से २८ अप्रैल तक, सन् १९९१ ई०)

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, प्रथम (अधिक) वैशाख शुक्ल पक्ष ३ | तारीखें | सन्त्वराशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | उत्तरायण, वसन्त ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन — २२ अप्रैल को प्रातः बुध पूर्व में उदित होगा। प्रातः शनि खमध्य में दिखाई देगा। सायं शुक्र एवं मंगल पश्चिम में तथा गुरु खमध्यासन्न होगा।

दि मा घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र वैशाख	अं अप्रैल	श शव्वाल	म	प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि	
३१	२४	१	ब	४१	३८	अ	६०	४३	वि	३५	१३	कि	१२	६०	२	१५	२५	२९	मेष	६	०	६	४५	०	०	४८	५०	बड़ी बुध रेवती मीन में ४०।३८, मल (अधिक) मास प्रा.
३१	२८	२	म	३८	४६	भ	३६	४	प्री	२६	५५	बा	८	१०	३	१६	२६	३०	वृ ४९।४७	५	५८	६	४६	०	१	४७	३२	चन्द्र दर्शन म १५ शुक्र रोहिणी में ९।५७
३२	२	३	बु	२७	४९	कृ	३०	५६	आ	१८	२१	तै	१	१४	४	१७	२७	श १	वृष	५	५७	६	४७	०	२	४६	१३	भ ५४।१३ उ. शव्वाल म प्रा.
३२	६	४	गु	२०	४४	रो	२४	५६	सौ	९	२०	वि	२०	४४	५	१८	२८	२	मि ५३।३९	५	५६	६	४७	०	३	४४	५२	भ २०।४४ या.
३२	११	५	शु	१४	११	मृ	२१	२२	शो	५९	५६	बा	१४	११	६	१९	२९	३	मिथुन.	५	५५	६	४८	०	४	४३	३०	
३२	१५	६	श	८	१२	आ	१९	२३	अ	४६	१४	तै	८	१२	७	२०	३०	४	क ४९।४७	५	५४	६	४९	०	५	४२	४	सायन वृष में सूर्य ३२।२२, ग्रीष्म ऋतु प्रा., अगस्त्य अस्त, A
३२	२०	७	र	२	२६	पुन	१८	९	सु	६०	१	व	१	४६	८	२१	वै १	५	कर्क	५	५३	६	४९	०	६	४०	३७	भ २।५६ उ., ३०।४३ या., शक वैशाख प्रा.
अ	वा	८	र	५८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय.
३२	२९	९	सो	५६	५४	पु	११	४४	धृ	३४	९	बा	१६	६०	९	२२	२	६	कर्क	५	५२	६	५०	०	७	३९	९	बुध पूर्व में उदित
३२	२४	१०	म	५२	७	आश्ले	१०	१२	शू	२८	५७	तै	२३	३०	१०	२३	३	७	सि १०।१२	५	५१	६	५०	०	८	३७	३९	
३२	३३	११	बु	५०	१२	म	९	३२	गं	२६	२६	व	२१	१०	११	२४	४	८	सिंह	५	५०	६	५१	०	९	३६	७	भ २१।१० उ., ५०।१३ या., पुरुषोत्तमा एकादशी (म)
३२	३७	१२	गु	४१	११	पू फा	६	३३	वृ	२०	२६	व	१९	४२	१२	२५	५	९	क २६।४७	५	४९	६	५२	०	१०	३४	३१	
३२	४१	१३	शु	४९	१	उ फा	१०	२०	ध्रु	१७	३८	कौ	१९	६	१३	२६	६	१०	कन्या	५	४८	६	५२	०	११	३२	५३	प्रदोष व्रत
३२	४५	१४	श	४९	३०	ह	१२	२१	व्या	१४	४	ग	१२	२६	१४	२७	७	११	त ४३।४७	५	४७	६	५३	०	१२	३१	१३	भ ४९।५२ उ., सूर्य भरणी में ५०।१५
३२	५०	१५	र	५१	४६	चि	१४	१६	ह	११	४०	वि	१०	४०	१५	२८	८	१२	तुला	५	४६	६	५४	०	१३	२९	३१	भ २०।४९ या., मंगल पुन. में ७।४५, बुध मार्गी ३१।२०. B

A श्री रामानुजाचार्य जयन्ती (द० भारत) B शुक्र मृग. में ३९।५० श्री सत्यनारायण व्रत

प्रथम (अधिक) वैशाख शुक्ल ७ रवि इष्ट ५९।१२ के. सूर्योदये

स	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	२	११	३	१	९	८	२
०	१३	१६	२४	१०	१६	१२	२९	२९
२८	४३	३६	४२	३४	४६	३६	३०	३०
१५	५६	२१	५०	११	४१	५७	४६	४६
५८	[illegible]	३३	२८	६	६९	[illegible]	३	३
३०	१३	१९	-	११	३४	३२	११	११
-	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

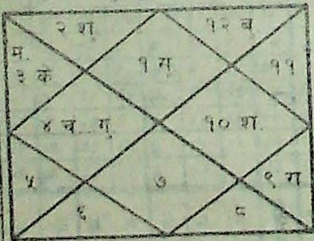

लोक भविष्य — "मघ्ये जायते धान्यं रोग-शोकाकुला मही" पांच इतवार होने से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, रोग भय हो, किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का अभाव होने से अनेकत्र वर्षा का अभाव रहेगा, कृषक वर्ग परेशान रहेगा। पक्षान्त में अंग, बंग, कलिंग एवं बाल्हीक देशों में किंवा उत्तरी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं कहीं शान्ति भंग होने का योग है। वैशाख 'अधिक मास' होने से अनाजों एवं दालदाना की फसल को हानि पहुंचे — "वैशाखे पूर्वे धान्यानां निष्पत्तिर्न क्वचित्।" महंगाई पर कंट्रोल न होने से जनता का विश्वास शासक वर्ग से क्षीण होगा। राहु-मंगल का समसप्तक भी जनता में अग्नि-काण्ड किंवा दुर्घटना विशेष से जन-धन हानि का सूचक है।

के. सूर्योदये प्रथम (अधिक) वैशाख शुक्ल १५ रवि इष्ट ५८।२०

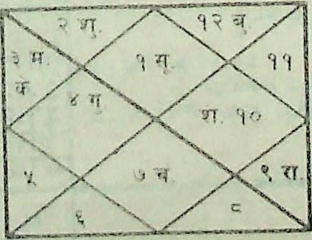

स	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	२	११	३	१	९	८	२
१४	१५	२०	२४	११	२४	१२	२९	२९
२०	५३	२८	१५	७	५१	४९	८	८
१०	५०	५८	२१	६१	१७	३६	३१	३१
५८	७४	३३	५	५	६८	१	३	३
१६	१८	४४	२३	१८	४०	४२	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख — पक्षारम्भ में कमर, लाल मिर्च एवं अन्य लालवर्ण की वस्तुओं में तेजी बने, सोना आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड में मन्दा आए। पक्षान्त में २७ अप्रैल के लगभग सोना, चांदी, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी आएगी। **आकाश लक्षण** — अप्रैल १५, १६, २२, २७ को राजस्थान, उ.प्र., पंजाब, हि.प्र. में कहीं तूफान, वायु वेग से हानि, कहीं बादल वाल हो। उत्तरी भारत में तापमान में वृद्धि भी होगी। **शकुन विचार** — जिस वर्ष पीपल के फल फूल अधिक हों, उस वर्ष मोठ, बाजरा कम तथा अन्य सब अनाजों की पैदावार श्रेष्ठ होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, द्वितीय (अधिक) वैशाख कृष्ण पक्ष ४

(२९ अप्रैल से १४ मई तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह वर्णन – प्रातः बुध पूर्व में, तथा शनि खमध्यासन्न होगा। सूर्यास्त बाद मंगल एवं शुक्र पूर्व कपाल में तथा गुरु याम्योत्तरासन्न होगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ धा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३२	५५	१	च.	५४	५०	स्वा	१९	१०	सि.	१२	४५	बा	२३	१८	१६	२९	९	१३	तुला	५	४५	६	५४	०	१४	२७	४७
३२	५९	२	म	५९	५	वि	२४	१५	व्य	१२	५७	तै	२६	५८	१७	३०	१०	१४	वृ ७।५९	५	४४	६	५५	०	१५	२६	१
३३	३	३	बु	६०	०	अनु	३०	२५	व	१४	२	व	३१	४२	१८	म १	११	१५	वृश्चिक	५	४३	६	५६	०	१६	२५	१४
३३	८	३	गु	४	२३	ज्ये	३७	३१	प	१५	५२	वि	४	२३	१९	२	१२	१६	ध ३७।३१	५	४२	६	५७	०	१७	२२	२५
३३	१२	४	शु	१०	३१	मू	४५	१५	शि	१८	१९	बा	१०	३१	२०	३	१३	१७	धनु	५	४१	६	५७	०	१८	१९	३५
३३	१६	५	श	१७	४	पू.षा	५३	५	सि.	२१	२	तै	१७	४	२१	४	१४	१८	धनु	५	४१	६	५८	०	१९	१८	४३
३३	१९	६	र.	२३	२७	उ.षा	६०	०	सा	२३	३७	व	२३	२७	२२	५	१५	१९	म ९।५७	५	४०	६	५९	०	२०	१६	५०
३३	२२	७	च	२९	१०	उ.षा	०	३४	शु	२५	४१	ब.	२९	१०	२३	६	१६	२०	मकर	५	३९	६	५९	०	२१	१४	५५
३३	२६	८	मं	३३	३२	श्र	७	०	शु	२६	४६	बा	१	२१	२४	७	१७	२१	कुं ३९।२६	५	३८	७	०	०	२२	१२	५८
३३	३०	९	बु	३६	८	ध	११	५२	ब्र.	२६	३०	तै	४	५०	२५	८	१८	२२	कुम्भ	५	३७	७	१	०	२३	११	१
३३	३४	१०	गु	३६	४१	शत	१४	५०	ऐ	२४	४२	व	६	२५	२६	९	१९	२३	कुम्भ	५	३७	७	१	०	२४	९	२
३३	३८	११	शु	३५	३	पू.भा	१५	४३	वै.	२१	१०	व.	५	५२	२७	१०	२०	२४	मी.०। ३०	५	३६	७	२	०	२५	७	१
३३	४२	१२	श	३१	२४	उ.भा	१४	३०	वि	१५	५८	कौ	३	१४	२८	११	२१	२५	मीन	५	३५	७	३	०	२६	५	०
३३	४५	१३	र	२५	५९	रे	११	२९	प्री	९	१७	व	२५	५९	२९	१२	२२	२६	मे ११।२९	५	३४	७	३	०	२७	२	५७
३३	४८	१४	च	१९	८	अ	६	५५	आ	[illegible]	[illegible]	श	१९	८	३०	१३	२३	२७	मेष	५	३४	७	४	०	२८	०	५२
३३	५१	३०	म	११	२०	भ	१ ५४	१७ ५८	सौ	४२	५७	ना	११	२०	३१	१४	२४	२८	वृ १४।४२	५	३३	७	५	०	२८	५८	४६

भ. ३१।४४ उ., मई प्रा., (मेडे)
भ. ४।२३ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
शुक्र मिथुन में ३०।१२

भ. २३।२७ उ., ५६।१८ या.

पञ्चक प्रा. ३९।२६, जन्म दिवस श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर

भ. ६।२४ उ., ३६।४१ या., शुक्र आर्द्रा में २५।०
बुध अश्वि. मेष में ४९।४२, पुरुषोत्तमा एकादशी
सूर्य कृत्तिका में ३६।७, शनि प्रदोष व्रत
भ. २५।५९ उ., ५२।३४ या., पञ्चक स. ११।२९

मल (अधिक) मास समाप्त, भौमवती अमा,

द्वितीय (अधिक) वैशा. कृष्ण ८ मंगल
इष्ट ५९।४०

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०	१०	२	११	३	२	९	८	२
२३	४	२५	२७	१२	५	१३	२८	२८
१०	८	३४	४६	०	४	१	३९	३९
[illegible]	[illegible]	४९	१५	५८	१८	३३	५४	५४
५८	७१४	३८	४३	६	६७	०	३	३
[illegible]	१८	१४	२८	३९	२१	४०	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

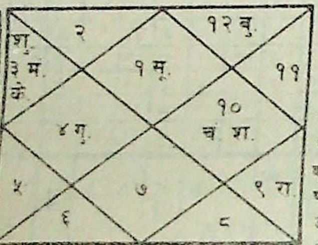

लोक भविष्य – यह पुरुषोत्तम मास है। इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है.– "स्वल्पवृष्टि भविन्मेघो धन-धान्य।सम्पत्कुलम्। घृतं तैलं च कार्पासं लुपितं माधवाद्ये। वर्षा कम होने पर भी जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी न रहे, प्रजा में आनन्द मगल रहे। अमावस को मंगलवार एवं कृत्तिका नक्षत्र वर्षा का संकेत देते हैं। चोरी-ठगी एवं अनैतिक घटनाएं अधिक हों, कहीं युद्धमय वातावरण में अशान्ति हो – "अमावस्यां तु वैशाखे कृत्तिकायां अलेरयता। चौराः लुण्ठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्धं परस्परम्।।" लंका, बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अन्य यावन राष्ट्रों में आन्तरिक-अशान्ति का वातावरण रहेगा।

कु. सूर्योदये

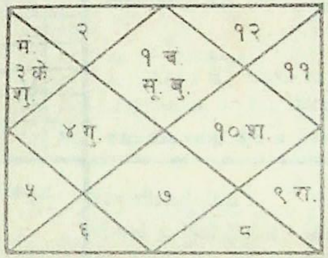

द्वितीय (अधिक) वैशा. कृष्ण ३० मंगल
इष्ट ५९।५२

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	२	०	३	२	९	८	[illegible]
२९	११	२९	४	१२	१२	१३	२८	[illegible]
५६	१३	३५	३	५०	४२	५	१७	[illegible]
३७	१८	४०	५५	१८	१३	२२	३९	[illegible]
५७	८१८	३४	६६	७	६७	०	३	[illegible]
५३	१५	३६	१७	३५	७	१०	११	[illegible]
-	-	मा.	मा	मा	मा	मा.	व	व
-	अ	उ	उ	उ.	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में रूई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन में मन्दा बने। ९ मई के लगभग अनाज एवं दालदाना में अचानक मन्दे का योग है। घी, गुड़ खाण्ड, सरसों, तिल, तेल में मन्दे का रिवाज़ आए। इस समय चांदी में अच्छी घटा बढ़ी होगी। [illegible] – ३० अप्रैल, मई ३, ९, १०, ११ [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१५ से २८ मई तक, सन् १९९१ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष ५

(१५ से २८ मई तक, सन् १९९१ ई०) उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन -- प्रातः बुध पूर्व कपाल में तथा शनि पश्चिम कपाल में होगा। सूर्यास्तानन्तर पश्चिम में शुक्र उससे ऊपर मंगल एवं गुरु दिखाई देंगे।

दि मा घ प		तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	तारीखें प्र	अं	श	मु	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि	
३३	२४	१	बु	३	४७	रो	४८	२९	अ	३३	१२	ब	३	४७	१	१५	२५	२९	वृष	५	३२	७	५	०	२९	५६	३९	चन्द्र दर्शन मु. ४५, मंगल कर्क में ४२।५, स. सूर्य वृष में ३।२९ A
अ	क्षय	२	बृ	४४	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय
३४	४७	३	शु	४९	१	मृ	४२	७	धृ	२३	३१	तै	२०	१४	२	१६	२६	[illegible]	मि १४।११	५	३१	७	६	१	०	५४	३१	श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया, त्रिलक्ष मु. प्रा.
३४	०	४	श	३८	२०	आ	३५	[illegible]	शू	१४	१३	व	१२	१२	३	१७	२७	१	मिथुन	५	३१	७	७	१	१	५२	२२	भ. १२/१२ उ., ३८।२० या., शनि वक्री १०।४५
३४	३	५	र	३१	२८	पुन	३१	२८	गं	४७	३२	कौ	४	५६	४	१८	२८	३	क १७।४९	५	३१	७	७	१	२	५०	९	मंगल पुष्य में २७।४८, गुरु पुष्य ४ में ४९।३७, श्री शंकराचार्य जयन्ती
३४	६	६	सो	२३	४१	पु	२३	४०	वृ	४०	४४	गै	२४	४१	५	१९	२९	४	कर्क	५	३०	७	८	१	३	४७	५५	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
३४	९	७	मं	२१	११	आश्ले	२४	८	ध्रु	४४	४१	व	२१	११	६	२०	३०	५	सिं २५।८	५	२९	७	९	१	४	४५	४०	भ. २१।११ उ., ४९।३४ या., श्री गंगा जन्म
३४	१२	८	बु	१७	५७	म	२६	१९	व्या	४०	८	ब	१७	५७	७	२१	३१	६	सिंह	५	२९	७	९	१	५	४३	२४	सायन मिथुन में सूर्य ३३।२६ शुक्र पुन. में ३१।३५
३४	१५	९	बृ	१६	२	पू.फा	२३	४४	ह	३६	२५	कौ	१६	२	८	२२	ज्ये १	७	क ३१।१५	५	२८	७	१०	१	६	४१	७	बुध भरणी में १८।२०, शुक्र ज्येष्ठ प्रा., श्री जानकी जयन्ती
३४	१८	१०	शु	१५	२७	उ.फा	२५	१५	व	३३	४३	व	१५	२७	९	२३	२	८	कन्या	५	२८	७	१०	१	७	३८	४९	भ. ४५।४५ उ.,
३४	२१	११	श	१६	३	ह	२७	४४	सि	३१	४७	वि	१६	३	१०	२४	३	९	तु ५९।३६	५	२८	७	११	१	८	३६	३०	भ. १६।३ या., मोहिनी एकादशी (स.)
३४	२४	१२	र	१७	४६	चि	३१	१९	व्य	३१	३	बा	१७	४६	११	२५	४	१०	तुला	५	२७	७	१२	१	९	३४	९	सूर्य रोहि. में २७।१०, शनि प्रदोषव्रत
३४	२७	१३	सो	२०	३६	स्वा	३५	५८	व	३१	१	तै	२०	३६	१२	२६	५	११	तुला	५	२७	७	१२	१	१०	३१	४८	नृसिंह जयन्ती (साय व्यापिनी चतुर्दशी में)
३४	२८	१४	मं	२४	२५	वि	४१	१२	प	३१	४१	व	२४	२५	१३	२७	६	१२	वृ २२।१८	५	२६	७	१३	१	११	२९	२६	भ. २८।२५ उ., ५६।४७ या., श्री सत्यनारायण व्रत
३४	३०	१५	बु	२९	९	अनु	४७	५८	शि	३३	७	ब	२९	९	१४	२८	७	१३	वृश्चिक	५	२६	७	१३	१	१२	२७	४२	श्री बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, श्री कूर्म जयन्ती B

A भ. ४५ पुष्यकाल ११।२९ तक, श्री शिवाजी जयन्ती,

B (जैसे सन्निहित व्रतपर्व व्यवस्था), जन्मोत्सव अनन्त श्री वृद्ध शंकराचार्य (कांची मठ)

द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल ८ मंगल इष्ट ०।२

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	३	०	३	२	९	८	२
५	७	३	११	१३	१९	१३	२७	२७
६२	४७	३	२७	२७	२५	३	५८	५८
२०	२२	५७	१०	३९	५४	५०	३४	३४
५७	८०५	३४	८२	८	६४	०	३	३
४४	५०	५२	७	१९	५२	२६	११	११
-	-	मा	मा	मा	म	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	ब	ब
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

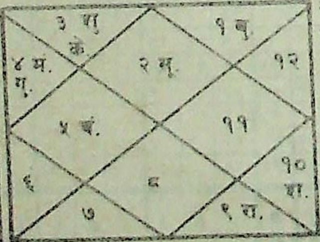

लोक भविष्य -- इस पक्ष में वृष संक्रान्ति के दिन चन्द्र भी वृष में है। इस दिन शुक्र की राशि में सूर्य-चन्द्र का योग अघटित-घटनाओं को जन्म देगा -- "यदि चेत् वर्क-संक्रान्तिः शुक्रे सौम्ये च सिंहः। धान्यवेक्षावर्षं देशः, बोधः स्व. स्त्रूण गृहे।" किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। चीन आदि किसी राष्ट्र एवं अन्य किसी देश विशेष में राजनैतिक विप्लव से हानि हो। भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधन हानि हो। मेष राशि का बुध, उच्चस्थ-सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बना रहा है, जोकि बीमारी एवं उपभोग्य वस्तुओं में मंहगाई से निर्धन वर्ग के लिए परेशानी पैदा करेगा। -- "पश्च सौम्यः शिवलो मेषे महर्घ च चतुष्पदम्। सुव्यर्थं समस्तं भाति धाराचार्य विकारकम्।" शनि. मं. का समसप्तम देशों में अप्रत्याशित घटनाओं को जन्म देगा। ग्रहचाल और बाजार का रूख -- १५ मई के लगभग गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल, अफीम, तांबा, लाल मिर्च एवं अन्य लाल रंग की चीजों में विशेष तेजी के झटके आएंगे। १७ मई के लगभग बचानक झाजर एवं चावल व्यापार में एक तरफा लाइन बन सकती है -- सावधानी से काम करें। १८ से २१ मई तक तेल, तिलहन में मन्दे का रुख रहे। २१ मई के लगभग सोने में झटके के साथ तेजी बनेगी। पक्षान्त में तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी एवं अनाजों में तेजी आए। मौसम का स्वभाव -- मई १५, १६, १७, २१ २५ को भूटान, सिक्किम, आसाम, बिहार में कहीं बादल चाल व कहीं खण्ड वृष्टि हो, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र. तापमान ऊंचा रहे। आंधी से वृक्षों की हानि हो। शकुन विचार -- वैशाख शु. ५ को सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त यदि पूर्व की हवा चले, तो अन्न का संग्रह करना चाहिए, आगे तेजी से लाभ लें। यदि वैशाख शुक्ल पंचमी को सन्ध्या के समय हवा का जोर हो एवं बादल हों तो भादरव में धान्य तेज रहें।

क. सूर्योदये

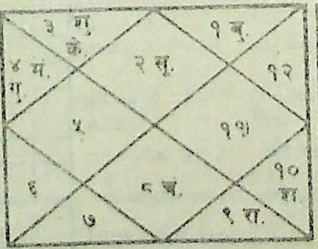

द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल १५ मंगल इष्ट ०।१०

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	२	०	३	२	९	८	२
१२	७	७	२१	१४	२६	१२	२७	२७
२७	५	८	४७	३८	४४	४९	३६	३६
२	२१	५३	४५	१६	५३	५७	१८	१८
५७	८२०	३५	२८	९	६३	१	३	३
३४	२८	९	५६	६	७	६	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	ब	ब
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, द्वितीय (अधिक) वैशाख कृष्ण पक्ष ४

(२९ अप्रैल से १४ मई तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – प्रातः बुध पूर्व में, तथा शनि खमध्यासन्न होगा। सूर्यास्त बाद मंगल एवं शुक्र पूर्व कपाल में तथा गुरु याम्योत्तरासन्न होगा।

ति.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	रा. वैशाख	मु. शव्वाल	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	नतोन्नतांश भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-क्रान्तिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५५	१	र	५४	५०	स्वा	१९	१०	सि	१२	४५	बा	२३	१८	१६	२९	९	१३	तुला	५	४५	६	५४	०	१४	२७	४७	
३२	५९	२	सो	५९	५	वि	२४	१५	व्य	१२	४७	तै	२६	५८	१७	३०	१०	१४	वृ ७।५९	५	४४	६	५५	०	१५	२६	१	
३३	३	३	मं	६०	०	अनु	३०	२५	व	१४	२	व	३१	४२	१८	म १	११	१५	वृश्चिक	५	४३	६	५६	०	१६	२५	१४	भ. ३१।४४ उ., मई प्रा.,(मेडे)
३३	८	३	बु	४	२३	ज्ये	३७	३१	प	१५	५२	वि	४	२३	१९	२	१२	१६	ध ३७।३१	५	४२	६	५७	०	१७	२२	२५	भ ४।२३ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३३	१२	४	गु	१०	३१	मू	४५	१५	शि	१८	१९	बा	१०	३१	२०	३	१३	१७	धनु	५	४१	६	५७	०	१८	१९	३५	शुक्र मिथुन में ३०।१२
३३	१६	५	शु	१७	४	पू.षा	५३	५	सि	२१	२	तै	१७	४	२१	४	१४	१८	धनु	५	४१	६	५८	०	१९	१८	४३	
३३	१९	६	श	२३	२७	उ.षा	६०	०	सा	२३	३७	व	२३	२७	२२	५	१५	१९	म ९।५७	५	४०	६	५९	०	२०	१६	५०	भ: २३।२७ उ., ५६।१८ या.,
३३	२२	७	र	२९	१०	उ.षा	०	३४	शु	२५	४१	व	२९	१०	२३	६	१६	२०	मकर	५	३९	६	५९	०	२१	१४	५५	
३३	२६	८	सो	३३	३२	श्र	७	०	शु	२६	४६	बा	१	२१	२४	७	१७	२१	कुं ३९।२६	५	३८	७	०	०	२२	१२	५८	पञ्चक प्रा. ३९।२६, जन्म दिवस श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर
३३	३०	९	मं	३६	८	ध	११	५२	ब्र	२६	३०	तै	४	५०	२५	८	१८	२२	कुम्भ	५	३७	७	१	०	२३	११	१	
३३	३४	१०	बु	३६	४१	शत	१४	५०	ऐ	२४	४२	व	६	२५	२६	९	१९	२३	कुम्भ	५	३७	७	१	०	२४	९	२	भ. ६।२४ उ., ३६।४१ या., शुक्र आर्द्रा में २५।०
३३	३८	११	गु	३५	३	पू.भा	१५	४३	वै	२१	१०	ब	५	५२	२७	१०	२०	२४	मी.०। ३०	५	३६	७	२	०	२५	७	१	बुध अश्वि. मेष में ४९।४२, पुरुषोत्तमा एकादशी
३३	४२	१२	शु	३१	२४	उ.भा	१४	३०	वि	१५	५८	कौ	३	१४	२८	११	२१	२५	मीन	५	३५	७	३	०	२६	५	०	सूर्य कृत्तिका मे ३६।७, शनि प्रदोष व्रत
३३	४५	१३	श	२५	५९	रे	११	२९	प्री	९	१७	व	२५	५९	२९	१२	२२	२६	मे.११।२९	५	३४	७	३	०	२७	२	५७	भ. २५।५९ उ., ५२।३४ या., पञ्चक स. ११।२९
३३	४८	१४	र	१९	८	अ	६	५५	आ	१	२०	श	१९	८	३०	१३	२३	२७	मेष	५	३४	७	४	०	२८	०	५२	
३३	५१	३०	सो	११	२०	भ	१ ५४	१७ ५८	सौ	४२	५७	ना	११	२०	३१	१४	२४	२८	वृ.१४।४२	५	३३	७	५	०	२८	५८	४६	मल (अधिक) मास समाप्त, सौमवती अमा,

द्वितीय (अधिक) वैशा. कृष्ण ८ मंगल
इष्ट ५९।४०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	२	११	३	२	९	८	२
२३	४	२५	२७	१२	५	१३	२८	२८
१०	८	३५	४६	०	४	१	३९	३९
४९	१२	४९	४५	५८	१८	३३	५४	५४
५८	[illegible]	३६	६२	६	६७	०	३	३
२	१८	१४	२४	३९	२९	४०	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. सूर्योदये

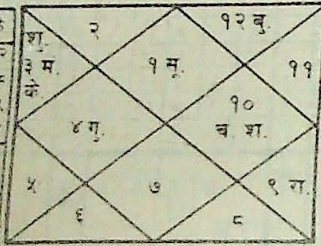

लोक भविष्य – यह पुरुषोत्तम मास है। इसका फल शास्त्रों मे इस प्रकार लिखा है.– "स्वल्पवृष्टि श्चमेघो धन-धान्य।समाकुलम्। घृत तैलं च कार्पासं सुभिक्षं मासवद्धये। वर्षा कम होने पर भी जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी न रहे, प्रजा मे आनन्द मंगल रहे। अमावस को मंगलवार एव कृत्तिका नक्षत्र वर्षा का संकेत देते हैं। चोरी-ठगी एव अनैतिक घटनाएं अधिक हों, कहीं युद्धमय वातावरण से अशान्ति हो – "अमावस्यां तु वैशाखे कृत्तिकायां अमेत्यता। चौराः लुण्ठन्ति मार्गेषु राज्ञां युद्ध परस्परम्।।" लंका, बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान एवं अन्य यावन राष्ट्रों मे आन्तरिक-अशान्ति का वातावरण रहेगा।

कु. सूर्योदये

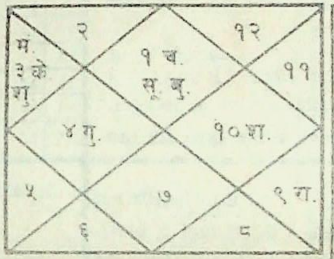

द्वितीय (अधिक) वैशा. कृष्ण ३० मंगल
इष्ट ५९।५२

सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	२	०	३	२	९	८	[illegible]
२९	११	२९	४	१२	१२	१३	२८	[illegible]
५६	१३	३५	३	५०	५२	५	१७	[illegible]
३४	१८	४०	४५	१८	१३	२२	३९	[illegible]
५७	१८	३४	६६	७	६७	०	३	[illegible]
५३	१५	३६	१७	३५	७	१०	११	[illegible]
-	-	मा.	मा	मा	मा	मा	व	व
-	अ	उ	उ	उ	उ.	उ	अ	अ

ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ मे रुई में पहले मन्दी, बाद मे तेजी, गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज रेशम तेल [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक उपयोग में आने वाले शुभ मुहूर्त निकालना सरल बात है

ज्योतिष काल-शास्त्र है। शुभ-काल (मुहूर्त) में किया गया कार्य निर्विघ्न रूप से शीघ्र ही सम्पन्न एवं सफल होकर सुख समृद्धि कारक होता है—ज्योतिष की मुहूर्त-शाखा का यह सिद्धान्त है। मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा आदि के मुहूर्तों का विस्तृत विवेचन पंचांग के पिछले पृष्ठों पर दिया गया है। आभूषण, स्वर्ण, वस्त्र आदि खरीदना, पहनना, यात्रा आरम्भ करना, मुकद्दमा दायर करना, ग्रह-शान्त्यर्थ रत्न धारण करना, किसी परीक्षा-प्रतियोगिता या नौकरी के लिए आवेदन पत्र भरना आदि आदि कार्यों के शुभ मुहूर्त जानने के लिए अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। यहां पर हमने तीन शुभ योगों (सर्वार्थ सिद्धि, रवि, सिद्धि योगों) के प्रारम्भ और समाप्त होने की तारीखें एवं समय (भा. स्टैं. टा.) दिया है। इन योगों के समय जो कार्य किए जाएं वे सफल होते हैं। (क्रकच, विष, दग्ध, यमघण्ट, मृत्यु और हुताशन) अशुभ योगों के समय किए गए कार्य सफल नहीं होते, अतः इन छः योगों के समय को छोड़कर सर्वार्थ-सिद्धि आदि शुभ योगों के समय में शुभ काम करना चाहिए।

सर्वार्थ-सिद्धि आदि शुभ और क्रकच आदि अशुभ-योगों के बारे में आवश्यक विवरण नीचे दिया जा रहा है:—

सर्वार्थ सिद्धि एवं अमृत सिद्धि योग

वारों का विशेष-नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर 'सर्वार्थ सिद्धि योग' बनते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृह-प्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिकमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थ सिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थ सिद्धि योग बनता है, उसे 'अमृत सिद्धि योग' की विशेष संज्ञा दी गई है। अमृत सिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां वर्जित मानी गई हैं, जिनका विचार हमने यहां किया है। अमृत सिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थ सिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृत सिद्धि योग के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृत सिद्धि के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृत सिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योगों को कोष्ठकों में दिया गया है। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे कोष्ठक के दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में (गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थ सिद्धियोगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय आदि विवाह ही करना चाहिए—ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

रवि योग

रवियोग भी सर्वार्थ सिद्धि योगों की भान्ति ही सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है—रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है ("कुयोग विध्वंस करा: शुभेषु") इस योग में वे सभी काम किए जा सकते हैं जो सर्वार्थ सिद्धि योगों में किए जा सकते हैं।

सिद्धि योग

सिद्धि योग भी सर्वार्थ सिद्धि और रवि योगों की भांति ही महत्त्वशाली है। सर्वार्थ सिद्धि और रवि योगों में किए जाने वाले सभी कार्य इनमें भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि सिद्धि योग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

अशुभ-योग
(क्रकच, विष, दग्ध, यम-घण्ट, मृत्यु, हुताशन)

कोई भी शुभ काम करना हो तो इन योगों के समय को छोड़कर उसे प्रारम्भ करें। शास्त्र कहते हैं, कि इन योगों में प्रारम्भ किया गया काम या तो सफल होता ही नहीं, या फिर उस काम में भारी विघ्न बाधाएं उपस्थित होंगी। अतः ऊपर बतलाए गए सर्वार्थ सिद्धि, रवि और सिद्धि योगों के समय में यदि क्रकच आदि में से कोई योग आ पड़े तो उस समय को शुभ कार्य के लिए निषिद्ध समझना चाहिए। यात्रा में तो इन छः अशुभ योगों को विशेष रूप से बुरा माना गया है।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग
(बहुमूल्य चीजें खरीदने के लिए विशेष मुहूर्त)

यद्यपि पूर्वोक्त तीन, (सर्वार्थ सिद्धि आदि) शुभ योगों में भी जमीन, हीरे-जवाहरात, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टैलीविजन, आभूषण, घोड़ा, गाय, भैंस आदि बहुमूल्य चीजें खरीदी जा सकती हैं, तथापि इसके लिए त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग ज्यादा महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि कोई चीज़ त्रिपुस्कर योग के समय खरीदी जाए तो वह निकट भविष्य में तिगुनी, द्विपुष्कर योग में खरीदी जाए तो दुगुनी हो जाती है। अतः इन योगों में बहुमूल्य चीजें खरीदिए या बैंक में रुपया जमा करवाइए। इन योगों में मुकद्दमा दायर करना तथा दवा खरीदना अच्छा नहीं समझा जाता।

इन योगों के समय अपनी कोई कीमती चीज बेचिए नहीं, अन्यथा आगे चलकर उससे तिगुनी या दुगुनी बेचने की स्थिति पैदा हो सकती है। धन या अन्य सम्पत्ति के संचय के लिए ये योग अद्वितीय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशी कृ.	२	श.	.. ८	.. २३	रोहि.	मृग.
.. ..	५	बु.	.. २६	दिसं ११	श्रवण	
.. ..	६	बृ.	.. २७	.. १२	धनि.	
.. ..	७	शु.	.. २८	.. १३	शत.	
.. ..	१०	च	पौष १	.. १६	रेव.	
.. ..	१५	श	.. ६	.. २१	मृग	

द्विरागमन मुहूर्त (सं. २०४८ वि.)

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धसमयादि
कार्तिक शु.	११	च	मार्ग ३	नव. १८	उ.भा.	
.. ..	१३	बु.	५	.. २०	अश्वि.	२।२ तक
मार्ग कृ.	१२	च	.. १७	दिस. २	चित्रा	
.. शु.	८	शु.	.. २८	.. १३	शतभिषा	
माघ ..	११	श.	फाल्गु. २	फर १४	मृग.	
फाल्गु.कृ.	३	बु.	.. ८	.. २०	उ.फा.	
.. ..	१०	बु.	.. १५	.. २७	मूल	
फाल्गु शु.	२	श	फाल्गु २३	मार्च ६	उ.भा.	
.. ..	३	र	२८	.. ११	रोहिणी	
.. ..	८	[illegible]	.. २९	.. १२	मृग.	

द्विरागमन में विशेष — विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ मुहूर्त (वि.स. २०४८ वि.)

श्रावण शु.	७	बृ.	श्राव. ३	अग. १८	चित्रा	८।३४ तक
भाद्र कृ.	३	चं.	.. १४	.. २९	शत	१४।१६ तक
	१७ अक्टूबर से ७ नव. तक गुरु सिंह [illegible]					
कार्तिक शु.	७	बृ.	कार्तिक २८	नव. १३	उ.षा.	
.. ..	११	चं.	मार्ग ३	.. १८	उ.भा.	११।१२ बाद
मार्ग कृ.	२	श.	.. ८	.. २३	रोहिणी	
.. शु.	७	शु.	.. २८	दिस. १३	धनिष्ठा	
माघ ..	११	शु.	फा. २	फर. १४ (१९९२)	मृगशिरा	
फाल्गु.कृ.	३	बृ.	.. ८	.. २०	उ.फा.	

नूतन गृह प्रवेश (वि.सं. २०४८ वि.)

वै.शु.	वैशु.१०	बु.	ज्येष्ठ ९	मई २३	उ.फा.	
ज्येष्ठ. कृ.	१०	श.	.. २५	जून ८	रेवती	८।२ बाद
.. शु.	१०	शु.	आषा.७	.. २१	चित्रा	१२।४६ बाद
.. ..	११	श.	.. ८	.. २२	स्वाती	(शुक्ला पक्ष)
.. ..	१३	च.	.. १०	.. २४	अनुराधा	

कार्तिक शु.	११	च	मार्ग ३	नव १८	उ.भा.	
.. ..	१३	बु.	.. ५	.. २०	अश्वि.	२।२ बाद
.. ..	१०	श	मार्ग १५	.. ३०	उ.फा.	
मार्ग कृ.	२	च	मार्ग १७	दिस २	चित्रा	
माघ ..	१०	बृ.	माघ १६	फर. २९ '९२'	अनु.	१४।४० बाद १५।२३ तक

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त (वि.सं. २०४८ वि.)

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धसमयादि
श्राव शु.	६	मं.	श्राव. ३१	अग. १५	चित्रा	
.. ..	७	बु.	.. ३२	.. १६	स्वाती	
.. ..	८	गु.	भाद्र १	.. १७	अनु.	१६।४७ बाद

चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, (२) अक्षय (वैशाख शुक्ल) तृतीया, (३) विजया दशमी, (४) दीपावली (प्रदोष समय) — ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त कहलाते हैं। पंजाबी ग्रामीण जनता इन्हें अबूझ (जिनके लिए ज्योतिषी से पूछने की जरूरत नहीं ऐसे) मुहूर्त कहा करती है। इन मुहूर्तों में विवाहादि के अतिरिक्त कोई भी शुभ काम करने के लिए नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं।

पृष्ठ १९४ का शेष

.. .. ७	मं.	.. २८	मघा	लत्तापात
.. .. १०	श	.. ३०	हस्त	.. ..
मार्ग शु. १	श.	दिसं. ७	मूल	भूकंपपात
.. .. २	र.	.. ८	मूल	.. ..
.. .. ३	चं.	.. ९	उ.षा.	शनिश्रुति
.. .. ४	मं.	.. १०	श्रव.	शनिश्रुति
.. .. ८	शु.	दिसं. १४	उ.भा.	मृत्युबाण
.. .. ९	र.	.. १५	रेवती	[illegible]

मार्ग. शुक्ल १० सं. (१६ दिसं.) से पौष शुक्ल ८ तक (१३ जन-१९९२ ई.) तक सूर्य धनु राशि में।

पौष शु.९	म	जन.१४ (१९९२ई.)	अश्वि.	संक्रान्ति दिन
.. .. १२	शु.	.. १७	पुन.	सूर्य वेध
माघ कृ. २	चं.	.. २१	मघा	शनि वेध
.. .. ५	गु.	.. २४	उ.फा.	लत्तापात
.. .. ७	र.	.. २६	स्वा.	भूकंपपात, [illegible]
.. .. ८	चं.	.. २७	..	.. ..
.. .. १०	बु.	.. २९	अनु.	लत्तापात
०२	बु.	फर. ५	अश्वि.	.. ..
.. .. ९	बु.	.. १२	रोहि.	[illegible]
.. .. १४	चं.	.. १७	मघा	लत्तापात
फाल्गु.कृ.३	बु.	.. २०	हस्त	भूकंपपात
.. .. ४	शु.	.. २१	हस्त	.. ..
.. .. ६	र.	.. २३	स्वा.	मृत्युबाण

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा ये चार विवाह के नक्षत्र-कात्यायन श्रौत-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं। अन्य ऋग्वेदी सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं।

प्रमाणार्थ देखिए — पारस्कर ग्राह्य (कात्यायन) सूत्र — "उदगयने आपूर्यमाण पक्षे कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्।। त्रिषु २ उत्तरादिषु।।" हरिहर भाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है — "उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि, तेषु कतिषु? त्रिषु-त्रिषु, उ.फा., ह., चि.।

उ.षा., श्र., ध.। उ.भा., रे., अश्विनी।" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) पृष्ठ २१८ पर "विवाहे-नक्षत्र निर्णयः" में वेद-व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है, — "चित्रा-श्रवण धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि, तथापि खलग्रहयुतं नक्षत्र, वार्जयेत्।"

और भी देखिए — जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त में अग्राह्य है,—(मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है। ऐसे ही इस नक्षत्र-चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्यत्व (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए। उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन खेद न करते हुए स्वीकार करें।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम (रेलवे टाइम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाइम के बाद अथवा पहिले ही मुहूर्त में स्वीकार करें।

यहाँ विवाह मुहूर्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चांगकार इसकी जटिल गणित प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा [illegible] है।

"[illegible]।"

इन मुहूर्तों में जहां युति वेध, [illegible] आदि दोषों के परिहार किए गए हैं, वहां मुहूर्त नहीं दिए गए हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तन व मन्दे का रिएक्शन आए। इस समय चांदी में अच्छी ...

(१५ से २८ मई तक, सन् १९९१ ई०)

उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

श्री वि. सं. २०४८, शाके १९१३, द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष ५

ग्रह दर्शन -- प्रातः बुध पूर्व कपाल में तथा शनि पश्चिम कपाल में होगा सूर्यास्तानन्तर पश्चिम में शुक्र उससे ऊपर मंगल एव गुरु दिखाई देंगे।

दि.मा. घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	तारीखें प्र	अं	रा	मु	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि
३३	२४	१	बु	२	४०	रो	४८	२६	अ	३३	१२	ब	३	४१	१	१५	२५	२९	वृष	५	२२	७	५	०	२९	५६	३९
क्ष	क्षय	२	बु	५६	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	३०	३	गु	४६	३	मृ	४२	७	शू	२३	३१	तै	२०	१५	२	१६	२६	जि१	मि १५।११	५	२३	७	६	१	०	४४	३१
३४	०	४	शु	३८	४०	आ	३६	२७	धृ	१४	१३	व	११	१२	३	१७	२७	२	मिथुन	५	२१	७	७	१	१	५२	२२
३४	३	५	श	३१	२८	पुन	३१	२८	शू	४०	३१	व	४	५४	४	१८	२८	३	क १३।४१	५	२१	७	७	१	२	५०	९
३४	६	६	र	२५	४१	पु	२७	४०	वृ	२०	४२	तै	२४	४१	५	१९	२९	४	कर्क	५	२०	७	८	१	३	४७	५५
३४	९	७	सो	२१	११	आश्ले	२४	८	ध्रु	[illegible]	४६	व	२१	१९	६	२०	३०	५	सिं २४।८	५	२२	७	९	१	४	४५	४०
३४	१२	८	मं	१७	५७	म	२३	४३	व्या	६०	८	व	१७	४७	७	२१	३१	६	सिंह	५	२४	७	९	१	५	४३	२४
३४	१५	९	बु	१६	२	पू.फा	२३	४४	ह	३६	२५	कौ	१६	२	८	२२	ज्ये१	७	क ४९।१५	५	२८	७	१०	१	६	४१	७
३४	१८	१०	गु	१५	२०	उ.फा	२५	१५	व	३३	४३	व	१५	२०	९	२३	२	८	कन्या	५	२८	७	१०	१	७	३८	४९
३४	२१	११	शु	१६	३	ह	२७	४४	सि	३१	४७	वि	१६	३	१०	२४	३	९	तु ४९।३६	५	२८	७	११	१	८	३६	३०
३४	२४	१२	श	१७	४६	चि	३१	११	व्य	३१	३	बा	१७	४६	११	२५	४	१०	तुला	५	२७	७	१२	१	९	३४	९
३४	२६	१३	र	२०	३६	स्वा	३५	४८	व	३१	१	तै	२०	३६	१२	२६	५	११	तुला	५	२७	७	१२	१	१०	३१	४८
३४	२८	१४	सो	२४	२५	वि	४१	३२	प	३१	४७	व	२४	२५	१३	२७	६	१२	वृ २१।१८	५	२६	७	१३	१	११	२९	२६
३४	३०	१५	मं	२९	१	अनु	४७	५८	शि	३३	७	ब	२९	१	१४	२८	७	१३	वृश्चिक	५	२६	७	१३	१	१२	२६	५२

चन्द्र दर्शन मु. ४५, मंगल कर्क में ४२।५, म. सूर्य वृष में ३।२९ A
द्वितीया तिथिक्षय
श्रीपरशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया, त्रिलोक मु. प्रा.
म १२/१२ उ., ३८।२० मा., शनि वक्री १०।४५
मंगल पुष्य में २७।४०, गुरु पुष्य ४ में ४९।३७, श्री शंकराचार्य जयन्ती
श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
म २१।११ उ., ४९।३४ मा., श्री गंगा जन्म
सायन मिथुन में सूर्य ३३।२६ शुक्र पुन. में ३१।३५
बुध भरणी में १८।२०, शाक ज्येष्ठ प्रा., श्री जानकी जयन्ती
म ४५।४५ उ.,
म १६।३ मा., मोहिनी एकादशी (स)
सूर्य रोहि. में २७।०, शनि प्रदोषव्रत
नृसिंह जयन्ती (सायं व्यापिनी चतुर्दशी में)
म २४।२५ उ., ५६।४७ मा., श्री सत्यनारायण व्रत
श्री बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, श्री कूर्म जयन्ती B

A म ४५ पुण्यकाल १९।२९ तक, श्री शिवाजी जयन्ती,

B (वैशं सन्निकर्ष व्रतपर्व व्यवस्था), जन्मोत्सव अनन्त श्री वृद्ध शंकराचार्य (कांची मठ)

द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल ८ मंगल इष्ट ०।२

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	३	०	३	२	९	८	२
५	७	२	११	१३	१९	१३	२३	२३
४३	५७	३	२२	३७	२६	४	५८	५८
२०	२२	५७	१०	३९	५४	५०	३४	३४
५७	७०४	३४	८२	८	६६	०	३	३
५४	४०	२४	७	११	५२	२६	११	११
.	.	मा	मा	मा	मा	व	व	व
.	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कु. सूर्योदये

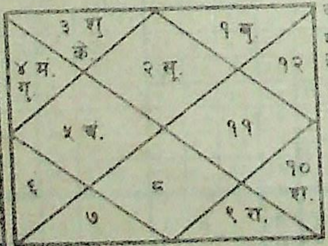

लोक भविष्य -- इस पक्ष में वृष संक्रान्ति के दिन चन्द्र भी वृष में है। इस दिन शुक्र की राशि में सूर्य-चन्द्र का योग अघटित-घटनाओं को जन्म देगा -- "यदि कर्क-संक्रान्तिः ... सूर्ये ... ।" किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। चीन अमेरिकी राष्ट्र एवं अन्य किसी देश विशेष में राजनीतिक विप्लव से हानि हो। भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधन हानि हो। मेष राशि का बुध, तत्पश्चात्-सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बना रहा है, जो कि कीमतों एवं उपभोग्य वस्तुओं में महंगाई से निर्धन वर्ग के लिए परेशानी पैदा करेगा। -- "... ।" शनि. मं. का समसप्तम देश में अप्रत्याशित घटनाओं को जन्म देगा। ग्रहचाल और बाजार का रुख -- १५ मई के लगभग गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, अफीम, लाख, लाल मिर्च एवं अन्य लाल रंग की चीजों में विशेष तेजी के झटके आएंगे। १७ मई के लगभग अचानक हाजर एवं वायदा व्यापार में एक तरफा लाइन बन सकती है -- सावधानी से काम करें। १८ से २१ मई तक तेल, तिलहन में मन्दे का रुख रहे। २१ मई के लगभग सोने में झटके के साथ तेजी बनेगी। पखवाड़े में तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी एवं अनाजों में तेजी आए। आकाश लक्षण -- मई १५, १६, १७, २१ २५ को भूटान, सिक्किम, आसाम, बिहार में कहीं बादल चाल व कहीं खण्ड वृष्टि हो, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र. तापमान ऊंचा रहे। आंधी से वृक्षों को हानि हो। शकुन विचार -- वैशाख शु. ५ को सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त यदि पूर्व की हवा चले, तो अन्न का संग्रह करना चाहिए, आगे तेजी से लाभ लें। यदि वैशाख शुक्ल पंचमी को सन्ध्या के समय हवा का जोर हो एवं बादल हों तो भाद्रपद में धान्य तेज रहें।

कु. सूर्योदये

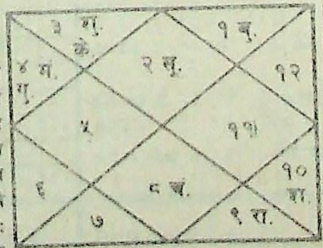

द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल १५ मंगल इष्ट ०।१०

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	३	०	३	२	९	८	२
१२	७	७	२१	१४	२६	१२	२७	२७
२७	५	८	४७	३८	४४	४९	३६	३६
२	२१	४३	४५	१६	५३	४७	१८	१८
५७	७२०	३५	९८	९	६३	१	३	३
३४	२८	९	५६	६	७	६	११	११
.	.	मा	मा	मा	मा	व	व	व
.	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ६

(२९ मई से १२ जून तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – बुध ६ जून को पूर्व में अस्त होगा। सूर्योदय से पूर्व शनि पश्चिम की ओर नत दीखेगा। सूर्यास्त बाद पश्चिम कपाल में मंगल, गुरु एवं शुक्र परस्पर आसन्न दीखेंगे।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३४	३३	१	बु	३४	४२	ज्ये	५५	९	सि	३५	९	बा	१	५५	१५	२९	८	१४	वृ ५५।१९	५	२६	७	१४	१	१३	२४	२८
३४	३५	२	गु	४०	४९	मू	६०	०	मा	३७	३७	तै	७	४५	१६	३०	९	१५	धनु	५	२५	७	१५	१	१४	२१	५५
३४	३७	३	शु	४७	१७	मू	२	४९	ध्रु	४०	२१	ब	१४	६	१७	३१	१०	१६	धनु	५	२५	७	१५	१	१५	१९	२५
३४	४०	४	श	५३	४२	पू.षा	१०	४२	व्या	४३	६	ब	२०	२९	१८	जू १	११	१७	म २७।३७	५	२५	७	१६	१	१६	१६	५४
३४	४२	५	र	५९	३५	उ.षा	१८	२२	ह	४५	२९	कौ	२६	३८	१९	२	१२	१८	मकर	५	२५	७	१६	१	१७	१४	२३
३४	४३	६	च	६०	००	श्र	२५	२२	व	४७	१०	ग	३२	१	२०	३	१३	१९	कु ५८।१८	५	२४	७	१७	१	१८	११	५२
३४	४५	६	मं	४	२९	ध	३१	१५	वै	४७	५५	व	४	२९	२१	४	१४	२०	कुम्भ	५	२४	७	१७	१	१९	९	२०
३४	४७	७	बु	७	५६	शत	३४	३१	वि	४७	१५	ब	७	५६	२२	५	१५	२१	कुम्भ	५	२४	७	१८	१	२०	६	४९
३४	४९	८	गु	९	३१	पू.भा	३७	५५	प्री	४५	४	कौ	९	३१	२३	६	१६	२२	मी २२।१०	५	२४	७	१८	१	२१	४	१८
३४	५०	९	शु	९	६	उ.भा	३८	१८	आ	४१	१४	ग	९	६	२४	७	१७	२३	मीन	५	२४	७	१९	१	२२	१	३६
३४	५२	१०	श	६	३६	रे	३६	३८	सौ	३५	४३	वि	६	३६	२५	८	१८	२४	मे ३६।३८	५	२४	७	१९	१	२२	५९	०
३४	५३	११	र	२	६	अ	३३	७	शो	२८	४२	बा	२	६	२६	९	१९	२५	मेष	५	२३	७	२०	१	२३	५६	२८
अ	क्षय	१२	र	५५	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५४	१३	च	४८	१९	भ	२८	४	अ	२०	२४	ग	२२	७	२७	१०	२०	२६	वृ ४१।३०	५	२३	७	२०	१	२४	५३	४८
३४	५५	१४	मं	३९	४२	कृ	२१	५०	सु	११	५	वि	१४	१	२८	११	२१	२७	वृष	५	२३	७	२१	१	२५	५१	१२
३४	५६	३०	बु	३०	३०	रो	१४	५१	धृ	१ ५०	३ ६०	च	४	६	२९	१२	२२	२८	मि ४९।१३	५	२३	७	२१	१	२६	४८	३४

बुध कृत्तिका में ५।१२, शुक्र कर्क में ५६।३२

भ. १४।३ उ., ४७।१७ या.,

बुध वृष में ४५।५२, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, जून प्रारम्भ

पञ्चक प्रा. ५८।१८, शुक्र पुष्य में १०।४२

भ. ४।२९ उ. ३६।१२ या.,

बुध रोहि. में ५९।३२, बुध पूर्व में अस्त

भ. ३७।५१ उ.

भ. ६।३६ या., पञ्चक स. ३६।३८, सूर्य मृग में २१।४८, अपरा A

गुरु आश्ले. १ में ३४।३०, अपरा एकादशी व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी,

द्वादशी तिथिक्षय

भ. ४८।१९ उ., सोम प्रदोष व्रत,

भ. १४।१ या.

वट सावित्री व्रत (अमा. पक्ष), भावुका अमा.

A एकादशी व्रत (स्मा.), भद्रकाली एकादशी पंजाब

ज्येष्ठ कृष्ण ८ गुरु, इष्ट ०।१५

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	३	१	३	३	९	८	२
२१	२४	१२	८	१६	६	१२	२७	२७
४	१४	२६	१	३	१२	४६	७	७
२६	११	२९	४३	२१	२१	३२	४१	४१
[illegible]	[illegible]	३५	[illegible]	७	६०	१	३	३
२६	३०	३०	३०	४९	२१	५५	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

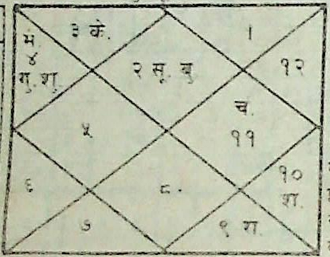

लोक भविष्य – इस पक्ष में मंगल-गुरु का शनि के साथ समसप्तक विश्व में कुछ राष्ट्र नायकों के समक्ष विषम-समस्याओं को उपस्थित करेगा। सीमा-प्रान्तों पर सैनिक गतिविधि चिन्ता का कारण बनेगी। किसी राष्ट्र विशेष की मध्यस्थता से समस्याएं हल हों। इस पक्ष में तिथि वृद्धि एवं तिथिक्षय होना जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दे का सूचक है, – "जेठि पखवारे तिथि बढ़े घाटी में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके महंगाई हट जाय।" – फिर भी शनि – मं. का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध राजनैतिक अस्थिरता से मन्दा न होने देगा, आगे वर्षा की कमी एवं अफवाहों से तेजी रहेगी, जनता में असन्तोष बढ़े।

ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, घी में अच्छी तेजी बनेगी। रूई में अच्छी मन्दी के बाद तेजी आए। १ जून के करीब सभी व्यापारिक वस्तुओं में घटा बढ़ी चलेगी। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रूई, कपास, तिल में तेजी का रुख रहेगा। ६ जून के लगभग अनाजों एवं घी में मन्दे का रिएक्शन आएगा। पक्ष मध्य से पक्षान्त तक तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं छोटे मोटे अनाजों में तेजी का वातावरण रहे। **आकाश लक्षण** – मई ३०, जून १, ३, ६ से ९ के लगभग बम्बई, गोआ, सिक्किम, सूरत, भूटान, शिलांग, आसाम, काठमाण्डू आदि में वर्षा होगी। उत्तरी भारत में लू से जन हानि के योग हैं।

कुं. सूर्योदये

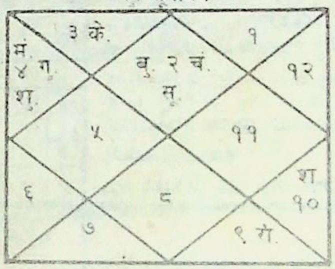

ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुध, इष्ट ०।१८

सू.	च	म	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
१	१	३	१	३	३	९	८	२
२६	११	१६	२०	१७	१२	१२	२६	२६
४८	३९	०	२६	५	८	३३	४८	४८
५०	२४	१४	५१	१०	५७	४१	३७	३७
५७	[illegible]	३५	१२०	१०	५७	२	३	३
२९	३८	४४	३५	३१	३	२६	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मृग.	रोहि.	पुन.	रोहि.	[illegible]	पुन.	[illegible]	उ.षा.	पू.षा.

शकुन विचार – यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की वायु चले तो घी, तिल तेल खरीदें, आश्विन में लाभ हो। यदि [illegible] तो तिलहन के स्टाक से चार मास में उत्तम लाभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१३ से २७ जून तक, सन् १९९१ ई०)

शकुन विचार – यदि ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को दक्षिण की वायु ... के स्टाक से चार मास में उत्तम लाभ होगा।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ७

(१३ से २७ जून तक, सन् १९९१ ई०)
उत्तर-दक्षिण अयन, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – बुध अस्त चल रहा है। सूर्योदय से पूर्व शनि पश्चिम की ओर झुका दीखेगा। सूर्यास्त उपरान्त मंगल, गुरु, शुक्र पश्चिम कपाल में होंगे।

घ	प	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	म.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा	अं.	क.	वि.	
६	५७	१	ग	२१	९	मृ	७	३५	ग	४०	२१	ब	२१	९	३०	१३	२३	२९	मिथुन	५	२३	७	२१	१	२७	४५	५५	चन्द्रदर्शन मु. १५, मंगल आश्ले में ७।१५, बुध मृग में २०।३० करवीर व्रत,
४	५९	२	श	१२	२	आ			वृ	३०	१८	कौ	१२	२	३१	१४	२४	जि १	क ४०।२२	५	२३	७	२२	१	२८	४३	१७	राहु पू.षा. ४ में, केतु पुन. २ में ४२।४२, रम्भा तृतीया, त्रिलिहत्र म. प्रा.,
५	०	३	श	३	३१	पु	४८	१३	ध्रु	२०	५३	ग	३	३१	आ १	१५	२५	२	कर्क	५	२३	७	२२	१	२९	४०	३८	भ २९।४८ उ., ५६।५ या., म. सूर्य मिथुन में २०।१७ म. ३०, पुण्यकाल A
क्ष	अम	४	श	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय
३५	१	५	र	४९	४८	आश्ले	४३	४९	व्या	१२	२४	ब	२२	४६	२	१६	२६	३	मि ४३।४९	५	२४	७	२२	२	०	३७	५७	बुध मिथुन में २३।०, शुक्र आश्ले. में ४४।३०
३५	१	६	च	४५	२	म	४०	५२	ह			कौ	१३	२४	३	१७	२७	४	सिंह	५	२४	७	२३	२	१	३५	१६	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी
३५	१	७	म	४१	५७	पूफा	३९	३५	सि	५४	१४	ब	१३	२१	४	१८	२८	५	क ५४।४०	५	२४	७	२३	२	२	३२	३५	भ ४१।५३ उ.
३५	१	८	बु	४०	३५	उफा	३९	४८	व्य	५०	५३	वि	११	१६	५	१९	२९	६	कन्या	५	२४	७	२३	२	३	२९	५३	भ ११।१६ या., बुध आर्द्रा में २५।२० मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)
३५	१	९	वृ	४०	५१	ह	४१	५९	व	४८	४९	गर	१०	४३	६	२०	३०	७	कन्या	५	२४	७	२४	२	४	२७	१०	
३५	१	१०	शु	४२	४१	चि	४५	३२	प	४०	४८	तै	११	४६	७	२१	३१	८	तु १३।४६	५	२४	७	२४	२	५	२४	२६	सायन कर्क में सूर्य ५३।१७ दक्षिण अयन, वर्षा ऋतु प्रा., श्री गंगा दशहरा
३५	१	११	श	४५	५४	स्वा	५०	२५	शि	४८	१२	ब	१४	१७	८	२२	आ १	९	तुला	५	२४	७	२४	२	६	२१	४२	भ १४।१८ उ., ४५।५४ या., सूर्य आर्द्रा में १९।१५ B
३५	१	१२	र	५०	१३	वि	५६	२०	सि	४९	१६	ब	१८	४	९	२३	२	१०	वृ ३९।५१	५	२५	७	२४	२	७	१८	५७	चम्पक द्वादशी
३५	१	१३	च	५५	२८	अनु	६०	०	सा	५१	३	कौ	२२	५०	१०	२४	३	११	वृश्चिक	५	२५	७	२४	२	८	१६	१३	सोम प्रदोष व्रत
३५	१	१४	म	६०	०	अनु	३	८	शु	५३	१९	व	२०	२४	११	२५	४	१२	वृश्चिक	५	२५	७	२५	२	९	१३	२९	बुध पुन. में ३९।१५
३५	०	१५	बु	१	१९	ज्ये	१०	३०	शु	५५	५५	ब	१	१९	१२	२६	५	१३	ध १०।३०	५	२५	७	२५	२	१०	१०	४०	भ १।१९ उ. २८।२८ या., वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) C
३५	०	१५	वृ	७	३६	मू	१८	१४	ब्र	५८	२९	ब	७	२६	१३	२७	६	१४	धन	५	२६	७	२५	२	११	७	५२	शुक्र आश्ले. २ में ४७।३

A ४।१७ बाद श्री महाराणा प्रताप जयन्ती, बलिदान दिन श्री गुरु अर्जुन देव जी, उमा पूजन व्रत
B निर्जला एकादशी शाक आषाढ़ प्रा., C श्री सत्यनारायण व्रत

ज्येष्ठ शुक्ल ८ बुध इष्ट ०।१५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	३	२	९	८	२
३	१	२०	५	१८	१८	१२	२६	२६
३०	१६	११	४५	२०	४५	१४	२६	२६
१०	३५	४	१७	३९	४६	५६	२१	२१
५७	७८७	३५	१३०	११	५८	२	३	३
१७	१२	४९	५४	४	४४	४९	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

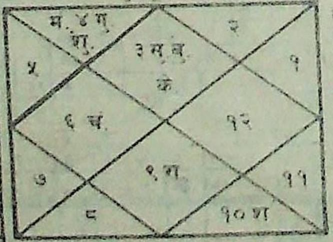

लोक भविष्य – इस पक्ष में शनि मंगल का समसप्तक विश्व के किसी देश विशेष में अकाल, कहीं अग्निकाण्ड, कहीं दुर्घटना से हानि का संकेत देता है। म. गु. का शनि के साथ पूर्ण प्रतियोग भी उ.प्र., म.प्र., पंजाब, जम्मू-कश्मीर आदि प्रान्तों एवं लंका आदि देशों में विशेष घटना चक्र, विप्लव, शस्त्रभय, दुर्भिक्ष आदि का संकेत देता है – "मन्दार सौरि-कुरराज मन्त्री पविक शशी समसप्तके वा। अयोध्य लंकपुर-मध्यप्रदेशे क्षुधामय शस्त्रभय करोति ।।" इस पक्ष में सूर्य-बुध, केतु एकत्र हैं, अतः खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी, कहीं वर्षा की कमी, किंवा कहीं बाढ़ की स्थिति से अन्न हानि दुर्भिक्ष का वातावरण बनेगा। ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में रुई तेज, चांदी में विशेष मन्दे का झटका आ सकता है, १४ जून से कपास, जीरा, सरसों, घी, ज्वार, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति के अनाज में तेजी बनेगी। २५ जून के लगभग चांदी, रुई, सूत, कपास, सण में खासी मन्दी आने का योग है। पक्षान्त में प्रत्येक-व्यापारिक-वस्तु तेज रहे। आकाश लक्षण – शनि-म. का दृष्टि सम्बन्ध कुछ प्रान्तों में वर्षा का अवरोधक होगा। कुछ स्थानों पर बिजली गिरने की घटना से हानि होगी। जून १३, १४, १५, १६, एवं १९ जून को सिक्किम, भूटान, शिलांग, बम्बई आदि में जोरदार वर्षा होगी। २१, २२, २५, २७ जून को पंजाब, हि.प्र., हर., दिल्ली, यू.पी. में अनेकत्र वर्षा होगी। परन्तु सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में दिन में प्रवेश करेगा, अतः अनेकत्र बादल आकर भी उड़ जाएंगे। शकुन विचार – यदि ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को बादल गरजें, आकाश मेघाच्छन्न रहे, दक्षिण की हवा चले, तो तिल का स्टाक करें, आगे कार्तिक में उत्तम लाभ होगा।

कुं. सूर्योदये

ज्येष्ठ शुक्ल १५ गुरु इष्ट ०।१०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	३	२	३	३	९	८	२
११	९	२४	२२	१९	२४	१९	२६	२६
८	४७	५९	३७	४०	४३	४९	०	०
९	२	४६	२७	५५	२	८	५५	५५
५७	८०१	३६	११६	११	४९	३	३	३
११	४७	१४	७	३६	४६	३१	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शक १९१३, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८ — **(२८ जून से ११ जुलाई तक, सन् १९९१ ई०) दक्षिणायन, वर्षा ऋतु, उत्तर गोल**

ति.मा घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प.	अं.	श.	म.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३५	०	१	शु.	१३	५८	पूषा	२६	०	ऐ	६०	०	कौ	१३	५८	१४	२८	७	१५	म.४२।५३	५	२६	७	२५	२	१२	५	३
३४	५९	२	श.	२०	८	उ.षा	३३	३३	वै	१	१५	ग	२०	८	१५	२९	८	१६	मकर	५	२६	७	२५	२	१३	२	१५
३४	५८	३	र.	२५	५२	श्र.	४०	३५	वै	३	३६	वि	२५	५२	१६	३०	९	१७	मकर	५	२७	७	२५	२	१३	५९	२८
३४	५७	४	च.	३०	४५	ध	४६	४०	वि	५	२५	बा	३०	४५	१७	जु.१	१०	१८	कु.१३।३७	५	२७	७	२५	२	१४	५६	४०
३४	५६	५	मं.	३४	२९	शत.	५१	४४	प्री	६	२५	कौ	२	३७	१८	२	११	१९	कुम्भ	५	२७	७	२५	२	१५	५३	५३
३४	५५	६	बु.	३६	४०	पू.भा	५५	१७	आ	६	२६	व.	५	४५	१९	३	१२	२०	मी.३९।२३	५	२८	७	२५	२	१६	५१	५
३४	५४	७	गु.	३७	२८	उ.भा	५७	७	सौ	५	१४	वि	७	७	२०	४	१३	२१	मीन	५	२८	७	२५	२	१७	४८	१७
३४	५३	८	शु.	३६	१९	रे	५७	११	शो	[illegible]	[illegible]	बा	६	५३	२१	५	१४	२२	मे.५७।११	५	२९	७	२५	२	१८	४५	३०
३४	५२	९	श.	३३	२२	अ	५५	२८	सु.	५५	६	तै.	४	५१	२२	६	१५	२३	मेष	५	२९	७	२५	२	१९	४२	४३
३४	५०	१०	र.	२८	३८	भ	५२	१	धृ.	४६	११	वि.	२८	३८	२३	७	१६	२४	मेष	५	३०	७	२५	२	२०	३९	५६
३४	४८	११	च	२२	२०	कृ.	४७	८	शू.	३८	४	बा.	२२	२०	२४	८	१७	२५	वृ.५।४७	५	३०	७	२४	२	२१	३७	१०
३४	४६	१२	मं	१४	४५	रो	४१	६	गं	२८	५६	तै.	१४	४५	२५	९	१८	२६	वृष	५	३१	७	२४	२	२२	३४	२४
३४	४४	१३	बु.	६	१२	मृ.	३४	१४	वृ.	१९	३	व.	६	१२	२६	१०	१९	२७	मि.७।४१	५	३१	७	२४	२	२३	३१	३९
क्ष	क्षय	१४	बु.	५७	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	.०	०	०
३४	४२	३०	गु.	४७	४०	आ.	२६	५९	ध्रु.	[illegible]	[illegible]	च.	२२	२१	२७	११	२०	२८	मिथुन	५	३२	७	२४	२	२४	२८	५४

ग्रह दर्शन — २८ जून बुध पश्चिम में उदित होगा। अतः सायं पश्चिम में दीखना शुरु हो जाएगा। सूर्यास्त के बाद पश्चिम कपाल में मंगल, गुरु तथा उसके ऊपर शुक्र दिखाई देगा। शनि को प्रातः पश्चिम में देखें।

- (२८ जून) बुध पश्चिम में उदित,
- (२९ जून) भ. ५३।० उ.,
- (३० जून) भ. २५।५२ या., बुध कर्क में ४८।२४, श्री गणेश चतुर्थी
- (१ जुलाई) पञ्चक प्रा. १३।३३, जुलाई प्र.
- (२ जुलाई) बुध पुष्य में ३६।५२, शुक्र मघा सिंह में १५।१८
- (३ जुलाई) भ. ३६।५० उ.,
- (४ जुलाई) भ. ७।९ या.,
- (५ जुलाई) पञ्चक स. ५७।११, मंगल मघा सिंह में १५।२७,
- (६ जुलाई) सूर्य पुन. में १८।१०
- (७ जुलाई) भ. १।० उ., २८।३८ या.
- (८ जुलाई) योगिनी एकादशी (स.)
- (९ जुलाई) भौम प्रदोष व्रत
- (१० जुलाई) भ. ६।१२ उ., ३१।३७ या., बुध आश्ले. में ३३।१५
- चतुर्दशी तिथिक्षय

आषाढ़ कृष्ण ८ शुक्र इष्ट ०।१२

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	३	३	३	४	९	८	२
१८	१७	२९	७	२१	२	११	२५	२५
४५	१८	५०	३४	२५	३	१९	३५	३५
३३	५०	३०	१	२०	२४	२३	२९	२९
५७	[illegible]	३६	[illegible]	१२	४३	३	३	३
१२	५७	३१	४५	३	१२	४७	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

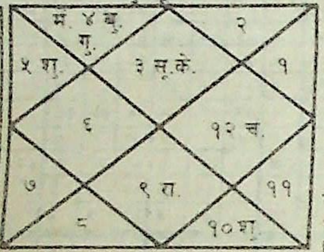

लोक भविष्य — पक्ष के पूर्वार्ध में यान दुर्घटना में हानि एवं राजनीतिज्ञों में अन्त द्वन्द्व चलेगा। पक्ष मध्य के बाद शुक्र एवं मंगल का सिंह राशि में एकत्र होना भारत के एवं पड़ौसी देशों के कुछ प्रान्तों में वर्षा का अवरोधक रहेगा। वायुवेग के साथ बादल उड़ जाएंगे — "सिंह शुक्र जब होय भवानी, चाले पवन, नहीं बरसे पानी।।" साथ ही मघा नक्षत्र का मंगल भी वर्षा का अवरोधक है — "आर्द्रायां च धनिष्ठायां रोहिण्यामुत्तरात्रये। मघायां मंगलो यावत्तावद्वारिदो न वर्षति।" परिणाम स्वरूप अनाज एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी बनेगी। सिंह का मंगल जनता में हत्याकाण्ड, युद्धभय, संघर्ष एवं राजनीति में परिवर्तन, आजीविका साधनों में कमी, प्रजा में रोगकष्ट का संकेत देता है। **ग्रहचाल और बाजार का रुख** — १ जुलाई के लगभग रुई में मन्दे का झटका आए, गुड़, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, सूरजमुखी एवं सोना-चान्दी में तेजी का वातावरण रहे। चना, गेहूं, लाल मिर्च, घी एवं अन्य रसादि पदार्थ तेज हों। यहाँ ४ जुलाई के लगभग शुक्र-म का सम्बन्ध सोना, चांदी आदि धातुओं में गेहूं, चन्दन, लाल मिर्च, तेल सभी तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अन्य करयाणा में तेजी का रुख बनाएगा। **आवश्यक लक्षण** — इस पक्ष में २९ जून, १, २, ४, ६, १० जुलाई को हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ.प्र. एवं अन्य प्रान्तों में अच्छी वर्षा के योग हैं। परन्तु २ जुलाई को सिंह का शुक्र एवं ५ जुलाई को मघा नक्षत्र में मंगल का आना अनेकत्र वर्षा का अवरोधक रहेगा। बादल आएंगे, — वर्षा की कमी अनुभव होगी। **शकुन विचार** — आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को यदि बिजली चमके, बादल गरजे, तो आगे अनाज तेज रहे, दो मास तक वर्षा की कमी से कष्ट रहे। राजनैतिक अस्थिरता भी रहे।

कुं. सूर्योदये

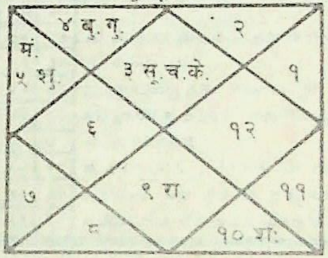

आषाढ़ कृष्ण ३० बुध, इष्ट ५९।५५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	३	३	४	९	८	२
२५	२८	४	१८	२२	६	१०	२५	२५
२६	१९	६	४९	५०	४४	४०	१३	१३
४	४३	५७	१५	४३	१६	४९	१३	१३
५७	१०४	३६	८७	१२	३५	४	३	३
१५	२५	४६	५९	२३	३८	१४	११	११
-	-	मा	मा	मा.	मा.	व	व	व
-	व	उ	उ	उ	उ.	उ	अ	व
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१२ से २६ जुलाई तक, सन् १९९१ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८ शाके १९१३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९ (१२ से २६ जुलाई तक, सन् १९९१ ई०)

दक्षिणायन, वर्षा ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन — इन दिनों शनि सूर्यास्त के समय पूर्व में उदित होकर लगभग सारी रात दीखेगा। सूर्यास्त के बाद बुध, गुरु पश्चिम क्षितिज की ओर जाते हुए तथा मंगल, शुक्र उसके उपर दिखाई देंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. (आषाढ़)	अं. (जुलाई)	श. (आषाढ़)	म. (मुहर्रम)	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४०	१	शु	३८	२९	पुन	१९	४६	ह	४८	१२	कि	१३	५	२८	१२	२१	२९	क ६।३४	५	३२	७	२४	२	२५	२६	९	
३४	३८	२	श	३९	५२	पु	१२	५९	व	३८	३४	बा	४	१०	२९	१३	२२	३०	कर्क	५	३३	७	२३	२	२६	२३	२५	चन्द्रदर्शन मु ४५ जगदीश रथोत्सव (पुरी) (पुष्ययोग १२ घ. ४९ मि तक)
३४	३६	३	र	२२	१२	आश्ले	७	२	सि	२९	४८	व	२२	१२	३०	१४	२३	मु १	सि ७।२	५	३३	७	२३	२	२७	२०	४०	भ. ४९।३ उ., गुरु आश्ले. ३ में २१।२५. A
३४	३४	४	च	१५	५४	म			व्य	२२	१२	वि	१५	४४	३१	१५	२४	२	सिंह	५	३४	७	२३	२	२८	१७	५७	भ १५।४४ या.
३४	३२	५	म	११	१३	उफा	५९	१०	व	१५	४६	बा	११	१३	श्रा १	१६	२५	३	क १३।१३	५	३४	७	२२	२	२९	१५	१४	म. सूर्य कर्क में ४६।५७ म., पुण्यकाल १६।५७ बाद कुमार षष्ठी B
३४	३०	६	बु	८	३०	ह	५८	३०	प	११	९	गै	८	२०	२	१७	२६	४	कन्या	५	३५	७	२२	३	०	१२	२९	विवस्वत् सप्तमी
३४	२७	७	बृ	७	२७	चि	६०	०	शि	७	५९	व	७	२७	३	१८	२७	५	त २९।४५	५	३५	७	२२	३	१	९	४६	भ. ७।२७ उ., ३७।५८ या.
३४	२५	८	शु	८	२९	चि	०	५९	सि	६	२०	ब	८	२९	४	१९	२८	६	तुला	५	३६	७	२१	३	२	७	३	
३४	२१	९	श	११	१६	स्वा	५	१२	सा	६	३	कौ	११	१६	५	२०	२९	७	वृ ५४।३०	५	३६	७	२१	३	३	४	२०	सूर्य पुष्य में १६।२५, (बुध मघा सिंह में २५।२५)
३४	२०	१०	र	१५	३४	वि	१०	५६	शु	६	५८	त	१५	३४	६	२१	३०	८	वृश्चिक	५	३७	७	२०	३	४	१	३८	भ. ४८।१६ उ.
३४	१७	११	चं	२०	५८	अनु	१७	४५	शु	८	४७	वि	२०	५८	७	२२	३१	९	वृश्चिक	५	३८	७	२०	३	४	५८	५६	भ. २०।५८ या., हरिशयनी एकादशी व्रत (म.)
३४	१४	१२	म	२७	३	ज्ये	२५	१४	ब्र	११	१०	बा	२७	३	८	२३	श्रा. १	१०	ध २५।१४	५	३८	७	१९	३	५	५६	१३	सायन सिंह में सूर्य २०।७, शक श्रावण प्रा., वक्री शनि उ.षा. ४ में ५२।४५
३४	११	१३	बु	३३	२८	मू	३३	३	ऐं	१३	५२	कौ	०	१६	९	२४	२	११	धनु	५	३९	७	१९	३	६	५३	३१	प्रदोष व्रत
३४	८	१४	गु	३९	४४	पूषा	४०	४४	वै	१६	३४	व	६	३६	१०	२५	३	१२	म ५७।३४	५	३९	७	१८	३	७	५०	५०	भ. ३९।४४ उ., मेला ज्वालामुखी (कश्मीर)
३४	६	१५	शु	४५	३७	उषा	४८	३	वि	१९	१	वि	१२	४०	११	२६	४	१३	मकर	५	४०	७	१८	३	८	४८	८	भ. १२।४० या., मंगल पू.फा. में ५६।४२, गुरु पूर्णिमा, व्यास C

A मुहर्रम मास प्रा. (हिजरी सन १४१२) प्रा.

B (डेखें सन्निग्ध व्रतपर्व व्यवस्था),

C पूजा, श्री सत्यनारायण व्रत, संन्यासियों का चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ, सायं वायु-परीक्षा, शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत

आषाढ़ शुक्ल ८ शुक्र इष्ट ५९।४८

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	३	३	४	९	८	२
३	१८	९	२९	२४	१०	१०	२४	२४
४	५२	१	३०	३०	५१	१६	४७	४७
५	४३	५६	१८	५१	१	१३	४७	४७
५७	७११	३७	६९	१२	२४	४	३	३
१६	५२	२	२९	४०	४	२५	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४	४	३	४	३	४	१	४	२
पुन.	स्वाती	मघा	आश्ले.	आश्ले.	मघा	श्रवण	पूषा	पुन.

कुं. सूर्योदये

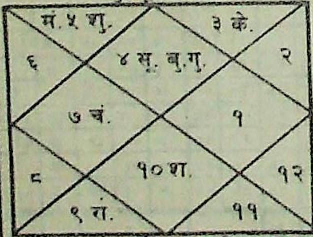

लोक भविष्य — यहां कर्क संक्रान्ति को क्रूरवार होने से अनाजों में किंवा प्रतिदिन उपभोग्य आवश्यक वस्तुओं में तेजी से जनता का आक्रोश बढ़ेगा — "आषाढ़े कर्क-संक्रान्ती क्रूरवारो यदा भवेत्। तदा दुर्भिक्षमादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता।" प्रधान नेताओं को मंहगाई रोकने के लिए अंकुश लगाना पड़ेगा। इस पक्ष में बुध का मघा नक्षत्र एवं सिंहराशि में प्रवेश होगा। मं.बु.शु. का एक राशिस्थ होना भी कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं कृषक वर्ग के लिए भी यह समय अनुकूल नहीं। मघास्थ बुध का फल इस प्रकार कहा है, — "मघा बुधेऽल्प वृष्टिश्च धान्यनाश: प्रजाक्षयम्।।" इस पक्ष में वक्र शनि उ.षा. ४ में आता है, — मुस्लिम देशों में किंवा चीन आदि में जनहानि एवं रोग से हानि हो। **व्यवसाय और बाजार का रुख** — १४ जून के लगभग घी, तेल में तेजी, व्यापारिक-वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहेगा। २० जुलाई के लगभग सावधानी से व्यापार करें, गुड़, खाण्ड, शक्कर में झटके के साथ मन्दा आने का योग है। पश्चात् में अनाज, रुई, कपास, दाख, छुहारा तेज रहें। **आकाश लक्षण** — इस पक्ष में सिंह का शुक्र एवं मघा नक्षत्रस्थ मंगल वर्षा में अवरोधक है — "सिंह शुक्र अब होय भवानी। चाले पवन नहीं बरसे पानी।" वर्षा का वातावरण बनकर भी कुछ भागों में वर्षा की कमी अनुभव होगी। पुनरपि जुलाई १३,१४,१५,१६,१९,२०,२१,२२ को हि.प्र., पंजाब, हरियाणा आदि उत्तरी प्रान्तों में वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार** — यदि आषाढ़ शुक्ल पंचमी को पश्चिम की वायु चले, बादल गरजें, वर्षा हो, इन्द्र धनुष भी दिखाई दे तो अन्न का संग्रह करने से कार्तिक में लाभ होगा। यदि आषाढ़ी पूर्णिमा को चन्द्रमा के चारों ओर परिवेष हो तो फसल उत्तम, जनता सुखी रहे।

कुं. सूर्योदये

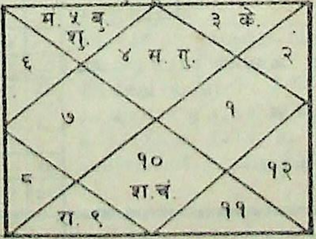

आषाढ़ शुक्ल १५ शुक्र इष्ट ५९।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	४	४	३	४	९	८	२
९	१२	१३	६	२६	१३	९	२४	२४
४५	१७	२१	३९	०	१	४५	२५	२५
३	४०	४७	२	१२	२९	६	३२	३२
५७	७२०	३७	४९	१२	१०	४	३	३
१९	३३	१५	१६	५२	५२	२८	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	ह	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	१	१	२	३	४	४	४	२
पुष्य	श्रवण	पूफा	मघा	आश्ले.	मघा	उषा	पूषा	पुन.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८ शाक १९१३, श्रावण-कृष्ण पक्ष १० | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक

(२७ जुलाई से १० अगस्त तक, सन् १९९१ ई०)
दक्षिणायन, वर्षा ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – गुरु ५ अगस्त को अस्त होगा। सूर्यास्त के बाद शनि पूर्व में दिखाई देगा। बुध, शुक्र, मंगल पश्चिम में देखे जा सकेंगे।

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ	प	करण	घ	प	प. (श्रावण)	अं. (जुलाई)	श. (श्रावण)	म. (मुहर्रम)	प्रवेशकाल घ. प.	सूर्योदय घं.	मि	सूर्यास्त घं.	मि	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३	१	श	५०	५२	श्र	५४	४४	प्री	२१	३	बा	२१	१२	१२	२७	५	१४	मकर	५	४१	७	१७	३	९	४५	२८	
३४	०	२	र	५५	१३	ध	६०	०	आ	२२	३०	तै	२३	२	१३	२८	६	१५	क २७।३८	५	४१	७	१७	३	१०	४२	४८	पञ्चक प्रा. २७।३८, शुक्र पू.फा. में ५२।०, अशून्य शयन व्रत A
३३	५७	३	च	५८	३५	ध	०	३१	सौ	२३	१२	व	२६	५४	१४	२९	७	१६	कुम्भ	५	४२	७	१६	३	११	४०	९	भ. २६।५४ उ., ५८।३५ या.,
३३	५४	४	म	६०	०	श	५	२१	शो	२३	५	व	२९	४०	१५	३०	८	१७	मी ५३।१८	५	४३	७	१५	३	१२	३७	३१	गुरु आश्ले. ४ में ४।३८, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३३	५०	५	बु	०	४६	पू.भा	९	३	अ	२२	०	बा	०	४६	१६	३१	९	१८	मीन	५	४३	[illegible]	१५	३	१३	३४	५४	नाग पंचमी (बंगाल)
३३	४७	५	गु	१	४०	उ.भा	११	२८	सु	१९	५४	तै	१	४०	१७	अग१	१०	१९	मीन	५	४४	७	१४	३	१४	३२	१७	शुक्र वक्री ५२।१८, अगस्त प्रा., श्री लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि
३३	४४	६	शु	१	१५	रे	१२	३५	धृ	१६	४३	व	१	१५	१८	२	११	२०	मे १२।३५	५	४४	७	१३	३	१५	२९	४१	भ. ११।१५ उ., ३०।२० या., पञ्चक स. १२।३५, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ
अ	क्षय	७	श	५९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३३	४१	८	श	५६	०५	अ	१२	१७	शू	१२	२४	बा	२७	४५	१९	३	१२	२१	मेष	५	४५	७	१२	३	१६	२७	६	सूर्य आश्ले. में १३।५
३३	३७	९	र	५१	३२	भ	१०	३३	ग	६	५५	तै	२२	४८	२०	४	१३	२२	वृ २४।४८	५	४६	७	१२	३	१७	२४	३४	वक्री शुक्र मघा में ५७।५२
३३	३३	१०	च	४५	३९	कृ	७	३१	वृ	[illegible]	[illegible]	व	१८	३५	२१	५	१४	२३	वृष	५	४६	७	११	३	१८	२२	२	भ. १८।३६ उ., ४५।३९ या., गुरु अस्त
३३	३०	११	म	३८	४०	रो	[illegible]	[illegible]	व्या	४४	१०	ब	१२	९	२२	६	१५	२४	मि ३०।३०	५	४७	७	१०	३	१९	१९	३१	कामिका एकादशी (सं.)
३३	२६	१२	बु	३०	५०	आ	५१	५८	ह	३५	८	कौ	४	४५	२३	७	१६	२५	मिथुन	५	४८	७	९	३	२०	१७	२	बुध वक्री ४०।५८ प्रदोष व्रत
३३	२३	१३	गु	२२	२७	पुन	४५	३०	व	२५	३२	व	२२	२७	२४	८	१७	२६	क ३२।७	५	४८	७	९	३	२१	१४	३४	भ. २२।२७ उ., ४८।८ या.,
३३	२०	१४	शु	१३	५०	पु	३८	५६	सि	१५	५५	श	१३	५०	२५	९	१८	२७	कर्क	५	४९	७	८	३	२२	१२	७	शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ,
३३	१५	३०	श	५	२०	आश्ले	३२	४२	व्य	५६	५०	ना	५	२०	२६	१०	१९	२८	सि ३२।४२	५	४९	७	७	३	२३	९	४२	हरियाली अमावस, शनैश्चरी अमावस

गुरु अस्त
५ अगस्त

A जन्मोत्सव अनन्त श्री शंकराचार्य, जयेन्द्र सरस्वती (कांची मठ)

श्रावण कृष्ण ८ शनि इष्ट ५९।२३

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	४	४	३	४	९	८	२
१७	२४	१८	११	२७	१३	९	२४	२४
३	४	२०	२९	४३	२६	९	०	०
३६	४४	४९	१३	४७	५६	३५	६	६
[illegible]	[illegible]	३७	१७	१३	७	४	३	३
२९	४१	३२	२८	२	६	२३	११	११
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले	मघा	पू.फा	मघा	आश्ले	पू.फा	उ.षा	पू.भा	पुन

कं. सूर्योदये

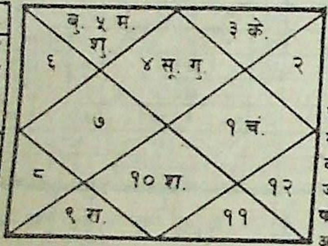

लोक भविष्य – इस पक्ष में शुक्र-बुध वक्री हो रहे हैं, शनि पहिले ही वक्री चल रहा है; अतः कहीं राजनैतिक-गतिरोध पैदा होगा, किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त किंवा किवा किसी नेता को विवशता पूर्वक पद त्याग करने को बाधित होना पड़ेगा। किसी देश में प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होगा। इस मास में पांच शनिवार हैं., अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं मुस्लिम देश में सत्ता हस्तान्तरण हो, कहीं दुर्घटना से जनहानि हो; – "शनिवाराः यदा पञ्च पतन्ति कम्पते धरणी। ईशान देश संचरन्ति वह्निवाहो महर्घता।" कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो, महगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। यहां कर्क राशि में बृहस्पति, के अस्त होने से आगे सुभिक्ष एवं कुशल क्षेम का संकेत मिलता है।

कं. सूर्योदये

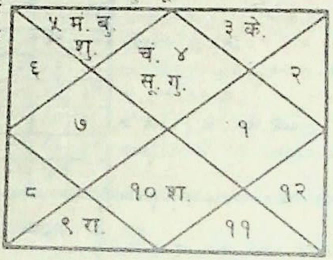

श्रावण कृष्ण ३० शनि. इष्ट ५९।१३

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	४	४	३	४	९	८	२
२४	६	२२	११	२९	११	८	२३	२३
६	३०	४४	४५	१५	४७	३९	३७	३७
२९	१९	२४	२६	१७	३८	२३	५०	५०
५७	८०१	३७	१८	१३	२३	४	३	३
३५	३९	४९	५२	७	१६	१२	११	११
-	-	मा	व	मा	व	व	व	व
-	अ.	उ	उ.	अ.	उ	उ.	अ	अ.
आश्ले	मघा	पू.फा.	मघा	आश्ले	मघा	उ.षा	पू.भा.	पुन.

व्यापार और बाजार का रुख – इस पक्ष में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, गेहूं, चावल, उड़द, चना, तेज रहें। बीच में ५ अगस्त के लगभग सोना-चांदी अनाजों में मन्दे का रिएक्शन आ सकता है। **आकाश लक्षण** – जुलाई २७, ३० एवं अगस्त १ से ६ तक सिक्किम, भूटान, गोवा, कलकत्ता, सूरत, आसाम, बंगाल, मध्य उड़ीसा, हैदराबाद, म.प्र., उ.प्र., पंजाब, मध्य भारत, प. राजस्थान एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा हो, कुछ प्रान्तीय-भागों में सिंहस्थ शुक्र के कारण वर्षा की कमी भी अनुभव होगी।

शकुन विचार – आषाढ़ कृ. प्रतिपदा को बिजली चमके तो जौ, तेल, चना महंगा हो [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

…शक्ति, गया, कलकत्ता, सूरत, आसाम, बंगाल, मध्य उड़ीसा, हैदराबाद, म.प्र., उ.प्र., पंजाब, मध्य भारत … १६ से २० एवं अगस्त १ से ६ तक सिक्किम.

शकुन विचार – आषाढ़ कृ. प्रतिपदा को बिजली चमके तो … शुक्र के कारण वर्षा की कमी भी अनुभव होगी।

(११ से २५ अगस्त तक, सन् १९९१ ई०)

दक्षिणायन, वर्षा-शरद् ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – बु. … ग. अदृश्य हैं। शुक्र १२ अगस्त को अस्त होगा। सायं मंगल पश्चिम में दिखाई देगा। इस समय शनि पूर्व में ऊपर उठ रहा होगा।

दि मा घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र	अ	श	म	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य रा	अ	क	वि	
क्षय		१	श	४३	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय
३३	११	२	र	५०	२०	म	२७	१२	प	४८	२३	बा	२३	५४	२३	११	२०	२९	सिंह	५	४२	७	६	३	२४	७	१८	चन्द्र दर्शन म ३०, तस्कवत प्रा.
३३	७	३	सो	६४	३६	पू फा	२२	४०	शि	४०	४९	तै	१७	२८	२८	१२	२१	३१	क ३३।१८	५	४१	७	५	३	२५	४	४०	मधुश्रवा तृतीया, सन्धारा तीज (पंजाब), शुक्र पश्चिम में अस्त, मफर प्रा.
३३	३	४	म	६०	३०	उ फा	२८	०	सि	३६	४६	व	१२	३३	२९	१३	२२	२	कन्या	५	४१	७	४	३	२६	२	३३	भ १२।३३ उ., ४०।३० या.
३२	५९	५	बु	३८	१६	ह	३८	४७	व्या	३०	१९	ब	९	२३	३०	१४	२३	३	तु ४९।२४	५	४०	७	३	३	२७	०	१२	बुध मघा १ सिंह में २३।२५, नाग पंचमी बुध पश्चिम में अस्त
३२	५६	६	गु	३८	६	चि	१९	४३	ह	२३	२२	कौ	८	११	३१	१५	२४	४	तुला	५	४३	७	२	३	२७	५७	५२	भारत स्वातन्त्र्य दिवस, श्री कल्कि जयन्ती
३२	५१	७	शु	३९	४८	स्वा	२२	४९	व	२६	३	ग	९	[illegible]	३२	१६	२५	५	तुला	५	४३	७	१	३	२८	५५	३४	भ ३९।४८ उ., राहु पू.षा. ३, केतु पुन. १ में ३५।३२, गोस्वामी A
३२	४६	८	श	४३	३८	वि	२७	३८	ध्रु	२२	१०	वि	११	४८	आर्द्रा	१७	२६	६	वृ २०।५६	५	४४	७	०	३	२९	५३	१५	भ ११।३२ या., मंगल उ.फा. में १२।०, स. सूर्य मघा सिंह में ७।१ B
३२	४२	९	र	४८	४६	अनु	३३	३८	व्या	२७	५९	बा	११	१२	२	१८	२७	७	वृश्चिक	५	४४	६	५९	४	०	५०	५८	
३२	३७	१०	सो	५४	५१	ज्ये	४१	१४	ह	२९	४९	तै	२१	६८	३	१९	२८	८	ध ४१।१६	५	४५	६	५८	४	१	४८	४३	
३२	३४	११	म	६०	०	मू	४८	२९	सि	३२	१८	व	२८	३	४	२०	२९	९	धन	५	४५	६	५७	४	२	४६	२८	भ २०।३ उ.
३२	३०	११	बु	१	१२	पू षा	५९	४३	वी	३४	४३	वि	१	१५	५	२१	३०	१०	धन	५	४६	६	५६	४	३	४४	१४	भ ११।१५ या., पवित्रा एकादशी (स.)
३२	२६	१२	गु	३	३२	उ षा	६०	०	व	३३	३०	कौ	३	३४	६	२२	३१	११	म ११।३९	५	४६	६	५५	४	४	४२	१	मंगल कन्या में २६।३०, प्रदोष व्रत
३२	२१	१३	शु	५२	५४	उ षा	३	४८	शौ	३८	६	तै	२३	१५	७	२३	भाद्र १	१२	मकर	५	४७	६	५४	४	५	३९	४९	सायन कन्या में सूर्य ३६।४८ शरद् ऋतु प्र. शक भाद्रपद प्र.
३२	१६	१४	श	[illegible]	३९	श्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	८	२४	२	१३	कु ४२।४२	५	४८	६	५३	४	६	३७	३९	भ १७।४९ उ., ४९।४९ या., पञ्चक प्र. ४२।४२, ऋक् उपाकर्म C
३२	१०	१५	र	[illegible]	३९	ध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	[illegible]	[illegible]	९	२५	३	१४	कुम्भ	५	४९	६	५२	४	७	३५	३०	यजु उपाकर्म, अथर्व उपाकर्म, श्री अमरनाथ यात्रा (स्वर्गीय) D

A श्री तुलसी जयन्ती B म. ४३ पण्यकाल २२।१ तक, श्री दुर्गाष्टमी, मन्स श्री नयना देवी-चिन्तपूर्णी (हि०प्र०), कृष्ण महापर्व (आंशिक) प्रथम स्नान D श्रावण पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, हयग्रीव जन्म
C (वेदों संन्दित ब्रह्मण व्यवस्था), श्री सत्यनारायण व्रत

श्रावण शुक्ल ८ शनि इष्ट ११।१०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	४	४	४	४	९	८	२
०	९	२३	७	०	८	८	२२	२२
४९	६०	९	५०	६३	२५	१०	१४	१४
५०	४०	६८	२०	१०	४२	४९	३४	३४
५७	७११	३८	४१	१३	३८	३	३	३
६६	१६	४	१६	८	५६	५६	११	११
		मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	उ	अ	अ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

के. सूर्योदये

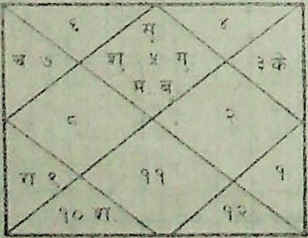

लोक जीवन – पञ्च मघा में गुरु सिंह राशि में प्रविष्ट होगा। वर्षा अच्छी होगी, फसल अच्छी हो, फलों की फसल उत्तम हो, परन्तु गुरु का सू श बु म के साथ राशि सम्बन्ध स्थिति को बिगाड़ने वाला है – "एक राशौ यदा यान्ति चत्वार: पञ्च खेचरा:। प्रलयस्तत्र नहीं सर्वं क्षितिश्च अलेन वा।" कहीं, अतिवर्षण बाढ़ से हानि हो, कहीं आन्तरिक-क्रान्ति व संघर्ष से हालात संकटपूर्ण बनें। पुनरपि सिंह राशि का गुरु सौम्य एवं मंगल का प्रतीक माना गया है – "यदा सिंहे भृगुसुत: सञ्चित तत्र जायते। मेघाश्च प्रवर्षमाना बहुसस्या च मेदिनी।" भद्रबाहु संहिता के अनुसार – देश में नए नेता का उदय होता है, नेतृत्व परिवर्तन से देश-विशेष की प्रगति हो। यह फल इस्लामिक राष्ट्र एवं यवन देशों के लिए भी है। **व्यापार और बाजार का रुख** – १६ अगस्त के लगभग विचारपूर्वक व्यापार करें – बाजारों में गेहूं, घी, जौ, गुड़ तेज रहे। चांदी, सोना, तांबा, लोहा, सरसों, अलसी में मन्दे का रुख रहे। १७ अगस्त से सरसों, तिल, एरण्ड, दाल, मिर्च, मूंग, ज्वार, बाजरा, में तेजी, शेयर मन्दे हों।

के. सूर्योदये

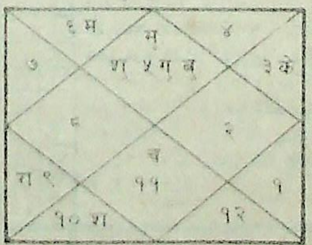

श्रावण शुक्ल १५ रवि इष्ट ५८।४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	५	४	४	४	९	८	२
८	१५	३	१	२	३	७	२२	२२
३२	३७	१५	१७	३२	३२	४१	४०	४०
१२	४३	१७	५	६	५९	६	९	९
५७	७४६	३८	३६	१३	३५	३	३	३
५१	५८	२०	४५	५	५२	२७	११	११
		मा	व	मा	व	व	व	व
	उ	उ	अ	अ	अ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

२२ अगस्त से रुई, चांदी, सोना, लाल मिर्च एवं अलसी में तूफानी तेजी बनेगी। **आवश्यक संकेत** – अगस्त १३ से २२ तक उड़ीसा, बंगाल, गुजरात, सिक्किम, पंजाब, हरियाणा, हि.प्र. में अनेकत्र, बादलचाल, वायुवेग से वर्षा हो। कुछ प्रान्तों में बाढ़ की स्थिति से जन-धन हानि भी हो। अगस्त १४ से १९ एवं २२ अगस्त को बिजली कड़के कहीं भारी वर्षा हो। **शकुन विचार** – आषाढ़ शुक्ल पंचमी को पश्चिम की वायु चले, बादल गरजें, वर्षा हो किंवा इन्द्रधनुष भी दिखाई दे तो अन्न का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ मिले। यदि आषाढ़ी पूर्णिमा को चन्द्र पर परिवेष हो तो फसल उत्तम एवं जनता सुखी रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८ शाक १९१३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२ | तारीखें | चन्द्रराशि | सर्वार्गड | उदय-कालिक | (२६ अगस्त से ८ सितम्बर तक, सन् १९९१ ई०) दक्षिणायन, शरद् ऋतु, उत्तर गोल

ग्रह दर्शन – ३० अगस्त को बुध एवं शुक्र, दोनों प्रातः दीखने लगेंगे। ३१ अगस्त को गुरु पूर्व में दीखने लगेगा। सायं मंगल पश्चिम में एवं शनि पूर्व में देखे जा सकते हैं।

ति.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प भाद्रपद	अं अगस्त	श भाद्रपद	म सफर	प्रवेशकाल घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि.	
३२	७	१	च	२४	७	भार	११	४०	व	३९	२५	कौ	२४	७	१०	२६	४	१५	वृष	५	४९	६	४१	४	८	३३	२२	
३२	२	२	मं	२५	२५	पू.भा	२२	४०	धृ	३७	४३	ग	२५	२२	११	२७	५	१६	मी ६१।५३	६	०	६	४०	४	९	३१	१६	भ ५५।३२ उ.
३१	५९	३	बु	२५	३९	उ.भा	२४	३७	शू	३५	१०	वि	२५	३९	१२	२८	६	१७	मीन	६	०	६	४८	४	१०	२९	११	भ २५।३९ या., वक्री बुध आश्ले. कर्क में २२।५८, श्री गणेश चतुर्थी A
३१	५५	४	गु	२४	४७	रे	२५	३१	ग	३१	४५	बा	२४	४७	१३	२९	७	१८	मे २५।३१	६	१	६	४७	४	११	२७	८	पञ्चक स. २५।३१, गुरु मघा २ से ३८।२८
३१	५०	५	शु	२२	५७	अ	२५	२६	वृ	२७	३४	तै	२२	५७	१४	३०	८	१९	मेष	६	२	६	४६	४	१२	२५	६	सूर्य पू.फा. में ५६।४८ शुक्र पूर्व में उदित, बुध पूर्व में उदित
३१	४६	६	श	२०	१२	भ	२४	२७	ध्रु	२२	३९	व	२०	१२	१५	३१	९	२०	वृ ३८।४८	६	२	६	४५	४	१३	२३	७	भ २०।१२ उ., ४८।२२ या., बुध मार्गी ११।५ गुरु उदित
३१	४२	७	र	१६	३१	कृ	२२	३२	व्या	१६	४९	ब	१६	३१	१६	सि १	१०	२१	वृष	६	३	६	४४	४	१४	२१	१०	वक्री शुक्र आश्ले, कर्क में ३३।१८, श्री कृष्ण जन्माष्टमी (स्मा) B
३१	३८	८	च	११	४७	रो	१९	४६	ह	१०	३६	कौ	११	४७	१७	२	११	२२	मि ४७।५९	६	३	६	४३	४	१५	१९	१४	श्री कृष्ण जन्माष्टमी (वै.) (चन्द्रोदय रात्रि ११ घ ४९ मि.) C
३१	३४	९	मं	६	३७	मृग	१६	१३	व	५/५५	३४/५२	ग	६	३७	१८	३	१२	२३	मिथुन	६	४	६	४१	४	१६	१७	२१	भ ३३।३४ उ.,बुध मघा सिंह में ४१।४० श्री गग्गा नवमी, D
३१	३०	१०	बु	०	३३	आ	११	५७	व्य	४७	४८	वि	०	३३	१९	४	१३	२४	क ५३।२०	६	५	६	४०	४	१७	१५	२९	भ ०।३३ या., अजा एकादशी व्रत (स्मा)
क्ष	य	११	बु	५३	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशीतिथिक्षय.
३१	२५	१२	गु	४६	४९	पुन	७	७	ब	३९	१८	कौ	१७	११	२०	५	१४	२५	कर्क	६	५	६	३९	४	१८	१३	३९	अजा एकादशी व्रत (वै.), पर्युषण पर्व प्रा. (जैन)
३१	२०	१३	शु	३९	३८	पु	१/५६	५८/४७	प	३०	४०	ग	१३	१०	२१	६	१५	२६	सि ५६।४७	६	६	६	३८	४	१९	११	५१	भ. ३९।३८ उ., प्रदोष व्रत
३१	१६	१४	श	३२	३४	म	४१	४८	शि	२२	६	वि	६	६	२२	७	१६	२७	सिंह	६	६	६	३७	४	२०	१०	५	भ. ६।६ या., मंगल हस्त में ११।२०
३१	११	३०	र	२६	१	पू.फा	४७	२९	सि	१३	५२	ना	२६	१	२३	८	१७	२८	सिंह	६	७	६	३५	४	२१	८	२१	पिठोरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा (ॐ हं फट् मन्त्र से).

शुक्र उदित ३० अगस्त

गुरु उदित ३१ अगस्त

A बहुला चतुर्थी व्रत B (अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी और रोहिणी नक्षत्र) श्री कृष्ण जयन्ती (चन्द्रोदय रात्रि ११ घं. २ मि.), दूर्वाष्टमी (देखें सन्दिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था), सितम्बर प्रा.,

C शुक्रबाल्य समाप्त D अगस्त उदय गुरु बाल्य समाप्त

भाद्रपद कृष्ण ८ चन्द्र इष्ट ५८।३८

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	२	५	३	४	३	९	८	२
१६	२	७	२९	४	२९	७	२२	२२
१५	२८	२३	४२	१६	२३	१५	२४	२४
३८	५९	१३	२०	२३	१	२३	४२	४२
५८	८१०	३८	२४	१२	२४	७	३	३
३	५९	४१	२९	५८	१५	५३	११	११
		मा	मा	मा	व	व	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा १	मृग ३	उ.फा ४	आश्ले ४	मघा १	आश्ले ४	पू.फा ४	धनि ३	पुन १

कु. सूर्योदये

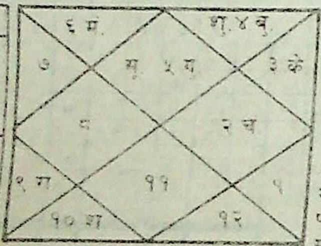

लोक भविष्य – इस मास में पांच चन्द्रवार हैं, अतः अपेक्षा कृत, हालात सुधरेंगे। लेकिन चतुर्ग्रही योग का प्रभाव यत्र तत्र राजनैतिक-विषमता तथा खड़ी फसल को हानि, अग्नि-रोग भय आदि के रूप में दिखाई देगा। इस पक्ष में आश्लेषा नक्षत्र में शुक्र का उदय गुजरात में टिड्डी आदि से फसलों को हानि, दुर्भिक्ष हो, निर्धन वर्ग में अशान्ति हो। पाक के सिन्ध में घोर अशान्ति फैले। मालव में संघर्ष, आसाम, बंगाल और बिहार में भय, उत्पात, वर्षाभाव, महाराष्ट्र एवं द्राविड़ में सुभिक्ष का संकेत मिलता है। पक्षान्त में बुध, सिंहराशि में आकर सूर्य-गुरु के साथ सम्बन्ध करेगा, अतः – कुछ उलझे हुए मसलात के हल होने का वातावरण बनेगा। **वस्तुकाल और बाजार का रुख** – पक्षारम्भ में तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, अन्य तिलहन, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग में तेजी आए। २८ अगस्त के लगभग रूई, सूत, चांदी, चावल, सोना तेज हों। १ सितम्बर के लगभग रूई में तेजी प्रारम्भ होगी। आगे रूई में अच्छी तेजी बनेगी। पक्षान्त तक अनाज, दालदाना, गुड़, तिलहन, तेल तेज रहेंगे। **आकाश लक्षण** – इस मास में चार ग्रह सिंह राशि में आते हैं, कुछ प्रान्तों में अतिवृष्टि से हानि होगी। इस पक्ष में गुरु-शुक्र का एक राशिस्थ होना कहीं वायु से विनाश कहीं सूखे का संकेत देता है। परन्तु अगस्त २६, २८ से ३१ तक एवं सितम्बर १, ५, ७ के लगभग अनेकत्र वर्षा के योग हैं। **शकुन विचार** – भाद्रपद कृष्ण पक्ष तृतीया को यदि बादल काल हों तो अनाजों के स्टाक से आगे छठ मास में उत्तम लाभ की आशा करें। भाद्र कृ. अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र का सम्बन्ध होने से गेहूं, जौ, चना, हल्दी, जीरा, गुड़, तिल, तेल का स्टाक करें, आगे तीन मास में उत्तम लाभ मिलेगा।

कु. सूर्योदये

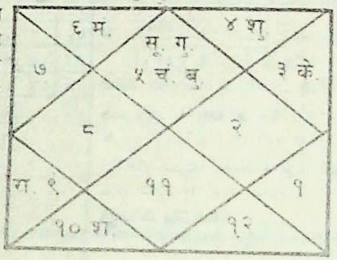

भाद्रपद कृष्ण ३० रवि. इष्ट ५८।२८

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	५	४	४	३	९	८	२
२२	२९	११	४	५	२७	६	२२	२२
५	१६	१५	१०	३३	३८	५९	५	५
१०	५	५४	२३	५१	०	१३	३८	३८
५८	८४१	३८	३०	१२	९	७	३	३
१८	५९	५६	३४	५०	१४	२५	११	११
-	-	मा	मा	मा	व	व	व	व
-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा ३	उ.फा १	पुष्य १	मघा २	मघा २	आश्लेषा ४	उ.भा ४	धनि ३	पुन १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(५ से १३ सितम्बर तक, सन् १९९१ ई०)

स्टाक करें, आगे तीन मास में उत्तम लाभ मिलेगा। ... भाद्र के अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र का सम्बन्ध होने से गेहूँ, जौ, चना, हल्दी, जीरा, गुड़, तिल, तेल कर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०४८, शाके १९१३, भाद्रपद-शुक्ल पक्ष १३ — (५ से २३ सितम्बर तक, सन् १९९१ ई०) दक्षिणायन, शरद् ऋतु, उत्तर-दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन – मंगल १५ सित. को एवं बुध १७ सित. को अस्त होगा। प्रातः शुक्र–गुरु पूर्व कपाल में होंगे। शनि सायं पूर्व कपाल में दृश्य होगा।

दि मा घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	तारीखें प्र. भाद्रपद	अ. सितम्बर	श. भाद्रपद	म. सफर	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि	
३३	६	१	सो	२०	२१	उफा	४४	१२	सा	[illegible]	[illegible]	ब	२०	२१	२४	९	१८	२९	क ११।४०	६	७	६	३४	४	२२	६	४०	
३१	१	२	मं	१५	५५	ह	४२	१६	शु	४४	१५	कौ	१५	५५	२५	१०	१९	३०	कन्या	६	८	६	३३	४	२३	५	०	चन्द्र दर्शन म. ३० मेला बाबा श्री गोस्ताई आप्पा (कुराली) A
३०	५६	३	बु	१३	३	चि	४०	२	ब्र	४०	१०	ब	१३	३	२६	११	२०	१	तु १२।१९	६	९	६	३२	४	२४	३	२२	भ ४२।३४ उ., रबी उल-अव्वल प्रा., हरितालिका तृतीया, गणेश B
३०	५२	४	गु	१२	५	स्वा	४३	४३	ऐ	४७	४९	वि	१२	५	२७	१२	२१	२	तुला	६	९	६	३०	४	२५	१	४५	भ १२।५ या., ऋषि पञ्चमी, संवत्सरी पर्व (पञ्चमी पक्ष) जैन
३०	४८	५	शु	१३	४	वि	४७	१८	वै	४६	५३	बा	१३	४	२८	१३	२२	३	वृ ३१।२४	६	१०	६	२९	४	२६	०	११	सूर्य उ.फा. में ४०।५७, शुक्र मार्गी ३८।५५
३०	४४	६	श	१५	४१	अनु	५२	४०	वि	४७	२२	तै	१५	४१	२९	१४	२३	४	वृश्चिक	६	१०	६	२८	४	२६	५८	३८	गुरु मघा ३ में १।१२, सूर्य षष्ठी
३०	४०	७	र	२०	३६	ज्ये	५९	२६	प्री	४०	५९	ब	२०	३६	३०	१५	२४	५	ध ५९।२६	६	११	६	२७	४	२७	५७	६	भ. २०।३६ उ., ५३।३१ या., बुध पू.फा. में ३०।२८ मंगल अस्त C
३०	३५	८	सो	२६	२६	मू	६०	०	आ	४१	१८	ब	२६	२६	३१	१६	२५	६	धनु	६	११	६	२५	४	२८	५५	३७	श्री राधाष्टमी
३०	३०	९	मं	३२	५२	मू	६	४७	सौ	३०	५५	कौ	३२	५२	आ१	१७	२६	७	धनु	६	१२	६	२४	४	२९	५४	९	म. सूर्य कन्या में ६।१ म. ३०, पुण्य २२।१ तक, बुध पूर्व में अस्त D
३०	२५	१०	बु	३९	१०	पूषा	१४	४५	शो	२६	२०	तै	५	४	२	१८	२७	८	म ३१।३५	६	१३	६	२३	५	०	५२	४२	वक्री शनि, उ.षा. ३ में २१।५
३०	२०	११	गु	४५	०	उषा	२२	४	अ	४८	७	ब	१२	८	३	१९	२८	९	मकर	६	१३	६	२१	५	१	५१	१६	भ १३।८ उ., ४५।० या., पद्मा एकादशी व्र.
३०	१५	१२	शु	४९	३७	श्र	२८	२८	सु	४९	२	ब	१७	१८	४	२०	२९	१०	मकर	६	१४	६	२०	५	२	४९	५२	श्रवण द्वादशी, वामन द्वादशी
३०	१०	१३	श	५२	५१	ध	३३	३७	धृ	४९	१	कौ	२१	१६	५	२१	३०	११	कु १।२	६	१४	६	१९	५	३	४८	३०	पञ्चक प्रा. १।२, शनि प्रदोष व्रत
३०	५	१४	र	५४	३१	शत	३७	१६	शू	४८	४१	ग	२३	४१	६	२२	३१	१२	कुम्भ	६	१५	६	१८	५	४	४७	१०	भ ५४।३१ उ., बुध उ.फा. में ५४।२, अनन्त चतुर्दशी
३०	०	१५	सो	५४	४८	पूभा	३९	३१	ग	५४	५७	वि	२६	४०	७	२३	आ१	१३	मी २३।५७	६	१५	६	१६	५	५	४५	५२	भ २४।४० या., सायन तुला में सूर्य ३०।२ दक्षिण गोल प्रा. E

A श्री वराह जयन्ती, साम उपाकर्म, B चतुर्थी व्रत, कलंक चौथ, चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त रात्रि ८ घ. ३ मि., C श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा. D तृतीय स्नान कुम्भ महापर्व नासिक श्री चन्द्र नवमी उदासीन सम्प्रदायोत्सव, E शाके आश्विन प्रा., सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा श्राद्ध, महालय (श्राद्ध) प्रा.

भाद्रपद शुक्ल ८ चन्द्र इष्ट ५८।१८

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	८	४	४	४	३	९	८	२
२१	११	१६	१४	७	२३	६	२१	२१
४२	३७	२८	५७	१४	३०	४२	४०	४०
२६	२०	२८	५३	३६	४३	२०	१२	१२
५८	७०७	३९	१०४	१२	९	१	३	३
३१	४१	१५	४४	२८	२१	४३	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

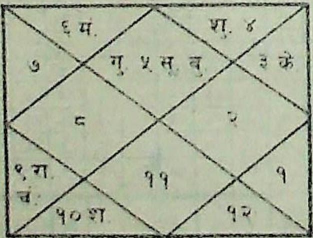

लोक भविष्य – कन्या संक्रान्ति मंगलवारी है अतः – "कुभाव् रुजाधा बहुधेतयो व पृष्टिस्तबाल्पाति भार्गवलग्ने।" नानाविध रोग फैले, टिड्डी-चूहा आदि से फसल को हानि, वर्षा कम एवं महंगाई से जनता में असन्तोष व्याप्त हो। मकर राशि वाले देशों में शासन व्यवस्था सुचारु रूप से चले। प्रधान नेता का प्रभाव बढ़ेगा। कन्या प्रभाव क्षेत्रान्तर्गत देशों में सैन्यबल का दबदबा रहेगा। कई प्रान्तों में अशान्ति एवं स्थिति बिगड़ेगी। अपराध अधिक बढ़ेंगे। तुला प्रभावराशि के क्षेत्र कश्मीर आदि में स्थिति बिगड़ेगी, सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को दृढ़ करना होगा। यहां कन्या राशिस्थ मंगल अस्त होने से अनाजों में तेजी से गरीब वर्ग में परेशानी बढ़ेगी। **व्यापार और बाजार का रुख** – पक्षारम्भ में १२ सितंबर के लगभग सरसों, अलसी, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, में तेजी का रुख रहेगा। इन दिनों धान, गुड़, घी में यदि मन्दा हो तो स्टाक करें, आगे उत्तम लाभ होगा। १५ सित., के लगभग अलसी में खास तेजी से लाभ मिलेगा। पक्षान्त में बाजारों में मन्दे का रुख रहे। **आकाश लक्षण** – इस पक्ष में सितम्बर १२ से १८ के मध्य सिक्किम, भूटान, [illegible], गोवा, कालीकट, सूरत आदि पश्चिमी तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा होगी। शेष अन्य प्रान्तों में बादल चाल एवं बूंदा बांदी रहे। **शकुन विचार** – भाद्रपद शुक्ल नवमी को यदि वर्षा हो तो अकाल का भय हो, यदि एकादशी को वर्षा हो तो आगे अन्न सस्ता हो। यदि भाद्रशु. पूर्णिमा को बादल-बिजली व मेघ गर्जे तो अनाज सस्ता हो। इस समय अन्न संग्रह से आगे उत्तम लाभ मिले।

क. सूर्योदये

भाद्रपद शुक्ल १५ चन्द्र इष्ट ५८।८

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	११	५	४	४	३	९	८	२
६	७	२१	२८	८	२९	६	२१	२१
४२	२२	४	३८	४२	१९	३२	१७	१७
४१	९	४	२०	४०	३	२१	५६	५६
५८	७०१	३९	११०	१२	२३	१	३	३
४४	४४	३३	५१	१५	९	३	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	व	व	व
-	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, आश्विन कृष्ण पक्ष १४

(२४ सितम्बर से ७ अक्तूबर तक, सन् १९९१ ई०)
दक्षिणायन, शरद् ऋतु, दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन – मंगल बुध अस्त हैं । प्रातः गुरु शुक्र पूर्व कपाल में परस्पर आसन्न होंगे । सायंकाल में शनि खमध्यासन्न होगा ।

तिथि घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प (क्रांति)	अ (दिनमान)	श (क्रांति)	म (ता.)	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट मध्य ग	अ	क	वि	
२९	५५	१	म	११	४७	उ.भा	४०	२९	वृ	५१	२७	बा	२४	४८	८	२४	२	१४	मीन	६	१६	६	१४	५	६	४४	३४	बुध कन्या में ४७।४२ , पितृपक्ष प्रारम्भ , प्रतिपदा श्राद्ध
२९	५१	२	बु	५१	३९	रे	४०	१८	ध्रु	४७	२	तै	२२	४३	९	२५	३	१५	मे ४०।१८	६	१७	६	१४	५	७	४३	१९	पञ्चक म. ४०।१८ शुक्र मघा सिंह में ४९।० , द्वितीया श्राद्ध
२९	४६	३	गु	४८	४३	अ	३९	१५	व्या	४१	५९	व	२०	११	१०	२६	४	१६	मेष	६	१७	६	१३	५	८	४२	६	म. २०।११ उ. ४०।४२ गा. तृतीया श्राद्ध
२९	४२	४	शु	४५	५	भ	३७	३०	ह	३६	२१	व	१६	५४	११	२७	५	१७	वृ ४१।४६	६	१८	६	११	५	९	४०	५५	मध्य लग्न में १९।२७ मंगल चित्रा में [illegible] श्री गणेश चतुर्थी व्रत चतुर्थी श्राद्ध
२९	३८	५	श	४०	५८	कृ	३५	१८	व	३०	१९	कौ	१३	२	१२	२८	६	१८	वृष	६	१८	६	१०	५	१०	३९	४७	पञ्चमी श्राद्ध
२९	३३	६	र	३६	३०	रो	३२	३१	सि	२३	४६	व	८	४४	१३	२९	७	१९	वृष	६	१९	६	९	५	११	३८	४१	म. ३६।३० उ. षष्ठी श्राद्ध
२९	२९	७	च	३१	४१	मृग	३०	४१	व्य	१७	१८	वि	४	६	१४	३०	८	२०	मि ११।१०	६	१९	६	७	५	१२	३७	३६	म. ४।६ गा. बुध लग्न में ९।२७ शुक्र मघा ४ से २०।४० A
२९	२४	८	भ	२६	३७	आ	२६	२८	ह.	१०	५४	कौ	२६	३७	१५	अ १	९	२१	मिथुन	६	२०	६	६	५	१३	३६	३५	अक्टूबर प्रारम्भ अष्टमी श्राद्ध
२९	१९	९	बु	२१	२१	पुन	२३	३	व	३ ५६	३३ ५	ग	२१	२१	१६	२	१०	२२	क ८।५४	६	२१	६	५	५	१४	३५	३६	म. ४८।३८ उ. नवमी एवं दशमी का श्राद्ध (देखें सन्दिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था),
२९	१५	१०	गु	१४	५५	पु	१९	२७	सि	४८	५३	वि	१४	५५	१७	३	११	२३	कर्क	६	२१	६	४	५	१५	३४	३९	म. १४।५५ गा. एकादशी श्राद्ध
२९	११	११	शु	१०	२४	आश्ले	१५	४८	व्य	४१	३०	बा	१०	२४	१८	४	१२	२४	सि १५।४८	६	२२	६	२	५	१६	३३	४५	द्वादशी श्राद्ध मघा श्राद्ध इन्दिरा एकादशी व्रत.
२९	७	१२	श	५	२	म	१२	१८	शु	३४	३३	तै	५	२	१९	५	१३	२५	सिंह	६	२२	६	१	५	१७	३२	५२	म. ५९।३९ उ. शनि मार्गी ९।५० त्रयोदशी श्राद्ध व्रत.
क्षय		१३	श	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी निःक्षय
२९	२	१४	र	५५	२८	पूफा	९	१०	श	२७	४९	वि	२७	४८	२०	६	१४	२६	क २३।३०	६	२३	६	०	५	१८	३२	३	म. ५।४८ गा. शस्त्र विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध
२८	५७	३०	च	५१	५७	उफा	६	३८	ब्र	२१	४०	च	२३	४१	२१	७	१५	२७	कन्या	६	२४	५	५९	५	१९	३१	१६	मंगल तुला में २५।१५ बुध चित्रा में ४४।५५ सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी B

A श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त सप्तमी श्राद्ध
B एवं अमावस का श्राद्ध श्राद्ध समाप्त, सोमवती अमावस, मेला फल्गु (पिहोवा)

आश्विन कृष्ण ८ मध्य इष्ट ५७।४५

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	५	५	४	४	९	८	२
१६	२७	२६	१२	१०	३	६	२०	२०
३३	२४	२१	१२	१९	९	२६	३३	३३
२९	७	३८	५४	[illegible]	३४	४३	[illegible]	[illegible]
५९	८०	३५	[illegible]	११	४२	०	३	३
[illegible]	३४	४४	२९	११	२०	९५	११	११
		मा	मा	मा	मा	व	व	व
	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

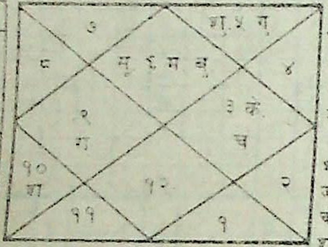

लोक भविष्य – इस मास में ५ मंगलवार हैं – "पञ्च भौमे यदीमासे (आयन्ते पंचवासरा:) रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत् ।" नेपाल, चीन, अरब राष्ट्र, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, लंका आदि में कहीं घोर अशान्ति का वातावरण बनेगा । कुछ राष्ट्रों में आन्तरिक-क्रान्ति एवं कहीं सत्ता हस्तान्तरण का भी योग है। पक्षान्त में तुला राशि के मंगल पर शनि की दृष्टि है, अतः शनि-मं. का दृष्टि सम्बन्ध आगे अघटित-घटनाओं को जन्म देगा । किसी नेता व बड़े व्यक्ति की मृत्यु से शोक हो, चोरी, ठगी एवं अनैतिक-घटनाएं अधिक घटित हों । शनि-मंगल की परस्पर दृष्टि यान दुर्घटना किंवा कहीं तूफान किंवा अन्य प्राकृतिक-प्रकोप से, जल प्लाव आदि से हानि की सूचना देती है ।

कुं. सूर्योदये

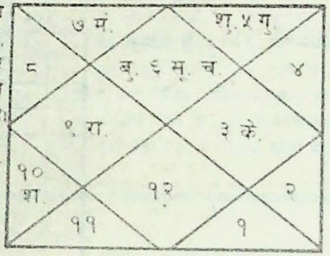

आश्विन कृष्ण ३० चन्द्र इष्ट ५७।४५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	५	४	४	९	८	२
२०	२१	०	२३	११	७	६	२०	२०
२८	४१	२१	४१	२०	१	२६	३३	३३
१६	४१	४५	५७	२९	११	४०	२५	२५
५९	८०६	४०	१०१	११	४२	०	३	३
१६	३४	११	५५	२८	४०	२१	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४	४	३	२	४	३	३	३	१
हस्त	हस्त	चित्रा	चित्रा	मघा	मघा	उ.षा	पू.षा	पुन.

ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, हल्दी आदि में तेजी का वातावरण रहेगा ।

आकाश लक्षण – दिन २४, २६, २७, २८, ३० एवं अक्तूबर ४, ७ को भूटान, शिलांग, सिक्किम आदि में बादल चाल व खण्डवृष्टि हो, उत्तरी भारत के प्रान्तों का तापमान गिरेगा । पक्षान्त में पर्वतशृंग पर हिमपात के समाचार मिलेंगे ।

शकुन विचार – आश्विन कृष्ण दशमी, एकादशी किंवा द्वादशी को यदि बिजली चमके एवं बादल गरजें तो आगे अनाज [illegible] गेहूं की खड़ी फसल को हानि पहुंचे । [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(८ से २३ अक्टूबर तक, सन् १९९१ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८ शाके १९१३, आश्विन शुक्ल पक्ष १५

(८ से २३ अक्टूबर तक, सन् १९९१ ई०)
दक्षिणायन, शरद् — हेमन्त ऋतु, दक्षिण गोल

दि मा घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र. आश्विन	अ. अक्टूबर	श. आश्विन	म. मुस्लिम	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि
२८	५३	१	म	४९	३१	ह	४	४०	[illegible]	१६	५२	कि	२०	४०	२२	८	१६	२८	क ३४।४८	६	२४	५	४७	५	२०	३०	३१
२८	४८	२	बु	४८	३५	चि	४	३७	[illegible]	१२	९	बा	१९	३	२३	९	१७	२९	तुला	६	२५	५	४६	५	२१	२९	४८
२८	४६	३	गु	४९	[illegible]	स्वा	४	४५	[illegible]	९	३	[illegible]	१८	५०	२४	१०	१८	२१	वृ ४२।४८	६	२६	५	४५	५	२२	२९	६
२८	४०	४	शु	५१	५६	वि	८	३६	[illegible]	७	२३	व	२०	[illegible]	२५	११	१९	२	वृश्चिक	६	२६	५	४४	५	२३	२८	२७
२८	३५	५	श	५६	८	अनु	१२	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	[illegible]	[illegible]	२६	१२	२०	३	वृश्चिक	६	२७	५	४३	५	२४	२७	५१
२८	३०	६	र	६०	०	ज्ये	१९	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	[illegible]	[illegible]	२७	१३	२१	४	ध १३।१०	६	२७	५	४१	५	२५	२७	१५
२८	२५	६	च	१	४३	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५०	गै	[illegible]	४३	२८	१४	२२	५	धनु	६	२८	५	४०	५	२६	२६	४१
२८	२०	७	म	८	८	पू षा	३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	२९	१५	२३	६	म ५१।०	६	२९	५	३९	५	२७	२६	१०
२८	१५	८	बु	१६	४२	उ षा	४१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	[illegible]	[illegible]	३०	१६	२४	७	मकर	६	२९	५	३८	५	२८	२५	४१
२८	१०	९	गु	२०	४०	श्र	४८	५०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	[illegible]	[illegible]	का १	१७	२५	८	मकर	६	३०	५	४७	५	२९	२५	११
२८	५	१०	शु	२२	४३	ध	५४	१६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	१८	२६	९	कु ५१।२८	६	३१	५	४६	६	०	२४	४१
२८	०	११	श	२९	६	शत	५८	१६	[illegible]	१८	[illegible]	वि	[illegible]	४	३	१९	२७	१०	कुम्भ	६	३१	५	४५	६	१	२४	१९
२७	५८	१२	र	३०	४०	पू भा	६०	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	३०	४०	४	२०	२८	११	मी ४३।५३	६	३२	५	४४	६	२	२३	५२
२७	५६	१३	च	३०	२४	पू भा	०	२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	[illegible]	[illegible]	५	२१	२९	१२	मीन	६	३३	५	४२	६	३	२३	[illegible]
२७	५०	१४	म	२८	२९	उ भा	५९, ५९	५६, ५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	६	२२	३०	१३	मे ५१।२७	६	३३	५	४१	६	४	२३	१५
२७	४५	१५	बु	२४	११	र	२३	४४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	[illegible]	[illegible]	७	२३	का १	१४	मेष	६	३४	५	४०	६	५	२२	[illegible]

ग्रह दर्शन — मंगल अस्त है । बुध पक्षान्त में सायं पश्चिम में दीखने लगेगा । प्रातः शुक्र गुरु पूर्व कपाल में देखे जा सकेंगे सायं शनि याम्योत्तरमन्न में दृश्य होगा ।

शारद नवरात्र प्रा. (घटस्थापन ४।५९ से पहले) मातामह (नाना) श्राद्ध
चन्द्र दर्शन म. १५
मा [illegible] चित्रा म. [illegible] रवि-उन-अन्वान म प्रा.
म. [illegible] उ. [illegible] या बुध तुला में ४२।४०
उपांगललिता व्रत,
सरस्वती आवाहन (देखें सन्दिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था),
[illegible] उ. [illegible] या बुध स्वाती म [illegible] ओली प्रा A
[illegible] महाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, मेला ज्वालामुखी B
म. सूर्य तुला में ३५।५, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, C
[illegible] पञ्चक प्रा. [illegible] D
[illegible] पापांकुशा एकादशी व्र. (स.)
[illegible] सोम प्रदोष व्रत
[illegible] पञ्चक म. [illegible] शरत् पूर्णिमा, E
[illegible] हेमन्त ऋतु प्रा. [illegible] कार्तिक स्नान प्रा. F

A (जैन), सरस्वती पूजन, B [illegible] नाग [illegible] (हि. प्र.), C मंगल स्वा. म. १९।४०, गुरु पू. फा. १ म ५२।४२, महानवमी (देखें सन्दिग्ध व्रत व्यवस्था), विजयदशमी, अपराजिता शमी पूजा, सीमोल्लंघन, नवरात्र समाप्त, सरस्वती विसर्जन, D आर्द्रा [illegible], भरत मिलाप, E कोजागरी व्रत, श्री सत्यनारायण व्रत, । बुध पश्चिम में उदित, जन्म दिन महर्षि श्री वाल्मीकि, ओली समाप्त (जैन)

आश्विन शुक्ल ८ बुध इष्ट ४७।३२

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
५	९	६	६	४	४	९	८	२
२९	१२	६	८	१३	१३	६	२०	२०
२२	७	२८	३१	१०	४९	३३	४	४
४२	२४	५०	२६	[illegible]	२२	२२	४८	४८
५९	[illegible]	४०	९५	१०	५०	१	३	३
३३	७	३५	२३	४७	४४	१५	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा	श्रवण	चित्रा	स्वाती	पू.फा.	पू.फा.	उ.षा.	पू.षा.	पुन.

क. सूर्योदये

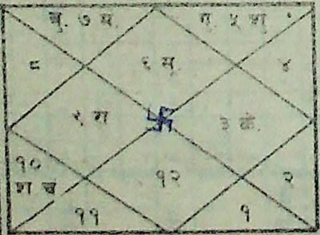

लोक परिस्थिति — इस पक्ष में बुध तुला राशि में आकर मंगल के साथ राशि-सम्बन्ध बनायगा, मंगल-शनि का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध है, — उत्तरी भूभाग के देशों में विशेष संकट उत्पन्न होगा पक्षमध्य में सूर्य के तुला में आने पर राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य सत्ता के लिए शक्ति परीक्षण का वातावरण बने । पश्चिमी प्रान्तों एवं देशों में अनकस्य अराजकता का वातावरण बने । पक्षान्त में पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का गुरु भारत में सुभिक्ष एवं आरोग्य का सूचक है । लेकिन शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध सीमा प्रान्तों पर वातावरण को अशान्त बना सकता है ।

क. सूर्योदये

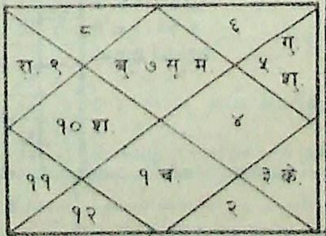

आश्विन शुक्ल १५ बुध इष्ट ५७।२०

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	६	६	४	४	९	८	२
६	१३	११	१९	१४	२०	६	१९	१९
२०	१३	९	२६	२३	९	४४	४२	४२
०	५२	५७	३४	४८	१४	११	३३	३३
५९	[illegible]	४०	९१	१०	५५	१	३	३
४३	२	५४	८	१०	२५	५६	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा	अश्विनी	स्वाती	स्वाती	पू.फा.	पू.फा.	उ.षा.	पू.षा.	आर्द्रा

उत्पादन और बाजार का रुख — पक्षारम्भ में रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अरहर, गेहूं, चना, तिल आदि में तेजी-मन्दी के रिएक्शन आएंगे । १६ अक्तूबर के लगभग गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दे का रुख रहेगा । १७ अक्तूबर के लगभग गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना आदि में अच्छी तेजी बनेगी । घी एवं तेल भी तेज होंगे । आकाश लक्षण — अक्तूबर ११, १५, १७, १८ एवं २३ को लंका, मद्रास, आसाम एवं उत्तरी भारत में कहीं बादलवाली बूंदाबांदी एवं खण्डवृष्टि हो । तापमान काफी गिरेगा । कुछ प्रान्तों में वायुवेग से शीत का प्रभाव अनुभव होने लगेगा ।

शकुन विचार — यदि आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन बादल हों तो धान्य के स्टाक से आगे चैत्र में अच्छा लाभ मिलेगा । —"आश्विनी निर्मला पूर्णा सुभिक्ष जलदोदये । धान्यस्य संग्रहं कुर्वीत चैत्र लाभप्रदो यतः ।।"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६															तारीखें				चन्द्रराशि	[illegible]				उदय-कालिक				(२४ अक्तूबर से ६ नवम्बर तक, सन् १९९१ ई०) दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु, दक्षिण गोल
दि.मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन — मंगल अस्त है। प्रातः गुरु शुक्र पूर्व कपाल में होंगे। सायं शनि पश्चिम कपाल में होगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज की ओर जाता दीखेगा।
															कार्तिक	अक्टूबर	कार्तिक	हि.		सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२३	४०	१	गु	२०	४६	भ	४४	३५	सि	५२	२०	कौ	२०	४६	८	२४	२	१५	मेष	६	३५	५	३९	६	६	२२	४२	सूर्य स्वाती में १७।२५, बुध विशा में १९।१८
२३	३५	२	शु	१५	३५	कृ	५०	५७	व्य	४४	५२	ग	१५	३५	९	२५	३	१६	वृ ८।४०	६	३६	५	३८	६	७	२२	२७	भ. ४२।४६ उ
२३	३०	३	श	९	५८	रो	४७	०	वै.	३७	१७	वि	९	५८	१०	२६	४	१७	वृष	६	३६	५	३७	५	८	२२	१५	भ. ९।५८ या., करवा चौथ (चन्द्रोदय रात्रि ८ घं. ४९ मि.) A
२३	२६	४	र	४	१०	मृग	४३	०	प	२९	३७	बा	४	१०	११	२७	५	१८	मि १५।१०	६	३७	५	३६	६	९	२२	६	
[illegible]	[illegible]	५	र	५८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पञ्चमी तिथिक्षय,
२३	२२	६	च	५२	५०	आ	३९	१०	शि	२२	२	ग.	२५	३६	१२	२८	६	१९	मिथुन	६	३८	५	३५	६	१०	२१	५८	भ. ५२।५० उ.,
२३	१८	७	म	४७	३५	पुन.	३५	३८	सि	१४	४१	वि	२०	१२	१३	२९	७	२०	क २१।३१	६	३८	५	३४	६	११	२१	५३	भ. २०।१२ या.,
२३	१४	८	बु	४२	४०	पु	३२	२५	सा	७	३०	बा.	१५	८	१४	३०	८	२१	कर्क	६	३९	५	३३	६	१२	२१	५१	शुक्र उ.फा. में ४८।१०, श्री अहोई अष्टमी (पंजाब)
२३	१०	९	गु	३८	११	आश्ले	२९	३६	शु	[illegible]	[illegible]	तै.	१०	२६	१५	३१	९	२२	सि. २९।३६	६	४०	५	३३	६	१३	२१	५०	बुध वृश्चिक में १।५२,
२३	६	१०	शु	३४	१०	म	२७	१५	ब्र	४८	१९	व	६	१०	१६	न १	१०	२३	सिंह	६	४१	५	३२	६	१४	२१	४९	भ. ६।१० उ., ३४।१० या., नवम्बर प्रा.
२३	२	११	श	३०	४१	पू.फा	२५	२४	ऐं	४२	४१	ब.	२	२६	१७	२	११	२४	क ४०।६	६	४२	५	३१	६	१५	२१	४६	बुध अनु में २०।१८, रमा एकादशी व्रत (स.)
२२	५८	१२	र	२७	५०	उ.फा.	२४	११	वै	३७	३५	तै	२७	५०	१८	३	१२	२५	कन्या	६	४२	५	३०	६	१६	२२	२	शुक्र कन्या में ८।४०, गोवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत, यम को दीपदान
२२	५४	१३	च	२५	४९	ह	२३	४५	वि	३३	१०	व	२५	४९	१९	४	१३	२६	तु ५४।१०	६	४३	५	२९	६	१७	२२	११	भ. २५।४९ उ., ५५।१७ या., धन त्रयोदशी,
२२	५०	१४	म	२४	४५	चि	२४	१५	प्री	२९	२९	श	२४	४५	२०	५	१४	२७	तुला	६	४४	५	२८	६	१८	२२	२१	मंगल विशा. में ४९।१५, श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, नरक चतुर्दशी B
२२	४५	३०	बु	२४	५१	स्वा	२५	५२	आ	२६	४४	ना	२४	५१	२१	६	१५	२८	तुला	६	४५	५	२७	६	१९	२२	३३	सूर्य विशा. में ३७।५२, श्री जैन महावीर निर्वाण दिवस

A श्री गणेश चतुर्थी व्रत

B (पूर्वारुणोदय), हनुमान् जयन्ती

कार्तिक कृष्ण ८ बुध इष्ट ५७।१८

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
६	३	६	६	४	४	९	८	२
१३	२२	१५	२९	१५	२६	६	१९	१९
४८	२६	४७	५२	३२	४९	३९	२०	२०
५५	१५	१४	५४	५९	८	४६	१७	१७
५९	[illegible]	४१	८७	९	५९	२	३	३
५९	४२	५४	९	२९	१२	३६	११	११
	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाती	आश्ले	स्वाती	विशाखा	पू.फा.	उ.फा.	पू.भा.	पू.भा.	आर्द्रा

के. सूर्योदये

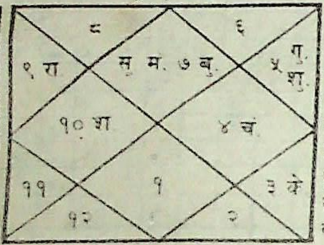

लोक भविष्य — इस मास में ५ गुरुवार, रूस, ब्रिटेन भारत एवं पूर्वोत्तरीय प्रान्तों के लिए श्रेयस्कर हैं। लेकिन पश्चिमी देशों एवं पश्चिमी प्रान्तों के लिए स्थिति भयावह है - "यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्ध च जायते।।" कहीं सीमा प्रान्तों पर सैन्यबल में संघर्ष से अशान्ति का वातावरण बनेगा। कहीं आन्तरिक समस्याएँ विकटरूप धारण करेंगी। इस पक्ष में वृश्चिक स्थ बुध दुर्भिक्षकारक है। पक्षान्त में कन्या राशि का शुक्र अनाज एवं दैनिक उपभोज्य वस्तुओं में तेजी से दलित-कमजोर वर्ग में क्षोभ पैदा करेगा।

के. सूर्योदये

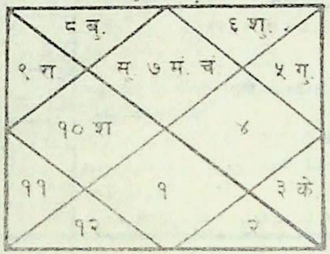

कार्तिक कृष्ण ३० बुध इष्ट ५६।५२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	६	७	४	५	९	८	२
२०	२६	२०	९	१६	३	७	१८	१८
१९	३६	४६	४९	३७	५३	१९	५८	५८
३८	११	५६	२	३	१	५६	२	२
६०	[illegible]	४१	८२	८	६२	३	३	३
१०	[illegible]	३५	३	४२	१२	१५	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	अ	अ	उ	उ.	उ.	उ	अ.	अ
विशा.	विशा.	विशा.	अनु.	पू.फा.	उ.फा.	उ.भा.	पू.भा.	आर्द्रा

ग्रहचाल और बाजार का रुख — २४ अक्तूबर के लगभग गुड़, शक्कर, बिनौला, मिर्च, अलसी, सरसों, तेज रहें, रुई में तेजी का अच्छा झटका आ सकता है। ३० अक्तूबर को घी, तेल तिलहन में तेजी का झटका आएगा। ३ नवम्बर के लगभग सब तरह के अनाज, गुड़, खाण्ड, रेशमी वस्त्र, चावलों में विशेष तेजी बनेगी। - वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें।

आकाश लक्षण — अक्तू. २४, ३० एवं नवम्बर २, ३, ५, ६ को उत्तर पूर्वी लंका, द. पूर्वी मद्रास, बंगला देश, हिमाचल की तलहटी वाला पंजाब, आदि में कहीं वायुवेग के साथ वर्षा, हि.प्र. के ऊपरी भाग में हिमपात से उत्तरी भारत में शीत का प्रभाव बढ़ेगा। **शकुन विचार** — कार्तिक कृष्ण में सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो अलसी, सरसों, तिल तेल तेज होगा, शीघ्र ही स्टाक करें, निस्सन्देह लाभ होगा। कार्तिक कृष्ण एकादशी किंवा द्वादशी को मेघ गर्जना हो बिजली चमके तो आगे अनाजों में तेजी आनी है। दीपावली की शाम को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें खराब होने से तेजी बढ़ेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(७ से २१ नवम्बर तक, सन् १९९१ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७															तारीखें				चन्द्रराशि	चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(७ से २१ नवम्बर तक, सन् १९९१ ई०) बक्षिणायन, हेमन्त ऋतु, दक्षिण गोल
वि मा															प्र.	अं.	श.	म.	प्रवेशकाल	धा.स्टैं.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन — मंगल अस्त हैं। प्रातः गुरु याम्योत्तरासन्न एवं शुक्र पूर्व कपाल में होगा। साय शनि पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है। बुध सूर्य पश्चिम में दीखेगा।
																				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	कार्तिक	नव.	कार्तिक	न. ज.	घ. प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अ.	क.	वि.	
२६	४०	१	गु	२६	१९	वि	२८	४१	सौ	२४	३	ब	२६	१९	२२	७	१६	२१	वृ १३।१५	६	४६	५	२७	६	२०	२२	४७	गुरु पू.फा. २ में १७।१०, गोबर्धन पूजा, बलि पूजा, अन्नकूट जन्मदिन A
२६	३६	२	शु	२९	११	अनु	३३	६	शो	२४	२५	कौ	२९	११	२३	८	१७	३०	वृश्चिक	६	४६	५	२६	६	२१	२३	३	चन्द्र दर्शन मु. ३०, यम द्वितीया, भाई दूज, विश्वकर्मा पूजा
२६	३३	३	श	३३	३०	ज्ये	३८	४६	अ	२४	४३	तै	१	२१	२४	९	१८	३१	ध ३८।४६	६	४७	५	२५	६	२२	२३	२२	जमद उल-अव्वल प्रा.
२६	२९	४	र	३९	२	मू	४५	३६	सु	२६	१७	ब	६	१६	२५	१०	१९	०	धनु	६	४८	५	२५	६	२३	२३	४१	भ. ६।१६ उ., ३९।२ या.,
२६	२५	५	सो	४५	२८	पू षा	५३	१०	धृ	२८	२५	ब	१२	१५	२६	११	२०	३	धनु	६	४९	५	२४	६	२४	२४	२	ज्ञान पञ्चमी (जैन)
२६	२२	६	म	५२	१६	उ षा	६०	०	गं	३०	४६	कौ	१८	५२	२७	१२	२१	४	म १०।८	६	५०	५	२३	६	२५	२४	२५	बुध ज्येष्ठा में ५।४२, शुक्र हस्त में ४५।४५ सूर्य षष्ठी
२६	१९	७	बु	५८	४३	उ षा	१	२	वृ	३३	२९	ग	२५	३०	२८	१३	२२	५	मकर	६	५०	५	२३	६	२६	२४	४९	भ. ५८।४५ उ.,
२६	१६	८	गु	६०	०	श्र	८	२१	ध्रु	३५	१७	वि	३२	३१	२९	१४	२३	६	कु ४१।४८	६	५१	५	२२	६	२७	२५	१४	भ. ३०।३२ या., पञ्चक प्रा. ४१।४८
२६	१३	८	शु	४	१८	ध	१५	४	व्या	३६	१७	ब	४	१८	३०	१५	२४	७	कुम्भ	६	५२	५	२१	६	२८	२५	४१	गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी
२६	१०	९	श	८	२२	शत	२०	७	ह	३५	२७	कौ	८	२२	का १	१६	२५	८	कुम्भ	६	५३	५	२१	६	२९	२६	९	सं. सूर्य वृश्चिक में ३३।३५ मु. ३०, पुण्यकाल मध्यान्होत्तर
२६	६	१०	र	१०	३३	पू भा	२३	१८	व	३४	८	ग	१०	३३	२	१७	२६	९	मी ७।३०	६	५४	५	२०	७	०	२६	३८	भ. ४०।३८ उ., बलिदान दिवस लाला लाजपतराय जी, B
२६	३	११	सो	१०	४६	उ भा	२४	३३	ब	३०	४४	वि	१०	४६	३	१८	२७	१०	मीन	६	५५	५	२०	७	१	२७	९	भ. १०।४४ या., तुलसी विवाह, प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.)
२५	५९	१२	मं	८	५६	रे	२३	५१	सि	२५	४९	बा	८	५६	४	१९	२८	११	मे २३।५१	६	५६	५	१९	७	२	२७	४०	पञ्चक स. २३।५१ सूर्य अनुराधा में ५१।५५, भीम प्रबोध व्रत
२५	५६	१३	बु	५	१३	अ	२१	२४	व्य	१९	२१	तै	५	१३	५	२०	२९	१२	मेष	६	५६	५	१९	७	३	२८	१३	मंगल वृश्चिक में ९।५, वैकुण्ठ चतुर्दशी
२५	५४	१४	गु	०	४	भ	१७	३६	व	१२	२	ब	०	४	६	२१	३०	१३	वृ २९।०	६	५७	५	१९	७	४	२८	४८	भ. ०।४ उ., २६।५३ या., त्रिपुरोत्सव, श्री सत्यनारायण व्रत, C
अ	क्षय	१५	गु	५३	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			पूर्णिमा तिथिक्षय

A युगमल्ल श्री स्वामी रामतीर्थ जी B भीष्म पञ्चक प्रा. (देखें सन्दिग्ध व्रतपर्व व्यवस्था).
C श्री गुरु नानक जयन्ती, कार्तिकी पूर्णिमा, कार्तिक स्नान समाप्त, चातुर्मास्य समाप्त, भीष्म पञ्चक समाप्त, (पञ्चक याग १३ घ ५८ मि बाद) (देखें सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था) मेला पुष्कर (अजमेर)

कार्तिक शुक्ल ८ शुक्र इष्ट ५६।३५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	६	७	४	५	९	८	२
२१	१५	२७	२१	१७	१३	७	१८	१८
२२	७	२	२२	५०	२५	५०	२९	२९
४०	३८	५१	४	५३	१८	१७	२५	२५
६०	[illegible]	४१	६८	७	६५	४	३	३
२६	१९	४९	१०	३३	९	१	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

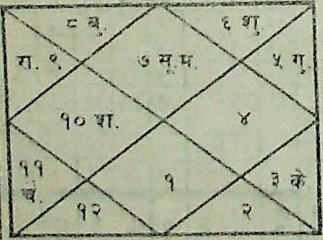

लोक भविष्य — सूर्य-मंगल पर शनि की दृष्टि है एवं पक्ष के उत्तरार्ध में सूर्य-मंगल का वृश्चिक में प्रवेश होगा। महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। शासकों में परस्पर विचार न मिले, वृश्चिकस्थ मंगल का फल इस प्रकार है — "यदा वृश्चिक-राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्।" इस पक्ष में भी शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध बना हुआ है। शनि की दृष्टि उत्तर की ओर है, अत उत्तरी भू भाग के देशों में अनेक विध संकट आएंगे, कहीं शासक एवं शासित में परस्पर संघर्ष की स्थिति बनेगी, कहीं अग्निकाण्ड, रेल वायुयान दुर्घटना में जन धन हानि का भी योग है।

कुं. सूर्योदये

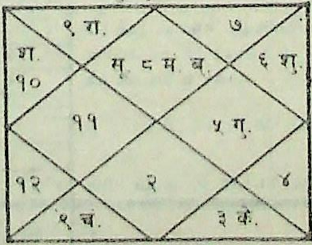

कार्तिक शुक्ल १४ गुरु इष्ट ५६।२३

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	७	७	४	५	९	८	२
५	६	१	२७	१८	२०	८	१८	१८
२५	०	१५	२४	३४	०	१७	१०	१०
३८	९	३१	०	९	१४	३५	२०	२०
६०	[illegible]	४२	४६	६	६६	४	३	३
३४	१४	१६	१०	४३	४३	२९	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वस्तुभाव और बाजार का रुख — पक्ष के प्रारम्भ में गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं अनाजों में घटाबढ़ी चलेगी। १२ नवम्बर के लगभग यदि अनाजों में मन्दा आए तो स्टाक करें, आगे लाभ मिलेगा। १६ नवम्बर के लगभग रूई, ऊन, तांबा, सोना, चांदी में तेजी, अनाजों में भी तेजी बनेगी। पक्षान्त में २० नवम्बर के लगभग गुड़, सोना, चांदी, दालों एवं अनाजों में अच्छी तेजी आए, तेल तिलहन में भी तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण — नवम्बर १२, १६, २०, २१ के लगभग पंजाब के तलहटी वाले भाग में, समुद्र तटवर्ती मद्रास, आसाम, मैसूर, हि.प्र. में कहीं वर्षा, बादलचाल, कश्मीर व हि.प्र. में २० नवम्बर के लगभग ऊँचे शिखरों पर हिमपात से तापमान उत्तरोत्तर गिरेगा। **शकुन विचार** — कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन यदि सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे तो तिल तेल में तेजी होगी। स्टाक करने पर अच्छा लाभ रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(२२ नवम्बर से ६ दिसम्बर तक, सन् १९९१ ई०)
दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु, दक्षिण गोल

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग	अं. नवं.	श. मार्ग.	म. ब्रि.उ.प्र.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	५२	१	शु	४६	३८	कृ	१८	४७	प	३ / २८	४३ / [illegible]	बा	२०	१०	७	२२	१	१४	वृष	६	५८	५	१८	७	५	२९	२३
२५	४९	२	श	३९	८	रो	७	१७	सि	४५	३७	तै	१२	५३	८	२३	२	१५	मि ३४।२६	६	५९	५	१८	७	६	३०	०
२५	४६	३	र	३१	३६	मृग	१ / ५५	३८ / ५५	सा	३६	२६	ब	५	२२	९	२४	३	१६	मिथुन	७	०	५	१८	७	७	३०	६०
२५	४३	४	च	२४	१९	पुन	[illegible]	[illegible]	शु	२७	२९	बा	२४	१९	१०	२५	४	१७	क ४२।१	७	१	५	१७	७	८	३१	१९
२५	४०	५	मं	१७	३५	पु	४६	१०	शु	१८	५८	तै	१७	३५	११	२६	५	१८	कर्क	७	२	५	१७	७	९	३२	१
२५	३८	६	बु	११	३८	आश्ले	४२	२७	ध्रु	११	७	ब	११	३८	१२	२७	६	१९	सि ४२।२७	७	२	५	१७	७	१०	३२	४५
२५	३५	७	गु	६	३७	म	३९	४१	व्या	४ / ५७	६०	ब	६	३७	१३	२८	७	२०	सिंह	७	३	५	१७	७	११	३३	३०
२५	३३	८	शु	२	३५	पू.फा	३७	५१	वि	५२	२५	कौ	२	३५	१४	२९	८	२१	क ५२।४९	७	४	५	१७	७	१२	३४	१७
अ	क्षय	९	श	५९	६०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३०	१०	श	५७	५०	उ.फा	३७	२०	प्री	४७	३८	ब	२८	४५	१५	३०	९	२२	कन्या	७	५	५	१६	७	१३	३५	६
२५	२८	११	र	५७	९	ह	३७	४८	आ	४३	५५	ब	२७	३४	१६	दि १	१०	२३	कन्या	७	६	५	१६	७	१४	३५	५६
२५	२६	१२	च	५७	३५	चि	३९	२१	सौ	४१	५	कौ	२७	२२	१७	२	११	२४	तु ८।३४	७	७	५	१६	७	१५	३६	४७
२५	२४	१३	मं	५९	०८	स्वा	४१	५८	शो	३९	४	ग	२८	२१	१८	३	१२	२५	तुला	७	७	५	१६	७	१६	३७	४१
२५	२२	१४	बु	६०	०	वि	४५	४२	अ	३७	५७	वि	३०	२९	१९	४	१३	२६	वृ २९।४६	७	८	५	१६	७	१७	३७	३५
२५	२०	१४	गु	१	५१	अनु	५०	३२	सु	३७	४२	श	१	५१	२०	५	१४	२७	वृश्चिक	७	९	५	१६	७	१८	३९	३१
२५	१८	३०	शु	५	४२	ज्ये	५६	२१	धृ	३८	१५	ना	५	४२	२१	६	१५	२८	ध ५६।२१	७	१०	५	१६	७	१९	४०	२८

ग्रह दर्शन — मंगल अस्त है। बुध सायं पश्चिम में दीखना बन्द हो जायगा। प्रातः गुरु समध्यासन्न एवं शुक्र पूर्व कपाल में चमकता दीखेगा। सायं शनि पश्चिम कपाल में होगा।

सायन धनु में सूर्य ४५।१७, शुक्र मार्गशीर्ष प्रा

भ ५।२२ उ., ३१।३६ या., मंगल अनु में ५२।४२, A

बुध मूल धनु में १८।२
भ. ११।३८ उ., ३९।३८ या.,
बुध वक्री १८।१०, श्री महाकाल भैरवाष्टमी

नवमी तिथिक्षय,
भ. २८।४५ उ., ५७।५० या., **वक्री बुध ज्येष्ठ वृश्चिक में** ५२।५२, B
दिसम्बर प्रारम्भ, उत्पन्ना एकादशी व्रत (स्मा.)
उत्पन्ना एकादशी व्रत (वै.), **बुध पश्चिम में अस्त**
भ. ५९।८ उ., **भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य ज्येष्ठा में २।१५
भ. ३०।२९ या.

शुक्र स्वाती में ३५।३७

A शुक्र चित्रा में ५५।१५, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
B शुक्र तुला में ४८।२०

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शुक्र इष्ट ५६।०५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	[illegible]	७	८	४	५	९	८	२
१३	[illegible]	६	[illegible]	१९	२९	८	१७	१७
[illegible]	[illegible]	५५	१७	[illegible]	०	५५	४४	४४
[illegible]	[illegible]	७	४५	३९	[illegible]	३४	५४	५४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	५	[illegible]	५	३	३
४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	११	११
-		मा	व	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	[illegible]	[illegible]	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कें. सूर्योदये

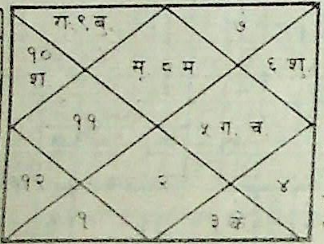

लोक भविष्य — ग्रह स्थिति के अनुसार देश का आर्थिक विकास हो, गावों मे रोगों का प्रकोप, नेताओं में संगठन की भावना बनेगी, विदेशो से व्यापारिक-सम्बन्धो का विकास होगा, राजनीति मे उथल पथल का भी समय है। इस मास मे पाच शुक्रवार एव पाच शनिवार दोनो संकटापन्न-स्थिति को जन्म देंगे। इस पक्ष में तिथि वृद्धि एव तिथिक्षय दोनो है, — यह योग महगाई दूर होने का संकेत देता है, — "जेहि पखवारे तिथि बढ़े, घाटी में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके महंगाई घट जाय।" शुक्र पक्ष के मध्य में तुला राशि में आकर शनि से देखा गया है,

कें. सूर्योदये

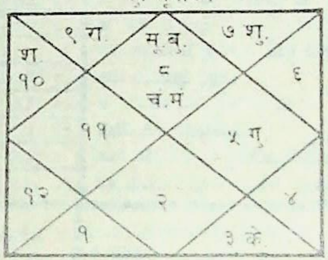

मार्गशीर्ष कृष्ण ३० शुक्र इष्ट ५५।५०

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	७	४	६	९	८	२
२०	२९	११	२४	१९	७	९	१७	१७
३७	५३	५४	२८	५८	३	३२	२२	२२
११	५३	५३	२०	४०	२२	२७	३९	३९
६०	७१८	४३	८१	३	६९	५	३	३
५७	५३	१	१५	२०	४०	३२	११	११
-	-	मा	व	मा	मा	मा	व	व
-	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

तूफान से खड़ी फसलों की हानि, गरीब व नीच वर्ग के लोगों को कष्ट, हानि हो। **ग्रहचाल और बाजार का रुख** — २७ नवम्बर के लगभग घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे। तेल, तिलहन में भी तेजी का ही रुख रहेगा। ३० नव. के लगभग सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी बन दालदाना एव अन्य अनाज भी तेज रहें। २ दिसम्बर से पश्चात तक रुई, पाट, हैसियन में मन्दा, अन्य बाजारों में अच्छी घटा बढ़ी चलेगी।

आकाश लक्षण — नवम्बर २४, २७, ३० एव दिसम्बर २, ३, ६ को कई प्रान्तों में बादल वाले एव शीत का जोर बढ़ेगा। हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उ.प्र. में कहीं खण्ड वृष्टि से शीत बढ़े एव हिमाचल में हिमपात से कहीं जनजीवन अस्त-व्यस्त हो। **व्यापार विचार** — यदि मार्गशीर्ष कृष्ण-चतुर्दशी एव अमावस को सूर्य मेघाच्छन्न रहे तो अनाजों में शीघ्र ही अच्छी तेजी की आशा रखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(७ से २१ दिसम्बर तक, सन् १९९१ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ | **तारीखें** | **चन्द्र राशि** | **चण्डीगढ़** | **उदय-फलिक** | **(७ से २१ दिसम्बर तक, सन् १९९१ ई०) दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु, दक्षिण गोल**

ग्रह दर्शन — मंगल अस्त है । बुध १३ दिस. को प्रातः पूर्व में दीखने लगेगा । प्रातः गुरु खमध्य से पश्चिम की ओर नत, शुक्र पूर्व कपाल में होगा । शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में दीखेगा ।

मा.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. मार्ग	अं. दिस.	श. मार्ग	मु.	प्रवेशकाल घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
१६	१	श	१०	३५	मू	६०	०	शू	३९	३४	ब	१०	३५	२२	७	१६	२९	धनु	७	११	५	१६	७	२०	४१	२६	चन्द्रदर्शन मु. ३०, गुरु पू.फा. ३ में १४।१८
१४	२	र	१६	२६	मू	३	६	ग	४१	३१	कौ	१६	२६	२३	८	१७	ब १	धनु	७	११	५	१६	७	२१	४२	२५	जमद उस्मानी मु. प्रा.
१२	३	च	२२	५९	पू.षा	१०	३६	वृ	४३	५२	ग	२२	५९	२४	९	१८	२	म २७।३४	७	१२	५	१७	७	२२	४३	२५	भ ५६।२५ उ.
१०	४	म	२९	५१	उ.षा	१८	२८	ध्रु	४६	२४	वि	२९	५१	२५	१०	१९	३	मकर	७	१३	५	१७	७	२३	४४	२५	भ २९।५१ या. **वक्री बुध अनु.** में ४०।२५
८	५	बु	३६	३५	श्र	२६	१६	व्या	४८	४२	ब	३	१३	२६	११	२०	४	कुं ५९।५४	७	१४	५	१७	७	२४	४५	२६	पञ्चक प्रा. ५९।५४, शनि श्रवण १ में ४८।३२, शहीदी दिन गुरु तेग बहादुर जी
७	६	गु	४२	४०	ध	३३	३३	ह	५०	२८	कौ	९	३८	२७	१२	२१	५	कुम्भ	७	१४	५	१७	७	२५	४६	२८	गुह-षष्ठी चम्पा षष्ठी
६	७	शु	४७	३५	शत	३९	४७	व	५१	१९	ग	१५	८	२८	१३	२२	६	कुम्भ	७	१५	५	१७	७	२६	४७	३०	भ. ४७।३५ उ. मंगल ज्ये. में ३२।८, मित्र सप्तमी, बुध पूर्व में उदित
५	८	श	५०	४९	पू.भा	४४	२८	सि	५०	५२	वि	१९	१२	२९	१४	२३	७	मी २८।१८	७	१६	५	१८	७	२७	४८	३२	भ. १९।१२ या
४	९	र	५२	८	उ.भा	४७	२०	व्य	४८	५८	बा	२१	२८	३०	१५	२४	८	मीन	७	१६	५	१८	७	२८	४९	३६	
३	१०	च	५१	२१	रे	४८	११	व	४५	२८	तै	२१	४४	पौ १	१६	२५	९	मे ४८।११	७	१७	५	१८	७	२९	५०	३९	पञ्चक स. ४८।११ स. सूर्य मूल धनु में ९।७ मु. ३०, पुण्य काल २५।७ तक
२	११	म	४८	२८	अ	४६	५९	प	४०	१९	ब	१९	५४	२	१७	२६	१०	मेष	७	१८	५	१९	८	०	५१	४३	भ ९।५४ उ. ४८।२८ या, मोक्षदा एकादशी व्रत (स) श्री गीता A
१	१२	बु	४३	४४	भ	४३	५८	शि	३३	३९	ब	१६	६	३	१८	२७	११	वृ ५७।४९	७	१८	५	१९	८	१	५२	४६	बुध मार्गी ५१।१२, अखण्ड द्वादशी,
०	१३	गु	३७	२५	कृ	३९	२७	सि	२५	४१	कौ	१०	३४	४	१९	२८	१२	वृष	७	१९	५	२०	८	२	५३	५०	प्रदोष व्रत
५९	१४	शु	२९	५०	रो	३३	३३	सा	१६	३८	ग	३	३८	५	२०	२९	१३	वृष	७	१९	५	२०	८	३	५४	५५	भ २९।५० उ ५५।३७ या, राहु पू.षा. १ में, केतु आर्द्रा ३ में २८।१७ B
५९	१५	श	२१	२४	मृग	२६	५५	शु	५३	४६/१२	ब	२१	२४	६	२१	३०	१४	मि ०।१४	७	२०	५	२०	८	४	५५	५९	मार्गी पूर्णिमा, श्री सत्यनारायण व्रत.

A जयन्ती, मौन एकादशी (जैन), शुक्र विशा. में ५७।१३ B श्री दत्तात्रेय जयन्ती

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ शनि इष्ट ५५।३५

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के.
७	११	७	७	६	६	९	८	२
२८	५	१०	१५	२०	१६	१०	१६	१६
४६	३९	४०	१२	१८	२४	१८	५७	५७
९	४८	१८	४२	२४	४२	२८	१३	१३
६१	७९९	४३	३१	२	७०	५	३	३
१	५३	२३	४९	२५	४४	५९	११	११
-	-	मा	ब	मा	मा	मा	ब	ब
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

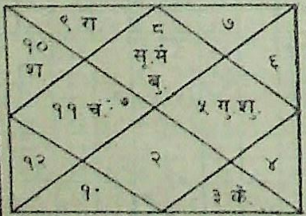

लोक भविष्य — इस पक्ष में श्रवण नक्षत्र में शनि का प्रवेश होगा । वर्षा पर्याप्त हो, सुभिक्ष रहे, पूर्वीय प्रदेशवासियों के लिए विशेष शुभ है । पश्चिमी देशों के लिए श्रवण नक्षत्र का शनि भयावह स्थिति को जन्म देगा । चोर-डाकू एवं अनैतिक लोगों का भय बढ़ेगा । मिथुन राशि एवं शनिवार को चन्द्रग्रहण इटली, मिश्र, ईरान आदि देशों में विशेषतः मुस्लिम राष्ट्रों में अनेक प्रकार से अशान्ति का संकेत देता है । किसी देश में गृहकलह हो । विश्व के कुछ राष्ट्रों में आर्थिक संकट पैदा होगा । यह अवसर भारत की आर्थिक नीति के लिए भी प्रश्नचिन्ह वाला होगा । वृश्चिक-राशि के सू.म.बु. यहां महंगाई का संकेत देते हैं, आर्थिक दृष्टि से देश को उबारने के लिए सक्रिय पग उठाने पड़ेंगे ।

कुं. सूर्योदये

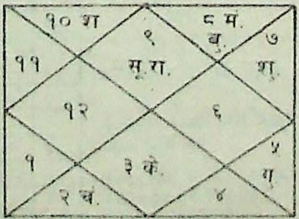

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ शनि ५५/२५

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
८	२	७	७	४	६	९	८	२
५	१३	२२	१५	२०	२४	११	१६	१६
५२	४९	४४	५	४४	४२	१	३४	३४
२४	५५	५३	४४	१४	१३	११	५७	५७
६१	[illegible]	६२	३२	१	७१	६	३	३
५	२८	६१	६१	३७	३१	२०	११	११
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख — ७ दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाज मन्दे रहें । १२ दिसम्बर से राई, जौ, गेहूं, मोठ, चना, चावल, मूंग, उड़द, अरहर, बाजरा एवं ज्वार तेज होंगे । १४ दिसम्बर के लगभग अनाज, तिल, घी, लाल मिर्च में तेजी से लाभ होगा । १९ दिसम्बर के लगभग रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, चांदी में घटा बढ़ी चले । गेहूं, जौ, चना, तेज, तेल, तिलहन एवं सुगन्धित चीजें मन्दी होंगी ।

आकाश लक्षण — इस पक्ष में उत्तरी भारत में शीत लहर चलेगी । दिसम्बर १२, १३, १४, १९ को कहीं खण्ड वृष्टि एवं धुन्द का वातावरण रहे । कुछ स्थानों पर जोरदार वायु से हानि का भी योग है ।

शकुन विचार — यदि इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र के समय (१२ दिसम्बर को) बादल गरजें, रोगों से जनता दुःखी हो । यदि इस पक्ष में इन्द्र धनुष दीखे तो आगे वर्षा अच्छी हो, अनाज सस्ता रहे, स्टाक न करें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, पौष कृष्ण पक्ष २०															तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२२ दिसम्बर १९९१ ई० से ४ जनवरी सन् १९९२ ई० तक) उत्तरायण, शिशिर ऋतु, दक्षिण गोल
ति.मा.		तिथि	वार			नक्षत्र			योग			करण			प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेशकाल	भा.स्टै.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन — पक्षान्त में मंगल प्रातः पूर्व में दीखने लग जाएगा । उक्त काल में गुरु पश्चिम कपाल में, शुक्र पूर्व कपाल में, बुध पूर्व क्षितिज से ऊपर उठता दीखेगा ।
															पौष	दिसं.	पौष	ज. आ.		सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.					घ. प.	घ.	मि.	घ.	मि.	अं.	क.	वि.	रा.	
२५	०	१	र	१२	३३	आ	१९	४३	ब्र	४६	०५	कौ	१२	३३	७	२२	१	१५	क.*५९।३९	७	२०	५	२१	८	५	५७	५	सायन मकर में सूर्य १७/३५ शिशिर ऋतु प्रा. शक पौष प्रा. उत्तरायण
२५	१	२	च	३	३९	पुन	१२	५२	ऐ	३५	५५	ग	३	३९	८	२३	२	१६	कर्क	७	२१	५	२२	८	६	५८	११	भ २९।२८ उ. ४५।१८ या.
अ	वम	३	च	५१	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि-क्षय
२५	२	४	म	४७	२४	पु	६	१९	वै	२६	११	ब	२१	२१	९	२४	३	१७	कर्क	७	२१	५	२२	८	७	५९	१७	श्री गणेश चतुर्थी, बुध ज्येष्ठा में २२।२०
२५	३	५	बु	४०	३९	आश्ले	०/५५	३/३१	वि	१७	१३	कौ	१४	२	१०	२५	४	१८	मि०।३३	७	२२	५	२३	८	९	०	२५	
२५	४	६	गु	३५	१५	पू फा	५२	४०	प्री	९	१३	ग	७	४७	११	२६	५	१८	सिं	७	२२	५	२३	८	१०	१	३३	भ ३५।१५ उ. शुक्र वृश्चिक में २१।२२, जोड़ मेला (पंजाब)
२५	५	७	शु	३१	२४	उ फा	५०	५८	आ	२/११	२८/४२	वि	२	१९	१२	२७	६	२०	क ७।१४	७	२३	५	२४	८	११	२	४१	भ ३।२० या.
२५	६	८	श	२९	११	ह	५०	५१	शो	४२	३८	बा	०	१८	१३	२८	७	२१	कन्या	७	२३	५	२४	८	१२	३	५०	
२५	७	९	र	२८	३८	चि	५२	२४	अ.	४९	४०	ग	२८	३८	१४	२९	८	२२	तु २९।३८	७	२४	५	२५	८	१३	५	०	भ ५९।१० उ. सूर्य पू. षा. में १४।४३, शुक्र अनु. में ८।३०
२५	८	१०	च	२९	४१	स्वा	५५	२७	सु	४७	५६	वि	२९	४१	१५	३०	९	२३	तुला	७	२४	५	२६	८	१४	६	१०	भ. २९।४१ या. बुध वक्री ३२।१५
२५	९	११	म	३२	१६	वि	५९	४८	धृ	४७	१५	ब.	०	५८	१६	३१	१०	२४	वृ.४३।४३	७	२४	५	२६	८	१५	७	२०	मंगल मूल धनु में ४९।५५, सफला एकादशी (म)
२५	१०	१२	बु	३६	६	अनु	६०	०	शू	४७	३१	कौ.	४	११	१७	ज १	११	२५	वृश्चिक	७	२४	५	२७	८	१६	८	३१	जनवरी १९९२ प्र.
२५	११	१३	गु	४१	२	अनु.	५	२०	ग	४८	३३	ग	८	३४	१८	२	१२	२६	वृश्चिक	७	२५	५	२८	८	१७	९	४२	भ ४१।२ उ. प्रदोष व्रत
२५	१२	१४	शु	४६	४५	ज्ये	११	४६	वृ	५०	१०	वि.	१३	५४	१९	३	१३	२७	ध.११।४६	७	२५	५	२९	८	१८	१०	५३	भ १३।५४ या.
२५	१३	३०	श	५३	७	मू	१८	५३	ध्रु	५२	१४	च	१९	५६	२०	४	१४	२८	धनु	७	२५	५	२९	८	१९	१२	४	मंगल उदित, शनैश्चरी अमा

* नोट : यहा २१ दिस. को आगे चन्द्रमा के मिथुन राशि प्रवेश के बाद ही २२ दिस. के आगे कर्क राशि प्रवेश है — जनता भ्रान्त न हो । इन दोनों राशि प्रवेश कालों का अन्तर १ दिन २३ घण्टा ४६ मिनट है । मिथुन में प्रवेश २१ दिस के सूर्योदय से केवल ६ मिनट बाद एवं कर्क प्रवेश २३ दिस. के सूर्योदय से ८ मिनट पूर्व हो गया अतः दोनों राशि-प्रवेशों के मध्य बिना राशि प्रवेश के कोई तारीख नहीं आई ऐसा प्रतीत होता है । वस्तु स्थिति यह है कि मिथुन प्रवेश २१ दिस. को एवं कर्क प्रवेश २३ दिस. को है । चन्द्रमा की सूक्ष्म दृश्य गणितानुसार अधिकतम दैनिक गति १५°।२०' है अतः दो दिन से कम समय में चन्द्रमा एक राशि पार कर सकता है । ऐसी स्थिति पहले भी कुछ वर्ष पूर्व एक बार आ चुकी है ।

पौष कृष्ण ८ शनि इष्ट ५५।१८

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
८	१	७	७	६	७	९	८	२
१३	२४	२७	२०	२०	३	११	१६	१६
०	१८	५१	५३	५२	४	४६	१२	१२
१०	५५	४२	३	८	४०	५८	४२	४२
६१	७७४	४४	६५	०	७२	६	३	३
८	३१	०	५३	१२	६	३६	११	११
-	-	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
-	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

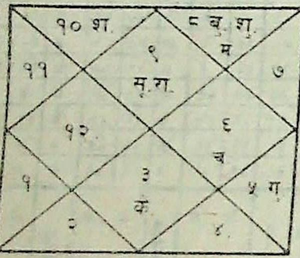

लोक भविष्य — पौष अमावस वाले दिन शनिवार एवं मूल नक्षत्र है । — धान्योत्पत्ति पर्याप्त हो, प्रजा में प्रत्येक वस्तु सुलभ होने से सन्तोष हो — "पौषे मूलममावास्या दृष्टये लोक तुष्टये । शन्यादित्य कुजास्तस्यां बहुलाभाय धान्यतः ।" वर्षा पर्याप्त हो । इस पक्ष के उत्तरार्ध में राहु एवं मंगल एक राशि में आ जाते हैं, यह योग पक्षान्त में वर्षा का अवरोधक है, चारा एवं उपयोगी वस्तुओं की सुलभता में कमी आएगी. — "राहुरंगारकश्चैक — राशि भूपचरतौ तथा । महाभयं च सस्थानां न च वृष्टिः प्रजायते ।" पुनरपि पक्षान्त में गुरु के वक्री होने पर सुभिक्ष, आरोग्य एवं प्रजा सन्तुष्ट रहेगी ।

कुं. सूर्योदये

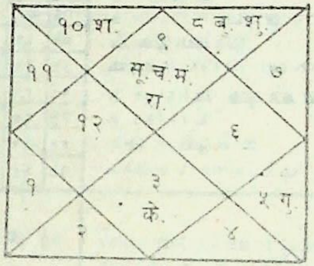

पौष कृष्ण ३० शनि. इष्ट. ५५।१२

सू	च.	म	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	८	७	६	७	९	८	२
२०	२०	३	२९	२०	११	१२	१५	१५
८	३०	०	२०	४९	३१	३३	५०	५०
२१	१६	४९	३६	५२	१०	५५	२६	२६
६१	७०२	४४	७९	१	७२	६	३	३
१२	५८	२०	२८	७	३९	५०	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख — पक्षारम्भ में घी, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी आएगी, २९ दिस. को तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी में तेजी एवं मन्दे के सिग्नल आएंगे । ३१ दिसम्बर को बिनौला, सरसों, घी, चावल, चना, जौ, मूंग में तेजी का वातावरण रहे । १ जनवरी (सन् १९९२) ई. को अचानक लाइन बदल सकती है — सावधानी से वायदाव्यापार करें ।

आकाश लक्षण — दिसम्बर २९, ३०, ३१ जनवरी (१९९२ ई.) १, २ के लगभग उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में पूरी तरह आ जाएगा । हि. प्र., कश्मीर में जोरदार हिमपात होगा । लगभग ३० दिसम्बर एवं १ जनवरी को कुछ प्रान्तों में तथा पूर्वी छोर, हि. प्र., पंजाब में भी वर्षा किंवा ओस-धुन्दमय वातावरण रहे ।

भावक विचार — [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री वि. सं. २०४८ शाक १९१३ पौष शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (५ से १५ जनवरी तक, सन् १९९२ ई०)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री वि.सं. २०४८ शाक १९१३, पौष शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (५ से १५ जनवरी तक, सन् १९९२ ई०) उत्तरायण, शिशिर ऋतु, दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन – शनि १३ जनवरी १९९२ को प्रातः पूर्व में दीखना बन्द हो जाएगा। प्रातः पूर्व में मंगल बुध एवं इनसे काफी ऊपर देदीप्यमान शुक्र दीखेगा। इस समय गुरु पश्चिम में होगा।

	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	म.	चन्द्रराशि घ. प.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
१६	१	र	४९	४१	पू.षा	[illegible]	२८	व्या	४४	३३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१		[illegible]	९	म ४३।२६	७	२४	५	३०	८	२०	१३	१६	बुध मूल धनु में २४।५५
१५	२	च	६०	[illegible]	उ.षा	[illegible]	१६	ह	४७	०	व	३३	१	२२			३०	मकर	७	२६	५	३१	८	२१	१४	२७	चन्द्र दर्शन मु. ४५
१६	२	मं	६	[illegible]		[illegible]	[illegible]	व	४९	२०	कौ	६	३	२३	७	१७	१	मकर	७	२६	५	३२	८	२२	१५	३८	रज्जब मु. प्रारम्भ
१८	३	बु	१२	१७	श्र	४९	२८	सि	६०	०	ग	१३	१७	२४	८	१८	२	कुं १५।४५	७	२६	५	३२	८	२३	१६	४०	भ. ४६।१९ उ., पञ्चक प्रा. १५।४५.
२०	४	गु	१९	२२	शत	५६	१३	सि	१	१८	वि	१९	२२	२५	९	१९	३	कुम्भ	७	२६	५	३३	८	२४	१८	०	भ १९।२२ या., शुक्र ज्येष्ठा में ९।५५
२२	५	शु	२४	३७	पू.भा	६०	०	व्य	२	४४	बा	२४	३७	२६	१०	२०	४	मी ४५।३०	७	२६	५	३४	८	२५	१९	९	
२४	६	श	२८	३४	पू.भा	१	५६	व	३	१९	तै	२८	३४	२७	११	२१	५	मीन	७	२६	५	३५	८	२६	२०	१८	सूर्य उ.षा. में १९।१७, शनि श्रवण २ में ४१।१०
२६	७	र	३०	५८	उ.भा	६	१६	प	[illegible]	४८	व	३०	५८	२८	१२	२२	६	मीन	७	२६	५	३६	८	२७	२१	२६	भ. ३०।५८ उ., अवतार दिन श्री गुरु गोविन्द सिंह जी
२८	८	च	३१	३५	रे	८	५९	शि	[illegible]	[illegible]	वि	१	१६	२९	१३	२३	७	मे ८।५९	७	२६	५	३७	८	२८	२२	३४	भ १।१६ या., पञ्चक स. ८।५९, लोहड़ी (पंजाब), शनि अस्त
२९	९	मं	३०	१३	अ	९	५०	सा	५२	५२	बा	०	५४	मा १	१४	२४	८	मेष	७	२६	५	३७	८	२९	२३	४१	सं. सूर्य मकर में ३५।३७ मु. १५, पुण्यकाल अगले दिन,
३१	१०	बु	२६	५५	भ	८	४६	शु	४६	४१	ग	[illegible]	५५	२	१५	२५	९	वृ २३।३	७	२६	५	३८	९	०	२४	४७	भ. ५४।२२ उ.
३४	११	गु	२१	५०	कृ.	५	५४	शु	२९	१	वि	२१	५०	३	१६	२६	१०	वृष	७	२५	५	३९	९	१	२५	५१	भ. २१।५० या., पुत्रदा एकादशी (स.)
३७	१२	शु	१५	८	रो	६ ५५	२२ ३८	ब्र	३०	७	बा	१५	८	४	१७	२७	११	मि २८।२५	७	२५	५	४०	९	२	२६	५६	प्रदोष व्रत
४०	१३	श	७	८	आ	४७	३५	ऐं	२०	१९	तै	७	८	५	१८	२८	१२	मिथुन	७	२५	५	४१	९	३	२८	०	भ ७।८ उ., ३२।४२ या., मंगल पू.षा. में ४८।२८, बुध पू.षा. में ५५।२५
कम	१४	श	५८	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय
४३	१५	र	४८	५८	पुन	४१	९	वै	६ ५८	६६ ५६	वि	२३	३७	६	१९	२९	१३	क २८।१०	७	२५	५	४२	९	४	२९	३	माघ स्नान प्रा., श्री सत्यनारायण व्रत,

पौष शुक्ल ८ चन्द्र इष्ट ५५।१०

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	०	८	८	४	७	९	८	२
२१	१०	९	११	२०	२२	१३	१५	१५
१	४	६१	५२	३३	२६	३५	२१	२१
६०	५५	१८	११	०	४१	३९	४९	४९
६१	८	४४	६७	२	६१	७	३	३
६	८	४२	३८	४९	६	२	११	१
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	-	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कं. सूर्योदये

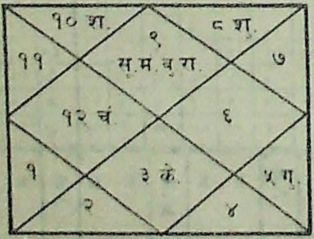

लोक भविष्य – इस मास में चतुर्ग्रही योग एवं मंगलवार को मकर-संक्रान्ति होने से जनता को अनेक विध समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। प्रधान नेताओं के लिए यह समय अग्नि परीक्षा का है। शनि-सूर्य का एक राशि में होना कहीं शासक के विरुद्ध क्रान्ति एवं विषम परिस्थिति का संकेत देता है। दक्षिणी गोलार्ध के देशों में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं सत्ता संघर्ष एवं स्वायत्तता की मांग जोर पकड़ेगी। इस पक्ष में सू.मं.बु.रा. का एकत्र होना कहीं शासन सत्ता में उलट फेर एवं कुछ प्रान्तों में भयंकर अशान्ति एवं दुर्घटना में जन धन हानि, तूफान, भूकम्प किंवा किसी अन्य प्राकृतिक प्रकोप से भी जनधन हानि की सूचना देता है।

कं. सूर्योदये

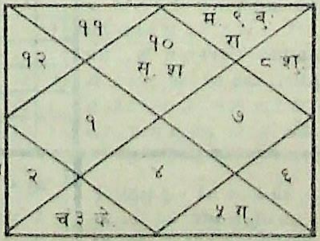

पौष शुक्ल १५ रवि इष्ट ५५।१२

सू.	च	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	३	८	८	४	७	९	८	२
५	६	१४	२०	२०	२९	१४	१५	१५
२५	५४	१०	४६	१३	४६	१८	२	२
१४	५२	३	५८	२१	१	७	४५	४५
६१	९।१५	४४	९१	३	७३	७	३	३
२	३६	५६	१३	५४	१९	८	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख – पक्षारम्भ में रुई, कपास, सूत, उड़द, मूंग, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, अलसी में तेजी बनेगी। १३ जनवरी के लगभग तिलहन, तेल एवं धातुओं में तेजी बने। वायदा व्यापार की लाइन बदल सकती है। १४ जनवरी को घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर एवं अनाजों में जोरदार तेजी एवं सोना, चांदी में अच्छा मन्दा आने का योग है।

आकाश लक्षण – जन. ५, १२, १३, १४, १८ को शिलांग, श्रीलंका, हि.प्र., पूर्वी पंजाब, उ.प्र., बिहार, आसाम, में कहीं बादल चाल, वर्षा व वायु का जोर रहे। शीत लहर से कुछ प्रान्तों में जनहानि का भी योग है।

शकुन विचार – यदि पौष शु. पूर्णिमा को बिजली चमके या आकाश मेघाच्छन्न रहे तो आगे फसल अच्छी हो। पौष शु. एकादशी को कृत्तिका नक्षत्र सम्बन्ध होने से गुड़, लाल मिर्च आदि लाल चीजों में तेजी आएगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, माघ कृष्ण पक्ष २२ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (२० जनवरी से ३ फरवरी तक, सन् १९९२ ई० उत्तरायण, शिशिर ऋतु, दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन – शनि अस्त है। बुध २३ जनवरी को प्रातः पूर्व में दीखना बन्द हो जाएगा। उष: काल में नील वर्ण शनि एवं रक्तवर्ण मंगल परस्पर आसन्न देखे जा सकते हैं। इस समय गुरु पश्चिम क्षितिज की ओर जाता दीखेगा।

दि मा घ	दि मा प	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. माघ	अं. जनवरी	श. पौष	म. रज्जब	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ. प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४७	१	च	३९	२५	पु.	३३	३०	प्री	४८	५	बा	१४	१०	७	२०	३०	१४	कर्क	७	२४	५	४३	९	५	३०	५	सायनकुम्भ में सूर्य ४४।५, शुक्र मूल धनु में ६।४०
२५	५१	२	म	३०	१९	आश्ले	२६	१४	आ	३७	३७	तै	४	५२	८	२१	मा १	१५	सि २६।१४	७	२४	५	४४	९	६	३१	६	भ. ५६।१० उ., शुक्र माघ प्रा., सूर्य अभिजित में
२५	५४	३	बु	२२	१	म	१९	४३	सौ	२७	५१	वि	२२	१	९	२२	२	१६	सिंह	७	२४	५	४५	९	७	३२	७	भ. २२।२ या., श्री गणेश चतुर्थी, संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय A)
२५	५८	४	गु	१४	५४	पू.फा	१४	२२	शो	१९	५	बा	१४	५४	१०	२३	३	१७	क २८।२५	७	२४	५	४५	९	८	३३	८	बुध उ.षा. में ४५।१५, वक्री गुरु पू.फा. २ में १०।२८, बुध पूर्व में अस्त, B
२६	१	५	शु	९	२०	उ.फा	१०	३३	अ	११	३६	तै	९	२०	११	२४	४	१८	कन्या	७	२३	५	४६	९	९	३४	७	सूर्य श्रवण में २५।२७
२६	४	६	श	५	४१	ह	८	३६	सु	५	३८	व	५	४१	१२	२५	५	१९	तु ३८।३७	७	२३	५	४७	९	१०	३५	७	भ. ५।४१ उ., ३४।५२ या, बुध मकर में १।१२, सूर्य अभिजित से निवृत्त
२६	७	७	र	४	२	चि	८	३८	धृ	[illegible]	[illegible]	ब	४	२	१३	२६	६	२०	तुला	७	२२	५	४८	९	११	३६	६	जन्म दिन स्वामी विवेकानन्द जी, गणतन्त्र दिवस
२६	९	८	च	४	२७	स्वा	१०	४०	ग	५७	१६	कौ	४	२७	१४	२७	७	२१	वृ ५८।३७	७	२२	५	४९	९	१२	३७	४	
२६	१२	९	म	६	५२	वि	१४	३६	वृ	५७	२२	ग	६	५२	१५	२८	८	२२	वृश्चिक	७	२१	५	५०	९	१३	३८	३	भ. ३३।५५ उ., जन्म दिन लाला लाजपतराय जी
२६	१५	१०	बु	१०	४९	अनु	२०	५	ध्रु	५८	३०	वि	१०	४९	१६	२९	९	२३	वृश्चिक	७	२१	५	५१	९	१४	३९	०	भ. १०।५९ या.
२६	१८	११	गु	१६	२३	ज्ये	२६	४७	व्या	६०	०	बा	१६	२३	१७	३०	१०	२४	ध २६।४७	७	२०	५	५२	९	१५	३९	५६	षट्तिला एकादशी व्र. (स.) शुक्र पू.फा. में ५९।४८ बलिदान दिन C
२६	२२	१२	शु	२२	४४	मू	३४	१७	व्या	०	२५	तै	२२	४४	१८	३१	११	२५	धन	७	२०	५	५३	९	१६	४०	५३	
२६	२५	१३	श	२९	३०	पू.षा	४२	८	ह	२	४७	व	२९	३०	१९	फ १	१२	२६	म ४९।१६	७	१९	५	५३	९	१७	४१	४८	भ. २९।३० उ., बुध श्रवण में ६।१५ शनि प्रदोष व्रत, D
२६	२८	१४	र	३६	२३	उ.षा	५०	२	व	५	१७	वि	२	५६	२०	२	१३	२७	मकर	७	१९	५	५४	९	१८	४२	४२	भ. ८।५६ या
२६	३२	३०	च	४३	४	श्र	५७	४१	सि	७	४६	च	९	४०	२१	३	१४	२८	मकर	७	१८	५	५५	९	१९	४३	३५	मौनी अमा सोमवती अमावस्या

A रात्रि ८ घ. ५२ मि. । B जन्म दिन नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, C श्री महात्मा गांधी D मेरु त्रयोदशी (जैन) फरवरी प्रा.

माघ कृष्ण ८ चन्द्र इष्ट ५५।२०

स	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	८	०	४	८	०	८	२
१३	२०	२०	३	१९	०	१५	१४	१४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कं. सूर्योदये

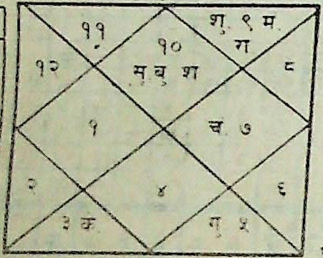

लोक भविष्य – शुक्र धनु-राशि में आकर मंगल-राहु के साथ मेल करेगा, इन पर गुरु की दृष्टि है, अतः राजनैतिक उलझनें गंभीर होने पर भी समस्याओं का समाधान निकलेगा। परन्तु महगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, अतः आन्दोलन एवं प्रदर्शन होंगे। कुछ प्रान्तों में हत्याकाण्ड अधिक होंगे, अन्तर्राष्ट्रीय-समस्याएं गंभीर रूप धारण करेंगी। कहीं आन्तरिक-उलझनें पनपेंगी। पाकिस्तान-बंगलादेश एवं अन्य मुस्लिम-राष्ट्रों में आन्तरिक-कलह क्लेश बढ़े, कहीं सत्ता-परिवर्तन के आसार दिखाई देंगे। किसी पर्वतीय भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से धनहानि एवं शीतलहर से भी जनहानि होगी।

कं. सूर्योदये

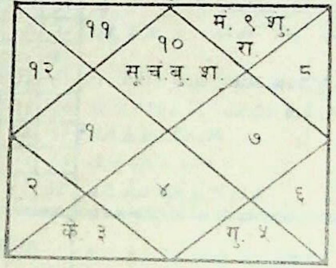

माघ कृष्ण ३० चन्द्र इष्ट ५५।३०

स.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	४	८	९	८	२
२०	२२	२५	१४	१८	१८	१६	१४	१४
३९	५४	२८	४०	५७	९	५	१५	१५
५६	१६	३	४२	३८	३१	३६	३	३
६०	७१४	४५	१००	६	७३	७	३	३
५२	४९	३०	५९	१४	४७	१०	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ.	अ.
४ श्रव	४ श्रव	४ पू.षा.	[illegible] श्रव	[illegible] पू.फा.	[illegible] पू.षा.	[illegible] श्रव	[illegible] पू.षा.	[illegible] आर्द्रा

व्यापार और बाजार का रुख – २० जनवरी को उडद, मूंग, बाजरा, मक्का, चना, सोना, चांदी आदि धातु एवं शेयरों में तेजी आए। २२, २३ जनवरी को बाजारों का रुख मन्दे का रहेगा। २४, २५ जन. के लगभग रूई, सोना, चांदी एवं अनाजों में तेजी का रिएक्शन आकर फिर मन्दा आने का योग है।

आकाश लक्षण – जन. २०, २१, २३, २४, २५ को शीतलहर चलेगी। उक्त तारीखों में लंका, हि.प्र., पूर्वी-पंजाब, उड़ीसा में यत्रतत्र बादल-बाल वर्षा के योग हैं। हि.प्र. में हिमपात होगा। उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में आ जाएगा।

शकुन विचार – माघ कृष्ण तृतीया को मेघ गरजे परन्तु वर्षा न हो तो गेहूं, जौ का स्टाक करें, आगे तेजी से लाभ मिलेगा। यदि माघ कृष्ण [illegible] को आकाश साफ रहे तो कपास के स्टाक से आगे लाभ मिलता है।

श्री वि.सं. २०४८, शाक १९१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.स. २०४८, शाके १९१३, माघ शुक्ल पक्ष २३ (४ से १८ फरवरी तक, सन् १९९२ ई०)

उत्तरायण, शिशिर ऋतु, दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन – बुध अस्त है। शनि १६ फर. को प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा। उष: काल में मंगल शुक्र परस्पर आसन्न, दीखेंगे, गुरु पश्चिम की ओर नत होगा।

ति.मा घ प	तिथि	वार	घ प	नक्षत्र	घ प	योग	घ प	करण	घ प	गरीबें प्र. मास	अ. फ्लवीकी	श. मास	म. राशि	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं मि	सूर्यास्त घं मि	स्पष्ट सूर्य रा अं क वि	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू	[illegible]	व्य	[illegible]	कि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ३१।११	७ १७	५ ४६	९ २० ४४ २७	पञ्चक प्रा. ३१।११
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध	[illegible]	व	[illegible]	बा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुम्भ	७ १७	५ ४७	९ २१ ४५ १८	चन्द्रदर्शन मु. १५, मंगल उ.षा. में ३०।२५, जन्मदिन योगिराज A
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शत	[illegible]	प	[illegible]	तै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुम्भ	७ १६	५ ४८	९ २२ ४६ ७	सूर्यधनि, में ३३।२७ शाबान मु. प्रा.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.भा	[illegible]	शि	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मी ०।३८	७ १५	५ ४९	९ २३ ४६ ५५	भ. ३१।२७ उ., तिल चतुर्थी, वरद चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ.भा	[illegible]	सि	[illegible]	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मीन	७ १४	५ ४९	९ २४ ४७ ४१	भ. ३।२० या., शनि श्रव. ३ में ४४।२८ श्री पञ्चमी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रे	[illegible]	सा	[illegible]	बा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मे २५।०४	७ १३	६ ०	९ २५ ४८ २५	पञ्चक स. २५।२४, मंगल मकर में ५३।४५, बुध धनि में ०।३२ B
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ	[illegible]	शु	[illegible]	तै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मेष	७ १३	६ १	९ २६ ४९ ८	शुक्र उ.षा. में २०।३५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भ	[illegible]	शु	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ ६३।१६	७ १२	६ २	९ २७ ४९ ४९	भ. ७।६ उ., ३६।१३ या., आरोग्य सप्तमी, श्री भीष्माष्टमीरथ सप्तमी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कृ	[illegible]	ब्र	[illegible]	ब	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृष	७ ११	६ ३	९ २८ ५० २९	बुध कुम्भ में १२।३५
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	रो	[illegible]	ऐ	[illegible]	कौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मि ३२।०२	७ १०	६ ४	९ २९ ५१ ६	सं.सूर्य कुम्भ में ८।४९, मु. ३०, पुण्यकाल २४।४९ तक C
[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	दशमी तिथिक्षय,
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मृग	[illegible]	वि	[illegible]	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मिथुन	७ ९	६ ४	१० ० ५१ ४३	भ. २३।४६ उ., ५०।३५ या., जया एकादशी व्रत (स्मा.)
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ	[illegible]	प्री	[illegible]	बा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	क ५६/३०	७ ८	६ ५	१० १ ५२ १७	जया एकादशी व्रत (वै.), भीष्म द्वादशी
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पुन	[illegible]	आ	[illegible]	तै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कर्क	७ ७	६ ६	१० २ ५२ ४०	बुध शत. में ३०।१०, प्रदोष व्रत, शनि उदित
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु	[illegible]	सौ	[illegible]	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिं ५५।०२	७ ६	६ ७	१० ३ ५३ २०	भ. २५।१७ उ., ५०।४३ या., श्री सत्यनारायण व्रत
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अ	[illegible]	शो	[illegible]	ब	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिंह	[illegible]	६ ७	१० ४ ५३ ५८	शनि श्रवण ३ में ४४।२८, माघ स्नान समाप्त, माघी पूर्णिमा D

A बाबा लाला दयाल जी, B बसन्त पञ्चमी, C शुक्र मकर में ३२।५५, D जन्म दिन गुरु रविदास जी,

माघ शुक्ल ८ बुध इष्ट ५५।४७

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	१	९	१०	८	८	९	८	२
२९	१२	९	०	१९	२९	१७	१३	१३
४६	२७	१८	१७	५३	१४	९	४६	४६
५३	४८	३४	१०	२३	९	४३	२६	२६
६०	[illegible]	४५	१००	७	७३	७	३	३
३९	४९	४६	५६	१२	५५	३	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदय

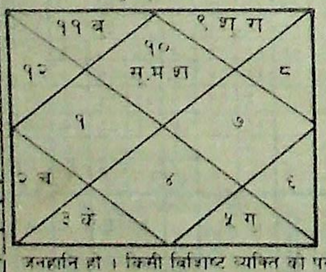

लोक भविष्य – पक्षमध्य में शनि मंगल दोनों मकर राशि में इकट्ठे हो रहे हैं – यह ग्रह स्थिति विशेषत मकर प्रभाव राशि वाले देशों के लिए अत्यधिक संघर्षपूर्ण वातावरण को जन्म देगी – "युद्धकी शनि-माहेयी तथा दुर्भिक्षकारकौ ।।" इस मास में भारत किंवा पड़ोसी देशों के मध्य किसी विशेष विषय को लेकर विवाद किंवा संघर्ष की स्थिति बनने का योग है। अन्तर्देशीय स्थिति पर भी ग्रहस्थिति का प्रभाव पड़ेगा। कुछ देशों का सीमा विवाद युद्ध का आतंक पैदा करे। दुर्घटना किंवा अन्य भूकम्प, जलजला आदि प्राकृतिक-प्रकोप से भी हानि संभव है। किसी दुर्घटना में जनहानि हो। किसी विशिष्ट व्यक्ति को पद त्याग के लिए विवश होना पड़े, अथवा दुर्घटना घटे।

कुं. सूर्योदये

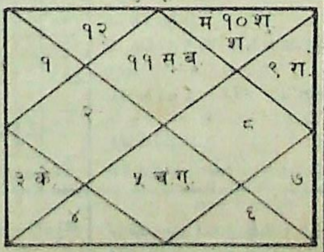

माघ शुक्ल १५ मंगल इष्ट ५६।२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	९	१०	८	९	९	८	२
५	१५	६	११	१७	६	१७	१२	१२
५०	११	५३	१४	१३	३७	५१	२७	२७
२०	५४	३१	०	१०	४८	४६	२१	२१
६०	[illegible]	४५	१११	७	७३	६	३	३
२४	४५	५६	३८	३७	५९	५६	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख – ५ फरवरी को रुई, में अच्छी तेजी आने का योग है – चावल, चना, गेहूं, उड़द, गुड़, खाण्ड से तेजी का रुख रहे। ९ फरवरी को वायदा व्यापारी रुई सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल एवं अलसी में जोरदार तेजी से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। १२, १३ फरवरी को बाजार का रुख देखकर काम करें – उत्तम लाभ का चांस है। **आकाश लक्षण** – फर. ५, ८, ९, १०, १२, १३ को पंजाब हि.प्र. लंका, पूर्वी छोर शिलांग आदि में वायवेग वर्षा किंवा बादल हो। शीत अधिक रहेगा। **शकुन विचार** – माघी पूर्णिमा को यदि बादल हो तो अन्न स्टाक से सातवें मास अच्छा लाभ मिलेगा। यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी भी प्रकार का गर्द गुब्बार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहे, वर्षा खूब हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८ शाक १९१३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४ | तारीखें | चन्द्र राशि | उदय-कालिक

(१९ फरवरी से ४ मार्च, सन् १९९२ ई०)
उत्तरायण, बसन्त ऋतु, दक्षिण गोल

ग्रह दर्शन — बुध २८ फर. को साय पश्चिम में दीखने लगेगा । प्रात मंगल, शुक्र पूर्व कपाल में परस्पर आसन्न दीखेंगे, गुरु लगभग सूर्यास्त समय उदित होकर सारी रात दिखेगा । शनि प्रातः पूर्व में होगा ।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. माघ	मु. शाबान	प्रवेशकाल घ. मि.	सूर्योदय घ.	मि.	सूर्यास्त घ.	प.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२७	४०	१	बु	७	२०	पूफा	४२	९	सु	४२	२३	कौ	७	२०	७	१९	३०	१४	क ५५।४९	७	५	६	८	१०	५	५४	१८
अ	क्षय	२	बृ	५९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	४४	३	बृ	५२	३५	उफा	३६	४९	धृ	३३	३०	व	२५	५८	८	२०	फा १	१५	कन्या	७	४	६	९	१०	६	५४	४५
२७	५०	४	शु	४७	२८	ह	३२	५९	शू	२५	४०	व	२०	२	९	२१	२	१६	कन्या	७	३	६	१०	१०	७	५५	१०
२७	५४	५	श	४४	२१	चि	३१	२	ग	१९	३९	कौ	१५	५४	१०	२२	३	१७	तु २।१	७	१	६	११	१०	८	५५	३३
२७	५९	६	र	४३	२७	स्वा	३१	१३	वृ	१५	११	ग	१३	४६	११	२३	४	१८	तुला	७	०	६	११	१०	९	५५	५६
२८	३	७	सो	४४	४३	वि	३३	३३	ध्रु	१२	२६	वि	१४	५	१२	२४	५	१९	वृ १७।५८	६	५९	६	१२	१०	१०	५६	१८
२८	७	८	मं	४८	५	अनु	३७	५५	व्या	११	२१	बा	१६	२४	१३	२५	६	२०	वृश्चिक	६	५८	६	१३	१०	११	५६	३९
२८	११	९	बु	५३	१०	ज्ये	४३	५९	ह	११	४६	तै	२०	३८	१४	२६	७	२१	ध ४३।५९	६	५७	६	१४	१०	१२	५६	५३
२८	१५	१०	बृ	५९	२३	मू	५१	१४	व	१३	२०	व	२६	१६	१५	२७	८	२२	धन	६	५६	६	१४	१०	१३	५७	१७
२८	१९	११	शु	६०	०	पूषा	५९	०	सि	१४	३७	ब	३२	५१	१६	२८	९	२३	धन	६	५५	६	१५	१०	१४	५७	२४
२८	२४	११	श	६	१८	उषा	६०	०	व्य	१८	१३	बा	६	१८	१७	२९	१०	२४	म १६।१०	६	५४	६	१६	१०	१५	५७	३७
२८	२६	१२	र	१३	११	उषा	०	१३	व	२०	५४	तै	१३	११	१८	मा १	११	२५	मकर	६	५३	६	१७	१०	१६	५७	५८
२८	३१	१३	सो	१९	३८	श्र	१५	४०	प	२३	१०	व	१९	३८	१९	२	१२	२६	क ४८।१९	६	५२	६	१७	१०	१७	५८	५८
२८	३६	१४	मं	२५	२३	ध	२१	४८	शि	२८	५६	श	२५	२३	२०	३	१३	२७	कुम्भ	६	५१	६	१८	१०	१८	५८	७
२८	४०	३०	बु	३०	९	शत	२७	५२	सि	३४	५५	ना	३०	९	२१	४	१४	२८	कुम्भ	६	५०	६	१९	१०	१९	५८	१५

सायन मीन में सूर्य २०।२० बसन्त ऋतु प्रा. सूर्य शतभिषा में ५०।१७
द्वितीया तिथिक्षय
भ. २५।५८ उ., ५२।३५ या. शक फाल्गुन प्रा.
शुक्र श्रवण में २३।४, राहु मूल ४, केतु आर्द्रा २ में १४।५८, श्री गणेश A
मंगल श्रव में ४०।१०
भ. ४३।२७ उ., बुध पू.भा. में ४८।१२, वक्री गुरु पू. फा. १ में १५।१०
भ. १४।५ या.

भ. २६।८ उ., ५९।२३ या.
बुध पश्चिम में उदित
बुध मीन में ६।१२ विजया एकादशी व्रत (स.)
मार्च प्रा., प्रदोष व्रत जन्मोत्सव अनन्त श्री बाल शंकराचार्य (कांची मठ)
भ. १९।३८ उ., ५२।३२ या., पञ्चक प्रा. ४८।१९, श्री महाशिव रात्रि व्र
बुध उ.भा. में २।४५ शुक्र धनि में २८।४२
सूर्य पू. भा. में १।४३

A चतुर्थी. व्रत

फाल्गुन कृष्ण ८ मंगल इष्ट ५६।२०

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	९	१०	४	९	९	८	२
१२	२०	१२	२४	१६	१५	१८	१३	१३
५३	२४	१५	१७	५९	१५	३९	५	५
१६	४९	३३	३३	०	४३	५६	६	६
६०	[illegible]	४६	[illegible]	७	७४	६	३	३
२०	१५	७	५९	५२	४	४७	११	११
	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मू	आर्द्रा

कु. सूर्योदये

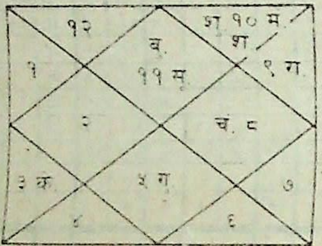

लोक भविष्य — शनि-मंगल एक राशि में हैं । मकर का म बन जीवनोपयोगी घी, तेल, अनाज आदि चीजों में महगाई करता है, जनता में अशान्ति बढ़ती है — "**मकरे च स्थिते भौमें घृत तैल महर्घता । स्त्रिबिखं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख-पीड़नम् ।**" उत्तर भारत की जनता को परिस्थितिवश आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा । पशुओं में रोग फैले । इस पक्ष में मीन राशि में बुध आ जाता है,—यह भी पशुओं के लिए कष्टप्रद प्रजा एवं प्रधान नेताओं में परस्पर संघर्षपूर्ण वातावरण बनाता है । —"**घटे मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान् । प्रजा-शासकयोर्वैरं करोति विग्रहं तथा ।**"

कु. सूर्योदये

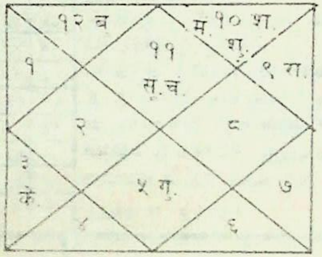

फाल्गुन कृष्ण ३० बुध इष्ट ५६।४०

सू	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	९	११	४	९	९	८	२
२०	२५	१८	७	१५	२५	१९	१२	१२
५५	४३	२५	५४	१६	८	३२	३९	३९
१०	९	१	५७	६	३२	४७	४०	४०
६०	[illegible]	४६	८६	७	७४	६	३	३
७	५९	१७	९	४८	६	२८	११	११
-	-	मा	मा	व	मा	मा	व	व
-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पू.भा.	२ पू.भा.	३ शत.	२ उ.भा.	१ पू.षा.	१ पुन.	३ शत.	४ मूल	२ आर्द्रा

ग्रहचाल और बाजार का रुख — इस पक्ष में रुई, कपास, चांदी, सोना, पाट बारदाना, बिनौला आदि तिलहनों में २० फरवरी के लगभग जोरदार तेजी आएगी । तत्पश्चात् बाजारों का रुख मन्दे की तरफ रहेगा । २३ फरवरी के लगभग जौ, चना, गेहूं में जोरदार तेजी आ सकती है । २९ फरवरी के लगभग रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में मन्दा एवं तेजी के रिएक्शन आएंगे । ३ मार्च के लगभग गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल में तेजी बने ।

आकाश लक्षण — फर. २०, २३, २८, २९ मार्च ३ को बंगलादेश, भूटान, सिक्किम एवं लंका के पश्चिमी भूभाग पर वर्षा के योग है, अन्यत्र वायु का जोर रहे ।

शकुन विचार — यदि फाल्गुन में बादल हों तो फाल्गुन वर्षा न हो तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो ।

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, फाल्गुन शुक्ल २५ | तारीखें | चन्द्र राशि

(५ से १८ मार्च तक, सन् १९९२ ई० तक)
उत्तरायण, बसन्त ऋतु, दक्षिण गोल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि. सं. २०४८, शाक १९१३, फाल्गुन शुक्ल २५ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (५ से १८ मार्च तक, सन् १९९२ ई० तक) उत्तरायण, बसन्त ऋतु, दक्षिण गोल

दि.मा. घ	प	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. रमजान	प्रवेशकाल घ. प.	भा.स्टै.टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन
२८	५६	१	गु	३३	४६	पू.भा	३२	५९	सा	२६	११	कि	२	२	२२	५	१४	२९	मी १६।४२	६	४८	६	१९	१०	२०	५८	२२	चन्द्रदर्शन मु. ३०.
२८	४०	२	शु	३६	४३	उ.भा	३०	९	शु	२५	४०	बा	१	१९	२३	६	१६	१	मीन	६	४७	६	२०	१०	२१	५८	२७	जन्मदिन श्री रामकृष्ण परमहंस , रमजान मु. प्रा.
२८	२३	३	श	३८	२८	रे	४०	१९	शु	२८	२६	तै	७	३६	२४	७	१७	२	मे ४०।१९	६	४६	६	२१	१०	२२	५८	३०	पञ्चक म. ४०।१९.
२८	५९	४	र	३९	११	अ	४२	३३	ब्र	२५	२४	व	८	४०	२५	८	१८	३	मेष	६	४५	६	२१	१०	२३	५८	३०	भ ८।५० उ. ३९।११ या. शुक्र कुम्भ मे ५२।५०
२८	६	५	सो	३९	१	भ	४३	४०	ऐ	१९	३८	ब	९	६	२६	९	१९	४	वृ ४८।४१	६	४३	६	२२	१०	२४	५८	२७	शनि श्रवण ४ में १२।२२
२८	८	६	मं	३७	४१	कृ	४३	५९	वै	१६	०	तै	८	४१	२७	१०	२०	५	वृष	६	४२	६	२३	१०	२५	५८	२२	
२८	१३	७	बु	३४	१५	रो	४३	६	वि	११	३३	ग	६	५८	२८	११	२१	६	वृष	६	४१	६	२३	१०	२६	५८	१३	भ ३५।१५ उ. मंगल श्रवि. मे १९।२
२८	१७	८	गु	३१	४०	मृग	४१	१	प्री	[illegible]	[illegible]	वि	३	५८	२९	१२	२२	७	मि १२।१५	६	४०	६	२४	१०	२७	५८	४	भ ३।५८ या. होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	२२	९	शु	२६	४०	आ	३७	४१	सौ	४०	३०	कौ	४८	४०	१	१३	२३	८	मिथुन	६	३९	६	२४	१०	२८	५७	५३	बुध रेव मे २३।४४
२८	२७	१०	श	२०	५९	पुन	३३	५५	शो	४४	१६	ग	३०	५९	२	१४	२४	९	क १९।३९	६	३७	६	२५	१०	२९	५७	३६	भ ४३।२५ उ. सं. सूर्य मीन मे २।३६ मु. ४५ पुण्यकाल १८।३६ तक शुक्र शत मे १०।८
२८	३२	११	र	१४	११	पु	१७	२७	अ	१५	४६	वि	१४	११	३	१५	२५	१०	कर्क	६	३६	६	२६	११	०	५७	२७	भ १४।११ या. आमलक एकादशी (म) गोविन्द द्वादशी
२८	३७	१२	सो	६	४०	आश्ले	२२	३९	सु	२६	३०	बा	६	४०	४	१६	२६	११	सि २०।३९	६	३५	६	२७	११	१	५७	२	बुध वक्री ५९।५५, सोम प्रदोष व्रत
क्ष	य	१३	व	५८	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय
२८	४३	१४	मं	५०	४२	म	१६	२४	धृ	१७	२	ग	२४	४३	५	१७	२७	१२	सिंह	६	३४	६	२७	११	२	५६	४०	भ ५०।४२ उ. सूर्य उ.भा. मे २३।२७
२८	४९	१५	बु	४३	९	पू.फा	१०	३६	गं	३	९	वि	१६	५६	६	१८	२८	१३	क २४।१५	६	३२	६	२८	११	३	५६	३१	भ १६।५६ या. होलाष्टक समाप्त, श्री सत्यनारायण व्रत A

ग्रह दर्शन -- बुध पश्चात्न में सायं पश्चिम मे दीखना बन्द हो जाएगा । प्रातः मंगल, शुक्र पूर्व कपाल मे दीखेंगे । गुरु सूर्यास्त समय पूर्वकपाल मे देखा जा सकता है ।

A बुध पश्चिम मे अस्त , होली, होलिका दहन,

फाल्गुन शुक्ल ८ गुरु इष्ट ५७।१५

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	२	९	११	४	१०	९	८	२
२८	१०	२४	१६	१४	५	२०	१२	१२
५९	२४	३५	२४	१५	१	२३	१४	१४
०	२४	३७	४७	१	१८	१७	१४	१४
५९	८११	४६	२९	७	७४	६	३	३
४९	१९	२३	५०	२२	८	६	११	११
-	-	मा	मा	ब	मा	मा	व	व
	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

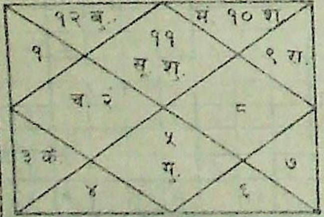

लोक भविष्य -- इस पक्ष में शुक्र मीन राशि में आकर शनि-मंगल के प्रभाव से मुक्त हो जाता है । -- "कुम्भ शनौ स्थिते कुर्यात् सुभिक्षं प्रचुरं जलम् । पञ्चस्थश्च न सन्देहो लोकाः सर्वे निरामयाः ।।" वर्षा समयानुकूल पर्याप्त हो, सुभिक्ष रहे, लेकिन शनि-मं. के सम्बन्ध से अनेकत्र राजनैतिक वातावरण क्षुब्ध होने से शासन में सहमति बनी रहे । १४ मार्च के बाद मीन राशि में सूर्य-बुध का होना भी महर्घता का सूचक है । बुध-सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से विशिष्ट-व्यक्तियों के लिए समय कुछ उलझनों वाला है । इस मास में ५ गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं युद्धमय एवं वातावरण अशान्त रहेगा ।

कुं. सूर्योदये

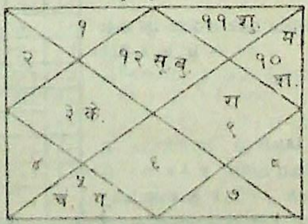

फाल्गुन शुक्ल १५ बुध इष्ट ५७।२५

सू	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	९	११	४	१०	९	८	२
४	८	२९	१७	१३	१२	२०	११	११
५३	७	१४	१७	३२	२५	५९	५५	५५
२०	१२	५	७	६	४५	९	९	९
५९	८६६	४६	५९	६	७४	५	३	३
३७	५४	२७	३८	४९	-५	४७	११	११
	:	मा	ब	व	मा	मा	व	व
	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

व्यापार और बाजार का रुख -- इस पक्ष में घी, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, तम्बाकू, सोना, चांदी, तांबा, गेहूं तेज रहेंगे । तिलहन के व्यापारी एवं गुड़, खाण्ड के व्यापारी उत्तम लाभ में रहेंगे । १४ मार्च के लगभग प्रत्येक वस्तु के भावों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दे की तरफ झुकाव रहे । १९ मार्च के लगभग सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी, बायदा व्यापारी लाभ लें ।

वर्षा का लक्षण -- मार्च ८, ९, ११, १४, १५, १७ को मध्य प्रदेश, बंगाल, बंगला देश में कहीं बादल चाल, बूंदाबांदी हो, वायुवेग के साथ कहीं हानि एवं उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा ।

शकुन विचार -- यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को वर्षा हो व मेघ गरजें तो फसल रोली (काल अंगारी रोग) लगने से हानि हो । ऐसी स्थिति में अन्न संग्रह से आगामी मास लाभ होगा ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री वि.स. २०४८, शाक १९१३, चैत्र कृष्ण पक्ष २६ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ | उदय-अस्तादि

(१९ मार्च से ३ अप्रैल तक, सन् १९९२ ई०)
उत्तरायण, वसन्त ऋतु, उत्तर गोल

दि.मा. घ	प	तिथि	वार	घ	प	नक्षत्र	घ	प	योग	घ	प	करण	घ	प	प्र	अ	श	म	चन्द्रराशि प्रवेशकाल घ प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	स्पष्ट सूर्य रा	अं	क	वि
२९	५४	१	सं	३९	५१	उफा	५	११	व	५०	०२	बा	०	६४	६	१९	२९	१४	कन्या	६	३१	६	२९	११	४	५६	८
२९	५७	२	श	३८	४८	ह	[illegible]	[illegible]	ध्रु	४३	२४	तै	३	३४	७	२०	३०	१५	क २९।१३	६	३०	६	२९	११	५	५५	४२
३०	[illegible]	३	शु	३९	५४	च्या	५२	[illegible]	व्या	[illegible]	[illegible]	वि	३६	५६	८	२१	तै१	१६	तुला	६	२९	६	३०	११	६	५५	१०
३०	३	४	र	३६	५५	वि	५७	१२	ह	३३	३५	बा	[illegible]	५५	९	[illegible]	[illegible]	१७	वृ ४१।५८	६	२७	६	३०	११	७	५८	४०
३०	११	५	च	२५	०	अनु	६०	[illegible]	व	३१	[illegible]	ते	२५	[illegible]	१०	२२	३	१८	वृश्चिक	६	२६	६	३१	११	८	५४	[illegible]
३०	१३	६	म	२७	१८	अनु	[illegible]	[illegible]	सि	३०	१९	व	२८	१८	११	२४	४	१९	वृश्चिक	६	२५	६	३२	११	९	५३	२९
३०	२०	७	बु	३१	२४	ज्ये	४	४८	व्य	२०	५४	व	३१	२५	१२	२५	५	२०	ध ८।४८	६	२४	६	३२	११	१०	५२	५१
३०	२४	८	गु	३७	०	मू	११	८	व	२५	३८	बा	४	१२	१३	२६	६	२१	धन	६	२२	६	३३	११	११	५२	१२
३०	२८	९	शु	४३	२९	पूषा	१८	३४	प	३४	४	तै	१०	१५	१४	२७	७	२२	म ३५।३६	६	२१	६	३४	११	१२	५१	३२
३०	३२	१०	श	५०	१०	उषा	२६	३८	शि	३७	४१	व	१६	५०	१५	२८	८	२३	मकर	६	२०	६	३४	११	१३	५०	५१
३०	३४	११	र	५६	२८	श्र	३४	५१	सि	६०	०	व	२३	१९	१६	२०	९	२४	मकर	६	१९	६	३५	११	१४	५०	८
३०	४२	१२	च	२०	०	ध	४१	१०	सा	४१	३८	कौ	२९	१२	१७	३०	१०	२५	कु ७।६०	६	१८	६	३६	११	१५	४९	२३
३०	४०	१३	म	१	४५	शत	४७	८	शु	४१	[illegible]	ग	१	५५	१८	२१	११	२६	कुंभ	६	१६	६	३६	११	१६	४८	३६
३०	४४	१४	बु	६	११	पू.भा	५१	४१	ब्र	४२	६	व	६	११	१९	अमे१	१२	२७	मी ३५।४२	६	१५	६	३७	११	१७	४७	४७
३०	४७	१५	गु	९	८	उ.भा	५५	४१	ऐ	४०	९	च	९	८	२०	२	१३	२८	मीन	६	१४	६	३७	११	१८	४६	५६
३१	४	३०	शु	१०	४२	रे	५७	४१	वै	४०	१२	ना	१०	४२	२१	३	१४	२९	मे ५७।४१	६	१३	६	३८	११	१९	४६	३

ग्रह दर्शन – बुध २ अप्रैल मे प्रात पूर्व में दीखना शुरू हो जाएगा । प्रात शुक्र मगल एव शनि पूर्व कपाल में होंगे । सूर्यास्त बाद गुरु पूर्व कपाल में होगा ।

मंगल कुम्भ में ५६।४५, बसन्तोत्सव, धुलण्डी, होला मेला A
भ ५८।५९ उ. सायन मेष में सूर्य १९।२५, वसन्त ऋत. B
भ २६।५४ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत

भ २७।१८ उ. ५९।२२ या.
शुक्र पू.भा. में ५।४८
मेला श्री शीतला माता कराली (प.)

भ १६।५० उ, ५०।१० या, मगल शत. मे १९।४५
पापमोचिनी एकादशी (स्मा.)
पञ्चक प्रा. ७।४०, सूर्य रेवती मे ५१।१७, पापमोचिनी C
भौम प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व
भ. ६।११ उ. ३७।४० या., अप्रैल प्रा., मेला पिहोवा (हरियाणा)
शुक्र मीन में १२।१५, बुध पूर्व में उदित
पञ्चक स. ५७।४१, खान्तसंवत्सर २०४८, पूर्ण

A श्री आनन्दपुर साहब (पं.), B वक्री बुध उ.भा. में ३६।४२ वक्री गुरु मघा ४ मे ४४।३४, C एकादशी व्रत (वै.),

चैत्र कृष्ण ८ गुरु इष्ट ५७।५०

स	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	१०	११	४	१०	०	८	२
१२	२२	५	१२	१२	२२	२१	११	११
४०	३४	२५	६	४०	१८	४३	२९	२९
२०	५७	५३	४५	२९	१८	५४	४३	४३
५९	७०८	४६	६१	५	७४	५	३	३
[illegible]	[illegible]	३२	५३	१२	०	१२	११	११
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व
-	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

क. सूर्योदये

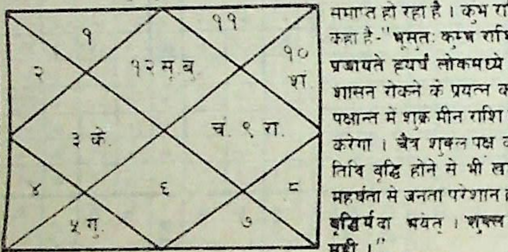

लोक भविष्य – इस पक्ष में शनि-मंगल का सम्बन्ध समाप्त हो रहा है । कुंभ राशि के मगल का फल इस प्रकार कहा है-"भूमतः कुम्भ राशिस्थः सर्वधान्य महर्घता । एवं प्रजायते ह्यर्थ लोकमध्ये न निर्भयम् ।।" महगाई को शासन रोकने के प्रयत्न करें एव जनता मे असन्तोष बढ़े। पक्षान्त मे शुक्र मीन राशि मे आकर सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा । चैत्र शुक्ल पक्ष की तिथिक्षय एव कृष्ण पक्ष की तिथि वृद्धि होने से भी खड़ी फसलो को हानि पहुंचे एव महर्घता से जनता परेशान हो । "मधुमासे कृष्ण पक्षे तिथि वृद्धिर्यदा भवेत् । शुक्ल पक्षस्य हानिःस्यादन्नहीना तदा मही ।"

क. सूर्योदये

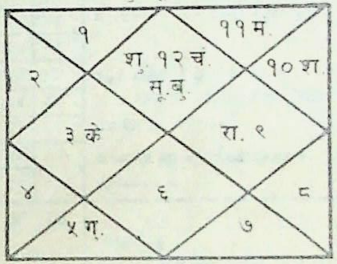

चैत्र कृष्ण ३० शुक्र इष्ट ५८।१२

स	च	म	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०	१०	११	४	११	९	८	२
२०	०	११	६	११	२	२२	११	११
४३	७	३८	१४	५७	१०	२४	४	४
२६	६	३	१७	४०	४५	४१	१७	१७
५९	७०३	४६	२५	४	७४	४	३	३
६	५१	३०	५९	४१	२	४७	११	११
-	-	मा	व	व	मा	मा	व	व
-	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रेव. २	अश्वि १	पुन. २	उ.भा १	मघा ४	पू.भा ४	धनि ४	मूल ४	आर्द्रा २

ग्रहचाल और बाजार पर रूख – इस पक्ष मे कुम्भ राशि का मंगल, शुक्र के साथ राशि-सम्बन्ध बनाएगा । अतः दालों मे,बड़े अनाजों में एवं गुड, खाण्ड, सोना में विशेष तेजी बनेगी । – यह तेजी ठहरेगी नही । रुई, चांदी, शेयरों में जोरदार मन्दा आएगा । २ अप्रैल के लगभग चांदी में तेजी मन्दी चले । अनाज, सरसों, तेल, अलसी, एरण्ड, अन्य तिलहनों में एव गुड खाण्ड मे मन्दे की आशा होने पर भी तेजी का रिएक्शन आएगा, सावधानी से काम करें ।

आकाश लक्षण – मार्च १९, २०, २८, ३० अप्रैल २, ३ को वायु का वेग रहे । तापमान बढ़ेगा । दक्षिणी प्रान्तों में कहीं बादल चाल व बूंदा बांदी के योग हैं ।

शकुन विचार – यदि चैत्र कृष्ण सप्तमी को आकाश मेघों से ढका रहे तो गुड, खाण्ड, गेहू, मसरी व सोना मे तेजी आती है । दोहा – चन्द्रमौलि शंकर चरण बार-बार सिर नाय । संवत यह पुरण कियो सिरा गणेश मनाय ।।

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि नक्षत्र योग चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्र चार आदि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र[illegible]शि-नक्षत्र चार आदि

मास पक्ष २०४७ वि.	जनवरी ९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.मि.	योग	समाप्ति काल घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
माघ कृष्ण	१	१	मं	२०।३६	पुन	२७।३०	ग	२१।४५	क २२।१८	शनि अस्त, मंगल मार्गी
	२	२	बु	१७।३०	पु	२५।२८	वृ	१९।२९	कर्क	भ २८।११ उ.
	३	३	गु	१४।५२	आश्ले	२३।४४	वि	१६।३८	सिं २३।४४	भ १४।५२ या, वक्री बुध (A).
	४	४	शु	१२।२३	म	२२।४४	प्री	१४।४६	सिंह	
	५	५	श	११।४०	पू.फा	२२।२९	आ	९।३९	क २८।३७	बुध मूल धन में ११।३६.
	६	६	र	११।१४	उ.फा	२३। १	सौ	[illegible]	कन्या	भ ११।१४ उ. २३।२६ या.
	७	७	च	११।३७	ह	२४।१९	शो	२०।२८	कन्या	
	८	८	मं	१२।४५	चि	२६।१८	सु	२०।३१	तु १३।१८	शुक्र श्रवण में ९।५७.
	९	९	बु	१४।३२	स्वा	२८।४९	धृ	२१। ३	तुला	भ २७।४० उ.
	१०	१०	गु	१६।४८	वि	--	शू	--	वृ २४।१०	भ १६।४८ या,
	११	११	शु	१९।२	वि	७।४२	शू	७।५०	वृश्चिक	सूर्य उ.षा में ९।२६,
	१२	१२	श	२२। ३	अनु	१०।४६	ग	८।४०	वृश्चिक	शनि उ.षा ३ में २८।४१.
	१३	१३	र	२४।४१	ज्ये.	१३।५०	वृ	९।४१	ध १३।५०	भ २४।४१ उ.
	१४	१४	च	२७। ९	मू	१६।४८	ध्रु	१०।३२	धन	भ १३।५५ या, स. सूर्य मकर (B).
	१५	३०	मं	२९।१९	पू.षा	१९।२२	व्या	११।१४	म २६।८	
माघ शुक्ल	१६	१	बु	३१।१०	उ.षा	२१।५७	ह	११।४२	मकर	
	१७	२	गु	--	श्र	२४। १	व	११।५५	मकर	
	१८	२	शु	८।३६	ध	२५।४०	सि	११।४८	क १२।५०	पञ्चक प्रारम्भ १२।५०, शुक्र (C).
	१९	३	श	९।३४	श	२६।५२	व्य	११।२२	कुम्भ	भ २१।५० उ.
	२०	४	र	१०। ६	पू.भा	२७।३७	व	१०।३४	मी २१।२६	भ १०।६ या, सूर्य सायन कुम्भ (D).
	२१	५	च	१०। ७	उ.भा	२७।५०	प	९।२३	मीन	
	२२	६	मं	९।३६	रेव	२७।३४	शि	[illegible]	मे २७।३४	पञ्चक समाप्त २७।३४.
	२३	७	बु	[illegible]	अ	२६।४७	सा	२७।२३	मेष	भ ८।३५ उ, १९।४८, या,
	२४	९	गु	२९। ०	भ	२५।३१	श	२४।३६	वृ ३१।६	सूर्य श्रव. में ११।३९, शुक्र कुम्भ (E)
	२५	१०	शु	२६।३५	कृ	२३।५१	शु	२१।२८	वृष	
	२६	११	श	२३।४९	रो	२१।४९	ब्र	१८। ३	वृष	भ १३।१२ उ, २३।४९ या,
	२७	१२	र	२०।४८	मृ	१९।३३	ऐ	१४।२४	मि ८।४१	
	२८	१३	च	१७।४०	आर्द्रा	१७। ९	वै	[illegible]	मिथुन	
	२९	१४	मं	१४।३५	पुन	१४।४७	प्री	२७।११	क ९।२३	भ १४।३५ उ २५।७ या, शुक्र (F)
	३०	१५	बु	११।३९	पु	१२।३५	आ	२३।४१	कर्क	बुध उ.षा में १६।७.
फा कृ	३१	१	गु	[illegible]	आश्ले	१०।४१	सौ	२०।३२	सि १०।४१	

मास पक्ष २०४७ वि.	फर. ९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.मि.	नक्षत्र	घं.मि.	योग	समाप्ति काल घं.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घं.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
फाल्गुन कृष्ण	१	३	शु	२९।१८	म	९।१८	शो	१५।४८	सिंह	भ. १८।५ उ. २९।१८ या, (A).
	२	४	श	२८।२४	पू.फा	८।२७	अ	१५।२४	क. १४।२२	
	३	५	र	२८।१९	उ.फा	८।१८	सु	१३।५९	कन्या	मंगल रोहिणी में १९।५६,
	४	६	च	२९। ०	ह	८।५६	धृ	१२।५४	तु. २१।३८	भ. २९।० उ, शनि उदित,
	५	७	मं	३०।२५	चि.	१०।२०	शू	१२।२९	तुला	भ. १७।४२ या,
	६	८	बु	--	स्वा	१२।२४	ग	१२।३५	तुला	सूर्य धनि. में १४।५२,
	७	८	गु	८।२८	वि	१५। १	वृ	१३। ७	वृ. ८।२३	
	८	९	शु	१०।५६	अनु	१७।५९	धु	१३।५७	वृश्चिक	भ. २४।१६ उ, बुध उ.षा में (B),
	९	१०	श	१३।३७	ज्ये	२१। ५	व्या	१४।५५	ध २१।५	भ १३।३७ या, वक्री गुरु (C),
	१०	११	र	१६।१४	मू	२४। ६	ह	१५।५०	धनु	शनि. उ.षा ४ में १३।१४,
	११	१२	च	१८।३७	पू.षा	२६।४९	व	१६।३४	धनु	
	१२	१३	मं	२०।३७	उ.षा	२९। ९	सि	१७। २	म. ९।२३	भ. २०।३७ उ., स सूर्य धनि. (D).
	१३	१४	बु	२२। ५	श्रव	३०।५७	व्य.	१७। ७	मकर	भ. ९।२१ या,
	१४	३०	गु	२३। २	धनि	--	व.	१६।४८	कु. १९।३६	पञ्चक प्रा. १९।३६.
फाल्गुन शुक्ल	१५	१	शु	२३।२८	धनि	८।१६	प.	१६। ५	कुंभ	
	१६	२	श	२३।२३	शत	९। ४	शि.	१४।५८	मी. २७।२०	बुध धनि. में २०।२१,
	१७	३	र	२२।५२	पू.भा	९।२५	सि	१३।३०	मीन	शुक्र मीन में १२।४४,
	१८	४	च	२१।५८	उ.भा	९।२२	सा.	११।४३	मीन	भ. १०।२५ उ., २१।५८ या,
	१९	५	मं	२०।४४	रेव	८।५७	शु.	९।४०	मे. ८।५७	पञ्चक समाप्त ८।५७, शुक्र (E)
	२०	६	बु	१९।१२	अ	८।१४	शु.	[illegible]	मेष	बुध कुंभ में १८।२७,
	२१	७	गु	१७।२७	भ	[illegible]	ऐ	२६। ९	वृ. १२।५८	भ. १७।२७ उ २८।२८ या.,
	२२	८	शु	१५।२८	रो	२८।३९	वै	२३।१७	वृष	
	२३	९	श	१३।१८	मृ	२७। ९	वि	२०।१८	मि. १५।५३	
	२४	१०	र	११। १	आर्द्रा	२५।३१	प्री	१७।१३	मिथु.	भ २१।५० उ, बुध शत. में (F),
	२५	११	च	[illegible]	पुन	२३।५०	आ	१४। ५	क १८।१५	भ. ८।३९ या,
	२६	१३	मं	२७।५५	पु.	२२।१२	सौ	१०।५७	कर्क	
	२७	१४	बु	२५।४७	आश्ले	२०।४२	शो	[illegible]	सि. २०।४२	भ. २५।४७ उ.,
	२८	१५	गु	२३।५५	म.	१९।२४	स	२६।२०	सिंह	भ. १२।५१ या.,

(A) ज्येष्ठा वृश्चिक में ११।६, बुध मार्गी, (B) में १५।५४, (C) धनिष्ठा में २५।३५, (D) में १९।२९, बुध पू.षा में १८।४४, (E) में ९।३८, (F) शत में १७।५३

(A) बुध मकर में २९।१२, (B) १३।५५, राहु उ.षा. २ में केतु पुन. ४ में, (C) पुष्य ३ में १७।१३, शुक्र पू.भा. में, (D) ३ कुंभ में २८।५४, (E) उ.भा. में २९।२७, (F) १३।२१. वेंकटेश (प्लूटो) वक्री,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

मास पक्ष (सं २०४८)	मार्च १९९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
चैत्र कृष्ण पक्ष	१	१	शु	२२/२७	पू.फा	१८/३६	शू	२४/१	क २४/३१	
	२	२	श	२१/३२	उ.फा	१८/१५	श	२२/८	कन्या	शुक्र रेवती में २५/२६
	३	३	र	२१/१४	ह	१८/३०	ग	२०/४४	कन्या	भ ९/२३ उ २१/१४ या (A)
	४	४	च	२१/३८	चि	१९/२५	वृ	१९/४३	तु ६/५८	सूर्य पू.भा में २५/४१
	५	५	म	२२/४५	स्वा	२१/२	ध्रु	१९/३५	तुला	
	६	६	बु	२४/३०	वि	२३/१६	व्या	१९/४७	वृ १६/४२	भ २४/३० उ
	७	७	गु	२६/४७	अनु	२६/०	ह	२०/२४	वृश्चिक	भ १३/३८ या,
	८	८	शु	२९/२२	ज्ये	२९/३	व	२१/१७	ध २९/३	मंगल मृग में १२/५० (B)
	९	९	श	--	मू	--	सि	२२/१५	धनु	
	१०	९	र	७/५८	मू	८/७	व्य	२३/८	धनु	व २१/१० उ बुध उ भा (C)
	११	१०	च	१०/२३	पू.षा	१०/५९	व	२३/४६	म १७/३५	भ १०/२३ या
	१२	११	म	१२/२०	उ.षा	१३/२५	प	२३/५८	मकर	
	१३	१२	बु	१३/४०	श्र	१५/१६	शि	२३/४२	कु २७/५२	शुक्र अश्वि मेष में २३/२१.
	१४	१३	गु	१४/२१	ध	१६/२९	सि	२२/५४	कुंभ	भृ. १४/२१ उ. २६/२१ या (D)
	१५	१४	शु	१४/२०	श.	१७/१	सा	२१/३४	कुंभ	
	१६	३०	श	१३/४१	पू.भा	१६/५८	शु	१९/४७	मी १०/४९	बुध पश्चिम में उदित,
चैत्र शुक्ल पक्ष	१७	१	र	१२/३१	उ.भा	१६/२४	शु	१७/३६	मीन	बुध रेवती में १६/२४
	१८	२	च	१०/५६	रे	१५/२८	ब्र	१५/६	मेष १५/२८	पंचक स. १५/२८ (E)
	१९	३	म	९/३	अ	१४/१५	ऐं	१२/२३	मेष	भ २०/२ उ. व गुरु पुष्य (F)
	२०	४	बु	७/० २८/५१	भ	१२/५३	वै	९/३३	वृ १८/३४	भ ७/० या,
	२१	६	गु	२६/४१	कृ	११/२७	वि	६/३९ २७/४३	वृष	मंगल मिथु में २७/२४ (G)
	२२	७	शु	२४/३५	रो	१०/१	प्री	२४/५२	मि २१/२०	भ २४/३५ उ.
	२३	८	श	२२/३०	मृ	८/४०	आ	२२/४	मिथुन	भ ११/३४ या,
	२४	९	र	२०/३६	आ	७/२३ ३०/१२	सौ	१९/२०	क २४/३०	शुक्र भरणी में २३/३९.
	२५	१०	च	१८/४८	पु	२९/९	शो	१६/४३	कर्क	भ २९/४७ उ.
	२६	११	म	१७/७	अश्ले	२८/१८	अ	१४/१३	सि २८/१८	भ १७/७ या बुध (H)
	२७	१२	बु	१५/२७	म	२७/३७	सु	११/५०	सिंह	
	२८	१३	गु	१४/२२	पू.फा	२७/१२	धृ	९/३९	सिंह	
	२९	१४	शु	१३/२४	उ.फा	२७/६	शू	७/४१ ३०/३	क ९/१०	भ १३/२४ उ. २५/६ या,
	३०	१५	श	१२/४८	ह	२७/२७	ग	२८/२९	कन्या	
वै. कृ. पक्ष	३१	१	र	१२/४२	चि	२८/१९	वृ	२७/४७	तु १५/४३	सूर्य रेवती में २०/३१

(A) बुध पू.भा में १८/३५ (B) बुध मीन में २२/५६, (C) म १५/५७. (D) म. सूर्य मीन में २५/४७.
(E) म. उ. भा में ९/२३. (F) २ में १७/२४ (G) सायन मेष में सूर्य ८/३२. (H) अश्विन मेष में १३/५७.

मास पक्ष	अप्रै. १९९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
प्रथम वैशाख कृष्ण पक्ष	१	२	च	१३/८	स्वा	२९/४३	ह	२७/१९	तुला	भ. २५/३९ उ.
	२	३	म	१४/१०	वि	--	व	२७/२०	वृ २५/१३	भ १४/१० या,
	३	४	बु	१५/४७	वि	७/४३	सि	२७/४४	वृश्चिक	मंगल आर्द्रा में २३/५०
	४	५	गु	१७/५४	अनु	१०/१३	व्य	२८/३१	वृश्चिक	बुध वक्री १७/५०, शुक्र कृति. में २६/४९,
	५	६	शु	२०/२३	ज्ये	१३/८	व	२९/२९	ध १३/८	भ. २०/२३ उ.
	६	७	श	२२/५९	मू	१६/१३	प	---	धनु	भ ९/४१ या,
	७	८	र	२५/२८	पू.षा	१९/१५	प	६/२९	म २५/५६	शुक्र बुध में २२/२२
	८	९	च	२७/३३	उ.षा	२१/५८	शि	७/२१	मकर	
	९	१०	म	२९/१	श्र	२४/८	सि	७/५२	मकर	भ १६/१६ उ. २९/१ या,
	१०	११	बु	२९/४४	ध	२५/३६	सा	७/५४	कु १२/५२	पंचक प्रा. १२/५२, गुरु पुष्य ३ में २९/३३
	११	१२	गु	२९/३७	श	२६/१७	शु	७/२०	कुंभ	
	१२	१३	शु	२८/४५	पू.भा	२६/१२	शु	६/१० २८/२०	मी २०/१३	भ २८/४५ उ. राहु उ भा १ चरण में (A)
	१३	१४	श	२७/१४	उ.भा	२५/२६	ऐं	२६/१	मीन	भ १६/० या,
	१४	३०	र	२५/७	रे	२४/६	वै	२३/१३	मे २४/६	पंचक स. २४/६, स. सूर्य अश्विनी मेष में (B)
प्रथम अधिक वैशाख शुक्ल पक्ष	१५	१	च	२२/३६	अ	२२/२२	वि	२०/५	मेष	
	१६	२	म	१९/५६	भ.	२०/२४	प्री	१६/४४	वृ २५/५९	शुक्र रोहि में ९/५८, वक्री बुध रेवती (C)
	१७	३	बु	१७/२	कृ	१८/१९	आ.	१३/१८	वृष	भ २७/३८ उ.
	१८	४	गु	१४/१४	रो	१६/१९	सौ	९/५२	मि २७/२८	भ १४/१४ या,
	१९	५	शु	११/३६	मृ	१४/२८	शो	६/१४ २७/२६	मिथुन	
	२०	६	श	९/११	आ	१२/५१	सु	२४/३२	क. २७/५२	सायन वृष में सूर्य १९/३९, बुध मार्गी २४/५३
	२१	७	र	७/४ २७/१७	पुन	११/३२	धृ	२१/५१	कर्क	भ ७/४ उ., १८/११ या, बुध पूर्व में उदित,
	२२	९	च	२७/५०	पु	१०/३४	शू	१९/३२	कर्क	
	२३	१०	म	२६/४२	अश्ले	९/५६	ग	१७/२६	सि. ९/५६	
	२४	११	बु	२५/५५	म	९/३६	वृ	१५/३६	सिंह	भ. १४/१८ उ. २५/५५ या,
	२५	१२	गु	२५/२९	पू.फा	९/३८	ध्रु	१४/४	क. १५/४२	
	२६	१३	शु	२५/२४	उ.फा	१०/०	व्या	१२/४७	कन्या	
	२७	१४	श	२५/४४	ह	१०/४१	ह	११/४९	तु २३/१६	भ. २५/४४ उ., (D)
	२८	१५	र	२६/२८	चि	११/५१	व.	११/१०	तुला	भ १४/६ या, मंगल पुन. में ८/५२, (E)
द्वि. अधिक वै. कृ. पक्ष	२९	१	च	२७/४१	स्वा.	१३/२५	सि	१०/५१	तुला	
	३०	२	म	२९/२२	वि	१५/२६	व्य	१०/५५	वृ. ८/५६	

(A) केतु पुन ३ मिथुन में २४/२१, (B) १०/३, (C) मीन में २३/२१, (D) सूर्य भरणी में २५/५२,
(E) बुध मार्गी १८/१८ शुक्र मृग में २१/४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

मास पक्ष	मई १९९[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति काल घ मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घ मि	योग	समाप्ति काल घ मि	चन्द्र राशि प्रवेश घ मि	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
द्वितीय अधिक वैशाख कृष्ण	१	३	बु	--	अनु	१७/२३	व	११/००	वृश्चिक	भ १८/२५ उ.
	२	३	गु	७/२८	ज्ये	२०/४३	प	१०/८	ध २०/४३	भ ७/२८ या;
	३	४	शु	९/४१	मू	२२/४५	शि	१०/१	धन	शुक्र मिथु. में १७/४५
	४	५	श	१०/३२	पू षा	२२/५४	सि	१४/४	धन	
	५	६	र	१५/२	उ षा	--	सा	१२/७	म ९/६०	भ १५/३ उ, २८/११ या;
	६	७	चं	१७/१९	उ षा	८/२३	शु	१५/२६	मकर	
	७	८	मं	१९/३	श्र	८/८	शु	१६/२१	कुं २१/२८	पंचक प्रा २१/२४
	८	९	बु	२०/४	ध	१०/२४	ब्र	१६/१४	कुंभ	
	९	१०	गु	२०/१०	शत	११/३३	ऐ	१५/२९	कुंभ	भ ८/१० उ २०/१७ या (A)
	१०	११	शु	१९/३७	पू भा	११/२८	वै	१४/४	मी ५/३०	बुध अश्वि. मेष में २५/२९
	११	१२	श	१८/९	उ भा	११/२	वि	११/५८	मीन	सूर्य कृत्ति में २०/२
	१२	१३	र	१५/३८	रे	१०/१०	प्री	८/१७	मे १०/१०	भ १५/५८ उ. २६/३६ या (B)
	१३	१४	चं	१२/१२	अ	८/२०	आ	४/२१	मेष	
	१४	३०	मं	१०/५	भ	५/४ ७/२४	श	२२/४४	वृ ११/२६	
द्वितीय (शुद्ध) वैशाख शुक्ल पक्ष	१५	१	बु	५/४३ २७/१९	म	२६/४४	अ	१८/४१	वृष	भ मंग वृष में ६/५६ (G)
	१६	३	गु	२३/७७	मृ	२३/२३	सु	१४/५६	मि ११/३९	
	१७	४	शु	२०/४१	आ	२०/६	धृ	११/१२	मिथुन	भ १०/२४ उ. २०/४१ या (C) गुरु पुष्य ४ में (D)
	१८	५	श	१८/६	पुन	१८/६	शू	७/४४	क १२/२५	
	१९	६	र	१५/४६	पु	१६/३४	ग	२५/४८	कर्क	
	२०	७	चं	१२/४८	आश्ले	१४/३३	वृ	२३/२८	सि १४/३३	भ १३/४८ उ. २५/१९ या
	२१	८	मं	१०/४०	म	१३/२	ध्रु	२१/३०	सिंह	सायन मिथु. में सूर्य (E)
	२२	९	बु	११/४३	पू फा	१२/३	ह	२०/३	क २१/११	बुध भरणी में १५/४०
	२३	१०	गु	११/३९	उ. फा	१२/३४	व	१८/२७	कन्या	भ २३/४६ उ.
	२४	११	शु	११/४३	ह	१२/३३	सि	१८/१४	तु २९/१६	भ ११/४३ या;
	२५	१२	श	१२/३४	चि	१३/४९	व्य	१७/४१	तुला	सूर्य रोहि में १६/१७
	२६	१३	र	१३/४१	स्वा	१९/४०	व	१७/४१	तुला	
	२७	१४	चं	१५/१२	वि	२२/३	प	१८/७	वृ १५/३०	भ १५/१२ उ. २८/९ या.
	२८	१५	मं	१७/५	अनु	२४/३७	शि	१८/४१	वृश्चिक	
ज्ये. कृ.	२९	१	बु	१९/१८	ज्ये	२७/२९	सि	१९/२९	ध २७/२९	
	३०	२	गु	२१/४५	मू	--	सा	२०/२८	धनु	बुध कृत्ति में २६/४८ (F)
	३१	३	शु	२४/२०	मू	६/३२	शु	२१/३३	धनु	भ ११/३ उ. २४/२० या

(A) शुक्र आर्द्रा में १५/३७, (B) पंचक स. १०/१०, (C) शनि वक्री १०/१८
(D) २३/२२ मंगल पुष्य में १६/३९, (E) १८/५१ शुक्र पुन में १८/७ (F) शुक्र कर्क में २८/९२
(G) मंगल कर्क में २२/२२

मास पक्ष	जून १९९[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति काल घ मि	नक्षत्र	समाप्ति काल घ मि	योग	समाप्ति काल घ मि	चन्द्र राशि प्रवेश घ मि	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	१	४	श	२६/२४	पू षा	९/००	शु	२२/३९	म १५/२८	बुध वृष में २३/१०
	२	५	र	२९/१८	उ षा	१२/४४	ब्र	२३/३६	मकर	
	३	६	चं	--	श्र	१५/३३	ऐ	२४/१७	कुं २८/४३	पंचक प्रा २८/४३, शुक्र पुष्य में ९/४१,
	४	६	मं	७/१२	ध	१७/५४	वै	२४/३४	कुंभ	भ ७/१२ उ, १९/५३ या;
	५	७	बु	८/३४	श	१९/३९	वि	२४/१८	कुंभ	
	६	८	गु	९/१२	पू भा	२०/३४	प्री	२३/२४	मी १४/१९	बुध रोहि. में १९/१३, बुध पूर्व में अस्त
	७	९	शु	९/२	उ भा	२०/४३	आ	२१/२३	मीन	भ २०/३२ उ.
	८	१०	श	८/२	रे	२०/३	सौ	१९/४१	मे २०/३	भ ८/२ या, पंचक स. २०/३ (A)
	९	११	र	६/१४ २९/४४	अ	१८/३८	शो	१६/५२	मेष	गुरु आश्ले १ मेष में १९/१७,
	१०	१२	चं	२६/४३	भ	१६/३०	अ	१३/३३	वृ २२/०	भ २४/४३ उ.,
	११	१३	मं	२१/१६	कृ	१४/७	सु	९/४९	वृष	भ ११/० उ.
	१२	३०	बु	१७/३५	रो	११/२०	धृ	५/४० २५/३९	मि २१/४३	
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	१३	१	गु	१३/५१	मृ	८/२५	गं	२१/३२	मिथुन	मंगल आश्ले में ८/१२, बुध मृग में १३/३०
	१४	२	शु	१०/१२	आ	५/३४ २६/२३	वृ	१७/२४	क २१/३२	राहु १ षा ४ में केतु पुन २ में (B)
	१५	३	श	६/४८ ३३/४०	पु	२४/४१	ध्रु	१३/४४	कर्क	भ १७/१९ उ २७/४९ या, (C)
	१६	४	र	२५/१९	आ	२२/५५	व्या	१०/२२	सि २२/५५	बुध मिथु. में २२/१०, शुक्र आश्ले में २३/११
	१७	६	चं	२३/२५	म	२१/४४	ह	७/३५ २८/२२	सिंह	
	१८	७	मं	२२/११	पू फा	२१/१३	सि	२५/५	क २७/१५	भ २२/११ उ.
	१९	८	बु	२१/३८	उ फा	२१/२२	व्य	२५/४५	कन्या	भ ९/५४ या; बुध आर्द्रा में १५/३१
	२०	९	गु	२१/४५	ह	२२/१२	व	२४/५६	कन्या	
	२१	१०	शु	२२/२९	चि	२३/३७	प	२४/३६	तु १०/५५	सायन कर्क में सूर्य २६/५०, सूर्य (D)
	२२	११	श	२३/४६	स्वा	२५/३४	शि	२६/४१	तुला	भ ११/८ उ, २३/४६ या,
	२३	१२	र	२५/३०	वि	२७/४७	सि	२५/७	वृ २१/२२	
	२४	१३	चं	२७/३६	अनु	--	सा	२५/४०	वृश्चिक	
	२५	१४	मं	--	अनु	६/४१	शु	२६/४५	वृश्चिक	बुध पुन में २२/२१
	२६	१४	बु	५/४७	ज्ये	९/३७	शु	२७/४७	ध ९/३७	भ ५/४७ उ. १९/१३ या.
	२७	१५	गु	८/२८	मू	१२/४१	ब	२८/२३	धन	गुरु आश्ले २ में २४/१७,
आषा. कृ.	२८	१	शु	११/१	पू षा	१५/४०	ऐ	--	म २१/१४	बुध पश्चिम में उदित
	२९	२	श	१३/३०	उ षा	१८/३०	ऐ	४/४९	मकर	भ २६/१९ उ
	३०	३	र	१५/४८	श्र	२१/४१	वै	६/४१	मकर	भ १५/४८ या, बुध कर्क में २४/४८

(A) बुध मृग में १४/१० (B) २२/२५, (C) व मृग मिथुन में २/१०, (D) आर्द्रा में १३/५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

मास पक्ष	जुला. १९९१ ई	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	१	४	च	१७/४५	ध.	२४/१	वि.	७/३७	कु. १०/५५	पंचक प्रा० १०/५५
	२	५	म.	१९/१५	श.	२६/९	प्री.	८/१	कुम्भ	बुध पुष्य में २०/१२(H)
	३	६	बु.	२०/१२	पू.भा.	२७/३५	आ.	८/२	मी. २१/१३	भ २०/१२ उ.
	४	७	गु.	२०/२८	उ.भा.	२८/१९	सौ.	७/३४	मीन	भ. ८/२० ; या
	५	८	शु.	२०/०	रे.	२८/२१	शो.	[illegible]	मे. २८/२१	पंचक स. २८/२१ (A)
	६	९	श.	१८/५०	अ.	२७/४०	सु.	२६/४८	मेष	सूर्य पुन. में १२/४५.
	७	१०	र.	१६/५७	भ.	२६/१८	धृ.	२३/५८	मेष	भ ५/५३ उ. १६/५७ या.
	८	११	च.	१४/२६	कृ.	२४/२१	शू.	२०/४४	वृ. ७/४९	
	९	१२	म.	११/२५	रो.	२१/५७	ग.	१७/५	वृष	
	१०	१३	बु.	८/१० २६/२०	मृ.	१९/१३	वृ.	१३/८	मि. ८/३५	भ. ८/० उ. १८/१० या (B)
	११	३०	गु.	२४/३६	आ.	१६/१९	ध्रु.	९/१ २८/१०	मिथुन	
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	१२	१	शु.	२०/५६	पुन.	१३/२६	ह.	२४/४९	क. ८/९	
	१३	२	श.	१७/२९	पु.	१०/४४	व.	२०/५८	कर्क	
	१४	३	र.	१४/२६	आश्ले.	८/२२	सि.	१७/२८	सि. ८/२२	भ. २५/११ उ. गुरु (C)
	१५	४	च.	११/५५	म.	६/३० २८/४१	व्य.	१४/२६	सिंह	भ. ११/५५ या;
	१६	५	म.	१०/३	उ.फा.	२८/५०	व.	११/५६	क. १०/५१	स. सूर्य कर्क में २४/११
	१७	६	बु.	८/५५	ह.	२८/५९	प.	१०/३	कन्या	
	१८	७	गु.	८/३४	चि.	--	सि.	८/४७	तु. १७/२९	भ. ८/३४ उ. २०/४७ या;
	१९	८	शु.	९/०	चि.	५/५९	सि.	८/८	तुला	
	२०	९	श.	१०/७	स्वा.	७/४१	सा.	८/२	वृ. २७/२५	बुध मघा सिंह में १५/४५ (D)
	२१	१०	र.	११/५१	वि.	९/५९	शु.	८/२४	वृश्चिक	भ. २४/५६ उ.
	२२	११	च.	१४/१	अनु.	१२/४४	शु.	९/८	वृश्चिक	भ. १४/१ या.
	२३	१२	म.	१६/२८	ज्ये.	१५/४४	ब्र.	१०/६	ध. १५/४४	सायन सिंह में सूर्य (E)
	२४	१३	बु.	१९/२	मू.	१८/५५	ऐं.	११/१२	धनु	
	२५	१४	गु.	२१/३३	पू.षा.	२१/५७	वै.	१२/१७	म. २८/४१	भ. २१/३३ उ.
	२६	१५	शु.	२३/५५	उ.षा.	२४/५३	वि.	१३/१६	मकर	भ. १०/४४ या; मगल (F)
श्रा. कृ. पक्ष	२७	१	श.	२६/७	श्र.	२७/३४	प्री.	१४/६	मकर	
	२८	२	र.	२७/४५	ध.	--	आ.	१४/४१	कु. १६/४४	पंचक प्रा० १६/४४. (G)
	२९	३	च.	२९/८	ध.	५/५४	सौ.	१४/५९	कुम्भ	भ. १६/२७ उ., २९/८ या;
	३०	४	म.	--	श.	७/५१	शो.	१४/५६	मी. २६/५८	गुरु आश्ले. ४ में ७/३४;
	३१	४	बु.	६/१	पू.भा.	९/२०	अ.	१४/३९	मीन	

(A) मगल मघा सिंह में [illegible] (B) बुध आश्ले. में १९/१९. (C) आश्ले. ३ में १६/१० (D) [illegible] (E) [illegible] वक्री शनि उ.षा. [illegible] में २६/४३ (F) पू.फा. में २८/२९. (G) शुक्र पू.फा. में [illegible] (H) शुक्र मघा सिंह में ११/३८

मास पक्ष	अग. १९९१ ई	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
श्रावण कृष्ण पक्ष	१	५	गु.	६/२४	उ.भा.	१०/१९	धृ.	१३/४१	मीन	शुक्र वक्री २६/११.
	२	६	शु.	६/१४ २८/२१	रे.	१०/४६	शू.	१२/२६	मे. १०/४६	भ. ६/१४ उ., १७/५२ या; (A)
	३	८	श.	२८/१२	अ.	१०/४०	गं.	१०/४६	मेष	सूर्य आश्ले. में ११/९
	४	९	र.	२६/२२	भ.	९/५९	वृ.	८/३१	वृ. १५/४२	व. शुक्र, पू.फा. में २८/५५.
	५	१०	च.	२४/२१	कृ.	८/४७	ध्रु.	५/५५ २६/५२	वृष	भ. १३/११ उ., २४/२ या; गुरु अस्त
	६	११	म.	२१/१५	रो.	७/३ २८/५४	व्या.	२३/३०	मि. १७/५८	
	७	१२	बु.	१८/७	आ.	२६/३५	ह.	१९/५१	मिथुन	बुध वक्री २४/४२.
	८	१३	गु.	१४/४७	पुन.	२४/०	व.	१६/१	क. १८/३९	भ. १४/४७ उ., २५/७ या;
	९	१४	शु.	११/२१	पु.	२१/२३	सि.	१२/७	कर्क	
	१०	३०	श.	७/५७ २८/४८	आश्ले.	१८/५४	व्य.	८/१५ २८/३३	सि. १८/५४	
श्रावण शुक्ल पक्ष	११	२	र.	२५/५८	म.	१६/१३	प.	२५/११	सिंह	शुक्र पश्चिम में अस्त
	१२	३	च.	२३/४१	पू.फा.	१४/५९	शि.	२२/१४	क. २०/४२	
	१३	४	म.	२२/३	उ.फा.	१३/५१	सि.	१९/४९	कन्या	भ. १०/५२ उ., २२/३ या;
	१४	५	बु.	२१/१०	ह.	१३/२७	सा.	१८/०	तु. २५/३९	गुरु मघा १ सिंह में १५/१६ (B)
	१५	६	गु.	२१/७	चि.	१३/५०	शु.	१६/४९	तुला	
	१६	७	शु.	२१/५२	स्वा.	१५/२	शु.	१६/१८	तुला	भ. २१/५२ उ. [illegible] ३ (C)
	१७	८	श.	२३/२१	वि.	१६/५७	ब्र.	१६/२२	वृ. १०/२९	भ. १०/३६ या, स. मघा (D)
	१८	९	र.	२५/२५	अनु.	१९/२८	ऐं.	१६/५४	वृश्चिक	
	१९	१०	च.	२७/५१	ज्ये.	२२/२५	वै.	१७/४७	ध. २२/२५	
	२०	११	म.	--	मू.	२५/३१	वि.	१८/५१	धनु	भ. १७/९ उ.
	२१	११	बु.	६/२६	पू.षा.	२८/३७	प्री.	१९/५५	धनु	भ. ६/२६ या;
	२२	१२	गु.	८/५८	उ.षा.	--	आ.	२०/५३	म. ११/२१	मंगल कन्या में १६/३३.
	२३	१३	शु.	११/१५	उ.षा.	७/३१	सौ.	२१/३६	मकर	सायन कन्या में सूर्य २०/४४
	२४	१४	श.	१३/१०	श्र.	१०/३	शो.	२२/०	कु. २३/७	भ. १३/१० उ. २५/५४ या; (E)
	२५	१५	र.	१४/३८	ध.	१२/११	अ.	२२/४	कुम्भ	
भा. कृ. पक्ष	२६	१	च.	१५/३६	श.	१३/५१	सु.	२१/४५	कुम्भ	
	२७	२	म.	१६/१०	पू.भा.	१५/४	धृ.	२१/५	मी. ८/४६	भ. २८/१३ उ.,
	२८	३	बु.	१६/१६	उ.भा.	१५/५१	शू.	२०/४	मीन	भ. १६/१६ या, बुध आश्ले. कर्क में १५/११
	२९	४	गु.	१५/५६	रे.	१६/१३	ग.	१८/४३	मे. १६/१३	गुरु मघा २ में २१/१८, पंचक (H)
	३०	५	शु.	१५/१२	अ.	१६/१२	वृ.	१७/३	मेष	सूर्य पू.फा. में २८/४५ (F)
	३१	६	श.	१४/७	भ.	१५/४९	ध्रु.	१५/६	वृ. २१/३८	भ. १४/७ उ., २५/२३ या; (G)

(A) पंचक स. १०/४६. (B) बुध पश्चिम में अस्त, (C) केतु पुन. १ में २०/९. (D) सिंह में सूर्य ८/४३, मंगल उ.फा. में १०/४०. (E) पंचक प्रा. २३/७. (F) बुध पूर्व में उदित, शुक्र पूर्व में उदित, (G) बुध मार्गी १०/२८, गुरु उदित. (H) स. १९/१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्र चार आदि

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्र चार आदि

मास पक्ष सं. २०४८	सि. १९९१	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	१	७	र.	१२/३९	कृ.	१५/४	व्या.	१२/४०	वृष	
	२	८	चं.	१०/५०	रो.	१३/५८	ह.	१०/१८	मि. २५/१६	
	३	९	मं.	८/४३	मृ.	१२/३३	व.	८/३० २८/२५	मिथुन	भ. १९/३१ उ., बुध मघा सिंह में २२/४८
	४	१०	बु.	६/१८ ३०/३७	आ.	१०/५२	व्य.	२५/१२	क. २७/२५	भ. ६/१८ या;
	५	१२	गु.	२४/४९	पुन.	८/५६	व.	२१/४८	कर्क	
	६	१३	शु.	२१/५७	पु.	६/५३ २७/४१	प.	१८/२२	सि. २८/४९	भ. २१/५७ उ.,
	७	१४	श.	१९/८	म.	२६/५०	शि.	१४/५७	सिंह	भ. ८/३३ या; मंगल हस्त में ७/१०
	८	३०	र.	१६/३१	पू.फा.	२५/७	सि.	११/४०	सिंह	
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	९	१	चं.	१४/१६	उ.फा.	२३/४८	सा.	८/३९ ३०/१	क. ६/५७	
	१०	२	मं.	१२/३०	ह.	२३/२	शु.	२७/५०	कन्या	
	११	३	बु.	११/२२	चि.	२२/५७	ब्र.	२६/१५	तु. ११/०	भ. २३/११ उ.,
	१२	४	गु.	१०/५९	स्वा.	२३/३८	ऐं.	२५/१७	तुला	भ. १०/५९ या;
	१३	५	शु.	११/२३	वि.	२५/५	वै.	२४/५५	वृ. १८/४३	शुक्र मार्गी २१/४६ (A)
	१४	६	श.	१२/३१	अनु.	२७/१४	वि.	२५/७	वृश्चिक	गुरु मघा ३ में ९/५१
	१५	७	र.	१४/२३	ज्ये.	२९/५७	प्री.	२५/४६	ध. २९/५७	भ. १४/२३ उ २७/३५ या; (B)
	१६	८	चं.	१६/४६	मू.	——	आ.	२६/४३	धनु	
	१७	९	मं.	१९/२९	मू.	८/५९	सौ.	२७/४६	धनु	सूर्य कन्या में ८/३६, बुध पूर्व अस्त
	१८	१०	बु.	२१/५५	पू.षा.	१२/६	शो.	२८/४५	म. १८/५०	व. शनि उ.षा. ३ में १४/३९
	१९	११	गु.	२४/११	उ.षा.	१५/३	अ.	२९/२८	मकर	भ. ११/४ उ. २४/११ या
	२०	१२	शु.	२६/४	श्र.	१७/३७	सु.	२९/५०	मकर	
	२१	१३	श.	२७/२२	ध.	१९/४१	धृ.	२९/४९	कु. ६/३९	पंचक प्रा. ६/३९
	२२	१४	र.	२८/३	श.	२१/९	शू.	२९/४९	कुम्भ	भ. २८/३ उ., बुध पू.फा. (D)
	२३	१५	चं.	२८/१०	पू.भा.	२२/४	ग.	२८/१४	मी. १५/५०	भ. १६/७ या; सूर्य (E)
आश्विन कृष्ण पक्ष	२४	१	मं.	२७/४७	उ.भा.	२२/२७	वृ.	२६/५१	मीन	बुध कन्या में २३/१०
	२५	२	बु.	२६/५६	रे.	२२/२४	ध्रु.	२५/६	मे. २२/२४	पंचक स. २२/२४, शुक्र (F)
	२६	३	गु.	२५/४६	अ.	२१/५९	व्या.	२३/५	मेष	भ.१४/२१ उ., २५/४६ या;
	२७	४	शु.	२४/२०	भ.	२१/१८	ह.	२०/५०	वृ. २७/४	मंगल चित्रा में १५/५३(G)
	२८	५	श.	२२/४२	कृ.	२०/२४	व.	१८/२५	वृष	
	२९	६	र.	२०/५५	रो.	१९/२२	सि.	१५/५३	वृष	भ. २०/५५ उ.
	३०	७	चं.	१९/०	मृ.	१८/१२	व्य.	१३/१५	मि. ६/४७	भ. ७/५८ या; बुध हस्त में १०/१८ (H)

(A) सूर्य उ.फा. में २२/३४, (B) बुध पू.फा. में १६/७ मंगल अस्त, (C) व. शनि उ.षा. ३ में १४/३९, (D) में २७/५४, (E) सायन तुला में १८/१६, (F) मघा में २२/४०, (G) सूर्य हस्त में १४/५, (H) गुरु मघा ४ में ४/३६।

मास पक्ष	अक्टू. १९९१	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
आश्विन कृष्ण पक्ष	१	८	मं.	१६/५९	आ.	१६/५५	व.	१०/३०	मिथुन	
	२	९	बु.	१४/५३	पुन.	१५/३४	प.	७/४२ २८/४०	क. ९/५४	भ. २५/४८ उ.;
	३	१०	गु.	१२/४३	पु.	१४/८	सि.	२५/५५	कर्क	भ. १२/४३ या ;
	४	११	शु.	१०/३१	आश्ले.	१२/४१	सा.	२३/१	सिं. १२/४१	
	५	१२	श.	८/२१ ३०/३१	म.	११/१८	शु.	२०/१२	सिंह	भ. ३०/२१ उ., शनिमार्गी १०/१८
	६	१४	र.	२८/३५	पू.फा.	१०/२	शु.	१७/३०	क. १५/४७	भ १७/२८ या;
	७	३०	चं.	२७/९	उ.फा.	९/१	ब्र.	१५/३	कन्या	बुध चित्रा में २३/१०, मंगल (D)
आश्विन शुक्ल पक्ष	८	१	मं.	२६/१३	ह.	८/२४	ऐं.	१२/५७	तु. २०/२०	
	९	२	बु.	२५/५१	चि	८/१६	वै.	११/१५	तुला	
	१०	३	गु.	२६/१०	स्वा.	८/४३	वि	१०/३	वृ. २७/३२	सूर्य चित्रा में २७/२
	११	४	शु.	२७/१३	वि.	९/५२	प्री.	९/२३	वृश्चिक	भ. २४/४२ उ., २७/१३ या; (A)
	१२	५	श.	२८/५४	अनु.	११/४२	आ.	९/१६	वृश्चिक	
	१३	६	र.	— —	ज्ये.	१४/७	सौ.	९/३८	ध. १४/७	
	१४	६	चं.	७/९	मू.	१७/१	शो.	१०/२४	धनु	
	१५	७	मं.	९/४४	पू.षा	२०/७	अ.	११/२३	म. २६/५३	भ. ९/४४ उ; २३/३ या; (E)
	१६	८	बु.	१२/२२	उ.षा.	२३/११	सु.	१२/२४	मकर	शुक्र पू.फा. में १०/३४
	१७	९	गु.	१४/४९	श्र.	२५/५८	धृ.	१३/१५	मकर	सं. सूर्य तुला में २०/३४ (B)
	१८	१०	शु.	१६/४८	ध.	२८/१३	शू.	१३/४७	कुं.१५/५	भ. २९/२८ उ; पंचक प्रा. १५/५(F)
	१९	११	श.	१८/९	शत.	२९/५०	गं.	१३/५०	कुम्भ	भ. १८/९ या;
	२०	१२	र.	१८/४८	पू.भा.	— —	वृ.	१३/२२	मी. २४/३०	
	२१	१३	चं.	१८/४२	पू.भा.	६/४४	ध्रु.	१२/१९	मीन	शनि उ.षा. ४ में २०/४९,
	२२	१४	मं.	१७/५७	उ.भा.	६/५९ ३०/१२	व्यां.	१०/४३	मे. ३०/३३	भ. १७/५७ उ, २९/२२ या; (C)
	२३	१५	बु.	१६/३९	अ.	२९/४१	ह.	८/४० ३०/११	मेष	सायन वृश्चि. में सूर्य २७/३३(G)
कार्तिक कृष्ण पक्ष	२४	१	गु.	१४/५३	भ.	२८/३६	सि.	२७/२८	मेष	बुध विशा. में १४/१८, सूर्य स्वा. में १३/३३
	२५	२	शु.	१२/५०	कृ.	२६/५८	व्य.	२४/३२	वृ. १०/४	भ. २३/४३ उ;
	२६	३	श.	१०/३६	रो.	२५/२४	व.	२१/३१	वृष	भ. १०/३६ या;
	२७	४	र.	८/१७ २९/५९	मृ.	२३/४९	प.	१८/२८	मि. १२/३७	
	२८	५	चं.	२७/४६	आ.	२२/१६	शि.	१५/२७	मिथुन	भ. २७/४६ उ;
	२९	७	मं.	२५/४१	पुन.	२०/५४	सि.	१२/३१	क. १५/१५	भ. १४/४३ या;
	३०	८	बु.	२३/४३	पु.	१९/३७	सा.	९/४१	कर्क	शुक्र उ.फा. में २५/४५,
	३१	९	गु.	२१/५६	आश्ले.	१८/३०	शु.	६/५९ २८/२४	सिं. १८/३०	बुध वृश्चिक में ७/२८,

(A) बुध तुला में २३/३१, (B) मंगल स्वाती में १५/६, गुरु पू.फा. १ में २७/३४, (C) पंचक सं. ३०/१२, (D) तुला में १६/३०, (E) बुध स्वाती में २५/३३, (F) राहु पू.षा. २ में केतु आर्द्रा ४ में १७/५०, (G) बुध पश्चिम में उदित।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्र चार आदि

पक्ष	नव. १९९४	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
कार्तिक कृ.प.	१	१०	शु.	२०/२१	म.	१७/३५	ब्र.	२६/०	सिंह	भ. ९/८ उ. २०/२१ या.
	२	११	श.	१८/५८	पू.फा.	१६/५१	ऐं.	२३/४६	क. २२/४४	बुध अनु. में १४/४९.
	३	१२	र.	१७/५०	उ.फा.	१६/२३	वै.	२१/४४	कन्या	शुक्र कन्या में १०/१०.
	४	१३	च.	१७/३	ह.	१६/१३	वि.	१९/५९	तु. २८/२०	भ. १७/३ उ., २८/५१ या.
	५	१४	म.	१६/३८	चि.	१६/२६	प्री.	१८/३२	तुला	मंगल विशा. में २६/२१.
	६	३०	बु.	१६/४१	स्वा.	१७/६	आ.	१७/२७	तुला	सूर्य विशा. में २१/४०
कार्तिक शुक्ल पक्ष	७	१	गु.	१७/१७	वि.	१८/१७	सौ.	१६/४७	वृ. १२/१	गुरु पू.फा. २ में १३/३८.
	८	२	शु.	१८/२७	अनु.	२०/१	शो.	१६/३३	वृश्चिक	
	९	३	श.	२०/११	ज्ये.	२२/१७	अ.	१६/४४	ध. २२/१७	
	१०	४	र.	२२/२५	मू.	२५/१	सु.	१७/१९	धनु	भ. ९/१८ उ. २२/२५ या:
	११	५	च.	२५/०	पू.षा.	२८/५	धृ.	१८/११	धनु	
	१२	६	म.	२७/४४	उ.षा.	— —	शू.	१९/१२	म. १०/४३	बुध ज्येष्ठ में ९/७. शुक्र हस्त में २५/८
	१३	७	बु.	३०/२०	उ.षा.	७/१५	ग.	२०/११	मकर	भ. ३०/२० उ:
	१४	८	गु.	— —	श्र.	१०/१६	वृ.	२०/५८	कु. २३/३४	भ. १९/२८ या; पंचक प्रा० २३/३४.
	१५	८	शु.	८/३५	ध.	१२/५४	ध्रु.	२१/२३	कुम्भ	
	१६	९	श.	१०/१४	शत.	१४/५६	व्या.	२१/१६	कुम्भ	सं. सूर्य वृश्चिक में २०/२०.
	१७	१०	र.	११/७	पू.भा.	१६/१३	ह.	२०/३३	मी. ९/५४	भ. २३/१० उ.
	१८	११	च.	११/१२	उ.भा.	१६/४४	व.	१९/१३	मीन	भ. ११/१२ या:
	१९	१२	म.	१०/२९	रे.	१६/२८	सि.	१७/१५	मे. १६/२८	पंचक मं १६/२८. सूर्य अनु. में २७/४२
	२०	१३	बु.	९/२	अ.	१५/३१	व्य.	१५/४४	मेष	मंगल वृश्चि. में १०/३९
	२१	१४	गु.	६/३९ २८/२६	भ.	१४/०	व.	११/४६	वृ. १९/३२	भ. ६/५९ उ; १७/४३ या:
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	२२	१	शु.	२५/३७	कृ.	१२/५	प.	८/२७ २०/२१	वृष	सायन धनु में सूर्य २५/५
	२३	२	श.	२२/३८	रो.	९/५४	सि.	२५/१४	मि. २०/४६	
	२४	३	र.	१९/३८	मृ.	७/१७ २९/२२	सा.	२१/३४	मिथुन	भ. ९/८ उ: १८/३८ या: (A)
	२५	४	च.	१६/४४	पुन.	२७/१८	शु.	१८/०	क. २१/४९	
	२६	५	म.	१४/३	पु.	२५/२९	शु.	१४/३७	कर्क	बुध मूल धनु में १४/१४,
	२७	६	बु.	११/४२	आश्ले.	२४/१	ब्र.	११/२९	सि. २४/१	भ. ११/४२ उ; २२/४२ या:
	२८	७	गु.	९/४२	म.	२२/५६	ऐं.	८/३९ ३०/८	सिंह	बुध वक्री १४/५५.
	२९	८	शु.	८/६ ३०/५७	पू.फा.	२२/१६	वि.	२७/५६	क. २८/१२	
	३०	१०	श.	३०/१४	उ.फा.	२२/१	प्री.	२६/८	कन्या	भ.१८/३५ उ; ३०/१४ या (B)

(A) मंगल अनु. में २८/५, शुक्र चित्रा में २९/२, (B) भ. बुध ज्येष्ठा वृश्चि. में २८/१४, शुक्र तुला में २६/२५

पक्ष	दिस. १९९४	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ.मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
मार्ग. कृ.प.	१	११	र.	२९/५८	ह.	२२/१३	आ.	२४/४०	कन्या	
	२	१२	च	३०/१०	चि.	२२/५१	सौ.	२३/३२	तु. १०/३२	बुध पश्चिम में अस्त,
	३	१३	म	३०/४७	स्वा.	२३/५५	शो.	२२/४५	तुला	भ. ३०/४७ उ; सूर्य ज्ये. में ८/२
	४	१४	बु.	— —	वि.	२५/२५	अ.	२२/१९	वृ. १९/३	भ. १९/२० या:
	५	१४	गु.	७/५३	अनु.	२७/२२	सु.	२२/१४	वृश्चिक	
	६	३०	शु.	९/२६	ज्ये.	२९/४२	धृ.	२२/२८	ध. २९/४२	शुक्र स्वा. में २१/२५.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	७	१	श.	११/२४	मू.	— —	शू.	२३/०	धनु	गुरु पू.फा.३ में १२/५२,
	८	२	र.	१३/४६	मू.	८/२६	ग.	२३/४८	धनु	
	९	३	च.	१६/२४	पू.षा.	११/२६	वृ.	२४/४५	म. १८/१४	भ. २९/४७ उ:
	१०	४	म.	१९/९	उ.षा.	१४/३६	ध्रु.	२५/४६	मकर	भ. १९/९ या; वक्री बुध (G)
	११	५	बु.	२१/५२	श्र.	१७/४४	व्या.	२६/४२	कु. ३१/१	पंचक प्रा० ३१/१ शनि (A)
	१२	६	गु.	२४/१८	ध.	२०/३९	ह.	२७/२५	कुम्भ	
	१३	७	शु.	२६/१७	शत.	२३/१०	व.	२७/४६	कुम्भ	भ. २६/१७ उ; मंगल (B)
	१४	८	श.	२७/३५	पू.भा.	२५/३	सि.	२७/३६	मी. १८/३५	भ. १८/५६ या;
	१५	९	र.	२८/७	उ.भा.	२६/१२	व्य.	२६/५२	मीन	
	१६	१०	च.	२७/३९	रे.	२६/३३	व.	२५/२८	मे. २६/३३	सं. सूर्य धनु में १०/५७. (H)
	१७	११	म.	२६/४१	अ.	२६/५	प.	२३/२५	मेष	भ. १५/१५ उ; २६/४१ या; (C)
	१८	१२	बु.	२४/४८	भ.	२४/५३	शि.	२०/४६	वृ. ३०/२६	बुध मार्गी २७/४७.
	१९	१३	गु.	२२/१७	कृ.	२३/४	सि.	१७/३५	वृष	
	२०	१४	शु.	१९/१५	रो.	२०/४४	सा.	१३/५९	वृष	भ. १९/१५ उ; २९/३५ या; (D)
	२१	१५	श.	१५/५४	मृग.	१८/६	शु.	१०/२ २९/५७	मि. ७/२४	
पौष कृष्ण पक्ष	२२	१	र.	१२/२२	आ.	१५/१८	ब्र.	२५/४८	क. ३१/१२	सायन मकर में सूर्य १४/२२
	२३	२	च.	८/४९ २९/२८	पुन.	१२/३०	ऐं.	२१/४३	कर्क	भ. १९/८ उ; २९/२८ या:
	२४	४	मं.	२६/१९	पु.	९/५३	वै.	१७/५०	कर्क	बुध ज्येष्ठ में १६/१६.
	२५	५	बु.	२३/३७	आश्ले.	७/३५ २९/४४	वि.	१४/१५	सि. ७/३५	
	२६	६	गु.	२१/२८	पू.फा.	२८/२७	प्री.	११/३	सिंह	भ. २१/२८ उ. शुक्र वृश्चि. में १५/५५
	२७	७	शु.	१९/५९	उ.फा.	२७/४६	आ.	८/२० ३०/८	क. १०/१५	भ. ८/४२ या:
	२८	८	श.	१९/३	ह.	२७/४४	शो.	२८/२७	कन्या	
	२९	९	र.	१८/५१	चि.	२८/२१	अ.	२७/१६	तु. १६/३	भ. ३१/५ उ:, शुक्र अनु. में(E)
	३०	१०	च.	१९/१८	स्वा.	२९/३५	सु.	२६/३४	तुला	भ. १९/१८ या.
	३१	११	म.	२०/१९	वि.	३१/२०	धृ.	२६/१८	वृ. २४/४३	मंगल मूल धनु में २७/२१(F)

(A) श्रवण १ में २९/३९, (B) ज्येष्ठा में २०/५, बुध पूर्व में उदित, (C) शुक्र विशा. में ३०/२५ (D) राहु पू.षा. १, केतु आर्द्रा ३ में १५/२४, (E) १०/३६ सूर्य पू.षा. में १३/१७, (F) गुरु वक्री १९/५४, (G) विशाखा में २३/२०, (H) पंचक सं २६/३३,

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

पक्ष	जन. १९९२ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
पौ.कृ.प.	१	१२	बु.	२१/४१	अनु.	--	शू	२६/२५	वृश्चिक	
	२	१३	गु.	२३/४०	अनु.	९/३३	ग	२६/४०	वृश्चिक	भ २३/४० उ
	३	१४	शु.	२६/७	ज्ये	१२/७	वृ	२७/२०	ध १२/७	भ १२/५८ या:
	४	३०	श	२८/६०	मू	१६/५८	ध्रु	२८/१९	धन	मंगल उदित
पौष शुक्ल पक्ष	५	१	र	३१/२९	पू.षा.	१८/०	व्या	२९/१४	म २६/४३	बुध मूल धनु में १७/२३
	६	२	च.	--	उ.षा	२१/८	ह.	३०/१६	मकर	
	७	२	मं	१०/५	श्र.	२६/१५	व	३१/१०	मकर	
	८	३	बु.	१२/४४	ध	२७/१३	सि.	--	कु. १३/४४	भ. २५/५८ उ. पंचक प्रा० १३/४४
	९	४	गु.	१५/११	शत.	२९/५५	सि.	७/४३	कुम्भ	भ. १५/११ या; शुक्र ज्ये. में १९/२६
	१०	५	शु.	१७/१६	पू.भा.	--	व्य	८/३२	मी. २५/३९	
	११	६	श.	१८/५१	पू.भा.	८/१२	व	८/४६	मीन	शनि श्रवण २ में २३/५२ (A)
	१२	७	र.	१७/४९	उ.भा.	९/२६	प.	८/३३	मीन	भ. १९/४९ उ:
	१३	८	च.	२०/४	रे.	११/१	शि	७/१० ३०/१२	मे. ११/१	भ. ७/५७ या; पंचक म. ११/१(G)
	१४	९	मं.	१९/३१	अ.	११/२२	सा.	२८/३५	मेष	मं. सूर्य मकर में २१/४९
	१५	१०	बु.	१८/१२	भ.	१०/५६	शु.	२६/६	वृ. १६/३५	भ. २९/१० उ.
	१६	११	गु.	१६/९	कृ.	९/४७	शु.	२३/२	वृष	भ. १६/९ या, बुध (B)
	१७	१२	शु.	१३/२८	रो.	७/३८ ३१/१६	ब्र.	१९/२८	मि. १८/४७	
	१८	१३	श.	१०/३६ ३०/४३	आ	२६/५१	ऐ.	१५/३१	मिथुन	भ. १०/३६ उ., २०/३० या; (C)
	१९	१५	र.	२६/५९	पुन.	२३/५२	वै.	११/१९ ३०/५९	क. १८/३७	
माघ कृष्ण पक्ष	२०	१	च.	२३/१०	पु.	२०/४९	प्री.	२६/३८	कर्क	शुक्र मूल धनु में १०/४ (D)
	२१	२	मं.	१९/३२	आश्ले.	१७/५६	आ.	२२/२७	सि. १७/५४	भ. २९/५१ उ., सूर्य अभिजित् में
	२२	३	बु.	१६/१२	म.	१५/१७	सौ.	१८/३२	सिंह	भ. १६/१२ या;
	२३	४	गु.	१३/२१	पू.फा.	१३/८	शो.	१५/२	क. १८/४६	बुध उ.षा. में २५/३० (E)
	२४	५	शु.	११/७	उ.फा.	११/३६	अ.	१२/२	कन्या	सूर्य श्रवण में १७/३४,
	२५	६	श.	९/२९	ह.	१०/४९	सु.	९/३८	तु. २२/४९	भ. ९/२९ उ., २१/१९(F)
	२६	७	र.	८/५९	चि.	१०/५०	धृ.	७/५३ ३०/४६	तुला	
	२७	८	च.	९/९	स्वा.	११/३८	गं.	३०/१६	वृ. ३०/४८	
	२८	९	मं.	१०/६	वि.	१३/१२	वृ.	३०/१८	वृश्चिक	भ. २२/५५ उ.,
	२९	१०	बु.	११/४८	अनु.	१५/२३	ध्रु.	३०/४४	वृश्चिक	भ. ११/४८ या;
	३०	११	गु.	१३/५३	ज्ये.	१८/३	व्या	--	ध. १८/३	शुक्र पू.षा में ३१/१५.
	३१	१२	शु.	१६/२५	मू.	२१/३	व्या	७/३०	धनु	

(A) सूर्य उ.षा. में १५/९, (B) पू.षा. में ५/३३, (C) मंगल पू.षा. में २७/५०, (D) सायन कुंभ में सूर्य २५/१२, (E) वक्री गुरु पू.फा. २ में १०/६ बुध पूर्व में अस्त, (F) या, बुध मकर में १०/४०, सूर्य अभिजित से निवृत्त, (G) शनि अस्त

पक्ष	फर. १९९२ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ. मि.	योग	समाप्ति काल घ. मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ. मि.	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
मा. कृ.	१	१३	श.	१९/७	पू.षा.	२४/१०	ह.	८/२६	म. ३०/४७	भ. १९/७ उ., बुध श्रवण (A)
	२	१४	र.	२१/५२	उ.षा.	१७/१९	व.	९/२५	मकर	भ. ८/३० या.
	३	३०	च.	२४/३१	श्र.	३०/२२	सि.	१०/२४	मकर	
माघ शुक्ल पक्ष	४	१	मं.	२६/५९	ध.	--	व्य.	११/१७	कु. १९/४७	पंचक प्रा० १९/४१,
	५	२	बु.	२९/१२	ध.	९/१३	व.	१२/०	कुम्भ	मंगल उ.षा. में १९/२६.
	६	३	गु.	३१/५	श.	११/४९	प.	१२/३१	कुम्भ	शुक्र धनु में २०/३८
	७	४	शु.	--	पू.भा	१४/५	शि	१२/४६	मी. ७/३१	भ. १९/५० उ.,
	८	४	श.	८/३४	उ.भा.	१५/५७	सि.	१२/४३	मीन	भ. ८/३४ या; शनि (B)
	९	५	र.	९/३७	रे.	१७/२३	सा.	१२/१९	मे. १७/२३	पंचक म. १७/२३, बुध धनु में ७/२
	१०	६	च.	१०/८	अ.	१८/१७	शु.	११/३१	मेष	शुक्र उ.षा. २७/२४,
	११	७	मं.	१०/२	भ.	१८/३५	शु.	१०/१४	वृ. २४/३०	भ. १०/२ उ., २१/४० या;
	१२	८	बु.	९/१९	कृ.	१८/१५	ब्र.	८/३९ ३०/१२	वृष	बुध कुम्भ में २५/३९.
	१३	९	गु.	७/५६ ३०/२८	रो.	१७/१८	ऐ	२७/२४	मि. २८/३१	म. सूर्य कुम्भ में १०/३९,(D)
	१४	११	शु.	२७/२३	मृ.	१५/४४	वि.	२४/१०	मिथुन	भ. १६/३९ उ. २७/२३ या;
	१५	१२	श.	२४/१६	आ.	१३/३८	प्री.	२०/३०	क. २९/४४	
	१६	१३	र.	२०/५१	पुन.	११/६	आ.	१६/३२	कर्क	बुध शत. में १९/९ (E)
	१७	१४	च.	१७/१३	पु.	८/१६ ३०/२२	सौ.	१२/२२	सि. २९/२२	भ. १७/१३ उ. २७/२३ या;
	१८	१५	मं.	१३/३३	म.	२६/२२	शो.	८/८ ३०/४९	सिंह	
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१९	१	बु.	१०/७ ३०/४०	पू.फा.	२३/५६	सु.	२४/२	क. २९/२४	सूर्य शत. में २५/१२ सायन मीन में सूर्य १५/१३
	२०	३	गु.	२८/६	उ.फा.	२१/४७	धृ.	२०/२८	कन्या	भ. १७/२७ उ., २८/६ या,
	२१	४	शु.	२६/२	ह.	२०/१४	शू.	१७/२२	कन्या	शुक्र श्रव. में २३/४(F)
	२२	५	श.	२४/४९	चि.	१९/२६	ग.	१४/५३	तु. ७/५०	मंगल श्रवण में ३०/३२
	२३	६	र.	२४/२३	स्वा.	१९/३०	वृ.	१३/५	तुला	भ. २४/२३ उ., (C)
	२४	७	च.	२४/५३	वि.	२०/२५	ध्रु.	११/५८	वृ. १४/११	भ. १२/३८ या:
	२५	८	मं.	२६/१२	अनु.	२२/८	व्या	११/३१	वृश्चिक	
	२६	९	बु.	२८/१२	ज्ये.	२६/३३	ह.	११/४०	ध. २६/३३	
	२७	१०	गु.	३०/४१	मू.	२९/२६	व.	१२/१६	धनु	भ. १७/२६ उ. ३०/४१ या;
	२८	११	शु.	--	पू.षा.	३०/३४	सि.	१३/१०	धनु	बुध पश्चिम में उदित,
	२९	११	श.	९/२५	उ.षा.	--	व्य.	१४/१३	म. १३/२३	बुध मीन में ९/२२.

(A) में ९/५०, (B) श्रवण ३ में २५/०, (C) बुध पू.भा. में २२/७, वक्री गुरु पू.फा. १ में १२/५९, (D) शुक्र मकर में २०/२२, (E) शनि उदित, (F) राहु मूल ४ में केतु आर्द्रा २ में १३/२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्रराशिप्रवेशकाल एवं भद्रा ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि

पक्ष	मार्च १९९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	चन्द्र राशि प्रवेश घ.मि.	भद्रा. ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
फा.कृ.	१	१२	र	१२/९	उ.षा	९/४६	व.	१५/१५	मकर	
	२	१३	च	१६/४३	श्र.	१२/४८	प	१६/८	कु. २६/११	भ. १४/४३ उ., २७/५२ या;(A)
	३	१४	मं	१७/०	ध.	१५/३६	शि.	१६/४८	कुम्भ	शुक्र-धनि में १८/२० (G)
	४	३०	बु.	१८/५३	शत	१७/५८	सि	१७/११	कुम्भ	सूर्य पू.भा. में ७/२९·
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	५	१	गु.	२०/२३	पू.भा	२०/०	सा.	१७/१६	मी. ३०/३	
	६	२	शु.	२१/२८	उ.भा	२१/३८	शु.	१७/४	मीन	
	७	३	श.	२२/९	रे.	२२/५३	शु.	१६/३२	मे. २२/५३	पंचक स. २२/५३
	८	४	र.	२२/२६	अ.	२३/४६	ब्र.	१५/४३	मेष	भ. १०/१८ उ०, २२/२६ या;(C)
	९	५	च.	२२/२०	भ.	२४/१५	ऐ.	१५/३५	वृ. ३०/१६	शनि श्रव. ३ में ११/३९,
	१०	६	म.	२१/४७	कृ.	२४/१८	वै.	१३/७	वृष	
	११	७	बु.	२०/४७	रो.	२३/५५	वि.	११/१८	वृष	भ. २०/४७ उ., मंगल धनिष्ठा में १४/२१
	१२	८	गु.	१९/२०	मृ.	२३/५	प्री.	९/८ ३०/१६	मि. ११/३०	भ. ८/४ या;
	१३	९	शु.	१७/२३	आ.	२१/४७	सौ.	२७/३९	मिथुन	बुध रेव. में १४/४४,
	१४	१०	श.	१५/१	पुन.	२०/३	शो.	२४/२६	क. १४/२९	भ. २५/३९ उ, सं. सूर्य मीन में ७/२९ (D)
	१५	११	र.	१२/१७	पु.	१७/५९	अ.	२०/५४	कर्क	भ. १२/१७ या
	१६	१२	च.	९/१५ ३०/३	आश्ले	१५/३८	सु.	१७/११	सि. १५/३८	बुध वक्री ३०/३३,
	१७	१४	म.	२०/५१	म.	१३/११	धृ.	१३/२२	सिंह	भ. २०/५१ उ., सूर्य उ. भा. में १५/५७
	१८	१५	बु.	२३/४८	पू.फा	१०/४७	शू.	९/२६ ३०/१	क. १६/१४	भ. १०/२० या; बुध पश्चिम में अस्त
चैत्र कृष्ण पक्ष	१९	१	गु.	२१/४	उ.फा.	८/३६	वृ.	२६/४०	कन्या	मंगल कुंभ में २९/१३,
	२०	२	शु.	१८/४९	ह.	६/४७ २६/३४	ध्रु.	२३/४२	तु. १८/११	भ. ३०/१ उ., व बुध उ.षा. (E)
	२१	३	श.	१७/१४	स्वा.	२९/१	व्या	२१/३४	तुला	भ. १७/१४ या;
	२२	४	र.	१६/२५	वि.	२९/१८	ह.	१९/५४	वृ. २३/१४	
	२३	५	च	१६/२७	अनु.	— —	व.	१८/५३	वृश्चिक	
	२४	६	म.	१७/२०	अनु.	६/२६	सि	१८/३३	वृश्चिक	भ. १७/२० उ.,३०/९ या;
	२५	७	बु.	१८/५८	ज्ये	८/१९	व्य	१८/४६	ध. ८/१९	शुक्र पू. भा. में ८/४०
	२६	८	गु.	२१/१०	मू.	१०/५०	व	१९/२६	धनु	
	२७	९	शु.	२३/४५	पू.षा	१३/४७	प.	२०/२३	म. २०/३४	
	२८	१०	श.	२६/२४	उ.षा	१६/५५	शि.	२१/२४	मकर	भ. १३/५ उ., २६/२४ या (F)
	२९	११	र.	२८/५४	श्र.	१९/५९	सि.	२२/२२	मकर	
	३०	१२	च.	— —	ध	२२/४५	सा.	२३/५	कु. ९/२२	सूर्य रेवती में २६/४९, पंचक प्रा. ९/२२.
	३१	१२	मं.	७/२	शत.	२५/७	शु.	२३/२८	कुम्भ	

(A) पंचक प्रा. २५/११, (C) शुक्र कुम्भ में २७/५४, (D) शुक्र शत में १३/२८, (E) में २१/१० .
वक्री गुरु मघा ४ में २४/२०, सूर्य सायन मेष में १४/१७, (F) मंगल शत में १९/४३, (G) बुध उ. भा. में ७/५७

चैत्र कृ.	अप्रैल १९९१ ई.	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.मि.	योग	समाप्ति काल घ.मि.	प्रवेश घ.मि.	भद्रा. ग्रहराशि-नक्षत्रचार आदि
	१	१३	बु.	८/४३	पू.भा.	२७/०	शु.	२३/२९	मी. २०/३२	भ. ८/४३ उ. २१/१८या.
	२	१४	गु.	९/५३	उ.भा.	२८/२२	ब्र.	२३/५	मीन	शुक्र मीन में ११/७ बुध पूर्व में उदित
	३	३०	शु.	१०/२१	रे.	१९/१७	ऐ.	२२/१९	मे. २९/१७	पंचक स. २९/१७,

भा. स्टैं. टा. में दिए गए तिथि नक्षत्र आदि को समझाने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी-पलों में दिये गये तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में यदि इन्हें दिया जाय तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किये जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टै. टा. में नक्षत्रों, योगों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र, राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति-काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक हैं, इसे समझ लेना चाहिए—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाइम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अंकों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाइम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अंकों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे— सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ ही लिखा गया है। नीचे दिये गये उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा।

(१) कल्पना करें कि किसी दिन पू.षा. के आगे ७ घं. २१ मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि पू.षा. नक्षत्र इस दिन प्रातः ७ बजकर २१ मिनट तक रहेगा।

(२) कल्पना करें कि किसी दिन वरीयान् योग के आगे १३ घं. ३९ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय यह है कि इस दिन वरीयान् योग दिन के १ बजकर ३९ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) सं. २०४७ के मार्तण्ड पञ्चांक में १४ जनवरी सन् १९९१ ई. चन्द्रवार को माघकृष्ण चतुर्दशी के आगे २७ घं. ९ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय है, कि १४ जनवरी की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे के बाद) १५ जनवरी की रात के ३ बजकर ९ मि. पर चतुर्दशी समाप्त होगी। ध्यान रहे, यद्यपि यहाँ चतुर्दशी की समाप्ति के समय अंग्रेजी तारीख १५ जनवरी ही होगी, एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी मंगल ही होगा, परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार उस समय वार चन्द्रवार ही माना जाएगा, क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से बदलता है। यही कारण है— इस तिथि के आगे चन्द्रवार ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि—यहाँ पंचांग में तिथि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों वहां घण्टों में से २४ घटा कर शेष घण्टा-मिनटों को अग्रिम तारीख का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिए—

वि. सं. २०४७ के मार्तण्ड पञ्चांक में २२ जनवरी मंगलवार को मेष राशि में चन्द्र का प्रवेशकाल २७ घं. ३४ मि. लिखा है। इसका अर्थ है कि—२३ जनवरी को सूर्योदय से पहले ३ बजकर ३४ मि. पर चन्द्रमा मेष राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय मंगलवार ही होगा।

नोट—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाइम (घं. मि.) नहीं लिखा है अर्थात् (———) इस तरह का चिन्ह लगाया है, उस तिथि, नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए। अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक) रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) सन् १९९०-९१ ई०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) सन् १९९०-९१ ई०
(१ जन. को अयनांश २३°।४४'।८")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू क्रां०	चन्द्र क्रां०	चलकार	तारीख.
१९९०ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९० ई.
दिस. ३१	८ १५ १७ ३०	२ ४ २० १७	१ ४ ३ ५७	८ १ ६ २५	३ १८ २० ९	८ २९ ४४ २२	९ १ ४८ ३७	९ ५ २६ ५४	−२३ ८	२६ ४	२ ३८	३१ दिस.
जन. १.	८ १६ १८ ३७	२ १९ २९ ५९	१ ४ ३ ७	८ ० ३४ ७	३ १८ १४ २४	९ ० ५९ ३६	९ १ ५५ ३४	९ ५ २३ ४३	−२३ ४	२४ ७	१ २१	१ जनवरी
(१९९१) २	८ १७ १९ ४६	३ ४ २८ १२	१ ४ ३ ३	८ ० १२ १८	३ १८ ८ २९	९ २ १४ ५१	९ २ २ ३३	९ ५ २० ३२	−२२ ५९	२० ३०	० १	२ १९९१
३	८ १८ २० ५४	३ १९ ७ ३२	१ ४ ३ ४६	८ ० ० ३१	३ १८ २ २७	९ ३ ३० ३	९ २ ९ ३२	९ ५ १७ २१	−२२ ५३	१५ ३९	− १ २१	३
४	८ १९ २२ २	४ ३ २३ १	१ ४ ५ १६	७ २९ ५८ १८	३ १७ ५६ १६	९ ४ ४५ १६	९ २ १६ ३२	९ ५ १४ १०	−२२ ४८	१० ३	− २ ३४	४
५	८ २० २३ ११	४ १७ १० ४६	१ ४ ७ २९	८ ० ४ ०	३ १७ ४९ ५६	९ ६ ० २९	९ २ २३ ३४	९ ५ १० ०	−२२ ४१	४ ८	− ३ ३६	५
६	८ २१ २४ २१	५ ० ३१ २१	१ ४ १० २८	८ ० १९ ५६	३ १७ २३ २९	९ ७ १५ ४१	९ २ ३० ३७	९ ५ ७ ४९	−२२ ३५	− १ ४६	− ४ २३	६
७	८ २२ २५ २८	५ १३ २७ १९	१ ४ १४ १२	८ ० ४२ २०	३ १७ ३६ ५५	९ ८ ३० ५२	९ २ ३७ ४०	९ ५ ४ ३८	−२२ २८	− ७ २४	− ४ ५६	७
८	८ २३ २६ ३८	५ २६ ० ५७	१ ४ १८ ३८	८ १ ११ ३४	३ १७ ३० १३	९ ९ ४६ ३	९ २ ४४ ४४	९ ५ १ २७	−२२ २०	−१२ ३४	− ५ १४	८
९	८ २४ २७ ४७	६ ८ १७ ६	१ ४ २३ ४८	८ १ ४६ ५७	३ १७ २३ २४	९ ११ १ १४	९ २ ५१ ४९	९ ४ ५८ १७	−२२ १२	−१७ ७	− ५ १६	९
१०	८ २५ २८ ५५	६ २० २० ४१	१ ४ २९ ३९	८ २ २७ ४८	३ १७ १६ २८	९ १२ १६ २२	९ २ ५८ ५४	९ ४ ५५ ६	−२२ ४	−२० ५५	− ५ ५	१०
११	८ २६ ३० ५	७ २ १५ २	१ ४ ३६ १२	८ ३ १३ ३८	३ १७ ९ २६	९ १३ ३१ ३३	९ ३ ६ १	९ ४ ५१ ५५	−२१ ५५	−२३ ४८	− ४ ४०	११
१२	८ २७ ३१ १४	७ १४ ४ ४०	१ ४ ४३ २५	८ ४ ३ ५३	३ १७ २ १७	९ १४ ४६ ४१	९ ३ १३ ७	९ ४ ४८ ४४	−२१ ४६	−२५ ३८	− ४ ४	१२
१३	८ २८ ३२ २१	७ २५ ५३ ३८	१ ४ ५१ १८	८ ४ ५८ ५	३ १६ ५५ ३	९ १६ १ ४८	९ ३ २० १४	९ ४ ४५ ३३	−२१ ३६	−२६ १९	− ३ १७	१३
१४	८ २९ ३३ ३०	८ ७ ४४ ०	१ ४ ५९ ५१	८ ५ ५५ ५०	३ १६ ४७ ४३	९ १७ १६ ५५	९ ३ २७ २२	९ ४ ४२ २३	−२१ २६	−२५ ४८	− २ २२	१४
१५	९ ० ३४ ३९	८ १९ ३८ ४९	१ ५ ९ १	८ ६ ५६ ४७	३ १६ ४० १८	९ १८ ३२ १	९ ३ ३४ ३०	९ ४ ३९ १२	−२१ १५	−२४ ६	− १ २१	१५
१६	९ १ ३५ ४५	९ १ ४० ४०	१ ५ १८ ४९	८ ८ ० ३३	३ १६ ३२ ४८	९ १९ ४७ ६	९ ३ ४१ ३८	९ ४ ३६ १	−२१ ४	−२१ १८	० १५	१६
१७	९ २ ३६ ५३	९ १३ ५० १७	१ ५ २९ १५	८ ९ ६ ५५	३ १६ २५ १४	९ २१ २ १०	९ ३ ४८ ४६	९ ४ ३२ ५०	−२० ५३	−१७ ३१	० ५३	१७
१८	९ ३ ३८ ०	९ २६ ९ ४१	१ ५ ४० १६	८ १० १५ ३५	३ १६ १७ ३५	९ २२ १७ १४	९ ३ ५५ ५५	९ ४ २९ ४०	−२० ४१	−१२ ५८	१ ५८	१८
१९	९ ४ ३९ ५	१० ८ ४० ५०	१ ५ ५१ ५२	८ ११ २६ १९	३ १६ ९ ५३	९ २३ ३२ १४	९ ४ ३ ३	९ ४ २६ २९	−२० २९	− ७ ४९	३ ०	१९
२०	९ ५ ४० १०	१० २१ २४ ९	१ ६ ४ ४	८ १२ ३८ ०	३ १६ २ ७	९ २४ ४७ १६	९ ४ १० ११	९ ४ २३ १८	−२० १६	− २ १६	३ ५३	२०
२१	९ ६ ४१ १४	११ ४ २१ ४२	१ ६ १६ ४९	८ १३ ५३ २३	३ १५ ५४ १८	९ २६ २ १६	९ ४ १७ १९	९ ४ २० ७	−२० ४	३ २८	४ ३५	२१
२२	९ ७ ४२ १७	११ १७ ३५ ३३	१ ६ ३० ७	८ १५ ९ २०	३ १५ ४६ २६	९ २७ १७ १३	९ ४ २४ २७	९ ४ १६ ५६	−१९ ५०	९ ९	५ ४	२२
२३	९ ८ ४३ २१	० १ ५ ०	१ ६ ४३ ५७	८ १६ २६ ४७	३ १५ ३८ ३२	९ २८ ३२ ११	९ ४ ३१ ३५	९ ४ १३ ४६	−१९ ३७	१४ ३२	५ १७	२३
२४	९ ९ ४४ २२	० १४ ५४ २८	१ ६ ५८ १९	८ १७ ४५ ३३	३ १५ ३० ३६	९ २९ ४७ ६	९ ४ ३८ ४२	९ ४ १० ३५	−१९ २३	१९ १९	५ १२	२४
२५	९ १० ४५ २२	० २९ १ ३४	१ ७ १३ १२	८ १९ ५ ३३	३ १५ २२ ३८	१० १ २ १	९ ४ ४५ ४९	९ ४ ७ २४	−१९ ८	२३ ७	४ ४८	२५
२६	९ ११ ४६ २३	१ १३ २४ ५१	१ ७ २८ ३६	८ २० २६ ४५	३ १५ १४ ३८	१० २ १६ ५४	९ ४ ५२ ५६	९ ४ ४ १३	−१८ ५३	२५ ३४	४ ७	२६
२७	९ १२ ४७ २१	१ २८ १ ५१	१ ७ ४४ २८	८ २१ ४९ २	३ १५ ६ ३८	१० ३ ३१ ४६	९ ५ ० २	९ ४ १ ३	−१८ ३८	२६ १९	३ ८	२७
२८	९ १३ ४८ २०	२ १२ ४८ २३	१ ८ ० ४९	८ २३ १२ २२	३ १४ ५८ ३६	१० ४ ४६ ३६	९ ५ ७ ७	९ ३ ५७ ५२	−१८ २३	२५ १३	१ ५७	२८
२९	९ १४ ४९ १६	२ २७ ३६ ५४	१ ८ १७ ३८	८ २४ ३६ ३९	३ १४ ५० ३५	१० ६ १ २५	९ ५ १४ १२	९ ३ ५४ ४१	−१८ ७	२२ २१	० ३७	२९
३०	९ १५ ५० १२	३ १२ २० ४९	१ ८ ३४ ५५	८ २६ १ ५३	३ १४ ४२ ३४	१० ७ १६ १२	९ ५ २१ १५	९ ३ ५१ ३०	−१७ ५१	१८ २	० ४४	३०
३१	९ १६ ५१ ७	३ २६ ५३ ३३	१ ८ ५२ ३८	८ २७ २८ ३	३ १४ ३४ ३३	१० ८ ३० ५८	९ ५ २८ १९	९ ३ ४८ १९	−१७ ३५	१२ ४१	− २ २	३१
फर. १,	९ १७ ५२ १	४ ११ ७ ४४	१ ९ १० ४६	८ २८ ५५ ३	३ १४ २६ ३२	१० ९ ४५ ४२	९ ५ ३५ २१	९ ३ ४५ ९	−१७ १८	६ ४६	− ३ १०	१ फर.
२	९ १८ ५२ ५४	४ २४ ५९ ३४	१ ९ २९ २१	९ ० २२ ५५	३ १४ १८ ३३	१० ११ ० २५	९ ५ ४२ २२	९ ३ ४१ ५८	−१७ १	० ४१	− ४ ५	२
३	९ १९ ५३ ४६	५ ८ २७ १९	१ ९ ४८ २१	९ १ ५१ ३८	३ १४ १० ३६	१० १२ १५ ७	९ ५ ४९ २२	९ ३ ३८ ४७	−१६ ४४	− ५ १४	− ४ ४५	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) सन् १९९१ ई०

(१ फर. को अयनांश २३°।४४।१४") (१ मार्च को अयनांश २३°।४४'।१७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा०	चन्द्र क्रा०	चन्द्रशर	तारीख.
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१
फर. ४	९ २० ५४ ३७	५ २१ २९ ५२	१ १० ७ ४३	९ ३ २१ ८	३ १४ २ ४०	१० १३ २९ ४६	९ ५ ५६ २२	९ ३ ३५ ३६	−१६ २६	−१० ४५	− ५ ८	४ फर
५	९ २१ ५५ २०	६ ४ ९ ३८	१ १० २७ ३१	९ ४ ५१ २८	३ १३ ५४ ४६	१० १४ ४४ २४	९ ६ ३ २०	९ ३ ३२ २६	−१६ ८	−१५ ३९	− ५ १६	५
६	९ २२ ५६ १७	६ १६ ३० २५	१ १० ४७ ४०	९ ६ २२ ३५	३ १३ ४६ ५५	१० १५ ५९ १	९ ६ १० १७	९ ३ २९ १५	−१५ ५०	−१९ ४७	− ५ ९	६
७	९ २३ ५७ ५	६ २८ ३५ ३३	१ ११ ८ १२	९ ७ ५४ ३०	३ १३ ३९ ७	१० १७ १३ ३५	९ ६ १७ १२	९ ३ २६ ४	−१५ ३२	−२२ ५९	− ४ ४८	७
८.	९ २४ ५७ ५२	७ १० ३० ४५	१ ११ २९ ६	९ ९ २७ १२	३ १३ ३१ २२	१० १८ २८ ८	९ ६ २४ ७	९ ३ २२ ५३	−१५ १३	−२५ १०	− ४ १५	८
९	९ २५ ५८ ३९	७ २२ १९ ५७	१ ११ ५० २१	९ ११ ० ४४	३ १३ २३ ४०	१० १९ ४२ ४०	९ ६ ३० ५९	९ ३ १९ ४२	−१४ ५४	−२६ १३	− ३ ३१	९
१०	९ २६ ५९ २२	८ ४ ८ २६	१ १२ ११ ५७	९ १२ ३५ ०	३ १३ १६ ३	१० २० ५७ ८	९ ६ ३७ ५१	९ ३ १६ ३२	−१४ ३५	−२६ ४	− २ ३८	१०
११	९ २८ ० ७	८ १६ १ ४	१ १२ ३३ ५४	९ १४ १० ८	३ १३ ८ २९	१० २२ ११ ३६	९ ६ ४४ ४१	९ ३ १३ २१	−१४ १५	−२४ ४३	− १ ३९	११
१२	९ २९ ० ५०	८ २८ ० ४२	१ १२ ५६ १०	९ १५ ४६ ४	३ १३ ० ०	१० २३ २६ ३	९ ६ ५१ २९	९ ३ १० १०	−१३ ५६	−२२ १५	० ३४	१२
१३	१० ० १ ३०	९ १० १० ५७	१ १३ १८ ४५	९ १७ २२ ४७	३ १२ ५३ ३६	१० २४ ४० २५	९ ६ ५८ १५	९ ३ ६ ५९	−१३ ३६	−१८ ४५	० ३२	१३
१४	१० १ २ ११	९ २२ ३४ ३३	१ १३ ४१ ४०	९ १९ ० २२	३ १२ ४६ १७	१० २५ ५४ ४७	९ ७ ५ ०	९ ३ ३ ४८	−१३ १६	−१४ २२	१ ३९	१४
१५	१० २ २ ५०	१० ५ ११ ५०	१ १४ ४ ५२	९ २० ३८ ४८	३ १२ ३९ ४	१० २७ ९ ७	९ ७ ११ ४३	९ ३ ० ३८	−१२ ५५	− ९ १९	२ ४२	१५
१६	१० ३ ३ २६	१० १८ ३ ४५	१ १४ २८ २३	९ २२ १८ ४	३ १२ ३१ ५६	१० २८ २३ २३	९ ७ १८ २४	९ २ ५७ २७	−१२ ३५	− ३ ४७	३ ३७	१६
१७	१० ४ ४ २	११ १ १० ३१	१ १४ ५२ ११	९ २३ ५८ १३	३ १२ २४ ५५	१० २९ ३७ ३९	९ ७ २५ ३	९ २ ५४ १६	−१२ १४	२ ०	४ २३	१७
१८	१० ५ ४ ३७	११ १४ ३० १३	१ १५ १६ १६	९ २५ ३९ १६	३ १२ १८ ०	११ ० ५१ ५१	९ ७ ३१ ४०	९ २ ५१ ५	−११ ५३	७ ४७	४ ५४	१८
१९	१० ६ ५ ९	११ २८ २ ११	१ १५ ४० ३९	९ २७ २१ १२	३ १२ ११ १२	११ २ ६ १	९ ७ ३८ १५	९ २ ४७ ५५	−११ ३२	१३ १७	५ ११	१९
२०	१० ७ ५ ३९	० ११ ४५ ४२	१ १६ ५ १६	९ २९ ४ २	३ १२ ४ ३१	११ ३ २० ९	९ ७ ४४ ४८	९ २ ४४ ४४	−११ ११	१८ १३	५ ९	२०
२१	१० ८ ६ ९	० २५ ३८ २५	१ १६ ३० ११	१० ० ४७ ४८	३ ११ ५७ ५७	११ ४ ३४ १४	९ ७ ५१ १९	९ २ ४१ ३३	−१० ४९	२२ १४	४ ५०	२१
२२	१० ९ ६ ३६	१ ९ ३९ ४७	१ १६ ५५ २१	१० २ ३२ ३१	३ ११ ५१ ३१	११ ५ ४८ १६	९ ७ ५७ ४७	९ २ ३८ २२	−१० २७	२४ ५९	४ १३	२२
२३	१० १० ७ १	१ २३ ४९ १२	१ १७ २० ४५	१० ४ १८ ९	३ ११ ४५ १२	११ ७ २ १५	९ ८ ४ १३	९ २ ३५ १२	−१० ६	२६ १२	३ २१	२३
२४	१० ११ ७ २५	२ ८ ४ ३	१ १७ ४६ २४	१० ६ ४ ४८	३ ११ ३९ १	११ ८ १६ १२	९ ८ १० ३६	९ २ ३२ १	-९ ४४	२५ ४२	२ १६	२४
२५	१० १२ ७ ४६	२ २२ २२ ५२	१ १८ १२ १८	१० ७ ५२ २२	३ ११ ३२ ५९	११ ९ ३० ६	९ ८ १६ ५७	९ २ २८ ५०	-९ २१	२३ २९	१ २	२५.
२६	१० १३ ८ ६	३ ६ ४३ १९	१ १८ ३८ २६	१० ९ ४० ५४	३ ११ २७ ५	११ १० ४३ ५७	९ ८ २३ १५	९ २ २५ ३९	-८ ५९	१९ ४७	० १६	२६
२७	१० १४ ८ २४	३ २१ ० २७	१ १९ ४ ४७	१० ११ ३० २६	३ ११ २१ २०	११ ११ ५७ ४५	९ ८ २९ ३१	९ २ २२ २८	-८ ३७	१४ ५६	-१ ३२	२७
२८	१० १५ ८ ४०	४ ५ १० २२	१ १९ ३१ २२	१० १३ २० ५४	३ ११ १५ ४४	११ १३ ११ ३१	९ ८ ३५ ४४	९ २ १९ १८	-८ १४	९ १९	-२ ४२	२८
मार्च १	१० १६ ८ ५४	४ १९ ८ ५९	१ १९ ५८ ९	१० १५ १२ १८	३ ११ १० १७	११ १४ २५ १२	९ ८ ४१ ५४	९ २ १६ ७	-७ ५२	३ १९	-३ ४१	१ मार्च
२	१० १७ ९ ७	५ २ ५० ५५	१ २० २५ १०	१० १७ ४ ३८	३ ११ ४ ५९	११ १५ ३८ ५३	९ ८ ४८ २	९ २ १२ ५६	-७ २९	- २ ४३	-४ २६	२
३	१० १८ ९ १८	५ १६ १३ ३८	१ २० ५२ २२	१० १८ ५७ ५२	३ १० ५९ ५१	११ १६ ५२ ३०	९ ८ ५४ ०६	९ २ ९ ४५	-७ ६	- ८ २८	-४ ५५	३
४	१० १९ ९ २७	५ २९ १६ ५	१ २१ १९ ४७	१० २० ५१ ५४	३ १० ५४ ५२	११ १८ ६ २	९ ९ ० ८	९ २ ६ ३४	-६ ४३	-१३ ४३	-५ ८	४
५	१० २० ९ ३४	६ ११ ५७ २५	१ २१ ४७ २३	१० २२ ४६ ४५	३ १० ५० ३	११ १९ १९ ३३	९ ९ ६ ६	९ २ ३ २४	-६ २०	-१८ १३	-५ ५	५
६	१० २१ ९ ४०	६ २४ २० १	१ २२ १५ ११	१० २४ ४२ १८	३ १० ४५ २४	११ २० ३३ १	९ ९ १२ २	९ २ ० १३	-५ ५७	-२१ ४९	-४ ४८	६
७	१० २२ ९ ४४	७ ६ २७ ४०	१ २२ ४३ १०	१० २६ ३८ २५	३ १० ४० ५६	११ २१ ४६ २५	९ ९ १७ ५४	९ १ ५७ २	-५ ३३	-२४ २४	-४ १८	७
८	१० २३ ९ ४६	७ १८ २३ ४०	१ २३ ११ २०	१० २८ ३५ २	३ १० ३६ ३७	११ २२ ५९ ४६	९ ९ २३ ४४	९ १ ५३ ५१	-५ १०	-२५ ५०	-३ ३७	८
९	१० २४ ९ ४८	८ ० १३ २६	१ २३ ३९ ४१	११ ० ३१ ०	३ १० ३२ २९	११ २४ १३ ४	९ ९ २९ ३०	९ १ ५० ४१	-४ ४७	-२६ ५	-२ ४७	९
१०	१० २५ ९ ४६	८ १२ २ ४५	१ २४ ८ १२	११ २ २९ ४	३ १० २८ ३१	११ २५ २६ १९	९ ९ ३५ १२	९ १ ४७ ३०	-४ २३	-२५ ९	-१ ५१	१०
११	१० २६ ९ ४३	८ २३ ५५ ५७	१ २४ ३६ ५३	११ ४ २६ ६	३ १० २४ ४४	११ २६ ३९ ३०	९ ९ ४० ५२	९ १ ४४ १९	-४ ०	-२३ ५	० ४९	११
१२	१० २७ ९ ४०	९ ५ ५८ ३१	१ २५ ५ ४५	११ ६ २२ ५१	३ १० २१ ८	११ २७ ५२ ३८	९ ९ ४६ २८	९ १ ४१ ८	-३ ३६	-१९ ५७	० १६	१२
१३	१० २८ ९ ३३	९ १८ १५ २१	१ २५ ३४ ४६	११ ८ १८ ५९	३ १० १७ ४२	११ २९ ५ ४२	९ ९ ५२ ०	९ १ ३७ ५७	-३ १३	-१५ ५४	१ २१	१३
१४	१० २९ ९ २५	१० ० ४८ ५५	१ २६ ३ ५७	११ १० १४ १६	३ १० १४ २८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०

(१ अप्रैल को अयनांश २३°।४४'।२०")

तारीख	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु			
सन् १९९१ ई.	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि
मार्च १५	११	०	९	१५	१०	१३	४१	४३	१	२६	३३	१७	११	१२	८	१७	३	१०	११	२४
१६	११	१	९	०४	१०	२६	५४	४९	१	२७	२	४६	११	१४	०	४१	३	१०	८	३२
१७	११	२	८	५०	११	१०	२४	५६	१	२७	३२	२४	११	१५	५०	५८	३	१०	५	५१
१८	११	३	८	३६	११	२४	१२	५०	१	२८	२	१०	११	१७	३८	५०	३	१०	३	२१
१९	११	४	८	१९	०	८	१२	१५	१	२८	३२	५	११	१९	२३	४३	३	१०	१	३
२०	११	५	८	००	०	२२	१८	४६	१	२९	२	८	११	२१	५	११	३	९	५८	५६
२१	११	६	७	४०	१	६	२८	५३	१	२९	३२	२०	११	२२	४२	४६	३	९	५६	०
२२	११	७	७	१७	१	२०	३९	५४	२	०	२	३९	११	२४	१६	०	३	९	५५	१६
२३	११	८	६	५१	२	४	४८	२०	२	०	३३	६	११	२५	४४	२६	३	९	५३	४३
२४	११	९	६	२४	२	१८	५३	५९	२	१	३	४०	११	२७	७	४१	३	९	५२	२२
२५	११	१०	५	५४	३	२	५४	५२	२	१	३४	२२	११	२८	२५	१८	३	९	५१	१२
२६	११	११	५	२२	३	१६	५०	५४	२	२	५	११	११	२९	३६	५७	३	९	५०	१४
२७	११	१२	४	४९	४	०	४१	३८	२	२	३६	७	०	०	४२	२०	३	९	४९	२८
२८	११	१३	४	१२	४	१४	२४	२४	२	३	७	१०	०	१	४१	८	३	९	४८	५३
२९	११	१४	३	३३	४	२७	५७	३८	२	३	३८	१९	०	२	३३	८	३	९	४८	३०
३०	११	१५	२	५२	५	११	१९	२९	२	४	९	३५	०	३	१८	९	३	९	४८	१८
३१	११	१६	२	०९	५	२४	२६	३४	२	४	४०	५८	०	३	५५	०	३	९	४८	१७
अप्रैल १	११	१७	१	२४	६	७	१७	५०	२	५	१२	२७	०	४	२६	३७	३	९	४८	२९
२	११	१८	०	३८	६	१९	५३	१२	२	५	४४	२	०	४	४९	५६	३	९	४८	५१
३	११	१८	५९	४९	७	२	१२	२५	२	६	१५	४३	०	५	५	५९	३	९	४९	२५
४	११	१९	५८	५८	७	१४	१८	३६	२	६	४७	२९	०	५	१४	४९	३	९	५०	११
५	११	२०	५८	०६	७	२६	१४	३	२	७	१९	२२	०	५	१६	३५	३	९	५१	७
६	११	२१	५७	१०	८	८	३	३१	२	७	५१	२१	०	५	११	२९	३	९	५२	१५
७	११	२२	५६	१५	८	१९	५२	२७	२	८	२३	२५	०	४	५९	५०	३	९	५३	३५
८	११	२३	५५	१५	९	१	४५	२०	२	८	५५	३४	०	४	४१	०	३	९	५५	५
९	११	२४	५४	१६	९	१३	४८	९	९	९	२७	४९	०	४	१८	२६	३	९	५६	४७
१०	११	२५	५३	१७	९	२६	६	४५	२	१०	०	१०	०	३	४९	४४	३	९	५८	३९
११	११	२६	५२	१३	१०	८	४४	४५	२	१०	३२	३५	०	३	१६	२७	३	१०	०	४३
१२	११	२७	५१	०८	१०	२१	४५	५७	२	११	५	५	०	२	३९	२३	३	१०	२	५८
१३	११	२८	५०	०१	११	५	१२	२५	२	११	३७	४०	०	१	५९	१४	३	१०	५	२३
१४	११	२९	४८	४९	११	१९	२	९	२	१२	१०	२०	०	१	१६	५०	३	१०	७	०
१५	०	०	४७	३८	०	३	१२	५९	२	१२	४३	५	०	०	३३	३	३	१०	१०	४७
१६	०	१	४६	२४	०	१७	३८	१५	२	१३	१५	५५	११	२९	४८	३९	३	१०	१८	४५
१७	०	२	४५	०६	१	२	११	४७	२	१३	४८	४८	११	२९	४	३३	३	१०	१५	५३
१८	०	३	४३	४९	१	१६	४७	११	२	१४	२१	४७	११	२८	२१	३०	३	१०	२०	१२

तारीख	शुक्र				शनि				राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर		तारीख
सन् १९९१ ई.	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	अं	क	सन् १९९१ ई.
मार्च १५	०	१	३१	४१	९	१०	२	५४	९	१	३१	३६	-२	२५	-५	४१	३	२०	१५ मार्च
१६	०	२	४४	३६	९	१०	८	१६	९	१	२८	२५	-२	२	+०	६	४	७	१६
१७	०	३	५७	२४	९	१०	१३	३३	९	१	२५	१४	-१	३८	५	५८	४	४२	१७
१८	०	५	१०	१०	९	१०	१८	४७	९	१	२२	४	-१	१४	११	४१	५	१	१८
१९	०	६	२२	५२	९	१०	२३	५८	९	१	१८	५३	०	५०	१६	५३	५	२	१९
२०	०	७	३५	३०	९	१०	२९	४	९	१	१५	४२	०	२७	२१	१२	४	४५	२०
२१	०	८	४८	४	९	१०	३४	६	९	१	१२	३१	०	३	२४	१७	४	११	२१
२२	०	१०	०	३४	९	१०	३९	४	९	१	९	२१	०	२१	२५	५२	३	२१	२२
२३	०	११	१२	५८	९	१०	४३	५८	९	१	६	१०	०	४४	२५	४५	२	१९	२३
२४	०	१२	२५	२०	९	१०	४८	४८	९	१	२	५९	१	८	२३	५९	१	९	२४
२५	०	१३	३७	३७	९	१०	५३	३४	९	०	५९	४८	१	३२	२०	४४	०	५	२५
२६	०	१४	४९	४८	९	१०	५८	१५	९	०	५६	३७	१	५५	१६	१९	-१	१९	२६
२७	०	१६	१	५६	९	११	२	५२	९	०	५३	२७	२	१९	११	४	-२	२७	२७
२८	०	१७	१३	५८	९	११	७	२५	९	०	५०	१६	२	४२	५	२०	-३	२५	२८
२९	०	१८	२५	५६	९	११	११	५३	९	०	४७	५	३	६	-०	३४	-४	१२	२९
३०	०	१९	३७	५०	९	११	१६	१७	९	०	४३	५४	३	२९	-६	२१	-४	४३	३०
३१	०	२०	४९	३८	९	११	२०	३६	९	०	४०	४३	३	५२	-११	४५	-४	५९	३१
अप्रैल १	०	२२	१	२१	९	११	२४	५१	९	०	३७	३३	४	१६	-१६	३१	-५	०	१ अप्रैल
२	०	२३	१३	१	९	११	२९	१	९	०	३४	२२	४	३९	-२०	२८	-४	४५	२
३	०	२४	२४	३५	९	११	३३	६	९	०	३१	११	५	२	-२३	२५	-४	१७	३
४	०	२५	३६	३	९	११	३७	७	९	०	२८	०	५	२५	-२५	१५	-३	३८	४
५	०	२६	४७	२७	९	११	४१	३	९	०	२४	५०	५	४८	-२५	५४	-२	५०	५
६	०	२७	५८	४६	९	११	४४	५४	९	०	२१	३९	६	११	-२५	२१	-१	५५	६
७	०	२९	१०	०	९	११	४८	४०	९	०	१८	२८	६	३३	-२३	४०	०	५५	७
८	१	०	२१	७	९	११	५२	२१	९	०	१५	१७	६	५६	-२०	५५	०	७	८
९	१	१	३२	१०	९	११	५५	५८	९	०	१२	७	७	१८	-१७	१५	१	११	९
१०	१	२	४३	८	९	११	५९	२९	९	०	८	५६	७	४१	-१२	४६	२	१२	१०
११	१	३	५३	५९	९	१२	२	५५	९	०	५	४५	८	३	-७	३९	३	८	११
१२	१	५	४	४६	९	१२	६	१६	९	०	२	३४	८	२५	-२	४	३	५६	१२
१३	१	६	१५	२७	९	१२	९	३२	८	२९	५९	२३	८	४७	३	४६	४	३३	१३
१४	१	७	२६	०	९	१२	१२	४३	८	२९	५६	१३	९	९	९	३५	४	५५	१४
१५	१	८	३६	२९	९	१२	१५	४८	८	२९	५३	२	९	३०	१५	३	५	०	१५
१६	१	९	४६	५३	९	१२	१८	४९	८	२९	४९	५१	९	५२	१९	४६	४	४५	१६
१७	१	१०	५७	७	९	१२	२१	४४	८	२९	४६	४०	१०	१३	२३	२०	४	१३	१७
१८	१	१२	७	१७	९	१२	२४	३३	८	२९	४३	३०	१०	३४	२५	२३	३	२३	१८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) सन् १९९१ ई०
(१ मई को अयनांश २३°।४४'।२४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा अं क वि	रा अं क वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा अं. क वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
अप्रै. १९	० ४ ४२ २९	२ १ १७ १६	२ १४ ५४ ५०	११ २७ ४० १८	३ १० २३ ४२	१ १३ १७ २१	९ १२ २७ १७	८ २९ ४० १९	१० ५५	२५ ४२	२ २१	१९ अप्री.
२०	० ५ ४१ ०५	२ १५ ३८ १४	२ १५ २७ ५७	११ २७ १ ३२	३ १० २७ २१	१ १४ २७ १६	९ १२ २९ ५६	८ २९ ३७ ८	११ १६	२४ १६	१ १०	२०
२१	० ६ २९ ४१	२ २९ ४८ ९	२ १६ १ ८	११ २६ २५ ५४	३ १० ३१ ११	१ १५ ३७ ६	९ १२ ३२ २९	८ २९ ३३ ५७	११ ३७	२१ १९	० ४	२१
२२	० ७ ३८ १५	३ १३ ४४ ५४	२ १६ ३४ २३	११ २५ ५३ ५०	३ १० ३५ ११	१ १६ ४६ ४९	९ १२ ३४ ५७	८ २९ ३० ४६	११ ५७	१७ ९	−१ १७	२२
२३	० ८ ३६ ४५	३ २७ २९ ११	२ १७ ७ ४२	११ २५ २५ ४८	३ १० ३९ २२	१ १७ ५६ २३	९ १२ ३७ १९	८ २९ २७ ३६	१२ १७	१२ ८	−२ २५	२३
२४	० ९ ३५ १५	४ ११ २ ७	२ १७ ४१ ६	११ २५ २ ६	३ १० ४३ ४२	१ १९ ५ ५२	९ १२ २९ ३६	८ २९ २४ २५	१२ ३७	६ ३६	−३ २३	२४
२५	० १० ३३ ४२	४ २४ २३ ७	२ १८ १४ ३३	११ २४ ४३ ३	३ १० ४८ १२	१ २० १५ १३	९ १२ ४१ ४७	८ २९ २१ १४	१२ ५७	+ ० ५२	−४ ९	२५
२६	० ११ ३२ ०६	५ ७ २९ ५८	२ १८ ४८ ३	११ २४ ३८ ४४	३ १० ५२ ५२	१ २१ २४ २४	९ १२ ४३ ५३	८ २९ १८ ३	१३ १७	−४ ४९	−४ ४१	२६
२७	० १२ ३० २९	५ २० ३२ १	२ १९ २१ ३८	११ २४ १९ २१	३ १० ५७ ४१	१ २२ ३३ २९	९ १२ ४५ ५३	८ २९ १४ ५३	१३ ३६	−१० १३	−४ ५८	२७
२८	० १३ २८ ५०	६ ३ १८ ४६	२ १९ ५५ १६	११ २४ १४ ५३	३ ११ २ ४१	१ २३ ४२ २७	९ १२ ४७ ४७	८ २९ ११ ४२	१३ ५५	−१५ ५	−५ ०	२८
२९	० १४ २७ १०	६ १५ ५३ ५०	२ २० २८ ५८	११ २४ १५ २१	३ ११ ७ ४९	१ २४ ५१ १७	९ १२ ४९ ३६	८ २९ ८ ३१	१४ १४	−१९ १४	−४ ४७	२९
३०	० १५ २५ २६	६ २८ १६ ८	२ २१ २ ४३	११ २४ २० ४४	३ १४ १३ ७	१ २५ ५९ ५७	९ १२ ५१ १८	८ २९ ५ २०	१४ ३३	−२२ २८	−४ २०	३०
मई १	० १६ २३ ४१	७ १० २६ ४५	२ २१ ३६ ३२	११ २४ ३० ५३	३ ११ १८ ३५	१ २७ ८ ३०	९ १२ ५२ ५५	८ २९ २ १०	१४ ५१	−२४ ३८	−३ ४२	१ मई
२	० १७ २१ ५६	७ २२ २७ ३८	२ २२ १० २५	११ २४ ४५ ४७	३ ११ २४ ११	१ २८ १६ ५५	९ १२ ५४ २७	८ २८ ५८ ५९	१५ १०	−२५ ३७	−२ ५५	२
३	० १८ २० ०७	८ ४ २० १३	२ २२ ४४ २१	११ २५ ५ १४	३ ११ २९ ५७	१ २९ २५ ११	९ १२ ५५ ५२	२ २८ ५५ ४८	१५ २८	−२५ २५	−२ ०	३
४	० १९ १८ १७	८ १६ ८ १८	२ २३ १८ १९	११ २५ २९ ८	३ १४ ३५ ५२	२ ० ३३ १८	९ १२ ५७ १२	८ २८ ५२ ३७	१५ ४५	−२४ ४	−१ ०	४
५	० २० १६ २६	८ २७ ५६ ३२	२ २३ ५२ २२	११ २५ ५७ २१	३ ११ ४१ ५५	२ १ ४१ १७	९ १२ ५८ २६	८ २८ ४९ २६	१६ ३	−२१ ३९	० ३	५
६	० २१ १४ ३३	९ ९ ४८ ४५	२ २४ २६ २८	११ २६ २९ ४२	३ ११ ४८ ८	२ २ ४९ ६	९ १२ ५९ ३४	८ २८ ४६ १६	१६ २०	−१८ १८	१ ६	६
७	० २२ १२ ३९	९ २१ ५० ४०	२ २५ ० ३७	११ २७ ६ २	३ ११ ५४ २९	२ ३ ५६ ४६	९ १३ ० ३६	८ २८ ४३ ५	१६ ३७	−१४ ९	२ ६	७
८	० २३ १० ४४	१० ४ ८ १२	२ २५ ३४ ४९	११ २७ ४६ १५	३ १२ ० ५८	२ ५ ४ १८	९ १३ १ ३३	८ २८ ३९ ५४	१६ ५३	−९ २१	३ ३	८
९	० २४ ८ ४६	१० १६ ४५ ३०	२ २६ ९ ४	११ २८ ३० ९	३ १२ ७ ३७	२ ६ ११ ३९	९ १३ २ २३	८ २८ ३६ ४३	१७ १०	−४ ३	३ ५२	९
१०	० २५ ६ ४७	१० २९ ४७ २२	२ २६ ४३ २३	११ २९ १७ ३६	३ १२ १४ २३	२ ७ १८ ५१	९ १३ ३ ८	८ २८ ३३ ३२	१७ २६	१ ३५	४ ३०	१०
११	० २६ ४ ४८	११ १३ १७ ६	२ २७ १७ ४५	० ० ८ ३०	३ १२ २१ १८	२ ८ २५ ५३	९ १३ ३ ३३	८ २८ ३० २२	१७ ४२	७ १९	४ ५६	११
१२	० २७ २ ४६	११ २७ १४ १	२ २७ ५२ ९	० १ २ ४१	३ १२ २८ २१	२ ९ ३२ ४४	९ १३ ४ १९	८ २८ २७ ११	१७ ५७	१२ ५४	५ ५	१२
१३	० २८ ० ४३	० ११ ३६ ५०	२ २८ २६ ३६	० २ ० ३	३ १२ ३५ ३२	२ १० २९ २५	९ १३ ४ ४६	८ २८ २४ ०	१८ १२	१७ ५७	४ ५५	१३
१४	० २८ ५८ ४०	० २६ १८ ५८	२ २९ १ ७	० ३ ० ३०	३ १२ ४२ ५१	२ ११ ४५ ५५	९ १३ ५ ७	८ २८ २० ४९	१८ २७	२२ २	४ २६	१४
१५	० २९ ५६ ३४	१ ११ १३ १८	२ २९ ३५ ४०	० ४ ३ ५५	३ १२ ५० १८	२ १२ ५२ १३	९ १३ ५ २२	८ २८ १७ ३९	१८ ४२	२४ ४२	३ ३८	१५
१६	१ ० ५४ २३	१ २६ ११ ३३	३ ० १० १६	० ५ १० १२	३ १२ ५७ ५३	२ १३ ५८ २०	९ १३ ५ ३२	८ २८ १४ २८	१८ ५६	२५ ३८	२ ३५	१६
१७	१ १ ५२ १९	२ ११ ३ ५८	३ ० ४४ ५५	० ६ १९ १८	३ १३ ५ ३५	२ १५ ४ १७	९ १३ ५ ३५	८ २८ ११ १७	१९ १०	२४ ४३	१ २२	१७
१८	१ २ ५० १७	२ २५ ४४ १४	३ १ १९ ३६	० ७ ३१ ५	३ १३ १३ २५	२ १६ ९ ४९	९ १३ ५ ३३	८ २८ ८ ६	१९ २३	२२ ५	० ४	१८
१९	१ ३ ४७ ५६	३ १० ८ १४	३ १ ५४ २१	० ८ ४५ ३३	३ १३ २१ २२	२ १७ १५ ३१	९ १३ ५ २४	८ २८ ४ ५५	१९ ३४	१८ ६	−१ १३	१९
२०	१ ४ ४५ ४४	३ २४ १२ ३३	३ २ २९ ८	० १० २ ३४	३ १३ २९ २७	२ १८ २० ५०	९ १३ ५ १०	८ २८ १ ४५	१९ ५०	१३ १०	−२ २४	२०
२१	१ ५ ४३ २८	४ ७ ४७ २२	३ ३ ३ ४७	० ११ २२ १०	३ १३ ३७ ३९	२ १९ २५ ५४	९ १३ ४ ५०	८ २७ ५८ ३४	२० २	७ ४१	−३ २४	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०

(१ जून को स्पष्ट अयनांश २३°।४४'।२९")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
मई २३	१ ७ ३८ ५५	५ ४ ३३ ३३	३ ४ १३ ४४	० १४ ८ ५१	३ १३ ५४ २४	२ २१ ३५ २५	९ १३ ३ ५२	८ २७ ५२ १२	२० २६	-३ ४२	-४ ४६	२३ मई
२४	१ ८ ३६ ३५	५ १७ २७ ४७	३ ४ ४८ ४१	० १५ ३५ ५०	३ १४ २ ५७	२ २२ ३९ ४८	९ १३ ३ १५	८ २७ ४९ २	२० ३८	-९ ६	-५ ४	२४
२५	१ ९ ३४ १४	६ ० ९ ६	३ ५ २३ ४०	० १७ ५ १४	३ १४ ११ ३७	२ २३ ४३ ५७	९ १३ २ ३२	८ २७ ४५ ५१	२० ४९	-१४ २	-५ ७	२५
२६	१ १० ३१ ५२	६ १२ ३७ ५८	३ ५ ५८ ४२	० १८ ३७ २	३ १४ २० २३	२ २४ ४७ ५२	९ १३ १ ४३	८ २७ ४२ ४०	२१ ०	-१८ १७	-४ ५५	२६
२७	१ ११ २९ २७	६ २४ ५६ १०	३ ६ ३३ ४७	० २० ११ १४	३ १४ २९ १७	२ २५ ५१ ३०	९ १३ ० ४८	८ २७ ३९ २९	२१ १०	-२१ ४२	-४ ३०	२७
२८	१ १२ २७ ०२	७ ७ ५ २१	३ ७ ८ ५३	० २१ ४७ ४५	३ १४ ३८ १६	२ १६ ५४ ५३	९ १२ ५९ ४७	८ २७ ३६ १८	२१ २१	-२४ ७	-३ ५२	२८
२९	१ १३ २४ ३६	७ १९ ५ ४९	३ ७ ४४ २	० २३ २६ ४१	३ १४ ४७ २२	२ २७ ५८ ०	९ १२ ५८ ४१	८ २७ ३३ ८	२१ ३०	-२५ २४	-३ ५	२९
३०	१ १४ २२ ०८	८ ० ५९ ३९	३ ८ १९ १४	० २५ ७ ५७	३ १४ ५६ ३५	२ २९ ० ५०	९ १२ ५७ ३०	८ २७ २९ ५७	२१ ४०	-२५ ३०	-२ १०	३०
३१	१ १५ १९ ३९	८ १२ ४९ १९	३ ८ ५४ २७	० २६ ५१ ३५	३ १५ ५ ५३	३ ० ३ २३	९ १२ ५६ १२	८ २७ २६ ४६	२१ ४९	-२४ २६	-१ ९	३१
जून १	१ १६ १७ १०	८ २४ ३६ ३०	३ ९ २९ ४३	० २८ ३७ ३३	३ १५ १५ १८	३ १ ५ ४०	९ १२ ५४ ४९	८ २७ २३ ३५	२१ ५७	-२२ १६	० ५	१ जून
२	१ १७ १४ ३८	९ ६ २४ ५२	३ १० ५ २	१ ० २५ ५१	३ १५ २४ ४९	३ २ ७ ३८	९ १२ ५३ २१	८ २७ २० २५	२२ ६	-१९ १०	० ५९	२
३	१ १८ १२ ०६	९ १८ १८ ४४	३ १० ४० २२	१ २ १६ २८	३ १५ ३४ २६	३ ३ ९ १७	९ १२ ५१ ४७	८ २७ १७ १४	२२ १३	-१५ १४	२ १	३
४	१ १९ ९ ३४	१० ० २१ २८	३ ११ १५ ४६	१ ४ ९ २३	३ १५ ४४ ८	३ ४ १० ३९	९ १२ ५० ७	८ २७ १४ ३	२२ २१	-१० ४१	२ ५८	४
५	१ २० ७ १०	१० १२ ३८ १२	३ ११ ५१ १२	१ ६ ४ ३३	३ १५ ५३ ५७	३ ५ ११ ४०	९ १२ ४८ २३	८ २७ १० ५२	२२ २८	-५ ३७	३ ४९	५
६	१ २१ ४ २६	१० २५ १४ ११	३ १२ २६ ३९	१ ८ १ ५३	३ १६ ३ ५१	३ ६ १२ २१	९ १२ ४६ ३२	८ २७ ७ ४१	२२ ३५	० १३	४ ३०	६
७	१ २२ १ ५२	११ ८ १२ ४८	३ १३ २ ९	१ १० १ २३	३ १६ १३ ५०	३ ७ १२ ४२	९ १२ ४४ ३७	८ २७ ४ ३१	२२ ४१	५ २१	४ ५८	७
८	१ २२ ५९ १७	११ २१ ३७ ५८	३ १३ ३७ ४२	१ १२ २ ५६	३ १६ २३ ५६	३ ८ १२ ४३	९ १२ ४२ ३६	८ २७ १ २०	२२ ४७	१० ५१	५ १२	८
९	१ २३ ५६ ४१	० ५ ३१ ५७	३ १४ १३ १६	१ १४ ६ २३	३ १६ ३७ ६	३ ९ १२ २०	९ १२ ४० ३०	८ २६ ५८ ९	२२ ५२	१६ १	५ ८	९
१०	१ २४ ५४ ०४	० १९ ५२ ४८	३ १४ ४८ ५४	१ १६ ११ ३८	३ १६ ४४ २२	३ १० ११ ३६	९ १२ ३८ १९	८ २६ ५४ ५८	२२ ५७	२० २८	४ ४५	१०
११	१ २५ ५१ २८	१ ४ ३७ १८	३ १५ २४ ३३	१ १८ १८ ३३	३ १६ ५४ ४३	३ ११ १० २९	९ १२ ३६ २	८ २६ ५१ ४८	२३ २	२३ ४५	४ ३	११
१२	१ २६ ४८ ५०	१ १९ ३९ २४	३ १६ ० १४	१ २० २६ ५१	३ १७ ५ १०	३ १२ ८ ५७	९ १२ ३३ ४१	८ २६ ४८ ३७	२३ ६	२५ २७	३ ३	१२
१३	१ २७ ४६ ११	२ ४ ४९ २	३ १६ ३५ ५८	१ २७ ३६ २६	३ १७ १५ ४१	३ १३ ६ ०	९ १२ ३१ १५	८ २६ ४५ २६	२३ १०	२५ १६	१ ५०	१३
१४	१ २८ ४३ ३३	२ १९ ५७ ८	३ १७ ११ ४४	१ २४ ४६ ५९	३ १७ २६ १७	३ १४ ४ ३८	९ १२ २८ ४३	८ २६ ४२ १५	२३ १४	२३ १४	० ३०	१४
१५	१ २९ ४० ५४	३ ४ ५५ १९	३ १७ ४७ ३२	१ २६ ५८ १७	३ १७ ३६ ५८	३ १५ १ ४९	९ १२ २६ ७	८ २६ ३९ ४	२३ १७	१९ ३४	० ५२	१५
१६	२ ० ३८ १२	३ १९ ३५ १६	३ १८ २३ २२	१ २९ १० १	३ १७ ४७ ४४	३ १५ ५८ ३२	९ १२ २३ २७	८ २६ ३५ ५४	२३ १९	१४ ४५	-२ ९	१६
१७	२ १ ३५ ३२	४ ३ ५२ ०	३ १८ ५९ १४	२ १ २१ ५७	३ १७ ५८ ३५	३ १६ ५४ ४७	९ १२ २० ४१	८ २६ ३२ ४३	२३ २१	९ १३	-३ १७	१७
१८	२ २ ३२ ५०	४ १७ ४७ ५	३ १९ ३५ ९	२ ३ ३३ ५०	३ १८ ९ ३०	३ १७ ५० ३३	९ १२ १७ ५१	८ २६ २९ ३२	२३ २३	३ २३	-४ १०	१८
१९	२ ३ ३० ०७	५ १ १६ ३५	३ २० ११ ४	२ ५ ४५ १७	३ १८ २० २९	३ १८ ४५ ४६	९ १२ १४ ५६	८ २६ २६ २१	२३ २५	-२ २६	-४ ४८	१९
२०	२ ४ २७ २४	५ १४ २३ ४७	३ २० ४७ ३	२ ७ ५६ ११	३ १८ ३१ ३३	३ १९ ४० ३०	९ १२ ११ ५७	८ २६ २३ ११	२३ २६	-७ ५९	-५ १०	२०
२१	२ ५ २४ ४०	५ २७ ११ ५०	३ २१ २३ ४	२ १० ६ १२	३ १८ ४२ ४१	३ २० ३४ ४१	९ १२ ८ ५४	८ २६ १९ ०	२३ २६	-१३ ३	-५ १५	२१
२२	२ ६ २१ ५५	६ ९ ४२ ३९	३ २१ ५९ ५	२ १२ १५ ६	३ १८ ५३ ५३	३ २१ २८ १५	९ १२ ५ ४६	८ २६ १६ ४९	२३ २६	-१७ २७	-५ ५	२२
२३	२ ७ १९ ११	६ २१ ५९ ५०	३ २२ ३५ १०	२ १४ २२ ४५	३ १९ ५ १०	३ २२ २१ १७	९ १२ २ ३५	८ २६ १३ ३८	२३ २६	-२१ ३	-४ ४२	२३
२४	२ ८ १६ २३	७ ४ ६ ४४	३ २३ ११ १६	२ १६ २८ ५८	३ १९ १६ ३०	३ २३ १३ ४१	९ ११ ५९ १९	८ २६ १० २७	२३ २५	-२३ ४१	-४ ६	२४
२५	२ ९ १३ ३६	७ १६ ४ ५९	३ २३ ४७ २४	२ १८ ३३ ३१	३ १९ २७ ५५	३ २४ ५ २७	९ ११ ५५ ५९	८ २६ ७ १७	२३ २४	-२५ १३	-३ २०	२५
२६	२ १० १० ४९	७ २७ ५७ ५९	३ २४ २३ ३४	२ २० ३६ २४	३ १९ ३९ २३	३ २४ ५६ ३५	९ ११ ५२ ३५	८ २६ ४ ६	२३ २३	-२५ ३५	-२ २५	२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०

(१ जुलाई को अयनांश २३°।४४'।३४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
२७	२ ११ ८ ०१	८ ९ ४७ २	३ २४ ५९ ४६	२ २२ ३७ २७	३ १९ ५० ५५	३ २५ ४७ २	९ ११ ४९ ८	८ २६ ० ५५	२३ २१	−२४ ४८	−१ २४	२७
२८	२ १२ ५ १२	८ २१ ३४ ४९	३ २५ ३६ ०	२ २४ ३६ ३४	३ २० २ ३१	३ २६ ३६ ४८	९ ११ ४५ ३७	८ २५ ५७ ४४	२३ १९	−२२ ५३	० २०	२८
२९	२ १३ २ २५	९ ३ २४ ५	३ २६ १२ १७	२ २६ ३३ ४७	३ २० १४ ११	३ २७ २५ ५१	९ ११ ४२ २	८ २५ ५४ ३४	२३ १६	−१९ ५९	० ४६	२९
३०	२ १३ ५९ ३६	९ १५ १६ २२	३ २६ ४८ ३५	२ २८ २८ ५८	३ २० २५ ५४	३ २८ १४ ८	९ ११ ३८ २४	८ २५ ५१ २३	२३ १३	−१६ १४	१ ४९	३०
जुलाई १	२ १४ ५६ ४७	९ २७ १४ ५७	३ २७ २४ ५५	३ ० २२ ६	३ २० ३७ ४०	३ २९ १ ३८	९ ११ ३४ ४२	८ २५ ४८ १२	२३ ९	−११ ५०	२ ४९	१ जुलाई
२	२ १५ ५३ ५९	१० ९ २३ २५	३ २८ १ १८	३ २ १३ १२	३ २० ४९ ३०	३ २९ ४८ २२	९ ११ ३० ५७	८ २५ ४५ १	२३ ५	−६ ५४	३ ४२	२
३	२ १६ ५१ १०	१० २१ ४४ ११	३ २८ ३७ ४२	३ ४ २ १४	३ २१ १ २४	४ ० ३४ १४	९ ११ २७ ९	८ २५ ४१ ५०	२३ १	−१ ३८	४ २५	३
४	२ १७ ४८ २१	११ ४ २१ १८	३ २९ १४ ८	३ ५ ४९ ९	३ २१ १३ २०	४ १ १९ १६	९ ११ २३ १८	८ २५ ३८ ४०	२२ ५६	३ ४७	४ ५७	४
५	२ १८ ४५ ३३	११ १७ १८ ५०	३ २९ ५० ३७	३ ७ ३४ १	३ २१ २५ २०	४ २ ३ २४	९ ११ १९ २३	८ २५ ३५ २९	२२ ५१	९ १२	५ १४	५
६	२ १९ ४२ ४५	० ० ३८ ४७	४ ० २७ ८	३ ९ १६ ४६	३ २१ ३७ २३	४ २ ४६ ३६	९ ११ १५ २६	८ २५ ३२ १८	२२ ४६	१४ २१	५ १६	६
७	२ २० ३९ ५७	० १४ २३ ४८	४ १ ३ ४१	३ १० ५१ २६	३ २१ ४९ २९	४ ३ २८ ५०	९ ११ ११ २६	८ २५ २९ ७	२२ ४०	१८ ५७	५ ०	७
८	२ २१ ३७ १०	० २८ ३४ ५६	४ १ ४० १६	३ १२ ३६ १	३ २२ १ ३८	४ ४ १० ६	९ ११ ७ २४	८ २५ २५ ५७	२२ ३३	२२ ३८	४ २५	८
९	२ २२ ३४ २३	१ १३ ९ १५	४ २ १६ ५३	३ १४ १२ २९	३ २२ १३ ५०	४ ४ ५० १८	९ ११ ३ १९	८ २५ २२ ४६	२२ २७	२४ ५८	३ ३३	९
१०	२ २३ ३१ ३७	१ २८ २ ५६	४ २ ५३ ३२	३ १५ ४६ ५२	३ २२ २६ ५	४ ५ २९ २५	९ १० ५९ ११	८ २५ १९ ३५	२२ १९	२५ ३६	२ २५	१०
११	२ २४ २८ ५०	२ १३ ९ ४४	४ ३ ३० १३	३ १७ १९ ७	३ २२ ३८ २३	४ ६ ९ २६	९ १० ५५ १	८ २५ १६ २४	२२ १२	२४ २२	१ ६	११
१२	२ २५ २६ ०४	२ २८ १९ ४३	४ ४ ६ ५७	३ १८ ४९ १५	३ २२ ५० ४३	४ ६ ४४ १६	९ १० ५० ४९	८ २५ १३ १३	२२ ४	२१ २१	० १७	१२
१३	२ २६ २३ १९	३ १३ २४ ८	४ ४ ४३ ४३	३ २० १७ १४	३ २३ ३ ६	४ ७ १९ ५४	९ १० ४६ ३५	८ २५ १० ३	२१ ५६	१६ ५३	−१ ३९	१३
१४	२ २७ २० ३३	३ २८ १४ ५७	४ ५ २० २९	३ २१ ४३ १	३ २३ १५ ३१	४ ७ ५४ १४	९ १० ४२ २०	८ २५ ६ ५२	२१ ४७	११ २६	−२ ५३	१४
१५	२ २८ १७ ४८	४ १२ ४४ ८	४ ५ ५७ १९	३ २३ ६ ३९	३ २३ २७ ५९	४ ८ २७ १८	९ १० ३८ २	८ २५ ३ ४१	२१ ३८	५ ३०	−३ ५४	१५
१६	२ २९ १५ ०४	४ २६ ४८ ५	४ ६ ३४ ११	३ २४ २८ २	३ २ ४० २९	४ ८ ५९ १	९ १० ३३ ४३	८ २५ ० ३०	२१ २९	० ३३	−४ ३९	१६
१७	३ ० १२ १८	५ १० २५ ४७	४ ७ ११ ४	३ २५ ४७ ७	३ २३ ५३ १	४ ९ २९ १६	९ १० २९ २३	८ २४ ५७ २०	२१ १९	−६ २२	−५ ७	१७
१८	३ १ ९ ३४	५ २३ ३६ ५४	४ ७ ४७ ०	३ २७ ३ ५५	३ २४ ५ ३६	४ ९ ५८ ५	९ १० २५ १	८ २४ ५४ ९	२१ ९	−११ ४२	−५ १७	१८
१९	३ २ ६ ५०	६ ६ २४ ३१	४ ८ २४ ५७	३ २८ १८ २१	३ २४ १८ १२	४ १० २५ २१	९ १० २० ३७	८ २४ ५० ५८	२० ५९	−१६ २३	−५ ११	१९
२०	३ ३ ४ ०५	६ १८ ५२ ४३	४ ९ १ ५६	३ २९ ३० १८	३ २४ ३० ५१	४ १० ५१ १	९ १० १६ १३	८ २४ ४७ ४७	२० ४८	−२० १५	−४ ५१	२०
२१	३ ४ १ २१	७ १ ४ ३५	४ ९ ३८ ५८	४ ० ३९ ४७	३ २४ ४३ ३१	४ ११ १५ ५	९ १० ११ ४८	८ २४ ४४ ३७	२० ३७	−२३ ८	−४ १७	२१
२२	३ ४ ५८ ३८	७ १३ ४ ४५	४ १० १६ १	४ १ ४६ ४१	३ २४ ५६ १४	४ ११ ३७ २६	९ १० ७ २२	८ २४ ४१ २६	२० २५	−२४ ५७	−३ ३३	२२
२३	३ ५ ५५ ५३	७ २४ ५७ ४०	४ १० ५३ ६	४ २ ५० ५२	३ २५ ८ ५८	४ ११ ५७ ५८	९ १० २ ५६	८ २४ ३८ १५	२० १३	−२५ ३७	−२ ४०	२३
२४	३ ६ ५३ १०	८ ६ ५६ ४	४ ११ ३० १३	४ ३ ५२ २०	३ २५ २१ ४४	४ १२ १६ ४४	९ ९ ५८ २९	८ २४ ३५ ४	२० १	−२५ ७	−१ ४१	२४
२५	३ ७ ५० २८	८ १८ ३३ ३८	४ १२ ७ २३	४ ४ ५० ५६	३ २५ ३४ ३२	४ १२ ३३ ३७	९ ९ ५४ १	८ २४ ३१ ५३	१९ ४८	−२३ २९	० ३७	२५
२६	३ ८ ४७ ४४	९ ० २३ ४०	४ १२ ४४ ३३	४ ५ ४६ ३१	३ २५ ४७ २१	४ १२ ४८ ३२	९ ९ ४९ ३४	८ २४ २८ ४३	१९ ३६	−२० ४९	० २८	२६
२७	३ ९ ४५ ०३	९ १२ १७ ४०	४ १३ २१ ४७	४ ६ ३९ २	३ २६ ० १२	४ १३ १ २९	९ ९ ४५ ६	८ २४ २५ ३२	१९ २२	−१७ १५	१ ३३	२७
२८	३ १० ४२ २२	९ २४ १८ १३	४ १३ ५९ २	४ ७ २८ १८	३ २६ १३ ४	४ १३ १२ २१	९ ९ ४० ३८	८ २४ २२ २१	१९ ९	−१२ ५८	२ ३४	२८
२९	३ ११ ३९ ४०	१० ६ २७ ४३	४ १४ ३६ १९	४ ८ १४ १०	३ २६ २५ ५८	४ १३ २१ ६	९ ९ ३६ ११	८ २४ १९ १०	१८ ५५	−८ ८	३ २९	२९
३०	३ १२ ३७ ००	१० १८ ४७ १	४ १५ १३ ३९	४ ८ ४६ ३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टै. टा.) सन् १९९१ ई.

(१ अगस्त को स्पष्ट अयनांश २३°।४४'।३९")

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।४४'।४३")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
३१	३ १३ ३४ २२	११ १ १८ २८	४ १५ ५१ १	४ ९ ३५ १०	३ २६ ५१ ४९	४ १३ ३२ १०	९ ९ २७ १६	८ २४ १२ ४९	१८ २७	२ २८	४ ४९	३१
अगस्त १	३ १४ ३१ ४४	११ १४ ४ २९	४ १६ २८ २४	४ १० ९ ५६	३ २७ ४ ४७	४ १३ ३४ १९	९ ९ २२ ५०	८ २४ ९ ३८	१८ १२	७ ५१	५ १०	१ अगस्त
२	३ १५ २९ ०६	११ २७ ६ १	४ १७ ५ ५०	४ १० ४० ४०	३ २७ १७ ४६	४ १३ ३४ १०	९ ९ १८ २४	८ २४ ६ २७	१७ ५७	१३ ०	५ १५	२
३	३ १६ २६ ३०	० १० २५ २४	४ १७ ४३ १८	४ ११ ७ ८	३ २७ ३० ४६	४ १३ ३१ ४२	९ ९ १३ ५९	८ २४ ३ १६	१७ ४१	१७ ४१	५ ४	३
४	३ १७ २३ ५६	० २४ ४ ४४	४ १८ २० ४९	४ ११ २९ १३	३ २७ ४३ ४७	४ १३ २६ ५६	९ ९ ९ ३५	८ २४ ० ६	१७ २६	२१ ३४	४ ३६	४
५	३ १८ २१ २३	१ ८ ३ ४२	४ १८ ५८ २१	४ ११ ४६ ४१	३ २७ ५६ ४९	४ १३ १९ ५०	९ ९ ५ १२	८ २३ ५६ ५५	१७ १०	२४ १८	३ ५१	५
६	३ १९ १८ ५०	१ २२ २२ २३	४ १९ ३५ ५६	४ ११ ५९ २०	३ २८ ९ ५१	४ १३ १० १४	९ ९ ० ५०	८ २३ ५३ ४४	१६ ५४	२५ ३३	२ ५०	६
७	३ २० १६ २०	२ ६ ५९ १५	४ २० १३ ३३	४ १२ ७ २	३ २८ २२ ५५	४ १२ ५८ २२	९ ८ ५६ २९	८ २३ ५० ३३	१६ ३७	२५ ४	१ ३८	७
८	३ २१ १३ ५०	२ २१ ४८ ५६	४ २० ५१ १३	४ १२ ९ ३७	३ २८ ३५ ०	४ १२ ४४ १०	९ ८ ५२ १०	८ २३ ४७ २३	१६ २१	२२ ४९	० १८	८
९	३ २२ ११ २२	३ ६ ४५ ४८	४ २१ २८ ५४	४ १२ ६ ५५	३ २८ ४९ ५	४ १२ २७ ३५	९ ८ ४७ ५२	८ २३ ४४ १२	१६ ४	१९ ०	−१ ४	९
१०	३ २३ ८ ५५	३ २१ ४२ ४६	४ २२ ६ ३९	४ ११ ५८ ४३	३ २९ २ ११	४ १२ ८ ४५	९ ८ ४३ ३७	८ २३ ४१ १	१५ ४६	१३ ५७	−२ २१	१०
११	३ २४ ६ २९	४ ६ ३० १९	४ २२ ४४ २४	४ ११ ४५ २६	३ २९ १५ १७	४ ११ ३७ ३८	९ ८ ३९ २३	८ २३ ३७ ५०	१५ २९	८ ८	−३ २८	११
१२	३ २५ ४ ०४	४ २१ १ ५८	४ २३ २२ १३	४ ११ २६ ३४	३ २९ २८ २४	४ ११ २४ २२	९ ८ ३५ ११	८ २३ ३४ ३९	१५ ११	१ ५९	−४ २०	१२
१३	३ २६ १ ४२	५ ५ १० ३६	४ २४ ० ४	४ ११ २ २३	३ २९ ४१ ३१	४ १० ५९ ४	९ ८ ३१ १	८ २३ ३१ २९	१४ ५३	−४ ५	−४ ५४	१३
१४	३ २६ ५९ १९	५ १८ ५३ १९	४ २४ ३७ ५६	४ १० ३२ ०	३ २९ ५४ ३९	४ १० ३१ ४५	९ ८ २६ ५४	८ २३ २८ १८	१४ ३५	−९ ४६	−५ ११	१४
१५	३ २७ ५६ ५७	६ २ ९ ४९	४ २५ १५ ५१	४ ९ ५८ ४१	४ ० ७ ४७	४ १० २ ३६	९ ८ २२ ४८	८ २३ २५ ७	१४ १६	−१४ ४९	−५ १०	१५
१६	३ २८ ५४ ३८	६ १५ ० २९	४ २५ ५३ ४८	४ ९ १९ ४७	४ ० २० ५५	४ ९ ३१ ४८	९ ८ १८ ४६	८ २३ २१ ५६	१३ ५८	−१९ ३	−४ ५३	१६
१७	३ २९ ५२ १८	६ २७ २९ ९	४ २६ ३१ ४७	४ ८ ३६ ५१	४ ० ३४ २	४ ८ ५९ ३०	९ ८ १४ ४६	८ २३ १८ ४६	१३ ३९	−२२ १८	−४ २३	१७
१८	४ ० ४९ ५९	७ ९ ४० ४०	४ २७ ९ ४८	४ ७ ५० २०	४ ० ४७ १०	४ ८ २५ ४५	९ ८ १० ४९	८ २३ १५ ३५	१३ २०	−२४ २८	−३ ४१	१८
१९	४ १ ४७ ४३	७ २१ ३८ ५४	४ २७ ४७ ५२	४ ७ १ ६	४ १ ० १८	४ ७ ५० ४९	९ ८ ६ ५५	८ २३ १२ २४	१३ ०	−२५ २८	−२ ५१	१९
२०	४ २ ४५ २६	८ ३ २९ २०	४ २८ २५ ५७	४ ६ ९ ५३	४ १ १३ २६	४ ७ १५ २	९ ८ ३ ३	८ २३ ९ १३	१२ ४१	−२५ १८	−१ ५३	२०
२१	४ ३ ४३ १०	८ १५ १७ १३	४ २९ ४ ५	४ ५ १७ ३८	४ १ २६ ३४	४ ६ ३८ २७	९ ७ ५९ १५	८ २३ ६ २	१२ २१	−२३ ५९	० ५१	२१
२२	४ ४ ४० ५७	८ २७ ५ ५४	४ २९ ४२ १५	४ ४ २५ २१	४ १ ३९ ४१	४ ६ १ २५	९ ७ ५५ ३१	८ २३ २ ५२	१२ १	−२१ ३७	० १३	२२
२३	४ ५ ३८ ४३	९ ८ ५९ ३७	५ ० २० २७	४ ३ ३४ ५	४ १ ५२ ४८	४ ५ २४ ४	९ ७ ५१ ४९	८ २२ ५९ ४१	११ ४१	−१८ १८	१ १७	२३
२४	४ ६ ३६ ३१	९ २१ १ ५३	५ ० ५८ ४१	४ २ ४४ ५५	४ २ ५ ५४	४ ४ ४६ ४२	९ ७ ४८ ११	८ २२ ५६ ३०	११ २१	−१४ १२	२ १८	२४
२५	४ ७ ३४ २१	१० ३ १३ ५९	५ १ ३६ ५८	४ १ ५८ ५६	४ २ १९ ०	४ ४ ९ ३८	९ ७ ४४ ३७	८ २२ ५३ १९	११ ०	−९ २९	३ १३	२५
२६	४ ८ ३२ १२	१० १५ ३७ ५३	५ २ १५ १७	४ १ १७ ५	४ २ ३२ ६	४ ३ ३२ ५९	९ ७ ४१ ६	८ २२ ५० ९	१० ४०	−४ २०	४ ०	२६
२७	४ ९ ३० ०३	१० २८ १४ ५१	५ २ ५३ ३७	४ ० ४० २०	४ २ ४५ ११	४ २ ५७ ७	९ ७ ३७ ३९	८ २२ ४६ ५८	१० १९	१ ४	४ ३७	२७
२८	४ १० २७ ५८	११ ११ ४ १०	५ ३ ३२ १	४ ० ९ ३४	४ २ ५८ १५	४ २ २२ ५	९ ७ ३४ १६	८ २२ ४३ ४७	९ ५८	६ ३०	५ ०	२८
२९	४ ११ २५ ४३	११ २४ ६ १६	५ ४ १० २७	३ २९ ४५ २६	४ ३ ११ १९	४ १ ४८ १४	९ ७ ३० ५७	८ २२ ४० ३६	९ ३७	११ ४५	५ ८	२९
३०	४ १२ २३ ५०	० ७ २१ ३७	५ ४ ४८ ५५	३ २९ २८ ४०	४ ३ २४ २१	४ १ १५ ४९	९ ७ २७ ४२	८ २२ ३७ २५	९ १६	१६ ३२	५ ०	३०
३१	४ १३ २१ ५०	० २० ४९ ६	५ ५ २७ २६	३ २९ १९ ४०	४ ३ ३७ २३	४ ० ४४ ५६	९ ७ २४ ३१	८ २२ ३४ १५	८ ५४	२० ३५	४ ३५	३१
सितम्बर १	४ १४ १९ ५०	१ ४ २९ २१	५ ६ ५ ५९	३ २९ १८ ४८	४ ३ ५० २४	४ ० १५ ४२	९ ७ २१ २४	८ २२ ३१ ४	८ ३२	२३ ३५	३ ५४	१ सितम्बर
२	४ १५ १७ ५३	१ १८ २३ ४	५ ६ ४४ ३४	३ २९ २६ १९	४ ४ ८ २४	३ २९ ४८ २०	९ ७ १८ २२	८ २२ २७ ५३	८ ११	२५ १३	२ ५९	२
३	४ १६ १५ ५८	२ २ २८ ५९	५ ७ २३ १२	२९ ४२ २०	४ ४ १६ २३	३ २९ २३ १	९ ७ १५ २३	८ २२ २४ ४२	७ ४९	२५ १६	१ ५३	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०
(१ अक्तूबर को अयनांश २३°।४४'।४७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क	अं. क.	सन् १९९१ ई.
सित. ४	४ १७ १४ ०५	२ १६ ४६ ५०	५ ८ १ ५३	४ ० ६ ४९	४ ४ २९ २१	३ २८ ५९ ४६	.९ ७ १२ ३०	८ २२ २१ ३२	७ २७	२३ ४०	० ३८	४ सितं.
५	४ १८ १२ १३	३ १ १५ १२	५ ८ ४० ३६	४ ० ३९ ४४	४ ४ ४२ १८	३ २८ ३८ ४८	९ ७ ९ ४१	८ २२ १८ २१	७ ५	२० २९	० ३९	५
६	४-१९ १० २५	३ १५ ४९ २८	५ ९ १९ २२	४ १ २० ५१	४ ४ ५५ १३	३ २८ २० १	९ ७ ६ ५७	८ २२ १५ १०	६ ४३	१६ ०	−१ ५५	६
७	४ २० ८ ३८	४ ० २५ ९	५ ९ ५८ १०	४ २ ९ ५४	४ ५ ८ ८	३ २८ ३ ३५	९ ७ ४ १७	८ २२ ११ ५९	६ २०	१० ३५	−३ ३	७
८	४ २१ ६ ५२	४ १४ ५६ ३८	५ १० ३७ १	४ ३ ६ ३२	४ ५ २१ ०	३ २७ ४९ ३६	९ ७ १ ४२	८ २२ ८ ४८	५ ५८	४ ३७	−३ ५८	८
९	४ २२ ५ १०	४ २९ १६ ५	५ ११ १५ ५४	४ ४ १० २३	४ ५ ३३ ५१	३ २७ ३८ ०	९ ६ ५९ १३	८ २२ ५ ३८	५ ३५	−१ ३०	−४ ३८	९
१०	४ २३ ३ २८	५ १३ १८ ४	५ ११ ५४ ५०	४ ५ २० ५७	४ ५ ४६ ४१	३ २७ २८ ४६	९ ६ ५६ ४८	८ २२ २ २७	५ १३	−७ २४	−५ ०	१०
११	४ २४ १ ४८	५ २६ ५८ ४१	५ १२ ३३ ४८	४ ६ ३७ ४३	४ ५ ५९ २९	३ २७ २१ ५८	९ ६ ५४ २८	८ २१ ५९ १६	४ ५०	−१२ ४७	−५ ४	११
१२	४ २५ ०० १०	६ १० १४ ३४	५ १३ १२ ४८	४ ८ ० १०	४ ६ १२ १५	३ २७ १७ ३३	९ ६ ५२ १३	८ २१ ५६ ५	४ २७	−१७ २५	−४ ५१	१२
१३	४ २५ ५८ ३४	६ २३ ६ १९	५ १३ ५१ ५२	४ ९ २७ ४५	४ ६ २४ ५९	३ २७ १५ ३४	९ ६ ५० ४	८ २१ ५२ ५५	४ ४	−२१ ५	−४ २४	१३
१४	४ २६ ५७ ००	७ ५ ३६ ३९	५ १४ ३० ५७	४ १० ५९ ५१	४ ६ ३७ ४२	३ २७ १५ ५७	९ ६ ४७ ०	८ २१ ४९ ४४	३ ४१	−२३ ४०	−३ ४५	१४
१५	४ २७ ५५ २६	७ १७ ४८ १८	५ १५ १० ५	४ १२ ३५ ५७	४ ६ ५० २२	३ २७ १८ ३३	९ ६ ४६ १	८ २१ ४६ ३३	३ १८	−२५ ४	−२ ५६	१५
१६	४ २८ ५३ ५६	७ २९ ४६ ३६	५ १५ ४९ १५	४ १४ १५ २८	४ ७ ३ ०	३ २७ २३ ३१	९ ६ ४४ ८	८ २१ ४३ २२	२ ५५	−२५ १७	−२ ०	१६
१७	४ २९ ५२ २६	८ ११ ३७ २०	५ १६ २८ २८	४ १५ ५७ ५३	४ ७ १५ ३६	३ २७ ३० ४३	९ ६ ४२ २०	८ २१ ४० १२	२ ३२	−२४ १९	−१ ०	१७
१८	५ ० ५० ५७	८ २३ २५ १	५ १७ ७ ४३	४ १७ ४२ ३७	४ ७ २८ १०	३ २७ ४० ४	९ ६ ४० ३७	८ २१ ३७ १	२ ९	−२२ १७	० ३	१८
१९	५ १ ४९ ३१	९ ५ १५ २०	५ १७ ४७ ०	४ १९ २९ २०	४ ७ ४० ४१	३ २७ ५१ ३५	९ ६ ३९ ०	८ २१ ३३ ५०	१ ४६	−१९ १७	१ ६	१९
२०	५ २ ४८ ०६	९ १७ १३ ३१	५ १८ २६ २१	४ २१ १७ ३३	४ ७ ५३ १०	३ २८ ५ ८	९ ६ ३७ २९	८ २१ ३० ३९	१ २२	−१५ २७	२ ६	२०
२१	५ ३ ४६ ४१	९ २९ २२ ३६	५ १९ ५ ४२	४ २३ ६ ५०	४ ८ ५ ३६	३ २८ २० ४३	९ ६ ३६ ४	८ २१ २७ २८	० ५९	−१० ५७	३ १	२१
२२	५ ४ ४५ २०	१० ११ ४६ २	५ १९ ४५ ७	४ २४ ५६ ५७	४ ८ १८ ०	३ २८ ३८ १८	९ ६ ३४ ४४	८ २१ २४ १८	० ३६	−५ ५६	३ ४९	२२
२३	५ ५ ४४ ०१	१० २४ २६ ५	५ २० २४ ३५	४ २६ ४७ ३२	४ ८ ३० २१	३ २८ ५७ ४७	९ ६ ३३ २९	८ २१ २१ ७	० १२	−० ३४	४ २७	२३
२४	५ ६ ४२ ४१	११ ७ २२ ९	५ २१ ४ ४	४ २८ ३८ २०	४ ८ ४२ ४०	३ २९ १९ ३	९ ६ ३२ २१	८ २१ १७ ५६	० ११	४ ५४	४ ५१	२४
२५	५ ७ ४१ २५	११ २० ३३ ५८	४ २१ ४३ ३७	५ ० २९ ११	४ ८ ५४ ५५	३ २९ ४२ १२	९ ६ ३१ १८	८ २१ १४ ४५	० ३४	१० १६	५ १	२५
२६	५ ८ ४० १२	० ३ ५९ ५८	५ २२ २३ १२	५ २ १९ ५४	४ ९ ७ ८	४ ० ७ ४	९ ६ ३० २१	८ २१ ११ ३५	० ५८	१५ १५	४ ५४	२६
२७	५ ९ ३८ ५८	० १७ ३६ ५५	५ २३ २ ४९	५ ४ १० १४	४ ९ १९ १८	४ ० ३३ ३५	९ ६ २९ ३०	८ २१ ८ २४	−१ २१	१९ ३२	४ ३१	२७
२८	५ १० ३७ ४	१ १ २३ २३	५ २३ ४२ ३०	५ ६ ० १२	४ ९ ३१ २५	४ १ १ ४६	९ ६ २८ ४५	८ २१ ५ १३	−१ ४४	२२ ४८	३ ५२	२८
२९	५ ११ ३६ ४१	१ १५ १६ १०	५ २४ २२ १३	५ ७ ४९ ३६	४ ९ ४३ २९	४ १ ३१ २८	९ ६ २८ ६	८ २१ २ २	−२ ८	२४ ४५	२ ५९	२९
३०	५ १२ ३५ ३५	१ २९ १४ २१	५ २५ १ ५८	५ ९ ३८ २२	४ ९ ५५ २९	४ २ २ ४४	९ ६ २७ ३२	८ २० ५८ ५१	−२ ३१	२५ १०	१ ५४	३०
अक्तूबर १	५ १३ ३४ ३२	२ १३ १७ ३६	५ २५ ४१ ४७	५ ११ २६ ३१	४ १० ७ २६	४ २ ३५ २७	९ ६ २७ ५	८ २० ५५ ४१	−२ ५४	२३ ५८	० ४३	१ अक्तूबर
२	५ १४ ३३ ३१	२ २७ २४ ७	५ २६ २१ ३८	५ १३ १३ ५४	४ १० १९ २०	४ ३ ९ ३४	९ ६ २६ ४३	८ २० ५२ ३०	−३ १८	२१ १५	० ३२	२
३	५ १५ ३२ ३३	३ ११ ३३ ३७	५ २७ १ ३२	५ १५ ० ३३	४ १० ३१ ११	४ ३ ४५ ३	९ ६ २६ २८	८ २० ४९ १९	−३ ४१	१७ १५	−१ ४४	३
४	५ १६ ३१ ३७	३ २५ ४५ १३	५ २७ ४१ २९	५ १६ ४६ २६	४ १० १२ ५८	४ ४ २१ ५२	९ ६ २६ १८	८ २० ४६ ८	−४ ४	१२ १६	−२ ५१	४
५	५ १७ ३० ४३	४ ९ ५५ १५	५ २८ २१ २९	५ १८ ३१ ३१	४ १० ५४ ४१	४ ४ ५९ ५४	९ ६ २६ १५	८ २० ४२ ५७	−४ २७	६ ३८	−३ ४६	५
६	५ १८ २९ ५२	४ २४ ० ४८	५ २९ १ ३१	५ २० १५ ४७	४ ११ ६ २१	४ ५ ३९ ११	९ ६ २६ १७	८ २० ३९ ४७	−४ ५०	० ४३	−४ २८	६
७	५ १९ २९ ०३	५ ७ ५८ ७	५ २९ ४१ ३७	५ २१ ५९ १७	४ ११ १७ ५७	४ ६ १९ ३९	९ ६ २६ २४	८ २० ३६ ३६	−५ १३	−५ १०	−४ ५३	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०
(१ नवम्बर को स्पष्ट अयनांश २३°।४४'।५०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	रा. अ. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन १९९१ ई.
अक्तू. ८	५ २० २८ १६	५ २१ ४१ ४१	६ ० २१ ४५	५ २३ ४१ ५७	४ ११ २९ २९	४ ७ १ ११	९ ६ २६ ४०	८ २० ३३ २५	−५ ३६	−१० ४२	−५ ०	८ अक्तू.
९	५ २१ २७ ३२	६ ५ ८ १५	६ १ १ ५६	५ २५ २३ ५२	४ ११ ४० ५७	४ ७ ४३ ५१	९ ६ २७ १	८ २० ३० १४	−५ ५९	−१५ ३७	−४ ५१	९
१०	५ २२ २६ ४९	६ १८ १५ ४९	६ १ ४२ ९	५ २७ ४ ५७	४ ११ ५२ २१	४ ८ २७ ३३	८ ६ २७ २७	८ २० २७ ४	−६ २२	−१९ ३९	−४ २६	१०
११	५ २३ २६ ०८	७ १ २ ३०	६ २ २२ २५	५ २८ ४५ १७	४ १२ ३ ४०	४ ९ १२ १३	९ ६ २७ ०	८ २० २३ ५३	−६ ४५	−२२ ३९	−३ ४८	११
१२	५ २४ २५ ३०	७ १३ २९ ४९	६ ३ २ ४५	६ ० २४ ५२	४ १२ १४ ५६	४ ९ ५७ ५३	९ ६ २८ ३८	८ २० २० ४२	−७ ८	−२४ २९	−३ ०	१२
१३	५ २५ २४ ५३	७ २५ ४० ५५	६ ३ ४३ ६	६ २ ३ ४१	४ १२ २६ ७	४ १० ४४ २७	९ ६ २९ २३	८ २० १७ ३१	−७ ३०	−२५ ६	−२ ५	१३
१४	५ २६ २४ १७	८ ७ ३८ ४७	६ ४ २३ ३०	६ ३ ४१ ४८	४ १२ ३७ १३	४ ११ ३१ ५५	९ ६ ३० १४	८ २० १४ २१	−७ ५३	−२४ ३१	−१ ५	१४
१५	५ २७ २३ ४५	८ १९ २८ ४७	६ ५ ३ ५७	६ ५ १९ १२	४ १२ ४८ १५	४ १२ २० १६	९ ६ ३१ ११	८ २० ११ १०	−८ १५	−२२ ४९	० २	१५
१६	५ २८ २३ १३	९ १ १६ १७	६ ५ ४४ २६	६ ६ ५५ ५४	४ १२ ५९ १२	४ १३ ९ २५	९ ६ ३२ १४	८ २० ७ ५९	−८ ३७	−२० ८	१ ०	१६
१७	५ २९ २२ ४२	९ १३ ७ २४	६ ६ २४ ५८	६ ८ ३१ ५६	४ १३ १० ५	४ १३ ५९ २२	९ ६ ३३ २२	८ २० ४ ४८	−८ ५९	−१६ ३७	२ ०	१७
१८	६ ० २२ १५	९ २५ ६ ३१	६ ७ ५ ३३	६ १० ७ १९	४ १३ २० ५२	४ १४ ५० ६	९ ६ ३४ ३७	८ २० १ ३८	−९ २१	−१२ २३	२ ५५	१८
१९	६ १ २१ ४६	१० ७ १९ ३५	६ ७ ४६ १०	६ ११ ४२ १	४ १३ ३१ ३४	४ १५ ४१ ३३	९ ६ ३५ ५८	८ १९ ५८ २७	−९ ४३	−७ ३६	३ ४४	१९
२०	६ २ २१ २२	१० १९ ४९ ३७	६ ८ २६ ५०	६ १३ १६ ९	४ १३ ४२ १२	४ १६ ३३ ४५	९ ६ ३७ २५	८ १९ ५५ १६	−१० ५	−२ २५	४ २२	२०
२१	६ ३ २० ५९	११ २ ३९ ५३	६ ९ ७ ३३	६ १४ ४९ ३८	४ १३ ५२ ४४	४ १७ २६ ३८	९ ६ ३८ ५७	८ १९ ५२ ५	−१० २६	३ ०	४ ४९	२१
२२	६ ४ २० ३६	११ १५ ५२ ०	६ ९ ४८ १८	६ १६ २२ ३१	४ १४ ३ १०	४ १८ २० १०	९ ६ ४० ३६	८ १९ ४८ ५४	−१० ४८	८ २६	५ १	२२
२३	६ ५ २० १७	११ २९ २४ ३	६ १० २९ ६	६ १७ ५४ ५०	४ १४ १३ ३२	४ १९ १४ २३	९ ६ ४२ २१	८ १९ ४५ ४४	−११ ९	१३ ३६	४ ५७	२३
२४	६ ६ २० ००	० १३ १३ ५२	६ ११ ९ ५७	६ १९ २६ ३४	४ १४ २३ ४८	४ २० ९ १४	९ ६ ४४ ११	८ १९ ४२ ३३	−११ ३०	१८ ११	४ ३५	२४
२५	६ ७ १९ ४३	० २७ १७ ५४	६ ११ ५० ५१	६ २० ५७ ४२	४ १४ ३३ ५८	४ २१ ४ ३९	९ ६ ४६ ७	८ १९ ३९ २२	−११ ५१	२१ ५०	३ ५७	२५
२६	६ ८ १९ ३०	१ ११ ३० ५	६ १२ ३१ ४८	६ २२ २८ १९	४ १४ ४४ ३	४ २२ ० ६	६ ४८ ९	८ १९ ३६ ११	−१२ १२	२४ ११	३ ३	२६
२७	६ ९ १९ १९	१ २५ ४६ ११	६ १३ १२ ४७	६ २३ ५८ २२	४ १४ ५४ २	४ २२ ५७ २०	९ ६ ५० १८	८ १९ ३३ ०	−१२ ३२	२४ ५९	१ ५८	२७
२८	६ १० १९ ०८	२ १० २ ४१	६ १३ ५३ ४९	६ २५ २७ ४९	४ १५ ३ ५६	४ २३ ५४ २८	९ ६ ५२ ३१	८ ९ २९ ५०	−१२ ५३	२४ ८	० ४५	२८
२९	६ ११ १९ ०२	२ २४ १५ ३२	६ १४ ३४ ५५	६ २६ ५६ ४५	४ १५ १३ ४३	४ २४ ५२ ११	९ ६ ५४ ५०	८ १९ २६ ३९	−१३ १३	२१ ४३	० ३१	२९
३०	६ १२ १८ ५८	३ ८ २३ ३२	६ १५ १६ ३	६ २८ २५ ०	४ १५ २३ २४	४ २५ ५० २५	९ ६ ५७ १५	८ १९ २३ २८	−१३ ३३	१७ ५९	−१ ४४	३०
३१	६ १३ १८ ५५	३ २२ २६ १५	६ १५ ५७ १४	६ २९ ५२ ५४	४ १५ ३२ ५९	४ २६ ४९ ८	९ ६ ५९ ४६	८ १९ २० १७	−१३ ५२	१३ १६	−२ ५१	३१
नवम्बर १	६ १४ १८ ५४	४ ६ २१ ५७	६ १६ ३८ २८	७ १ २० ३	४ १५ ४२ २८	४ २७ ४८ २०	९ ७ २ २२	८ १९ १७ ७	−१४ १२	७ ५३	−३ ४६	१ नवम्बर
२	६ १५ १८ ५७	४ २० १० २९	६ १७ १९ ४६	७ २ ५६ ३८	४ १५ ५१ ५१	४ २८ ४८ २	९ ७ ५ ४	८ १९ १३ ५६	−१४ ३१	२ ११	−४ २८	२
३	६ १६ १९ ०१	५ ३ ५१ १८	६ १८ १ ६	७ ४ १२ ३३	४ १६ १ ७	४ २९ ४८ १०	९ ७ ७ ५१	८ १९ १० ४५	−१४ ५०	−३ ३४	−४ ५५	३
४	६ १७ १९ ०७	५ १७ २१ ४३	६ १८ ४२ २९	७ ५ ३७ ४८	४ १६ १० १६	५ ० ४८ ४५	९ ७ १० ४५	८ १९ ७ ३४	−१५ ९	−९ ४	−५ ४	४
५	६ १८ १९ १६	६ ० ४० २४	६ १९ २३ ५५	७ ७ २ २०	४ १६ १९ १९	५ १ ४९ ४७	९ ७ १३ ४३	८ १९ ४ २४	−१५ २७	−१४ ४	−४ ५६	५
६	६ १९ १९ २६	६ १३ ४६ ३	६ २० ५ २५	७ ८ २६ ६	४ १६ २८ १४	५ २ ५१ १२	९ ७ १६ ४७	८ १९ १ १३	−१५ ४६	−१८ २०	−४ ३४	६
७	६ २० १९ ३८	६ २६ ३६ ११	६ २० ४६ ५६	७ ९ ४९ २	४ १६ ३७ ३	५ ३ ५३ १	९ ७ १९ ५६	८ १८ ५८ २	−१६ ४	−२१ ३९	−३ ५७	७
८	६ २१ १९ ५१	७ ९ १० ४६	६ २१ २८ ३१	७ ११ ११ ५	४ १६ ४५ ४५	५ ४ ५५ १३	९ ७ २३ ११	८ १८ ५४ ५१	−१६ २२	−२३ ५१	३ १०	८
९	६ २२ २० ०८	७ २१ ३० ४६	६ २२ १० ९	७ १२ ३२ ११	४ १६ ५४ २०	५ ५ ५७ ४९	९ ७ २६ ३१	८ १८ ५१ ४०	−१६ ३९	−२४ ५१	−२ १४	९
१०	६ २३ २० २५	८ ३ ३६ ५२	६ २२ ५१ ४९	७ १३ ५२ १०	४ १७ २ ३७	५ ७ ० ४५	९ ७ २९ ५७	८ १८ ४८ ३०	−१६ ५६	−२४ ३८	−१ १३	१०
११	६ २४ २० ४४	८ १५ ३२ ५४	६ २३ ३३ ३३	७ १५ १० ०	४ १७ ११ ८	५ ८ ४ २	९ ७ ३३ २७	८ १८ ४५ १९	−१७ १३	−२३ १६	० ९	११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९१ ई०
(१ दिसम्बर को अयनांश २३°।४४'।५५")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
नवम्बर १२	६ २५ २१ ०५	८ २७ २१ ४३	६ २४ १५ १९	७ १६ २८ ३१	४ १७ १९ २०	५ ९ ७ ४०	९ ७ ३७ ३	८ १८ ४२ ८	−१७ ३०	−२० ५३	० ५४	१२ नवम्बर
१३	६ २६ २१ २७	९ ९ ८ २१	६ २४ ५७ ८	७ १७ ४४ ३३	४ १७ २७ २५	५ १० ११ ३६	९ ७ ४० ४४	८ १८ ३८ ५७	−१७ ४६	−१७ ३८	१ ५५	१३
१४	६ २७ २१ ५०	९ २० ५८ २४	६ २५ ३८ ५९	७ १८ ५८ ५८	४ १७ ३५ २२	५ ११ १५ ५२	९ ७ ४४ ३०	८ १८ ३५ ४६	−१८ २	−१३ ४०	२ ५२	१४
१५	६ २८ २२ १५	१० २ ५६ १५	६ २६ २० ५४	७ २० ११ ३३	४ १७ ४३ १२	५ १२ २० २६	९ ७ ४८ २१	८ १८ ३२ ३६	−१८ -१८	−९ ८	३ ४१	१५
१६	६ २९ २२ ४०	१० १५ ७ ३८	६ २७ २ ५१	७ २१ २२ ४	४ १७ ५० ५३	५ १३ २५ १८	९ ७ ५२ १७	८ १८ २९ २५	−१८ ३३	−४ ११	४ २२	१६
१७	७ ० २३ ०६	१० २७ ३७ ५७	६ २७ ४४ ५०	७ २२ ३० १४	४ १७ ५८ २६	५ १४ ३० २७	९ ७ ५६ १८	८ १८ २६ १४	−१८ ४८	१ ३	४ ५१	१७
१८	७ १ २४ ३५	११ १० ३० ७	६ २८ २६ ५३	७ २३ ३५ ४८	४ १८ ५ ५२	५ १५ ३५ ५३	९ ८ ० २४	८ १८ २३ ३	−१९ ३	६ २३	५ ७	१८
१९	७ २ २५ ०४	११ २३ ४७ ५	६ २९ ८ ५८	७ २४ ३८ २२	४ १८ १३ ९	५ १६ ४१ ३५	९ ८ ४ ३४	८ १८ १९ ५३	−१९ १७	११ ३७	५ ७	१९
२०	७ ३ २५ ३५	० ७ २९ ५३	६ २९ ५१ ६	७ २५ ३७ ३४	४ १८ २० १७	५ १७ ४७ ३२	९ ८ ८ ५०	८ १८ १६ ४२	−१९ ३१	१६ २६	४ ५०	२०
२१	७ ४ २६ ०६	० २१ ३५ २८	७ ० ३३ १७	७ २६ ३२ ५७	४ १८ २७ १७	५ १८ ५३ ४६	९ ८ १३ १०	८ १८ १३ ३१	−१९ ४५	२० ३०	४ १४	२१
२२	७ ५ २६ ४०	१ ६ ० ९	७ १ १५ ३१	७ २७ २४ ०	४ १८ ३४ ९	५ २० ० १४	९ ८ १७ ३५	८ १८ १० २०	−१९ ५८	२३ २४	३ २२	२२
२३	७ ६ २६ १५	१ २० ३८ २३	७ १ ५७ ४७	७ २८ १० १०	४ १८ ४० ५२	५ २१ ६ ५७	९ ८ २२ ४	८ १८ ७ १०	−२० ११	२४ ४७	२ १६	२३
२४	७ ७ २६ ५३	२ ५ २१ ५२	७ २ ४० ७	७ २८ ५० ४९	४ १८ ४७ २६	५ २२ १३ ५५	९ ८ २६ ३८	८ १८ ३ ५९	−२० २४	२४ २७	१ १	२४
२५	७ ८ २७ ३०	२ २० ४ १०	७ ३ २२ ३०	७ २९ २५ १६	४ १८ ५३ ५१	५ २३ २१ ६	९ ८ ३१ १६	८ १८ ० ४८	−२० ३६	२२ २४	० १९	२५
२६	७ ९ २८ १०	३ ४ ३९ ५०	७ ४ ४ ५५	७ २९ ५२ ४७	४ १९ ० ७	५ २४ २८ ३१	९ ८ ३५ ५९	८ १७ ५७ ३७	−२० ४८	१८ ५३	−१ ३७	२६
२७	७ १० २८ ५२	३ १९ ३ २०	७ ४ ४७ २४	८ ० १२ ३५	४ १९ ६ १४	५ २५ ३६ ९	९ ८ ४० ४६	८ १७ ५४ २६	−२० ५९	१४ १६	−२ ४८	२७
२८	७ ११ २९ ३४	४ ३ १२ ३३	७ ५ २९ ५६	८ ० २३ ५०	४ १९ १२ १२	५ २६ ४४ ०	९ ८ ४५ ३८	८ १७ ५१ १६	−२१ ११	८ ५७	−३ ४८	२८
२९	७ १२ ३० १८	४ १७ ६ ५५	७ ६ १२ २९	८ ० २५ ४८	४ १९ १८ ०	५ २७ ५२ ३	९ ८ ५० ३४	८ १७ ४८ ५	−२१ २१	३ १७	−४ ३२	२९
३०	७ १३ ३१ ०४	५ ० ४५ १२	७ ६ ५५ ७	८ ० १७ ४५	४ १९ २३ ३९	५ २९ ० २०	९ ८ ५५ ३४	८ १७ ४४ ५४	−२१ ३१	−२ २६	−५ १	३०
दिसम्बर १	७ १४ ३१ ५३	५ १४ ९ २	७ ७ ३७ ४८	७ २९ ५९ १	४ १९ २९ ९	६ ० ८ ४७	९ ९ ० ३८	८ १७ ४१ ४३	−२१ ४१	−७ ५५	−५ १२	१ दिसम्बर
२	७ १५ ३२ ४२	६ २७ १८ ३	७ ८ २० ३१	७ २९ २९ २०	४ १९ ३४ २९	६ १ १७ २६	९ ९ ५ ४६	८ १७ ३८ ३३	−२१ ५१	−१२ ५८	−५ ७	२
३	७ १६ ३३ ३४	६ १० १३ ३१	७ ९ ३ १८	७ २८ ४८ ३१	४ १९ ३९ ३९	६ २ २६ १७	९ ९ १० ५९	८ १७ ३५ २२	−२२ ०	−१७ २०	−४ ४६	३
४	७ १७ ३४ २६	६ २२ ५६ ३३	७ ९ ४६ ७	७ २७ ५६ ५७	४ १९ ४४ ३९	६ ३ ३५ १८	९ ९ १६ १५	८ १७ ३२ ११	−२२ ८	−२० ५१	−४ ११	४
५	७ १८ ३५ १९	७ ५ २६ ४५	७ १० २८ ०	७ २६ ५५ २५	४ १९ ४९ २९	६ ४ ४४ २९	९ ९ २१ ३५	८ १७ २९ ०	−२२ १६	−२३ १९	−३ २५	५
६	७ १९ ३६ १५	७ १७ ४५ २२	७ ११ ११ ५५	७ २५ ४५ १६	४ १९ ५४ १०	६ ५ ५३ ५१	९ ९ २६ ५९	८ १७ २५ ४९	−२२ २४	−२४ ३८	−२ ३०	६
७	७ २० ३७ ११	७ २९ ५३ ५३	७ ११ ५४ ५३	७ २४ २८ २०	४ १९ ५८ ४०	६ ७ ३ २२	९ ९ ३२ २७	८ १७ २२ ३९	−२२ ३१	−२४ ५५	−१ २८	७
८	७ २१ ३८ १०	८ ११ ५२ ४६	७ १२ ३७ ५४	७ २३ ७ ५	४ २० २ ०	६ ८ १३ २	९ ९ ३७ ४९	८ १७ १९ २८	−२२ ३८	−२३ ४२	० २३	८
९	७ २२ ३९ ००	८ २३ ४४ ३५	७ १३ २० ५८	७ २१ ४४ ५	४ २० ७ ९	६ ९ २२ २३	९ ९ ४३ ३४	८ १७ १६ १७	−२२ ४५	−२१ ३६	० ४२	९
१०	७ २३ ४० ०२	९ ५ ३२ २८	७ १४ ४ ५	७ २० २२ १४	४ २० ११ ८	६ १० ३२ ५१	९ ९ ४९ १३	८ १७ १३ ६	−२२ ५१	−१८ ३५	१ ४५	१०
११	७ २४ ४१ ०३	९ १७ १८ ५०	७ १४ ४७ १४	७ १९ ४ १७	४ २० १४ ५७	६ ११ ४१ ५७	९ ९ ५४ ५५	८ १७ ९ ५६	−२२ ५६	−१४ ४९	२ ४४	११
१२	७ २५ ४२ ०३	९ २९ ८ ३४	७ १५ ३० २६	७ १७ ५२ ३४	४ २० १८ ३५	६ १२ ५३ १२	९ १० ० ४१	८ १७ ६ ४३	−२३ १	−१० २९	३ ३६	१२
१३	७ २६ ४३ ०४	१० ११ ५ ९	७ १६ १३ ४१	७ १६ ४९ ११	४ २० २२ २	६ १४ ३ ३४	९ १० ६ ३०	८ १७ ३ ३४	−२३ ६	−५ ४२	४ १९	१३
१४	७ २७ ४४ ०५	१० २३ १३ ४८	७ १६ ५६ ५८	७ १५ ५५ ३५	४ २० २५ १८	६ १५ १४ ४	९ १० १२ २२	८ १७ ० २३	−२३ १०	० ३९	४ ५१	१४
१५	७ २८ ४५ ०९	११ ५ ३९ ४८	७ १७ ४० १८	७ १५ १२ ४२	४ २० २८ २४	६ १६ २४ ४२	९ १० १८ १८	८ १६ ५७ १३	−२३ १४	४ ३२	५ ११	१५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१५	७ २८ ४५ ०९	११ ५ ३९ ४८	७ १३ ४० १८	७ १५ १२ ४२	४ २० २८ २४	६ १६ २४ ४२	९ १० १८ १८	८ १६ ५७ १३	−२३ १४	४ ३२	५ ११	१५

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९२ ई०
(१ जनवरी (ई० १९९२) को अयनांश २३°।४५'१०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९९१ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९९१ ई.
दिसम्बर १६	७ २९ ४६ ०७	११ १८ २६ ४१	७ १८ २३ ४१	७ १४ ४० ५३	४ २० ३१ १९	६ १७ ३५ २६	९ १० २४ १६	८ १६ ५४ २	−२३ १७	९ ४१	५ १६	१६ दिसम्बर
१७	८ ० ४० ०९	० १ ३८ २३	७ १९ ७ ६	७ १४ २० १५	४ २० ३४ ३	६ १८ ४६ १८	९ १० ३० १८	८ १६ ५० ५१	−२३ २०	१४ ३३	५ ५	१७
१८	८ १ ४८ १०	० १४ १८ १३	७ १९ ५० ३३	७ १४ १० २१	४ २० ३६ ३५	६ १९ ५७ १६	९ १० ३६ २३	८ १६ ४७ ४०	−२३ २२	१८ ५३	४ ३७	१८
१९	८ २ ४९ १३	० २९ २४ ३७	७ २० ३४ ४	७ १४ १० ४३	४ २० ३८ ५७	६ २१ ८ २१	९ १० ४२ ३१	८ १६ ४४ ३०	−२३ २४	२२ १७	३ ५१	१९
२०	८ ३ ५० १७	१ १३ ५५ ४७	७ २१ १७ ३८	७ १४ २० ३५	४ २० ४१ ७	६ २२ १९ ३३	९ १० ४८ ४२	८ १६ ४१ १९	−२३ २५	२४ २२	२ ४९	२०
२१	८ ४ ५१ १९	१ २८ ४७ ७	७ २२ १ १३	७ १४ ३९ ११	४ २० ४३ ६	६ २३ ३० ४९	९ १० ५४ ५५	८ १६ ३८ ८	−२३ २६	२४ ४८	१ ३४	२१
२२	८ ५ ५२ २४	२ १३ ४९ ५५	७ २२ ४४ ५३	७ १५ ५ ४४	४ २० ४४ ५४	६ २४ ४२ १३	९ ११ १ ११	८ १६ ३४ ५७	−२३ २६	२३ २६	० १२	२२
२३	८ ६ ५३ २९	२ २८ ५६ ३३	७ २३ २८ ३४	७ १५ ३९ २५	४ २० ४६ ३१	६ २५ ५३ ४४	९ ११ ७ ३१	८ १६ ३१ ४६	−२३ २६	२० २२	−१ ११	२३
२४	८ ७ ५४ ३३	३ १३ ५६ ५२	७ २४ १२ १८	७ १६ १९ २७	४ २० ४७ ५६	६ २७ ५ १८	९ ११ १३ ५२	८ १६ २८ ३६	−२३ २६	१५ ५७	−२ २९	२४
२५	८ ८ ५५ ४०	३ २८ ४३ ४२	७ २४ ५६ ६	७ १७ ५ १२	४ २० ४९ ९	६ २८ १६ ५९	९ ११ २० १६	८ १६ २५ २५	−२३ २५	१० ३७	−३ ३५	२५
२६	८ ९ ५६ ४७	४ १३ ११ ५५	७ २५ ३९ ५६	७ १७ ५५ ०	४ २० ५० ११	६ २९ २८ ४७	९ ११ २६ ४३	८ १६ २२ १४	−२३ २३	४ ४९	−४ २७	२६
२७	८ १० ५७ ५३	४ २७ १७ २	७ २६ २३ ४८	७ १८ ५१ १२	४ २० ५१ २	७ ० ४० ३८	९ ११ ३३ १२	८ १६ १९ ३	−२३ २१	−१ ४	−५ १	२७
२८	८ ११ ५९ ०१	५ १० ५८ ४०	७ २७ ७ ४४	७ १९ ५० २३	४ २० ५१ ४१	७ १ ५२ ३७	९ ११ ३९ ४४	८ १६ १५ ५२	−२३ १९	−६ ४४	−५ १७	२८
२९	८ १३ ०० १०	५ २४ १८ १५	७ २७ ५१ ४३	७ २० ५३ ३	४ २० ५२ ८	७ ३ ४ ४०	९ ११ ४६ १८	८ १६ १२ ४२	−२३ १६	−११ ५६	−५ १५	२९
३०	८ १४ १ १८	६ ७ १६ ४६	७ २८ ३५ ४३	७ २१ ५८ ४६	४ २० ५२ २४	७ ४ १६ ४६	९ ११ ५२ ५४	८ १६ ९ ३१	−२३ १३	−१६ २८	−४ ५७	३०
३१	८ १५ २ २९	६ १९ ५७ २८	७ २९ १९ ४८	७ २३ ७ १३	४ २० ५२ २७	७ ५ २८ ०	९ ११ ५९ ३३	८ १६ ६ २०	−२३ ९	−२० ९	−४ २४	३१
जनवरी १	८ १६ ३ ३९	७ २ २३ ४३	८ ० ३ ५५	७ २४ १८ ५	४ २० ५२ २०	७ ६ ४१ १८	९ १२ ६ १३	८ १६ ३ ९	−२३ ५	−२२ ५१	−३ ४०	१ जन १९९२)
(१९९२) २	८ १७ ४ ४९	७ १४ ३७ २०	८ ० ४८ ४	७ २५ ३१ ३	४ २० ५२ ०	७ ७ ५३ ३९	९ १२ १२ ५६	८ १५ ५९ ५९	−२३ ०	−२४ २७	−२ ४६	२
३	८ १८ ६ ००	७ २६ ४१ २३	८ १ ३२ १६	७ २६ ४५ ५६	४ २० ५१ २९	७ ९ ६ ६	९ १२ १९ ४०	८ १५ ५६ ४८	−२२ ५५	−२४ ५१	−१ ४६	३
४	८ १९ ७ ११	८ ८ ३८ ३९	८ २ १६ ३१	७ २८ २ ३१	४ २० ५० ४६	७ १० १८ ३६	९ १२ २६ २७	८ १५ ५३ ३७	−२२ ४९	−२४ ६	० ४१	४
५	८ २० ८ २१	८ २० ३० १६	८ ३ ० ४९	७ २९ २० ३६	४ २० ४९ ५२	७ ११ ३१ १०	९ १२ ३३ १५	८ १५ ५० २६	−२२ ४३	−२२ १६	० २४	५
६	८ २१ ९ ३३	९ २ १९ १४	८ ३ ४५ ९	८ ० ४० ४	४ २० ४८ ४५	७ १२ ४३ ४९	९ १२ ४० ५	८ १५ ४७ १५	−२२ ३६	−१९ २९	१ २९	६
७	८ २२ १० ४४	९ १४ ६ ३८	८ ४ २९ ३२	८ २ ० ४५	४ २० ४७ २७	७ १३ ५६ ३१	९ १२ ४६ ५७	८ १५ ४४ ५	−२२ २९	−१५ ४३	२ २९	७
८	८ २३ ११ ३५	९ २५ ५५ १५	८ ५ १३ ५७	८ ३ २२ ३३	४ २० ४५ ५८	७ १५ ९ १६	९ १२ ५३ ५०	८ १५ ४० ५४	−२२ २२	−११ ४१	३ २४	८
९	८ २४ १३ ०५	१० ७ ४८ ९	८ ५ ५८ २५	८ ४ ४५ २२	४ २० ४४ १७	७ १६ २२ ४	९ १३ ० ४५	८ १५ ३७ ४३	−२२ १४	−७ २	४ ९	९
१०	८ २५ १४ १४	१० १९ ४७ २२	८ ६ ४२ ५५	८ ६ ९ ६	४ २० ४२ २४	७ १७ ३४ ५६	९ १३ ७ ४१	८ १५ ३४ ३२	−२२ ६	−२ ५	४ ४५	१०
११	८ २६ १५ २६	११ १ ५६ ४७	८ ७ २७ २७	८ ७ ३३ ४४	४ २० ४० २०	७ १८ ४७ ५१	९ १३ १४ ३९	८ १५ ३१ २२	−२१ ५७	३ ०	५ ८	११
१२	८ २७ १६ ३२	११ १४ २० ३९	८ ८ १२ २	८ ८ ५९ ८	४ २० ३८ ५	७ २० ० ४८	९ १३ २१ ३८	८ १५ २८ ११	−२१ ४८	८ ४	५ १७	१२
१३	८ २८ १७ ३९	११ २७ १ ५६	८ ८ ५६ ३९	८ १० २५ १८	४ २० ३५ ३८	७ २१ १३ ४८	९ १३ २८ ३८	८ १५ २५ ०	−२१ ३८	१२ ५५	५ ११	१३
१४	८ २९ १८ ४७	० १० ४ ५५	८ ९ ४१ १८	८ ११ ५२ ११	४ २० ३३ ०	७ २२ २६ ५१	९ १३ ३५ ३९	८ १५ २१ ४९	−२१ २८	१७ २०	४ ५०	१४
१५	९ ० १९ ५३	० २३ ३३ २३	८ १० २५ ०	८ १३ १९ ४५	४ २० ३० ११	७ २३ ३९ ५७	९ १३ ४२ ४१	८ १५ १८ ३८	−२१ १८	२१ १	४ १२	१५
१६	९ १ २० ५८	१ ७ २८ ११	८ ११ १० ४४	८ १४ ४७ ५७	४ २० २७ ११	७ २४ ५३ ४	९ १३ ४९ ४५	८ १५ १५ २८	−२१ ७	२३ ३८	३ १८	१६
१७	९ २ २२ ०३	१ २१ ४९ ४७	८ ११ ५५ ३०	८ १६ १६ ४८	४ २० २३ ०	७ २६ ६ १५	९ १३ ५६ ४९	८ १५ १२ १७	−२० ५६	२४ ४९	२ १०	१७
१८	९ ३ २३ ०७	२ ६ ३६ ५	८ १२ ४० १९	८ १७ ४६ १५	४ २० २० ३७	७ २७ १९ २७	९ १४ ३ ५४	८ १५ ९ ६	−२० ४४	२४ १८	० ५२	१८
१९	९ ४ २४ १०	२ २१ ४० १९	८ १३ २५ १०	८ १९ १६ १८	४ २० १७ ५	७ २८ ३२ ४३	९ १४ ११ ०	८ १५ ५ ५५	−२० ३२	२२ २	० ३१	१९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९२ ई०
(१ फरवरी को अयनांश २३°।४५'।६")

तारीख सन् १९९२ ई.	सूर्य ग. अं. क. वि.	चन्द्र ग. अं. क. वि.	मंगल ग. अं. क. वि.	बुध ग. अं. क. वि.	गुरु ग. अं. क. वि.	शुक्र ग. अं. क. वि.	शनि ग. अं. क. वि.	राहु ग. अं. क. वि.	सूर्य क्रां. अं. क.	चन्द्र क्रां. अं. क.	चन्द्रशर अं. क.	तारीख सन् १९९२ ई.
जनवरी २०	९ ५ २५ १४	३ ६ ५४ ५२	८ १४ १० ३	८ २० ४६ ५८	४ २० १३ २१	७ २९ ४६ १	९ १४ १८ ७	८ १५ २ ४५	−२० १९	१८ १०	−१ ५३	२० जनवरी
२१	९ ६ २६ १६	३ २२ १० २८	८ १४ ५४ ५९	८ २२ १८ ११	४ २० ९ २७	८ ० ५९ २०	९ १४ २५ १५	८ १४ ५९ ३४	−२० ७	१३ ५	−३ ६	२१
२२	९ ७ २७ १८	४ ७ १५ ४६	८ १५ ३९ ५७	८ २३ ५० २	४ २० ५ २२	८ २ १२ ४२	९ १४ ३२ २३	८ १४ ५६ २३	−१९ ५३	७ १६	−४ ६	२२
२३	९ ८ २८ २०	४ २२ २ ३२	८ १६ २४ ५८	८ २५ २२ २७	४ २० १ ७	८ ३ २६ ६	९ १४ ३९ ३१	८ १४ ५३ १२	−१९ ४०	१ १०	−४ ४८	२३
२४	९ ९ २९ १९	५ ६ २५ ६	८ १७ ९ ०	८ २६ ५५ २८	४ १९ ५६ ४२	८ ४ ३९ ३२	९ १४ ४६ ४१	८ १४ ५० २	−१९ २६	−४ ४९	−५ १०	२४
२५	९ १० ३० २१	५ २० १९ ३	८ १७ ५५ ५	८ २८ २९ ५	४ १९ ५२ ६	८ ५ ५३ १	९ १४ ५३ ५०	८ १४ ४६ ५१	−१९ १२	−१० २२	−५ १४	२५
२६	९ ११ ३१ २१	६ ३ ४४ ४४	८ १८ ४० १३	९ ० ३ २०	४ १९ ४७ २१	८ ७ ६ ३३	९ १५ १ ०	८ १४ ४३ ४०	−१८ ५७	−१५ १५	−५ ०	२६
२७	९ १२ ३२ २०	६ १६ ४४ ४३	८ १९ २५ २२	९ १ ३८ ९	४ १९ ४२ २६	८ ८ २० ४	९ १५ ८ ११	८ १४ ४० २९	−१८ ४२	−१९ १५	−४ ३०	२७
२८	९ १३ ३३ २०	६ २९ २१ ३१	८ २० १० ३५	९ ३ १३ ३८	४ १९ ३७ २१	८ ९ ३३ ४०	९ १५ १५ २१	८ १४ ३७ १९	−१८ २७	−२२ १४	−३ ४९	२८
२९	९ १४ ३४ १९	७ ११ ३९ ५९	८ २० ५५ ५०	९ ४ ४९ ४७	४ १९ ३२ ७	८ १० ४७ १७	९ १५ २२ ३२	८ १४ ३४ ८	−१८ ११	−२४ ७	−२ ५७	२९
३०	९ १५ ३५ १६	७ २३ ४५ ५	८ २१ ४१ ६	९ ६ २६ ३१	४ १९ २६ ४४	८ १२ ० ५४	९ १५ २९ ४३	८ १४ ३० ५७	−१७ ५५	−२४ ५०	−१ ५९	३०
३१	९ १६ ३६ १४	८ ५ ४० ९	८ २२ २६ २५	९ ८ ३ ५९	४ १९ २१ १२	८ १३ १४ ३५	९ १५ ३६ ५४	८ १४ २७ ४६	−१७ ३९	−२४ २२	० ५६	३१
फरवरी १	९ १७ ३७ ११	८ १७ २९ ३१	८ २३ ११ ४७	९ ९ ४२ ७	४ १९ १५ ३१	८ १४ २८ १७	९ १५ ४४ ५	८ १४ २४ ३५	−१७ २२	−२२ ४९	० ९	१ फरवरी
२	९ १८ ३८ ०७	८ २९ १६ ५९	८ २३ ५७ १०	९ ११ २० ५६	४ १९ ९ ४१	८ १५ ४२ १	९ १५ ५१ १५	८ १४ २१ २५	−१७ ५	−२० १७	१ १३	२
३	९ १९ ३९ ०१	९ ११ ४ २०	८ २४ ४२ ३६	९ १३ ० २६	४ १९ ३ ४३	८ १६ ५५ ४५	९ १५ ५८ २६	८ १४ १८ १४	−१६ ४८	−१६ ५४	२ १३	३
४	९ २० ३९ ५६	९ २२ ५४ १६	८ २५ २८ ३	९ १४ ४० ४२	४ १८ ५७ ३८	८ १८ ९ ३१	९ १६ ५ ३६	८ १४ १५ ३	−१६ ३०	−१२ ५१	३ ८	४
५	९ २१ ४० ४८	१० ४ ४९ ५	८ २६ १३ ३३	९ १६ २१ ४१	४ १८ ५१ २४	८ १९ २३ १८	९ १६ १२ ४६	८ १४ ११ ५२	−१६ १३	−८ १७	३ ५५	५
६	९ २२ ४१ ३९	१० १६ ४९ २७	८ २६ ५९ ४	९ १८ ३ २४	४ १८ ४५ ३	८ २० ३७ ७	९ १६ १९ ५५	८ १४ ८ ४२	−१५ ५४	−३ २४	४ ३२	६
७	९ २३ ४२ २९	१० २८ ५७ २६	८ २७ ४४ ३८	९ १९ ४५ ५४	४ १८ ३८ ३४	८ २१ ५० ५७	९ १६ २७ ४	८ १४ ५ ३१	−१५ ३६	१ ४०	४ ५७	७
८	९ २४ ४३ १७	११ ११ १५ १८	८ २८ ३० १३	९ २१ २९ १०	४ १८ ३१ ५९	८ २३ ४ ४७	९ १६ ३४ १२	८ १४ २ २०	−१५ १७	६ ४४	५ ९	८
९	९ २५ ४४ ०३	११ २३ ४४ १०	८ २९ १५ ५०	९ २३ १३ ११	४ १८ २५ १७	८ २४ १८ ३७	९ १६ ४१ २०	८ १३ ५९ ९	−१४ ५९	११ ३६	५ ७	९
१०	९ २६ ४४ ४४	० ६ २६ ५७	९ ० १ २८	९ २४ ५८ १	४ १८ १८ २८	८ २५ ३२ ३०	९ १६ ४८ २७	८ १३ ५५ ५८	−१४ ३९	१६ ३	४ ४९	१०
११	९ २७ ४५ ३२	० १९ २६ ५८	९ ० ४७ ९	९ २६ ४३ ३८	४ १८ ११ ३३	८ २६ ४६ २३	९ १६ ५५ ३३	८ १३ ५२ ४८	−१४ २०	१९ ५३	४ १७	११
१२	९ २८ ४६ १४	१ २ ४६ ४	९ १ ३२ ५०	९ २८ २९ ०	४ १८ ४ ३३	८ २८ ० १५	९ १७ २ ३८	८ १३ ४९ ३७	−१४ ०	२२ ४७	३ ३०	१२
१३	९ २९ ४६ ५३	१ १६ २७ ४८	९ २ १८ ३४	१० ० १७ १०	४ १७ ५७ २७	८ २९ १४ ९	९ १७ ९ ४३	८ १३ ४६ २६	−१३ ४१	२४ २७	२ २९	१३
१४	१० ० ४७ ३२	२ ० ३२ ३७	९ ३ ४ २०	१० २ ५ ६	४ १७ ५० १५	९ ० २८ ४	९ १७ १६ ४६	८ १३ ४३ १५	−१३ २०	२४ ३८	१ १९	१४
१५	१० १ ४८ ०९	२ १५ ० ४७	९ ३ ५० ७	१० ३ ५३ ४६	४ १७ ४२ ५९	९ १ ४१ ०	९ १७ २३ ४८	८ १३ ४० ५	−१३ ०	२३ १०	० १	१५
१६	१० २ ४८ ४४	२ २९ ५० ९	९ ४ ३५ ५५	१० ५ ४३ ७	४ १७ ३५ ३८	९ २ ५५ ५६	९ १७ ३० ४९	८ १३ ३६ ५४	−१२ ४०	२० ५	−१ १८	१६
१७	१० ३ ४९ १८	३ १४ ५३ ५१	९ ५ २१ ४६	१० ७ ३३ ११	४ १७ २८ १२	९ ४ ९ ५३	९ १७ ३७ ५०	८ १३ ३३ ४३	−१२ १९	१५ ३७	−२ ३३	१७
१८	१० ४ ४९ ४९	४ ० ४ १३	९ ६ ७ ३८	१० ९ २३ ४८	४ १७ २० ४३	९ ५ २३ ४९	९ १७ ४४ ४८	८ १३ ३० ३२	−११ ५८	१० ९	−३ ३८	१८
१९	१० ५ ५० २०	४ १५ ११ ५४	९ ६ ५३ ३१	१० ११ १४ ०	४ १७ १३ १०	९ ६ ३७ ४८	९ १७ ५१ ४६	८ १३ २७ २१	−११ ३७	४ ५	−४ २७	१९
२०	१० ६ ५० ४९	५ ० ५ ३९	९ ७ ३९ २७	१० १३ ६ ३८	४ १७ ५ ३३	९ ७ ५१ ४७	९ १७ ५८ ४२	८ १३ २४ ११	−११ १६	−२ ६	−४ ५७	२०
२१	१० ७ ५१ १७	५ १४ ३७ ४२	९ ८ २५ २३	१० १४ ५८ ३४	४ १६ ५७ ५४	९ ९ ५ ४६	९ १८ ५ ३६	८ १३ २० ०	−१० ५४	−८ १	−५ ६	२१
२२	१० ८ ५१ ४३	५ २८ ४३ ०	९ ९ ११ २२	१० १६ ५० ४५	४ १६ ५० ११	९ १० १९ ४६	९ १८ १२ ३०	८ १३ १७ ४९	−१० ३३	−१३ २१	−४ ५७	२२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९२ ई०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९२ ई०

(१ मार्च को अयनांश २३°।४५'।१०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन १९९१ ई.	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	अ क	अ क	अ क	सन् १९९१ ई.
फरवरी २३	१० ९ ५२ ०८	६ १२ १८ ९	९ ९ ५७ २२	१० १८ ४२ ५६	४ १६ ४२ २६	९ ११ ३३ ४७	९ १८ १९ २१	८ १३ १४ ३८	-१० ११	-१७ ४८	-४ ३१	२३ फरवरी
२४	१० १० ५२ ३३	६ २५ २४ २८	९ १० ४३ २४	१० २० ३६ ५९	४ १६ ३४ ३०	९ १२ ४७ ५०	९ १८ २६ ११	८ १३ ११ २८	-९ ४९	-२१ १४	-३ ५२	२४
२५	१० ११ ५२ ५४	७ ८ ५ ३१	९ ११ २९ ७	१० २२ २६ ३४	४ १६ २६ ४०	९ १४ १ ५०	९ १८ ३२ ५९	८ १३ ८ १७	-९ २७	-२३ ३०	-३ २	२५
२६	१० १२ ५३ १६	७ २० २४ ४९	९ १२ १५ २२	१० २४ १७ ३३	४ १६ १८ ०	९ १५ १५ ५३	९ १८ ३९ ४६	८ १३ ५ ६	-९ ४	-२४ ३४	-२ ५	२६
२७	१० १३ ५३ ३६	८ २ २८ ७	९ १३ १ ३९	१० २६ ७ ३२	४ १६ ११ ८	९ १६ २९ ५७	९ १८ ४६ ३१	८ १३ १ ५५	-८ ४२	-२४ २६	-१ ३	२७
२८	१० १४ ५३ ५३	८ १४ २१ १४	९ १३ ४७ ४६	१० २७ ५६ ८	४ १६ ३ १६	९ १७ ४४ ०	९ १८ ५३ १४	८ १२ ५८ ४४	-८ २०	-२३ ११	० ०	२८
२९	१० १५ ५४ ११	८ २६ ८ १७	९ १४ ३३ ५६	१० २९ ४३ ३	४ १५ ५५ २३	९ १८ ५८ ५	९ १८ ५९ ५५	८ १२ ५५ ३४	-७ ५७	-२० ५६	१ ३	२९
मार्च १	१० १६ ५४ २६	९ ७ ५४ १८	९ १५ २० ६	११ १ २७ ४७	४ १५ ४७ ३०	९ २० १२ १०	९ १९ ६ ३४	८ १२ ५२ २३	-७ ३४	-१७ ४८	२ २	१ मार्च
२	१० १७ ५४ ३९	९ १९ ४३ २५	९ १६ ६ १८	११ ३ ९ ५१	४ १५ ३९ ३८	९ २१ २६ १४	९ १९ १३ १०	८ १२ ४९ १२	-७ ११	-१३ ५७	२ ५७	२
३	१० १८ ५४ ५२	१० १ ३८ ११	९ १६ ५२ ३१	११ ४ ४८ ४७	४ १५ ३१ ४६	९ २२ ४० २०	९ १९ १९ ४५	८ १२ ४६ १	-६ ४८	-९ ३२	३ ४४	३
४	१० १९ ५५ ०२	१० १३ ४० ४४	९ १७ ३८ ४६	११ ६ २३ ०	४ १५ २३ ५५	९ २३ ५४ २७	९ १९ २६ १७	८ १२ ४२ ५१	-६ २५	-४ ४३	४ २२	४
५	१० २० ५५ १०	१० २५ ५३ ९	९ १८ २५ १	११ ७ ५४ ५७	४ १५ १६ ६	९ २५ ८ ३२	९ १९ ३२ ४७	८ १२ ३९ ४०	-६ २	० १९	४ ४८	५
६	१० २१ ५५ १७	११ ८ १५ ८	९ १९ ११ १८	११ ९ २१ ६	४ १५ ८ १८	९ २६ २२ ३८	९ १९ ३९ १५	८ १२ ३६ २९	-५ ३९	५ २४	५ ०	६
७	१० २२ ५५ २१	११ २० ४७ ३९	९ १९ ५७ ३५	११ १० ४१ ५०	४ १५ ० ३२	९ २७ ३६ ४४	९ १९ ४५ ४०	८ १२ ३३ १८	-५ १६	१० २०	४ ५९	७
८	१० २३ ५५ २३	० ३ ३१ ३२	९ २० ४३ ५३	११ ११ ५६ ३८	४ १४ ५२ ४९	९ २८ ५० ५०	९ १९ ५२ ३	८ १२ ३० ८	-४ ५२	१४ ५५	४ ४३	८
९	१० २४ ५५ २३	० १६ २६ १९	९ २१ ३० १३	११ १३ ४ ०	४ १४ ४५ ९	१० ० ४ ५६	९ १९ ५८ २३	८ १२ २६ ५७	-४ २९	१८ ५२	४ १२	९
१०	१० २५ ५५ २१	० २९ ३३ २८	९ २२ १६ ३३	११ १४ ६ २३	४ १४ ३७ ३१	१० १ १९ २	९ २० ४ ४१	८ १२ २३ ४६	-४ ५	२१ ५८	३ २८	१०
११	१० २६ ५५ १६	१ १२ ५४ ५५	९ २३ २ ५३	११ १५ ० २८	४ १४ २९ ५७	१० २ ३३ ६	९ २० १० ५५	८ १२ २० ३५	-३ ४२	२३ ५५	२ ३२	११
१२	१० २७ ५५ १०	१ २६ ३१ १४	९ २३ ४९ १५	११ १५ ४६ ३८	४ १४ २२ २७	१० ३ ४७ १२	९ २० १७ ८	८ १२ १७ २५	-३ १८	२४ ३०	१ २५	१२
१३	१० २८ ५५ ००	२ १० २४ ३४	९ २४ ३५ ३७	११ १६ २४ ४७	४ १४ १५ १	१० ५ १ १८	९ २० २३ १७	८ १२ १४ १४	-२ ५५	२३ ३५	० १३	१३
१४	१० २९ ५४ ४९	२ २४ ३५ ४३	९ २५ २२ ०	११ १६ ५४ ३७	४ १४ ७ ३९	१० ६ १५ २२	९ २० २९ २३	८ १२ ११ ३	-२ ३१	२१ १०	-१ २	१४
१५	११ ० ५४ ३६	३ ९ ३ १२	९ २६ ८ २४	११ १७ १५ ५९	४ १४ ० २२	१० ७ २९ २७	९ २० ३५ २६	८ १२ ७ ५२	-२ ७	१७ २१	-२ १४	१५
१६	११ १ ५४ २०	३ २३ ४४ २६	९ २६ ५४ ४८	११ १७ २८ ४८	४ १३ ५३ १०	१० ८ ४३ ३२	९ २० ४१ २६	८ १२ ४ ४१	-१ ४४	१२ २६	-३ १८	१६
१७	११ २ ५४ ०३	४ ८ ३४ ३२	९ २७ ४१ १४	११ १७ ३३ ८	४ १३ ४६ ३	१० ९ ५७ ३७	९ २० ४७ २४	८ १२ १ ३१	-१ २०	६ ४५	-४ १०	१७
१८	११ ३ ५३ ४२	४ २३ २४ ४८	९ २८ २७ ३९	११ १७ २९ १०	४ १३ ३९ २	१० ११ ११ ४१	९ २० ५३ १८	८ ११ ५८ २०	० ५६	० ४१	-४ ४५	१८
१९	११ ४ ५३ २०	५ ८ ७ १२	९ २९ १४ ५	११ १७ १७ ७	४ १३ ३२ ६	१० १२ २५ ४५	९ २० ५९ ९	८ ११ ५५ ९	० ३३	-५ २०	-५ ०	१९
२०	११ ५ ५२ ५७	५ २२ ३४ ६	१० ० ० ३२	११ १६ ५७ २९	४ १३ २५ १७	१० १३ ३९ ५०	९ २१ ४ ५६	८ ११ ५१ ५८	० ९	-१० ५८	-४ ५६	२०
२१	११ ६ ५२ ३१	६ ६ ३७ ५४	१० ० ४६ ५९	११ १६ ३० ४४	४ १३ १८ ३३	१० १४ ५३ ५३	९ २१ १० ४०	८ ११ ४८ ४८	० १५	-१५ ५३	-४ ३३	२१
२२	११ ७ ५२ ०३	६ २० १५ २३	१० १ ३३ २७	११ १५ ५७ ३५	४ १३ ११ ५७	१० १६ ७ ५८	९ २१ १६ २१	८ ११ ४५ ३७	० ३९	-१९ ४८	-३ ५६	२२
२३	११ ८ ५० ३५	७ ३ २६ १४	१० २ १९ ५६	११ १५ १८ ४८	४ १३ ५ २७	१० १७ २२ ३	९ २१ २१ ५९	८ ११ ४२ २६	१ २	-२२ ३४	-३ ७	२३
२४	११ ९ ५१ ०३	७ १६ ११ ४	१० ३ ६ २४	११ १४ ३५ १९	४ १२ ५९ ४	१० १८ ३६ ५	९ २१ २७ ३३	८ ११ ३९ १५	१ २६	-२४ ५	-२ १०	२४
२५	११ १० ५० ३१	७ २८ ३४ ४	१० ३ ५२ ५४	११ १३ ४८ ६	४ १२ ५२ ४८	१० १९ ५० १०	९ २१ ३३ ३	८ ११ ३६ ४	१ ५०	-२४ २१	-१ ८	२५
२६	११ ११ ४९ ५७	८ १० ४० ३३	१० ४ ३९ २४	११ १२ ५८ १४	४ १२ ४६ ४०	१० २१ ४ १५	९ २१ ३८ ३०	८ ११ ३२ ५४	२ १३	-२३ २६	० ४	२६
२७	११ १२ ४९ २०	८ २२ ३४ ५७	१० ५ २५ ५३	११ १२ ६ ४५	४ १२ ४० ३९	१० २२ १८ १८	९ २१ ४३ ५४	८ ११ २९ ४३	२ ३७	-२१ २८	० ५८	२७
२८	११ १३ ४८ ४३	९ ४ २३ २०	१० ६ १२ २४	११ ११ १४ ४८	४ १२ ३४ ४७	१० २३ ३२ २२	९ २१ ४९ १३	८ ११ २६ ३२	३ ०	-१८ ३६	१ ५८	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९९२ ई०
(१ अप्रैल को अयनांश २३°।४५'।१४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रा.	चन्द्र क्रा.	चन्द्रशर	तारीख
सन १९९२ ई	ग अ क वि	ग अ. क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ क वि	ग अ. क वि	ग अ. क वि.	अ. क.	अं. क.	अ क	सन १९९२ ई.
२९	११ १४ ४८ ०४	८ १६ ११ २८	१० ६ ५८ ५६	११ १० २३ २३	४ १२ २९ ३	१० २४ ४० २७	९ २१ ५४ २९	८ ११ २३ २१	३ २४	-१४ ५९	२ ५३	२९
३०	११ १५ ४७ २१	९ २८ ३ ९	१० ७ ४४ २६	११ ९ ३२ २७	४ १२ २३ २७	१० २६ ० २९	९ २१ ५९ ४१	८ ११ २० ११	३ ४७	-१० ४६	३ ४०	३०
३१	११ १६ ४६ ३९	१० १० ३ २१	१० ८ ३१ ५८	११ ८ ४६ ०	४ १२ १७ ५९	१० २७ १४ ३४	९ २२ ४ ४९	८ ११ १६ ०	४ १०	-६ ६	४ १८	३१
अप्रैल १	११ १७ ४५ ५४	१० २२ १४ ८	१० ९ १८ २९	११ ८ १ ४३	४ १२ १२ ४१	१० २८ २८ ३८	९ २२ ९ ५३	८ ११ १३ ४९	४ ३३	-१ ९	४ ४५	१ अप्रैल
२	११ १८ ४५ ०६	११ ४ ३७ ५३	१० १० ४ ०	११ ७ २१ २०	४ १२ ७ ३१	१० २९ ४२ ३९	९ २२ १४ ५३	८ ११ १० ३८	४ ५६	३ ५६	४ ५८	२
३	११ १९ ४४ १७	११ १७ १५ ५७	१० १० ५१ ३२	११ ६ ४५ २२	४ १२ २ ३१	११ ० ५६ ४३	९ २२ १९ ४०	८ ११ ७ २७	५ २०	८ ५६	४ ५८	३
४	११ २० ४३ २६	० ० ७ ५	१० ११ ३८ ३	११ ६ १४ १७	४ ११ ५७ ४०	११ २ १० ४५	९ २२ २४ ४१	८ ११ ४ १७	५ ४२	१३ ३९	४ ४३	४

ज्योतिष-चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्दर फलित ज्योतिष से सम्बन्धित धनी होने के कुछ योग दिए जाते हैं। उन ग्रहयोगों के आधार पर अपनी ग्रहस्थिति का विचार आप स्वयं कर सकेंगे।

—सम्पादक

धनी होने के योग—

(१) लग्न से २।५।९।१०।११वें भाव में सभी शुभ ग्रह हों तो जातक धनी होता है।

(२) लग्नेश जिस ग्रह के नवांश में हो उस ग्रह के नवांश का स्वामी बलवान हो और वैशेषिकांश स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति धनी होता है।

(३) दशमेश के नवांश का स्वामी वैशेषिकांश में स्थित होकर दूसरे और ग्यारहवें स्थान के स्वामियों से युत् या दृष्ट हो तो व्यक्ति महाधनी होता है।

(४) केन्द्र (१।४।७।१०) स्थानों में शुभ ग्रह हों (या शुभ ह्ष्ट दृष्ट हों) तो महाधनी होता है।

(५) १।२।११ भावों के स्वामी वैशेषिकांश में हो तो महाधनी होता है।

(६) कर्क राशि में बुध (कर्क का बुध किसी भी भाव में हो, पंचम भाव में हो तो अधिक शुभ है) ग्यारहवें भावाव में शनि हो तो व्यक्ति महाधनी होता है।

(७) स्वराशिस्थ शनि पञ्चम या ग्यारहवें भाव में गया हो तो महाधनी होता है।

(८) एकादशस्थ गुरु एवं स्वराशि का सूर्य पंचमस्थ हो तो जातक महाधनी होता है (यह मेष लग्न से ही सम्भव है)।

(९) स्वराशिस्थ गुरु एवं पंचम स्थान में चन्द्रमा हो तो जातक महाधनी होता है। (लग्नस्थ गुरु के होने पर यह योग अधिक बलवान् बनता है।)

(१०) सिंहस्थ सूर्य लग्न में गुरु मंगल से युत हो तो जातक महाधनी होता है।

(११) कर्क लग्न में गुरु चन्द्र योग भी जातक को महाधनी बनाता है।

(१२) स्वराशिस्थ मंगल लग्न में हो, एवं शनि-शुक्र-बुध इन तीनों में से किसी एक से युत हो तो महाधनी होता है।

(१३) स्वराशिस्थ गुरु लग्न में हो एवं चन्द्र मंगल से युत हों तो जातक धनी होता है।

(१४) कन्या लग्नस्थ बुध, शनि-शुक्र से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।

(१५) अपनी राशि का शुक्र लग्न में हो, चन्द्र व सूर्य से दृष्ट हो तो व्यक्ति महाधनी होता है।

(१६) कन्या राशि में शनि-मंगल-राहु एवं शुक्र (ये चारों ग्रह) स्थित हों तो जातक महाधनवान् होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रांति एवं शर की फलादेश में उपयोगिता

[लेखक : शक्तिधर शर्मा]

कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि ग्रहों के क्रांति एवं शरों की फलादेश में क्या उपयोगिता है? अतः हम यहां इस विषय पर विचार पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत करते हैं। हम बहुत वर्षों से ग्रहों के क्रान्ति एवं शर देते रहे हैं। हमारा यह प्रयत्न व्यर्थ न समझा जाए एवं ज्योतिषी लोग इसका उपयोग कर सकें, एतदर्थ हम यहां इनके कुछ उपयोगों का विवेचन कर रहे हैं।

'मेदिनी ज्योतिष' फलित-शास्त्र की वह शाखा है, जिसमें भौगोलिक जलवायु देशों के आपसी सम्बन्ध का विचार होता है। भोगांश एवं शर दोनों ज्ञात होने पर ग्रह की आकाश में स्थिति पूर्णतः मालूम हो जाती है। निरयण भोगांश तो क्रान्तिवृत में पौष्णान्त (रेवत्यन्त) से पश्चिम से पूर्व की ओर ग्रह का अंशात्मक अन्तर होता है और शर ग्रह बिम्ब केन्द्र का क्रान्तिवृत से उत्तर, दक्षिण अन्तर होता है। शर का उपयोग अधिकतर मेदिन ज्योतिष में किया जाता है। यदि दो ग्रहों के भोगांश और शर बराबर (या लगभग बराबर) हो जाए तो उसे 'ग्रह-युति' कहा जाता है। ज्योतिषी लोग फलादेश में, ग्रहों की राशि में युति अथवा अंशात्मक युति का फलादेश शर बिना देखे ही बतला देते हैं जोकि शास्त्र-विरुद्ध है। युतियां ज्योतिष सिद्धान्तानुसार कई प्रकार की होती हैं। उदाहरणार्थ– भेद-युति (आच्छादित-युति), अंशुमर्द-युति, समकल-युति इत्यादि। भेद-युति वह युति है जिसमें एक ग्रह दूसरे को ढक लेता है। सूर्य एवं चन्द्रमा के ग्रहण भेद-युति के ही परिणाम हैं।

अंशामर्द-युति वह होती है जिसमें दोनों ग्रह एक-दूसरों को आच्छादित तो नहीं करते परन्तु इतने पास से गुजरते हैं कि उनकी किरणें आपस में टकराती हैं। समकल-युति से अभिप्राय केवल कलान्त भोगांशों के बराबर होने से है। इनमें ग्रहों की दूरी तो अल्पतम हो जाती है, परन्तु वह एक-दूसरे को आच्छादित तभी करेंगे जबकि उनके शर भी बराबर हो जाएंगे। पृष्ठ १२८ पर दी गई समकल युतियों में शर का विचार नहीं किया गया, अतः ये युतियां ग्रहों की केवल समीप आने की स्थिति को द्योतित करती हैं।

ग्रहों की भेद युति को ज्योतिष ग्रन्थों में ग्रह-युद्ध कहा जाता है। संहिता ग्रन्थों में ग्रहयुद्धों के फलादेशों के विस्तार से विवेचन मिलते हैं। यदि दो ग्रह आपस में युद्ध करते हैं उनमें से जो ग्रह युति के बाद उत्तर की तरफ हो वह विजयी माना जाता है, जो दक्षिण की तरफ हो वह पराजित समझा जाता है। इसके अतिरिक्त ग्रहों के तारा नक्षत्रों से युतियों के फलादेश भी ज्योतिष ग्रन्थों में मिलते हैं। बृहत्संहिता आदि ग्रन्थों में ग्रहों के ताराओं के साथ युतियों के फलादेश भी ग्रह-चाराध्यायों में दिए गए हैं। इन फलादेशों में राजनैतिक, भौगोलिक जलवायु आदि का ही विवेचन किया गया है। आजकल अर्थ ज्योतिष (व्यापारिक तेजी-मन्दी) के विशेषज्ञ भी ग्रहों के शरों से युतियों का विचार करते हुए फलादेश कहते हैं।

इसके अतिरिक्त जातक फलादेश के लिए भी शरों का उपयोग किया जाता है। साधारणतया ज्योतिषी लोग ग्रहों के केवल राशि सम्बन्ध होने से फलादेश कह डालते हैं, वस्तुतः उन्हें फलादेश कहते समय यह विचार लेना चाहिए कि युति केवल समकल युति है या भेद युति इत्यादि। जिस समय ग्रहों का अन्तर अल्पतम होगा, युति का फलादेश अधिकतम होगा। परन्तु यदि भेद युति होगी तो प्रभाव परमाधिक होगा। ज्योतिषी लोग साधारणतया यह विचारते ही नहीं कि ग्रह एक-दूसरे के कितने समीप हैं? ग्रह जितने समीप होंगे उनका उतना ही प्रभाव अधिक होगा। भेद युति तो बहुत कम होती है, परन्तु समकल युति के द्वारा सापेक्ष समीपता का विचार करने में उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

क्रान्ति की उपयोगिता

विषुवांश एवं क्रान्ति (Rights Ascension and Declination) भी ग्रहों की आकाश में स्थिति को पूर्णतया परिभाषित करते हैं। यद्यपि हमारे कंप्यूटर प्रोग्रामों से विषुवांश एवं क्रान्त्यंश दोनों ही गणित होती है, परन्तु हम यहां केवल क्रान्त्यंश ही देते हैं; क्योंकि दैनिक विषुवांश देने के लिए उतने ही पेजों की आवश्यकता होगी जितने कि ग्रहों के भोगांशों के लिए होती है। खगोल में विषुवांश एवं क्रान्ति उसी तरह के नियामक (Co-ordinates) हैं जैसे कि भूगोल में रेखांश एवं अक्षांश। जिस प्रकार अक्षांश भूगोल पर भूमध्य रेखावृत्त (Equator) से उत्तर, दक्षिण अन्तर बतलाते हैं, उसी प्रकार क्रान्ति भी खगोलीय मध्यवृत्त (जोकि भूमध्यवृत्त ही है) से उत्तर, दक्षिण अन्तर बतलाती है। खगोल ज्योतिष में विषुवांशों और भूगोल में रेखांशों के प्रारम्भ बिन्दु में अन्तर है। विषुवांशों का प्रारम्भ वसन्त सम्पात (२१ मार्च को सूर्य की खगोल में स्थिति वाले बिन्दु) से होता है और भौगोलिक रेखाओं का प्रारम्भ आजकल ग्रीनविच से लिया जाता है। इस प्रकार यद्यपि विषुवांशों और रेखांशों में अन्तर है ही, परन्तु क्रान्त्यंश तो अक्षांशों के बिल्कुल सजातीय हैं। यदि किसी आकाशीय पिण्ड के क्रान्त्यंश स्थान विशेष के अक्षांशों के बराबर हों तो वह आकाशीय पिण्ड पृथ्वी की दैनिक अक्ष भ्रमणगति के कारण उस स्थान के बिल्कुल ऊपर से गुजरेगा। इस प्रकार क्रान्त्यंश से यह पता लगेगा कि वह पिण्ड देखने के स्थान से उत्तर की तरफ होगा या दक्षिण की तरफ।

यदि दो ग्रहों के विषुवांश एवं क्रान्त्यंश बराबर हो जाएं तो भी उनकी भेद युति होगी। यद्यपि विषुवांश यहां नहीं दिए गए हैं, फिर भी क्रान्त्यंशों से यह सहज ही जाना जा सकता है कि कौन-सा ग्रह किसी स्थान विशेष के सापेक्ष उत्तर है या दक्षिण। अतः ग्रहयुद्ध विचार में क्रान्त्यंश, शरों की (खासकर स्थान विशेष के सापेक्ष विचार में) अधिक उपयोगी हैं। इस प्रकार क्रान्त्यंशों का उपयोग भी शर के उपयोग की तरह मेदिनी ज्योतिष एवं जातक फलादेश में किया जा सकता है। क्योंकि विषुवांश नहीं दिए गए हैं अतः पहले युति का अनुमान भोगांशों एवं शरों से करें, तदनन्तर क्रान्त्यंशों की अक्षांशों के साथ तुलना करते हुए स्थान सापेक्ष फलादेश का विचार करें। इसके अतिरिक्त क्रान्त्यंशों का एक और विशेष उपयोग है। कोई भी आकाशीय पिण्ड पूर्व क्षितिज में कब उदित होगा और पश्चिम क्षितिज में कब अस्त होगा? यह विषुवांश, क्रान्त्यंश की सहायता से जाना जा सकता है। इस विषय पर पूर्ण विवेचन स्थानाभाव के कारण यहां नहीं दिया जा सकता। ध्यान रहे फलादेश में ग्रह भेद युति आदि का विचार न करना एक अक्षम्य उपेक्षा है। आशा है ज्योतिषी लोग हमारे दिए निर्देशानुसार विचार करने का अभ्यास करेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्तिशर (सं. २०४८ वि.) (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.)

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
१९९१	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.
मार्च २०	२५/१६	२/२	६/४४	०/५८	२०/५	०/४७	१२/१	०/५	-१९/२७	०/१५
२६	२५/२१	१/५९	११/६	२/११	२०/७	०/४७	१४/४४	०/२४	-१९/२०	०/१५
अप्रै. १	२५/२२	१/५६	१३/४१	३/३	२०/७	०/४७	१७/१५	०/४४	-१९/१४	०/१६
७	२५/१९	१/५३	१४/२	३/१३	२०/६	०/४७	१९/३१	१/३	-१९/९	०/१६
१३	२५/१०	१/५०	१२/१५	२/२८	२०/३	०/४६	२१/३०	१/२२	-१९/४	०/१७
१९	२४/५७	१/४८	९/१६	१/०	१९/५८	०/४६	२३/८	१/४०	-१९/१	०/१८
२५	२४/३८	१/४५	६/३७	-०/४०	१९/५२	०/४६	२४/२५	१/५७	-१८/५८	०/१८
मई १	२४/१५	१/४२	५/१८	-२/०	१९/४५	०/४६	२५/१९	२/११	-१८/५६	०/१९
७	२३/४६	१/३९	५/२९	-२/५१	१९/३५	०/४५	२५/४९	२/२३	-१८/५४	०/२०
१३	२३/१२	१/३६	६/५७	-३/१३	१९/२५	०/४५	२५/५४	२/३२	-१८/५४	०/२०
१९	२२/३३	१/३३	९/२३	-३/९	१९/१३	०/४५	२५/३६	२/३८	-१८/५४	०/२१
२५	२१/४९	१/३१	१२/३०	-२/४२	१९/०	०/४५	२४/५६	२/३९	-१८/५६	०/२२
३१	२१/०	१/२८	१६/२	-१/५६	१८/४६	०/४४	२३/५५	२/३६	-१८/५८	०/२३
जू. ६	२०/६	१/२५	१९/३५	०/५७	१८/३०	०/४४	२२/३५	२/२८	-१९/१	०/२३
१२	१९/८	१/२२	२२/३९	०/९	१८/१४	०/४४	२०/५९	२/१५	-१९/५	०/२४
१८	१८/५	१/१९	२४/३१	१/६	१७/५६	०/४४	१९/९	१/५५	-१९/१०	०/२५
२४	१६/५९	१/१७	२४/४६	१/४४	१७/३७	०/४४	१७/१०	१/२९	-१९/१५	०/२५
३०	१५/४८	१/१४	२३/३०	१/५५	१७/१७	०/४४	१५/४	०/५६	-१९/२१	०/२६
जु. ६	१४/३४	१/११	२१/७	१/४१	१६/५६	०/४४	१२/५५	+०/१५	-१९/२७	०/२७
१२	१३/१७	१/८	१८/६	१/७	१६/३४	०/४४	१०/४६	-०/३४	-१९/३३	०/२७
१८	११/५६	१/५	१४/४८	०/१५	१६/११	०/४४	८/४३	-१/३२	-१९/४०	०/२८
२४	१०/३३	१/२	११/३२	०/४९	१५/४८	०/४५	६/५०	-२/३९	-१९/४७	०/२८
३०	९/७	०/५९	८/३७	-२/२	१५/२४	०/४५	५/१५	-३/५३	-१९/५४	०/२९
अग. ५	७/३९	०/५६	६/२७	-३/१६	१४/५९	०/४५	४/५	-५/१२	-२०/०	०/२९
११	६/९	०/५३	५/२९	-४/११	१४/३४	०/४५	३/२७	-६/२९	-२०/७	०/३०
१७	४/३७	०/५०	६/१०	-४/४७	१४/८	०/४६	३/२६	-७/३४	-२०/१३	०/३०
२३	३/४	०/४७	८/२५	-४/१४	१३/४२	०/४६	४/२	-८/१४	-२०/१८	०/३१
२९	१/३०	०/४४	११/७	-२/४३	१३/१६	०/४७	५/५	-८/२४	-२०/२३	०/३१
सित. ४	-०/५	०/४१	१२/४४	-०/५३	१२/५०	०/४७	६/१९	-८/३	-२०/२७	०/३१
१०	-१/४०	०/३८	१२/२४	०/३९	१२/२३	०/४८	७/२८	-७/२०	-२०/३१	०/३२
१६	-३/१६	०/३५	१०/१	१/३४	११/५७	०/४८	८/२३	-६/२४	-२०/३४	०/३२
२२	-४/५१	०/३१	६/१०	१/५१	११/३१	०/४९	८/५८	-५/२३	-२०/३६	०/३२
२८	-६/२५	०/२८	१/३८	१/४०	११/५	०/५०	९/१०	-४/२१	-२०/३८	०/३२

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
१९९१	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.	क्रांति अं. क.	शर अं. क.
अक्तू. ४	-७/५८	०/२५	-३/३	१/१३	१०/४०	०/५१	८/५९	-३/२१	-२०/३८	०/३२
१०	-९/३०	०/२२	-७/३४	०/३७	१०/१५	०/५१	८/२५	-२/२६	-२०/३८	०/३३
१६	-११/०	०/१८	-११/४६	०/४	९/५१	०/५२	७/३१	-१/३४	-२०/३७	०/३३
२२	-१२/२८	०/१५	-१५/३४	-०/४५	९/२८	०/५३	६/१७	-०/४८	-२०/३६	०/३३
२८	-१३/५३	०/११	-१८/५२	-१/२४	९/७	०/५५	४/४६	+०/७	-२०/३३	०/३३
नव. ३	-१५/१४	०/८	-२१/३७	-१/५८	८/४६	०/५६	३/०	०/२९	-२०/३०	०/३३
९	-१६/३२	०/४	-२३/४३	-२/२४	८/२७	०/५७	१/२	१/०	-२०/२६	०/३३
१५	-१७/४५	०/१	-२५/५	-२/३७	८/१०	०/५८	-१/६	१/२६	-२०/२१	०/३३
२१	-१८/५४	-०/३	-२५/३५	-२/३०	७/५४	१/०	-३/२२	१/४६	-२०/१६	०/३४
२७	-१९/५६	-०/६	-२५/८	-१/५०	७/४०	१/१	-५/४१	२/२	-२०/१०	-०/३४
दिस. ३	-२०/५३	-०/१०	-२३/३६	-०/२२	७/२९	१/२	-८/३	२/१३	-२०/३	०/३४
१०	-२१/४३	-०/१४	-२१/३	+१/३६	७/२०	१/४	-१०/२२	२/१९	-१९/५६	०/३४
१५	-२२/२६	-०/१७	-१९/२	२/४७	७/१३	१/६	-१२/३७	२/२२	-१९/४८	०/३४
२१	-२३/२	-०/२१	-१८/५९	२/४६	७/९	१/७	-१४/४५	२/२०	-१९/३९	०/३४
२७	-२३/२९	-०/२५	-२०/१२	२/८	७/७	१/९	-१६/४२	२/१४	-१९/३०	०/३५
जन. २	-२३/४८	-०/२८	-२१/४३	१/१८	७/९	१/११	-१८/२६	२/६	-१९/२१	०/३५
८	-२३/५८	-०/३२	-२२/५७	०/२७	७/१२	१/१२	-१९/५४	१/५४	-१९/११	०/३५
१४	-२३/५९	-०/३६	-२३/३८	०/१९	७/१९	१/१४	-२१/३	१/४१	-१९/१	०/३६
२०	-२३/५१	-०/३९	-२३/३८	०/५९	७/२८	१/१५	-२१/५२	१/२५	-१८/५०	०/३६
२६	-२३/३४	-०/४३	-२२/५१	-१/३२	७/३९	१/१७	-२२/१८	१/८	-१८/३९	०/३६
फर. १	-२३/८	-०/४६	-२१/१४	-१/५४	७/५३	१/१८	-२२/२१	०/५०	-१८/२८	०/३७
७	-२२/३३	-०/५०	-१८/४५	-२/५	८/८	१/१९	-२२/०	०/३२	-१८/१७	०/३७
१३	-२१/४८	-०/५३	-१५/२४	-२/१	८/२५	१/२०	-२१/१५	०/१४	-१८/६	०/३८
१९	-२०/५६	-०/५६	-११/१२	-१/३८	८/४२	१/२१	-२०/८	०/४	-१७/५५	०/३८
२५	-१९/५५	-०/५९	-६/१७	०/५५	९/१	१/२२	-१८/४०	०/२१	-१७/४४	०/३९
मा. ३	-१८/४७	-१/२	-१/४	०/११	९/१९	१/२२	-१६/५२	०/३७	-१७/३३	०/३९
८	-१७/३२	-१/५	३/४०	-१/३२	९/३७	१/२३	-१४/४७	०/५१	-१७/२२	०/४०
१४	-१६/१०	-१/८	६/४७	२/४७	९/५४	१/२३	-१२/२७	-१/३	-१७/१२	०/४१
२०	-१४/४२	-१/१०	७/२६	३/२९	१०/९	१/२३	-९/५५	-१/१३	-१७/३	०/४१
२६	-१३/९	-१/१२	-५/३६	३/११	१०/२३	१/२२	-७/१३	-१/२१	-१६/५३	०/४२
अप्रै. १	-११/३२	-१/१४	२/३०	१/५७	१०/३५	१/२२	-४/२५	-१/२७	-१६/४५	०/४३
७	-९/५१	-१/१६	०/५	०/२२	१०/४५	१/२१	-१/३१	-१/३०	-१६/३७	०/४४
१३	-८/७	-१/१७	-१/१४	-१/३	१०/५३	१/२०	१/२४	-१/३१	-१६/३०	०/४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश (प्लूटो) के निरयण भोगांश

…रीख …९९१		यूरेनस रा.अं.क.	नेपच्यून रा.अं.क.	वेंक. (प्लू.) रा.अं.क.
मार्च	१	८/१९/७	८/२२/२४	६/२६/३८
	१५	८/१९/३५	८/२२/४२	६/२६/३१
…ल	१	८/१९/५७	८/२२/५७	६/२६/१४
	१५	८/२०/५	८/२३/२	६/२५/५६
मई	१	८/२०/१	८/२३/०	६/२५/३०
	१५	८/१९/४७	८/२२/५१	६/२५/७
जून	१	८/१९/२०	८/२२/३४	६/२४/३९
	१५	८/१८/५०	८/२१/१४	६/२४/१९
जुलाई	१	८/१८/१२	८/२१/४९	६/२४/१
	१५	८/१७/३९	८/२१/२६	६/२३/५२
अगस्त	१	८/१७/१	८/२१/०	६/२३/४९
	१५	८/१६/३५	८/२०/४२	६/२३/५४
सित.	१	८/१६/१३	८/२०/२४	६/२४/८
	१५	८/१६/६	८/२०/१६	६/२४/२७
अक्तू.	१	८/१६/९	८/२०/१५	६/२४/५५
	१५	८/१६/२२	८/२०/२०	६/२५/२५
नव.	१	८/१६/५१	८/२०/३६	६/२६/४
	१५	८/१७/२४	८/२०/५३	६/२६/३७
दिस.	१	८/१८/१०	८/२१/२३	६/२७/१६
	१५	८/१८/५६	८/२१/५१	६/२७/४७
जन. १ (१९९२)		८/१९/५६	८/२२/२९	६/२८/२१
	१५	८/२०/४६	८/२३/०	६/२८/४३
फर.	१	८/२१/४५	८/२३/३८	६/२९/२६
	१५	८/२२/२९	८/२४/६	६/२९/११
मार्च	१	८/२३/१०	८/२४/३२	६/२९/१२
	१५	८/२३/४०	८/२४/५१	६/२९/६
अप्रैल	१	८/२४/४	८/२५/६	६/२८/५०
	१५	८/२४/१५	८/२५/१२	६/२८/३२

यूरेनस, नेपच्यून एवं वेंकटेश (प्लूटो) के क्रान्तिशर

(सं. २०४८ वि.) (५ घं. ३० मि, भा. स्टै. टा.)

तारीख (१९९१)		यूरेनस क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	नेपच्यून क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.	वेंक (प्लूटो) क्रान्ति अं. क.	शर अं. क.
मार्च	१	-२३/९	-०/२०	-२१/४१	०/४७	-३/०	१५/२२
अप्रैल	१	-२३/५	-०/२१	-२१/३७	०/४८	-२/४३	१५/३४
मई	१	-२३/५	-०/२२	-२१/३६	०/४८	-२/२७	१५/३४
जून	१	-२३/१०	-०/२२	-२१/३८	०/४९	-२/१७	१५/३१
जुलाई	१	-२३/१७	-०/२३	-२१/४४	०/४९	-२/१८	१५/२८
अग.	१	-२३/२३	-०/२३	-२१/४९	०/४८	-२/३१	१५/१८
सित.	१	-२३/२७	-०/२३	-२१/५४	०/४७	-२/५३	१४/५०
अक्टू.	१	-२३/२७	-०/२२	-२१/५६	०/४६	-३/१८	१४/३०
नवं.	१	-२३/२३	-०/२२	-२१/५५	०/४५	-३/४३	१४/२९
दिसं	१	-२३/१६	-०/२२	-२१/५१	०/४४	-४/१	१४/३०
जनवरी	१ (१९९२)	-२३/६	-०/२२	-२१/४४	०/४४	-४/११	१४/३४
फर.	१	-२२/५५	-०/२२	-२१/३५	०/४४	-४/९	१४/४५
मार्च	१	-२२/४५	-०/२३	-२१/२८	०/४४	-४/०	१५/६
अप्रैल	१	-२२/२९	-०/२४	-२१/२३	०/४४	-३/४३	१५/३६

यूरेनस, नेपच्यून, वेंकटेश के नक्षत्र चरणचार

एवं वक्र-मार्ग (सं. २०४७ वि.)

यूरेनस	नेपच्यून	वेंकटेश
२० अप्रैल को वक्री २ मई को पू.षा. २ में १२ अग. को पू.षा. १ में २२ सित. को मार्गी २६ अक्टू. को पू.षा. २ में २ जन (१९९२) को पू.षा. ३ में ५ मार्च (१९९२) को पू.षा. ४ में	२१ अप्रैल को वक्री २८ सित. को मार्गी २३ जन. (१९९२) को पू.षा. ४ में	२९ जुलाई को मार्ग १६ नवं. को वि. ३ में २६ फर. (१९९२) को वक्री

ग्रहों की समकल युतियाँ

(सं. २०४८ वि.)

युत-ग्रह	तारीख	युत-ग्रह	तारीख
सूर्य-मंगल	७/११/९१	गुरु-शुक्र	१९/६/९१
सूर्य-बुध	१४/४/९१		
,, ,,	१७/६/९१	शुक्र-शनि	२९/२/१९९२ ई.
,, ,,	२१/८/९१	शुक्र-राहु	१/२/१९९२ ई.
,, ,,	३/१०/९१	शुक्र-केतु	२८/५/१९९१
,, ,,	८/१२/९१	शुक्र-यूरे.	६/२/१९९२ ई.
,, ,,	१२/२/१९९२ ई.	शुक्र-नेप.	८/२/१९९२
,, ,,	२६/३/९२	शुक्र-वें.	२४/१२/९१
सूर्य-गुरु	१८/८/९१	शुक्र-यूरे.	२५/११/९१
सूर्य-शुक्र	२२/८/९१	राहु-नेप.	२०/१०/९१
सूर्य-शनि	३०/१/१९९२ ई.		
सूर्य-राहु	१/१/१९९२ ई.		
सूर्य-केतु	१३/७/९१		
सूर्य-यूरेनस	४/१/१९९२ ई.		
सूर्य-नेपच्यून	७/१/१९९२ ई.		
सूर्य-वें	१४/११/९१		
मंगल-बुध	१५/१०/९१		
,, ,,	१३/१२/९१		
,, ,,	११/१/१९९२ ई.		
मंगल-गुरु	१४/६/९१		
मंगल-शुक्र	२३/६/९१		
,, ,,	२६/७/९१		
,, ,,	२२/२/१९९२ ई.		
मंगल-राहु	२१/१/१९९२ ई.		
मंगल-केतु	१३/५/९१		
मंगल-यूरेनस	२८/१/१९९२ ई.		
मंगल-नेपच्यून	१/२/९२ ई.		
मंगल-वें.	१५/११/९१		
बुध-गुरु	२४/८/९१		
बुध-गुरु	१०/९/९१		
बुध-शुक्र	२/९/९१		
बुध-शनि	४/२/१९९२ ई.		
बुध-राहु	१६/१/१९९२ ई.		
बुध-केतु	२८/६/९१		
बुध-यूरेनस	१९/१/१९९२ ई.		
बुध-नेपच्यून	२२/१/१९९२ ई.		
बुध-वेंकटेश	२७/१०/९१		

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार (सं. २०४८ वि.)

सूर्यचार

तारीख सन् १९९१ ई. सूर्य	नक्षत्र चरण राशि चार	तारीख सन् १९९१ सूर्य	नक्षत्र चरण राशि चार	तारीख सन् १९९१ ई. सूर्य	नक्षत्र चरण राशि चार
मार्च १८	उ. भा. १	जून १५	मृग. ३ मिथु.	सितं १४	उ.फा. १
,, २१	,, ,, २	,, १९	,, ४	,, १७	,, २ कन्या
,, २५	,, ,, ३	,, २२	आर्द्रा १	,, २०	,, ३
,, २८	,, ,, ४	,, २६	,, २	,, २४	,, ४
,, ३१	रेवती १	,, २९	,, ३	,, २७	हस्त १
अप्रै. ४	,, २	जुला. ३	,, ४	अक्तू १	,, २
,, ७	,, ३	,, ६	पुन. १	,, ४	,, ३
,, १०	,, ४	,, १०	,, २	,, ७	,, ४
,, १४	अश्वि. १ मेष	,, १३	,, ३	,, ११	चित्रा १
,, १७	,, २	,, १६	,, ४ कर्क	,, १४	,, २
,, २१	,, ३	,, २०	पुष्य १	,, १७	,, ३ तुला
,, २४	,, ४	,, २४	,, २	,, २१	,, ४
,, २८	भरणी १	,, २७	,, ३	,, २४	स्वा १
मई १	,, २	,, ३१	,, ४	,, २७	,, २
,, ४	,, ३	अग. ३	आश्ले. १	,, ३०	,, ३
,, ८	,, ४	,, ६	,, २	नवं. ३	,, ४
,, ११	कृत्ति. १	,, १०	,, ३	,, ६	विशा. १
,, १५	,, २ वृष	,, १३	,, ४	,, १०	,, २
,, १८	,, ३	,, १७	मघा १ सिंह	,, १३	,, ३
,, २२	,, ४	,, २०	,, २	,, १६	,, ४ वृश्चि
,, २५	रोहि. १	,, २४	,, ३	,, २०	अनु. १
,, २९	,, २	,, २७	,, ४	,, २३	,, २
जून १	,, ३	,, ३१	पू.फा. १	,, २६	,, ३
,, ५	,, ४	सित. ३	,, २	,, २९	,, ४
,, ८	मृग. १	,, ७	,, ३	दिसं. ३	ज्येष्ठ १
,, १२	,, २	,, १०	,, ४	,, ६	,, २

तारीख सन् १९९१ ई. सूर्य	नक्षत्र चरण राशि चार	तारीख सन् १९९२	नक्षत्र चरण राशि चार
दिसं. १०	ज्ये. ३	फर. २९	शत. ४
,, १३	,, ४	मार्च ४	पू.भा. १
,, १६	मूल १ धनु	,, ७	,, २
,, १९	,, २	,, १०	,, ३
,, २३	३	,, १४	,, ४ मीन
,, २६	,, ४	,, १७	उ. भा. १
,, २९	पू.षा. १	,, २१	,, २
सन् १९९२ ई.		,, २४	,, ३
जन. १	पू.षा. २	,, २७	,, ४
,, ५	,, ३	,, ३१	रेवती १
,, ८	,, ४	अप्रै. ३	,, २
,, ११	उ.षा. १		
,, १४	,, २		
,, १८	,, ३		
,, २१	,, ४		
,, २४	श्रव. १		
,, २८	,, २		
,, ३१	,, ३		
फर. ३	,, ४		
,, ६	धनि. १		
,, १०	,, २		
,, १३	,, ३ कुम्भ		
,, १६	,, ४		
,, १९	शत. १		
,, २३	,, २		
,, २६	,, ३		

मंगलचार

सन् १९९२ ई.

मार्च २१	मृग. ३ मिथु.
,, २८	,, ४
अप्रै. ३	आर्द्रा १
,, १०	,, २
,, १६	,, ३
,, २२	,, ४
,, २८	पुन. १
मई ४	,, २
,, ९	,, ३
,, १५	,, ४ कर्क
,, २१	पुष्य १
,, २७	,, २
जून. ३	,, ३

तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि चार	तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि चार
जून. ७	पुष्य. ४	अक्तू. २२	स्वा. २
,, १३	आश्ले. १	,, २७	,, ३
,, १८	,, २	नवं. १	,, ४
,, २४	,, ३	,, ५	विशा. १
,, २९	,, ४	,, १०	,, २
जुला. ५	मघा १ सिंह	,, १५	,, ३
,, ११	,, २	,, २०	,, ४ वृश्चि.
,, १६	,, ३	,, २५	अनु. १
,, २१	,, ४	,, २९	,, २
,, २७	पू.फा. १	दिस. ४	,, ३
अग. १	,, २	,, ९	,, ४
,, ६	,, ३	,, १३	ज्ये. १
,, १२	,, ४	,, १८	,, २
,, १७	उ.फा. १	,, २३	,, ३
,, २२	,, २ कन्या	,, २७	,, ४
,, २७	,, ३	,, ३१	मूल १ धनु
सितं २	,, ४	सन् १९९२ ई.	
,, ७	हस्त १	जन. ५	मूल २
,, १२	,, २	,, १०	,, ३
,, १७	,, ३	,, १४	,, ४
,, २२	,, ४	,, १८	पू.षा. १
,, २७	चित्रा १	,, २३	,, २
अक्तू. २	,, २	,, २७	,, ३
,, ७	,, ३ तुला	फर. १	,, ४
,, १२	,, ४	,, ५	उ.षा. १
,, १७	स्वाती १	,, ९	,, २ मकर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार (सं. २०४८ वि.)

मंगलचार सन् १९९२ ई.

तारीख सन् १९९२ ई.	नक्षत्र चरण राशि
फर. १४	उ.षा. ३
.. १८	.. ४
.. २३	श्रव. १
.. २७	.. २
मार्च २	.. ३
.. ७	.. ४
.. ११	धनि. १
.. १५	.. २
.. २०	.. ३ कुम्भ
.. २४	.. ४
.. २८	शत १
अप्रै. २	.. २

बुधचार सन् १९९१ ई.

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मार्च १७	रेव १
.. १९	.. २
.. २१	.. ३
.. २३	.. ४
.. २६	अश्वि १ मेष
.. ३०	.. २
अप्रै. ५	वक्री
.. ११	अश्वि. १
.. १५	रेव ४ मीन
.. २०	.. ३

बुधचार

तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. २८	मार्गी
मई ६	रेव ४
.. १०	आश्वि १ मेष
.. १४	.. २
.. १७	.. ३
.. २०	.. ४
.. २२	भर १
.. २४	.. २
.. २७	.. ३
.. २९	.. ४
.. ३१	कृत्ति १
जून २	.. २ वृष
.. ३	.. ३
.. ५	.. ४
.. ७	रोहि १
.. ८	.. २
.. १०	.. ३
.. १२	.. ४
.. १३	मृग १
.. १५	.. २
.. १६	.. ३ मिथु
.. १८	.. ४
.. १९	आर्द्रा १
.. २१	.. २
.. २२	.. ३
.. २४	.. ४

तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जून २६	पु. फा. १
.. २७	.. २
.. २९	.. ३
जुला. १	.. ४ कर्क
.. २	पुष्य १
.. ४	.. २
.. ६	.. ३
.. ८	.. ४
.. १०	आश्ले १
.. १३	.. २
.. १५	.. ३
.. १८	.. ४
.. २०	मघा १ सिंह
.. २३	.. २
.. २७	.. ३
.. ३१	.. ४
अग. ८	वक्री
.. १४	मघा ३
.. १९	.. २
.. २३	.. १
.. २८	आश्ले. ४ कर्क
.. सितं. १	मार्गी
.. ३	मघा १ सिंह
.. ८	.. २
.. ११	.. ३
.. १३	.. ४

तारीख सन् १९९१	नक्षत्र चरण राशि
सितं. १५	
.. १७	.. २
.. १९	.. ३
.. २१	.. ४
.. २३	उ.फा. १
.. २५	.. २ कन्या
.. २६	.. ३
.. २८	.. ४
.. ३०	हस्त १
अक्तू. २	.. २
.. ४	.. ३
.. ६	.. ४
.. ८	चित्रा १
.. १०	.. .. २
.. १२	.. ३ तुला
.. १४	.. ४
.. १६	स्वा. १
.. १८	.. २
.. २०	.. ३
.. २२	.. ४
.. २४	विशा. १
.. २६	.. २
.. २९	.. ३
.. ३१	.. ४ वृश्चि.
.. नवं २	.. अनु. १
.. ४	.. २

तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि
नव ६	अनु. ३
.. ९	.. ४
.. १२	ज्ये. १
.. १५	.. २
.. १८	.. ३
.. २१	.. ४
.. २६	मूल १ धनु
.. २९	वक्री
.. ३०	ज्ये. ४ वृश्चि.
दिसं. ५	.. ३
.. ७	.. २
.. १०	.. १
.. १३	अनु. ४
.. १९	मार्गी
.. २५	ज्ये. १
.. २८	.. २
.. ३१	.. ३
सन् १९९२ ई.	
जन. ३	ज्ये. ४
.. ५	मूल १ धनु.
.. ८	.. २
.. १०	.. ३
.. १२	.. ४
.. १५	पू.षा. १
.. १७	.. २
.. १९	.. ३

तारीख सन् १९९२ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जन. २१	पू.षा. ४
.. २४	.. उ.षा. १
.. २६	.. २ मकर
.. २८	.. ३
.. ३०	.. ४
फर. १	श्रव १
.. ३	.. २
.. ५	.. ३
.. ७	.. ४
.. ९	धनि. १
.. ११	.. २
.. १३	.. ३
.. १५	.. ४
.. १६	शत. १
.. १८	.. २
.. २०	.. ३
.. २२	.. ४
.. २३	पू.भा १
.. २५	.. २
.. २७	.. ३
.. २९	.. ४ मीन
मार्च २	उ.भा. १
.. ४	.. २
.. ६	.. ३
.. ९	.. ४
.. १४	रेव. १

तारीख सन् १९९२	नक्षत्र चरण राशि
रेव. १७	वक्री
.. २०	उ. भा. ४
.. २५	.. ३
.. २९	२
अप्रै. ३	१

गुरुचार सन् १९९२ ई.

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
मार्च १९	पुष्य २
अप्रै. १	मार्गी २
.. ११	पुष्य ३
मई २०	.. ४
जून ९	आश्ले १
.. २८	.. २
जुला. १४	.. ३
.. ३०	.. ४
अग. १४	मघा १ सिंह
.. २५	.. २
सितं. १४	.. ३
.. ३०	.. ४
अक्तू. १८	पू. फा. १
नव. ६	.. २
दिस. ८	.. ३
.. ३१	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चरण चार (सं. २०४८ वि.)

तारीख सन् १९९२ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जन. २३	पू. फा. २
फर २३	१
मार्च २१	मघा ४

शुक्रचार
सन् १९९१ ई.

तारीख	नक्षत्र
मार्च १९	आश्वि. ३
,, २२	,, ४
,, २५	भर. १
,, २७	,, २
,, ३०	,, ३
अप्रै. २	,, ४
,, ६	कृत्ति. १
,, ७	,, २
,, ११	,, ३
,, १३	,, ४
,, १६	रोहि. १
,, १९	,, २
,, २२	,, ३
,, २५	,, ४
,, २८	मृग १
,, ३०	,, २
मई ३	,, ३ मिथुन
,, ६	,, ४
,, ९	आर्द्रा १
,, १२	,, २
,, १५	,, ३
,, १८	,, ४
मई २१	पुन. १
,, २५	,, २
,, २८	,, ३
,, ३१	,, ४ कर्क
जून ३	पुष्य १
,, ५	,, २
,, ९	,, ३
,, १३	,, ४
,, १७	आश्ले. १
,, २०	,, २
,, २४	,, ३
,, २८	,, ४
जुला. ३	मघा १ सिंह
,, ७	,, २

तारीख १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि
,, १२	,, ३
,, १८	,, ४
,, २९	,, पू.फा. १
अग. १	वक्री
,, ५	मघा ४
,, १५	,, ३
,, २१	,, २
,, २६	,, १
सितं. १	आश्ले. ४ कर्क
,, १५	मार्गी
,, २५	मघा १ सिंह
अक्तू. २	,, २
,, ७	,, ३
,, १२	,, ४
अक्तू. १६	पू.फा. १
,, २०	,, २
,, २४	,, ३
,, २७	,, ४
,, ३१	उ.फा. १
नवं. ३	,, २ कन्या
,, ७	,, ३
,, १०	,, ४
,, १३	हस्त १
,, १६	,, २
,, १९	,, ३
,, २२	,, ४
,, २५	चित्रा १
,, २८	,, २
दिसं. १	,, ३ तुला.
,, ४	,, ४
,, ७	स्वा. १
,, ९	,, २
,, १२	,, ३
,, १५	,, ४
,, १८	विशा. १
,, २१	,, २
,, २४	,, ३
,, २६	,, ४ वृश्चि.
,, २९	अनु. १

तारीख सन् १९९२ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जन. २	अनु. २
,, ४	,, ३
,, ६	,, ४
,, ९	ज्ये. १
,, १२	,, २
,, १५	,, ३
,, १७	,, ४
,, २०	मूल १ धनु
,, २३	,, २
,, २५	,, ३
,, २८	,, ४
,, ३०	पू.षा. १
फर. ३	,, २
,, ५	,, ३
,, ८	,, ४
,, ११	उ.षा. १
,, १३	,, २ मकर
,, १६	,, ३
,, १९	,, ४
,, २२	श्रव. १
,, २४	,, २
,, २७	,, ३
मार्च १	,, ४
,, ३	धनि. १
मार्च ६	धनि. २
,, ८	,, ३ कुम्भ
,, ११	,, ४
,, १४	शत. १
,, १७	,, २
,, १९	,, ३
,, २२	,, ४
,, २५	पू.भा. १
,, २७	,, २
,, ३०	,, ३
अप्रै. २	,, ४ मीन

तारीख सन् १९९१ ई.	नक्षत्र चरण राशि

शनिचार
सन् १९९१ ई.

मई १७	वक्री
जुला. २३	उ.षा ४
सितं. १७	,, ३
अक्तू. ५	मार्गी
,, २२	उ.षा ४
दिसं. ११	श्रव. १

सन् १९९२ ई.

जन. १२	श्रव. २
फर. ९	,, ३
मार्च १०	,, ४

राहुचार सन् १९९१ ई.

अप्रै. १३	पू.षा. १ धनु
जून. १४	पू.षा. ४
अग. १६	,, ३
अक्तू. १८	,, २
दिसं. २०	पू.षा. १

सन् १९९२ ई.

फर. २१	मूल. ४

केतुचार
सन् १९९१ ई.

अप्रै. १३	पुन. ३ मिथु.
जून १४	,, २
अग. १६	,, १
अक्तू. १८	आर्द्रा ४
दिसं. २०	,, ३

सन् १९९२ ई.

फर. २१	आर्द्रा २

ग्रहों के उदयास्त

ग्रह	दिशा उदयास्त	तारीख
मंगल	पश्चिम अस्त	१५-९-९१
,,	पूर्वउदय	४-१-१९९२ ई.
बुध	पश्चिम अस्त	२-४-९१
,,	पूर्व उदित	२२-४-९१
,,	पूर्व अस्त	६-६-९१
,,	पश्चिम उदय	२८-६-९१
,,	पश्चिम अस्त	२४-८-९१
,,	पूर्व उदय	३०-८-९१
,,	पूर्व अस्त	१७-९-९१
,,	पश्चिम उदय	२३-१०-९१
,,	पश्चिम अस्त	२-१२-९१
,,	पूर्व उदय	१३-१२-९१
,,	पूर्व अस्त	२३-१-९२ ई.
,,	पश्चिम उदय	२८-२-९२
,,	पश्चिम अस्त	१८-३-९२
,,	पूर्व उदय	२-४-९२
गुरु	पश्चिम अस्त	५-८-९१
,,	पूर्व उदित	३१-८-९१
शुक्र	पश्चिम अस्त	१२-८-९१
,,	पूर्व उदित	३०-८-९१
शनि	पश्चिम अस्त	१३-१-१९९२ ई.
,,	पूर्व उदय	१६-२-९२

ग्रहों के उदयास्त—ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के हैं। (१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त, (२) सूर्य केन्द्रिक उदयास्त। दैनिक उदयास्त भूभ्रमण के कारण होते हैं। पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य-चन्द्र के समान प्रतिदिन उदित होकर अस्त होता है। सूर्य-चन्द्र के दैनिक-उदयास्त-काल इस पञ्चांग में दिए रहते हैं, अन्य ग्रहों के दैनिक उदयास्त फलित एवं धार्मिक कृत्यों के निरुपयोगी होने से नहीं दिए जाते। सूर्य के समीप हो जाने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है एवं सूर्य से दूर हो जाने पर दृश्य (उदित) हो जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्तण्ड पंचांग में दिये चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त से कुछ प्रमुख शहरों में चन्द्रोदयास्त जानने की विधि

[लेखक—शक्तिधर शर्मा]

इस पंचांग में लग्न सूर्योदयास्तादि के परिवर्तन की सारणियां पिछले समय से दी जाती रही हैं। चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की सारणी इस बार सैद्धान्तिक उपपत्ति से विचार कर बनाई गई है। जो पंचांग प्रेमियों के हितार्थ यहां दी जा रही है। वस्तुतः शुद्ध चन्द्रोदयास्त गणित अपेक्षाकृत कठिन है और यह समझा जाता है कि इसके लिए सूक्ष्म परिणाम देने वाली सारणियां बनाना कठिन है। इस सारणी में विशेषता यह है कि केवल एक फल में ही सभी संस्कार समाविष्ट कर दिये गए हैं, इस प्रकार इसका उपयोग अत्यन्त ही सरल है। आप देखेंगे कि सारणी में उपकरण केवल मात्र चन्द्रक्रांति है—जोकि चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदय व चन्द्रास्त के समय की लेनी होगी। निरयण ग्रह स्पष्टों वाले पृष्ठों पर इसी पंचांग में राहु के भोगांश के बाद सूर्य की क्रांति, तदनन्तर चन्द्रक्रांति एवं चन्द्रशर के कालम हैं जिनसे चन्द्रमा की क्रांति किसी भी अभीष्ट समय के लिए सरलता से ही अनुपात द्वारा जानी जा सकती है। इससे अभीष्ट तारीख के चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त के समय की तात्कालिक चन्द्रक्रांति ज्ञात कर लीजिए। और इसे उपकरण मानकर मद्रास, बंगलौर, कलकत्ता, शिमला, जयपुर, बम्बई व देहली में चन्द्रोदयास्त जानने के लिए निम्नलिखित अनुसार प्रथम या द्वितीय फल ज्ञात करें।

यदि क्रांति धन हो तो (अस्त के लिए प्रथम फल, उदय के लिए द्वितीय फल)।

यदि क्रांति ऋण हो तो (अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथम फल)।

इस फल को चिन्हानुसार उदय या अस्त में जोड़ने-घटाने से अभीष्ट स्थानीय चन्द्रोदयास्त ज्ञात हो जाएगा। इस चन्द्रोदयास्त में कभी ही १ या २ मिनट की अशुद्धि हो सकती है। वस्तुतः इस सारणी से प्राप्त परिणाम काफी सूक्ष्म होंगे। चन्द्रोदयास्त गणित में विषुवकाल एवं क्रांति से असकृत्कर्म करना पड़ता है। इस कठिन परिश्रम के बिना ही पर्याप्त सूक्ष्म परिणाम इस एकमात्र सारणी की सहायता से सहज ही प्राप्त होंगे। नीचे उदाहरणों से यह प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी।

कल्पना करो कि हमें तारीख २५ अगस्त १९८७ को चन्द्रास्त का ज्ञान कलकत्ता के लिए करना है। २५ अगस्त को चण्डीगढ़ीय चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. पर है। इस दिन चन्द्रक्रांति तथा २६ अगस्त को भी इसके मान निम्नलिखित हैं—

२५ अगस्त १९८७ को चन्द्रक्रांति =+ ११°।६'
२६ अगस्त १९८७ को चन्द्र क्रांति =+ ५°।२९'

ये दोनों प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा. की हैं। क्योंकि चण्डीगढ़ में चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. का है तो हमें इस समय की चन्द्रक्रांति जानने के लिए अनुपात करना होगा।

यह स्पष्ट है कि एक दिन में चन्द्रक्रांति की गति =११°।६'−५।२९=५°।३७' है। हमारा अभीष्ट समय १९ घं. ३१ मि. का ५ घं. ३० मि. से अन्तर १२ घं. १ मि. आया। इससे क्रांति गति अनुपात करने पर अनुपात फल =२°।४८' आया। क्योंकि २५ के बाद २६ अगस्त को क्रांति घटी है अतः इसे ११°।६' में से घटाने पर तात्कालिक चन्द्रक्रांति =+८°।१८' प्राप्त हुई। इसके अंश मात्र ही सारणी का फल प्राप्त करने के लिए पर्याप्त होंगे। अतः चन्द्रक्रांति ८° के सम्मुख कलकत्ता के नीचे हमें प्रथम फल प्राप्त करना होगा (क्योंकि क्रांति धन है।) सारणी में देखने से यह फल—५४ मिनट प्राप्त हुआ। अतः १९ घं. ३१ मि. से ५४ मिनट घटाने पर १८ घं. ३७ मि. भा. स्टैं. टा. चन्द्रास्त का समय आया। यदि चन्द्रोदय ज्ञात करना होता तो द्वितीयफल लेना होता। परन्तु शुक्ल पक्ष होने से इस दिन पंचांग में चन्द्रोदय नहीं दिया अतः चन्द्रोदय के उदाहरण के रूप में हम यहां ता. २४ अगस्त १९८७ के दिन बम्बई में चन्द्रोदय ज्ञात करेंगे। इस दिन चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय =५ घं. २९ मि. इस समय की क्रांति १६°।१५' है। (यहां अनुपात करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि चन्द्रक्रांति ५ घं. ३० मि. की ही है।) अतः १६° के आगे सारणी में बम्बई के कालम में से हमें द्वितीय फल लेना होगा (क्योंकि क्रांति धन है।) सारणी से देखने पर द्वितीय फल +३४ मि. प्राप्त हुआ अतः ५ घं. २९ मि. में से ३४ मिनट जोड़ने पर इस दिन बम्बई में चन्द्रोदय ६ घं. ३ मिनट आया।

स्थानीय चन्द्रोदयास्त का ज्ञान कृष्ण जन्माष्टमी आदि पर्वों तथा करक चतुर्थी आदि व्रतों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। चण्डीगढ़ से दूर के नगरों में भी मार्तण्ड पंचांग की उपयोगिता जनता को इन व्रत-पर्वों के लिए अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगी ऐसी आशा करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रोदयास्त-परिवर्तन-सारिणी

चन्द्र-क्रान्ति अंश	कलकत्ता प्रथम फल मिनट	कलकत्ता द्वितीय फल मिनट	बम्बई प्रथम फल मिनट	बम्बई द्वितीय फल मिनट	मद्रास प्रथम फल मिनट	मद्रास द्वितीय फल मिनट	बंगलौर प्रथम फल मिनट	बंगलौर द्वितीय फल मिनट	दिल्ली प्रथम फल मिनट	दिल्ली द्वितीय फल मिनट	जयपुर प्रथम फल मिनट	जयपुर द्वितीय फल मिनट	शिमला प्रथम फल मिनट	शिमला द्वितीय फल मिनट
०	—४८	—४८	+१७	+१७	—१४	—१४	— ३	— ३	—१	—१	+४	+ ४	—१	—१
१	—४९	—४८	+१६	+१८	—१५	—१२	— ५	— २	—१	—१	+४	+ ४	—१	—२
२	—५०	—४७	+१४	+१९	—१७	—११	— ६	०	—२	—१	+३	+ ५	—१	—२
३	—५०	—४७	+१३	+२०	—१९	— ९	— ७	+ १	—२	—१	+३	+ ५	—१	—२
४	—५१	—४५	+१२	+२१	—२१	— ८	— ९	+ ३	—२	०	+३	+ ५	—१	—२
५	—५२	—४४	+११	+२२	—२२	— ६	—१०	+ ४	—२	०	+२	+ ६	—१	—२
६	—५३	—४३	+१०	+२३	—२३	— ५	—१२	+ ६	—३	०	+२	+ ६	—१	—२
७	—५३	—४२	+ ९	+२४	—२५	— ३	—१३	+ ७	—३	०	+२	+ ६	—१	—२
८	—५४	—४१	+ ८	+२५	—२६	— २	—१५	+ ९	—३	०	+१	+ ७	—१	—२
९	—५५	—४१	+ ७	+२६	—२८	— १	—१७	+१०	—३	०	+१	+ ७	—१	—२
१०	—५५	—४०	+ ६	+२७	—३०	+ १	—१९	+१२	—३	+१	०	+ ८	—१	—२
११	—५६	—३९	+ ५	+२८	—३१	+ ३	—२०	+१३	—४	+१	०	+ ८	—१	—२
१२	—५७	—३८	+ ४	+२९	—३२	+ ४	—२१	+१५	—४	+१	०	+ ८	—१	—२
१३	—५८	—३८	+ ३	+३०	—३४	+ ६	—२३	+१७	—४	+१	—१	+ ९	—१	—२
१४	—५८	—३७	+ १	+३१	—३६	+ ७	—२५	+१९	—४	+१	—१	+ ९	—१	—२
१५	—५९	—३६	०	+३२	—३७	+ ९	—२६	+२०	—४	+२	—१	+ ९	—१	—२
१६	—६०	—३५	— १	+३४	—३९	+१०	—२८	+२२	—५	+२	—२	+१०	—१	—२
१७	—६१	—३४	— २	+३५	—४०	+१२	—३०	+२४	—५	+२	—२	+१०	—१	—२
१८	—६२	—३४	— ३	+३६	—४२	+१४	—३१	+२५	—५	+२	—३	+११	—१	—२
१९	—६३	—३३	— ४	+३७	—४४	+१६	—३३	+२७	—५	+३	—३	+११	—१	—२
२०	—६३	—३२	— ५	+३८	—४६	+१८	—३५	+२९	—६	+३	—३	+११	—१	—२
२१	—६४	—३१	— ७	+३९	—४८	+२०	—३६	+३०	—६	+३	—४	+१२	—१	—२
२२	—६५	—३०	— ८	+४०	—५०	+२१	—३८	+३२	—६	+३	—४	+१२	—१	—२
२३	—६६	—२९	— ९	+४२	—५१	+२३	—४०	+३४	—६	+४	—५	+१३	—१	—२
२४	—६७	—२८	—१०	+४३	—५३	+२५	—४२	+३६	—६	+४	—५	+१३	०	—३
२५	—६८	—२७	—१२	+४४	—५५	+२७	—४४	+३७	—७	+४	—६	+१४	०	—३
२६	—६९	—२६	—१३	+४६	—५७	+२९	—४६	+३९	—७	+४	—६	+१४	०	—३
२७	—७०	—२६	—१५	+४८	—५९	+३१	—४८	+४१	—७	+५	—७	+१५	०	—३
२८	—७१	—२४	—१७	+५०	—६१	+३३	—५०	+४३	—८	+५	—७	+१६	०	—३
२९	—७२	—२३	—१८	+५१	—६३	+३५	—५२	+४५	—८	+५	—८	+१७	०	—३
३०	—७३	—२३	—२०	+५२	—६५	+३७	—५५	+४८	—८	+६	—८	+१७	०	—३

यदि चन्द्र क्रान्ति धन हो तो अस्त के लिये प्रथम फल, उदय के लिए द्वितीय फल लें, यदि चन्द्र-क्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथम फल लें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यदि चन्द्र क्रान्ति धन हो तो अस्त के लिये [illegible] क्रान्ति ऋण हो तो अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथम फल लें।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) वि. सं. २०४८

ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.
मार्च १७	१	१९/४४	मार्च ३१	१	१९/५४	अप्रै १५	१	१९/४०	अप्रै २९	१	१९/४२	मई १५	१	२०/५१	मई २९	१	२०/२२	जून १३	१	२०/३७	जून २८	१	२०/३१	जुला १२	१	२०/३
१८	२	२०/४८	अप्रै १	२	२०/५४	१६	२	२०/५०	३०	२	२०/२१	१६	३	२१/५४	३०	२	२१/९	१४	२	२१/२८	२९	२	२१/६	१३	२	२०/४५
१९	३	२१/५५	२	३	२१/५३	१७	३	२१/५९	मई १	३	२१/३५	१७	४	२२/४८	३१	३	२१/५२	१५	३	२२/१२	३०	३	२१/३९	१४	३	२१/२२
२०	४	२३/४	३	४	२२/५९	१८	४	२३/४	२	३	२२/२६	१८	५	२३/३५	जून १	४	२२/३१	१६	५	२२/५०	जुला १	४	२२/८	१५	४	२१/५६
२१	५	— —	४	५	२३/५६	१९	५	— —	३	४	२३/२१	१९	६	— —	२	५	२३/५	१७	६	२३/२५	२	५	२२/३७	१६	५	२२/२८
२२	७	०/११	५	६	— —	२०	६	०/३	४	५	२३/५५	२०	७	०/१६	३	६	२३/३६	१८	७	२३/५७	३	६	२३/५	१७	६	२३/१
२३	८	१/१३	६	७	०/३६	२१	७	०/५६	५	६	— —	२१	८	०/५१	४	६	०/७	१९	८	— —	४	७	२३/३६	१८	७	२३/३५
२४	९	२/८	७	८	१/१८	२२	९	१/३९	६	७	०/३२	२२	९	१/२५	५	७	— —	२०	९	०/२८	५	८	— —	१९	८	— —
२५	१०	२/५५	८	९	१/५८	२३	१०	२/१६	७	८	१/५	२३	१०	१/५६	६	८	०/३५	२१	१०	०/५९	६	९	०/११	२०	९	०/१२
२६	११	३/३८	९	१०	२/१७	२४	११	२/४९	८	९	१/३७	२४	११	२/२७	७	९	१/६	२२	११	१/३४	७	१०	०/४५	२१	१०	०/४८
२७	१२	४/१५	१०	११	३/२	२५	१२	३/५०	९	१०	२/७	२५	१२	२/५६	८	१०	१/३७	२३	१२	२/११	८	११	१/३२	२२	११	१/३०
२८	१३	४/४८	११	१२	३/३९	२६	१३	३/५९	१०	११	२/३६	२६	१३	३/३०	९	११	२/१५	२४	१३	२/५२	९	१२	२/२७	२३	१२	२/२१
२९	१४	५/२१	१२	१३	४/८	२७	१४	४/२८	११	१२	३/८	२७	१४	४/८	१०	१३	२/५८	२५	१४	३/३८	१०	१३	३/३१	२४	१३	३/१३
३०	१५	५/५३	१३	१४	[illegible]	२८	१५	४/५५	१२	१३	३/४०	२८	१५	४/२९	११	१४	३/४०	२६	१४	४/२८	११	३०	४/१५	२५	१४	४/७
			१४	३०	५/–				१३	१४	४/२३				१२	३०	४/४१	२७	१५	५/१३				२६	१५	५/०
									१४	३०	५/६															

ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रास्त घं. मि.	ता. १९९१ ई.	तिथि	चन्द्रोदय घं. मि.
जुला २७	१	१९/४१	अग ११	२	१९/४१	अग २६	१	१९/१३	सित ९	१	१८/५२	सित २४	१	१८/१५	अक्तू ८	१	१७/५८	अक्तू २४	१	१८/४	नव ७	१	१७/५४	नव २२	१	१७/३५
२८	२	२०/१२	१२	३	२०/२५	२७	२	१९/४४	१०	२	१९/२८	२५	२	१८/५०	९	२	१८/३६	२५	२	१८/५५	८	२	१८/४२	२३	२	१८/३९
२९	३	२०/४१	१३	४	२०/५६	२८	३	२०/१६	११	३	२०/४	२६	३	१९/४३	१०	३	१९/१७	२६	३	१९/५२	९	३	१९/३३	२४	३	१९/४७
३०	४	२१/१०	१४	५	२१/३०	२९	४	२०/४६	१२	४	२०/४३	२७	४	२०/१४	११	४	२०/०	२७	४	२०/५६	१०	४	२०/२८	२५	४	२०/५७
३१	४	२१/३८	१५	६	२२/७	३०	५	२१/२१	१३	५	२१/२२	२८	५	२०/५८	१२	५	२०/४९	२८	६	२१/५८	११	५	२१/२२	२६	५	२२/७
अग १	५	२२/११	१६	७	२२/४६	३१	६	२२/१०	१४	६	२२/८	२९	६	२१/५७	१३	६	२१/४१	२९	७	२१/६	१२	६	२२/१४	२७	६	२३/१२
२	६	२२/४४	१७	८	२३/२९	सित १	७	२३/४	१५	७	२२/५८	३०	७	२३/०	१४	६	२२/३५	३०	८	— —	१३	७	२३/९	२८	७	— —
३	८	२३/२६	१८	९	— —	२	८	२४/४	१६	८	२३/५१	अक्तू १	८	— —	१५	७	२३/३०	३१	९	०/१२	१४	८	२४/३	२९	८	०/१५
४	९	— —	१९	१०	०/१६	३	९	१/१	१७	९	— —	२	९	०/७	१६	८	— —	नव १	१०	१/१९	१५	८	— —	३०	१०	१/१६
५	१०	०/१६	२०	११	१/७	४	१०	१/११	१८	१०	०/४४	३	१०	१/१५	१७	९	०/२५	२	११	२/२१	१६	९	१/०	दिस १	११	२/१८
६	११	१/१४	२१	११	१/५७	५	१२	२/१०	१९	११	१/३९	४	११	२/२९	१८	१०	१/२१	३	१२	३/२२	१७	१०	१/५५	२	१२	३/१८
७	१२	२/१२	२२	१२	२/५३	६	१३	३/२४	२०	१२	२/३४	५	१२	३/३६	१९	११	२/१६	४	१३	४/२३	१८	११	२/४३	३	१३	४/१८
८	१३	३/२३	२३	१३	३/५९	७	१४	४/३३	२१	१३	३/३१	६	१४	४/२९	२०	१२	३/१२	५	१४	५/२४	१९	१२	३/४३	४	१४	५/१७
९	१४	४/३५	२४	१४	४/४४	८	३०	५/३	२२	१४	४/४३	७	३०	५/५४	२१	१३	४/९	६	३०	६/२७	२०	१३	४/४३	५	१४	६/१४
१०	३०	५/४७	२५	१५	५/४०				२३	१५	५/२५				२२	१४	५/८				२१	१४	६/४	६	३०	७/१३
															२३	१५	६/१२									

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.) वि. सं. २०४८

ता.	ति	चन्द्रास्त	ता.	ति	चन्द्रोदय	ता.	ति	चन्द्रास्त	ता.	ति	चन्द्रोदय
१९९१ ई.	मार्ग शुक्ल	घं.मि.	१९९१ ई.	पौष कृष्ण	घं.मि.	१९९२ ई.	पौष शुक्ल	घं.मि.	१९९२ ई.	माघ कृष्ण	घं.मि.
दिस ७	१	१७/१६	दिस २२	१	१८/३५	जन ५	१	१७/५९	जन. २०	११	१८/३१
८	२	१९/१०	२३	२	१९/४६	६	२	१८/५२	२१	२	१९/४३
९	३	२०/५	२४	४	२०/४६	७	२	१९/५१	२२	३	२०/५१
१०	४	२१/१	२५	५	२२/२	८	३	२०/४९	२३	४	२१/५७
११	५	२१/५५	२६	६	२३/६	९	४	२१/५५	२४	५	२३/१
१२	६	२२/४८	२७	७	— —	१०	५	२२/३४	२५	६	— —
१३	७	२३/४२	२८	८	०/७	११	६	२३/२४	२६	७	०/३
१४	८	— —	२९	९	१/१४	१२	७	— —	२७	८	१/५
१५	९	०/३९	३०	१०	२/१३	१३	८	०/२३	२८	९	२/४
१६	१०	१/२६	३१	११	३/१२	१४	९	१/२३	२९	१०	३/१
१७	११	२/३७	जन. १	१२	४/१०	१५	१०	२/२५	३०	११	३/५४
१८	१२	३/४१	१९९२ ई. २	१३	५/६	१६	११	३/३१	३१	१२	४/४३
१९	१३	४/४८	३	१४	५/५८	१७	१२	४/३५	फर. १	१३	५/२८
२०	१४	५/५५	४	३०	६/४६	१८	१३	५/३९	२	१४	६/७
२१	१५	७/१				१९	१५	६/३६	३	३०	६/४२

ता.	ति	चन्द्रास्त	ता.	ति	चन्द्रोदय	ता.	ति	चन्द्रास्त	ता.		चन्द्रोदय
१९९२ ई.		घं.मि.	१९९२ ई.	फाल्गु. कृष्ण	घं.मि.	१९९२ ई.	फाल्गु. शुक्ल		१९९२ ई.	चैत्र कृष्ण	घं.मि.
फर. ४	१	१८/३८	फर. १९	१	१०/३४	मार्च. ५	१	१९/१६	मार्च १९	१	१९/२४
५	२	१९/३२	२०	३	२०/४१	६	२	२०/११	२०	२	२०/३०
६	३	२०/२५	२१	४	२१/४६	७	३	२१/९	२१	३	२१/३४
७	४	२१/२१	२२	५	२२/५०	८	४	२२/४	२२	४	२२/३७
८	४	२२/१६	२३	६	२३/५२	९	५	२३/१०	२३	५	२३/३६
९	५	२३/११	२४	७	---	१०	६	---	२४	६	---
१०	६	--	२५	८	०/५२	११	७	०/१२	२५	७	०/३१
११	७	०/१२	२६	९	१/४७	१२	८	१/१२	२६	८	१/१९
१२	८	१/१७	२७	१०	२/३९	१३	९	२/९	२७	९	२/३
१३	९	२/२०	२८	११	३/२५	१४	१०	३/१	२८	१०	२/४१
१४	११	३/२२	२९	११	४/६	१५	११	३/४३	२९	११	३/१६
१५	१२	४/१९	मार्च १	१२	४/४३	१६	१२	४/३१	३०	१२	३/४८
१६	१३	५/११	२	१३	५/१६	१७	१४	५/९	३१	१२	४/१८
१७	१४	५/५७	३	१४	५/४७	१८	१५	५/४५	अप्रै. १	१३	४/४७
१८	१५	६/३८	४	३०	६/१७				२	१४	५/१७
									३	३०	५/४८

(उ–उत्तर श्रृङ्ग) अक्षांश भेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें एवं उन्नत श्रृङ्ग की दिशा तथा उसके लगभग अंश (द–दक्षिण श्रृङ्ग) (सं. २०४८ वि.)

	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्गशीर्ष		पौष		माघ		फाल्गुन	
← अक्षांश	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९१ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९२ ई.	उन्नत श्रृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९९२ ई.	उन्नत श्रृङ्ग
	मार्च	अंश	अप्रै.	अंश	मई	अंश	जून	अंश	जुलाई	अंश	अगस्त	अंश	सित	अंश	अक्टू.	अंश	नवम्बर	अंश	दिस	अंश	जन.	अंश	फर.	अंश
५°	१७	द. ३७	१६	द. २४	१५	द. २६	१३	द. १	१३	उ. १३	११	उ. २५	१०	उ. ३१	९	उ. ४०	८	उ. ४१	७	उ. २०	६	द. ६	५	द. २३
१०°	१७	द. ३२	१६	द. १९	१५	द. ३१	१३	उ. ५	१३	उ. १८	११	उ. ३०	१०	उ. ३६	९	उ. ४५	८	उ. ४६	७	उ. २५	६	द. १	५	द. १८
१५°	१७	द. २७	१६	द. १४	१५	द. १६	१३	उ. १०	१३	उ. २३	११	उ. ३५	१०	उ. ४१	९	उ. ५०	८	उ. ५१	७	उ. ३०	६	उ. ५	५	द. १३
२०°	१७	द. २२	१६	द. ९	१५	द. १२	१३	उ. १५	१३	उ. २८	११	उ. ४०	१०	उ. ४६	९	उ. ५५	८	उ. ५६	७	उ. ३५	६	उ. १०	५	द. ८
२५°	१७	द. १७	१६	द. ४	१५	द. ६	१३	उ. १९	१३	उ. ३३	११	उ. ४५	१०	उ. ५१	९	उ. ५९	८	उ. ६१	७	उ. ४०	६	उ. १५	५	द. ३
३०°	१७	द. १२	१६	उ. ७	१५	उ. १	१३	उ. २४	१३	उ. ३८	११	उ. ५०	१०	उ. ५६	९	उ. ६४	८	उ. ६६	७	उ. ४५	६	उ. २०	५	उ. २
३५°	१७	द. ७	१६	उ. १२	१५	उ. ५	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उ. ७१	७	उ. ५०	७	उ. २५	६	उ. ७

CC-0 In Public Domain: Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३५°	१७	ध. ७	१६	उ. १२	१५	उ. ५	१३	उ. २९	१३	उ. ४३	११	उ. ५५	१०	उ. ६१	९	उ. ६९	८	उ. ७१	७	उ. ४०	७	उ. २५	६	उ. ७

दैनिक लग्नसारणी से लग्न ज्ञान

आगे दी गई दैनिक लग्नसारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (U.T.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इससे गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाइन से दाईं ओर छपे घं.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रैल के आगे धनु से मीन तक के घं.मि. १४ अप्रैल के हैं।

अयनचलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्तिकालों में प्रतिवर्ष थोड़ी-थोड़ी स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्नसमाप्तिकाल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्तिकाल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहले ‡ ऐसा और दूसरे के पहले * ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लिए तथा * इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार २९ फरवरी से ३१ दिसम्बर तक के लिए है। २९ फरवरी के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फरवरी को प्रयोग में लाइए।

यहाँ 'वार्षिकसंस्कार-कोष्ठक' द्वारा शुद्ध लग्न-समाप्तिकाल जानने के उदाहरण देते हैं—

(१) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुन लग्न का प्रारम्भ काल (दूसरे शब्दों में वृष लग्न का समाप्ति काल) बतलाइए?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रैल को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे +२ मिनट लिखा है। अतः ९ घं. ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(२) सन् १९७२ को १ जनवरी को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जनवरी को मकर का समाप्ति काल ९ घं. ५७ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहले बताया गया है कि ‡ इस चिह्न वाला संस्कार १ जनवरी स २८ फरवरी तक के लिए है। ‡ इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट दिए हैं। इन्हें चिह्नानुसार ९ घं. ५७ मिनट में जोड़ने पर १० घं. ० मिनट मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(३) २९ फरवरी सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में २९ फरवरी नहीं है, इसके लिए २८ फरवरी को प्रयोग में लाएंगे। २८ फरवरी के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घं. ३४ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में * इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे —१ मिनट लिखा है। इसे चिह्नानुसार ७ घं. ३४ मि. में से घटाने पर ७ घं. ३३ मिनट कुम्भ का सूक्ष्म समाप्ति-काल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९५७	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९८७	+२	−२	+३	+३	+२	+२	+२
‡ १९८८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८८	−१	−१	−०	−०	−१	−१	−१
१९८९	०	०	+१	+१	०	०	०
१९९०	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९९१	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" मेरे "ज्ञातकभास्कर" के लग्न प्रकरण में दिए गए एक बड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९०० से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए "ज्ञातकभास्कर" में एक अद्भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्नसारणी चण्डीगढ़ (U.T.) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचांग में आगे एक सारणी दी गई है उसकी सहायता से भारत के प्रसिद्ध ६५ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

वैशाख

अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल १३	१	७।३६	९।३०	११।४५	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
१४	२	७।३२	९।२६	११।४१	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५५	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१५	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई १	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३१	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३२	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३६	१।१८	२।४३	४। ५
१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३२	१।१४	२।३९	४। १
१४	[illegible]	५।३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई १४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
२४	११	६।४९	९। ३	११।२६	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून १	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
१२	३०	५।३४	७।४८	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
१३	३१	५।३०	७।४४	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
१४	३२	५।२६											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

मास	अंग्रेजी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.
जून	१४	१	७।४१	१०।१२	१२।२३	१४।४१	१७। २	१९।२२	२१।२७	२३। ८	०।३३	१।५५	३।२८	५।२३
	१५	२	७।३७	९।५९	१२।१९	१४।३७	१६।५८	१९।१८	२१।२३	२३। ४	०।२९	१।५१	३।२४	५।१९
	१६	३	७।३३	९।५५	१२।१५	१४।३३	१६।५४	१९।१४	२१।१९	२३। ०	०।२५	१।४७	३।२०	५।१५
	१७	४	७।२९	९।५१	१२।११	१४।२९	१६।५०	१९।१०	२१।१५	२२।५६	०।२१	१।४३	३।१६	५।११
	१८	५	७।२५	९।४७	१२। ७	१४।२५	१६।४६	१९। ६	२१।११	२२।५२	०।१७	१।३९	३।१२	५। ७
	१९	६	७।२१	९।४३	१२। ३	१४।२१	१६।४२	१९। २	२१। ७	२२।४८	०।१३	१।३५	३। ८	५। ३
	२०	७	७।१७	९।३९	११।५९	१४।१७	१६।३८	१८।५८	२१। ३	२२।४४	०। ९	१।३२	३। ४	४।५९
	२१	८	७।१३	९।३५	११।५५	१४।१३	१६।३४	१८।५४	२०।५९	२२।४०	०। ५	१।२८	३। ०	४।५५
	२२	९	७। ९	९।३१	११।५१	१४। ९	१६।३०	१८।५०	२०।५५	२२।३६	०। १	१।२४	२।५६	४।५१
	२३	१०	७। ५	९।२७	११।४७	१४। ५	१६।२६	१८।४६	२०।५१	२२।३२	२३।५७	१।२०	२।५३	४।४७
	२४	११	७। १	९।२४	११।४३	१४। १	१६।२२	१८।४३	२०।४८	२२।२८	२३।५४	१।१६	२।४९	४।४३
	२५	१२	६।५७	९।२०	११।३९	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।४४	२२।२५	२३।५०	१।१२	२।४५	४।३९
	२६	१३	६।५३	९।१६	११।३६	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।४०	२२।२१	२३।४६	१। ८	२।४१	४।३५
	२७	१४	६।५०	९।१२	११।३२	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।३६	२२।१७	२३।४२	१। ४	२।३७	४।३१
	२८	१५	६।४६	९। ८	११।२८	१३।४६	१६। ७	१८।२७	२०।३२	२२।१३	२३।३८	१। ०	२।३३	४।२७
	२९	१६	६।४२	९। ४	११।२४	१३।४२	१६। ३	१८।२३	२०।२८	२२। ९	२३।३४	०।५६	२।२९	४।२४
	३०	१७	६।३८	९। ०	११।२०	१३।३८	१५।५९	१८।१९	२०।२४	२२। ५	२३।३०	०।५२	२।२५	४।२०
जुलाई	१	१८	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।४८	२।२१	४।१६
	२	१९	६।३०	८।५२	११।१२	१३।३०	१५।५१	१८।११	२०।१६	२१।५७	२३।२२	०।४४	२।१७	४।१२
	३	२०	६।२६	८।४८	११। ८	१३।२६	१५।४७	१८। ७	२०।१२	२१।५३	२३।१८	०।४१	२।१३	४। ८
	४	२१	६।२२	८।४४	११। ४	१३।२२	१५।४३	१८। ४	२०। ८	२१।४९	२३।१४	०।३७	२। ९	४। ४
	५	२२	६।१८	८।४०	११। ०	१३।१८	१५।४०	१८। ०	२०। ४	२१।४५	२३।१०	०।३३	२। ५	४। ०
	६	२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३६	१७।५६	२०। ०	२१।४१	२३। ६	०।२९	२। १	३।५६
	७	२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१०	१५।३२	१७।५२	१९।५६	२१।३७	२३। २	०।२५	१।५७	३।५२
	८	२५	६। ६	८।२९	१०।४८	१३। ६	१५।२८	१७।४८	१९।५२	२१।३३	२२।५८	०।२१	१।५३	३।४८
	९	२६	६। २	८।२५	१०।४४	१३। २	१५।२४	१७।४४	१९।४९	२१।२९	२२।५५	०।१७	१।५०	३।४४
	१०	२७	५।५८	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।२०	१७।४०	१९।४५	२१।२६	२२।५१	०।१३	१।४६	३।४०
	११	२८	५।५५	८।१७	१०।३७	१२।५४	१५।१६	१७।३६	१९।४१	२१।२२	२२।४७	०। ९	१।४२	३।३६
	१२	२९	५।५१	८।१३	१०।३३	१२।५०	१५।१२	१७।३२	१९।३७	२१।१८	२२।४३	०। ५	१।३८	३।३२
	१३	३०	५।४७	८। ९	१०।२९	१२।४७	१५। ८	१७।२८	१९।३३	२१।१४	२२।३९	०। १	१।३४	३।२९
	१४	३१	५।४३	८। ५	१०।२५	१२।४३	१५। ४	१७।२४	१९।२९	२१।१०	२२।३५	२३।५७	१।३०	३।२५
	१५	३२	५।३९	८। १	१०।२१	१२।३९	१५। ०	१७।२०	१९।२५	२१। ६	२२।३१	२३।५३	१।२६	३।२१
	१६	३३	५।३५											

मास	अंग्रेजी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.
जुलाई	१६	१	७।५७	१०।१७	१२।३५	१४।५६	१७।१६	१९।२१	२१। २	२२।२७	२३।४९	१।२२	३।१७	५।३१
	१७	२	७।५३	१०।१३	१२।३१	१४।५२	१७।१२	१९।१७	२०।५८	२२।२३	२३।४५	१।१८	३।१३	५।२७
	१८	३	७।४९	१०। ९	१२।२७	१४।४८	१७। ८	१९।१३	२०।५४	२२।१९	२३।४१	१।१४	३। ९	५।२३
	१९	४	७।४५	१०। ५	१२।२३	१४।४४	१७। ४	१९। ९	२०।५०	२२।१५	२३।३८	१।१०	३। ५	५।१९
	२०	५	७।४१	१०। १	१२।१९	१४।४१	१७। १	१९। ५	२०।४६	२२।११	२३।३४	१। ६	३। १	५।१५
	२१	६	७।३७	९।५७	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९। १	२०।४२	२२। ७	२३।३०	१। २	२।५७	५।११
	२२	७	७।३३	९।५३	१२।११	१४।३३	१६।५३	१८।५७	२०।३८	२२। ३	२३।२६	०।५८	२।५३	५। ७
	२३	८	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।२९	१६।४९	१८।५३	२०।३४	२१।५९	२३।२२	०।५४	२।४९	५। ३
	२४	९	७।२६	९।४६	१२। ३	१४।२५	१६।४५	१८।५०	२०।३०	२१।५५	२३।१८	०।५१	२।४५	४।५९
	२५	१०	७।२२	९।४२	११।५९	१४।२१	१६।४१	१८।४६	२०।२६	२१।५१	२३।१४	०।४७	२।४१	४।५६
	२६	११	७।१८	९।३८	११।५५	१४।१७	१६।३७	१८।४२	२०।२३	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३७	४।५२
	२७	१२	७।१४	९।३४	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।३८	२०।१९	२१।४४	२३। ६	०।३९	२।३३	४।४८
	२८	१३	७।१०	९।३०	११।४८	१४। ९	१६।२९	१८।३४	२०।१५	२१।४०	२३। २	०।३५	२।३०	४।४४
	२९	१४	७। ६	९।२६	११।४४	१४। ५	१६।२५	१८।३०	२०।११	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
	३०	१५	७। २	९।२२	११।४०	१४। १	१६।२१	१८।२६	२०। ७	२१।३२	२२।५४	०।२७	२।२२	४।३६
	३१	१६	६।५८	९।१८	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।२२	२०। ३	२१।२८	२२।५०	०।२३	२।१८	४।३१
अगस्त	१	१७	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७	०।१९	२।१४	४।२८
	२	१८	६।५०	९।१०	११।२८	१३।४९	१६।१०	१८।१४	१९।५५	२१।२०	२२।४३	०।१५	२।१०	४।२४
	३	१९	६।४६	९। ६	११।२४	१३।४६	१६। ६	१८।१०	१९।५१	२१।१६	२२।३९	०।११	२। ६	४।२०
	४	२०	६।४२	९। २	११।२०	१३।४२	१६। २	१८। ६	१९।४७	२१।१२	२२।३५	०। ७	२। २	४।१६
	५	२१	६।३८	८।५८	११।१६	१३।३८	१५।५८	१८। २	१९।४३	२१। ८	२२।३१	०। ३	१।५८	४।१२
	६	२२	६।३४	८।५४	११।१२	१३।३४	१५।५४	१७।५८	१९।३९	२१। ४	२२।२७	०। ०	१।५४	४। ८
	७	२३	६।३१	८।५१	११। ८	१३।३०	१५।५०	१७।५५	१९।३५	२१। १	२२।२३	२३।५६	१।५०	४। ४
	८	२४	६।२७	८।४७	११। ४	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१९।३२	२०।५७	२२।१९	२३।५२	१।४६	४। ०
	९	२५	६।२३	८।४३	११। ०	१३।२२	१५।४२	१७।४७	१९।२८	२०।५३	२२।१५	२३।४८	१।४२	३।५७
	१०	२६	६।१९	८।३९	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४३	१९।२४	२०।४९	२२।११	२३।४४	१।३८	३।५३
	११	२७	६।१५	८।३५	१०।५३	१३।१४	१५।३४	१७।३९	१९।२०	२०।४५	२२। ७	२३।४०	१।३४	३।४९
	१२	२८	६।११	८।३१	१०।४९	१३।१०	१५।३०	१७।३५	१९।१६	२०।४१	२२। ३	२३।३६	१।३१	३।४५
	१३	२९	६। ७	८।२७	१०।४५	१३। ६	१५।२६	१७।३१	१९।१२	२०।३७	२१।५९	२३।३२	१।२७	३।४१
	१४	३०	६। ३	८।२३	१०।४१	१३। २	१५।२२	१७।२७	१९। ८	२०।३३	२१।५५	२३।२८	१।२३	३।३७
	१५	३१	५।५९	८।१९	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२३	१९। ४	२०।२९	२१।५१	२३।२४	१।१९	३।३३
	१६	३२	५।५५											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

भाद्रपद

मास	अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.
अगस्त	१६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९। ०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२९	५।५१
	१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
	१८	३	८। ७	१०।२५	१२।४६	१५। ७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१। ७	३।२१	५।४३
	१९	४	८। ३	१०।२१	१२।४३	१५। ३	१७। ७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३। ८	१। ३	३।१७	५।३९
	२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३९	१४।५९	१७। ३	१८।४४	२०। ९	२१।३२	२३। ४	०।५९	३।१३	५।३६
	२१	६	७।५६	१०।१३	१२।३५	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०। ५	२१।२८	२३। १	०।५५	३। ९	५।३२
	२२	७	७।५२	१०। ९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०। २	२१।२४	२२।५७	०।५१	३। ५	५।२८
	२३	८	७।४८	१०। ५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३। २	५।२४
	२४	९	७।४४	१०। १	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
	२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
	२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१। ८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
	२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१। ४	२२।३७	०।३२	२।४६	५। ८
	२८	१३	७।२८	९।४६	१२। ७	१४।२७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१। ०	२२।३३	०।२८	२।४२	५। ४
	२९	१४	७।२४	९।४२	१२। ३	१४।२३	१६।२८	१८। ९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५। ०
	३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८। ५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
	३१	१६	७।१८	९।३४	११।५५	१४।१६	१६।२०	१८। १	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर	१	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
	२	१८	७। ८	९।२६	११।४८	१४। ८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०। ८	२।२२	४।४४
	३	१९	७। ४	९।२२	११।४४	१४। ४	१६। ८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२। ९	०। ४	२।१८	४।४०
	४	२०	७। ०	९।१८	११।४०	१४। ०	१६। ४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२। ५	०। ०	२।१४	४।३७
	५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६। ०	१७।४१	१९। ६	२०।२९	२२। २	२३।५६	२।१०	४।३३
	६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५७	१७।३८	१९। ३	२०।२४	२१।५८	२३।५२	२। ६	४।२९
	७	२३	६।४९	९। ६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२। ३	४।२५
	८	२४	६।४५	९। २	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
	९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
	१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२२	१८।४७	२०। ९	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१३
	११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०। ५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४। ९
	१२	२८	६।२९	८।४७	११। ८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०। १	२१।३४	२३।२९	१।४३	४। ५
	१३	२९	६।२५	८।४३	११। ४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४। १
	१४	३०	६।२१	८।३९	११। ०	१३।२१	१५।२५	१७। ६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
	१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७। २	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५४
	१६	आ१	६।१३											

आश्विन

मास	अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.
सितम्बर	१६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६। ९
	१७	२	८।२७	१०।४९	१३। ९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३। ९	१।२३	३।४५	६। ५
	१८	३	८।२३	१०।४५	१३। ५	१५। ९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३। ५	१।१९	३।४२	६। १
	१९	४	८।१९	१०।४१	१३। १	१५। ५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१। ७	२३। १	१।१५	३।३८	५।५८
	२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५। २	१६।४२	१८। ८	१९।३०	२१। ३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
	२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८। ४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१। ७	३।३०	५।५०
	२२	७	८। ७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८। ०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१। ४	३।२६	५।४६
	२३	८	८। ३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१। ०	३।२२	५।४२
	२४	९	८। ०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३८
	२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
	२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९। ६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
	२७	१२	७।४८	१०। ९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९। २	२०।३५	२२।३०	०।४४	३। ६	५।२६
	२८	१३	७।४४	१०। ५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३। २	५।२२
	२९	१४	७।४०	१०। १	१२।२२	१४।२६	१६। ७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
	३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६। ३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१८	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर	१	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
	२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१४	१५।५५	१७।२०	१८।४३	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५। ६
	३	१८	७।२४	९।४६	१२। ६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३९	२०।११	२२। ६	०।२०	२।४३	५। ३
	४	१९	७।२०	९।४२	१२। २	१४। ६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०। ८	२२। २	०।१६	२।३९	४।५९
	५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४। ३	१५।४३	१७। ९	१८।३१	२०। ४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
	६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७। ५	१८।२७	२०। ०	२१।५४	०। ८	२।३१	४।५१
	७	२२	७। ८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७। १	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०। ५	२।२७	४।४७
	८	२३	७। ५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०। १	२।२३	४।४३
	९	२४	७। १	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४८	२१।४३	२३।५७	२।१९	४।३९
	१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	१८।११	१९।४४	२१।३९	२३।५३	२।१५	४।३५
	११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८। ७	१९।४०	२१।३५	२३।४९	२।११	४।३१
	१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८। ३	१९।३६	२१।३१	२३।४५	२। ७	४।२७
	१३	२८	६।४५	९। ६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२। ३	४।२३
	१४	२९	६।४१	९। २	११।२३	१३।२७	१५। ८	१६।३३	१७।५६	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
	१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५। ४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
	१६	का१	६।३३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

कार्तिक

मास	अंग्रेजी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८।५५	११।१५	१३।१९	१५। ०	१६।२४	१७।४८	१९।२०	२१।१५	२३।२९	१।५१	४।११	६।२९
	१७	२	८।५१	११।११	१३।१५	१४।५६	१६।२१	१७।४४	१९।१६	२१।११	२३।२५	१।४७	४। ७	६।२५
	१८	३	८।४७	११। ७	१३।११	१४।५२	१६।१७	१७।४०	१९।१३	२१। ७	२३।२१	१।४४	४। ४	६।२१
	१९	४	८।४३	११। ३	१३। ८	१४।४८	१६।१४	१७।३६	१९। ९	२१। ३	२३।१७	१।४०	४। ०	६।१७
	२०	५	८।३९	१०।५९	१३। ४	१४।४४	१६।१०	१७।३२	१९। ५	२०।५९	२३।१३	१।३६	३।५६	६।१३
	२१	६	८।३५	१०।५५	१३। ०	१४।४१	१६। ६	१७।२८	१९। १	२०।५५	२३। ९	१।३२	३।५२	६। ९
	२२	७	८।३१	१०।५१	१२।५६	१४।३७	१६। २	१७।२४	१८।५७	२०।५१	२३। ६	१।२८	३।४८	६। ६
	२३	८	८।२७	१०।४७	१२।५२	१४।३३	१५।५८	१७।२०	१८।५३	२०।४७	२३। २	१।२४	३।४४	६। २
	२४	९	८।२३	१०।४३	१२।४८	१४।२९	१५।५४	१७।१६	१८।४९	२०।४३	२२।५८	१।२०	३।४०	५।५८
	२५	१०	८।१९	१०।३९	१२।४४	१४।२५	१५।५०	१७।१२	१८।४५	२०।४०	२२।५४	१।१६	३।३६	५।५४
	२६	११	८।१५	१०।३५	१२।४०	१४।२१	१५।४६	१७। ८	१८।४१	२०।३६	२२।५०	१।१२	३।३२	५।५०
	२७	१२	८।११	१०।३१	१२।३६	१४।१७	१५।४२	१७। ४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१। ८	३।२८	५।४६
	२८	१३	८। ७	१०।२८	१२।३२	१४।१३	१५।३८	१७। १	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१। ४	३।२४	५।४२
	२९	१४	८। ३	१०।२४	१२।२८	१४। ९	१५।३४	१६।५७	१८।२९	२०।२४	२२।३८	१। ०	३।२०	५।३८
	३०	१५	८। ०	१०।२०	१२।२४	१४। ५	१५।३०	१६।५३	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५६	३।१६	५।३४
	३१	१६	७।५६	१०।१६	१२।२०	१४। १	१५।२६	१६।४९	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५२	३।१२	५।३०
नवम्बर	१	१७	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४८	३। ९	५।२६
	२	१८	७।४८	१०। ८	१२।१२	१३।५३	१५।१८	१६।४१	१८।१३	२०। ८	२२।२२	०।४५	३। ५	५।२२
	३	१९	७।४४	१०। ४	१२। ९	१३।४९	१५।१५	१६।३७	१८। ९	२०। ४	२२।१८	०।४१	३। १	५।१८
	४	२०	७।४०	१०। ०	१२। ५	१३।४६	१५।११	१६।३३	१८। ६	२०। ०	२२।१४	०।३७	२।५७	५।१४
	५	२१	७।३६	९।५६	१२। १	१३।४२	१५। ७	१६।२९	१८। २	१९।५६	२२।११	०।३३	२।५३	५।१०
	६	२२	७।३२	९।५२	११।५७	१३।३८	१५। ३	१६।२५	१७।५८	१९।५२	२२। ७	०।२९	२।४९	५। ७
	७	२३	७।२८	९।४८	११।५३	१३।३४	१४।५९	१६।२१	१७।५४	१९।४९	२२। ३	०।२५	२।४५	५। ३
	८	२४	७।२४	९।४४	११।४९	१३।३०	१४।५५	१६।१७	१७।५०	१९।४५	२१।५९	०।२१	२।४१	४।५९
	९	२५	७।२०	९।४०	११।४५	१३।२६	१४।५१	१६।१३	१७।४६	१९।४१	२१।५५	०।१७	२।३७	४।५५
	१०	२६	७।१६	९।३६	११।४१	१३।२२	१४।४७	१६। ९	१७।४२	१९।३७	२१।५१	०।१३	२।३३	४।५१
	११	२७	७।१२	९।३२	११।३७	१३।१८	१४।४३	१६। ५	१७।३८	१९।३३	२१।४७	०। ९	२।२९	४।४७
	१२	२८	७। ८	९।२९	११।३३	१३।१४	१४।३९	१६। २	१७।३४	१९।२९	२१।४३	०। ५	२।२५	४।४३
	१३	२९	७। ५	९।२५	११।२९	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३०	१९।२५	२१।३९	०। १	२।२१	४।३९
	१४	३०	७। १	९।२१	११।२५	१३। ६	१४।३१	१५।५४	१७।२६	१९।२१	२१।३५	२३।५७	२.	४।३५
	१५	मा. १	६।५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेजी तारीख	मार्ग. प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९।१७	११।२१	१३। २	१४।२७	१५।५०	१७।२२	१९।१७	२१।३१	२३।५४	२।१३	४।३३	६।५२
	१६	२	९।१३	११।१७	१२।५८	१४।२३	१५।४६	१७।१८	१९।१३	२१।२७	२३।५०	२।१०	४।२९	६।४९
	१७	३	९। ९	११।१३	१२।५४	१४।१९	१५।४२	१७।१५	१९। ९	२१।२४	२३।४६	२। ६	४।२५	६।४५
	१८	४	९। ५	११।१०	१२।५०	१४।१६	१५।३८	१७।११	१९। ५	२१।१९	२३।४२	२। २	४।२१	६।४१
	१९	५	९। १	११। ६	१२।४७	१४।१२	१५।३४	१७। ७	१९। १	२१।१६	२३।३८	१।५८	४।१७	६।३७
	२०	६	८।५७	११। २	१२।४३	१४। ८	१५।३०	१७। ३	१८।५७	२१।१२	२३।३४	१।५४	४।१३	६।३३
	२१	७	८।५३	१०।५८	१२।३९	१४। ४	१५।२६	१६।५९	१८।५३	२१। ८	२३।३०	१।५०	४। ९	६।२९
	२२	८	८।४९	१०।५४	१२।३५	१४। ०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१। ४	२३।२६	१।४६	४। ५	६।२५
	२३	९	८।४५	१०।५०	१२।३१	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१। ०	२३।२२	१।४२	४। १	६।२१
	२४	१०	८।४१	१०।४६	१२।२७	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५७	६।१७
	२५	११	८।३७	१०।४२	१२।२३	१३।४८	१५।१०	१६।४३	१८।३८	२०।५२	२३।१४	१।३४	३।५३	६।१३
	२६	१२	८।३३	१०।३८	१२।१९	१३।४४	१५। ७	१६।३९	१८।३४	२०।४८	२३।१०	१।३०	३।४९	६। ९
	२७	१३	८।३०	१०।३४	१२।१५	१३।४०	१५। ३	१६।३५	१८।३०	२०।४४	२३। ६	१।२६	३।४५	६। ५
	२८	१४	८।२६	१०।३०	१२।११	१३।३६	१४।५९	१६।३१	१८।२६	२०।४०	२३। २	१।२२	३।४१	६। २
	२९	१५	८।२२	१०।२६	१२। ७	१३।३२	१४।५५	१६।२७	१८।२२	२०।३६	२२।५८	१।१८	३।३७	५।५८
	३०	१६	८।१८	१०।२३	१२। ३	१३।२८	१४।५१	१६।२३	१८।१८	२०।३३	२२।५४	१।१४	३।३३	५।५४
दिसम्बर	१	१७	८।१४	१०।१९	११।५९	१३।२४	१४।४७	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।११	३।२९	५।५०
	२	१८	८।१०	१०।१५	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।१०	२०।२४	२२।४७	१। ७	३।२५	५।४६
	३	१९	८। ६	१०।११	११।५२	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८। ६	२०।२०	२२।४३	१। ३	३।२१	५।४२
	४	२०	८। २	१०। ७	११।४८	१३।१३	१४।३५	१६। ८	१८। २	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१७	५।३८
	५	२१	७।५८	१०। ३	११।४४	१३। ९	१४।३१	१६। ४	१७।५८	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१३	५।३४
	६	२२	७।५४	९।५९	११।४०	१३। ५	१४।२७	१६। ०	१७।५४	२०। ९	२२।३१	०।५१	३। ९	५।३०
	७	२३	७।५०	९।५५	११।३६	१३। १	१४।२३	१५।५६	१७।५१	२०। ५	२२।२७	०।४७	३। ५	५।२६
	८	२४	७।४६	९।५१	११।३२	१२।५७	१४।१९	१५।५२	१७।४७	२०। १	२२।२३	०।४३	३। १	५।२२
	९	२५	७।४२	९।४७	११।२८	१२।५३	१४।१५	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१९	०।३९	२।५७	५।१८
	१०	२६	७।३८	९।४३	११।२४	१२।४९	१४।११	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।१५	०।३५	२।५३	५।१४
	११	२७	७।३५	९।३९	११।२०	१२।४५	१४। ८	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।११	०।३१	२।४९	५।१०
	१२	२८	७।३१	९।३५	११।१६	१२।४१	१४। ४	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२। ७	०।२७	२।४५	५। ७
	१३	२९	७।२७	९।३१	११।१२	१२।३७	१४। ०	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२२। ३	०।२३	२।४१	५। ३
	१४	३०	७।२३	९।२७	११। ८	१२।३३	१३।५६	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५९	०।१९	२।३७	४।५९
	१५	पौ. १	७।१९											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल | भा. स्टै. टा. |

पौष

अंग्रेजी तारीख	प्रविष्टे	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.
दिसम्बर १५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१५।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१५।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१५। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१५। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१५। १	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
जनवरी १	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३२	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
१३	मा. १	७।२८											

माघ

अंग्रेजी तारीख	प्रविष्टे	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.
जनवरी १३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
फरवरी १	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४४	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
१२	फा. १	७।११											

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

फाल्गुन

	अंग्रेजी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८।३६	९।५९	११।३२	१३।२६	१५।४१	१८। ३	२०।२३	२२।४०	१। २	३।२२	५।२६	७। ७
	१३	२	८।३३	९।५५	११।२८	१३।२२	१५।३७	१७।५९	२०।१९	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२३	७। ४
	१४	३	८।२९	९।५१	११।२४	१३।१८	१५।३३	१७।५५	२०।१५	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१९	७। ०
	१५	४	८।२५	९।४७	११।२०	१३।१४	१५।२९	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१५	६।५६
	१६	५	८।२१	९।४३	११।१६	१३।१०	१५।२५	१७।४७	२०। ७	२२।२४	०।४६	३। ६	५।११	६।५२
	१७	६	८।१७	९।३९	११।१२	१३। ६	१५।२१	१७।४३	२०। ३	२२।२१	०।४२	३। २	५। ७	६।४८
	१८	७	८।१३	९।३५	११। ८	१३। ३	१५।१७	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३८	२।५८	५। ३	६।४४
	१९	८	८। ९	९।३१	११। ४	१२।५९	१५।१३	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।३४	२।५४	४।५९	६।४०
	२०	९	८। ५	९।२७	११। ०	१२।५५	१५। ९	१७।३१	१९।५१	२२। ९	०।३०	२।५०	४।५५	६।३६
	२१	१०	८। १	९।२३	१०।५६	१२।५१	१५। ५	१७।२७	१९।४७	२२। ५	०।२६	२।४६	४।५१	६।३२
	२२	११	७।५७	९।२०	१०।५२	१२।४७	१५। १	१७।२३	१९।४३	२२। १	०।२२	२।४३	४।४७	६।२८
	२३	१२	७।५३	९।१६	१०।४८	१२।४३	१४।५७	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१९	२।३९	४।४३	६।२४
	२४	१३	७।४९	९।१२	१०।४४	१२।३९	१४।५३	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।१५	२।३५	४।३९	६।२०
	२५	१४	७।४५	९। ८	१०।४०	१२।३५	१४।४९	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।११	२।३१	४।३५	६।१६
	२६	१५	७।४१	९। ४	१०।३६	१२।३१	१४।४५	१७। ७	१९।२७	२१।४५	०। ७	२।२७	४।३१	६।१२
	२७	१६	७।३७	९। ०	१०।३२	१२।२७	१४।४१	१७। ३	१९।२३	२१।४१	०। ३	२।२३	४।२८	६। ८
	२८	१७	७।३४	८।५६	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।२०	२१।३७	२३।५९	२।१९	४।२४	६। ४
मार्च	१	१८	७।३०	८।५२	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१५	४।२०	६। १
	२	१९	७।२६	८।४८	१०।२१	१२।१५	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।२९	२३।५१	२।११	४।१६	५।५७
	३	२०	७।२२	८।४४	१०।१७	१२।११	१४।२६	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।४७	२। ७	४।१२	५।५३
	४	२१	७।१८	८।४०	१०।१३	१२। ८	१४।२२	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।४३	२। ३	४। ८	५।४९
	५	२२	७।१४	८।३६	१०। ९	१२। ४	१४।१८	१६।४०	१९। ०	२१।१८	२३।३९	१।५९	४। ४	५।४५
	६	२३	७।१०	८।३२	१०। ५	१२। ०	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३५	१।५५	४। ०	५।४१
	७	२४	७। ६	८।२८	१०। १	११।५६	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।३१	१।५१	३।५६	५।३७
	८	२५	७। २	८।२५	९।५७	११।५२	१४। ६	१६।२८	१८।४८	२१। ६	२३।२७	१।४८	३।५२	५।३३
	९	२६	६।५८	८।२१	९।५३	११।४८	१४। २	१६।२४	१८।४४	२१। २	२३।२३	१।४४	३।४८	५।२९
	१०	२७	६।५४	८।१७	९।४९	११।४४	१३।५८	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।२०	१।४०	३।४४	५।२५
	११	२८	६।५०	८।१३	९।४५	११।४०	१३।५४	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२३।१६	१।३६	३।४०	५।२१
	१२	२९	६।४६	८। ९	९।४१	११।३६	१३।५०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।१२	१।३२	३।३६	५।१७
	१३	३०	६।४२	८। ५	९।३७	११।३२	१३।४६	१६। ८	१८।२८	२०।४६	२३। ८	१।२८	३।३२	५।१३
	१४	चै.	६।३८											

चैत्र

	अंग्रेजी तारीख	चै. प्रविष्टे	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८। १	९।३४	११।२८	१३।४२	१६। ५	१८।२५	२०।४२	२३। ४	१।२४	३।२९	५। ९	६।३५
	१५	२	७।५७	९।३०	११।२४	१३।३८	१६। १	१८।२१	२०।३८	२३। ०	१।२०	३।२५	५। ६	६।३१
	१६	३	७।५३	९।२६	११।२०	१३।३४	१५।५७	१८।१७	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।२१	५। २	६।२७
	१७	४	७।४९	९।२२	११।१६	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।१७	४।५८	६।२३
	१८	५	७।४५	९।१८	११।१२	१३।२७	१५।४९	१८। ९	२०।२७	२२।४८	१। ८	३।१३	४।५४	६।१९
	१९	६	७।४१	९।१४	११। ९	१३।२३	१५।४५	१८। ५	२०।२३	२२।४४	१। ४	३। ९	४।५०	६।१५
	२०	७	७।३७	९।१०	११। ५	१३।१९	१५।४१	१८। १	२०।१९	२२।४०	१। ०	३। ५	४।४६	६।११
	२१	८	७।३३	९। ६	११। १	१३।१५	१५।३७	१७।५७	२०।१५	२२।३६	०।५६	३। १	४।४२	६। ७
	२२	९	७।२९	९। २	१०।५७	१३।११	१५।३३	१७।५३	२०।११	२२।३२	०।५२	२।५७	४।३८	६। ३
	२३	१०	७।२५	८।५८	१०।५३	१३। ७	१५।२९	१७।४९	२०। ७	२२।२८	०।४९	२।५३	४।३४	५।५९
	२४	११	७।२२	८।५४	१०।४९	१३। ३	१५।२५	१७।४५	२०। ३	२२।२५	०।४५	२।४९	४।३०	५।५५
	२५	१२	७।१८	८।५०	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४१	१९।५९	२२।२१	०।४१	२।४५	४।२६	५।५१
	२६	१३	७।१४	८।४६	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३७	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।४१	४।२२	५।४७
	२७	१४	७।१०	८।४२	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३३	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।३७	४।१८	५।४३
	२८	१५	७। ६	८।३८	१०।३३	१२।४७	१५।१०	१७।३०	१९।४७	२२। ९	०।२९	२।३३	४।१४	५।३९
	२९	१६	७। २	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५। ६	१७।२६	१९।४३	२२। ५	०।२५	२।३०	४।१०	५।३६
	३०	१७	६।५८	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५। २	१७।२२	१९।४०	२२। १	०।२१	२।२६	४। ७	५।३२
	३१	१८	६।५४	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५७	०।१७	२।२२	४। ३	५।२८
अप्रैल	१	१९	६।५०	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१३	२।१८	३।५९	५।२४
	२	२०	६।४६	८।१९	१०।१३	१२।२८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४९	०। ९	२।१४	३।५५	५।२०
	३	२१	६।४२	८।१५	१०।१०	१२।२४	१४।४६	१७। ६	१९।२४	२१।४५	०। ५	२।१०	३।५१	५।१६
	४	२२	६।३८	८।११	१०। ६	१२।२०	१४।४२	१७। २	१९।२०	२१।४१	०। १	२। ६	३।४७	५।१२
	५	२३	६।३४	८। ७	१०। २	१२।१६	१४।३८	१६।५८	१९।१६	२१।३७	२३।५७	२। २	३।४३	५। ८
	६	२४	६।३०	८। ३	९।५८	१२।१२	१४।३४	१६।५४	१९।१२	२१।३३	२३।५३	१।५८	३।३९	५। ४
	७	२५	६।२७	७।५९	९।५४	१२। ८	१४।३०	१६।५०	१९। ८	२१।२९	२३।५०	१।५४	३।३५	५। ०
	८	२६	६।२३	७।५५	९।५०	१२। ४	१४।२६	१६।४६	१९। ४	२१।२५	२३।४६	१।५०	३।३१	४।५६
	९	२७	६।१९	७।५१	९।४६	१२। ०	१४।२२	१६।४२	१९। ०	२१।२१	२३।४२	१।४६	३।२७	४।५२
	१०	२८	६।१५	७।४७	९।४२	११।५६	१४।१८	१६।३८	१८।५६	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२३	४।४८
	११	२९	६।११	७।४३	९।३८	११।५२	१४।१४	१६।३४	१८।५२	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।१९	४।४४
	१२	३०	६। ७	७।४०	९।३४	११।४८	१४।१०	१६।३०	१८।४८	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१५	४।४१
	१३	वै. १	६। ३											

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
अकोला (म.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	ऊना (हि.प्र.)	३१।३२	७६।१८	—२४।४८	कोल्हापुर (म.)	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	जोधपुर (राज.)	२६।१८	७३। ४	—३७।४४
अगरतल्ला (त्रि.)	२३।४६	९१।१८	+३५।१२	एकलिंगजी (रा.)	२४।४३	७३।४६	—३४।५६	कोहिमा (ना.)	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	जौनपुर (उ.प्र.)	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६
अंकलेश्वर (गु.)	२१।३८	७३। ३	—२७।४८	एटा (उ.प्र.)	२७।३५	७८।४०	—१५।२०	खन्ना (पं.)	३०।४२	७६।१३	—२५। ८	ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१।५३	७६।२२	—२४।३२
अखनूर (का.)	३२।५४	७४।४५	—३१। ०	एर्नाकुलम् (के.)	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	खुर्जा (उ.प्र.)	२८।१५	७७।५०	—१८।४०	जालना (म.)	१९।५१	७५।५६	—२६।१६
अजन्ता (म.)	२०।३३	७५।४८	—२६।४८	एलिचपुर (म.)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	गया (बिहार)	२४।४९	८५। १	+१०। ४	झरिया (बि.)	२३।५०	८६।३३	+१६।१२
अजमेर (रा.)	२६।२७	७४।४२	—३१।१२	एलेप्पे (के.)	९।३०	७६।२३	—२४।२८	गंगटोक (सि.)	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	झांसी (उ.प्र.)	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
अनन्तनाग (का.)	३३।४३	७५।१७	—२८।५२	ऐलोरा (म.)	२०। २	७५।१३	—२९। ८	गढ़शंकर (पं.)	३१।१३	७६।११	—२५।१६	झालरापाटन (रा.)	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
अनामलै (ता.)	१०।३४	७६।५०	—२२।४०	औरंगाबाद (आं.)	१९।५३	७५।२३	—२८।२८	गाजियाबाद (उ.प्र.)	२८।४०	७७।२८	—२०। ८	झालावाड़ (रा.)	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८।२१	७८।१६	—१६।५६	कटक (उ.)	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	गाजीपुर (उ.प्र.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	झुंझुनू (रा.)	२८। ६	७५।२५	—२८।२०
अमरावती (म.)	२०।५६	७७।४८	—१८।४८	कटनी (म.प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	गिलगित (का.)	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	टांडाउरमुर (पं.)	३१।४०	७५।४१	—२७।१६
अमरेली (गु.)	२१।३६	७१।१५	—४५। ०	कठुआ (का.)	३२।१७	७५।३६	—२७।३६	गुड़गांव (हरि.)	२८।२७	७७। ४	—२१।४४	टिहरी (उ.प्र.)	३०।२०	७८।३०	—१६। ०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८।५४	७८।३१	—१५।५६	कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०।५७	७७। ६	—२१।३६	गुर्दासपुर (पं.)	३२। २	७५।२७	—२८।१२	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अमृतसर (पं.)	३१।३७	७४।५५	—३०।२०	कन्नौज (उ.प्र.)	२७। ३	७९।५८	—१०। ८	गोंडा (उ.प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	टोडारायसिंह (रा.)	२६। ०	७५।२९	—२८। ४
अमेठी (उ.प्र.)	२६। ८	८१।५०	— २।४०	कपूर्थला (पं.)	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	गोरखपुर (उ.प्र.)	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला (ह.)	३०।२१	७६।४२	—२२।३२	करतारपुर (पं.)	३१।२७	७५।३२	—२७।५२	गोहाटी (आसाम)	२६।११	९१।४५	+३७। ०	डगशई (हि.प्र.)	३०।५३	७७। ६	—२१।३६
अयोध्या (उ.प्र.)	२६।४८	८२।१४	— १। ४	करनाल (हरि.)	२९।४२	७७। २	—२१।५२	ग्वालियर (म.प्र.)	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	डलहौजी (हि.प्र.)	३२।३२	७५।५९	—२६। ४
अरकोणम् (ता.)	१३। ५	७९।४३	—११। ८	करौली (रा.)	२६।३०	७७। ४	—२१।४४	चण्डीगढ़ (पं.)	३०।४४	७६।५२	—२२।३२	डिबाई (उ.प्र.)	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अर्की (हि.प्र.)	३१। ९	७६।५८	—२२। ८	कलकत्ता (बं.)	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	चन्दौसी (उ.प्र.)	२८।२७	७८।४६	—१४।४४	डिब्रूगढ़ (आ.)	२७।२९	९४।५६	+४९।४४
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९।३७	७९।४०	—११।२०	कसौली (हि.प्र.)	३०।५३	७७। १	—२१।५६	चम्बा (हि.प्र.)	३२।२९	७६।१०	—२५।२०	डीडवाना (राज.)	२७।२४	७४।३४	—३१।४४
अलवर (रा.)	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	कांगड़ा (हि.प्र.)	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	चित्तौड़गढ़ (रा.)	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	डीसा (गु.)	२४।१४	७२।१३	—४१। ८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७।५४	७८। ६	—१७।३६	कांचीपुरम् (ता.)	१२।५०	७९।४५	—११। ०	चीरापूजी (मे.)	२५।१७	९१।४७	+३७। ८	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अहमदनगर (म.)	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	काठियावाड़ (गु.)	२२। ०	७१। ०	—४६। ०	चूरू (राज.)	२८।१९	७५। १	—२९।५६	तिरुपति (आंध्र.)	१३।४०	७९।२०	—१२।४०
अहमदाबाद (गु.)	२३। २	७२।३८	—३९।२८	कानपुर (उ.प्र.)	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	छतरपुर (म.प्र.)	२४।५४	७९।३८	—११।२८	त्रिचनापल्ली (ता.)	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आगरा (उ.प्र.)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	कारगिल (का.)	३४।३०	७६।१३	—२५। ८	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	त्रिचुर (के.)	१०।३०	७६।१५	—२५। ०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	कालका (ह.)	३०।५०	७७। १	—२१।५६	जबलपुर (म.प्र.)	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	त्रिवेन्द्रम् (के.)	८।३०	७६।५७	—२२।१२
आनन्द (गु.)	२२।३२	७३। ०	—३८। ०	काशी (उ.प्र.)	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जम्मू (का.)	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	थराड (गु.)	२४।२३	७१।३७	—४३।३२
आबू (राज.)	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	किसनगढ़ (राज.)	२७।५३	७०।३७	—४७।३२	जयपुर (राज.)	२६।५५	७५।५२	—२६।३४	थानेसर (हरि.)	२९।५८	७६।५६	—२२।१६
आरा (बि.)	२५।३४	८४।३४	+ ८।१६	कुराली (पं.)	३०।५०	७६।३५	—२३।४०	जलगांव (म.)	२१। ५	७५।४०	—२७।२०	दतिया (म.प्र.)	२५।३९	७८।२७	—१६।१२
आसनसोल (बं.)	२३।४२	८७। १	+१८। ४	कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जलपाईगुड़ी (बं.)	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	दमोह (म.प्र.)	२३।५०	७९।२९	—१२। ४
इटारसी (म.प्र.)	२२।३७	७७।४५	—१९। ०	कुल्लू (हि.प्र.)	३१।५८	७७। ६	—२१।३६	जामनगर (गुज.)	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	दरभंगा (बिहार)	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
इटावा (उ.प्र.)	२६।४७	७९। २	—१३।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	जालंधर (पं.)	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	दसूआ (पं.)	३१।४९	७५।४२	—२७।१२
इन्दौर (म.प्र.)	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	कुम्भकोणम् (ता.)	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	जालोर (राज.)	२५।२२	७२।३८	—३९।२८	दार्जिलिंग (बं.)	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इम्फाल (मणि.)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	कैथल (ह.)	२९।४८	७६।२६	—२४।१६	जलौन (उ.प्र.)	२६। ८	७९।२३	—१२।२८	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
उज्जैन (म.प्र.)	२३। ९	७५।४३	—२७। ८	कोचीन (के.)	९।५८	७६।१७	—२४।५२	जीन्द (हरि.)	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	दीनानगर (पं.)	३२। ८	७५।३१	—२७।५६
उदयपुर (रा.)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	कोटरखाई (हि.प्र.)	३१। ८	७७।३६	—१९।३६	जूनागढ़ (गु.)	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	देवबन्द (उ.प्र)	२९।४२	७७।४३	—१९। ८
उन्नाव (उ.प्र.)	२६।३४	८०।३०	— ८। ०	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	जैसलमेर (राज.)	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	देवरिया (उ.प्र.)	२६।३३	८३।४५	+ ५। ०
उधमपुर (का.)	३२।५५	७५। ७	—२६।१२	कोडैकनाल (ता.)	१०।१३	७७।३२	—१९।५२	जोगिन्दर नगर (हि.)	३१।५०	७६।४५	—२३। ०	देवास (म.प्र.)	२२।५८	७६। ६	—२५।३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
देवप्रयाग (उ.प्र.)	३०। ९	७८।३७	—१५।३२	पाटन (गु.)	२३।५३	७२।१०	—४१।२०	बालासोर (उ.)	२१।३०	८६।५४	+१७।३६	मुगलसराय (उ.प्र.)	२५।१७	८३।११	+ २।४४
देहरादून (उ.प्र.)	३०।१९	७८। ३	—१७।४८	पांडिचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८	बालोतरा (रा.)	२५।४६	७२।१५	—४१। ०	मुंगेर (बि.)	२५।२३	८६।३०	+१६। ०
द्वारिका (गु.)	२२।१४	६९। ७	—५३।३२	पालमपुर (हि.प्र.)	३२। ७	७६।३२	—२३।५२	बिजनौर (उ.प्र.)	२९।२३	७८।११	—१७।१६	मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)	२९।२८	७७।४४	—१९। ४
धनबाद (बि.)	२३।४७	८६।१५	+१५। ०	पाली (रा.)	२५।४६	७३।२५	—३६।२०	बिलासपुर (म.प्र.)	२२। ५	८२।१३	— १। ८	मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	पुंछ (का.)	३३।५१	७४। ८	—३३।२८	बिलासपुर (हि.प्र.)	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८।५१	७८।४९	—१४।४४
धारवाड़ (क.)	१५।२७	७५। ३	—२९।४८	पुरुलिया (बि.)	२३।४२	८७।३२	+२०। ८	बीकानेर (रा.)	२८। १	७३।१८	—३६।४८	मेरठ (उ.प्र.)	२९। १	७७।४५	—१९। ०
धौलपुर (रा.)	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	पुरी (उ.)	१९।४८	८५।५२	+१३।२८	बीजापुर (म.)	१६।५०	७५।४७	—२६।५२	मैनपुरी (उ.प्र.)	२७।१४	७९। ३	—१३।४८
नडियाद (गु.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०	पूना (म.)	१८।३०	७३।५३	—३४।२८	बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८।२४	७७।५४	—१८।२४	मोगा (प.)	३०।४८	७५।१०	—२९।२०
नरैना (रा.)	२६।५०	७४।११	—३३।१६	पोरबन्दर (गु.)	२१।३७	६९।४९	—५०।४४	बूंदी (रा.)	२५।२७	७५।४१	—२७।१६	मोरार (म.प्र.)	२६।१३	७८।१४	—१७। ४
नवलगढ़ (रा.)	२७।५१	७५।१८	—२८।४८	पोर्टब्लेयर	११।४०	९२।४६	+४१। ४	वृन्दावन (उ.प्र.)	२७।३३	७७।४४	—१९। ४	मोरैना (म.प्र.)	२६।२६	७८। ४	—१७।४४
नसीराबाद (रा.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५।५४	८१।५९	— २। ४	बुद्धगया (बि.)	२४।४२	८४।५६	+ ९।४४	यवतमाल (म.)	२०।२३	७८।११	—१७।१६
नागपुर (म.)	२१। ९	७९। ९	—१३।२४	प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४। २	७४।४०	—३१।२०	भद्रवाह (का.)	३३। १	७५।४३	—२७। ८	योल (हि.प्र.)	३२।११	७६।२३	—२४।२८
नागौर (रा.)	२७।११	७३।४०	—३५।२०	प्रयाग (उ.प्र.)	२५।२८	८१।५४	— २।२४	भटिण्डा (प.)	३०।११	७५। ०	—३०। ०	रतलाम (म.प्र.)	२३।२०	७५। ७	—२९।३२
नाचना (रा.)	२७।२६	७१।४५	—४३। ०	फगवाड़ा (प.)	३१।१४	७५।४६	—२६।५६	भरतपुर (रा.)	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	रत्नागिरि (म.)	१७। २	७३।१९	—३६।४४
नाथद्वारा (रा.)	२४।५६	७३।५२	—३४।३२	फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७। १	७८।१६	—१६।५६	भरूच (गु.)	२१।४१	७३। १	—३७।५६	राजकोट (गु.)	२२।१८	७०।५०	—४६।४०
नान्देड़ (म.)	१९। ९	७७।२७	—२०।१२	फतेहाबाद (ह.)	२९।३१	७५।३०	—२८। ०	भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५६	+१७।४४	राजमहेन्द्री (आ.)	१७। ५	८१।४८	— २।४८
नाभा (पं)	३०।२५	७६। ६	—२५।३६	फरीदकोट (पं.)	३०।४०	७४।४०	—३१।२०	भिवानी (ह.)	२८।४६	७६।१८	—२४।४८	रांची (बि.)	२३।२०	८५।२०	+११।२०
नारनौल (ह.)	२८। २	७६।१४	—२५। ४	फरीदाबाद (ह.)	२८।२५	७७।२२	—२०।३२	भीनमाल (रा.)	२५। ०	७२।१६	—४०।५६	रानीखेत (उ.प्र.)	२९।४०	७९।३०	—११।४८
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१। ३	७६।४२	—२३।१२	फर्रुखाबाद (उ.प्र.)	२७।२४	७९।३७	—११।३२	भुज (गुज.)	२३।१६	६९।४४	—५१। ४	रापर (गु.)	२३।३२	७०।४०	—४७।२०
नाहन (हि.प्र.)	३०।३३	७७।२१	—२०।३६	फाजिल्का (पं.)	३०।२५	७४। ४	—३३।४४	भुवनेश्वर (उ.)	२०।१५	८५।५२	+१३।२८	रामपुर बुशहर (हि.)	३१।२७	७७।३८	—१९।२८
नासिक (म.)	२०। २	७३।५०	—३४।४०	फिरोजपुर (पं.)	३०।५५	७४।४०	—३१।२०	भोपाल (म.प्र.)	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	रायपुर (म.प्र.)	२१।१५	८१।४१	— ३।१६
निम्बाहेड़ा (रा.)	२४।३७	७४।४५	—३१। ०	फुलेरा (रा.)	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	मऊ (उ.प्र.)	२५।५८	८३।३६	+ ४।२४	रायबरेली (उ.प्र.)	२६।१२	८१।१४	— ५। ४
नीमच (म.प्र.)	२४।२७	७४।५२	—३०।३२	फैजाबाद (उ.प्र.)	२६।४७	८२।१२	— १।१२	मछलीपट्टणम (आ.)	१६। ९	८१। ८	— ५।२८	रामेश्वरम् (ता.)	९।१७	७९।२२	—१२।३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२।१८	७५।५६	—२६।१६	बंगलौर (क.)	१२।५८	७७।३८	—१९।२८	मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	रिवाड़ी (ह.)	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
नैनवा (रा.)	२५।४५	७५।५७	—२६।१२	बटाला (प.)	३१।४९	७५।१४	—२९। ४	मद्रास (ता.)	१३। ४	८०।१७	— ८।५२	रीवा (म.प्र.)	२४।३१	८१।१९	— ४।४४
नैनीताल (उ.प्र.)	२९।२३	७९।३०	—१२। ०	बदायूं (उ.प्र.)	२८। २	७९।१०	—१३।२०	मथुरा (उ.प्र.)	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	रोपड़ (प.)	३०।५७	७६।३०	—२४। ०
नोहर (राज.)	२९।११	७४।४६	—३०।५६	बड़ोदा (गु.)	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	मन्दसौर (म.प्र.)	२४। ४	७५। ५	—२९।४०	रोहतक (ह.)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
नौशेरा (का.)	३३।१३	७४।१७	—३२।५२	बम्बई (म.)	१९। ०	७२।५४	—३८।२४	मसूरी (उ.प्र.)	३०।२७	७८। ६	—१७।३६	लखनऊ (उ.प्र.)	२६।५५	८०।५९	— ६। ४
पचपदरा (रा.)	२५।५५	७२।२१	—४०।३६	बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३०।४४	७९।३२	—११।५२	महेसाणा (गु.)	२३।३५	७२।२७	—४०।१२	लाडवा (ह.)	२९।५९	७७। ५	—२१।४०
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२।३०	७८।२२	—१६।३२	बर्दवान (ब.)	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	माछीवाड़ा (प.)	३०।५५	७६।१५	—२५। ०	लुधियाना (प.)	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
पंचकूला (ह.)	३०।४६	७६।५६	—२२।१६	बलिया (उ.प्र.)	२५।४४	८४।११	+ ६।४४	महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८।१७	७६।१४	—२५। ४	लेह (का.)	३४।१०	७७।४०	—१९।२०
पंजिम (गोवा)	१५।२६	७३।४८	—३४।४८	बागलकोट (क.)	१६।१२	७५।४४	—२७। ४	माण्डवी (गु.)	२२।५१	६९।३०	—५२। ०	लोहारू (ह.)	२८।२६	७५।४७	—२६।५२
पटना (बि.)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	बांकीपुर (बि.)	२५।४०	८५।१२	+१०।४८	मारवाड़ जं. (रा.)	२५।४३	७३।४०	—३५।२०	वर्धा (म.)	२०।४५	७८।३९	—१५।२४
पटियाला (प.)	३०।२०	७६।२५	—२४।२०	बांसवाड़ा (रा.)	२३।३०	७४।२४	—३२।२४	मालेगांव (म.)	२०।३०	७४।४०	—३१।२०	विजयवाड़ा (आं.)	१६।३१	८०।३९	— ७।२४
पटौदी (ह.)	२८।१८	७६।४८	—२२।४८	बांदा (उ.प्र.)	२५।३०	८०।२२	— ८।३२	मालेरकोटला (पं.)	३०।३१	७५।५६	—२६।१६	विशाखापट्टनम् (आ.)	१७।४२	८३।२०	+ ३।२०
पठानकोट (प.)	३२।१७	७५।४२	—२७।१२	बाराबंकी (उ.प्र.)	२६।५६	८१।१३	— ५। ८	मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५।१०	८२।३३	+ ०।१२	शाहदरा (दिल्ली)	२८।४०	७७।२०	—२०।४०
पन्ना (म.प्र.)	२४।४४	८०।१४	— ९। ४	बारामूला (का.)	३४।१०	७४।२०	—३२।४०	मीरपुर (का.)	३३।१२	७३।२१	—३६।३६	शाहाबाद (उ.प्र.)	२७।३०	८०। ०	—१०। ०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
शिमला (हि.प्र.)	३१। ६	७७।१३	—२१। ८	सांगली (म.)	१६।५२	७४।३६	—३१।३६
शिलांग (मा.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	सांगानेर (रा.)	२६।४६	७५।४६	—२६।४४
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	साम्भर (रा.)	२६।५४	७५।१३	—२६। ८
श्रीमाधोपुर (रा.)	२७।२५	७५।३२	—२७।५२	सिकन्दराबाद (आं.)	१७।२७	७८।३३	—१५।४८
संगरूर (पं.)	३०।१२	७५।५३	—२६।२८	सिन्दरी (रा.)	२५।३३	७१।५५	—४२।२०
सतारा (म.)	१७।४२	७४। २	—३३।५२	सिन्दरी (बं.)	२३।४५	८६।४२	+१६।४८
सनावर (पं.)	३०।१८	७६।३०	—२४। ०	सिरसा (ह.)	२९।३२	७५। ४	—२९।४४
सरदार शहर (रा.)	२८।२७	७४।३२	—३१।५२	सिरोही (रा.)	२४।५३	७२।५४	—३८।२४
सरहिन्द (पं.)	३०।३८	७६।२५	—२४।२०	सिलीगुड़ी (बं.)	२६।४२	८८।२५	+२३।४०
सवाईमाधोपुर (रा.)	२६। ०	७६।३०	—२४। ०	सिवाना (रा.)	२५।३६	७२।२७	—४०।१२
ससाराम (बि.)	२४।५७	८४। ३	+ ६।१२	सिहोरा (म.प्र.)	२३।२९	८०। ९	— ९।२४
सहारनपुर (उ.प्र.)	२९।५८	७७।३३	—१९।४८	सिहभूम (बि.)	२२।२४	८५।३०	+१२।००
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०				

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
सीकर (रा.)	२७।३६	७५।१२	—२९।१२	हनुमान गढ़ (रा.)	२९।३५	७४।२१	—३२।३६
सीतापुर (उ.प्र.)	२७।३२	८०।४३	— ७। ८	हरदोई (उ.प्र.)	२७।२३	८०।१०	— ९।२०
सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१।३२	७६।५३	—२२।२८	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
सूरत (गु.)	२१।१२	७२।५२	—३८।३२	हाथरस (उ.प्र.)	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
सूरतगढ़ (रा.)	२९।१९	७३।५७	—३४।१२	हापुड़ (उ.प्र.)	२८।४३	७७।५०	—१८।४०
सोजत (रा.)	२५।५६	७३।४२	—३५।१२	हांसी (ह.)	२९। ६	७६। ०	—२६। ०
सोनहाट (म.प्र.)	२३।२९	८२।३०	— ०। ०	हिसार (ह.)	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
सोमनाथ (गु.)	२१। ४	७०।२६	—४८।१६	हुबली (क.)	१५।२०	७५।१२	—२९।१२
सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	हैदराबाद (आं.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
हजारी बाग (बि.)	२३।५९	८५।२५	+११।४०	होशंगाबाद (म.प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
हमीरपुर (उ.प्र.)	२५।५८	८०।१२	— ९।१२	होशियारपुर (पं.)	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
हमीरपुर (हि.प्र.)	३१।४१	७६।३१	—२३।५६	होसुर (ता.)	१२।४४	७७।५२	—१८।३२

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	२३।३६	एरिनपुरा	२५। ९	७३। ६	३७।३६
अजमेर	२६।२७	७४।४२	३१।१२	ओसिया	२६।४३	७२।५५	३८।२०
अनूपगढ़	२९। ७	७३। ६	३७।३६	करौली	२६।३०	७७। १	२१।५६
आमेट	२५।२०	७३।५९	३४। ४	कांकरोली	२५। ४	७३।५४	३४।२४
अलवर	२७।३४	७६।३८	२३।२८	कामन	२७।३९	७७।१६	२०।५६
अलीगढ़	२५।५८	७६। ७	२५।३०	किशनगढ़	२६।३४	७४।५२	३०।३२
आबू	२४।४०	७२।४५	३९। ०	कुशालगढ़	२३।१०	७४।२७	३२।१२
आबू रोड	२४।२९	७२।४७	३८।५२	कुचामन	२७। ९	७४।५२	३०।३२
आमेर	२६।५९	७५।५२	२६।३२	कूरी	२६।४२	७०।४०	४७।२०
आसपुर	२३।५८	७४। ३	३३।४८	केकड़ी	२५।५९	७५।१०	२९।२०
आहोर	२५।२३	७२।५२	३८।३२	कोटरा	२४।२२	७३।१०	३७।२०
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	२५।१२	कोटा	२५।१०	७५।५२	२६।३२
उतारनी	२६। ६	७१।५८	४२। ८	कोलायत	२७।५०	७२।५७	३८।१२
उदयपुर	२४।३५	७३।४१	३५।१६	[illegible]	२७।३६	७५।३२	२७।५२
[illegible]	२४।४३	७३।४६	३४।५६	[illegible]	२७। ६	७०।२५	४८।२०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
खेडब्रह्मा	२४। ५	७३। ३	३७।४८	चोमू	२७। ८	७५।४७	२६।५२
खेरवाड़ा	२४। ०	७३।३५	३५।४०	छबरा	२४।४०	७६।५०	२२।४०
गंगानगर	२९।४६	७३।५०	३४।४०	छोटी सादड़ी	२४।२४	७४।४२	३१।१२
गंगापुर (भीलवाड़ा)	२५।१३	७४।१६	३२।५६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	२६।३२
गंगापुर (टोंक)	२६।२९	७६।४६	२२।५६	जसरासर	२७।४५	७३।५०	३४।४०
गिराब	२६। २	७०।३५	४७।४०	जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	४०। ०
गागरिया	२५।५४	७०।४२	४७।१२	जहाजपुर	२५।३८	७५।१२	२९।१२
गूढ़ा	२५।१२	७१।४८	४२।४८	जाएल	२७।१५	७४।१२	३३।१२
घोटारू	२७।१८	७०। ४	४९।४४	जालोर	२५।२२	७२।३८	३९।२८
चात्सू	२६।३६	७५।५९	२६। ४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	४६।२४
चारनवाला	२७।५३	७२।१०	४१।२०	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	३७।४४
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४०	३१।२०	जोंधासर	२८। ७	७३।५०	३४।४०
चिरावा	२८।१५	७५।३८	[illegible]	[illegible]	२४।३३	७६।१०	२५।२०
चीलो	२७।२२	७३।३०	३६। ०	[illegible]	२४।३६	७६। ९	२५।२४
[illegible]	२८।१६	७३। ६	२८।५६	[illegible]	२८। ६	७५।२५	२८।२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
डाबक	२५।४२	७६। ०	३४। ०
टोडारायसिंह	२६। ०	७५।२९	२८। ४
टोंक	२६।११	७५।५०	२६।४०
टीम	२७।२८	७७।२०	२०।४०
डीडवाना	२७।२४	७४।३४	३१।४४
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	३५। ८
ढाना	२६।५०	७४।१८	३२।४८
तिजारा	२७।५५	७६।५०	२२।४०
थाना कस्बा	२५।१३	७७।२०	२०।४०
थाना गाजी	२७।२५	७६।१६	२४।४४
दान्ता	२४।१२	७२।४७	३८।५२
देवगढ़	२६।३०	७०।४८	४७।१२
देवू	२६।४७	७२।२०	४०।४०
देवलिया	२४। ३	७४।४३	३१। ८
देवली	२५।४६	७५।२५	२८।२०
देवीकोट	२६।४२	७१।१२	४५।१२
देशनोके	२७।४८	७३।२१	३६।३६
देसूरी	२५।२०	७३।३७	३५।३२
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	१८।२८
धरैना	२६।५०	७४।११	३३।१६
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	२८।४८
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	३०।५६
नागौर	२७।११	७३।४४	३५। ४
नावना	२७।२९	७१।४५	४३। ०
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५०	३४।४०
निम्बाहेड़ा	२४।३७	७४।४५	३१। ०
नीम का थाना	२७।४४	७५।४८	२६।४८
नोखा	२७।३५	७३।२९	३६। ४
नैनवा	२५।४५	७५।५७	२६।१२
नोहर	२९।११	७४।४६	३०।५६
पचपदरा	२५।५५	७२।२१	४०।३६
प्रतापगढ़	२४। २	७४।४७	३०।५२
पर्बतसर	२६।५२	७४।४७	३०।५२
पल्लू	२८।५६	७४।११	३३। ८
पाली	२५।४६	७३।२०	३६।४०

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
पिपलोदा	२३।३५	७४।५०	३०।४०
पिरावा	२४।१३	७६। ३	२५।४८
पिलानी	२८।२३	७५।३५	२७।४०
पीपाड़ रोड	२६।२७	७३।२७	३६।१२
पूनासर	२७। २	७३। २	३७।५२
पुष्कर	२६।३०	७४।३३	३२।४८
पूगल	२८।३१	७२।४७	३८।५२
प्रसाद	२४।११	७३।४२	३५।१२
फतेहपुर	२८। ०	७५। ०	३०। ०
फलौदी	२७। ६	७२।२२	४०।३२
फुलेरा	२६।५२	७५।१६	२८।५६
बड़ी सादड़ी	२४।२५	७४।२८	३२। ८
पोकरन	२६।५५	७१।५५	४२।२०
बनस्थली	२६।२३	७५।५०	२६।४०
बयाना	२६।५४	७७।१७	२०।५२
बान्दनवाड़ा	२६। ६	७४।४२	३१।१२
बस्वा	२७। ६	७६।३२	२३।५२
बान्दीकुई	२७। ३	७६।३४	२३।४४
बाड़मेर	२५।४५	७१।२५	४४।२०
बाड़ी	२६।३९	७७।३६	१९।३६
बाप	२७।२२	७२।२२	४०।३२
बारन	२५। ६	७६।३०	२४। ०
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	३२।२४
बाली	२५।५०	७४। ५	३३।४०
बालोतरा	२५।४९	७२।१४	४१। ४
बिरसलपुर	२८।१०	७२।१५	४१। ०
बिलाड़ा	२६।१०	७३।४२	३५।१२
बीकानेर	२८। १	७३।२०	३६।४०
बून्दी	२५।२७	७५।४०	२७।२०
ब्यावर	२६। ६	७४।२०	३२।४०
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	२०। ०
भवानी	२५।४३	७२।५२	३८।३२
भंवरगढ़	२५। ६	७६।५०	२३।४०
भाद्रा	२९।१५	७५।२०	२८।४०
भीनमाल	२५। ०	७२।१६	४०।४४

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
भीम	२५।३९	७४। ९	३३।२४
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	३१।२०
मकराना	२७। ३	७४।४३	३१। ८
मण्डलगढ़	२५।१२	७५। ९	२९।२४
महला	२६।५०	७५।३०	२८। ०
महाजन	२८।४८	७३।५६	३४।१६
मांगरोल	२५।२०	७६।३०	२४। ०
मारवाड़-जंक्शन	२५।४३	७३।४५	३५। ०
मालपुरा	२६।१८	७५।२५	२८।२०
मावली	२४।४७	७३।५८	३४। ८
मेड़ता	२६।३९	७४। ६	३३।३६
मेड़तारोड	२६।४३	७३।५५	३४।२०
मियालजर	२६।१८	७०।२२	४८।३२
मुकन्दवाड़ा	२४।४९	७५।५९	२६। ४
मुनवाओ	२५।४३	७०।१५	४९। ०
मोदरी	२४।२५	७३।२५	३६।२०
मोहनगढ़	२७।१७	७१।१८	४४।४८
रतनगढ़	२८। ५	७४।३९	३१।२४
राजगढ़	२८।३९	७५।२९	२८।१९
रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१३	४१। ८
रामगढ़ (जयपुर)	२७।१५	७५।१०	२९।२०
रामगढ़ (जैसलमेर)	२७।२२	७०।३०	४८। ०
रामदेवरा	२७। ०	७१।५२	४२।३४
रायसिंह नगर	२९।३२	७३।२७	३६।१२
रिखभदेव	२४। ४	७३।४०	३५।२०
रीगस	२७।२१	७५।३४	२९।४४
रूप नगर	२६।४८	७४।५४	३०।२४
रेनी	२८।४१	७५। ५	२९।४०
लछमनगढ़	२७।४५	७५। ४	२९।४४
लाठी	२७। ३	७१।३०	४४। ०
लाडनूं	२७।३९	७४।२३	३२।२८
लालसोट	२६।३४	७६।२३	२४।२८
लूनी	२६। ०	७३।५२	३८।३२
लोहारिया	२३।४८	७४।१५	३३। ०
शाहगढ़	२७। ८	६९।५३	५०।१२

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
शाहपुरा (जयपुर)	२७।२३	७५।५८	२६। ८
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	२५।४०	७४।५०	३०।४०
शेओ	२६।११	७१।१५	४५। ०
शेरगढ़ (जोधपुर)	२६।२५	७२।२१	४०।३६
शेरगढ़ (झालावाड़)	२४।४०	७६।३२	२३।५२
श्री गंगानगर	२९।४९	७३।५०	३४।४०
श्री डूंगरगढ़	२८। ६	७४। १	३३।५६
श्री माधोपुर	२७।२५	७५।३२	२७।५२
श्री मोहनगढ़	२७।१७	७१।१२	४५।१२
सम	२६।५०	७०।३१	४७।५६
समदड़ी	२५।४९	७२।३५	३९।४०
सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	३२। ०
सरवार	२६। २	७४।५५	३०।२०
सरूप सर	२९।२२	७३।३७	३५।३२
सवाई माधोपुर	२५।५८	७६।२५	२४।२०
सहाड़ा	२५।१५	७४।१६	३२।५६
सागवाड़ा	२३।४१	७४। १	३३।५६
सांगानेर	२६।४९	७५।४९	२६।४४
सांगोद	२४।५५	७६।२१	२४।३६
सांचोर	२४।४०	७१।५०	४२।४०
साम्भर	२६।५४	७५।१०	२९।२०
सादुलपुर	२८।३८	७५।२४	२८।२४
सिन्दरी	२५।३३	७१।५५	४२।२०
सिरमुटरा	२६।३१	७७।२२	२०।३२
सिरोही	२४।५३	७२।५४	३८।२४
सिवाना	२५।३६	७२।२७	४०।१२
सूरतगढ़	२९।१९	७३।५७	३४।१२
सीकर	२७।३६	७५। ९	२९।२४
सुजानगढ़	२७।४२	७४।३०	३२। ०
सोजत	२५।५६	७३।४२	३५।१२
हनुमानगढ़	२९।३५	७४।२१	३२।३६
हिन्डौन	२६।४३	७७। १	२१।५६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उ.प्र. के नगरों के अक्षांश-रेखांश-सूर्योदयास्त एवं लग्न

लेखक :-- प्रियव्रत शर्मा

जातक की जन्मपत्री के निर्माण के लिए उसके जन्मस्थान (नगर, ग्राम) के अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (देशीय Standard meridian से उस नगर के कालात्मक पूर्वापरात्मक अन्तर) का ज्ञान अपरिहार्य रूप से अपेक्षित है। विश्व के सुप्रसिद्ध एटलसों में भी केवल प्रमुख-प्रमुख नगरों के ही अक्षांश, रेखांश उपलब्ध होते हैं। स्टैंडर्ड अन्तर तो इन एटलसों में होता ही नहीं है। भारत के विभिन्न पंजाब आदि प्रान्तों के प्रमुख नगरों के अलावा अन्य सभी उपनगरों तथा अनेक ग्रामों के भी अक्षांश, रेखांश तथा स्टैण्डर्ड अन्तर ज्योतिषियों को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ही हमने विगत चार वर्षों से यह स्तम्भ देना प्रारम्भ किया है। इस वर्ष का यह स्तम्भ उ. प्र. के नगर-उपनगरों के लिए अर्पित है। उ. प्र. के ३६० नगर-उपनगर-ग्रामों के अक्षांश आदि की यह विस्तृत सूची परिश्रम से तैयार की गई है। इसके साथ ही यहां उ. प्र. के सभी स्थलों के सूर्योदयास्त काल जानने की भी सरल विधि दी गई है। उ. प्र. के प्रसिद्ध ६८ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल (भा.स्टै. टा.) जानने के लिए एक सारणी (लग्न परिवर्तन सारणी) भी दी गई है, जिससे उ. प्र. के इन प्रमुख ६८ नगरों तथा इन नगरों के आस पास बसे ग्रामों में जन्मे किसी भी बच्चे के जन्मकालिक लग्न का ज्ञान अनायास ही हो जाता है।

जैसा कि हम पहिले भी लिख चुके हैं—इस स्तम्भ में दी जा रही सारणियां और तत्सम्बद्ध विषय हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ '**गणकर्मार्त्तण्ड**' से उद्धृत है।

उ. प्र. के नगरों का सूर्योदयास्तकाल—

इस वर्ष दी जा रही सूर्योदयास्त काल जानने की विधि विगत वर्षों में दी गई विधि से भिन्न है। इस भिन्न विधि के निर्देश का उद्देश्य यह है कि पाठक इस विधि से परिचित हो जाएं और भविष्य में इसी विधि के आधार पर हमारे द्वारा बतलाए जाने वाले विविध प्रकारों से जन्मपत्री के अन्य गणित विषय भी सरलता से वे हल कर सकें।

लीजिए —इस विधि द्वारा सूर्योदयास्त काल के ज्ञान का प्रकार इस भान्ति है :—

अभीष्ट नगर के अक्षांश और स्टैण्डर्डअन्तर ज्ञात करें और "सूर्योदयास्त सारणी" से अपनी अभीष्ट तारीख का सूर्योदय-सूर्यास्त काल उठा लीजिए। 'चरसारणी' से अपनी अभीष्ट तारीख के आगे और अभीष्टनगर के अक्षांश के नीचे लिखे चर के मिनट-सेकण्डों को सूर्योदयास्त सारणी से उठाए गए सूर्योदयास्त काल में जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्टनगर के स्थानीय मध्यम काल में सूर्योदयास्त काल बन जाएगा। यहां चरसारणी से प्राप्त चर के मिनट-सेकण्डों को कब जोड़ा जाता है और कब घटाया जाता है, इसके लिए यह नियम है—सूर्य की क्रान्ति जिन दिनों दक्षिण होती है उन दिनों ये चर मिनट सूर्योदय काल में जोड़े और सूर्यास्त काल में घटाए जाते हैं। 'चरसारणी' के पहिले दो कालमों में दी गई तारीखों में (२३ सित. से ३१ दिस. और १ जन. से २१ मार्च तक) सूर्य की दक्षिण क्रान्ति होती है। शेष तारीखों (चरसारणी के तीसरे और चौथे कालम में दी गई तारीखों) में सूर्य की उत्तर क्रान्ति होती है। इन उत्तर क्रान्ति वाले दिनों में चरसारणी से ज्ञात मिनट-सेकण्डों को सूर्योदय काल में से घटाया और सूर्यास्त काल में जोड़ा जाता है। यह नियम उ प्र के नगरों के लिए है। अपने नगर के स्टैंडर्ड अन्तर के मिनट सेकण्डों को स्थानीय मध्यम काल वाले सूर्योदय व सूर्यास्त काल में चिन्ह के विपरीत जोड़ने या घटाने पर भा. स्टै. टा. में उस नगर का सूर्योदय व सूर्यास्त काल बन जाएगा। यह सूर्योदय और सूर्यास्त काल सूर्यबिम्ब के ऊर्ध्व बिन्दु की स्थानीय क्षितिज में स्थिति को बतलाता है। इसे हम 'दृश्य सूर्योदयास्त काल' भी कहते हैं। दृश्य सूर्योदय काल में 3½ (साढ़े तीन मिनट) जोड़ने और सूर्यास्त में घटाने पर ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय व सूर्यास्तकाल बन जाएंगे। ध्यान रहे—जन्मपत्री की सभी गणित प्रक्रियाओं (लग्न-दशमलग्न साधन, इष्टकालसाधन, दिनमान साधन आदि) में ज्योतिष शास्त्रीय सूर्योदयास्त काल का ही प्रयोग करना होता है।

उदाहरण:—आजमगढ़ (उ प्र) में २६ फर. को ज्योतिष शास्त्रीय सूर्योदय और सूर्यास्त काल ज्ञात करना है। सूर्योदयास्त सारणी में २६ फर. को सूर्योदय ६ घं १० मि. और सूर्यास्त १८ घ १७ मि. है। 'चरसारणी' में २६ फर. के आगे + २६° अक्षांश (आजमगढ़ के अक्षांश) के नीचे १७ मि. ४३ से चर मिला। २६ फर. को दक्षिण क्रान्ति होने से इस मिनटादि चर को सूर्योदय काल ६ घं. १० मि. में जोड़ने पर ६ घ. २७ मि. ४३ से. और सूर्यास्तकाल १८ घं. १७ मि. में से घटाने पर १७ घ. ५९ मि. १७ से. हुए। ये दोनों काल स्थानीय मध्यम काल के अनुसार आजमगढ़ में २६ फर. को क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त को बतलाते हैं। इन दोनों में से आजमगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर २ मि. ४४ से. धन चिन्ह वाला होने से घटाने पर आजमगढ़ में २६ फर. को भा. स्टै. टा. के अनुसार सूर्योदय काल से ६ घ. २४ मि. ५९ से. और सूर्यास्त काल १७ घ ५६ मि. ३३ से. हुआ। ये दृश्य सूर्योदयास्त काल हैं। इन्हें ज्योतिषशास्त्रीय बनाने के लिए 3½ (३ मि. ३० से.) दृश्य सूर्योदय काल में जोड़ने और दृश्य सूर्यास्त काल में घटाने पर ६ घ २८ मि. २९ से. और १७ घ ५३ मि. ३ से. क्रमशः ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय और सूर्यास्त काल बन गए।

ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय और सूर्यास्त काल का अन्तर ही दिनमान होता है।

ध्यान रहे—अभीष्ट दिन की सूर्योदय व सूर्यास्त कालिक सूक्ष्म सूर्य क्रान्ति (क्रान्ति की अंश-कलाएं) जान कर उसके द्वारा चरसारणी से अनुपात द्वारा चर ज्ञात करके यदि उसका इस प्रक्रिया में प्रयोग किया जाए तो सूर्योदयास्तकाल अपेक्षाकृत सूक्ष्म होगा।

लग्नों का दैनिक प्रारम्भ व समाप्ति काल

उ. प्र. के प्रसिद्ध ६८ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल जानने के लिए यहां 'लग्न परिवर्तन सारणी' दी गई है। इस पंचांग में अन्यत्र दैनिक लग्न सारणी दी हुई है। इस दैनिक लग्न सारणी से चण्डीगढ़ में प्रतिदिन मेष आदि लग्नों का समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) ज्ञात होता है। इस दैनिक लग्न सारणी से चण्डीगढ़ में अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल ज्ञात कीजिए। 'लग्न परिवर्तन सारणी' से अभीष्ट नगर के आगे अभीष्ट लग्न के नीचे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किए लग्न समाप्ति काल में चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्ट नगर में उस लग्न का समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) ज्ञात हो जाएगा।

जैसे—बदायूं में २५ अगस्त को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल जानना है। दैनिक लग्न सारणी में २५ अगस्त को वृश्चिक लग्न का चण्डीगढ़ में समाप्ति काल १४ घं ३९ मि. है। "लग्न परिवर्तन सारणी" में बदायूं के आगे वृश्चिक लग्न के नीचे—१६ मिनट हैं। इन १६ मिनटों को ऋण चिन्ह होने के कारण १४ घं ३९ मि. में से घटाने पर १४ घ २३ मि. मिले। अर्थात् बदायूं में २५ अगस्त को वृश्चिक लग्न की समाप्ति भा. स्टै. टा. के अनुसार १४ घ २३ मि. पर होगी। यहां यह तो स्पष्ट है ही कि वहां (बदायूं में) धनुराशि का प्रारम्भ काल भी यही होगा, क्योंकि वृश्चिक की समाप्ति पर ही उससे अग्रिम राशि धनु का प्रारम्भ या उदय होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बन जाएगा। यह सूर्योदय और सूर्यास्त काल सूर्यबिम्ब ... प्रारम्भ काल भी यही होगा, क्योंकि ... की समाप्ति पर ही उससे अग्रिम राशि धन का प्रारम्भ या उदय

उत्तर प्रदेश के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
अकबरपुर	२६।२५	८२।३३	+०।१२
अगोरी	२४।३६	८२।५७	+१।४८
अछनेरा	२७।११	७७।४६	-१८।५६
अतरौली	२८। २	७८।१७	-१६।५२
अनूप शहर	२८।२२	७८।१६	-१६।५६
अफजलगढ़	२९।२४	७८।४१	-१५।१६
अमरोहा	२८।५४	७८।२९	-१६। ४
अमेठी	२६।०८	८१।५०	-२।४०
अम्बाह	२६।४३	७८।१५	-१७।००
अयोध्या	२६।४८	८२।१२	- १।१२
अल्लापुर	२७।५४	७९।१९	-१२।४४
अलीगंज	२७।३०	७९।११	-१३।१६
अलीगढ़	२७।५३	७८।०५	-१७।४०
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०
अहरौरा	२५।०१	८३।०१	+ २। ४
आगरा	२७।११	७८।०१	-१७।५६
आजमगढ़	२६।०४	८३।११	+ २।४४
इटावा	२६।४७	७९।०२	-१३।५२
इनवा	२७।२०	८२।४२	+ ०।४८
इस्माइलपुर	२७।१५	७८।१२	-१७।१२
इलाहाबाद	२५।२८	८१।५४	- ३।२४
इसानगर	२७।५४	८१।१३	- ५। ८
उझानी	२८।०१	७९।०१	-१६।५६
उत्तरकाशी	३०।४४	७८।२७	-१६।१२
उतरौला	२७।१९	८२।२५	- ०।२०
उन्नाव	२६।३२	८०।३०	- ८।००
उरई	२५।५९	७९।२८	-१२।०८
उस्का	२७।१०	८३।१०	+ २।४०
ऋषिकेश	३०।०७	७८।४२	-१५।१२
एटा	२७।३८	७८।४०	-१५।२०
ऐत	२५।५५	७९।१३	-१३। ८
ओरछा	२५।२१	७८।३९	-१५।२४
औरैया	२६।२८	७९।३१	-११।५६
औरंगाबाद	२४।४५	८४।२२	+७।२८

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
किच्छाचका	२६।२४	८२।५०	+ १।२०
कछवा	२५।१३	८२।४३	+०।५२
कटार्गनया घाट	२८।२०	८१।०९	-५।२४
कदौरा	२५।५९	७९।५२	-१०।३२
कन्नौज	२७।०४	७९।५५	-१०।२०
कर्मानिन	२५।३१	८०।५६	-६।१६
करहल	२७।०१	७८।५७	-१४।१२
कर्ण प्रयाग	३०।१३	७९।१७	-१२।५२
कर्वी	२५।१२	८०।५४	- ६।२४
कसिया	२६।४५	८३।५५	+ ५।४०
काठगोदाम	२९।१६	७९।३२	-११।५२
काठ	२९। ४	७८।३८	-१५।२८
कादीपुर	२६।१०	८२।२३	-०।२८
कानपुर	२६।२८	८०।२१	- ८।३६
कान्धला	२९।१९	७७।१३	-२०।५६
काम्पिल	२७।३७	७९।१७	-१२।५२
काल्पी	२६।०७	७९।४४	-११। ४
काशीपुर	२९।१३	७८।५७	-१४।१२
कसिया	२६।४५	८३।५५	+ ५।४०
कासगंज	२७।४९	७८।३९	-१५।२४
कीरतपुर	२९।३१	७८।१२	-१७।१२
कुण्डा	२८।०८	८४।२०	+ ७।२०
कुण्डा	२५।४३	८१।३१	-३।५६
कराओ	२४।५९	८२।०५	- १।४०
करौली	२७।२४	७८।५९	-१४। ४
कल पहाड़	२५।१९	७९।३९	-११।२४
कच	२५।५८	७९। ८	-१३।२८
केदारनाथ	३०।४४	७९।०४	-१३।४४
केसरगंज	२७।१८	८१।३३	-३।४८
कैप्टन गंज	२६।५५	८३।४२	+ ४।४८
कैराना	२९।२४	७७।२१	-२१।१२
कैमगंज	२७।३४	७९।२१	-१२।३६
कोट द्वारा	२९।४५	७८।३२	-१५।५२
कापा गंज	२६।०१	८३।३४	+ ४।१६

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
कोरा	२६। ५	८०।२६	- ८।१६
कोरियाला घाट	२८।२२	८१। ४	- ५।४४
कोसी	२७।४८	७७।२६	-२०।१६
खतौली	२९।१७	७७।४३	-१९। ८
खागा	२५।४७	८१। ६	-५।३६
खिलचीपुर	२४।०२	७६।३४	-२३।४४
खुर्जा	२८।१३	७७।५०	-१८।४०
खीरी	२७।५४	८०।४८	- ६।४८
खैर	२७।५७	७७।५०	-१८।४०
खैरागढ़	२६।५६	७७।५२	-१८।३२
खैराबाद	२७।३२	८०।४५	- ७।००
गंगापुर	२६।२९	७६।४३	-२३। ८
गंगोत्री	३०।३६	७९।०२	-१३।५२
गंगोह	२९।४६	७७।१५	-२१।००
गजकुण्डवाड़ा	२७।४४	७८।५७	-१४।१२
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।०६	-१७।३६
गरौठा	२५।३४	७९।१८	-१२।४८
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२६	-२०।१९
गाजीपुर	२५।३५	८३।३४	+ ४।१६
गुन्नौर	२८।१४	७८।२८	-१६।०८
गुरसराय	२५।३७	७९।११	-१३।१६
गलावठी	२८।३६	७७।४७	-१८।५२
गोण्डा	२७। ८	८२।०१	- १।५६
गोरखपुर	२६।४५	८३।२२	+ ३।२८
गोलागोकर्णनाथ	२८।०५	८०।२८	- ८। ८
गोवर्धन	२७।३०	७७।२८	-२०। ८
गौरीफण्टा	२८।४१	८०।३३	- ७।४८
चकराता	३०।४२	७७।५१	-१८।३६
चकला	२५। ४	८३।१२	+ २।४८
चकिया	२६।२५	८५।०३	+१०।१२
चन्दन चौकी	२८।३३	८०।४७	- ६।५२
चन्दौसी	२८।२७	७८।४६	-१४।५६
चमोली	३०।२४	७९।२१	-१२।३६
चम्पावत	२९।२०	८०।०६	- ९।३५
चरखारी	२५।२४	७९।४५	-११।००

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
चित्रकूट धाम	२५।११	८०।५२	- ६।३२
चिरगांव	२५।३५	७८।४९	-१४।४४
चुनार	२५।०८	८२।५६	+ १।४४
चापा	२४।३१	८३।०२	+ २। ८
छतरपुर	२४।५५	७९।३५	-११।४०
छपरा	२४।३०	७६।५०	-२२।४०
छाटा	२७।४४	७७।२८	-२०। ८
छितौनी	२७।०९	८३।५८	+ ५।५२
छिबरामऊ	२७।०९	७९।३१	-११।५६
जगदीशपुर	२५।२९	८४।२५	+ ७।४०
जघई	२५।३४	८२।१७	- ०।५२
जौपया	२४।३३	८४।०१	+ ६। ४
जमनोत्तरी	३१।०१	७८।२७	-१६।१२
जरवा	२७।३९	८२।३१	+ ०। ४
जलालपुर	२६।१९	८२।४४	+ ०।५६
जलालाबाद	२७।४३	७९।४०	-११।२०
जलेसर	२७।२९	७८।१९	-१६।४०
जसरा	२५।१७	८१।४८	- २।४८
जसराना	२७।१४	७८।४१	-१५।१६
जसवन्तनगर	२६।५३	७८।५५	-१४।२०
जहांगीराबाद	२८।२५	७८।०६	-१७।३६
जहानाबाद	२५।१३	८४।५९	+ ९।५६
जाइस	२६।१५	८१।३२	- ३।५२
जानसठ	२९।२०	७७।५१	-१८।३६
जालौन	२६।०९	७९।२१	-१२।३६
जिगनी	२५।४५	७९।२५	-१२।२०
जोशीमठ	३०।३४	७९।३४	-११।४४
जौनपुर	२५।४४	८२।४१	+ ०।४४
झबानी	२७।३६	८४।३१	+ ८। ४
झालरापाटन	२४।३३	७६।१०	-२५।२०
झांसी	२५।२६	७८।३५	-१५।४०
टनकपुर	२९। ५	८०।०७	- ९।३२
टप्पल	२८। ३	७७।३५	-१९।४०
टांडा	२६।३३	८२।३९	+ ०।३६
टांडा	२८।५९	७८।५६	-१४।१६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तर प्रदेश के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अ. क.	रेखांश (पूर्व) अ. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
टूण्डला	२७।१२	७८।१७	−१६।५२	पट्टी	२५।५५	८२।१२	− १।१२	बहादुरगंज	२७।३२	८२।५०	+ १।२०	भींगा	२७।४३	८१।५६	− २।१६
टैकाडी	२४।५६	८४।५०	+ ९।२०	पडरौना	२६।५५	८३।५९	+ ५।५६	बहेड़ी	२८।४७	७९।३०	−१२।००	भैरावा	२७।३१	८३।२४	− ३।३६
ठाकुरद्वारा	२९।१२	७८।५१	−१४।३६	पयागपुर	२७।२५	८१।४८	− २।४८	बरवासागर	२५।२३	७८।४४	−१५।०४	भोन गांव	२७।१५	७९।११	−१३।१६
हिबाई	२८।१३	७८।१५	−१७।००	पवाया	२८।०४	८०।०६	− ९।३६	बरहज	२६।१६	८३।४५	+ ५।००	भांवाली	२९।२३	७९।३१	−११।५६
डुमराओं	२५।३३	८४।०९	+ ६।३६	पिठोरागढ़	२९।३५	८०।१३	− ९।८	बरौट	२९।०६	७७।१६	−२०।५६	मऊ	२५।१७	८१।२३	− ४।२८
डेरापुर	२६।२६	७९।४८	−१०।४८	पिलखुआ	२८।४३	७७।३९	−१९।२४	बलिया	२५।४५	८४।१०	+ ६।४०	मऊऐम्मा	२५।४१	८१।५५	− २।२०
ताजपुर	२९।१०	७८।२९	−१६। ४	पिहानी	२७।३८	८०।१२	− ९।१२	बरेली	२८।२२	७९।२७	−१२।१२	मऊनाथभंजन	२५।५७	८३।३३	+ ४।१२
तालबाहट	२५। ३	७८।२७	−१६।१२	पीपल कोटि	३०।२६	७९।२७	−१२।१२	बलरामपुर	२७।२६	८२।११	− १।१६	मऊरानीपुर	२५।५७	७९।०८	−१३।२८
तिहार	२७।५८	७९।४४	−११। ४	पीलीभीत	२८।३८	७९।४८	−१०।४८	बस्ती	२६।४८	८२।४३	+ ०।५२	मखदम नगर	२६।२८	८२।४६	+ ११। ४
तेजम	२९।५७	८०।०८	− ९।२८	पुखरायां	२६।१४	७९।५१	−१०।३६	बागपत	२८।५७	७७।१३	−२१। ८	मंगलौर	२९।४८	७७।५२	−१८।३२
दरयाबाद	२६।५३	८१।३३	− ३।४८	पुरवा	२६।२८	८०।५०	− ६।४०	बाड़ी	२६।३९	७७।३६	−१९।३६	मछली शहर	२५।४१	८२।२५	− ०।२०
दाऊदनगर	२५। २	८४।२४	+ ७।३६	पूरनपुर	२८।३१	८०।०९	− ९।२४	बादशाहपुर	२५।४७	८२।४९	+ १।१६	मथुरा	२७।३०	७७।४१	−१९।१६
दानापुर	२५।३८	८५।०३	+१०।१२	पैलानी	२५।४४	८०।२३	− ८।२८	बान्दा	२५।२९	८०।२०	− ८।४०	मंदावर	२९।३०	७८।०८	−१७।२८
दालभऊ	२६।०४	८१। २	− ५।५२	पौड़ी	२५।३२	७७।२१	−२०।३६	बाराबांकी	२६।५५	८१।१२	− ५।१२	मवाना	२९।०६	७७।५५	−१८।२०
दूधी	२४।१३	८३।१५	+ ३।००	पौड़ी गढ़वाल	३०। ९	७८।४७	−१४।५२	बालामऊ	२७।१५	८०।२३	− ८।२८	मलीहाबाद	२६।५५	८०।४३	− ७। ८
देवगांव	२५।४५	८३।००	+ २।००	प्रतापगढ़	२५।५०	८१।५९	− २। ४	बाँसगांव	२६।३२	८३।२७	+ ३।४८	मसूरी	३०।२७	७८।०७	−१७।३२
देववन्द	२९।४२	७७।४१	−१९।१६	फतेहपुर	२५।५६	८०।५२	− ६।३२	बाँसडीह	२५।५५	८४।१४	+ ६।५६	महमूदाबाद	२७।१८	८१। ७	− ५।३२
देवरिया	२६।३१	८३।४७	+ ५। ८	फतेहपुर	२७।१०	८१।१३	− ५। ८	बांसी	२७।११	८२।५६	+ १।४४	महरोनी	२४।३५	७८।४३	−१५। ८
देहरादून	३०।१९	७८।०२	−१७।५२	फतेहपुर सीकरी	२७।०६	७७।४०	−१९।२०	बाह	२६।५३	७८।३६	−१५।३६	महाराजगंज	२६।०७	८४।२९	+ ७।५६
देहरी	२४।५२	८४।११	+ ६।४४	फतेहाबाद	२७।०१	७८।१९	−१६।४४	बिजनौर	२९।२२	७८।०८	−१७।२८	महोबा	२५।१७	७९।५२	−१०।३२
दोहरी घाट	२६।१६	८३।३१	− ४। ४	फरीदनगर	२८।४६	७७।३७	−१९।३२	बिजौरी	२८।०६	८२।२०	− ०।४०	माणिकपुर	२५।०४	८१।०७	− ५।३२
धनौरा	२८।५८	७८।१५	−१७।००	फरीदपुर	२८।१३	७९।३३	−११।४८	बिधूना	२६।४९	७९।३१	−११।५६	मिर्जापुर	२५।०९	८२।३५	+ ०।२०
धामपुर	२९।१९	७८।३१	−१५।५६	फरीदाबाद	२८।२६	७७।१९	−२०।४४	बिलग्राम	२७।११	८०।०२	− ९।५२	मिसरिख	२७।२७	८०।३१	− ७।५६
नकूर	२९।५५	७७।१८	−२०।४८	फरुखाबाद	२७।२४	७९।३४	−११।४४	बिलसी	२८।०८	७८।५५	−१४।२०	मगराबाद शाहपुर	२५।४०	८२।११	− १।१६
नगीना	२९।२७	७८।२७	−१६।१२	फिरोजाबाद	२७।०९	७८।२४	−१६।२४	बिलारी	२८।३८	७८।४८	−१४।४८	मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४१	−१९।१६
नजीबाबाद	२९।३८	७८।२०	−१६।४०	फूलपुर	२५।३३	८२।०६	− १।३६	बिलासपुर	२८।५३	७९।१६	−१२।१५	मुगलसराय	२५।१८	८३।०७	+ २।२८
नरेन्द्रनगर	३०।१०	७८।२०	−१६।४०	फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	− १।२८	बीसलपुर	२८।१८	७९।४८	−१०।४८	मुबारकपुर	२६।०५	८३।१८	+ ३।१२
नरैनी	२५।११	८०।२९	− ८। ४	बक्सर	२५।३५	८३।५९	+ ५।५६	बीगगंज	२७।००	८४।५२	+ ९।२८	मुरादाबाद	२८।५०	७८।४७	−१४।५२
नवाबगंज	२८।३३	७९।३८	−११।२८	बगहा	२७।०६	८४।०५	+६।२०	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	−१८।३६	मुसाफिरखाना	२६।२२	८१।४७	− २।५२
नवाबगंज	२६।५२	८२।०८	− १।२८	बदायूं	२८।०३	७९।०७	−१३।३२	बेरी	२८।४२	७६।३५	−२३।४०	मुस्किरा	२५।४०	७९।४८	−१०।४८
नवाबगंज	२६।५६	८१।१३	− ५। ८	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।२९	−१२। ४	बेलागंज	२५।५६	८१।५९	− २। ४	मुहम्मदाबाद	२६।०२	८३।२३	+ ३।३२
नानपाडा	२७।५२	८१।३०	− ४।००	बनारस	२५।२०	८३।००	+ २।००	बेला (प्रतापगढ़)	२५।५४	८२।०१	− १।५६	मुहम्मदी	२७।५७	८०।१३	− ९। ८
निघासन	२८।१४	८०।५२	− ६।३२	बबीना	२५।१५	७८।२८	−१६। ८	बैजनाथ	२९।५५	७९।३७	−११।३२	मेजा	२५।०९	८२।०५	− १।४०
घाहतीर	२९।२०	७८।२३	−१६।२८	बबेरू	२५।३४	८०।४३	− ७। ८	भदोही	२५।२५	४२।३४	+ ०।१६	मेरठ	२८।५९	७७।४२	−१९।१२
नैनीताल	२९।२३	७९।२७	−१२।१२	बहजोई	२८।२४	७८।३७	−१५।३२	भरथाना	२६।४५	७९।१४	−१३। ४	मेहनगर	२५।५३	८३।०७	+ २।२८
नौतांवा	२७।२६	८३।२५	+ ३।४०	बहराइच	२७।३५	८१।३६	− ३।३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	−१५।००	[illegible]	२६।५९	८३।०७	+ २।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तर प्रदेश के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
मैनपुरी	२७।१८	७९।०१	−१३।५६	लहार	२६।१२	७८।५७	−१४।१२	सिकन्दराराऊ	२७।४२	७८।२७	−१६।१२
मैलानी	२८।१७	८०।२१	− ८।३६	लालकुआ	२९। ४	७९।३३	−११।४८	सिगरामऊ	२५।५७	८२।२३	− ०।२८
मोहनलाल गंज	२६।४१	८१। २	− ५।५२	लसा	२४।५३	८२।५३	+ १।३२	सिधौली	२७।१५	८०।५४	− ६।२४
मोडहा	२५।४१	८०। ७	− ९।३२	लैंस डाउन	२९।५०	७८।४१	−१५।१६	सिरसागंज	२७। ३	७८।४२	−१५।१२
मौरवां	२६।२५	८०।५५	− ६।२०	वाराणसी	२५।२०	८३।००	+ २। ०	सिराथू	२५।४०	८१।१७	− ४।५२
रसरा	२५।५१	८३।५१	+ ५।२४	शाहगढ़	२४।१९	७९।०८	−१३।२८	सिसवा बाजार	२७। ९	८३।४६	+ ५।०४
राजाखेड़ा	२६।५५	७८।११	−१७।१६	शाहगंज	२६।०३	८२।४१	+ ०।४४	सीतापुर	२७।३४	८०।४१	− ७।१६
राथ	२५।३५	७९।३४	−११।४४	शाहजहांपुर	२७।५३	७९।५५	−१०।२०	सुआर	२९। २	७९।०३	−१३।४८
रानीखेत	२९।३९	७९।२५	−१२।२०	शाहाबाद	२७।३९	७९।५७	−१०।१२	सुल्तानपुर	२६।१६	८२। ४	− १।४४
राबर्ट्स गंज	२४।४२	८३।०४	+ २।१६	शिकोहाबाद	२७।०६	७८।३६	−१५।३६	सेमरिआ	२४।१६	७९।५४	−१०।२४
रामनगर	२९।२४	७९।०७	−१३।३२	शेरकोट	२९।२१	७८।३८	−१५।२८	सैदपुर	२५।३३	८३।११	+ २।४४
रामनगर	२५।१७	८३। २	+ २। ८	श्रीनगर (गढ़वाल)	३०।१३	७८।४७	−१४।५२	सोनवा	२७।४०	८१।४५	− ३।००
रामपुर	२८।४९	७९। २	−१३।५२	सगरी	२६। ८	८३।१९	+ ३।१६	हमीरपुर	२५।५७	८०। ९	− ९।२४
रामसनेही घाट	२६।४५	८१।३०	− ४।००	सदाबाद	२७।२७	७८। ३	−१७।४८	हरदोई	२७।२५	८०। ७	− ९।३२
रायपुर	३०।१९	७८। ६	−१७।३६	संभल	२८।३५	७८।३३	−१५।४८	हरपाल पुर	२५।१७	७९।२०	−१२।४०
रायबरेली	२६।१४	८१।१६	− ४।५६	सरधना	२९। ९	७७।३७	−१९।३२	हरिद्वार	२९।५८	७८।१०	−१७।२०
रुड़की	२९।५२	७७।५३	−१८।२८	सरीला	२५।४७	७९।४२	−११।१२	हरिनागर	२७। ९	८४।१९	+ ७।१६
रुदौली	२६।४५	८१।४५	− ३।००	सलोन	२६। ३	८१।२५	− ४।२०	हरैया	२६।४७	८२।३६	+ ०।२४
लक्सर	२९।४८	७८। २	−१७।५२	ससराम	२४।५७	८४।०२	+ ६। ८	हल्द्वानी	२९।१३	७९।३१	−११।५६
लखनऊ	२६।५१	८०।५५	− ६।२०	सहसवा	२८। ५	७८।४५	−१५।००	हलिया	२४।४८	८२।२०	− ०।४०
लखीमपुर	२७।५७	८०।४९	− ६।४४	सहारनपुर	२९।५८	७७।३३	−१९।४८	हसनपुर	२८।४३	७८।१७	−१६।५२
लखीमपुर (खेड़ी)	२७।५७	८०।४६	− ६।५६	साफीपुर	२६।४७	८०।२३	− ८।२८	हाजीपुर	२५।४१	८५।१३	+१०।५२
लखेड़ी	२५।४०	७६।१०	−२५।२०	साण्डिला	२७।०५	८०।३१	− ७।५६	हाता	२६।४३	८३।४८	+ ५।१२
ललितपुर	२४।४१	७८।२५	−१६।२०	सारनाथ	२५।२४	८३। १	+ २। ४	हाथरस	२७।३६	७८।०३	−१७।४८
लश्कर	२६।१३	७८।१०	−१७।२०	सासनी	२७।४३	७८।०५	−१७।४०	हापुड़	२८।४३	७७।४७	−१८।५२
लहरपुर	२७।३८	८०।५७	− ६।१२	सिकन्दराबाद	२८।२७	७७।४२	−१९।१२	हैदरगढ़	२६।३७	८१।२२	− ४।३२

अगले वर्ष (सं० २०४८ वि. में) इन्हीं पृष्ठों पर मध्यप्रदेश के नगरों-ग्रामों के अक्षांश-रेखांश स्टैंण्डर्ड अन्तर एवं दैनिक लग्नों का प्रारम्भ-समाप्ति तथा सूर्योदयास्त काल दिया जाएगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उ० प्र० के सूर्योदयास्त आदि

सूर्योदयास्त सारणी :—

तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.
जन १	६।०७	१८।७	मई ४	५।५३	१८।०	सित. ५	५।५५	१८।१२
५	६।१	१८।९	८	५।५३	१८।०	९	५।५४	१८।१०
९	६।३	१८।११	१२	५।५३	१८।०	१३	५।५३	१७।५९
१३	६।५	१८।१२	१६	५।५३	१८।०	१७	५।५१	१७।५८
१७	६।६	१८।१४	२०	५।५३	१८।०	२१	५।५०	१७।५६
२१	६।८	१८।१५	२४	५।५३	१८।०	२५	५।४८	१७।५५
२५	६।९	१८।१६	२८	५।५४	१८।१	२९	५।४७	१७।५४
२९	६।९	१८।१७	जून १	५।५४	१८।१	अक्तू. ३	५।४६	१७।५२
फर २	६।१०	१८।१७	५	५।५५	१८।२	७	५।४५	१७।५१
६	६।१०	१८।१८	९	५।५५	१८।३	११	५।४३	१७।५०
१०	६।११	१८।१८	१३	५।५६	१८।४	१५	५।४३	१७।४९
१४	६।११	१८।१८	१७	५।५७	१८।४	१९	५।४२	१७।४८
१८	६।११	१८।१८	२१	५।५८	१८।५	२३	५।४१	१७।४८
२२	६।१०	१८।१७	२५	५।५९	१८।६	२७	५।४१	१७।४७
२६	६।१०	१८।१७	२९	५।५९	१८।७	३१	५।४०	१७।४७
मार्च १	६।९	१८।१६	जुला. ३	६।००	१८।८	नव. ४	५।४०	१७।४७
५	६।८	१८।१५	७	६।१	१८।८	८	५।४०	१७।४७
९	६।७	१८।१४	११	६।२	१८।९	१२	५।४१	१७।४८
१३	६।६	१८।१३	१५	६।२	१४।९	१६	५।४१	१७।४८
१७	६।५	१८।१२	१९	६।२	१२।१०	२०	५।४२	१७।४९
२१	६।४	१८।११	२३	६।३	१८।१०	२४	५।४३	१७।५०
२५	६।३	१८।९	२७	६।३	१८।१०	२८	५।४४	१७।५२
२९	६।२	१८।८	३१	६।३	१८।१०	दिस. २	५।४६	१७।५३
अप्रै २	६।००	१८।७	अग ४	६।२	१८।९	६	५।४७	१७।५५
६	५।५९	१८।६	८	६।२	१८।९	१०	५।४९	१७।५७
१०	५।५८	१८।५	१२	६।२	१८।८	१४	५।५१	१७।५८
१४	५।५७	१८।४	१६	६।१	१८।७	१८	५।५३	१८।१०
१८	५।५६	१४।३	२०	६।०	१८।७	२२	५।५५	१८।१२
२२	५।५५	१८।२	२४	५।५९	१८।६	२६	५।५७	१८।१४
२६	५।५४	१८।१	२८	५।५८	१८।४	३०	५।५९	१८।१६
३०	५।५४	१८।१	सित १	५।५७	१८।३	जन ३	६।१	१८।१८
मई ४	५।५३	१८।०	५	५।५५	१८।२	---	---	---

चरसारणी :—

सूर्योदय में + सूर्यास्त में− दक्षिण क्रान्ति		सूर्योदय में− सूर्यास्त में + उत्तर क्रान्ति		क्रान्ति	अक्षांश +२४°	+२५°	+२६°	+२७°	+२८°	+२९°	+३०°	
				अंश	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
मार्च २१	सित. २३	सित. २३	मार्च २१	०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१९	२६	२१	२४	१	१।४७	१।५२	१।५७	२।३	२।८	२।१३	२।१९	२।२५
१६	२९	१८	२६	२	३।३४	३।४४	३।५४	४।५	४।१५	४।२६	४।३७	४।४९
१४	अक्तू. १	१६	२९	३	५।२१	५।३६	५।५२	६।७	६।२३	६।४०	६।५७	७।१३
११	४	१३	३१	४	७।८	७।२८	७।४९	८।११	८।३२	८।५३	९।१५	९।३८
८	६	१०	अप्रै. ३	५	८।५६	९।२२	९।४७	१०।१२	१०।४०	११।६	११।३४	१२।३
६	९	८	६	६	१०।४३	११।१४	११।४६	१२।१७	१२।४९	१३।२२	१३।५५	१४।२९
३	१२	५	८	७	१२।३३	१३।८	१३।४४	१४।२१	१४।५८	१५।३७	१६।१७	१६।५६
फर. २८	१४	३	११	८	१४।२१	१५।२	१५।४४	१६।२६	१७।८	१७।५२	१८।३७	१९।२३
२६	१७	अग. ३१	१४	९	१६।११	१६।५७	१७।४३	१८।३१	१९।२०	२०।९	२१।०	२१।५२
२३	२०	२८	१६	१०	१८।१०	१८।५२	१९।४४	२०।३७	२१।३१	२२।२६	२३।२२	२४।२०
२०	२३	२५	१९	११	१९।५२	२०।४८	२१।४६	२२।४४	२३।४४	२४।४४	२५।४६	२६।४९
१८	२५	२२	२२	१२	२१।४३	२२।४५	२३।४८	२४।५२	२५।५८	२७।५	२८।१३	२९।२२
१५	२८	१९	२५	१३	२३।३५	२४।४२	२५।५१	२७।०१	२८।१२	२९।२५	३०।३९	३१।५४
१२	३१	१६	२८	१४	२५।३०	२६।४२	२७।५६	२९।११	३०।२८	३१।४७	३३।६	३४।२८
९	नव. ४	१३	मई १	१५	२७।२४	२८।४३	३०।२	३१।२४	३२।४७	३४।११	३५।३६	३७।४
६	७	९	५	१६	२९।२०	३०।४४	३२।९	३३।३५	३५।५	३६।३५	३८।०७	३९।४१
२	१०	६	८	१७	३१।१८	३२।४६	३४।१७	३५।५०	३७।२५	३९।२	४०।४०	४२।२१
जन. २९	१४	२	१२	१८	३३।१६	३४।५२	३६।२८	३८।७	३९।४९	४१।३१	४३।१५	४५।१
२६	१८	जुला २९	१६	१९	३५।१६	३६।५७	३८।४०	४०।२५	४२।१२	४४।१	४५।५३	४७।४७
२१	२२	२४	२१	२०	३७।१८	३९।५	४०।५४	४२।४५	४४।३८	४६।३३	४८।३१	५०।३१
१६	२७	१९	२६	२१	३९।२२	४१।१५	४३।१०	४५।७	४७।६	४९।८	५१।१३	५३।२०
१०	दिस. ३	१३	जून १	२२	४१।२७	४३।२६	४५।२८	४७।३३	४९।३९	५१।४६	५३।५७	५६।१२
२	१२	३	१०	२३	४३।३४	४५।४१	४७।४९	४९।५९	५२।११	५४।२७	५६।४६	५९।७
दिस. २२	दिस. २२	जून २२	जून २२	२३.४	४४।२७	४६।३५	४८।४५	५०।५८	५३।१३	५५।३१	५७।५२	६०।१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न परिवर्त्तन सारणी

उ. प्र. के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथु. मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मक. मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अल्मोड़ा	-१०	-१०	-१०	-११	-११	-१२	-१३	-१३	-१३	-१२	-१२	-११
आगरा	+१	+३	+०	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
आजमगढ़	-१७	-१५	-१६	-२०	-२४	-२९	-३३	-३६	-३५	-३१	-२६	-२२
इटावा	-१	०	-१	-४	-८	-१२	-१७	-१९	-१८	-१४	-१०	-६
इलाहाबाद	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
उत्तरकाशी	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-६
उन्नाव	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
उरई	-२	०	-१	-५	-९	-१४	-१८	-२१	-२०	-१६	-११	-७
एटा	-१	०	-१	-२	-६	-१०	-१३	-१६	-१४	-११	-८	-४
कन्नौज	-६	-४	-५	-८	-११	-१५	-१८	-२०	-२०	-१६	-१३	-९
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-१२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
खुर्जा	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-६	-३
खीरी	-१०	-९	-१०	-१२	-१५	-१९	-२२	-२३	-२३	-२०	-१७	-१३
गाजियाबाद	+२	+३	+२	०	-२	-४	-६	-७	-७	-५	-३	-१
गाजीपुर	-१७	-१५	-१६	-२०	-२५	-३१	-३५	-३९	-३८	-३३	-२७	-२२
गोण्डा	-१५	-१३	-१४	-१७	-२०	-२४	-२७	-२९	-२९	-२५	-२२	-१८
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
चमोली	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-११	-११	-११	-१०	-१०	-१०
जालौन	-२	०	-१	-५	-९	-१४	-१८	-२१	-२०	-१६	-११	-७
जौनपुर	-१४	-१२	-१३	-१७	-२२	-२८	-३२	-३५	-३४	-२९	-२४	-१९
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
देवबन्द	-२	-२	-२	-३	-३	-४	-५	-५	-५	-४	-४	-३
देवरिया	-२०	-१९	-२०	-२३	-२७	-३१	-३६	-३८	-३७	-३३	-२९	-२५
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नजीबाबाद	-४	-३	-४	-५	-६	-८	-९	-१०	-१०	-८	-७	-५
नरेन्द्रनगर	-६	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१३	-११	-९
पिथौरागढ़	-११	-१०	-११	-१२	-१३	-१५	-१६	-१७	-१७	-१५	-१४	-१२
पीलीभीत	-७	-७	-७	-९	-११	-१३	-१५	-१६	-१६	-१४	-१२	-१०
पौड़ी (गढ़वाल)	-८	-८	-८	-८	-८	-८	-९	-९	-९	-८	-८	-८
प्रतापगढ़	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२५	-२९	-३३	-३१	-२६	-२१	-१६
फतेहपुर	-७	-५	-६	-१०	-१५	-२१	-२५	-२८	-२७	-२२	-१७	-१२
फरीदाबाद	+२	+२	+२	०	-२	-४	-६	-७	-७	-५	-४	-१

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथु. मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु. मि.	मक. मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
फर्रुखाबाद	-५	-४	-५	-७	-१०	-१४	-१७	-१८	-१८	-१५	-१२	-८
फिरोजाबाद	०	+२	+१	-२	-५	-९	-१२	-१४	-१४	-१०	-७	-३
फैजाबाद	-१३	-१२	-१३	-१६	-२०	-२४	-२९	-३१	-३०	-२६	-२२	-१८
बदायूं	-३	-२	-३	-५	-९	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
बनारस	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-१२	-९
बलिया	-२०	-१८	-१९	-२३	-२८	-३४	-३८	-४१	-४०	-३५	-३०	-२५
बस्ती	-१५	-१४	-१५	-१८	-२२	-२६	-३१	-३३	-३२	-२८	-२४	-२०
बहराइच	-१३	-१२	-१३	-१५	-१८	-२२	-२५	-२६	-२६	-२३	-२०	-१६
बान्दा	-४	-२	-३	-७	-१३	-१८	-२३	-२६	-२५	-२०	-१४	-९
बाराबंकी	-१०	-९	-१०	-१३	-१६	-२०	-२४	-२६	-२५	-२१	-१८	-१४
बिजनौर	-३	-२	-३	-४	-५	-७	-८	-९	-९	-७	-६	-४
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-६	-३
बेला (प्रतापगढ़)	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२५	-२९	-३३	-३१	-२६	-२१	-१६
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	-०
मिर्जापुर	-१३	-११	-१२	-१६	-२२	-२७	-३२	-३५	-३४	-२९	-२३	-१८
मुजफ्फरनगर	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
मुरादाबाद	-५	-४	-५	-६	-८	-९	-११	-१२	-१२	-१०	-८	-७
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
मैनपुरी	-३	-१	-२	-५	-९	-१२	-१५	-१७	-१७	-१३	-१०	-६
रामपुर	-६	-५	-६	-७	-९	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-९	-८
रायबरेली	-९	-८	-९	-१२	-१६	-२०	-२५	-२७	-२६	-२२	-१८	-१४
रुड़की	-२	-२	-२	-३	-३	-४	-५	-५	-५	-४	-४	-३
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लखीमपुर	-१०	-९	-१०	-१२	-१५	-१९	-२२	-२३	-२३	-२०	-१७	-१३
ललितपुर	+५	+७	+६	+१	-५	-११	-१७	-२१	-१९	-१४	-७	-१
शाहजहांपुर	-६	-५	-६	-८	-११	-१५	-१८	-१९	-१९	-१६	-१३	-९
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
सीतापुर	-९	-८	-९	-११	-१४	-१८	-२१	-२२	-२२	-१९	-१६	-१२
सुल्तानपुर	-१३	-१२	-१३	-१६	-२०	-२४	-२९	-३१	-३०	-२६	-२२	-१८
हमीरपुर	-५	-३	-४	-८	-१२	-१७	-२१	-२४	-२३	-१९	-१४	-१०
हरदोई	-७	-६	-७	-९	-१२	-१६	-१९	-२०	-२०	-१७	-१४	-१०
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हाथरस	-२०	-१९	-२०	-२३	-२७	-३१	-३६	-३८	-३७	-३३	-२९	-२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—: दुनियां के कुछ देशों के स्टैं० टा० का भारतीय स्टैं० टा० से अन्तर :—

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं० मि० को उस देश या प्रदेश के स्टैं० टा० में धन (+) ऋण (—) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा० स्टैं० टा० ज्ञात हो जायेगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टै.टा. का भा. स्टै.टा. से अन्तर (घं. मि.)
अदन	— २।३०
अफगानिस्तान	— १।००
अर्जेण्टाइना	— ८।३०
आस्ट्रेलिया — कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+ ४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+ ४। ०
प. आस्ट्रेलिया	+ २।३०
आस्ट्रिया	— ४।३०
बेल्जियम	— ४।३०
बर्मा	+ १। ०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	— ९। ०*
एटलांटिक टाईम (A.T.)	— ९।३०*
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०*
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
सिलोन	०। ०
चीन	+ २।३०
कोलम्बिया	—१०।३०
क्यूबा	—१०।३०*
चैकोस्लावाकिया	— ४।३०
डेन्मार्क	— ४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	— ३।३०*
इथोपिया	— २।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
फिन्लैण्ड	— ३।३०
फ्रांस	— ४।३०
जर्मनी	— ४।३०
घाना	— ५।३०
ग्रीस	— ३।३०
हांग कांग	+ २।३०
हंगरी	— ४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा, जावा, बाली, बांगका, बिलीटान	+ १।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+ २।३०
आरु, केई, टनिमबर, मोलुक्कस प० इरियन	+ ३।३०
ईरान (पर्शिया)	— २। ०
इराक	— २।३०
आयरलैंड (उ.)	— ५।३०*
इजरायल	— ३।३०
इटली, सिसिली	— ४।३०*
जापान	+ ३।३०
जार्डन	— ३।३०
केन्या	— २।३०
कोरिया	+ ३।३०
कुवैत	— २।३०
मलयेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+ २। ०
सरवक	+ २।३०
मारिशस	— १।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर (घं. मि.)
मैक्सिको	
सैण्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०
नीदर लैण्ड्स (हालैण्ड)	— ४।३०
न्यूजीलैण्ड	+ ६।३०
पाकिस्तान	— ०।३०
बंगला देश	+ ०।३०
फिलिप्पाइन गणतन्त्र	+ २।३०
पोलैण्ड	— ४।३०*
पुर्तगाल	— ४।३०*
राडेशिया, न्यासालैण्ड	— ३।३०
रोमानिया	— ३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	— २।३०
बहरान, कतर	— १।३०
सिंगापुर	+ २। ०
सोमाली लैण्ड, सोमालिया	— २।३०
साऊथ अफ्रीकन गणतन्त्र	— ३।३०
स्पेन	— ४।३०
सूडान	— ३।३०
स्वीडन	— ४।३०
स्विट्जरलैण्ड	— ४।३०
सीरिया	— ३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+ १।३०
टर्की	— ३।३०*
युगाण्डा	— २।३०
इंगलैण्ड	— ५।३०*
अमेरिका (U.S.A.)	
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैण्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर (घं. मि.)
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२.३०*
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
रूस (U.S.S.R.)	
मास्को,	— २।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी' तक	— १।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	— ०।३०
ओम्स्क, पू. कजक	+ ०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+ १।३०
इर्कुत्स्क	+ २।३०
याकुत्स्क, चितिन्स्क, द. सकलिन	+ ३।३०
खबरोव्स्क, ब्लादिवोस्तक, उ. सखलिन	+ ४।३०
मगदन	+ ५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+ ६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+ १।३०
दक्षिणी	+ २।३०
वेनेजुएला	— ९।३०
युगोस्लाविया	— ४।३०
नेपाल	०। ०
सिक्कम	०। ०
भूटान	०। ०

* इन स्थलों पर Summer time (ग्रीष्मकालीन समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है। जिन देशों में Summer time प्रचलित है वहां गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी 'एक घण्टा आगे किये गए टाईम को Summer time कहा जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रम साध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२५ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट-कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

आगे २९, ३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाइन में जो पल लिखे हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूंढिए जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी पलों का "सारणीस्थ घड़ी पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाइन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए—वि० सं० २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ० ४५ प० इष्ट पर शिमला (हि० प्र०) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा०, २ अंश ३७ क० ४७ वि० है। शिमला के अक्षांश ३१ अं० ६ क० (उत्तर) हैं, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ० ५५ प० हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ० ५५ प० के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ० २ प० लिखे हैं। इनका २ घ० ५५ प० से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क० ४७ वि० नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क० १७ वि० देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ० ५५ प० में जोड़ा और इष्ट काल के घ० प० भी इसमें जोड़े तो ६१ घ० ४४ प० (६० घड़ी घटाने पर १ घ० ४४ प०) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १ घ० ४४ प० नहीं हैं, अतः इस से कुछ कम १ घ० ४० प० सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाइन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा० २१ अं० को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ० ४० प०) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ० ४६ प० का १ घ० ४० प० से अन्तर ६ प० "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ी पल" (१ घ० ४४ प०) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ० ४० प०) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ पल के आगे ४० क० ० वि० लिखा है। इन्हें ११ रा० २१ अं० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि० सं० २०२९ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४१ क० ० वि० निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि—इष्ट काल के घ० प० में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिन-मान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ० प० को इष्ट के घ० प० समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशम लग्न साधन का उदाहरणः- वि. सं २०२९ के वैशाख प्रविष्टे १ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. है अतः दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं के नीचे) ४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३घ. ५६ प. में जोडकर इसमें नतकाल जोडा तो ४६ घ. ४७ प 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। "दशम लग्न सारणी" में इन "अभीष्ट घटी पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ सारणीस्थ घ. प. धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं अतः ८ रा १६ अ. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अ के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी पल" ४६।४२ और अभीष्ट घड़ी पल" ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० प. के आगे ५ प के नीचे ३० क. ० वि. मिली इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अ. में जोडने पर ८ रा. १६ अ. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १ क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अ ३१ क. ० वि. निरयन दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल → ↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
६	१०। ०	२०। ०	३०। ०	४०। ०	५०। ०	६०। ०							
७	८।३४	१७। ९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०। ०						
८	७।३०	१५। ०	२२।३०	३०। ०	३७।३०	४५। ०	५२।३०	६०। ०					
९	६।४०	१३।२०	२०। ०	२६।४०	३३।२०	४०। ०	४६।४०	५३।२०	६०। ०				
१०	६। ०	१२। ०	१८। ०	२४। ०	३०। ०	३६। ०	४२। ०	४८। ०	५४। ०	६०। ०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९। ५	५४।३३	६०। ०		
१२	५। ०	१०। ०	१५। ०	२०। ०	२५। ०	३०। ०	३५। ०	४०। ०	४५। ०	५०। ०	५५। ०	६०। ०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३। ५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०। ०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१०	+१७	२०१६	−१२	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३५	—४	२०४२	—९
२०११	+१७	२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३६	—४	२०४३	—१०
२०१२	+१६	२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३७	—५	२०४४	—११
२०१३	+१५	२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३८	—६	२०४५	—१२
२०१४	+१४	२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३९	—७	२०४६	—१३
२०१५	+१३	२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०४०	—८	२०४७	—१३
						२०३४	—३	२०४१	—९	२०४८	—१४

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों (लगभग ७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियां दी गई हैं, जिनकी मदद से लग्न आदि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)
(पलभा ६।३६।६)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	घ	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४५	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृष १	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	[illegible]																													
मिथुन २	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
कर्क ३	घ	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
सिंह ४	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
कन्या ५	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
तुला ६	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
वृश्चिक ७	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
धनु ८	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
मकर ९	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
कुम्भ १०	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
मीन ११	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													

[illegible]

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)
(पलभा ६।५५।४२)

अंश—		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
वृष १	घ.	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
मिथुन २	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
कर्क ३	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
सिंह ४	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
कन्या ५	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
तुला ६	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
वृश्चिक ७	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
धनु ८	घ	[illegible]																													
	प.	[illegible]																													
मकर ९	घ.	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
कुम्भ १०	घ	[illegible]																													
	प	[illegible]																													
मीन ११	घ	[illegible]																													
	प	[illegible]																													

[illegible]

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)
(पलभा ७।१२।१७)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१९	३०	४२
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३१
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४५	५२	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४१

कपूरथला, बरनाला, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
०	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुम्भ	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :— सा.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते हैं, तैयार करें—

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+ या —)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष—यदि "अक्षांशादि सारणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

ध्यान रहे—भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल—जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टैण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "स्थानीयमध्यमकाल" बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे—चण्डीगढ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टै. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टै. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टै.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश—आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई हैं। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे—१५ जुलाई १९६२ ई. को अयनांश जानने के लिए "अयनांशसारणी" नं. (१) में से सन् १९६२ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें "अयनांशसारणी" नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल—आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है—

सा. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सा. का. लेकर जोड़ें। इसमें सा. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सा. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण—यहांहम १५ जुलाई १९६९ को भा.स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टै. अन्तर—२५ मि. २० सै. है। स्टैण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सै. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सां.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सै.) लिया। इससे कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२ घं. ४८ मि.४९ सै.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सै. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घं. २९ मि. ५१ सै. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घं. १९ मि. ४० सै. जोड़ा तो २९ घं. ४९ मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सै. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सै. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टै. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल ४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टै.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

८८ अं. २४ क. (पूर्व) और स्टैं अन्तर + २३ मि. ३६ सै. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ सै. हुए। यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै. स्थानीय-मध्यमकाल हुआ। अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक न. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि. ५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सै. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए। इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं, २ मि. ३७ सै. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै. हुए। क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था। अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना। लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. का प्रयोग में लाइए।

[२] सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टैं. टा. से (—) ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सां. का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७० को ० घं. १५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं. अं.—२६ मि. ३२ सै. है। यहां स्टैं. टा. के घं मि. से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टैं.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टैं. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना। सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४० मि. ४९ सै. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ सै. हुए। जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार लगभग ० है। अब ११ घं. २७ मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ सै. हुए। क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अ. से कम था, अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे। इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. १६ मि. २२ सै. ही हुआ। यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए।

[३] जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं—लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे—मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९८४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९८४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ सै. मिले। क्योंकि हमारा सन् लीपइयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. ५१ मि. ४५ सै.) ही लेंगे और इन्हें ही ६ घं. ३७ मि. १७ सै. में जोड़ेंगे। ध्यान रहे—यदि सन् १९८४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि :—

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सा. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें। इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सा. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है। अतः अधिकतर यही सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी न मिले। ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सा. का. से कम) सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम (अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट करें—यह "स्थूलतम लग्न" है। अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है)। ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सा. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें। ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी। अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा। इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :—लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न) दिया गया है। इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें। यह "स्थूलदशमलग्न" है। सां. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें 'स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा। इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण :—चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सां. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है। चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. हैं। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है। यह "स्थूलतम लग्न" है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे १७३ अ. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है। हमारे अभीष्ट सा. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है। इन २१ मि. (सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७०क. (=४ अं.३०क.) मिलीं। इन्हें "स्थूलतमलग्न" में जोड़ने पर १७८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ म]

साम्पातिक काल घं मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अक्षांश ८° (उ) लग्न अं क	अक्षांश ११° (उ.) लग्न अं क	अक्षांश १४° (उ.) लग्न अं क	अक्षांश १७° (उ.) लग्न अं क	अक्षांश २०° (उ.) लग्न अं क
०।०	०।०	९३।१२	९४।२३	९५।४०	९६।५६	९८।१४
०।३०	८।१०	१००।३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।३	१०९।१३	११०।२४	१११।३६
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।९	११८।१४
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३३
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।६
४।०	६२।५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४६	१५१।२३	१५२।१
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५
८।०	११७।५५	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५१	२४१।४६
११।०	१६३।४३	२५३।६	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६

साम्पातिक काल घं मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं क.	अक्षांश ८° (उ.) लग्न अं. क.	अक्षांश ११° (उ.) लग्न अं क.	अक्षांश १४° (उ.) लग्न अं क.	आक्षांश २६° (उ.) लग्न अं क.	अक्षांश ३०° (उ.) लग्न अं क.
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६
१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।९	२७६।५०	२७५।२९
१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
१५।०	२२७।२८	३०९।५८	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
१६।०	२४२।५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४८
१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३४
२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१४
२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।४	५२।९	५३।१८	५४।३२
२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	७४।४५	७६।३	७७।२५
२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	८१।५१	८३।१०	८४।३१
२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२७
२४।०	०।०	९३।१२	९४।२३	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अंश ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ. यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और पन्ना के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अतः इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा. ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्नसाधन का उदाहरण :— १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर ही पन्ना (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय पन्ना में सां. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि के आगे दशमलग्न क्रमशः ८३ अं. ७ क एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिलीं। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

ध्यान दें :—यहां हमने सां. का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी जन्म में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा '[illegible]' में हमने किया है—वहीं पढ़ें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ ख]

साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए	अक्षांश २३° (उ.)	अक्षांश २६° (उ.)	अक्षांश २९° (उ.)	अक्षांश ३२° (उ.)	अक्षांश ३५° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.
०।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४
०।३०	८।१०	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५९	११०।२४	१११।५१
१।०	१६।१७	११२।४९	११४।४	११५।२२	११६।४३	११८।७
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।३३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३२
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०
४।०	६२।५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२
७।३०	११०।४८	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६
८।०	११७।५५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९
८।३०	१२५।९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०
९।३०	१४०।५	२२७।२९	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४४
११।०	१६३।४३	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३
११।३०	१७१।५०	२५३।४६	२५२।२९	२५१।३	२४९।३६	२४८।७
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६

साम्पातिक काल	सभी स्थानों के लिए	अक्षांश २३° (उ.)	अक्षांश २६° (उ.)	अक्षांश २९° (उ.)	अक्षांश ३२° (उ.)	अक्षांश ३५° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.
१२।०	१८०।०	२६०।३५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६
१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४१	२६४।१९	२६२।३६	२६०।२४
१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।१४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।१९	२७८।२	२७६।११	२७४।२९
१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।४९	२८५।२२	२८३।५६	२८१।४५
१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।२०	२८९।२९
१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४४	३०१।१२	२९९।२८	२९७।१८
१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।११	३०६।२५
१६।०	२४२।५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।४४
१६।३०	२४९।१२	३३०।२५	३२९।३९	३२८।३९	३२७।२८	३२६।४
१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।४०	३४९।१६	३४८।४६	३४८।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।१४	११।४१
१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।४
१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५६
२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।६
२०।३०	३०५।९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३५
२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।१६	५८।४८	६०।३२	६२।२२
२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।१	७४।३८	७६।२४	७८।१५
२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
२३।०	३४३।४३	८५।५६	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२९
२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।९
२४।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. १.

सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.
१९३६	६।३७।४	१९४३	६।३८।१५	१९५०	६।३९।२७	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२
१९३७	६।४०।३	१९४४	६।३७।१७	१९५१	६।३८।३०	१९५८	६।३९।४३	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५
१९३८	६।३९।६	१९४५	६।४०।१९	१९५२	६।३७।३३	१९५९	६।३८।४५	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६।३९।३८
१९३९	६।३८।८	१९४६	६।३९।१९	१९५३	६।४०।३३	१९६०	६।३७।४७	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०
१९४०	६।३७।११	१९४७	६।३८।२२	१९५४	६।३९।३५	१९६१	६।४०।४७	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९
१९४१	६।४०।१०	१९४८	६।३७।२५	१९५५	६।३८।३८	१९६२	६।३९।५०	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	६।३९।१२	१९४९	६।४०।२५	१९५६	६।३७।४१	१९६३	६।३८।५२	१९७०	६।४०।५	१९७७	६।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
↓	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.
१	०।०।०	२।२।१३	३।५२।३६	५।५४।५०	७।५३।७	९।५५।२१
२	०।३।५७	२।६।९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७।४	९।५९।१७
३	०।७।५३	२।१०।६	४।०।३०	६।२।४३	८।१।०	१०।३।१४
४	०।११।५०	२।१४।२	४।४।२६	६।६।४०	८।४।५७	१०।७।१०
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४।८।२३	६।१०।३६	८।८।५३	१०।११।७
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५।३
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९।०
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४।९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८।५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९
११	०।३९।२५	२।४१।३८	४।३२।२	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५५	६।४२।९	८।४०।२५	१०।४२।३९
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६।६	८।४४।२२	१०।४६।३५
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४८	६।५०।२	८।४८।१८	१०।५०।३२
१६	०।५९।८	३।१।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८
१७	१।३।४	३।५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५
१८	१।७।१	३।९।१४	४।५९।३८	७।१।५२	९।०।८	११।२।२१
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५।३।३५	७।५।४८	९।४।४	११।६।१८
२०	१।१४।५४	३।१७।८	५।७।३१	७।९।४५	९।८।१	११।१०।१५
२१	१।१८।५१	३।२१।५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२
२२	१।२२।४८	३।२५।१	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८।८
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२।५
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६।१
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५।८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९।५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३।१	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४	
३२						

ता	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता
↓	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	घ. मि. से.	↓
१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८।४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६।२।०	१८।०।१७	२०।२।३१	२२।०।४७	२
३	१२।१।३१	१४।३।४४	१६।५।५७	१८।४।१४	२०।६।२७	२२।४।४३	३
४	१२।५।२७	१४।७।४०	१६।९।५३	१८।८।१०	२०।१०।२४	२२।८।४०	४
५	१२।९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२।७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६।३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०।०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५७	२०।२६।१०	२२।२४।२६	८
९	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०।६	२२।२८।२३	९
१०	१२।२९।६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४।३	२२।३२।२०	१०
११	१२।३३।३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८।०	२२।३६।१६	११
१२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	१२।४०।५६	१४।४३।९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४।९	१३
१४	१२।४४।५२	१४।४७।६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८।६	१४
१५	१२।४८।४९	१४।५१।२	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२।२	१५
१६	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७।१।९	१८।५९।२६	२१।१।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१३।०।३८	१५।२।५२	१७।५।५	१९।३।२२	२१।५।३६	२३।३।५३	१८
१९	१३।४।३५	१५।६।४८	१७।९।२	१९।७।१९	२१।९।३२	२३।७।४९	१९
२०	१३।८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९।८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३।५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७।१	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७।८	२३।३५।२५	२६
२७	१३।३६।८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१।४	२३।३९।२१	२७
२८	१३।४०।४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५।१	२३।४३।१८	२८
२९	१३।४४।१	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१३।५१।५४	१५।५४।७		१९।५४।३८		२३।५५।७	३१
३२						२३।५९।३	३२

*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड कर कोष्ठक नं. २ का प्रयोग में लाइए।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सां. का. संस्कार (सैकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	−१	−५	−९	−१३	−१७	−२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

कि. → / अं. ↓	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.	कि. सै.
०	०।०	०।१	०।२	०।२	०।३	०।४	०।५	०।६	०।७	०।७	०।८	०।९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१।०	१।१	१।२	१।२	१।३	१।४	१।५	१।६	१।७	१।७	१।८
७	१।९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२।०	२।१	२।२	२।२	२।३	२।४	२।५	२।६	२।६	२।७
१३	२।८	२।९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३।०	३।१	३।२	३।२	३।३	३।४	३।५	३।६	३।६
१९	३।७	३।८	३।९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३८	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९४५	२३।५।१९	१९६९	२३।२५।२९
१९२२	२२।४६।३	१९४६	२३।६।१०	१९७०	२३।२६।१६
१९२३	२२।४६।५४	१९४७	२३।७।०	१९७१	२३।२७।६
१९२४	२२।४७।४४	१९४८	२३।७।५०	१९७२	२३।२७।५७
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३।८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३।९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१।५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२।२	१९७७	२३।३२।८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६।७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७।३	१९८३	२३।३७।९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८।०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३।०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३।१।८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३।१।५८	१९६५	२३।२२।५	१९८९	२३।४२।११
१९४२	२३।२।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३।१
१९४३	२३।३।३९	१९६७	२३।२३।४५	१९९१	२३।४३।५२
१९४४	२३।४।२९	१९६८	२३।२४।३६	१९९२	२३।४४।४३

अयनांश सारणी न. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुल २१ २१ २२ २२ २३ ... ४८ ४८ ४९ ४९ ४९ ५०

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचांग में जो पहिले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :– दैनिक लग्नसारणी में अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे– मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं ० मि है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से जान लिया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं ० मि में जोड़ने पर १२ घं १९ मि मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	—१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	—२	—५	—६	—६	—३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	—१	—४	—८	—११	—१२	—१२	—९	—६	—२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	—१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	—१	—४	—८	—११	—१३	—१३	—९	—६	—२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	—१	—८	—१३	—११	—४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	—२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	—३	—१०	—१४	—१३	—५	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	—१	—२	—२	—२	—१	—१	०
कलकत्ता	—३२	—२८	—३०	—३६	—४५	—५३	—६०	—६५	—६३	—५६	—४७	—४०
कांगड़ा	०	—१	—१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	—६	—५	—६	—९	—१३	—१७	—२३	—२४	—२३	—१९	—१४	—११
काशी	—१५	—१३	—१४	—१८	—२४	—२९	—३४	—३७	—३६	—३१	—२४	—२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	—१	—१	—१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	—५	—८	—७	—२	+४	+९
गुड़गाँव	+४	+४	+४	+२	०	—२	—४	—५	—५	—३	—१	+१
गदरामपुर	+३	—२	—२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	—१८	—१७	—१८	—२१	—२५	—२९	—३४	—३६	—३५	—३१	—२७	—२२
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	—४	—९	—१३	—१६	—१५	—११	—६	—२
चम्बा	—१	—२	—१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	—३	—५	—४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	—१	—१	+१	+२	+४
जामनगर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+५	+५	+८	+१४	+१८
झांसी	+४	+५	+४	०	—५	—११	—१४	—१६	—१८	—१३	—७	—२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	—१	—३	—५	—६	—६	—४	—२	०
देहरादून	—५	—५	—५	—५	—५	—५	—६	—६	—६	—५	—५	—५
नागपुर	+८	+११	+१०	+३	—७	—१७	—२६	—३१	—२९	—२०	—११	—३
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+३	+३	—३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुम्भ मि.	मीन मि.
नैनीताल	—८	—७	—८	—९	—१०	—१२	—१३	—१४	—१४	—१२	—११	—९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+१
पटना	—२४	—२२	—२३	—२७	—३२	—३८	—४२	—४५	—४४	—३९	—३४	—२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	—११	—९	—१०	—१४	—१९	—२४	—२९	—३१	—३१	—२६	—२१	—१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३९	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	—४	—१०	—८	+३	+१४	+२५
बरेली	—६	—६	—६	—८	—१०	—१२	—१४	—१५	—१५	—१३	—११	—९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	—१६	—३२	—४०	—३७	—२२	—६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	—२	—४	—६	—८	—९	—९	—७	—५	—३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	—२	—६	—९	—११	—११	—७	—४	०
भुवनेश्वर	—१८	—१७	—१९	—२४	—३४	—४४	—५४	—५८	—५७	—४८	—३७	—२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	—१	—८	—१५	—२०	—१८	—११	—४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	—११	—२७	—४३	—५१	—४८	—३१	—१५	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	—२	—६	—९	—१०	—१०	—७	—४	०
मण्डी (हि.प्र.)	—२	—३	—३	—२	—१	०	+३	+२	+२	+१	०	—१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	—१	०	—१	—२	—३	—५	—६	—७	—७	—५	—४	—२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	—२	—३	—३	—१	+१	+२
लखनऊ	—६	—८	—९	—१२	—१५	—१९	—२३	—२५	—२४	—२०	—१५	—१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	—२	—२	—२	—२	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+६	+५
सहारनपुर	—१	—१	—१	—२	—३	—३	—४	—४	—४	—३	—३	—२
हरिद्वार	—४	—४	—४	—५	—५	—६	—७	—७	—७	—६	—६	—५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	—५	—१७	—२८	—३५	—३३	—२२	—८	+३
होशियारपुर	+३	+१	+१	+२	+२	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ उफा उषा				रो ह श्रवण				मृ चि ध			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू	०	३	१८	च	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च	०	६	०	मं	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श	१	१	९
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु.	१	८	०	सू	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	च	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ स्वा श.				पुन वि पू भा				पु अनु उ भा			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श.	२	१०	६	बु	२	३	६	के.	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु.	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु	३	०	०	सू.	०	९	१८	च.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	च.	१	४	०	मं.	१	१	९
च	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले ज्ये रे				म मू अश्विनी				पू फा पूषा भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	च.	१	८	०
सू.	०	१०	६	च.	०	७	०	मं.	१	२	०
च.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्रमिदम्

मंगला व १			पिंगला व २			धान्या व ३			भ्रामरी व ४			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			दशेश ग्रह
आर्द्रा चि श्र			पुन स्वा ध			पुष्य वि श			श्ले अनु पू भा			जन्म नक्षत्र
म	०	१०	पि	[illegible]	[illegible]	धा	३	०	भ्रा	५	१०	
पि	०	२०	धा	[illegible]	[illegible]	भ्रा	४	०	भ	६	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ	५	०	उ	८	०	
भ्रा	१	१०	भ	३	१०	उ	६	[illegible]	सि	९	१०	
भ	[illegible]	[illegible]	उ	[illegible]	[illegible]	सि.	७	०	स	१०	२०	
उ	[illegible]	[illegible]	सि	४	२०	स	८	०	म.	१	१०	
सि	२	१०	स	५	१०	म	१	०	पि	२	२०	
स	२	२०	म	०	२०	पि	२	०	धा	४	०	

भद्रा व ५			उल्का व ६			सिद्धा व ७			संकटा व ८			दशा तथा वर्ष
बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रह
म ज्ये उभा			पू फा मू रे			उ फा पू षा			ह. म. ह उषा.			जन्म नक्षत्र
भ	[illegible]	[illegible]	उ	१२	०	सि.	१६	१०	स.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ्र.सि. कष्टदशा—पि.उ.स.
उ.	१०	०	सि	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०	
सि.	११	२०	स	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०	
स	१३	१०	म	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
म	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा	५	०	भ्रा.	८	०	भ	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्त-भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवे। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होगें। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दे लब्धि पल होगीं। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होती है।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रु नाश:	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	व्रण:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ:	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वार्तानि	पीड़ा	धननाश:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्यं	राजभी	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ:	शोक:
मन्था	[illegible]	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	अयमनम	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यभा:	लाभ:	कष्टम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भाग दे लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का [illegible] ... फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से [illegible]

[illegible] वर्ष-प्रवेश सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना—चैत्रमिद्द, वर्षमान मर्गभिदान्तीय, वर्षमान से ८।। पल कम है। अत सूक्ष्म-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्मवर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहें तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकार—(१) अभीष्ट संवत (जिस संवत का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछली संवत से करना (वर्षायनसंप्रगपर्वकालत्र सौगत्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। मुन्थानयनप्रकार:—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटावे, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते हैं।

स्त्रीपुरुष बल—सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल स्त्रीग्रह (चं. बु. श. श) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू. मं. गु.) ४।५।६।१०।११।१२ के स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल-दिन के लग्न में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के लग्न में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं	बु.	म	श.	म	गु.	चं.	दिनलग्नेश
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	गु.	श.	मं.	बु.	चं.	रात्रिलग्नेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है। उनसे प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य कठिनता एवं यत्न भाव से सफल हो पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल—शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं। फल—कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णय:—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रिराशीश ४, सग्नेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा। फल—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखस्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश-तृतीयेश व चतुर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष-लग्नेश वक्री हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	एकपाद दृष्टि:
५।६	५।६	५।६	५।६	०	५।६	५।६	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
च. मं. गु.	र. बु.	र. चं. गु.	र. रा. शु.	र. च. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहा:
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	म. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशय: परमोच्चांशा:
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशय: नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद.	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुसक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	अतिस्थिर	चर	चर	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	भाण्डी	जल	उत्कट	ऊसर	ऊसर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफवात	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौर श्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	बिबर	बिवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ? और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीदशाबोधक चक्र

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
१	२	३	४	५	६	७	८
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो या पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

पंचमेश और चन्द्रमा बली होकर पाँचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें १५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसको राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यह जन्म का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। [illegible] वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना।अन्य वर्ष रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग—यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। [illegible] अशुभ कष्ट [illegible] होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होता।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नदगाव कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा सर्व कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम बार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थ यात्रा में गुरु-शुक्रास्त अवश्य विवायें है।

चन्द्र-शुद्धि—अपनी राशि से ४, ८, १२वीं छोड़ अन्य राशियां हों तो चन्द्र-शुद्धि समझें। अभिषेक निषेक, यज्ञोपवीत तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्र पुरुष को ग्राह्य है। कन्या को १२ चन्द्र का निषेध है।

तारा शुद्धि—अपने नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र तक की संख्या में ९ का भाग देकर २।४।६।८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। **शुभ लग्न**—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक सम रात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन। सन्ध्या काल मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली ४ रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात, वैधृति योग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, जन्म राशि से अष्टम लग्न पाप युक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार का मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमंत संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमान्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषोमलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णु पूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावे। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तन पान कराना शुभ है। आगे अन्न-प्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो., मृ., ह., स्वा अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि, गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जल पूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, श्र पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जल पूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
वैधव्य	मरण	कुशलता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभ वार में, मृ. रे चि. अनु ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभ ग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पाप ग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मृ. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम-शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे-चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने मे पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का डिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, १२ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु, या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समयपर करने से मनुष्य के हानिया (आन्त्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिनके प्रथमप्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत मे प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य मे चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन को छोड़ कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ.. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांचमास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास मे नहीं करना चाहिए।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्मं वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है।

क्षौर करवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं, वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं। वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नैंवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में किया भोजन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष कथन—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है। किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं। वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य. अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने पिरोने (सूचि कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ. श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश, ६।८ वे स्थान में, चं. श. १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमा; लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वें नीचे दिन, संध्याकाल. ४, ८, ६, १४, १५.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

साझे व्यापार (हिस्सेदारी) में परस्पर अशुभ षडष्टक तथा गण-दोष नहीं होना चाहिए।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारे आकाश में	पंचशलाका में विद्ध	सप्तशलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	अंध	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मध्य	तीक्ष्णदारुण	मणि	१	पूषा	पूषा
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारुण	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उषा	उषा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूषा	पूषा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारुण	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारुण	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व.	सुलो.	चरचल	वामन	३	भ.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व.	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व.	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या या चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (२), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह(+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १२५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो, अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। आवश्यके दोष शान्ति—द्विर्द्वादश दोष होने पर नाड़ी-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "नाड्योऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(गुरुः)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थं महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम १२ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः। गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों की सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुरुष एवं स्त्री—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गुण-ग्रह मेलापनादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

	मेष			वृष			मिथुन		
	अ १	भ १	कृ ।	कृ ॥॥	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥॥
अ १	२८ ३	२१ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२१॥	१६॥ ३	१७॥ ३
भ १	२३	२८ ३	२८ ०३	१८ ०४३	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥
कृ १	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ १४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥
कृ ॥॥	१९ ४	१९ १४	१९ १४	२८ ३	१८॥ १३	२५॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+
रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+
मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	१५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+
मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥
आ १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ १४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०
पु ॥॥	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	२१॥	२४ ३	२८ ३
पु १	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१९ ४	१० ३४	१३ ३४
पु १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४
श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	२३॥ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	१२॥ १४	१३ ४
म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२
पू.फा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२
उफा १	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१२	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३
उफा ॥॥	२१ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ १५	२३॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२३॥ ३	२३॥ ३
ह १	११ ३१६	१८॥ ६	१७॥ १५	२०॥ +५	२३॥ १५-	२४॥ ५+	२२	२२॥ ३	२३॥ ३
चि ॥	१२॥ ३	४॥ १३६	१८॥ ६	१९ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥

	कर्क			सिंह			कन्या		
	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥॥	ह १	चि ॥
अ १	२२॥ ३	२०॥	२७	२० +५	२७ ५+	१४॥ १५	९॥ १६	१०॥ २३६	१२॥ ६
भ १	१०॥	२३॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१० ६	१०॥ ६	९॥ १३६
कृ १	२४॥	२६॥	२३॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६
कृ ॥॥	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२३ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+
रो १	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५
मृ ॥	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५
मृ ॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	१४	२० ३
आ १	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
पु ॥॥	१४ -३६	२१ ६०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥
पु १	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥
पु १	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३
श्ले १	२७॥	२८	२८ ३	१५ १४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥
म १	१६ -२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४
पू.फा १	२२॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४
उफा १	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२
उफा ॥॥	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+
ह १	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ५+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
चि ॥	१६॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ -४	९॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

	तुला			वृश्चिक			धनु		
	चि ॥	स्वा १	वि ॥॥	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।
अ १	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+
भ १	२३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	२९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+
कृ १	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	११॥ ३१५
कृ ॥॥	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६
रो १	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ ६	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६
मृ ॥	२०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६
मृ ॥	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	४ ६	२३	१९ ३	२५ २+
आ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७
पु ॥॥	१६॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	९ ३६	१४ ३	२७	२७
पु १	२९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	१०॥ -६	२०॥ -६
पु १	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६
श्ले १	२४	११ ३	१९ ३	२४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६
म १	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५
पू.फा १	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -३	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+
उफा १	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२३॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+
उफा ॥॥	१६॥ १३४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १३	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥
ह १	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥
चि ॥	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१३ १३	२१ १

	मकर			कुम्भ			मीन		
	उषा ॥॥	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ॥॥	पूभा ।	उभा १	रे १
अ १	२५	२६	३०	१६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
भ १	२७॥	२६	१० १२३	८॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२३॥ ३४	१६॥ ३४	२५॥ ४+
कृ १	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
कृ ॥॥	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
रो १	१६ ३५२	१८ ३४	१९ -१५	२४॥ -१	२६ -१	२९	२६	२७	१९ ३
मृ ॥	२१॥ २५	२६ ५-	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मृ ॥	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२१
आ १	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
पु ॥॥	२१॥ -६	२२॥ -६	१९॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
पु १	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
पु १	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
श्ले १	१३ २३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१९ ३५
म १	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ ६	१७॥ १६	१८॥ १६	१३ ३६
पू.फा १	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	३॥ २३	[illegible]	२३॥	२३॥ -६	२६॥ ३६	२४॥ -६
उफा १	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ २	१८॥ १३	१५॥ ३	१२॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
उफा ॥॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	३॥ ३१६	१७॥ ३६	२० ३	२६	२६
ह १	२३ २+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ १३२	१३॥ ३६	२६ ३	२६	२६
चि ॥	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	२६ १	१० १३३	१९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	अ १	भ १	कृ १	कृ ॥।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ॥।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ॥।	श्र १	ध ॥	ध ॥	श १	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा १	रे १
वि १॥	२२	१४ ३३	२८	२३ ६+	१०॥ १६	१०॥ ३६	२२ ३३	२० १५	१८॥ ५+	२१	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१४॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ५४	२८ २	२७॥ ०	११॥	२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ८	२७	१६ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ६	१८ ३५	२१ ५+	१८॥ १५	२ २६	[illegible]	[illegible]
[illegible]	२६ ६+	२८	१६ ३	१९ ३६	१४ १६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	१७ ५+	२७॥	२६	११½ ३	२८॥ ३	२४	२५॥	२५॥	२७॥ ४४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१८ ३	२१॥ ३	२३॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२	२५ ५	१८॥ १	१९ ६	२१ ३६
[illegible]	२१	२२ १	२० ३	१९ ३६	९ १३६	१७ -	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४-	३३॥	२९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१.६ ४	२७	२१ १	१९ १६	१५॥ १३	१५॥ ३	२१५	२६ ५+	२१ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२०॥ १४३	४ ३३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंगल-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों मे मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू लम्बी तथा बहिरी (बोली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है तथा वर-वधु जाति से च्युत हो जाते हैं तुल्यसपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान—(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए दोषा दिका मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएं—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर या पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को संस्कृत करे और वर के मुख में एक छुआरा या मीठा, (गुड़, बताशा) देकर यह मन्त्र पढ़े "अस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नाते सुरोगिणे। दास्यंतेऽप्रतिहेऽग्नीये पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., ध., पूर्वा. ३, अनु., श., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों से शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार आभूषणों से कन्यावरण (वधाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। तथा "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्य.—रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धिं न चिन्तयेत्। वशिष्ठः-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः। युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता से कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषों का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या सङ्कल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वरं" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	कार्यसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	लक्ष्मीप्रीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कटिस्थ	३	कामनार्थः
चरणे	४	कामनाढिलः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, उक्तवार में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हो, लग्न से १।४।७।१० में शुभग्रह हों, ३।६।११ में पापग्रह हों तब मंत्रदीक्षा लेना उत्तम है। विशेष—सत्तीर्थ पर सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय मास तथा पञ्चाङ्गशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा यां तिथि-र्यस्य देवस्य तस्यां वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वदशाधि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (क्षिप्रमृदुध्रुवे स्थिरे, चिचरस्य चरे, दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। यह भी कन्या में भयप्रद होता है।

अथ विवाह मासः—(विवाहमुहूर्ती)-मीनार्कञ्च बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्वाज्यो ऽर्को ऽनुधनस्थान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥केशवेन यदि गौरीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन प्रोक्तमपरैस्तदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं भरद्वाजः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में १ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि पूर्ण नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखें। "भत्र-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पति ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तूर्योऽष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्चे उच्चांशके प्राहुः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिशा चाविनोऽपि चेत् ॥ (रणवीर ज्यो. नि)

तुलाराशौ अपूज्यः रविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-धनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरवि-परिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्र्योदशाहात्परतः शुभावहः। (मु०प०४१०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१ ध. मी. कर्क
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७ राशि में
नेष्टगुरुः—४।८।१२ हो तो नेष्ट
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११ गुरु भी
पूज्यरविः—२।५।९ श्रेष्ठ है।
विशेष पूज्य रवि—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-स्नापन (अन्न) दिन संख्या

राशि→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.→	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्रादि

रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्भ-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥ विवाह में विशेष कर लग्न और नक्षत्र की प्रधानता है।

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घड़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषो मे जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम्	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानि	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) पातदोष-ज्ञानार्थ चक्र

रा.	मृ.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा	रे	वि.	नक्षत्र
आर्द्रा पुन. हस्त. पूफा वि. मू.	मृ. आ ज्ये अ. म. ह.	अ. मृ. ज्ये पुष्य ह. रे.	कृ आ चि पूफा उभा पूभा	भ मृ श पूभा स्वा म.	कृ अ ध पुष्य ह रे	अ आ. उषा पूषा पूषा पूफा.	रो ज्ये ध श्ले मू उभा	भ पुन म वि अनु उषा	भ श चि उफा. पूफा. मृ.	अ ज्ये ध भ पूफा स्वा.		[illegible] नक्षत्र

हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

रो. भ.	म.	कृत्ति.	[illegible]	स्वा.	अनु.	[illegible]	[illegible]	उफा.	रे.
अभि. श्रवण	आश्लेषा	पू.	[illegible]	भ.	भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) यामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ.	म.	उ फा	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ. षा.	उ. भा. रे.	विवाह न.
अनु	ज्ये	श.	पू. भा.	उ. भा	कृ.	मृ.	पुन		उ ह. फा.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर यामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, वाने १४वें नक्षत्र में रावीग्रह का यामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड; व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रान्तिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थ चक्रम्

बाण नाम	सतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	बाणः वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्री त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्री वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

६	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६		८	१०	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।
—काश्यप.

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कली पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) दोषे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र, बांगर) जांगले (फ़िरोजपुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। ॥ उपग्रहर्क्षं कुरु बाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिङ्गवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यंतुविद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेष-परिहार—विषां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यंश्च भुजंगपातः ॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगतो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अस्याधवके वेधपरिहारः—पादैकं सुवेधिकमनुजेनैव कृत्स्नतः (नारदः)। ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आपात्काल में चरणमात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। शुक्ला चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-यामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥ मु. चि.।

उच्चस्थुक्तास्य वे दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वाऽपि पन्नगान् गरुडो यथा ॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	चारेषु
चं पाप	०	बु	रा.	०	चं. शु. सर्वेषः	सर्वे	चं. मं. शुभाः सर्वेषः	०	मं.	०	श.	त्याज्याः

चं. पं.	कुविद्ध क्रान्तिसाम्यञ्च	चं.	भ.	चं. मं.	विवर्जयञ्च	गोधूली त्याज्याः

सर्वे बति वेऽशनिभ्रमस्तीरे भगस्तनी चन्द्रमसा न सर्वाः। फाल्गुन में सन्ध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर, चै. बै. में गौओं की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न-भंग दोषा—व्यये शनि केन्द्रगतस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रबला न चस्तीः । कर्मेट् कविरक्षौ च रिपौ भृगौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरुसमौ) ॥ कर्णीसमं विवाह्याकौ विवाहो न शुभप्रदः । कर्णोत्सम(?)द्येन्यस्याः पुत्रपौत्रादि वृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ धनकन्यादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्याश्चयास्तारा राशयो बधिरादयः । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ।

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च खाव्यो: सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगत्योः । तावेव सौम्यौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः ॥ इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषांञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणैः सह ॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकूनवांश ग्रहोद्भवाः । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यथैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तु मा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । शूलं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में षष्ठम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ वा ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा.	मुहूर्त गणपती
३	२	३	१	१	१	३	३	३	[illegible]	लग्नं शुभं विवाहे स्यादुपरा विंशो-पकाधिकम् ।
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
६॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि-लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः । गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषाः धूलिमुखाः स्मृताः ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति गौधूलिके नैव फलं विपत्ते ॥ मार्ग माघ, फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलक सम्पन्न दृष्टिगोचर होने पर, वै. ज्ये. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा. आश्वि.. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोष:—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषैस्तु दूषितः । "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रोल) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः ।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रान्ति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधुप्रवेश शुभ है ।

वधु-प्रवेश-समय :—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः रात्रप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ।

विवाहतः प्रथमे वर्षे वधु-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—पीके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर आने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को, २. ३. ६. ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रा. स्वा. पुन, श्र. ध. स. मृ. मू. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विशेष :—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिनिर्णयोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट :—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष :—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शर्करामुक्ताफलान्वितम् । महाश्वेतनवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद सम-रात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नवबध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि रे. एषु. नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषण विधारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजत-दन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ी चक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ, १३ तक नेष्ट, २० तक श्रेष्ठ, २२ तक नेष्ट, २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष :—विप्रादेशात्तथोद्वाहे अयापालेन समर्पितम् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. व. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तानाशयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त :—ह. चि. रो. रे उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, च. ब. श. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्ट चक्रः—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । साझे व्यापार में गण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में वैर, अपने गण में परम प्रीति जानें ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा क्रम (नौकरी) मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहित-तिथौ. र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) प्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. श. वारेषु शुभयुते शुभ लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्र कोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्ध रहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ६।४ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित कालः—मंगलवार संक्रांति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध-वार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मूल नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्तः—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रय-विक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पू.भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तम शकुन विचार्य क्रय-विक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्रः—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्रः—पू.फा., पू.भा., पू.षा., वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोटः—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सच है।
चालिया (अर्चो) का मुहूर्त— ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. श. रो. म. ज्ये. पू. चि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हों. बड़ा होवे तो उत्तम है। लग्न में पाप ग्रह हो तो अनुत्तम है।

गृहादि निर्माण में आयविचार

[illegible]		
मस्तके	७	धनलाभ:
पृष्ठे	७	हानि:नी:स्वम्
हृदये	७	सुखलाभ:
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भ:, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर या काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु, गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व वासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
प. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभ: शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश:
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. म. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. पू. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१०एता: घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचार:

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति:	पुत्रनाश:	स्त्रीनाश:	गृहेशनाश:	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहृतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नाशे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गं। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:॥

अथ चुल्लिचक्र विचार:

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभन:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयो:॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में च.बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे भी कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो और चैत्र. वैशा०, ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान, श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	नः	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५.	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

जलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-जल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ निश्चितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २. जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

कूपस्य फल—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणाग्निकोणेषु शोभनम्, जल का वास भी "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारे।'

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा मध्य जलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभावं
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवताराभवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वकं देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्तवचनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक ओर जोड़ना।'पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महागुरुव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेष्वथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतुनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः॥ दुर्गभग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्षोभे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, वसनवंता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

शान्तिहवन कुण्ड—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति धातवहमुखे हवने कृते शान्ति।—आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्॥ गोमूत्र-विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। मधुगन्धार्चिरचितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिस्तु हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. श्ले. म., पू. फा., वि., अनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पू. श्र. ध. श. म. मू. वि एषु भेषु रिक्तामावस्याष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।४।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहण शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					राहु नक्षत्रात् दिनर्क्षं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु शुभकने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) चपादस्थे भूमौ सञ्जायते रजः। तस्मादिनत्रयं तत्र बीजवापं परित्यजेत्।

नवान्न भक्षण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। बैल लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करें, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक शुभ	भवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्य नेष्ट	सुख शुभ	संख्या फलम्

वृक्षारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि- मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है तृणकाष्ठवितानग्रहणेषु च—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा अनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. म. सू.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध, अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।१२	४।८।१२	शुभम्
२।३।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	म०म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो समुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा या देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्							नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू०	द.	प.	उ.
चं.श. च.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	म.बु.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाएं तो शुभ है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में काल ज्ञान — **योगिनी-वास चक्रम्**

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखेनस्तः ...

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तर०	ईशा०|दशर
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामूहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकाल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू	द	प.	उ.	पू	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१८	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषा:लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ:।

सर्वाङ्क सिद्धि योग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैंठा) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पाँच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्							**रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्**							
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं	बु.	गु	शु	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७॥	अ.	रो	ला.	श.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का	उ.	अ	रो.	ला,	श.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु	च.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८॥	का.	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२॥	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ हैं शेष अशुभ हैं।

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांयते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सवंश, कलश निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि**—बन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा	फा	चै.	वै	ज्ये	आ.	श्रा	भा	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिशा शूल ले जावे बायें । राहु योगिनी पूठ ।।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ।।

यात्रा से सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले
इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु सतिथौ शुभेऽह्नि चन्द्रताराकूल्ये सति शुभम्।

यात्रा निवृत्ती प्रवेश मुहूर्त—म. रे चि. अनु. रो., उ. ३, ह. अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. गु. शु. श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।६।११।१२ एषु लग्नेषु. १।४।७।१०।१।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धो शुभः। रि. क्रू. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि १।४।६।१४।६।१२।८।३० तिथयः मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्।
नवमे जातु नो कुर्यादिनेवारे तिथावपि ।।

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श	बृ.	शु.	शु.	म.	बृ.	श.	घातवार
मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि.	गो.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि.	मेष	स्त्रीच.घात
का.	मार्ग	पो.	माघ	फा.	चैत्र	बै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ	प्री.	सु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	६	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें। तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं। "घात-तिथिर्घात-वारः घात-नक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ।।" कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्य सम्बन्धः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धि	नेत्रयोः	धन प्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्.	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी. रो. मू. पुनः उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप-ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्ही पीन सरदी पास फल हीनी। छीकि पीठि की कुशल उचारे, बाईं कारज सब सवारे ।।१।। सम्मुख छीक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छीक होय भय कारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई ।।३।। कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजनं। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ।। सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है। एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ।।

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे। यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्ष:स्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगलभ्य	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	[illegible]पार्श्व	प्रीति	ग्रीवाश:	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-वृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदलीकेपगृहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	गृहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	वर्फ पत्थर पड़े	आंधी कबूतर	गृहस्वा. ना.
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री बध हो	दुर्भिक्ष पड़े	चित्रफलक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वघात	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
महोल्कोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वारा:
	तापम्:	सुकीर्ति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयांग	फलम्
	पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रवौ भौम व्यतीपाते संक्रान्तौ वैधृतावपि। पाठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्यु: वा कष्टम्। स्कन्धयो:-रोग:। भुजयो:—प्रियार्ति:। उदरे-शोक:। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयो:—वाहनपीड़ा। पादयो:-प्रवास:।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थ हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि. ३।९।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

(मन से कल्पना की हुई वस्तु को देखना), सप्त भाविक (७ देवी व सभी उससे मिलकर), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से ।'दृष्ट श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। शुभ स्वप्न देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृद्ध, गुरु, श्वेत-वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धन-स्वर्ण की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों या बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू, या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल जावे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने सिर के मांस को खाना राज्यलाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो श्री-लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्ठ-पूर्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त देखना पिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी।

शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न—लालवस्त्र पहिनना, सूर्य-चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का पड़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलाश के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, भस्म, तेल, लोहा मिलना या देखना इससे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। सिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूतप्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, भैंस, सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुण्डित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा?

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घटी को चार से गुणा करे, जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, तथा सोसाइटी में जाना, मुकद्मा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन-लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्द्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है। **शनि की होरा**—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिषशास्त्र में होरा (उपवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन रात के २४ घंटों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कर्मों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्ध्यर्थ यह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार →	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्ध्यर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घन्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन शुक्रवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाए तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों का टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टैंडर देना लाभप्रद रहता है।

नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या	ति. ५ न. ह.	ति. ५ न. मृ.	ति. ७ न. अ.	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग (क्रमशः तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९ १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	५	९	१०	११
व्या जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा	ज्ये.	रे.
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	२१
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	म	वि.	आ.	म.	कृ.	रो.	ह.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धता पूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गए चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकद्दमे का प्रश्न हो तो "मुकद्दमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में" इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए—आपका प्रश्न मुकद्दमे के विषय में है कि जीत होगी कि नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर शेष ५ बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकद्दमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिए चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१. मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२. मित्र विश्वासघाती है।
३. मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४. मित्र धोखा देगा।
५. मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६. मित्र बड़ा कष्टमय युक्त है।
७. मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८. मित्र मतलबी है।
९. मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१. मुकद्दमा देर से होगा।
२. मुकद्दमे में जीत होगी।
३. हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४. कुछ कुछ जीत होगी।
५. विशेष खर्च करके जीत होगी।
६. कष्ट अधिक होगा।
७. तुम्हारी हार होगी।
८. सुलह हो जायेगी।
९. पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१. गमन मत करो लाभ नहीं है।
२. देशाटन में लाभ-हानि बराबर है।
३. भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४. शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५. देशाटन में कोई चमत्कार है।
६. शकुनविचार कर गमन करो लाभहोगा
७. यात्रा पीड़ा कारक होगी।
८. यात्रा में आराम मिलेगा।
९. यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)

१. पशु से पूरा लाभ होगा।
२. पशु से हानि लाभ सम।
३. पशु मत खरीदो भला नहीं।
४. तेरा विचार ठीक नहीं है।
५. फायदा रहेगा तो नहीं।
६. आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७. पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८. तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९. लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१. इस माल में लाभ उत्तम होगा।
२. इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३. यह काम घाटे का है।
४. चोरी या नुकसान का भय है।
५. साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६. माल से सवाया लाभ होगा।
७. माल कुछ देर से लाभ देगा।
८. खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९. माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१. नौकरी जरूर मिलेगी।
२. देर से मिलेगी धीरज धरो।
३. काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४. खर्च करने से कार्य बनेगा।
५. यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६. शत्रु रुकावट करेंगे ग्रह दान दो।
७. किसी की सहायता से काम बनेगा।
८. इस विचार में अनेक विघ्न हैं।
९. काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१. अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२. विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३. मनोकामना पूरी होगी।
४. विद्या सामान्य सफलता देगी।
५. विद्या हो परम लाभकारी होगी।
६. उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७. अच्छे दरजे में पास होगा।
८. विद्या में विशेष लाभ न हो।
९. विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१. परदेशी शीघ्र ही आयेगा।
२. बीमारी से लाचार है।
३. मार्ग में चला आ रहा है।
४. दूर देशान्तरों में विचरता है।
५. रास्ते से ठगा गया है।
६. अभी मन में लौटने का नहीं है।
७. वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८. खर्च में तंग है कैसे आये।
९. परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१. शत्रु दुष्ट है दमन होगा।
२. शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३. शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४. मित्र की सहायता से भय हो।
५. शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६. विश्वास न करो उससे भय है।
७. राज्य की सहायता से भय मिटे।
८. सुलह की जावेगी।
९. शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)

१. इस साधना में उपद्रव होगा।
२. मन निश्चित चंचल होगा।
३. यह साधना शुभ नहीं।
४. साधना गुरु कृपा से पूर्ण होगी।
५. प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६. साधना सफल नहीं होगी।
७. देरी बाद सिद्ध होगी।
८. परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९. इस सिद्धि को खेल मत समझो।

बाग लगाने का फल (११)

१. बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२. बाग देर से फल देगा।
३. बाग लगाने में लाभ नहीं।
४. बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५. जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६. बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७. बाग लाभप्रद होगा।
८. बाग लगाना कलह का मूल होना।
९. मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१२)

१. विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा
५. लाभ हुआ चाहता है वैरी रोकता है
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है
७. राजा आदर करे जगत में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो पश्चाताप हो
९. राजा का दर्शन सफल होगा।

बन्ध मोक्ष का फल (१३)

१. खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२. नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो
३. जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४. रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५. धन खर्च करने से छूटेगा।
६. देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७. सिफारिश से छूटेगा।
८. जल्दी छूट जाएगा।
९. अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१४)

१. मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा।
३. इस कार्य में लाभ नहीं मत करो।
४. द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५. इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६. मकान निर्बल खराब बनेगा।
७. इस मकान से लाभ होगा।
८. इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९. पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१५)

१. इच्छा शीघ्र ही पूर्ण है।
२. अधूरी इच्छा पूर्ण होगी।
३. इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४. निष्फलता है।
५. देर में होगी।
६. इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधायें।
७. इच्छा पूर्ण होगी।
८. इच्छा पूर्ण न होगी।
९. किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१६)

१. दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२. दुकान करने से लाभ नहीं।
३. दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४. दुकान से लाभ है, खर्च बहुत होगा।
५. दुकान मत करो, हानि है।
६. लाभ-हानि समान है न करो।
७. लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८. दुकान में लाभ न होगा।
९. दुकान में लाभ अच्छा होगा।

खेती करूं या नहीं (१७)

१. खेती में लाभ रहेगा।
२. वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३. खेती को कीड़े का भय है।
४. मनोकामना सिद्ध होगी।
५. जितनी मेहनत उतना लाभ।
६. खेती करो पर सावधानी से।
७. खेती में ओले का भय है।
८. वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९. खेती में हानि रहेगी मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१८)

१. यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२. ग्रह दशा खराब है, शांति करो।
३. यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४. चिन्ता न करो आराम होगा।
५. रोगी की आबो हवा बदली करो।
६. रोगी को पथ्य से रखो।
७. चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी है।
८. आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है
९. होनहार में किसी का वश नहीं चलता

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संतान भाग्य में क्या है फल (१९)

१. सन्तान आपके भाग्य में नहीं।
२. ग्रह शांति से होगी।
३. संतान होगी कमजोर।
४. इष्टदेव की पूजा से।
५. मेहनत से होगी।
६. दया या पिहोए विधि से।
७. होकर नष्ट होने का भय है।
८. संतान की आशा छोड़ो।
९. हप्ताह श्रवण से होगी।

धर्म दीक्षा फल (२०)

१. धर्म में प्रीति थोड़ी हो।
२. धर्म में अधिक प्रीति हो।
३. धर्म करते रोग हो।
४. धर्म में यश बढ़े।
५. धर्म से व्याकुलता हो।
६. धर्म से नाम स्थिर रहे।
७. धर्म करते मृत्यु हो।
८. धर्म से बुद्धि उखड़े।
९. धर्म दीक्षा से शांति मिले।

अनाज खरीद फल (२१)

१. अनाज में भारी लाभ होगा।
२. नफा टोटा समान रहेगा।
३. घाटा रहेगा।
४. बख के खराब होने का भय है।
५. सांझी व्यापार न करे।
६. देर से बिकेगा।
७. अनाज में सवाये होंगे।
८. बेचना ठीक है, लेना मत।
९. प्रश्न फल अशुभ है।

पुत्र गोद लेने का फल (२२)

१. गोद लेने से नाम रहेगा।
२. यह लड़का वफादार नहीं।
३. लड़का खर्च करायेगा।
४. लड़का अच्छा नहीं है।
५. अच्छी निभेगी।
६. सावधानी से गोद लेना।
७. बे-मुहब्बत निकलेगा।
८. घर में अनबन रहेगी।
९. सुखदायी नहीं है।

तबादले का प्रश्न (२३)

१. तबादला होगा।
२. कुछ रुकावट के साथ होगा।
३. तबादले में विघ्न आवे।
४. तबादला अभी नहीं।
५. तबादला होगा।
६. तबादले में देर है।
७. तबादला जरूर होवे।
८. अभी ठहरो।
९. देरी से होगा।

कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है (२४)

१. यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२. जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३. लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४. अन्त में मुश्किल होगी।
५. दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६. इस जगह हानि-लाभ समान है।
७. लेने देने में कोई हरज नहीं।
८. अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९. नफा नुकसान बराबर रहेगा।

गर्भ में क्या है ? फल (२५)

१. इस गर्भ की सुआशा नहीं।
२. पुत्री का जन्म होगा।
३. शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४. लड़की होगी पर आयु कम।
५. गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६. पुत्र का जन्म होगा।
७. दीर्घायु पुत्र होगा।
८. कन्या जन्मेगी।
९. जोड़े बालक होंगे।

विवाह शादी का फल (२६)

१. विवाह देरी से होगा।
२. विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३. विवाह न होगा।
४. विवाह जरूर होगा।
५. विवाह में रुकावटें होंगी।
६. किसी की खुशामद करो।
७. खर्च करो काम बनेगा।
८. थोड़ी विलम्ब से होगा।
९. स्त्री गुण वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (२७)

१. रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२. विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा।
३. किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४. जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५. अब इस व्यापार में हानि होगी।
६. दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान।
७. रोजगार ठीक होने में देर है।
८. खोटे ग्रह की दशा है ! अभी चुप रहो
९. जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोरी गई का फल (२८)

१. वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२. खर्च करने पर माल मिलेगा।
३. पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४. चोर पक्का है माल न मिलेगा।
५. किसी की मदद से माल मिलेगा।
६. चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है।
७. माल आधा नष्ट हो गया है।
८. माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो।
९. चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।

गुप्त चिंता का फल (२९)

१. मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२. काम बनने में कुछ देर है।
३. काम का नतीजा खराब होगा।
४. किसी का भरोसा मत करो।
५. चिंता न करो काम बनेगा।
६. मन की मन ही में रहेगी।
७. तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है।
८. देरी से काम बनेगा।
९. चिंता सच्ची है किसी की मदद लो।

क्या मुझे सांझा व्यापार से लाभ होगा (३०)

१. साझे में लाभ होगा।
२. सांझे में लाभ कम होगा।
३. सांझे में हानि का भय है।
४. लाभ होगा परन्तु ठहर कर।
५. हानि का भय है।
६. लाभ होगा।
७. लाभ होगा, अंत में गड़बड़ी का भय है।
८. लाभ की आशा व्यर्थ है।
९. लाभ होगा विश्वास रखो।

खोया पशु किधर मिलेगा (३१)

१. पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२. पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३. द.-प. के कोण में गया है, नहीं मिलेगा
४. उत्तर दिशा में ढूंढो, मिलेगा।
५. पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने से मिलेगा
६. उत्तर में ही मिलेगा।
७. पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिन है
८. दक्षिण में गया है मिलेगा।
९. पश्चिम में गया है खर्च से मिलेगा।

मेरा यह वर्ष कैसा है (३२)

१. यह वर्ष शुभ रहेगा।
२. वर्ष कष्टप्रद है।
३. वर्ष मध्यम है।
४. वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५. वर्ष शुभ लाभप्रद है।
६. वर्ष साधारण है।
७. वर्ष शुभ है।
८. वर्ष हानिकारक है, ग्रह शांति करो।
९. इस वर्ष भाग्य वृद्धि होगी।

यह प्राणी जीवित है या नहीं (३३)

१. जीवित नहीं।
२. वह जीवित है।
३. जीवित नहीं है।
४. जीवन में सन्देह है।
५. जीवित है।
६. जीवित नहीं है।
७. जीवित है।
८. जीवित नहीं।
९. जीवित है।

यह व्यक्ति विश्वास योग्य है या नहीं (३४)

१. विश्वास योग्य है।
२. विश्वास योग्य कम है।
३. विश्वास योग्य नहीं।
४. ईमानदार है।
५. भरोसा कर सकते हैं।
६. भरोसा मत करो।
७. विश्वास पात्र है।
८. विश्वास योग्य नहीं है।
९. विश्वास पात्र है।

इस काम में लाभ है कि नहीं (३५)

१. इस काम में सुख लाभ होगा।
२. इस काम में दुःख एवं हानि होगी।
३. इस काम में हानि-लाभ समान होगा।
४. इस काम में हानि दुःख होगा।
५. इसमें लाभ सुख है।
६. लाभ सुख मध्यम है।
७. सुख लाभ होगा।
८. सावधान, हानि दुःख होगा।
९. सुख लाभ होगा।

मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर (३६)

१. अन्य स्थान पर जाओ लाभ होगा।
२. इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो
३. अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४. अन्य स्थान पर लाभ रहेगा।
५. यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होगा
६. यहीं ठहरो दूसरी जगह भी कष्ट होगा
७. यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभ होगा
८. दूसरी जगह जाना ठीक है।
९. यहीं परिश्रम करो ग्रहशांति से लाभ होगा

यह खबर झूठी है या सच्ची (३७)

१. यह खबर ठीक सच्ची है।
२. यह बात झूठी है।
३. बात सच्ची है।
४. बात झूठी है।
५. बात सत्य है।
६. सत्य है।
७. कुछ-कुछ सत्य है।
८. निराधार झूठी है।
९. सच्ची है।

मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? (३८)

१. आज का दिन अच्छा है।
२. आज सावधान रहें।
३. अच्छा दिन है।
४. खराब है।
५. अच्छा दिन है।
६. अशुभ चिन्ताप्रद है।
७. शुभ दिन है।
८. बहुत ज्यादा खराब है।
९. मध्यम है।

मुझे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा (३९)

१. कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२. रोग से ही पीड़ित है।
३. ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४. प्रेत पीड़ा है, शांति करावें।
५. शत्रुकृत टोना आदि असर है।
६. ग्रह पीड़ा है, शांति करावें।
७. शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें
८. रोग कष्टसाध्य है शिवार्चन करें।
९. कर्मजन्य फल से विवश है।

क्या नलकूपादि लगाना ठीक है (४०)

१. शीघ्र जल मिलेगा।
२. खण्डित जल मिलेगा।
३. सुन्दर जल मिलेगा।
४. जल नहीं मिलेगा।
५. अमृत जल मिलेगा।
६. जल मिलेगा।
७. मिश्रित कम जल मिलेगा।
८. अभी जल नहीं मिलेगा।
९. जल कम या क्षार मिलेगा।

इस व्यक्ति से मेरा काम सिद्ध होगा कि नहीं (४१)

१. इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी।
२. इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३. कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४. इससे काम सिद्ध न होगा।
५. इनके द्वारा कार्य सिद्ध हो जायेगा।
६. यह दिल से काम नहीं करेगा।
७. बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा।
८. इससे कुछ आशा न करो।
९. मिलो, कार्य बनेगा।

मुझे इस काम में सफलता मिलेगी कि नहीं ? (४२)

१. सफलता की कम आशा है।
२. बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी।
३. सफलता मिलेगी।
४. सफल होना मुश्किल है।
५. सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६. सफलता देर से मिलेगी।
७. किसी की सहायता से सफलता मिलेगी
८. सफलता की आशा नहीं।
९. निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

अथ केरलमते प्रश्न-विचार:

प्रात:काले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् । सायंकाले वदेन्नद्य: रात्रौ तु देवतां वदेत् ।।

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	अष्टवर्ग:
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णय:
धा	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्न:
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोग	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीकामार्ग
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६ मास	१ वर्ष	प्रश्न दिनादि
[illegible]	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पातान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पाडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्न
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	मास १	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभ:
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्नष्ट
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
कुशले	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भूविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रुगमागमी
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	शत्रुजयहानि
न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकाल	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभ प्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शत	एक	शत	२०	६०	४५	७५	१५	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	.न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टि प्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनादि

रोगोत्पत्ति सन्तान प्रतिबन्धादि में देवदोष ज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।९।१२ स्थान शुभग्रहरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जाने । यदि ८।१२ वें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष), शनि हो तो सती दोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है । भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपाटिया, बली वा नीच भौम १।४।८ वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. म. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८वें भौम नणद छोटी, ४ भौम भैण, १० मं. गु. सती कुल की, १० म. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना यह ग्रह योग न हो तो केवल प्रश्नकाल से दोष निम्नलिखित जानें । बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष में हो तो आकाशदेवी का, मिथुन में हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धनु में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें । बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हो तो साध्य होते हैं अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मूक प्रश्न का अनुभूत प्रकार

बिना पूछे किसी के मन का प्रश्न कह देने से ज्योतिषी की मानप्रतिष्ठा विशेष होती है और ज्योतिश्शास्त्र पर प्रष्टा की श्रद्धा भी बढ़ती है। एतदर्थ हम श्रीमार्तण्डपञ्चांग प्रेमी पण्डितों के हितार्थ अनुभव सिद्ध मूक प्रश्न का प्रकार लिखते हैं, जिससे मूक प्रश्न पूर्ण मिलता है। स्मरण रहे कि प्रश्नकालिक शुद्ध स्वदेशीय लग्न स्पष्ट तथा तात्कालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट बनाने में गलती न हो। हमारे पञ्चांग के दैनिक ग्रह स्पष्टों से केवल घटपादि चालन द्वारा तात्कालिक प्रश्नोपयोगी सूक्ष्म ग्रह आते हैं।

प्रश्न कथन प्रकार—प्रश्न कुण्डली में नव ग्रहों में से इष्टदेव नमस्कृति पूर्वक देखिए जो ग्रह अधिक बली (उच्च, स्वराशि, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, केन्द्रस्थ, स्वनवांश, वर्गोत्तमांश अर्थात् जिस राशि का ग्रह हो नवांश में भी उस राशि का) हो, वह लग्न से जिस भाग में हो उस भाव का निःसन्देह प्रश्न कहे।

यदि उस ग्रह की स्थिति द्वारा दो तीन प्रश्न निकालें तो उनमें से पृष्टा की परिस्थिति, आयु, देश, कालादि का विचार करके बुद्धि द्वारा जो ठीक बैठे वही प्रश्न कहें। जैसे किसी ने प्रश्न किया तो उस समय अन्य ग्रहों में बली राहु मिला और वह बैठा भी लग्न में है, तो राहु के प्रथम भाव में होने से पुत्र और विद्या का प्रश्न समझें। ऐसे दो प्रश्न निकाले, अब प्रष्टा की ओर देखा तो उसकी आयु १६ वर्ष के लगभग है तो पुत्र एवं विद्या दोनों प्रश्नों में से ज्योतिषी को चाहिए कि उसे कहे आपका विद्या संबंधी प्रश्न है अगर वही प्रष्टा बड़ी उम्र का हो तो पुत्र विद्या दोनों में से पुत्र का प्रश्न कहना युक्तिसंगत था, इत्यादि बुद्धिमान ज्योतिषी को चाहिए कि मूक प्रश्न कहने के लिए शास्त्र और बुद्धि दोनों का उपयोग करके जो निकले वही कहे तो सत्य होगा।

सूर्य—

१ भाव में बली—शरीर संबंधी प्रश्न
२ " में—धन सम्बन्धी
३ " में—झगड़े का प्रश्न
४ " में—जय उच्चता का
५ " में—पुत्र सम्बन्धी
६ " में—यात्रा सम्बन्धी
७ " में—स्त्री सम्बन्धी
८ " में—जहाज बेड़ी दरिया जल सम्बन्धी
९ " में—यात्रा विदेश सम्बन्धी
१० " में—राज कर्म सम्बन्धी
११ " में—धनलाभ क्रय-विक्रय विषयक
१२ " में—शत्रु झगड़ा परदेश खर्च का प्रश्न समझे

चन्द्रमा—

१ भाव में बली होकर बैठा हो तो क्षेत्र धन और भोजन का प्रश्न
२ " में—धन और झगड़े का
३ " में—वर्षा और जल का
४ " में—माता व मकान का
५ " में—पुत्र का
६ " में—रोग का
७ " में—स्त्री का
८ " में—भोजन चिन्ता का
९ " में—मकान का
१० " में—यात्रा का
११ " में—क्षेत्र खाता दुष्ट पुरुष पवित्रता वस्त्र कपड़े, आदि का
१२ " में—नष्ट वस्तु के नाश का

मंगल—

१ भाव में बली हो तो—भय या झगड़े का प्रश्न कहें।
२ " में—नष्ट वस्तु का
३ " में—भाई मित्र व क्लेश का
४ " में—मित्र व बैरी का चौपाया व क्रय विक्रय का
५ " में—क्रोध, नीति नौकरी का
६ " में—सोना, सिक्का, कली चांदी का
७ " में—नष्ट वस्तु, नौकर, धन, घर जमीन का
८ " में—यात्रा का
९ " में—झगड़े का
१० " में—शत्रु के आने का
११ " में—लाभ का
१२ " में—झगड़े युद्ध का

बुध—

१ भाव में हो तो—शास्त्र व सुख का प्रश्न समझें।
२ " में—वस्त्र, धन, शरीर का
३ " में—सास भाई का
४ " में—बावली, जल, खेती, बगीचा का
५ " में—सन्तान और कार्य सिद्धि का
६ " में—कार्यसिद्धि धन, खोई हुई गुप्त स्त्री की मैत्री का
७ " में—पत्नी और स्त्री का
८ " में—राजा व आज्ञा नष्ट चीज का
९ " में—पशु पक्षी का
१० " में—शास्त्र, कथा व सुख का
११ " में—धन लाभ का
१२ " में—पाखण्ड, द्रोह छल और सुख का

गुरु—

१ भाव में बली हो तो—सुख का प्रश्न समझो।
२ " में—धन, कल्याण, सुख का
३ " में—सम्बन्धी श्वसुर का
४ " में—कुल सम्बन्धी विवाह का
५ " में—पुत्र, प्रीति, विवाह का
६ " में—स्त्री विवाद और गर्भ का
७ " में—अर्थ द्रव्य मंत्र सिद्धि
८ " में—सूम का
९ " में—परदेश, मार्ग, धन प्राप्ति का
१० " में—मित्र फूटना और सुख का
११ " में—स्मिति, सुख का
१२ " में—यश का

शुक्र—

१ भाव में बली हो तो इष्ट देव, नाचना और मित्र सुख का
२ " में—रत्न धन और वस्त्र का
३ " में—स्त्री, गर्भ, बहिन, भाई का
४ " में—विवाह का सुख
५ " में—मित्र, भाई और पुत्र का
६ " में—गर्भोत्पत्ति का
७ " में—स्त्री, योगाभ्यास और प्रीति का
८ " में—दूसरे की स्त्री का
९ " में—स्वप्न का
१० " में—श्रेष्ठ कर्म का
११ " में—स्त्री व झगड़े का
१२ " में—नष्ट वस्तु का

शनि—

१ भाव बली हो तो—रोग या स्त्री का।
२ " में—विद्या पुत्र का
३ " में—भाई के नाश का
४ " में—स्त्री के दूध व अन्य दूध का
५ " में—दो पुरुषों की कार्य सिद्धि का
६ " में—शत्रु का
७ " में—स्त्री या पुत्र का
८ " में—व्यापार का
९ " में—यात्रा का
१० " में—धन व आरोग्य का
११ " में—विद्या या यश का
१२ " में—शुभकर्म, खर्च अथवा शुभकर्म में खर्च का प्रश्न कहें।

राहु—

केतु—

...को टेण्डर देने का मुहूर्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु—

१ भाव में हो तो—पुत्र और विद्या का प्रश्न समझें
२ " में—यश व आरोग्य का
३ " में—मित्र व भाई का
४ " में—स्त्री सुख का
५ " में—द्रव्य का
६ " में—व्यापार का
७ " में—अन्य देश का
८ " में—नष्ट द्रव्य, कूप, जमीन, धन का
९ " में—जय का
१० " में—शोक, दुःख व भय का
११ " में—लाभ का
१२ " में—विवाह व खर्च का

केतु—

१ भाव में हो तो—लाभ व खर्च का
२ " में—मैत्री व जय का
३ " में—शोक पुत्र भाई का
४ " में—द्रव्य व वृक्ष का
५ " में—स्त्री नौकर व अधिकार का
६ " में—नृत्य गायन व रोग का
७ " में—मंत्र सिद्धि का
८ " में—क्रूर कर्म व मरने का
९ " में—विद्याभ्यास व पर स्त्री संग का
१० " में—घर मकान व सुख का
११ " में—सब प्रकार के लाभ का
१२ " में—नष्ट वस्तु नजर व खर्च का प्रश्न कहना चाहिए ।

अथवा—लग्नेश लाभेश दोनों में से जो ग्रह बली हो और फिर उससे चन्द्रमा जिस भाव में वर्तमान हो प्रश्नकर्त्ता के मन में उसी विचारणीय भाव की विचारणीय वस्तु की चिन्ता कहे, सत्य होगी ।

कार्याकार्य प्रश्न विचार

दिशा प्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ।।
पंचके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम् ।
त्रिसप्तके विलंबश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ।।

अस्यार्थ:—प्रश्नकर्त्ता का मुख जिस दिशा में हो पूर्व से आदि लेकर उस दिशा की संख्या उस समय का नक्षत्र वार और समय की प्रहर सब मिलाकर ८ का भाग दें शेष १ तथा ५ बचे तो कार्य सिद्धि, ६-४ बचे तो ३ दिन में कार्य होगा, ३-७ बचे तो देरी से कार्य सिद्धि होगी और २-८ बचे तो कार्य सिद्धि नहीं होगी, ऐसा कह देना ।

वस्तु खरीदने बेचने का चमत्कारी मुहूर्त

रवि, बुध, गुरु, शुक्रवार को २।३।७।१३।१५ तिथि हो और अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा, रेवती इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो मंदी हुई वस्तु खरीदने से अवश्य लाभ रहता है । इसी तरह गुरुवार व सोमवार को ४।९।१४ तिथि से अतिरिक्त अन्य तिथि हो और भरिणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, तीनों पूर्वा इनमें से कोई नक्षत्र भी हो तो तेज हुई वस्तु बेचने से लाभ हाथ आता है ।

ठेकेदारों को टेन्डर देने का मुहूर्त

टेन्डर देने के समय होरा का विचार मुख्य है जो इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक वार को सूर्योदय के समय होरा उसी वार को होती है । होरा का समय २।। घटी यानि १ घण्टा का होता है और दूसरी होरा उसी वार के छठे वार की होती है इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा निकाल लेनी चाहिए । चं. बु. गु. शु. की होरायें शुभ हैं ।

होरा (क्षणवार) फल

सूर्य की होरा — टेन्डर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है ।
चन्द्र की होरा — सब कार्यों के लिए अच्छी होती है ।
मंगल की होरा — युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्मा के कार्यों में उत्तम होती है ।
बुध की होरा — विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है ।
गुरु की होरा — विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य, लेखन, प्रकाशन, अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है ।
शुक्र की होरा — यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य—वर्धक कार्य शुभ होते हैं ।
शनि की होरा — द्रव्य संग्रह, भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त, स्थिर कार्य शुभ होते हैं ।

बीमार के जन्मपत्र से जानना कि जियेगा या मर जायगा

विंशोत्तरी में जन्म लग्न से दूसरे स्थान या तीसरे, छठे, सातवें, आठवें, बारहवें के स्वामी की दशा हो, अथवा इन स्थानों में से किसी स्थान में वह ग्रह पड़ा हो जिसकी दशा वर्तमान हो और योगिनी दशा में पिंगला २, भ्रामरी ४, उल्का ६, या संकटा ८, दशा में से कोई भी दशा इस समय वर्तमान हो और योगिनी दशा में अन्तर सप्तमेश का अथवा सप्तम में जो ग्रह पड़ा हो, या सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देखता हो उसका अन्तर योगिनी दशा में हो और गोचर में जन्मराशि से जन्म के चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें स्थानों में शनि गुरु राहु या केतु हो, गोचर में मंगल जन्मराशि में हो या जन्मराशि को देखता हो और गोचर में सूर्य जिस राशि के हों । (समराशि या विषम राशि) यदि सम हो और उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में विषम राशि का हो और सूर्य विषम राशि के हों तो उस राशि का स्वामी जन्मपत्र में सम राशि में हो तो बीमार की अवश्य मृत्यु हो जायेगी और इसके विपरीत होने से निश्चय करके नहीं मरेगा । यह गुप्त रहस्य पञ्चांग प्रेमियों की भेंट है ।

ज्ञातव्य विषय

बिना संकल्प और शास्त्रविधि से सकाम कर्म निष्फल है ।
बिना तिल और तर्पण के पितृ कार्य निष्फल है ।
बिना तुलसी और पुरुषसूक्त के विष्णुपूजा निष्फल है ।
बिना बिल्वपत्र और जलधारा के शिवपूजा निष्फल है ।
बिना मिष्ठान्न और दक्षिणा के ब्राह्मण भोजन निष्फल है ।
बिना दूर्वा और गुड़ के गणेश पूजा निष्फल है ।
बिना लाल पुष्प और अर्घ के सूर्य पूजा निष्फल है ।
बिना लाल पुष्प और लाल चन्दन के दुर्गा पूजा निष्फल है ।
बिना पवित्री और चन्दन के ब्राह्मण की संध्या निष्फल है ।
बिना ईश्वर भजन के मनुष्य जीवन निष्फल है ।
बिना दम्पति प्रीति के गृहस्थ निष्फल है ।
बिना नियम श्रद्धा के तीर्थ यात्रा निष्फल है ।
बिना माता-पिता की सेवा के तपस्या निष्फल है ।
बिना श्रद्धा शुद्धि व सात्विक भोजन के श्राद्ध निष्फल है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विवाहादि मुहूर्त (सं. २०४८ वि०)

समय – शुद्धि वि.सं. २०४८

विवाहादि शुभ कार्यों में वर्जित अनु: मीनस्थ सूर्य वाला पक्ष खरमास आदि क्षेत्रागत कालों के अतिरिक्त गुरु, शुक्र के अस्त वार्धक्य बाल्य तथा ग्रहण से दूषित काल एवं नक्षत्र आदि दोषों का विवरण नीचे दिया जा रहा है। अतिरिक्त वृति, वेध आदि के कारण तथा भद्रा, वैधृति, व्यतीपात आदि कुयोगों से दूषित समय को तथा स्थान वर्जित करते हुए ही मुहूर्त नीचे लिखे गए हैं। इनका यहां विवरण में समावेश नहीं है।

(१) वैशाख अधिक मास – इस वर्ष वैशाख अधिक मास है। अतः वैशाख प्रविष्टे २ तदनुसार १५ अप्रैल. १९९१ से ३१ वैशाख तदनुसार १४ मई तक कोई भी शुभ कृत्य नहीं होगा।

(२) गुरु अस्त – श्रावण कृष्ण १० सोमवार श्रावण प्रविष्टे २१ तदनुसार ५ अग. १९९१ से भाद्रपद कृष्ण ६ शनिवार भाद्रपद प्रविष्टे १५ तदनुसार ३१ अग. तक गुरु अस्त रहेगा।

(३) शुक्र अस्त – श्रावण शुक्ल ३ मंगलवार श्रावण प्रविष्टे २८ तदनुसार १२ अग. से भाद्र. कृष्ण ५ शुक्रवार भाद्रपद प्रविष्टे १४ तदनुसार ३० अग. १९९१ तक शुक्र अस्त रहेगा।

वस्तुतः सूर्योदय व सूर्यास्त की तालिका के कारण गुरु एवं शुक्र के उदयास्त विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग तारीखों में होते हैं। सम्पूर्ण भारत के अक्षांशों के लिए इन ग्रहों के उदयास्तों का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है।

अक्षांश भेद से भारत के विभिन्न प्रदेशों में गुरु-शुक्रोदयास्त (वि.सं. २०४८)

अक्षांश	उ. ५°	उ. १०°	उ. १५°	उ. २०°	उ. २५°	उ. ३०°	उ. ३५°
गुरु अस्त	१० अग. ९१	९ अग. ९१	८ अग. ९१	७ अग. ९१	६ अग. ९१	५ अग. ९१	४ अग. ९१
गुरु उदय	३१ अग.	३१ अग.	३१ अग.	३१ अग.	३१ अग.	३१ अग.	३१ अग.
शुक्र अस्त पश्चिम में	१६ अग.	१५ अग.	१४ अग.	१३ अग.	१२ अग.	१२ अग.	११ अग.
शुक्र उदय पूर्व में	२६ अग.	२७ अग.	२८ अग.	२९ अग.	२९ अग.	३० अग.	३१ अग.

अस्त से पहले तीन दिन वार्धक्य का समय और उदय के बाद तीन दिन बाल्य का समय माना जाता है। बाल्य एवं वार्धक्य में भी शुभ कार्य वर्जित रहते हैं।

सिंहस्थ गुरु दोष – इस वर्ष १४ अग. १९९१ ई. को गुरु सिंह राशि में आ जाता है। सम्पूर्ण सिंहस्थ गुरु कलिंग, गुर्जर तथा गौड प्रदेशों में वर्जित माना जाता है। मुहूर्त चिन्तामणिकार ने इस परम्परा का उल्लेख किया है। "सर्वः सिंह गुरुः वर्ज्यः कलिंगे गौड गुर्जरे"। इस वाक्य से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण सिंहस्थ गुरु कलिंग, गौड एवं गुर्जर प्रदेशों के अतिरिक्त अन्य भागों में वर्ज्य नहीं। अन्यत्र तो 'सिंहे सिंहांशकस्त्याज्यः" वाक्य के अनुसार सिंहस्थ गुरु में केवल सिंह नवांश (अर्थात् पू.फा. का प्रथम पाद मात्र) वर्जित करने की परम्परा है। हमने भी यहां केवल सिंह नवांश वर्जित किया है। इस वर्ष गुरु पू.फा. नक्षत्र के प्रथम पाद में मार्गी एवं वक्र गति से दो बार आया है।

(१) पहली बार गुरु मार्गी गति से आश्विन शुक्ल नवमी बुधवार कार्तिक प्रविष्टे १ तदनुसार १७ अक्तू. १९९१ को पू.फा. १ में आता है और कार्तिक शुक्ल १ गुरुवार को कार्तिक प्रविष्टे २२ तदनुसार ७ नवं. १९९१ को पू.फा. २ में चला जाता है। इस अवधि में शुभ कृत्य नहीं होंगे।

(२) दूसरी बार गुरु वक्र गति से फाल्गुन कृष्ण ६ रविवार फाल्गुन प्रविष्टे ११ तदनुसार २३ फर. १९९२ ई. को पुनः पू.फा. १ में आ जाता है और चैत्र कृष्ण २ शुक्र चैत्र प्रविष्टे ७ तदनुसार मार्च २० को वक्र गति से मघा ४ में चला जाता है। इस अवधि में भी शुभ कृत्य वर्जित होंगे।

ग्रहण शूल एवं ग्रहण नक्षत्र दोष – विगत वर्ष के ग्रहणों का नक्षत्र दोष इस वर्ष नहीं है। इस वर्ष में भारत में कोई ग्रहण दृश्य नहीं, केवल २१ दिसं. १९९१ का खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण भारत में सुदूर पूर्व भागों में ग्रस्तोदित रूप में थोड़े ही समय के लिए दीखेगा और वह भी बहुत थोड़े ही ग्रास के रूप में होगा। वस्तुतः यह ग्रहण भारत वर्ष के अधिकांश भागों के लिए उपेक्षणीय व अदर्शनीय ही माना जाना चाहिए। अतः इस वर्ष के किसी भी ग्रहण का शूल दोष व ग्रहण नक्षत्र दोष नहीं होगा।

वि. सं. २०४८ के विवाह मुहूर्तों में वर्जित लग्न आदि

कर्तरी दोष : इस वर्ष ८ अक्तू. से २० नवम्बर (१९९१) तक मंगल एवं राहु वृश्चिक लग्न को कर्तरी दोष ग्रस्त करते हैं। सूर्य एवं राहु इसी अवधि के अन्तर्गत १७ अक्तू. से १५ नवं. तक वृश्चिक को कर्तरी दोष युक्त करते हैं। चन्द्र कर्तरी की दृष्टि से अनुराधा नक्षत्र कर्तरी दोष युक्त होता है। अतः ८ अक्तू. से २० नवं. तक वृश्चिक लग्न विवाह – लग्न नहीं बन सकता न ही अनुराधा नक्षत्र में विवाह होंगे। वर्ष में अन्य कोई कर्तरी दोष नहीं बनता।

इस वर्ष (वि. सं. २०४८) में लम्बी अवधि के लिये वर्जित व शुद्ध वाले विवाह लग्न–

वि. सं. २०४८ में कुछ लग्न विवाह के लिये सारा वर्ष या काफी लम्बी अवधि के लिये वर्जित होंगे – इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है–

मकर एवं कर्क लग्न – क्योंकि शनि सम्पूर्ण वर्ष मकर में रहेगा। अतः मकर लग्न सम्पूर्ण वर्ष विवाहों के लिये अग्राह्य होगा। सारा वर्ष शनि कर्क लग्न के लिये सप्तमस्थ होगा अतः कर्क लग्न भी सम्पूर्ण वर्ष अग्राह्य होगा।

धनु एवं मिथुन लग्न – वैशाख अधिमास के अतिरिक्त सम्पूर्ण वर्ष राहु एवं केतु क्रमशः धनु एवं मिथुन में होंगे अतः सम्पूर्ण वर्ष धनु मिथुन लग्न भी विवाह लग्न नहीं बन सकते।

मेष लग्न – २२ अगस्त तक मेष विवाह लग्न बन सकता है बाद में भी षष्ठ मंगल (कन्यास्थ) दोष सापवाद होने से ७ अक्तू. तक मेष लग्न सम्भव है। बाद में २० जन. तक अष्टम शुक्र होने से यह लग्न वर्जित होगा बाद में वर्षान्त तक इस लग्न के लिये कोई दोष नहीं अतः मेष लग्न केवल ८ अक्तू. १९९१ से २० जन. १९९२ तक ही वर्जित होगा।

कुम्भ : इस वर्ष ल. ११ में सारा वर्ष शनि पूज्य होगा।

शुद्ध विवाह मुहूर्त तालिका (सं. २०४८ वि.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त तालिका (सं. २०४८ वि.)

मास तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख सन् १९९१ ई.	विवाह नक्षत्र	लत्तादि दश दोष रेखाएं	दोष रहित लग्न बल बाण पूजा आदि
द्वि. (शुद्ध) वै. शु. १०	गु.	ज्ये. ९	मई २३	उ.फा.	।ऽ।।।ऽ।ऽ।।	दि.ल. ५ (११।२९ से १३।४९)
,, ,, ,, १०	गु.	,, ,,	,, ,,	हस्त	ऽमृ.।।।।ऽरो.ऽ।।।	ल. धूलिमुख
,, ,, ,, ११	शु.	,, १०	,, २४	हस्त	ऽमृ.।।।।ऽरो.।।।।	दि. ल. ५ (११।५३ से १३।४५ तक)
,, ,, ,, १२	श.	,, ११	,, २५	स्वा.	ऽमृ.।।।।।।।।।	ल. ११ (२४।२६ से २५।५१ तक) (श.दा.)
,, ,, ,, १४	चं.	,, १३	,, २७	अनु.	।।।।।ऽग्नि।।।।	ल. १(२८।९ से २८।३९ तक) (शु.चं.दा.)
,, ,, ,, १५	मं.	,, १४	,, २८	,,	।।।।।ऽनृ।।।।	दि.ल. ५ (११।१० से १३।३०)
ज्येष्ठ कृ. २	गु.	,, १६	,, ३०	मूल	।ऽ।।।ऽचौ.।।।।	दि.ल. ५ (११।२ से १३।२२ तक) धूलिमुख, ११ (२४।७ से २५।३२ तक) (श.दा.), १२(२५।३२ से २६।५४ तक) (१।२६।५४ से २८।२७ तक) (शु.रा.दा.)
,, ,, ,, ८	गु.	,, २३	जून ६	उ.भा.	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल. ११ (२३।३९ से २५।१४ तक) (श.दा.) १(२७।२७ से २७।५९ तक)
,, ,, ,, ९	शु.	,, २४	,, ७	उ.भा.	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल. धूलिमुख
,, ,, ,, १०	श.	,, २५	,, ८	रेवती	।।।।।ऽनृ.।।ऽ।	दि.ल. ६ (१२।४६ से १५।१४ तक) (चं.दा.) धूलिमुख
,, ,, ,, १०	श.	,, २५	,, ८	अश्वि.	ऽशु.।।।।ऽनृ.।।।।	ल. ११ (२३।३१ से २४।५६ तक). (श.दा.) १२ (२४।५६ से २६।१९ तक)
ज्ये.कृ. ११	र.	ज्ये. २६	जून ९	अश्वि.	ऽशु.।।।।।।ऽ।।	दि.ल. ५(१०।२३ से १२।४३ तक)
ज्ये. शु. ८	बु.	आषा. ५	,, १९	हस्त	।ऽ।।।ऽनृ.ऽ।।।	ल.२ (२७।८ से २८।१३ तक)
,, ,, ९	गु.	,, ६	,, २०	हस्त	।ऽ।।।ऽनृ.।।।।	दि.ल. ५(९।३९ से ११।१५ तक) ७ (१४।१७ से १६।३९ तक) (म.दा.) धू.मु.
,, ,, ९	गु.	,, ६	,, २०	चित्रा	।।।।।।।ऽ।।	ल. १२(२४।९ से २४।५६ तक) (चं.दा.)
,, ,, १०	शु.	,, ७	,, २१	,,	।।।।।ऽचौ.।ऽ।।	दि.ल. ६ (१२।४६ से १४।१३ तक) (रा.दा.) गोधूलि
,, ,, १०	शु.	,, ७	,, २१	स्वा.	।।।।।ऽचौ.।।।।	ल. १ (२५।२८ से २७।१० तक) (शु. चं.दा.)
,, ,, ११	श.	,, ८	,, २२	,,	।।।।।ऽचौ.।।।।	दि.ल. ५(९।३१ से ११।१८ तक) १२ (२४।९ से २५।२४ तक)
,, ,, १२	र.	,, ९	,, २३	अनु.	।ऽ।।।ऽरो.।।।।	ल.२ (२७।५७ से २८।४७ तक) (श.दा.)
,, ,, १३	चं.	,, १०	,, २४	,,	।ऽ।।।ऽरो.।।।।	दि.ल. ५, ६, ७, (९।२४ से १६।२३ तक) धूलिमुख ११ (२२।२८ से २३।५४ तक) (श.दा.), १२ (२३।५४ से २५।१६ तक), १।२५।१६ से २६।४९ तक २ (२६।४९ से २८।४३ तक) (चं.दा.)
,, ,, १४	बु.	,, १२	,, २६	मूल	।।।।ऽबु.।।।ऽऽ	ल. १ (२५।१८ से २६।४१ तक)
,, ,, १५	गु.	,, १३	,, २७	मूल	।।।ऽबु.।ऽग्निऽऽ।।	दि.ल. ५, (९।१२ से ११।३२ तक) (गणित से क्रा.सा. सिंह लग्न में नहीं ।)
आषा. कृ. १	शु.	,, १४	,, २८	उ.षा.	।।।।ऽ केऽनृ.।।।।	दि.ल. ७ (१५।५० से १६।७) ११ (२२।१३ से २३।३८ तक) (श.दा.) १२ (२३।३८ से, २५।१० तक), १ (२५।१० से २६।३३ तक)
,, ,, ३	र.	,, १६	,, ३०	धनि.	।।।ऽगु.ऽगु.।।।।।	ल.११ (२२।५ से २३।३० तक)(श.दा.), १२ (२३।३० से २४।५२ तक) १ (२४।५२ से २६।२५ तक)
,, ,, ४	चं.	,, १७	जुला. १	,,	।।।ऽगु.ऽगु.।।।।।	दि.ल. ७ (१३।३४ से १५।५५ तक), ८ (१५।५५ से १८।१५ तक) (म.दा.) (श.दा.)
,, ,, ७	गु.	,, २०	,, ४	उ.षा.	।।।।।ऽरो.।ऽ।।	दि.ल. ६ (११।४ से १३।२२ तक) (चं.दा.), ८ (१५।४३ से १८।४ तक) धूलिमुख १ (२४।३७ से २६।९ तक) २ (२६।९ से २८।४ तक)
,, ,, ९	श.	,, २२	,, ६	अश्वि.	ऽरा.।।।।ऽग्नि.।ऽ।।	दि.ल. ६ (१०।५६ से १३।१४ तक) ७ (१३।१४ से १५।३६ तक) (चं.दा.) (गो धू.) २ (२६।१ से २७।४० तक)

विवाह मुहूर्त तालिका के विषय में — यहाँ तालिका में लग्नों के साथ कोष्ठक में दिए गए समय लग्न के दोष रहित समय घं. मि. (I.S.T.) बतलाते हैं । जहाँ अंकों के नीचे रेखा है वहां लग्न का वह समय प्रारम्भ या अन्त (या दोनों) का दोष पूर्ण भाग छोड़ दिया गया है । जहां लग्न के दोनों [illegible] इस तालिका [illegible] के लिये सारणियां भी नहीं देखनी पड़ेंगी ।

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त तालिका (सं० २०४८ वि.)

मास तिथि	वार	प्रविष्ठा	तारीख सन् १९९१ ई.	विवाह नक्षत्र	लत्तादि वश दोष रेखाएं	दोष रहित लग्न काल बान पुजा आदि
आषा.शु.३	र.	आषा.३०	जुला. १४	मघा	॥sमं.॥॥॥।	दि.ल. ६ (१०।२५ से १२।४३) ७ (१२।४३ से १५।४ तक) दि.ल. ७, (१२।३१ से १४।५२ तक) धू.मु., ८ (१४।५२ से १७।१२ तक)
,, ,, ६	बु.	श्राव. २	,, १७	हस्त	॥॥।s॥	(चं.दा.), १२ (२२।२३ से २३।४५ तक) २ (२५।१८ से २७।१३ तक)
,, ,, ७	गु.	,, ३	,, १८	चित्रा	॥॥॥।s॥	ल. १ (२३।४१ से २५।१४ तक) (चं.दा.) दि.ल. ६ (१०।५ से १२।२३ तक) (रा.दा.), ८ (१४।४५ से १७।५ तक) (मं.दा.)
,, ,, ८	शु.	,, ४	,, १९	स्वा.	॥॥sग्नि.॥॥	धूलिमुख, १ (२३।३८ से २५।१० तक)
,, ,, १०	र.	,, ६	,, २१	अनु.	॥॥sनृ.।s॥	ल.धू.मु., १ (२३।३० से २४।५६ तक) (गणित से कन्या लग्न में क्रां.सा.) ल.धू.मु. १(२३।२२ से २४।५५) २ (२४।५५ से २६।४९ तक)
,, ,, १२	मं.	,, ८	,, २३	मूल	॥॥sची.॥॥	दि.ल.६, (९।४६ से ११।१२ तक)
,, ,, १३	बु.	,, ९	,, २४	मूल.	॥॥sची.॥॥	दि.ल.६, (९।२० से ११।३६ तक) (चं.दा.), ८ (१३।५७ से १६।१७ तक) (मं.दा.)
श्राव.कृ. ४	बु.	,, १६	,, ३१	उ.भा.	॥॥sनृs॥	गो.धू. १ (२२।५० से २४।२३ तक)
श्राव. कृ.५	गु.	श्राव. १७	अग. १	रेवती	॥॥॥।s॥	दि.ल. ८ (१३।५३ से १६।१३ तक) (मं.दा.) गो.धू., १, २ (२२।४७ से २६।१४ तक)
भाद्र.शु. १	चं.	भाद्र २४	सितं. ९	उ.फा.	॥॥sनृ.॥॥	ल. २ (२१।४६ से २२।३६ तक) दि.ल. ७, ८ (८।५५ से १३।३६ तक) २ (२१।४२ से २३।२ तक)
,, ,, २	मं.	,, २५	,, १०	हस्त	॥॥॥॥॥	ल. २, (२३।२ से २३।३७ तक)
,, ,, २	मं.	,, २५	,, १०	चित्रा	॥॥sची.॥॥	दि.ल. ७, ८ (८।५१ से १३।३२ तक) धूलि.मुख.
,, ,, ३	बु.	,, २६	,, ११	,,	॥॥sची.॥॥	दि.ल. ८, (११।८ से १३।२८ तक) धूलिमुख, १ (२०।१ से २१।३४ तक) (चं.दा.)
,, ,, ४	गु.	,, २७	,, १२	स्वा.	sमं.गु.॥॥।s॥	दि.ल. ७ (८।४३ से ११।४ तक) धूलिमुख, १ (१९।५४ से २१।२६ तक)
,, ,, ६	श.	,, २९	,, १३	अनु.	॥॥sरो.॥॥	२ (२१।२६ से २३।२१ तक) (श. चं.दा.)
		आश्वि. ४	,, २०	श्रव.	।॥sगु।sग्नि.॥॥	दिल. ७, ८ (८।१५ से १२।५७ तक)
,, ,, १२	शु.	,, ४	,, २०	धनि.	sमृ.॥sशु.॥॥॥	ल.धू.मु., १, २ (१९।३० से २२।५७ तक)
,, ,, १२	शु.	,, ५	,, २१	धनि.	sमृ.॥sशु.।s॥॥	दि.ल. ७, ८ (८।११ से १२।५३ तक)
,, ,, १३	श.	आश्वि. २३	अक्तू. ९	स्वा.	।s॥।sनृ.॥॥	दि.ल. ८ (९।२२ से ११।४२ तक), ५ (२६।१९ से २८।३९ तक)
आश्वि. शु. २	गु.	,, २७	,, १३	मूल	।॥sके.।sरो.॥॥	ल.धू.मु. ५ (२६।३ से २८।२३ तक)
,, ,, ६	र.	कार्ति.२४	नवं. ९	मूल	॥॥sनृ.॥॥	ल. ५ (२४।१७ से २६।३७ तक) ६ (२६।३७ से २८।५५ तक) (रा.दा.)
कार्ति.शु.३	श.	,, २५	,, १०	,,	॥॥॥॥॥	दि.ल. ८ (७।१६ से ९।१८ तक)
,, ,, ४	र.	,, २८	,, १३	श्रव.	॥॥sरो.।s॥	ल. ११ (१३।१० से १४।३५ तक) (रा.गु.दा.) धू.मु., ६ (२६।२१ से २८।३९ तक) (रा.दा.), वृश्चिक लग्न में कर्तरी दोष
,, ,, ७	बु.	,, २९	,, १४	धनि.	॥॥sरोss॥	ल. ५ (२३।५७ से २६।१७ तक) (चं.दा.)
,, ,, ८	गु.	मार्ग. १२	,, २७	मघा	sशु.॥॥।s॥	ल. ६ (२५।२६ से २७।४४ तक), ७ (२७।४४ से ३०।६ तक) (रा.दा.)
मार्ग.कृ. ६	बु.	,, १४	,, २९	उ.फा.	॥॥sग्नि.॥॥	ल. ६ (२५।१८ से २७।३६ तक), ७ (२७।३६ से २८।१२ तक) (रा.दा.)
,, ,, ८	शु.	,, १५	,, ३०	उ.फा.	॥॥sग्नि.।॥s	ल.धू.मु.
,, ,, १०	श.	,, १६	दिसं. १	हस्त	॥॥sची.।s॥	ल.धू.मु.
,, ,, ११	र.	,, १६	,, १	चित्रा	॥sशु.॥॥॥	ल. ५ (२२।५१ से २५।११ तक) (शु.दा.), ६ (२५।११ से २७।२८ तक) (रा.दा.)
,, ,, ११	र.					

शुद्ध विवाह मुहूर्त तालिका (सं. २०४८ वि.)
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शुद्ध विवाह मुहूर्त तालिका (सं. २०४८ वि.)

मास तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख सन् १९९१ ई.	विवाह नक्षत्र	लत्तादि वश दोष रेखाएं	दोष रहित लग्न समय दान पूजा आदि
,, ,, १२	चं.	,, १७	दि. २	स्वाती	।।।।।sची.।।।।	ल.५ (२२।५१ से २५।१७ तक), ६ (२५।१७ से २७।२४ तक) धू.मु.
मार्ग.शु. ५	बु.	,, २६	,, ११	श्रव.	।।।।।sचौs।।।	दि.ल. ११ (११।२० से १२।४५ तक) (गु.श.दा.) (चं.दा.)
,, ,, ५	बु.	,, २६	,, ११	धनि.	।s।।।।s।।।	ल. ५ (२२।११ से २४।३१ तक)
,, ,, ६	गु.	,, २७	,, १२	,,	।s।।।।।।।।	ल.धू.मु.
पौष. शु. ११	गु.	माघ ३	जन. १६, ९२ ई.	रोहि.	।।।।।।।।।s	ल. ६ (२२।९ से २४।२६ तक), (रा.शु.दा.) ८ (२६।४८ से २९।८ तक) (चं.दा.)
माघ कृ. ४	गु.	माघ १०	जन. २३	उ.फा.	।।।।।sरो.।s।।	ल. १२ (९।५५ से ११।१७ तक) (चं.दा.), गो.धू.
,, ,, ५	शु.	,, ११	,, २४	हस्त	।।।।।।।।।।	ल.गो.धू.
,, ,, ६	श.	,, १२	,, २५	,,	।।।।।।।s।।	ल.गो.धू.
,, ,, ६	श.	,, १२	,, २५	चित्रा	sचं.।।।।sग्नि.।।।।	ल. ६ (२२।४९ से २३।५१ तक) ८ (२६।१३ से २८।३३ तक)
,, ,, ७	र.	,, १३	,, २६	,,	sचं.।।।।sग्नि.।।।।	ल. ११ (८।१८ से ९।४३ तक), १ (११।६ से १२।३८ तक)
,, ,, ९	मं.	,, १५	,, २८	अनु.	।।।।।sनृ.।s।।	ल.धू.मु. ६ (२१।२२ से २२।५५ तक)
,, ,, १२	शु.	,, १८	,, ३१	मूल	।।।।।sरो.।।।s	ल. १(१०।४६ से १२।१९ तक)
माघ शु. १	मं.	,, २२	फर. ४	धनि.	।s।।।।।।।।	ल. ८ (२५।३३ से २७।५३ तक)
,, ,, ४	शु.	,, २५	,, ७	उ.भा.	।।।।।sची.।।।।	ल.धू.मु.
,, ,, ४	श.	,, २६	,, ८	उ.भा.	।।।।sची.।।।।	ल.११ (८।३४ से ८।५२ तक) (श.दा.)
,, ,, ५	र.	,, २७	,, ९	रेव.	।।।sगु.।।।।।।	ल.१ (१०।११ से ११।४३ तक) धू.मु.
,, ,, ५	र.	,, २७	,, ९	अश्वि.	।।।sगु.।।।।।।	ल.५ (१८।१४ से १९।४४ तक)
,, ,, ११	शु.	फाल्गु. २	,, १४	मृग.	।s।।।।।।।।।	ल. १ (९।५१ से ११।२४ तक), २ (११।२४ से १३।१८ तक) (मं.दा.)
,, ,, १५	मं.	,, ६	,, १८	मघा	।।।।।sनृ.।।।।	ल. १ (९।३५ से ११।८ तक), २ (११।८ से १३।१३ तक) (मं.दा.)
						. ७ (२२।१७ से २४।३८ तक), ८ (२४।३८ से २५।२० तक)
फाल्गु. कृ.१	बु.	,, ७	,, १९	उ.फा.	।।।।।sची.।s।।	ल. ७ (२३।५६ से २४।३४ तक) (शु.दा.)
,, ,, ३	गु.	,, ८	,, २०	उ.फा.	।।।।।sची.।।।।	ल. १ (९।२७ से ११।० तक), (मं.दा.), २ (११।० से १२।५५ तक)
,, ,, ४	शु.	,, ९	,, २१	चित्रा	।s।।।sरो.।s।।	ल. ८ (२४।२६ से २६।४६ तक) (शु.दा.)
,, ,, ५	श.	,, १०	,, २२	,,	।s।।।sरो.।s।।	ल. १ (९।२० से १०।५२ तक) (चं.मं.दा.), २ (१०।५२ से १२।४७ तक) गो.धू.

—:आगामी वि.सं. २०४९ में विवाहादि मुहूर्तों में वर्जित काल:—

शुक्र अस्त — लगभग ११ मई १९९२ से ४ जुलाई १९९२ तक

गुरु अस्त — लगभग ४ सितं. १९९२ ई. से ३० सितं १९९२ तक

सिंहस्थ गुरु : विगत वर्ष वि. सं. २०४८ में वक्री होने के बाद मार्गी होने पर गुरु अगले वर्ष (वि.सं. २०४९ में) पुनः सिंहनवांशान्तर्गत पू.फा. प्रथम चरण में आएगा। लगभग ४ जून से ५ जुलाई १९९२ तक पू.फा. रहने के कारण यह कालावधि भी मुहूर्तों के लिये वर्ज्य होगी। **आश्विन कृष्ण पक्ष :** पितृ पक्ष १२ सित. से २६ सित. १९९२ तक होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिलान शुद्धि कोष्ठक (सं. २०४८ वि.)

सं. २०४८ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह निर्णय के लिये मिलान शुद्धि किस राशि वाले वर और कन्या के लिये वि. सं २०४८ में कितने विवाह मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं।

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त (साहा) निकलवाने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में मिलान-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "मिलान-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं. २०४७ के शुद्ध विवाह-मुहूर्त इस पंचांग में पहले दिए गए हैं। किन-किन महीने की किन-किन तारीख वाले विवाह-मुहूर्त में किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह मिलान-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "मिलान-शुद्धि कोष्ठक" में निश्चित किया गया है। अमुक राशि वाले वर और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह-मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं – यह इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी सुगमता से तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" और कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों में लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे – मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४८ में सितम्बर के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है – यह मालूम करना है। नीचे "मिलान-शुद्धि कोष्ठक" देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे सितम्बर की केवल ९, १०, ११, १२, १८ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे सितम्बर की ९, १०, ११, १२, १४, २०, २१ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह अगस्त में केवल ९, १०, ११, १२, १४ को ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीख दोनों में एक-सी मिलती है। इस प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ, अष्टम, द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न समझ कर पूजा समझना चाहिए।

इस वर्ष गुरु वर्षारम्भ से १३ अगस्त तक कर्क राशि में रहेगा। कर्क राशि में गुरु उच्चस्थ है अतः गोचर में अशुभ भी यह शुभ हो जाता है। बृहस्पति का वाक्य है—स्वोच्च-स्वक्षेत्र सुहृद्गृहस्थः नीचोऽप्यशुभ गोचरः। अति शोभनम् स्यात् विवाहोत्सवादिषु ।। अतः गुरु ३ अगस्त तक किसी राशि से चौथे आठवें बारहवें होने पर भी पूज्य नहीं होगा – अन्य राशियों की तो बात ही क्या है – अतः गुरु १३ अगस्त तक किसी भी राशि के लिये पूज्य नहीं।

कन्या व जन्मराशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	मई २३, २४, ३०, जून ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७, ३० जुलाई १, ४, ६, १४ सितं. ९, १०, ११, १२, २१, अक्तू. ९, १३, नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, जन. १६, २३, २४, २५, २६, ३१ फर. ४, ७, ९, १०, १८, १९, २१, २२	१४ अप्रैल से १४ जून १७ अग. से १६ सितं., १७ अक्तू. से १५ नवं. १६ दिसं. से १३ जन.	मई २३, २४, ३०, जून, ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २६, २७ जुलाई १, ४, ६, १४, १७, १८, १९, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, २१, अक्तू. ९, १३, नवं., ९, १०, १३, १४, २७, २९, दिस., १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५, २६, ३१ फर. ४, ७, ९, १०, १८, २१, २२	....
वृष	मई २३, २४, २७, २८ जून ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, ३० जुलाई जुला. १, ४, ६, १७, १९, २१, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४ नव. १३, १४, दिस. १, २, ३, ११, १२ जन. १६, २४, २५, २६, २८ फर ४, ७, ८, ९, १०, २१, २२	१५ मई से १५ जुलाई १७ सितं से १६ अक्तू. १६ नवं. से १५ दिसं. १४ जन. से १२ फर.	मई २३, २४, २७, २८, जून ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, जुला. १, ४, ६, १७, १८, १९, २१, ३१, अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, २० अक्तू. ९, नव. १३, १४, दिसं १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २४, २५, २६, २८ फर. ४, ७, ९, १०, २१, २२	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
मिथुन	जून २० (ल. १२) २१, २२, २३, २४, २६, २७, जुला. १, ४, ६, १८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं ११ (धूलिमुख) १२, १४, नवं ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३०, दिस., २, ३, १२, फर. १८, १९	१५ जून से १६ अग. १७ अक्तू. से १५ नवं. १६ दिस. से १३ जन. १३ फर. से १३ मार्च	मई २७, २८, ३०, जून ६, ७, ८, ९, २० (ल. १२) २१, २२, २३, २४, २६, २७, जुला. १, ४, ६, १८, १९, २१, २३, २४, ३१, अग. १, सितं ११ (धूलिमुख) १२, १४, २१, अक्तू. ९, १३, नव. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३० दिसं. २, ३, १२ जन. १६, २४, २५, २६, २८, फर. ४, ७, ८, ९, १०	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
कर्क	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८, ९ जुला. १७, २१, २३, २४, ३१, अग. १, सितं ९, १०, ११ (ल. ७, ८) १४, २०, नव. २७, २९ दिस. १, ११, जन. १६, २३, २४, २५ (ल. गोधू) २८, ३१ फर. ७, ८, ९, १०।	१६ जुलाई से १६ सितं. १६ नवं. से १५ दिसं. १४ जन. से १२ फर.	मई २३, २४, २७, २८, ३०, जून ६, ७, ८, ९, १९, २० (ल ५, ७) २३, २४ २६, २७, ३० जुला. ४, ६, १४, १७, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं ९, १० ११ (ल ७, ८) १४, २०, अक्तू. १३ नवं. ९, १०, १३, २७, २९, दिसं. १, ११ ६, २३, २४, २५ (ल गोधूलि) २८, ३१, फर. ७, ८, ९, १०	....

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह	मई २३, २४, ३० जून ८ (ल. ११, १२) १९, २०, २१, २२, २६, २७, ३० जुला. १, ६, १४, सित. ९, १०, ११, १२, २०, २१, अक्तू. ९, १३, नवं. ९, १० १३, जन. १६, २३, २४, २५, २६, ३१ फर. ४, ९ (ल. ५) १०, १८, १९, २१, २२	१४ अप्रैल से १४ मई १७ अग. से १६ अक्तू. १६ दिसं. से १३ जन. १३ फर. से १३ मार्च	मई २३, २४, ३० जून (ल. ११, १२) १९, २०, २१, २२, २६, २७ ३०, जुला. १, ६, १४, १७, १८, १९, २३, २४, सित. ९, १०, ११, १२, २० २१, अक्तू. ९, १३, नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३० दिसं १, २, ३, ११, १२ जन. १६, २३, २४, २५, २६, ३१ फर. ४, ९ (ल. ५) १०, १८, १९, २१, २२	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
कन्या	मई २३, २४, २७, २८ जून ६, ७, ८ (ल. ६, धूलिमुख) १९, २० २१, २२, २३, २४, ३० जुला. १, ४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं ९, १०, ११, १२, १४ नवं. १३, १४, २७, २९, ३० दिसं. १, २, ३, ११ १२ जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८, ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २१, २२	१५ मई से १४ जून १७ सित. से १५ नवं. १४ जन. से १२ फर.	मई २३, २४, २७, २८, जून ६, ७, ८ (ल. ६, धू.मु.) १९, २०, २१, २२, २३, २४, ३० जुला. १, ४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सित. ९, १०, ११, १२, १४ २०, २१, अक्तू. ९, १३, नवं. १३, १४, २७, २९, ३०, दिसं. १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८, ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०, १८, २१, २२	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
तुला	जून १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, जुला. १, ४, ६, १४, १७, १८ १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, दिसं. १, २, ३, १२, फर. १८, १९, २१, २२	१४ अप्रै. से १४ मई १५ जून से १५ जुला. १७ अक्तू. से १५ दिसं. १३ फर. से १३ मार्च	मई २३, २४, २७, २८, ३०, जून ६, ७, ८, ९, ११, २०, २१, २२, २३, २४ २६, २७ जुला. १, ४, ६, १४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१, अक्तू. ९, १३, नवं. ९, १०, १४, २७, २९, ३०, दिसं. १, २, ३, १२, जन. २३, २४, २५, २६, २८, ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २१, २२	
वृश्चिक	मई २३, २४, २७, २८, ३०, जून ६, ७, ८, ९, जुला. १७, १८, १९, २१ २३, २४, ३१, अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, २०, अक्तू. ९, १३, नवं. २३, २७, २९, ३०, दिसं २, ३, ११ जन. १६, २३, २४, २५ २६, २८, ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १६ अगस्त १६ नवम्बर से १३ जून	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, ४, ६, १४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, २०, अक्तू. ९, १३ नवं. ९, १०, २३, २७, २९, ३०, दिसं. २, ३, ११ जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८ ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २१, २२	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
धनु	मई २३, २४, २७, ३० जून ८ (ल. ११, १२) १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३० जुला. १, ६, १४, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, २०, २१ अक्तू. ९, १३ नवं. ९, १०, १३, १४, जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८, ३१ फर. ४ ९ (ल. ५) १०, १८, १९, २१, २२	१५ मई से १४ जून १६ जुला. से १६ अग. १६ नवं. से १३ जन.	मई, २३, २४, २७, ३० जून ८ (ल. ११, १२) १९, २०, २१, २२, २३, २४ २७, ३०, जुला. १, ६, १४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, सितं. ९, १०, ११ १२, १४, २०, २१, अक्तू. ९, १३ नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३०, दिसं. १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५, २६ फर. ४, ९, (ल ५) १०, १८, १९, २१, २२	....
मकर	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८ (ल. धू.मु.) ९, १९ २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३० जुला. १, ४, १८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४ नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३०, दिसं. १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८, ३१, फर. ४, ७, ९, १०, २१, २२	१४ अप्री. से १४ मई १५ जून से १५ जुलाई १७ अग. से १६ सितं. १६ दिसं. से १२ फर.	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८ (ल. धूलि. मु.) ९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३० जुला. १, ४, ८, १९, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११, १२, १४, २०, २१ अक्तू. ९, १३, नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३० दिसं. १, २, ३, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५, २६, २८, ३१ फर. ४, ७, ९, १०, २१, २२	१४ अगस्त से वर्षान्त तक
कुम्भ	जून १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३० जुलाई १, ४, ६, १४ १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१, अग. १, सितं. ११ (ल. धूलिमुख) १२, १४, नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३० दिसं. १, २, ३, ११, १२ फर. १८, १९, २१, २२	१५ मई से १४ जून १६ जुला. से १६ अग. १७ सितं. से १६ अक्तू. १४ फर. से १३ मार्च	मई २७, २८, ३० जून ६, ७, ८, ९, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २६, २७, ३० १, ४, ६, १४, १७, १८, १९, २१, २३, २४, ३१, अग. १, सितं. ११ (ल. धूलिमुख) १२, १४, २०, २१, अक्तू. ९, १३ नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९, ३० दिसं. १, २, ३, ११, १२ जन. २३, २४, २५ (ल ६) (२२।४९) बाद) २६, २८, ३१, फ. ४, ७, ८, ९ १०, १८, १९, २१, २२	
मीन	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८, ९, जुला. २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११ (ल. ७, ८) १४, २०, २१ नवं. २७, २९ दिसं. १, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५ (ल. गोधूलि) २८, ३१ फर. ४, ७, ८, ९, १०	१४ अप्री. से १४ मई १६ जुलाई से १६ अगस्त १६ सितं से १६ अक्तू. १६ नवं. से १५ दिसं.	मई २३, २४, २७, २८, ३० जून ६, ७, ८, ९, १९, २० (ल. ५, ७) २३, २४, २६, २७, ३० जुला. १, ४, ६, १४, २१, २३, २४, ३१ अग. १, सितं. ९, १०, ११ (ल ७, ८) १४, २०, २१, अक्तू. १३, नवं. ९, १०, १३, १४, २७, २९ दिसं. १, ११, १२, जन. १६, २३, २४, २५ (ल. गोधूलि) २८, ३१, फर. ४, ७, ८, ९, १०, १८, १९, २१	१४ अगस्त से वर्षान्त तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं० २०४८ वि.)

हमें लोगों की ओर से विवाह मुहूर्तों के स्पष्टीकरण के लिये बहुत से पत्र आते रहते हैं। उनकी ओर से ऐसे प्रश्न भी आते हैं कि किसी दिन के मुहूर्त को क्यों छोड़ा गया? इस कारण हम सर्व साधारण के लिये स्पष्टीकरणार्थ अशुद्ध विवाह मुहूर्त भी देते हैं। इन अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की लिस्ट मुख्य मुख्य दोष दिखलाए गए हैं जिन के कारण वे छोड़े गए हैं। आशा है — जनता इस विवरण से अपनी भ्रान्तियां दूर कर सकेगी।

(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. का ही प्रयोग है)

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख सन् ९१ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से वैशा.कृ.१४ श. (१३ अप्रै. १९९१ ई. तक) मीनस्थ सूर्य				
वैशा.कृ.३०	र.	अप्रैल १४अमा., संक्रान्ति दिन		
प्र.(अधि.) वैशा. शु.१चं. (अप्रै.१५) से द्वि. (अधि.) वैशा. कृ.३० मं. (१४ मई) तक अधिक मास				
द्वि (शुद्ध)				
वै.शु. १	बु.	मई १५	रोहि.-मृग	संक्रान्ति दिन
,, ,, ३	गु.	,, १६	मृग.	राहु-वेध
,, ,, ७	च	,, २०	मघा	शनि-वेध
,, ,, ८	म.	,, २१	,, ,,	,, ,,
,, ,, ११	शु.	,, २४	चित्रा	लग्नाभाव
,, ,, १२	श.	,, २५	,,	कालाल्पता
,, ,, १२	श.	,, २५	स्वाती	मृत्युबाण
,, ,, १३	र.	,, २६	,, ,,	,, ,,
ज्ये.कृ.३	शु.	,, ३१	मूल	लग्नाभाव
,, ,, ४	श.	जून १	उ.षा.	गहयुति
,, ,, ५	र.	,, २	,, ,,	,, ,,
,, ,, ५	र.	,, २	श्रवण	शनियुति
,, ,, ६	चं.	,, ३	श्रव.-धनि.	शनियुति मृत्युबाण
,, ,, ६	मं.	,, ४	धनि.	वैधृति
ज्ये.शु. ५	र.	,, १६	मघा	शनि वेध
,, ,, ६	च.	,, १७	,,	,, ,,
,, ,, ७	म	,, १८	उ.फा.	दग्धा दोष
,, ,, ८	बु.	,, १९	उ.फा.	व्यातीपात
,, ,, १४	म.	,, २४	अनु.	लग्नाभाव
आषा.कृ.२	श.	,, २९	उ.षा.	लग्नाभाव, वैधृति
,, ,, २	श.	,, २९	श्रव.	वैधृति-शनियुति
,, ,, ३	र	,, ३०	,,	शनियुति
,, ,, ६	बु.	जुला. ३	उ.भा.	भद्रा

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख सन् ९१ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा.कृ.७	गु.	जुला ४	रेवती	लग्नाभाव
,, ,, ८	शु.	,, ५	,, ,,	मृत्यु बाण
,, ,, ११	चं.	,, ८	रोहि.	भुजंगपात
,, ,, १२	मं.	,, ९	,,	,, ,,
आषा.शु.४	चं.	,, १५	मघा	भद्रा दोष
,, ,, ४	चं.	,, १५	उ.फा.	मासान्त
,, ,, ५	मं.	,, १६	उ.फा.हस्त	संक्रान्ति दिन
,, ,, ६	बु	,, १७	चित्रा	लग्नाभाव
,, ,, ८	शु.	,, १९	,,	,, ,,
,, ,, ९	श.	,, २०	स्वाती	,, ,,
,, ,, १४	गु.	,, २५	उ.षा.	भद्रा, शनि युति
,, ,, १५	गु.	,, २६	,, ,,	शनियुति
श्राव.कृ.१	शु.	,, २७	श्रव.	मृत्युबाण
श्राव.कृ.१	श.	,, २७	धनि.	लग्नाभाव
,, ,, २	र.	,, २८	,,	,, ,,
,, ,, ३	चं.	,, २९	,,	,, ,,
,, ,, ५	गु.	अग. १	उ.भा.	दग्धा अपरिहार्या
,, ,, ६	शु.	अग. २	रेवती	लग्नाभाव
,, ,, ६	शु.	,, २	अश्वि.	भुजंगपात
,, ,, ८	श.	,, ३	,,	,, ,,
श्राव. कृ. १० चं. (अग.) से भाद्र. कृष्ण ६ शनि (३१ अग.) तक गुरु अस्त. • श्राव. शु. ३ चं. (अग. १२) से भाद्र. कृ. ५ शु. (३० अग.) तक शुक्र अस्त				
भाद्र.कृ.७	र.	सित. १	रोहि.	अभिजित शनि, वेध
,, ,, ८	चं.	,, २	,,	,, ,,
,, ,, ८	चं	,, २	मृग.	उ.षा. शनिवेध
,, ,, ९	म.	,, ३	मृग.	शनिवेध
भाद्र.शु.१	चं.	,, ९	हस्त	लग्नाभाव
,, ,, ३	बु.	,, ११	स्वा	भद्रा दोष

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख सन् ९१ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र.शु.५	शु.	सित. १३	अनु.	लग्नाभाव
,, ,, ७	र.	,, १५	मूल	,, ,,
,, ,, ८	चं.	,, १६	,,	मासान्त
,, ,, ९	मं	,, १७	मूल	संक्रान्ति दिन
,, ,, १०	बु.	,, १८	उ.षा.	शनियुति
,, ,, ११	गु.	,, १९	उ.षा.	शनियुति
,, ,, १५	च	,, २३	उ.भा.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध
८ आश्विन से २१ आश्विन (२४ सितं. ७ अक्तू.) तक श्राद्ध पक्ष				
आश्वि.शु.१	मं.	अक्तू.८	चित्रा	वैधृति
,, ,, ३	गु.	,, १०	स्वाती	लग्नाभाव
,, ,, ४	शु.	,, ,, ११	अनु.	चन्द्र क्रान्ति
,, ,, ५	श.	,, १२	अनु.	,, ,,
,, ,, ६	चं.	,, १४	मूल	,, ,,
,, ,, ७	म.	,, १५	उ.षा.	शनि युति
,, ,, ८	बु.	,, १६	,, ,,	शनियुति मासान्त
,, ,, ८	बु.	,, १६	श्रवण	मासान्त
,, ,, ९	गु.	,, १७	श्रव., धनि.	संक्रान्ति दिन
आश्विन शुक्ल ९ गुरु (१७ अक्तू.) से कार्तिक शुक्ल १ गुरु ७ नवं. तक गुरु सिंह नवांश में				
कार्ति.शु.५	चं.	नवं ११	उ.षा.	शनियुति
,, ,, ६	म.	,, १२	,, ,,	भुजंगपात शनियुति
,, ,, ७	बु.	,, १३	,, ,,	शनियुति भुजंगपात
कार्ति. शु. ८	गु.	नवं. १४	धनि.	मासान्त
कार्तिक शुक्ल १० रवि. (१७ नवं.) से कार्ति. शुक्ल १४ गु. (२१ नवं.) भीष्मपंचक				
मार्ग.कृ.१	शु.	नव.२२	रोहि.	अभिजित्-शनिवेध
,, ,, २	श.	,, २३	,,	,, ,, ,, ,,
,, ,, २	श.	,, २३	मृग.	उ.षा. शनिवेध
,, ,, ३	र	,, २४	मृग.	,, ,, ,, ,,

शेष पृ.१९७ पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नामकरण, मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विद्यारम्भ, गृहारम्भ, नूतन ग्रह प्रवेश, देव-प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त (वि.सं. २०४८)

।। नामकरण मुहूर्त ।।

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
द्वि शु. वै.शु.	३	बृ.	ज्येष्ठ २	मई १६	मृग	
.. ..	१०	बृ.	.. ९	.. २३	उ.फा	
.. ..	११	शु.	.. १०	.. २४	हस्त	
ज्ये. कृ.	७	बृ.	.. २२	जून ५	शत.	
ज्येष्ठ शु	२	शु.	.. ३१	.. १४	पुन	५।३५ बाद
.. ..	१०	शु.	आषा. ७	.. २१	चित्रा	१२।४६ बाद
माघ कृ.	१	ब.	माघ ७	जन २० १९९२ ई	पुष्य	
.. ..	५	शु.	.. ११	.. २४	उ.षा	
माघ शु	२	बृ.	.. २३	फर. ५	धनि.	शत १२।० तक
.. ..	३	बृ.	.. २४	.. ६	शत.	११।४९ तक
.. ..	११	शु	फाल्गु. २	.. १४	मृग.	
फाल्गु.कृ.	३	बृ.	.. ८	.. २०	उ.फा.	१७।२७ तक
.. ..	९	चं.	.. १९	मार्च २	श्रवण	१२।४८ तक
फाल्गु. शु.	२	शु.	.. २३	.. ६	उ.भा.	
.. ..	७	बृ.	.. २८	.. ११	रोहणी	

नोट (१) सूतक के अन्त में तुरन्त नामकरण किया जा सकता है। वहाँ शुभ नक्षत्रादि का विचार आवश्यक नहीं। नामकरण यदि सूतक के अन्त में न हो सके तो उत्तरायण एवं गुरु शुक्रोदयास्तादि काल शुद्धि देखकर नामकरण करना होगा। ऊपर दिए गए ये मुहूर्त इसी स्थिति में प्रयोग में लाए।

नोट (२) नाम दो, तीन या चार अक्षर का एवं समास-रहित अच्छा माना जाता है। नाम रखने के लिए स्व. पिता श्री पं. मुकुन्द वल्लभ ज्यो. आचार्य द्वारा रचित पुस्तक "राश्यभिधान कल्पलता" (नाम-कोष) का प्रयोग करें।

मुण्डन मुहूर्त

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
द्वि.शु. वै.शु.	३	बृ.	ज्येष्ठ २	मई १६	मृग	
	११	शु.	.. १०	.. २४	हस्त	११।१३ बाद
	७	बु.	.. २२	जून ५	शतभिषा	
	२	शु.	.. ३१	.. १४	पुन.	५।३५ बाद
	१०	शु.	आषा. ७	.. २१	चित्रा	१२।४६ बाद
	१२	शु.	माघ ४	जन १७ १९९२ई	मृग	७।५८ बाद

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
माघ कृ.	११	बृ.	माघ १७	जन. ३०	ज्येष्ठा	
.. शु.	२	बृ.	.. २३	फर. ५	धनि.	शत १२।० तक
.. ..	३	बृ.	.. २४	.. ६	शत.	
.. ..	११	शु.	फाल्गु. २	.. १४	मृग.	

अक्षरारम्भ मुहूर्त

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
द्वि.शु. वै.शु.	११	शु.	ज्येष्ठ १०	मई २४	चित्रा	१६।३३ बाद
ज्ये. शु.	२	शु.	.. ३१	जून १४	पुन.	५।३५ बाद
.. शु.	१०	शु.	आषा. ७	.. २१	चित्रा	१२।४६ बाद
माघ कृ.	१०	बृ.	माघ १६	२९. जन '९२'	अनु.	१५।२३ तक
.. शु.	११	शु.	फाल्गु. २	फर. १४		१६।३९ तक

उपनयन मुहूर्त

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
चैत्र शु.	७	शु.	चैत्र ९	मार्च २२	रोहणी	
प्र.वैशा. कृ.	५	बृ.	.. २२	अप्रै. ४	अनु.	
द्वि.शु. वै.शु.	१०	बृ.	ज्ये.९	मई २३	उ.फा.	
.. ..	११	शु.	.. १०	.. २४	हस्त	११।५३ से १६।३३
माघ कृ.	५	शु.	माघ ११	जन. २४ '९२'	उ.फा.	११।३६ तक
माघ शु.	३	बृ.	.. २४	फर ६	शत.	११।४९ तक
फाल्गु. कृ.	३	बृ.	फाल्गु ८	.. २०	उ.फा.	
.. शु.	२	शु.	.. २३	मार्च ६	उ.भा.	

उपनयन में विशेष— अत्यावश्यकता की स्थिति में चन्द्रबल देखकर किसी सत्तीर्थ पर बिना उपनयन मुहूर्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। अपने कुल परम्परागत वेद के उपाकर्म के दिन (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा आदि को) भी बिना मुहूर्त के यज्ञोपवीत संस्कार किया जा सकता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
द्वि.शु. वै.शु.	३	बृ.	ज्येष्ठ २	मई १६	मृग	
.. ..	६	र.	.. ५	.. १९	पुष्य	
.. ..	११	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
ज्ये. कृ.	२	बृ.	ज्येष्ठ १६	मई ३०	मूल	
.. ..	३	शु.	.. १७	.. ३१	मूल.	पू.षा.
.. ..	११	र.	.. २६	जून ९	अश्वि.	
.. शु.	२	शु.	.. ३१	.. १४	आर्द्रा.	पुन.
ज्ये शु.	१०	शु.	आषा.७	जून २१	चित्रा	
माघ कृ.	१०	बृ.	माघ १६	जन. २९ '९२'	अनु.	११।४४ से १५।२[illegible]
.. ..	१२	श	.. १८	.. ३१	मूल	
माघ शु	२	बृ	.. २३	फर ५	धनि.	शत.
.. ..	३	बृ.	.. २४	.. ६	शत.	पू.भा.
.. ..	५	र	.. २६	.. ९	रेवती	
.. ..	११	श	फाल्गु. २	.. १४	मृग.	
फाल्गु कृ.	१०	म.	.. १५	.. २७	मूल	
.. ..	११	शु.	.. १६	.. २८	पू.षा.	

विपणि (दुकान खोलने का मुहूर्त)

मास	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकालावधि
द्वि.शु. वै.शु.	१	बु.	ज्येष्ठ १	मई १५	रोहणी	
.. ..	३	बृ.	.. २	.. १६	मृग.	
.. ..	६	र.	.. ५.	.. १९	पुष्य	
.. ..	१०	बृ.	.. ९	.. २३	उ.फा.	
.. ..	१२	श.	.. ११	.. २५	चित्रा	
ज्येष्ठ कृ.	५	र.	.. १९	जून २	उ.षा.	
.. ..	१०	श	.. २५	.. ८	रेवती	
.. ..	११	र	.. २६	.. ९	अश्वि.	
.. शु.	१	बु.	.. ३०	.. १३	मृग.	८।२५ तक
.. ..	३	श	आषा.१	.. १५	पुष्य	
.. ..	८	बु.	.. ५	.. १९	उ.फा.	९।५४ बाद
.. ..	१०	शु.	.. ७	.. २१	चित्रा	१२।४६ बाद
पौष शु.	१२	शु.	माघ ४	जन १७ '९२'	रोहणी	मृग शिर
माघ कृ.	१	चं	.. ७	.. २०	पुष्य	
.. ..	५	शु.	.. ११	.. २४	उ.फा	हस्त
.. ..	६	श	.. १२	.. २५	हस्त	९।३९ तक
.. ..	१०	बु.	.. १६	.. २९	अनु.	११।४४ बाद
.. शु.	५	र	.. २७	फर ९	रेवती	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

विपणि (दुकान खोलने का मुहूर्त)

	पक्ष.ति.	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	[illegible]
शु.	६	च	माघ २८	फर १०	अश्वि	
..	११	शु.	फाल्गु. २	.. १४	मृग	
फाल्गु. कृ. ३	गु.	.. ८	.. २०	उ.फा		
.. ..	५	श.	.. १०	.. २२	चित्रा	
.. ..	११	श.	.. १७	.. २९	उ.षा	
.. ..	१२	र.	.. १८	मार्च १	उ.षा.	९।४६ तक
.. शु.	२	शु.	.. २३	.. ६	उ.भा	
.. ..	३	श.	.. २४	.. ७	रेवती	
.. ..	७	बु.	.. २८	.. ११	रोहणी	
.. ..	८	गु.	.. २९	.. १२	मृग	८।४ बाद

अभिजित् मुहूर्त

अभिजित् मुहूर्त—सूर्योदय काल में दिनमान का आधा जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त का मध्यकाल होता है। दिनमान के तीसवें, ३० वें भाग को अभिजित् मुहूर्त के मध्यकाल में घटाने पर अभिजित् मुहूर्त का प्रारम्भ और जोड़ने पर समाप्ति काल होता है। अभिजित् मुहूर्त सभी कार्यों के लिए शुभ माना गया है।

विशेष प्रतिष्ठा मुहूर्त

श्री गणपति प्रतिष्ठा मुहूर्त

वैशाख कृ.	४	बु.	चैत्र २१	अप्रै.२	स्वा.	७।४३ बाद
ज्येष्ठ कृ	४	श.	वैशा.१८	जून१	उ.षा.	९।४२ बाद
ज्येष्ठ शु.	३	श.	आषा.२	.. १६	पुष्य	
पौष शु.	४	गु.	पौष. २५	जन. ९ '९२'	शत.	
फाल्गु. कृ.	४	शु.	फाल्गु.९	फर.२१	हस्त	
.. शु.	४	र.	.. २५	मार्च ८	अश्वि.	१०।१८ तक

गौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त

द्वि.शु. वै.शु.	३	गु.	ज्येष्ठ २	मई १६	मृग	
पौष शु.	३	बु.	पौष २४	जन.८ '९२'	धनि.	
माघ शु.	३	गु.	माघ २४	फर ६	शत.	
फाल्गु. शु.	३	श.	फाल्गु.२३	मार्च ६	रेव.	

दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त

आषाढ़ शु.	९	श.	आ.५	जुला.२०	स्वा.	७।२१ तक
आश्विन ..	९	गु.	का.१	अक्तू.१७	श्रव.	
कार्तिक ..	९	श.	मार्ग.१	नव.१६	शत.	
मार्गशीर्ष ..	९	र.	.. ३०	दिस.१५	उ.भा.	

सरस्वती प्रतिष्ठा मुहूर्त

ज्येष्ठ कृ.	१०	श.	ज्ये.२६	जन ९.	रेवती	

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त

चैत्र शु.	१४	श.	चै.१७	मार्च३०	उ.फा	१३।२४ तक
प्र.वैशा. कृ.	१४	श.	.. ३१	अप्रै.१३	उ.भा	
माघ कृ.	१४	र.	माघ ३०	फर ३	उ.षा	८।३० बाद
माघ शु.	१४	च.	फाल्गु.५	१७	पुष्य	८।१८ तक
चैत्र कृ.	१४	गु.	चै.२०	अप्रै.३	उ.भा	

विश्वकर्मा प्रतिष्ठा मुहूर्त

चैत्र शु.	२	च.	चैत्र५	मार्च १८	रेवती	
ज्येष्ठ शु.	२	श.	ज्यं.३१	जून १४	पुन.	५।३५ बाद
पौष शु.	२	च.	पौष २२	जन ६. '९२'	उ.षा	
माघ शु.	२	बु.	माघ २३	फर.५	धनि.	
फाल्गुन ..	२	शु.	फा.२३	मार्च ६	उ.भा.	

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त (सं. २०४८)

नीचे सात्त्विक देव, तामस देव, श्री गणेश, दुर्गा, शिव और सरस्वती की प्रतिष्ठा के मुहूर्त दिए गए हैं। सात्त्विक देव प्रतिष्ठा के मुहूर्तों में श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती आदि भी सात्त्विक प्रकृति के देवताओं की और तामसदेव प्रतिष्ठा के मुहूर्तों में श्री महाकाली, भैरव, नृसिंह आदि तामस प्रकृति के देवताओं की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। यद्यपि गणेश, दुर्गा, शिव और सरस्वती — इन चार सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्तों में हो सकती है फिर भी मुहूर्त-शास्त्रों में इन चारों की प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त काल बतलाए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त श्री विष्णु, राम-कृष्ण, गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्व प्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाए जा सकते हैं। जबकि श्री गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती — इन चार देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठा मुहूर्त केवल इन्हीं चारों के लिए ही हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्न काल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है।

जलाशय (बावड़ी, तालाब आदि) और उपवन की प्रतिष्ठा के लिए सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्तों को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

चैत्र शु.	७	शु.	चैत्र ९	मार्च २२	रोहि.	
.. ..	१०	च.	.. १३	.. २६	पुष्य	
.. ..	१५	श.	.. १७	.. ३०	हस्त	
प्र.वैशा.कृ.	१	र.	.. १८	.. ३१	चित्रा	
.. ..	२	च.	.. १९	अप्रै.१	स्वा	
.. ..	५	गु.	.. २२	.. ४	अनु.	
द्वि.शु. वै.शु.	३	गु.	ज्येष्ठ २	मई १६	मृग	
.. ..	५	श.	.. ४	.. १८	पुन.	
.. ..	६	र.	.. ५	.. १९	पुष्य	
.. ..	१०	गु.	.. ९	.. २३	उ.फा	
.. ..	१२	श.	.. ११	.. २५	चित्रा	
.. ..	१३	र.	.. १२	.. २६	स्वा.	
ज्येष्ठ कृ.	५	र.	.. १९	जून २	उ.षा.	
ज्येष्ठ शु.	२	शु.	ज्ये. ३१	.. १४	पुन.	५।३५ बाद
.. ..	८	बु.	आषा.५	.. १९	उ.फा.	
पौष कृ.	२	चं.	पौष ८	दिस २३	पुन.	
.. शु.	२	च.	.. २२	जन. ६	उ.षा.	
.. ..	३	बु.	.. २४	.. ८	धनि.	
.. ..	७	र.	.. २८	.. १२	उ.भा.	रेव.
.. ..	८	चं.	.. २९	.. १३	रेव.	
.. ..	११	गु.	माघ ३	.. १६		९।४७ बाद
पौष शु.	१२	शु.	माघ ४	.. १७	रोहि.	मृग.
माघ कृ.	१	चं.	जन.१७	.. २०	पुष्य	
माघ शु.	२	बु.	.. २३	फर. ५	धनि.	
.. ..	५	र.	माघ २७	फर. ९	रेव.	
.. ..	६	च.	.. २८	.. १०	अश्वि.	
.. ..	११	शु.	फाल्गु.२	.. १४	मृग	
.. ..	१३	र.	.. ४	.. १६	पुन.	
फाल्गु.कृ.	३	बु.	.. ८	.. २०	उ.फा.	
.. ..	५	श.	.. १०	.. २२	चित्रा	
.. शु.	२	शु.	.. २३	मार्च ६	उ.भा.	
.. ..	७	बु.	.. २८	.. ११	रोहि.	
.. ..	८	गु.	.. २९	.. १२	मृग.	
.. ..	१०	श.	चैत्र १	.. १४	पुन.	
फाल्गु.शु.	११	र.	चैत्र २	मार्च १५	पुष्य	
चैत्र कृ.	१	गु.	.. ६	.. १९	उ.फा.	
.. ..	२	शु.	.. ७	.. २०	हस्त	

तामसदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त

ज्येष्ठ शु.	११	श.	आषा.८	जून २२	स्वा.	ति
आषा. कृ.	२	श.	.. १५	.. २९	उ.षा.	
.. शु.	१	शु.	.. २८	जुला.१२	पुन.	
.. ..	२	श.	.. २९	.. १३	पुष्य	१०।[illegible]
.. ..	६	बु.	श्राव.२	.. १७	हस्त	
.. ..	७	गु.	.. ३	.. १८	चित्रा	८.१४ तक
.. ..	८	शु.	.. ४	.. १९	चित्रा	स्वाती ९।
.. ..	१०	र.	.. ६	.. २१	अनु.	९।५९ र
कार्ति. शु	१३	बु.	मार्ग.५	[illegible]	[illegible]	९।२ त

पर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection